माणिकचन्द्र-दिगम्बर-जैनग्रन्थमाला, पुष्प ४६.

जैन-शिलालेखसंग्रह

(तृतीय भाग)

संग्रहकर्त्ता

पं० विजयमूर्ति एम० ए० शास्त्राचार्य

प्रस्तावना (द्वितीय-तृतीय भाग की) लेखक

डा० गुलाबचन्द्र चौधरी एम० ए०, पी-एच० डी०, आचार्य

पुस्तकाध्यक्ष एवं प्राध्यापक

नवनालन्दा महाविहार, नालन्दा (पटना)

प्रकाशिका

श्रीमाणिकचन्द्र-दिगम्बर-जैनग्रन्थमाला समिति

मुम्बई

विक्रम संवत् २०१३

वीर नि० सं० २४८३

मूल्य······

प्रकाशक—

मंत्री, माणिकचन्द्र-जैनग्रन्थमाला

हीराबाग, बम्बई ४

मार्च १९५७

मुद्रक—

शारदा मुद्रण

ठठेरी बाजार, वाराणसी

विषय-सूची

प्राक्-कथन

जैन-शिलालेखसंग्रह, भाग १, का जब मैंने आज से कोई बत्तीस वर्ष पूर्व सम्पादन किया था, तब मुझे यह आशा थी कि शेष प्राप्य जैन शिलालेखों के संग्रह भी शीघ्र ही क्रमशः प्रस्तुत किये जा सकेंगे। किन्तु वह कार्य शीघ्र सम्पन्न न हो सका। तथापि इस योजना की चिन्ता माणिकचन्द्र ग्रंथमाला के कर्णधार श्रद्धेय पं० नाथूराम जी प्रेमी को बनी ही रही। उसी के फलस्वरूप गेरीनो की शिलालेख सूची के अनुसार अब यह संग्रह कार्य भाग दूसरे और तीसरे में पूरा हो गया है। गेरीनो की सूची बनने के पश्चात् जो जैन लेख प्रकाश में आये हैं, तथा जो महत्त्वपूर्ण लेख उस सूची में उल्लिखित होने से छूट गये हैं उनका संकलन करना अब भी शेष रहा है।

यह तो मानी हुई बात है कि देश, धर्म और समाज के इतिहास में पाषाण, ताम्रपट आदि लेख सर्वोपरि प्रामाणिक होते हैं। भारत का प्राचीन इतिहास तभी से विधिवत् प्रस्तुत किया जा सका है जब से कि इन शिला आदि लेखों के अध्ययन अनुशीलन की ओर ध्यान दिया गया है। जितने शिलालेख प्रस्तुत संग्रह में समाविष्ट हैं वे सभी गत सौ वर्षों में समय समय पर यथास्थान पत्रिकाओं आदि में प्रकाशित हो चुके हैं और उनसे प्राप्य राजनीतिक वृत्तान्त का उपयोग भी प्रायः किया जा चुका है। किंतु जैन इतिहास के निर्माण में उनका पूर्णतः उपयोग करना अभी भी शेष है। इस संग्रह में जो मौर्य सम्राट् अशोक से लेकर कुषाण, गुप्त, चालुक्य, गंग, कदम्ब, राष्ट्रकूट आदि राजवंशों के काल के जैन लेख संकलित हैं उनमें भारतीय इतिहास और विशेषतः जैन धर्म के प्राचीन इतिहास की बड़ी बहुमूल्य सामग्री बिखरी हुई पड़ी है जिसका अध्ययन कर जैन इतिहास को परिष्कृत करना आवश्यक है।

शिलालेखसंग्रह के प्रथम भाग की भूमिका में मैंने वहाँ संकलित लेखों का विभिन्न दृष्टियों से एक अध्ययन प्रस्तुत किया था। अब इस भाग के साथ

तब से आगे प्रकाशित दोनों भागों का सुविस्तृत और सूक्ष्म अध्ययन डॉ० गुलाब चन्द्र चौधरी द्वारा प्रस्तुत किया गया है जो बहुत महत्त्वपूर्ण है। मुझे भरोसा है कि डॉ० चौधरी के इस परिश्रम से जैन इतिहास का बड़ा उपकार होगा। इनकी प्रस्तावना से प्रकाश में आने वाली कुछ विशेष बातें निम्न प्रकार हैं:—

(१) मथुरा की खुदाई से प्रकाश में आई मूर्तियों में प्रमाणित हुआ कि आज से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व जैन प्रतिमायें नग्न ही बनाई जाती थीं। मूर्तियों में वस्त्रों का प्रदर्शन लगभग पाँचवीं शती से पूर्व नहीं पाया जाता।

(२) प्राचीन काल की प्रतिमाओं में तीर्थंकरों के बैल आदि विशेष चिह्न बनाने की प्रथा नहीं थी। केवल आदिनाथ के केश (जटा) तथा पार्श्व और सुपार्श्व के सर्पफण मूर्तियों में दिखलाये जाते थे।

(३) तीर्थंकरों के साथ साथ यक्ष यक्षिणियों की पूजा का भी प्राचीन काल से ही प्रचार था और उनकी भी मूर्तियाँ स्थापित की जाती थीं।

(४) मथुरा से जो जैन मूर्तियों की प्रतिष्ठा संबंधी लेख मिले हैं उनमें गणिकायें, गणिकापुत्रियाँ, नर्तकियाँ और लुहार, सुनार, गंधीगिर आदि जातियों के लोग भी पूजा प्रतिष्ठादि धार्मिक कार्यों में भाग लेते हुए पाये जाते हैं।

(५) मथुरा के लेखों से सिद्ध होता है कि उत्तर भारत में भी मातृपरम्परा के उल्लेख की प्रथा थी। वात्सीपुत्र, गोतिमीपुत्र, मोगलिपुत्र, कौशिकीपुत्र आदि जैसे नाम पाये जाते हैं।

(६) मथुरा के लेखों में जो जैन मुनियों के गणों, कुलों और शाखाओं के उल्लेख मिलते हैं उनसे कल्पसूत्र की स्थविरावली की प्रामाणिकता सिद्ध होती है।

(७) कदंब वंशी लेखों के अनुसार ४-५ वीं शती के लगभग दक्षिण भारत में निर्ग्रन्थ महाश्रमण, श्वेतपट महाश्रमण तथा यापनीय और कूर्चक संघों का अस्तित्व पाया जाता है। ये सब सम्प्रदाय प्रायः मिल जुल कर रहते थे।

(८) मूलसंघ का सर्व प्रथम उल्लेख गंग वंश के माधव वर्मा द्वितीय और उसके पुत्र अविनीत (सन् ४००-४२५ के लगभग) के लेखों में पाया जाता है। किन्तु इन लेखों से किसी गण, गच्छ, अन्वय आदि का कोई उल्लेख

नहीं है। गण गच्छादि के उल्लेख सन् ६८७ और उसके पश्चात्कालीन लेखों में उत्तरोत्तर बढ़ते हुए पाये जाते हैं।

(९) पाँचवीं छठी शती के लेखों में नन्दिसंघ और नन्दिगच्छ तथा श्री मूलमूलगण और पुन्नागवृक्षमूलगण के उल्लेख यापनीय संघ के अन्तर्गत मिलते हैं। ग्यारहवीं शती से नन्दि संघ का उल्लेख द्रविड संघ के साथ तथा बारहवीं शती से मूलसंघ के साथ दिखाई पड़ता है।

(१०) यापनीय संघ के अन्तर्गत बलहारि या बलगार गण के उल्लेख दशवीं शती तक पाये जाते हैं। ग्यारहवीं शती से बलात्कार गण मूलसंघ से संबद्ध प्रकट होता है।

(११) मर्करा के जिस ताम्रपत्र लेख के आधार पर कोण्डकुन्दान्वय का अस्तित्व पाँचवीं शती में माना जाता है वह लेख परीक्षण करने पर बनावटी सिद्ध होता है, तथा देशीय गण की जो परम्परा उस लेख में दी गई है वही लेख नं० १५० (सन् ९३१) के बाद की मालुम होता है।

(१२) कोण्डकुन्दान्वय का स्वतंत्र प्रयोग आठवीं नौवीं शती के लेख में देखा गया है तथा मूलसंघ कोण्डकुन्दान्वय का एक साथ सर्व प्रथम प्रयोग लेख नं० १८० (लगभग १०४४ ई०) में हुआ पाया जाता है।

डॉ० चौधरी की प्रस्तावना में प्रकट होने वाले ये तथ्य हमारी अनेक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक मान्यताओं को चुनौती देने वाले हैं। अतएव उनपर गंभीर विचार करने तथा उनसे फलित होने वाली बातों को अपने इतिहास में यथोचित रूप से समाविष्ट करने की आवश्यकता है। इस दृष्टि से इन शिलालेखों तथा डॉ० चौधरी की प्रस्तावना का यह प्रकाशन बड़ा महत्त्वपूर्ण है।

मुजफ्फरपुर,
१४-३-१९५७

हीरालाल जैन
डायरेक्टर, प्राकृत जैन विद्यापीठ,
मुजफ्फरपुर (बिहार)

प्रकाशकीय निवेदन

जैन-शिलालेख संग्रह का पहला भाग सन् १६२८ में निकला था। दूसरा भाग उसके चौबीस वर्ष बाद सन् १६५२ में और यह तीसरा भाग उसके लगभग पाँच वर्ष बाद प्रकाशित हो रहा है। अर्थात् सब मिलाकर इन तीन भागों के प्रकाशन में कोई तीस वर्ष लग गये।

पहले भाग के साथ में सुहृद्वर डा० हीरालाल जी ने उसके लेखों का १६२ पृष्ठों का एक सुविस्तृत अध्ययन लिखा था। दूसरे भाग के साथ उसके लेखों का परिचय देने का कोई प्रबन्ध न हो सका, इसलिए अब इस तीसरे भाग में दोनों भागों के लेखों का अध्ययन करके डा० गुलाबचन्द्र जी चौधरी, एम० ए०, पी-एच० डी०, आचार्य ने १७५ पृष्ठों की भूमिका लिख दी है जिसमें जैन सम्प्रदाय के संघों, गणों, गच्छों, राजवंशों, सामन्तों, श्रेष्ठियों, जैन-तीर्थों आदि पर विस्तृत प्रकाश डाला है।

डा० चौधरी स्याद्वाद विद्यालय काशी के स्नातक हैं और इस समय नालन्दा के पाली बौद्ध विद्यापीठ में पुस्तकाध्यक्ष एवं प्राध्यापक हैं। दो वर्ष पहले इन्हें हिन्दूविश्वविद्यालय से "पोलिटिकल हिस्ट्री ऑफ नादर्न इण्डिया फ्राम जैन सोर्सेज़" से (जैन स्रोतों से प्राप्त किया गया उत्तर भारत का राजनीतिक इतिहास) महानिबन्ध पर 'डाक्टरेट' की उपाधि मिली थी। चूँकि जैन साधनों से उक्त महानिबन्ध तैयार किया गया था, और इसके लिए इन्हें अनेक शिलालेखों की भी छान-बीन करनी पड़ी थी, इस लिए इस ग्रंथ की यह भूमिका लिखने के लिए वही उपयुक्त समझे गये और उन्होंने भी मेरे आग्रह को स्वीकार कर लिया। मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि उन्होंने यह काम एक इतिहास-संशोधक की दृष्टि से बड़ी लगन के साथ परिश्रमपूर्वक किया है। इसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं।

इसमें ऐसी अनेक बातों पर प्रकाश डाला गया है जो अभी तक अन्धकार में थीं और जिनकी ओर ध्यान देना इतिहासज्ञों के लिए परम आवश्यक है। इनमें से कुछ बातों की तरफ डा० हीरालाल जी ने 'प्राक्कथन' में हमारा ध्यान आकर्षित किया है।

इन तीन भागों में वे सब लेख आ गए हैं जिनकी सूची डा० गेरिनो ने संकलित की थी और जिसका नाम Repertoire de Epigraphie Jaina है।

उक्त सूची के प्रकाशित होने के बाद और भी सैकड़ों लेख प्रकाश में आये हैं और उनका प्रकाशित होना भी आवश्यक है। परन्तु माणिक्यचन्द्र ग्रन्थमाला का फण्ड समाप्त हो गया है और इधर दीर्घकालव्यापिनी अस्वस्थता के कारण मेरी शक्तियों ने भी जवाब दे दिया है, इसलिए अब यह आशा तो नहीं है कि उक्त लेख-संग्रह भी चौथे भाग के रूप में प्रकाशित कर सकूँगा। फिर भी विश्वास तो रखना ही चाहिए कि किसी न किसी इतिहास प्रेमी के द्वारा यह आवश्यक कार्य अविलम्ब पूरा होगा। मुझे सन्तोष है कि मेरी एक बहुत बड़ी आशा इन तीस वर्षों में किसी तरह पूरी हो गयी।

दूसरे भाग के समान इस भाग का संकलन भी श्री विजयमूर्ति जी एम० ए०, शास्त्राचार्य ने किया है। इसमें उन्हें भी बहुत परिश्रम करना पड़ा है। विभिन्न लाइब्रेरियों में जाकर 'इण्डियन एण्टीक्वेरी', 'एपीग्राफिया इंडिका' आदि की पुरानी फाइलों में से प्रत्येक लेख को ढूँढ़ना, उन्हें रोमन लिपि से नागरी में उतारना और फिर उनका सारांश लिखना समयसाध्य और श्रमसाध्य तो है ही। इसके लिए वे भी धन्यवाद के पात्र हैं।

बम्बई
२४-३-५७

नाथूराम प्रेमी
मंत्री

43

प्रस्तावना

१. जैनों का अभिलेख साहित्यः एक परिचय

भारतीय इतिहास के विविध अंगों के ज्ञान के लिए अभिलेख साहित्य बड़ा ही प्रामाणिक साधन है। यह साधन भारतवर्ष में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध भी है और विशेष कर दक्षिण भारत में। जैनों का अभिलेख साहित्य बड़ा ही विशाल है। वैसे तो जैनों के ये लेख भारतवर्ष के प्रत्येक कोने से प्राप्त हुए हैं। पर इनका प्राचुर्य दक्षिण और पश्चिम भारत में विशेषतः देखा जाता है।

ये लेख जल्दी न नष्ट होने वाले पाषाण एवं धातु द्रव्यों पर उत्कीर्ण पाये जाते हैं। इसलिए इनमें कालान्तर में सम्भावित संशोधन और परिवर्तन की वैसी कम गुंजाइश होती है जैसी कि अन्य साहित्यिक कृतियों में देखी जाती है। इसलिए इनसे प्राप्त होने वाले तथ्यों को प्रथम श्रेणी का महत्व दिया जाता है।

पाषाणनिर्मित द्रव्यों पर पाये जाने वाले जैनों के लेख कई प्रकार के हैं, जैसे चट्टानों एवं गुफाओं में मिलने वाले लेख, उदाहरण के रूप में लेख नं० २,७,६१ एवं एलोरा, पञ्चपाण्डवमलै, वल्लीमलै और तिरुमलै से प्राप्त लेख; मंदिरों से प्राप्त लेख, जैसे श्रवण बेल्गोल, हुम्मच एवं अन्य तीर्थ स्थानों के कई लेख; मूर्तियों के पादुका पट्ट पर उत्कीर्ण लेख जैसे श्रवण बेल्गोल, आबू, गिरनार, शत्रुंजय, महोबा, खजुराहो, ग्वालियर से प्राप्त होने वाले कतिपय प्रतिमा-लेख; स्तम्भों पर उत्कीर्ण लेख, जैसे मथुरा से प्राप्त लेख नं० ४३,४४ एवं कहायूं का लेख तथा दक्षिण भारत से प्राप्त मानस्तम्भों एवं सल्लेखना मरण के स्मारक स्वरूप निर्मित निषिधिकलसों पर के लेख; मथुरा से प्राप्त कतिपय लेख स्तूपों पर तथा शिलापट्टों पर, मथुरा के आयागपटों के लेख और शासन पत्र के रूप में लेख नं० २२८,३३२,३७४ आदि प्राप्त हुए हैं।

ताम्रादि धातुओं पर भी उत्कीर्ण अनेकों जैन लेख पाये जाते हैं, उदाहरण के रूप में मर्करा का ताम्रपत्र एवं कदम्ब वंश के कतिपय लेख समझने चाहिये।

इन लेखों में अधिकांश पर काल निर्देश देखा गया है, चाहे वह शासन करने वाले राजा का संवत् हो, चाहे वह शक संवत्, विक्रम संवत् या ज्योतिष् शास्त्रप्रणीत प्लङ्ग, खर आदि संवत् हो। ये संवत् राजनीतिक, धार्मिक, एवं सांस्कृतिक इतिहास की दृष्टि से बड़े महत्त्व के हैं।

जैन लेखों की प्रकृति समझने के लिये, हम उन्हें अनेक दृष्टियों से विभक्त कर सकते हैं, जैसे उत्तर भारत के लेख, दक्षिण भारत के लेख, दिगम्बर सम्प्रदाय के, श्वेताम्बर सम्प्रदाय के, राजनीतिक, धार्मिक तथा भाषावार संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, तामिल आदि, इसी तरह लिपि के अनुसार भी। पर वास्तव में इनके दो ही भेद करना ठीक है, एक तो राजनीतिक शासन पत्रों के रूप में या अधिकारिवर्ग द्वारा उत्कीर्ण और दूसरे सांस्कृतिक, जनवर्ग से सम्बधित। राजनीतिक एवं अधिकारिवर्ग से सम्बंधित लेख प्रायः प्रशस्तियों के रूप में होते हैं। इनमें राजाओं को अनेक विरुदावली, सामरिक विजय, वंश परिचय आदि के साथ मंदिर, मूर्ति या पुरोहित आदि के लिए भूमिदान, ग्रामदानादि का वर्णन होता है। सांस्कृतिक एवं जनवर्ग से सम्बंधित लेखों का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। ये लेख अपनी धार्मिक मान्यता के लिए भक्त एवं श्रद्धालु पुरुष या स्त्रीवर्ग द्वारा लिखाये जाते थे। ऐसे लेख १-२ पंक्ति के रूप में मूर्ति के पादुकापट्टों पर तथा कुटुम्ब एवं व्यक्ति की प्रशंसा में उच्च कोटि के काव्य रूप में भी पाये जाते हैं। इनसे अनेक जातियों के सामाजिक इतिहास और जैनाचार्यों के संघ, गण, गच्छ, पट्टावली के रूप में धार्मिक इतिहास के अतिरिक्त सांस्कृतिक एवं राजनीतिक इतिहास का परिचय मिलता है। इन लेखों में प्रायः मूर्तियों, धर्मस्थानों, और मंदिरों के निर्माण का काल अङ्कित रहता है। जिससे कला और धर्म के विकास-क्रम को समझने में बड़ी सहायता मिलती है, और सामाजिक स्थिति का परिज्ञान—एक देश से दूसरे देश में जैन कब फैले और वहाँ जैन धर्म का प्रसार अधिकाधिक कब हुआ—भी हो जाता है। अनेक जैन भक्त पुरुषों और महिलाओं के नाम भी इन लेखों से

ज्ञात होते हैं जो कि भाषाशास्त्र की दृष्टि से बड़े महत्व के हैं। अधिकांश नाम अपभ्रंश और तत्कालीन लोक भाषा के रूप को प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत लेख संग्रह से ज्ञात सांस्कृतिक इतिहास का एक छोटा चित्र यहाँ दिया जाता है। लोग अपने कल्याण के लिए, माता, पिता, भाई, बहिन आदि के कल्याण के लिए, गुरु के स्मृत्यर्थ, राजा, महामण्डलेश्वर आदि के सम्मानार्थ मंदिर या मूर्ति का निर्माण कराते थे और उनकी मरम्मत, पूजा, ऋषियों के आहार, पुजारी की आजीविका, नये कार्यों के लिये तथा शास्त्र लिखने वालों के भोजन के लिए दान देते थे। दातव्य वस्तुओं में ग्राम, भूमि, खेत, तालाब, कुँआ, दुकान, भवन, कोल्हू, हाथ के तेल की चक्की, चावल, सुपारी का बगीचा, साधारण बगीचे, चुंगी से प्राप्त आमदनी, तथा निष्क, पण, गद्याण, होन्नु (ये सब एक प्रकार के सिक्के हैं) घी एवं मुक्त श्रम आदि हैं। एक लेख (१६८) में ब्राह्मण को कुमारिकाओं की भेंट का उल्लेख है जो देवदासी प्रथा की याद दिलाता है। ग्राम या भूमि के दान में प्रायः यह ध्यान रखा जाता था कि वे दान सर्व करों से मुक्त कराकर दिये जाँय (२२६,४०४ आदि)। उत्सवों पर ही दान देने की प्रथा थी। बहुत से लेखों से ज्ञात होता है कि दानादि द्रव्य, चंद्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण, उत्तरायण-संक्रांति या पूर्णिमा आदि के दिन दान दिये जाते थे (१०२ १२७,३०१,६४६ आदि)। मूर्तियों के निर्माण में हम देखते हैं कि लोग प्रायः तीर्थंकरों की मूर्तियाँ बनवाते थे—उनमें विशेषतः आदिनाथ, शान्तिनाथ, चंद्रप्रभ, कुंथुनाथ, पार्श्वनाथ एवं वर्धमान की मूर्तियाँ होती थीं। तीर्थंकरों के अतिरिक्त हम दक्षिण भारत में बाहुबली की मूर्ति भी देखते हैं। भक्त या शिष्यगण अपने आचार्यों की मूर्तियाँ या पादुका (चरण) भी बनवाते थे। यक्ष-यक्षिणियों की पूजा भी प्रचलित थी। हुम्मच पद्मावती की पूजा का प्रमुख केन्द्र था। लेखों में अम्बिका देवी (३४६) और ज्वालामालिनी (७५८) की मूर्तियों का भी उल्लेख मिलता है। प्रतिमाएँ प्रायः पाषाण और धातु की बनती थीं, पर एक लेख (१६७) में पंच धातु की प्रतिमा का उल्लेख है। मंदिर प्रायः पाषाण या ईंट के बनते थे, पर कुछ लेखों (२७७,२०४) में लकड़ी

के मंदिर का भी उल्लेख है। पूजा के अनेक प्रकार होते थे (३३८)।

धर्मप्राण महिलावर्ग एवं पुरुषवर्ग सारे जीवन को धर्म की आराधना में व्यतीत कर अन्तिम क्षणों में समाधिमरण पूर्वक देहोत्सर्ग करता था। चौदहवीं शताब्दी के लगभग दक्षिण प्रांत में जैन महिलावर्ग के बीच सतीप्रथा का भी प्रवेश हो गया था (५५६,५७४,६०५)। राजघराने की महिलाएँ अपने पति के शासन में हाथ बटाती थीं।

जमीन प्रायः नापकर दान में दी जाती थी। लेखों में विविध प्रकार की नापों का उल्लेख है जैसे निवर्तन (लेख नं० १०१,१६०२) भेरुण्ड दण्ड (१८१) मत्तर (२१०) कम्म (२४१) कुण्डिदेश दण्ड (३३४) हाथ (३२०) तथा स्तम्भ (३३४) आदि। चावल आदि की नाप के लिए मत्त (१८१) तथा तेल की नाप के लिए करघटिका (२२८) का भी उल्लेख मिलता है।

विविध प्रकार के आय करों के नाम भी लेखों से ज्ञात होते हैं। जैसे अन्नि-याय वावदण्ड विरै (१६७, तामिल देश में) सिद्धाय कर (३१२) नमस्य (२१०) हालदारे (६७३)। तत्कालीन अनेकों सिक्कों के नाम भी लेखों में मिलते हैं, जैसे गुप्त कालीन कार्षापण (६४) निष्क (४६४) सुवर्ण गद्याण (१६७) लोक्कि गद्याण (२५३) गद्याण (१६७,६७३) होन्नु (४११,६७३) विंशो-पक (२२८) आदि।

गाँव के अधिकारी के रूप में सेनबोव (पटवारी, २१०,२२६,२५१) महा-महत्तु, (७१०) एवं हेर्गडे या पेर्गडे (२०८) के नाम पाते हैं। पटवारी लोग अच्छे पढ़े लिखे होते थे। एक लेख (२५१) में एक पटवारी को लेख रचने वाला लिखा है।

यह एक छोटा सा चित्र है। विस्तृत के लिए भूमिका के विविध प्रकरणों को देखना चाहिये।

लेख पद्धतिः—प्रत्येक पाषाण लेख या ताम्र लेख, यदि वह बहुत ही छोटा केवल नाम मात्र का या छोटा-सा दानपत्र नहीं हुआ तो, प्रायः देखा गया

है कि उसमें एक निश्चल शैली का अनुसरण किया जाता है। प्रारम्भ में बहुधा मंगलाचरण होता है। वह छोटे वाक्य के रूप में 'सर्वज्ञाय नमः, ॐ नमः सिद्धेभ्यः' आदि या पद्य के रूप में जिनशासन को नमस्कार या किसी देवता या अनेक देवताओं को नमस्कार आदि। इसके बाद प्रशस्ति प्रारम्भ होती है जिसमें राजा के नाम युद्ध में विजय आदि तथा वंशपरम्परा का वर्णन होता है। यह वर्णन कभी कभी ऐसे सांचे में ढले हुए के समान होता है कि एक राजा के शासनकाल के सभी लेखों में एकसा विवरण मिलता है। लेख का यही हिस्सा राजनीतिक इतिहास के विद्यार्थी के लिए बड़े महत्त्व का होता है। इस अंश के बाद राजा से भिन्न अगर कोई दाता है तो उसका, उसके वंश एवं वैभव आदि का वर्णन आता है। साथ में देय पात्र का वर्णन आता है। यदि वह मुनि व आचार्य हुआ तो उसकी गुरुपरम्परा संघ, कुल, गण, गच्छ, अन्वय आदि का वर्णन होता है। यदि वह मंदिर आदि धर्मस्थान हुआ तो उसका भी वर्णन होता है। इसके बाद देय वस्तु- धन, जमीन, कर, शुल्क, तेल आदि जो होता है उसका भी खुलासा वर्णन मिलता है। जमीन के दान में उसकी सभी परिधियों का वर्णन होता है। इसके बाद दान की रक्षा के लिए विशेष अनुरोध किया जाता है। इसमें दान को जो क्षति पहुचाते हैं उनकी भर्त्सना और जो रक्षा करते हैं उनके प्रशंसावाक्य दिये जाते हैं। अंत में लेख को उत्कीर्ण करने वाले का या निर्माता का नाम होता है।

जैन लेख संग्रह:—जैन शिला लेखों की संख्या इतनी अधिक है कि उनका संग्रह एक जगह करना कठिन है। इधर माणिकचंद्र दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला से दिगम्बर सम्प्रदाय से सम्बंधित लेखों का संग्रह तीन भागो में निकला है। बाबू कामताप्रसाद ने एक छोटा प्रतिमालेख संग्रह निकाला है। वैसे ही श्वेताम्बर जैन शिलालेखों के संग्रह स्वर्गीय बाबू पूरणचंद्र नाहर ने जैन लेख संग्रह नाम से तीन भाग में, मुनि जयंतविजय जी ने अर्बुद प्राचीन लेख संग्रह पांच भाग में, विजयधर्म सूरि के प्राचीन लेख संग्रह और जैन धातु प्रतिमा लेख संग्रह एवं मुनि कांतिसागर जी का जैन प्रतिमा लेख दो भाग तथा उपाध्याय विनयसागर जी का प्रतिष्ठा लेख संग्रह आदि प्रकाशित हो चुके हैं।

जैन धर्म और जैन समाज के इतिहास निर्माण में इन लेखों का जितना महत्व है वैसा ही भारतीय इतिहास के लिखने में भी है। भारतीय इतिहास के अनेक परिच्छेदों के निर्माण करने में, उन्हें संशोधित एवं प्राप्त तथ्यों को दृढ़ करने में इन लेखों का बड़ा उपयोग है। भारतीय इतिहास के निर्माण में जैन साहित्यिक उपादानों की भले ही अब तक उपेक्षा हुई हो पर वर्षा, सर्दी एवं गर्मी के आघातों से सुरक्षित इन लेखों से प्राप्त अटल तथ्यों को अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

प्रस्तुत लेख संग्रहः—प्रस्तुत लेखों का संग्रह श्रद्धेय पं० नाथूराम जी प्रेमी की सत्कृपा एवं प्रेरणा का फल है। इसके प्रथम भाग का संकलन एवं सम्पादन डा० हीरालाल जी जैन ने २८-२९ वर्ष पहले किया था। उक्त भाग में ५०० लेख श्रवण वेल्गोल और उसके आस पास के कुछ स्थानों के हैं। इसके बहुत वर्षों बाद श्रद्धेय प्रेमी जी ने पं० विजयमूर्ति जी एम० ए० शास्त्राचार्य से द्वितीय एवं तृतीय भाग का संकलन कराया। इन दो भागों में ८४६ लेख संग्रहीत हैं। इसके संकलन में प्रसिद्ध फ्रेन्च विद्वान् स्व० ए० गेरीनो द्वारा प्रकाशित जैन शिलालेखों को एक विस्तृत तालिका Repertoire Epigraphie Jaina की सहायता ली गई है। वह तालिका सन् १९०८ में प्रकाशित हुई थी, इसलिए इस संग्रह में उक्त सन् या उससे पहले तक के प्रकाशित लेख ही आ सके हैं, बाद का एक भी लेख नहीं। सभी लेखों का संग्रह तिथिक्रम से किया गया है। उनमें प्रथम भाग में प्रकाशित लेखों का एवं श्वेताम्बर लेखों का यथास्थान निर्देश मात्र कर दिया गया है इससे ग्रन्थ का कलेवर बढ़ नहीं सका।

सन् १९०८ से अब तक अनेक जैन लेख प्रकाश में आ चुके हैं। उनका भी तिथिक्रम से संकलन आवश्यक है। ग्रन्थमाला को चाहिये कि उन लेखों को भी संग्रह कराकर प्रकाशित करे।

२ मथुरा के लेखः एक अध्ययन

प्रस्तुत संग्रह में मथुरा से प्राप्त ८५ लेख संग्रहीत हैं। इनमें नं० ४ से लेकर १६ तक के लेखों को अक्षरों की बनावट की दृष्टि से डा० बूल्हर ने ईसा

पूर्व १५० से लेकर ईसा की प्रथम शताब्दी के बीच का सिद्ध किया है। नं० १७ से ८६ तक के लेख कुषाणकालीन हैं जिनमें कुछेक पर सम्राट् कनिष्क, हुविष्क एवं वासुदेव के राज्यसंवत्सर दिये गये हैं और कुछेक बिना संवत्सर के हैं। शेष लेख गुप्तकाल से लेकर ११वीं शताब्दी तक के हैं।

इनमें से ८ लेख तो आयागपटों[1] पर, २ लेख ध्वज[2] स्तम्भों पर, ३ लेख तोरणों[3] पर, १ लेख नैगमेष[4] (यक्षप्रतिमा) पर, १ लेख सरस्वती[5] की मूर्ति पर, ५ लेख सर्वतोभद्र[6] प्रतिमाओं पर, और शेष लेख प्रतिमापट्ट या मूर्तियों की चौकियों पर उत्कीर्ण मिले हैं।

उक्त तथा अन्य मथुरा के कंकाली टीले से प्राप्त हुई थीं। इस टीले पर कंकाली देवी का एक मन्दिर है। मन्दिर भी एक छोटी-सी झोपड़ी के रूप में है, जिसमें नक्काशीदार एक स्तम्भ का टुकड़ा रखा गया है, जिसे लोग कंकाली देवी मानकर पूजते हैं। इस तरह देवी के नाम से इस टीले का नाम कंकाली पड़ गया।

इसकी सर्व प्रथम खुदाई सन् १८७१ में जनरल कनिंघम ने की थी जिसमें उन्हें तीर्थंकरों की अनेक मूर्तियां मिलीं जिनमें कुछ पर कुषाण वंशी प्रतापी सम्राट् कनिष्क के ५ वें वर्ष से लेकर वासुदेव के राज्य के कुषाण संवत् ९८ तक के लेख खुदे। दूसरी खुदाई सन् १८८८-९१ में डा० फ्यूरर ने विस्तृत रूप से की जिससे ७३७ मूर्तियाँ तथा अन्य शिल्पसामग्री प्राप्त हुई। उसके पश्चात् पं० राधाकृष्ण ने भी यहाँ की खुदाई की और अनेक महत्त्वपूर्ण सामग्री प्राप्त की। इस तरह कंकाली टीला जैन सामग्री के लिए एक निधान सिद्ध हुआ। यहाँ से अनेक

१—नं० ५,८,९,१५,१७,७१,७३,८१

२—नं० ४३,४४

३—नं० ४,१४,६८

४—नं० १३

५—नं० ५५

६—नं० २२,२६,२७,४१,१७३

आकार की हिन्दू और बौद्ध सामग्री भी प्राप्त हुई है जिससे ज्ञात होता है कि जैन धर्म की बढ़ती देखकर, हिन्दुओं और बौद्धों ने भी मथुरा को अपना केन्द्र बना लिया था। यह स्थान प्राचीन काल में जैनियों का अतिशय क्षेत्र था।

डा० फ्यूरर को इसी टीले से एक जैन स्तूप भी मिला था। स्तूप की एक ओर विशाल मन्दिर दिगम्बर सम्प्रदाय का और दूसरा श्वेताम्बर सम्प्रदाय का मिला, पर वे खनन कार्य की असावधानी से छिन्न भिन्न हो गये। खोदने के समय के फोटुओं में ये तथ्य अब भी मौजूद हैं। लेख नं० ५६ से ज्ञात होता है कि इस स्तूप का नाम 'देवनिर्मित वोद्व स्तूप' था। लेख एक प्रतिमा की चोकी पर पाया गया है जो उक्त स्तूप पर प्रतिष्ठित को गई थी। लेख में कुषाण संवत् ७६ दिया गया है। इस संवत् में कुषाण नरेश वासुदेव का राज्य था। ईस्वी सन् की गणना में इस मूर्ति की प्रतिष्ठा ७६ + ७८=१५७ ईस्वी में हुई थी। उस समय भी यह स्तूप इतना पुराना हो गया था कि लोग इसके वास्तविक बनाने वाले को एकदम भूल गये थे और उसे देवों का बनाया (देवनिर्मित) हुआ मानते थे। इससे प्रतीत होता है कि 'वोद्व स्तूप' बहुत ही प्राचीन स्तूप था जिसका कि निर्माण कम से कम ईसा पूर्व ५-६ वीं शताब्दी में हुआ होगा। इस अनुमान की पुष्टि का दूसरा प्रमाण यह भी है कि तिब्बतीय विद्वान् तारनाथ ने लिखा है कि मौर्य-काल की कला यक्ष-कला कहलाती थी और उससे पूर्व की कला देवनिर्मित-कला। अतः सिद्ध है कि कंकाली टीले का स्तूप कम से कम मौर्य-काल से पहले अवश्य बना था। जिनप्रभ सूरि (१३ वीं १४ वीं १ नं०) ने विविधतीर्थकल्प में लिखा है कि पहले यह स्तूप स्वर्ण का बना था, इसमें रत्न जड़े थे, इसे मुनि धर्मरुचि और धर्मघोष की इच्छा से कुबेरा देवी ने सातवें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ की पुण्यस्मृति में बनवाया था। तत्पश्चात् २३ वें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ के समय में इसका निर्माण ईटों से हुआ था और पाषाण का एक मन्दिर इसके बाहर बनाया गया था। पुनः वीर भगवान् के केवलज्ञान प्राप्त करने के १३०० वर्ष बाद बप्पभट्टि सूरि ने इस स्तूप को भग० पार्श्वनाथ के नाम पर अर्पण करने के लिए इसकी मरम्मत कराई थी। भग० महावीर को केवलज्ञान की

प्राप्ति ईसा से लगभग ५५० वर्ष पहले हुई थी, अतः इस स्तूप की मरम्मत १३०० वर्ष बाद अर्थात् सन् ७५० के लगभग में हुई होगी। और पार्श्वनाथ के समय में इसके ईंटों से बनाये जाने का काल ईसा से ६०० वर्ष से भी पूर्व निश्चित होता है। संभव है देवनिर्मित शब्द यही द्योतित करता है। यदि यह संभावना ठीक है तो भारत वर्ष के जितने स्तूप एवं इमारतें हैं उनमें यह स्तूप सबसे प्राचीन समझना चाहिये।

स्तूप का मूल अभी तक विद्वानों के विवाद का विषय है। किन्हीं का मत है कि यह प्राचीन यज्ञशालाओं का अनुकरण है जब कि दूसरे इसे भग० बुद्ध के उलटकर रखे गये भिक्षापात्र के आधार पर निर्मित मानते हैं। कभी कभी विशिष्ट पुरुषों के स्मारक रूप में भी स्तूप बनते थे और उसमें उनके अस्थिफूल रखे जाते थे। पर यह आवश्यक नहीं कि सभी स्तूप ऐसे हों। सारनाथ के घमेख स्तूप और चौखण्डी स्तूप में कनिंघम को कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ।

स्तूप का तलभाग गोल होता है। नीचे एक गोल चबूतरा, उसके ऊपर ढोल या कुएं के आकार की इमारत और उसके भी ऊपर एक अर्ध गोलाकार गुंबज (छतरी) होती है। चबूतरे पर स्तूप के चारों ओर एक प्रदक्षिणा पथ छोड़कर पत्थर का लम्बी खड़ी और आड़ी पटरियों का एक घेरा (Railing) बना रहता है। इस घरे में अधिकतर चारों दिशाओं में तोरण (gate way) बने होते हैं। ये तोरण बड़े ही सुन्दर बनाये जाते हैं। पत्थर के दो स्तम्भ खड़े करके उनके ऊपर के शिरों पर तीन आड़ी पटरियां लगा देते हैं। उन्हीं के नीचे से आने जाने का रास्ता रहता है। तोरण तक जाने के लिए सीढ़ियां रहती हैं। ये स्तूप पोले और ठोस दोनों तरह के मिले हैं।

मथुरा के जैन स्तूप का वर्णन इस प्रकार है:—इस स्तूप के तले का व्यास ४७ फीट था। यह ईंटों का बना था, ईंटें आपस में बराबर न थीं किन्तु छोटी बड़ी थीं। इसकी भूमि का ढाँचा इक्के गाड़ी के आकार का था। केन्द्र से बाहर की दीवार तक आठ व्यासार्ध, जिनपर आठ दीवारें स्तूप के भीतर-भीतर ऊपर तक बनी थीं। इन दीवारों के बीच में मिट्टी भरी हुई मिली है। कदाचित् यह स्तूप

ठोस था और गृहनिर्माण की मितव्ययिता के कारण भीतर की ओर केवल ये दीवारें ही बना दी गई थीं। इस कारण भीतर के कुछ हिस्से में ईंट चिनने की जरूरत न रहीं। स्तूप के बाहर की ओर तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ बनी थीं।

यहाँ एक और जैन स्तूप था, उस पर का बहुत छोटा सा लेख मिला है। वह ईसा की तीसरी या चौथी शताब्दी का मालूम होता है।

इन स्तूपों के अतिरिक्त यहाँ कई आयागपट्ट मिले हैं। जिनसे ८ लेख प्रस्तुत संग्रह में संकलित हुए हैं। ये आयागपट्ट पत्थर के वे चौकोर पटिये होते हैं जो अनेकों प्रकार के माङ्गलिक चिन्हों से अंकित करके किसी तीर्थंकर को चढ़ाये जाते थे। मथुरा के इन आयाग पट्टों का जैन कला में विशेष स्थान है। एक आयाग-पट्ट (जिस पर लेख नं० ७१ उत्कीर्ण है) पर १ मीन मिथुन, २ देव विमान गृह, ३ श्रीवत्स, ४ वर्धमानक, ५ त्रिरत्न, ६ पुष्पमाला, ७ वैजयन्ती और ८ पूर्णघट ये अष्ट मांगालिक चिह्न मिले हैं। दूसरे अन्य आयागपट्टों पर नंद्यावर्त स्वस्तिक, कमल आदि चिह्न अङ्कित हैं।

इन पर उत्कीर्ण लेखों से ज्ञात होता है कि ये मन्दिरों में अर्हन्तों की पूजा के लिए रखे जाते थे। अधिकांश न अर्हन्तों की प्रतिमाएँ हैं, कुछ में चरणचिह्न हैं। तीन आयागपट्टों पर स्तूपों के चित्र अङ्कित मिले हैं। लेख नं० ८ और १५ वाले आयागपट्ट इनमें से ही हैं। लेख नं० ८ वाला आयागपट्ट (मथुरा संग्रहालय २) अधिक महत्व का है। अनुमान किया जाता है कि उक्त आयाग-पट्ट पर उत्कीर्ण तोरण और वेदिका मण्डित स्तूप मथुरा के विशाल जैन स्तूप की प्रतिकृति है। लेख के अनुसार श्रमणों की श्राविका गणिका लोणशोभिका की पुत्री गणिका वासु ने अपनी माता, पुत्री, पुत्र और अपने समस्त कुटुम्ब के साथ अर्हत् का एक मन्दिर एक आयागसभा, पानीगृह और एक पाषाणासन बनवाये।

इसके अतिरिक्त कंकाली टीले से स्तूप की प्रतिकृति और पूजन आदि के महोत्सव को चित्रित करनेवाले कुछ इमारतों के अंश भी मिले हैं। लेख नं०

६८ ऐसे ही एक तोरण के अंशपर से लिया गया है। इस तोरण पर एक नग्न साधु चित्रित है जिसकी कलाई पर एक खण्ड वस्त्र लटका हुआ[1] है।

यहाँ से सैकड़ों जैन तीर्थंकरों एवं यक्ष-यक्षिणियों की मूर्तियाँ मिली हैं। ये मूर्तियाँ बड़े सादे ढंग से बनाई गई हैं। तीर्थंकरों की मूर्तियाँ खड्गासन एवं पद्मासन दोनों प्रकार की मिली हैं। प्रारम्भिक शताब्दियों की मूर्तियाँ नग्न हैं। इनमें अधिकांश मूर्तियाँ आदिनाथ, अजितनाथ, सुपार्श्वनाथ, शान्तिनाथ, अरिष्टनेमि और वर्धमान की मिली हैं। उस काल में तीर्थंकर के चिन्हों—लाञ्छनों—का आविष्कार न होने के कारण मूर्तियों में प्रायः एक दूसरे से भेद नहीं है। हाँ, आदिनाथ के केश (जटाएं) तथा पार्श्व और सुपार्श्व के सर्पफण इनको पहचानने में सहायता देते हैं। जैन तीर्थंकरों की मूर्तियाँ नग्न होने के कारण, वक्षस्थल पर श्रीवत्स चिन्ह होने से और शिर पर उष्णीष न होने कारण इस काल की बौद्ध मूर्तियों से अलग आसानी से पहचानी जा सकती हैं।

मथुरा से इसी समय की चौमुखी मूर्तियाँ मिली हैं जो सर्वतोभद्रिका प्रतिमा अर्थात् वह शुभ मूर्ति जो चारों ओर से देखी जा सके, कहलाती थीं। इन प्रतिमाओं में चारों ओर एक तीर्थंकर की मूर्ति बनी होती है। चौमुखी मूर्तियों में आदिनाथ, महावीर और सुपार्श्वनाथ अवश्य होते हैं। ऐसी मूर्तियाँ कुषाण और गुप्त काल में बहुतायत से बनती थीं। ईस्वी सन् ४७५ के लगभग उत्तर भारत पर हूणों के भयानक आक्रमणों से मथुरा के स्थापत्य को बड़ा धक्का लगा। अतः ईस्वी ६वीं के पश्चात् मथुरा से जो नमूने हमें मिले हैं वे भोंड़े और भद्दे हैं। उनमें पहले की सी सजीवता नहीं है। इसी काल के लगभग बिना कपड़ेवाली मूर्तियों में कपड़े दिखाये जाने लगे, और सर्वप्रथम राजसिंहासन यक्ष यक्षिणी, त्रिछत्र एवं गजेन्द्र आदि प्रदर्शित होने लगे जो उत्तर गुप्तकाल और उसके बाद की जैन मूर्तियों के विशेष लक्षण हैं। इन्हीं के साथ मध्यकाल में मथुरा के शिल्पियों ने यक्ष यक्षिणियों और जैन मातृकाओं की भी पृथक

१—बाबू कामताप्रसाद जैन इसे जैनों के अर्धफालकसम्प्रदाय से संबंधित बताते हैं, देखो जैन सि० भास्कर भाग ८ अंक २ पृष्ठ ६३-६६

मूर्तियाँ बनाना प्रारम्भ कीं। जैन मातृकाओं में आदिनाथ की यक्षिणी चक्रेश्वरी, तथा नेमिनाथ की अम्बिका देवी की मूर्तियाँ यहाँ मिली हैं। यक्ष धरणेन्द्र की मूर्ति भी मिली है।

इन मूर्तियों के सिवाय यहाँ नैगमेष नामक एक यक्ष की भी मूर्ति मिली है। नैगमेष या हरि नैगमेष जैन मान्यता के अनुसार सन्तानोत्पत्ति के प्रमुख देवता थे। इनकी पुरुष और स्त्री दोनों विग्रहों में मूर्तियाँ मिली हैं। संभवतः पुरुषशरीर की मूर्तियाँ पुरुषों के पूजने के लिए और स्त्रीशरीर की मूर्तियाँ स्त्रियों के लिए थीं। इनका मुख बकरी के आकार का होता है। इनके हाथों या कन्धों पर खेलते हुए बच्चे चिन्हित किये गये हैं। गले में लम्बी मोती की माला भी है जो कि इनका विशेष चिह्न है। कुषाणकाल में इन मूर्तियों की विशेष पूजा होती थी। लेख नं० १३ ऐसी ही एक मूर्ति पर से लिया गया है।

मथुरा से प्राप्त ये लेख ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सामाजिक दृष्टि से बड़े महत्त्व के हैं। इनमें उल्लिखित शक एवं कुषाण राजाओं के नाम तथा तिथियों से हमें उनके क्रमिक इतिहास तथा राज्य काल की अवधि का पता चलता है।

लेख नं ५ वें में स्वामी महाक्षत्रप शोडास का संवत्सर ४२ तथा मास दिन दिये हुए हैं। शोडास, महाक्षत्रप रंजुवुल का पुत्र एवं उत्तराधिकारी था। रंजुवुल शक नरेश मोअ के अधीन मथुरा का महाशासक था। यह मोअ ईसा पूर्व ६० के लगभग अफगानिस्तान एवं पंजाब का शासक था। उसके अधीन मथुरा का शासक रंजुवुल पीछे स्वतंत्र हो गया था जैसा कि उसकी शाही उपाधियों से मालूम होता है। लेख में शोडास की स्वामी एवं महाक्षत्रप उपाधियाँ दी गई हैं जो कि उसके स्वतन्त्र शासक होने की परिचायक हैं। यदि उक्त लेख का संवत्सर ४२ विक्रम-संवत् माना जाय जैसा कि स्टीन कोनो सा० का मत है, तो शोडास ईसा पूर्व १७-१६ में राज्य करता था।

शकों के राज्य पर अधिकार करनेवाले थे कुषाणवंशी राजा। इनका राज्य भारत वर्ष पर ईसा की प्रथम शताब्दी के मध्य से स्थापित हुआ था। इस वंश का सबसे बड़ा प्रतापी राजा कनिष्क हुआ, जिसने अपने राज्याभिषेक के समय

से एक संवत् चलाया था जो कि विद्वानों के मत से सन् ७८ ई० से प्रारम्भ होता है। इतिहासज्ञों के अनुसार कनिष्क ने सन् १०० ई० तक अर्थात् २२ वर्ष राज्य किया। इसके बाद उसके उत्तराधिकारी वासिष्क ने सन् १०८ तक, तत्पश्चात् उसके उत्तराधिकारी हुविष्क ने सन् १३८ तक तथा उसके उत्तराधिकारी वासुदेव ने सन् १७६ तक राज्य किया।

प्रस्तुत संग्रह में लेख नं० १९ में देवपुत्र कनिष्क लिखा है और राज्य सं० ५ दिया है। इसी तरह लेख नं० २४ में महाराज राजातिराज देवपुत्र षाहि कनिष्क तथा राज्य सं० ७ दिया है और लेख नं० २५ में महाराज कनिष्क तथा सं० ९ दिया गया है। इन लेखों के सिवाय लेख नं० १७,१८,१९,२०,२१,२६,२८, २९,३०,३३ और ३४ में राजा का नाम तो अंकित नहीं है पर राज्य संवत्सर से मालूम होता है कि ये कनिष्क के ४थे वर्ष से लेकर २२वें तक के लेख हैं। लेख नं ३५-३८ तक कुषाण सं० २५ से २९ तक के हैं जो कि वासिष्क के के राज्य काल के होते हैं। यद्यपि इनमें राजा का नाम या तो दिया ही नहीं गया या स्पष्ट उत्कीर्ण नहीं हो पाया है। लेख नं० ४० से ५६ तक के लेख कुषाण सं० ३१ से ६० के भीतर के हैं जो कि हुविष्क के शासनकाल के हैं। इनमें लेख नं० ४३,४५,४८,५० और ५६ में तो हुविष्क का नाम दिया हुआ है। लेख नं० ५८ से ७० तक कुषाण सं० ६२ से ९८ के अन्तर्गत हैं जो कि वासुदेव के राज्यकाल में पड़ते हैं उनमें से ६२,६५ और ६९ में तो वासुदेव का नाम भी दिया हुआ है। इतिहासज्ञों के मत से लेख नं० ६९ वासुदेव के राज्य की अन्तिम अवधि का द्योतक है।

यहाँ लेखों के सम्बन्ध में यह सब विस्तार पूर्वक इस लिए लिखना पड़ा कि इस संग्रह में भूल से कतिपय लेखों पर दूसरे राजाओं का नाम दिया गया है जो कि इतिहासज्ञों के लिये भ्रम उत्पन्न कर सकता है। इन राजाओं में कनिष्क, वासिष्क एवं हुविष्क तो बौद्ध धर्म प्रतिपालक थे और वासुदेव शैव मत का, पर अपने शासन में वे लोग अन्य धर्मों के प्रति बड़े उदार थे। इनके राज्यकाल में जैन धर्म का हित सुरक्षित था और वह खूब समृद्ध स्थिति में था।

सामाजिक इतिहास की दृष्टि से भी ये लेख बड़े महत्व के हैं। इन लेखों में गणिका (८) नर्तकी (१५) लुहार (३१,५४) गन्धिक (४१,४२,६२,६९) सुनार (६७), ग्रामिक (४४) तथा श्रेष्ठी (१९,२६,४३) आदि जातियों या वर्ग के लोगों के नाम मिलते हैं जिन्होंने मूर्ति आदि का निर्माण, प्रतिष्ठा एवं दान कार्य किये थे। इनसे विदित होता है कि २ हजार वर्ष पहले जैन संघ में सभी व्यवसाय के लोग बराबरी से धर्माराधन करते थे। अधिकांश लेखों में दातावर्ग के रूप में स्त्रियों की प्रधानता है जो बड़े गर्व के साथ अपने पुण्य का भागधेय अपने माता-पिता सास-ससुर पुत्र-पुत्री, भाई आदि आत्मीयों को बनाती थीं (१४)। इन स्त्रियों में बहुतसी विधवाएं थीं जो वैधव्य के शोक से घर गृहस्थी छोड़कर विरक्त हो जैन संघ में आर्यिका हो गयीं थीं। लेख नं० ४२ में ऐसी ही स्त्री कुमारमित्रा थी जिसे लेख में आर्या कुमारमित्रा लिखा है तथा उसे संशित, मखित एवं बोधित कहा गया है।

इन लेखों से एक और महत्व की बात सूचित होती है कि उस समय लोग अपने व्यक्तिवाचक नाम के साथ माता का नाम जोड़ते थे जैसे वात्सीपुत्र, तेवणीपुत्र, वैहिदरीपुत्र, गोतिपुत्र, मोगलिपुत्र एवं कौशिकिपुत्र आदि। ऐसे नाम सांस्कृतिक-इतिहास निर्माण की दृष्टि से मूल्यवान् हैं।

जैन धर्म के प्राचीन इतिहास की दृष्टि से मथुरा के ये लेख और भी बड़े महत्त्व के हैं। इन लेखों में मूर्ति के संस्थापक ने न केवल अपना ही नाम उत्कीर्ण कराया है बल्कि अपने धर्मगुरुओं का नाम भी, जिनके कि सम्प्रदाय का वह था। इनमें आचार्यों की उपाधियाँ—आर्य, गणी, वाचक, महावाचक, आतपिक आदि जो कि उस समय प्रचलित थीं, दी गई हैं। लेखों में अनेक गणों, कुलों और शाखाओं के नाम भी दिये गये हैं। ठीक इस प्रकार के गण, कुल एवं शाखा, श्वेताम्बर आगम 'कल्पसूत्र' की स्थावरावली में तथा कुछ वाचक आचार्यों के नाम नन्दिसूत्र की पट्टावली में मिलते हैं। महत्त्व की बात तो यह है कि लेखों का कुछ हिस्सा घिस जाने या पत्थर के कारीगर द्वारा गलत ढंग से उत्कीर्ण

किये जाने या लेखों का गलत छापा लेने तथा नकल को गलत पढ़े जाने पर भी उक्त दोनों पट्टावलियों के कई नामों के साथ साम्य स्थापित किया जा सकता है।

संभव है सम्प्रदाय का नाम गण, उसके विभाग का नाम कुल तथा उसके उपविभाग का नाम शाखा था। ये नाम जैन श्रमणों के उन विभिन्न संघों की ओर संकेत करते हैं जो कि ईसा पूर्व की कुछ शताब्दियों में जैन श्रमणों में अपनी अपनी आचार्य परम्परा और पर्यटन भूमि की विभिन्नता के कारण पैदा होना शुरु हुए थे।

कल्पसूत्र स्थविरावली के अनुसार वर्धमान स्वामी की परम्परा में ६ वीं पीढ़ी में आर्य सुहस्ति हुए जो कि आर्य स्थूलभद्र के अन्तेवासी थे। इन आर्य सुहस्ति के १२ अन्तेवासी थे। इनमें से आर्य रोहण,आर्य कामर्धि,आर्य सुस्थित तथा सुप्रतिबुद्ध एवं आर्य श्रीगुप्त से निकलने वाले गण, कुल एवं शाखाओं के कई एक नाम लेखों में पहिचाने जा सके हैं।

तदनुसार आर्य रोहण गणी से 'उद्देह' गण निकला जो कि हमारे लेख २४ एवं ६६ का 'उद्दकिय' गण समझना चाहिये। उक्त गणके ६ कुल थे जिनमें से केवल दो की पहिचान हो सकी है। 'नागभूय' कुल हमारे लेख नं० २४ का 'नागभूतिय' होना चाहिये। 'परिहासक' गलत रूप से लिखा या पढ़ा जाकर लेख नं० ६६ में पुरिध के रूप में प्रतीत होता है। उक्त गण की चार शाखायें थीं जिनमें एक शाखा 'पुराण पत्तिका' लेख नं० ६६ की पेतपुत्रिका होना चाहिये।

आर्य कामर्धि गणी से वेसवाडिय गण निकला। यद्यपि यह नाम लेखों में स्पष्ट रूपसे उत्कीर्ण नहीं मिला लेकिन उक्त गणके चारकुलों में से एक 'मेहियकुल' मेहिक के रूप में २६ और ६३ वें लेख में प्राप्त हुआ है।

आर्य सुस्थित एवं सुप्रतिबुद्ध गणी से 'कोडिय' गण निकला जो कि अनेकों लेखों में कोट्टिय के रूप में मिलता है। इस गण के चार कुलों में पहले कुल 'बंभलिज्ज' को तो अनेकों लेखों का ब्रह्मदासिक कुल ही समझना चाहिये। दूसरा 'वत्थलिज्ज' भी लेख नं० २७ कावच्छलिय प्रतीत होता है। तृतीय 'वाणिज्ज' कुल

अनेक लेखों से प्राप्त ठामिय कुल के रूप में प्राप्त हुआ है। इसी तरह चतुर्थ 'पराहवाहरा' तो पराहकराय कुल (६६) मालुम होता है। उक्त गण की चार शाखायें थीं। प्रथम 'उच्चानगरि' तो अनेक लेखों की उच्छेनगरी ही है। द्वितीय 'विजाहरी' शाखा लेख नं० ६२ की विद्याधरी शाखा मालूम होती है। तृतीय 'बइरी' शाखा को हम अनेक लेखों में वेरिय, बेर, बैर, बहर के रूप में देख सकते हैं। चतुर्थ 'मज्झिमिल्ला' शाखा लेख नं० ६६ की मज्झम शाखा ही समझना चाहिये

आर्य श्रीगुप्त गणी से 'चारण' गण निकला था जो कि मथुरा के अनेक लेखों में वारण गण के रूप में पढ़ा गया है। उससे सम्बन्धित ७ कुलों में से 'पीइ-धम्मिअ' लेख नं० ३४ एवं ४७ का पेतवमिक मालुम होता है। 'हालिज्ज' कुल लेख नं० १७,४४ एवं ८० का आर्य हाटिकिय प्रतीत होता है। 'पूसमित्तिज' लेख नं० ३७ का पुश्यमित्रीय तथा 'अज्जवेडय' कुल लेख नं० ४५ का आर्यचेटिय एवं नं० ५२ का अय्यमित्त (?) और 'कराहसय' लेख नं० ७६ का कनियसिक विदित होते हैं। इसी तरह उक्त गण की चार शाखाओं में 'हारियमालागारी' लेख नं० ४५ की 'हरीतमालकाधी,' 'वजनागरी' लेख नं० ११,४४ एवं ८० की वाज-नगरी, 'संकासीआ' लेख नं० ५२ की सं (कासिया) तथा 'गवेधुका' लेख नं० ७६ में ओद (संभव गोदुक) के रूप में पढ़ी गयी है।

इस तरह ३ गण, १२ कुल एवं १० शाखाओं के नाम लेखों और कल्पसूत्र स्थविरावली में बराबर मिल जाते हैं। केवल लेख नं० ८२ के वारण गण के नाडिक कुल का मिलान नहीं हो सका है। संभव है यह नाम अन्य नामों के समान लिखने की अशुद्धियों के कारण अज्ञात सा प्रतीत होता है।

कल्पसूत्र स्थविरावली के अनुसार काल की दृष्टि से इन गणों, कुलों और शाखाओं का आविर्भाव वीर सं० २४५-२६१ अर्थात् ई० पूर्व २८२-२३६ के बीच हुआ था और मथुरा के लेखों से मालूम होता है कि ये गुप्त संवत् ११३ अर्थात् सन् ४३४ तक बराबर चलते रहे।

मथुरा के इन लेखों में उक्त गणों, कुलों एवं शाखाओं के सिवाय अनेकों आचार्यों के नाम आते हैं जो कि वाचक आदि पद से विभूषित थे। श्वेताम्बर आगम नन्दिसूत्र में एक वाचक वंश की पट्टावली दी हुई है, जिसके अनेकों नामों का मिलान शिलालेखों के नामों से किया जा सकता है। उक्त पट्टावली में सुधर्म गणधर की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए ७वें आर्य स्थूलभद्र के शिष्य सुहस्ति से चलने वाले वाचक वंश का वर्णन है जो कि वीर निर्वाण सं० २४५ से लेकर ९९४ तक अर्थात् ई० पूर्व २८२ से लेकर सन् ४६७ तक चलता रहा। उक्त वंश में ही आर्य देवर्धि क्षमाश्रमण हुए थे जिन्होंने वर्तमान श्वेताम्बर आगमों को अन्तिम रूप दिया था। उक्त पट्टावली में गण, कुल एवं शाखाओं का नाम बिल्कुल नहीं दिया। संभव है वहाँ गण, कुल शाखादि को महत्त्व न दे वाचक पदधारी आचार्यों का नाम ही गिनाया गया है। जो भी हो, यहाँ उक्त पट्टावली और लेखों के कुछ नामों में काल दृष्टि से साम्य प्रकट किया जाता है।

१३—आर्य समुद्र, वीर नि० सं०...	महावाचक, गणि समदि	(ले० नं० ५२)
१४—आर्य मंगु[1], ,, ४६७[2]	गणि मंगुहस्ति	(,, ५४)
१५—आर्य नन्दिल क्षमण	आर्य नन्दिक	(,, ४१)
	गणी नन्दी	(,, ६७)
१६—आर्य नागहस्ति (,, ६२०[3]-६८९)	वाचक आर्य घस्तुहस्ति	(,, ५४)

१—मुनि दर्शनविजय, पट्टावली समुच्चय, भा० १ पृष्ठ १३ पर आर्य मंगुकी गाथा के अनन्तर दो प्रक्षिप्त गाथाएं आती हैं, जिनमें अज्जधम्म, भद्दगुत्त, अज्जवयर, अज्जरक्खित के नाम आते हैं।

२—वही, पृष्ठ ४७, तपागच्छपट्टावली। इस पट्टावली का रचना काल विक्रम सं० १६४६ है।

३—वही, पृष्ठ १६, 'सिरि दुष्षमाकाल समणसंघथयं' नामक पट्टावली का

एवं हस्तहस्ति[1] (ले० नं० ५५)
२२—भूतदिन्न (वी० नि० ९०४–९८३[2]) दन्तिल (,, ६२)

लेख नं० ५२ पर जिसमें कि महावाचक गणि समदि का नाम आता है, कुषाण संवत् ५० अंकित है जो कि गणना में वीर निर्वाण सं० ६५५ आता है[3]। नन्दिसूत्र पट्टावली में आर्य समुद्र का नाम आर्य मंगु से पहले आता है। आर्य मंगु का समय पट्टावली के अनुसार वीर नि० सं० ४६७ है। यदि यह ठीक है तब तो आर्य समुद्र का समय भी आर्य मंगु से पहले होना चाहिये। लेख में दिया गया कुषाण सं० ५० (वी०नि० सं० ६५५) यदि आर्य समदि का समय है तो इस हिसाब से पट्टावली के समय और लेख के समय में लगभग १८८ वर्ष का अन्तर आता है। पर वास्तव में लेख नं० ५२ में आर्य समदि का समय नहीं दिया गया बल्कि वह आर्य दिनर (?) आदि की एक शिष्या द्वारा मूर्ति स्थापना का समय है। उक्त लेख में समदि शब्द के बाद कई अक्षर घिस गये हैं। यदि

रचना काल वि० सं० १३२७ है।

१. शुद्ध नाम हस्ति-हस्ति प्रतीत होता है। हस्ति का पर्यायवाची नाग होता है। यह संभव है कि नागहस्ति को लेख में हस्ति-हस्ति लिखा गया है। संभव है लेख को उत्कीर्ण करने वाले की भूल से हस्ति शब्द ध्वस्त हो गया हो, और दूसरे लेख में हस्ति का हस्त हो गया हो।

२. वही, पृष्ठ १८, दिन्न और दत्तिल दोनों शब्द दत्त शब्द के प्राकृत रूप होते हैं।

३. जैन परम्परा के अनुसार वीर निर्वाण का समय विक्रम सं० से ४७० वर्ष पूर्व है, अतः ई० सन् पूर्व ५२७ होगा। कुषाण संवत् ईस्वी सन् ७८ से प्रारंभ होता है अतः कुषाण संवत् के प्रारंभ में ५२७+७८= ६०५ वीर निर्वाण सं० समझना चाहिये। डा० याकोबी के मतानुसार वीर निर्वाण ई० सन् पूर्व ४६७ में होता है।

अक्षरों की पूर्ति आढचर या आढचरी[1] शब्द से की जाय तो यह कहा जा सकता है कि वह शिष्या या उसके गुरु, महावाचक समदि के आढचरी या आढचर थे। आढचर शब्द का यदि यह अर्थ मान लिया जाय कि उक्त आचार्य की परम्परा में विश्वास करने वाला तो यह संभावना करनी पड़ेगी कि महावाचक समदि की परम्परा १८८ वर्ष या उसके कुछ अधिक वर्षों तक चलती रही[2]। इसी हालत में लेख और पट्टावली के आर्य समदि और आर्य समुद्र का समीकरण संभव है।

इसी तरह गणि आर्य मंगुहस्ति का उल्लेख करने वाले लेख नं०५४ का समय कुषाण सं० ५२ दिया गया है जो कि वी० नि० सं० ६५७ होता है। इस लेख में जो समय दिया गया है वह है वाचक आर्य घस्तुहस्ति के शिष्य एवं गणी आर्य मंगुहस्ति के आढचर वाचक आर्य दिवित का। पट्टावली में आर्य मंगु का समय वी० नि० सं०४६७ दिया गया है। लेखगत समय वी० नि० सं० ६५७ (कुषाण सं० ५२) से संगति बैठाने के लिए यहाँ यह समझना चाहिए कि आर्य मंगु की परम्परा कम से कम १६० वर्ष तक चलती रही।

---

१. मथुरा के लेख नं० १७ में सढचरी, ४३ में सढचरिय, ५४ में धढचरो तथा ५५ में अढचरों शब्द आते हैं।

२. यह संभावना इसलिए करना पड़ी कि उस काल में एक समय में ही आचार्यों की कई परम्परायें चलती थीं। श्वेताम्बर जैन पट्टावलियों के देखने से यह बात भलो भाँति विदित होती है कि आर्य सुहस्ति के बाद ऐसी अनेक परम्पराओं का उद्गम हुआ था। कोई वाचक परम्परा थी, कोई युगप्रधान परम्परा थी तथा कोई गुरु परम्परा थी आदि, तथा उन आचार्यों से कई गण, कुल और शाखा निकले थे। जिन परम्पराओं की स्मृति रही उनका अंकन तो हो गया, शेष कालदोष से लुप्त हो गई।

शताब्दी या उसके कुछ बाद तक अच्छा संगठित था इसमें कई प्रभावशाली गण थे जिन में से पुन्नागवृक्ष मूलगण, बलहारि गण और कण्डूर गण मूलसंघ में शामिल कर लिए गये और नन्दिसंघ को द्रविड संघ और पीछे मूलसंघ ने अपना लिया।

कूर्चकसंघ

कर्नाटक प्रान्त में ईस्वी पांचवी शताब्दी या उसके पहले जैनो का एक सम्प्रदाय कूर्चक नाम से था और कदम्बवंशी राजाओं के लेखों (९८, ९९) से ज्ञात होता है कि वह निर्ग्रन्थ संघ, श्वेतपट (श्वेताम्बर) संघ एवं यापनीय संघ से पृथक् था। श्रद्धेय प्रेमी जी का अनुमान है कि यह कूर्चक जैन साधुओं का ऐसा सम्प्रदाय होना चाहिये जो दाढ़ी-मूंछ रखता हो। प्राचीनकाल में जटाधारी, शिखाधारी, मुड़िया, कूर्चक, वस्त्रधारी और नग्न आदि अनेक प्रकार के अजैन साधु थे। जान पड़ता है कि इसी तरह जैनों में भी साधुओं का ऐसा सम्प्रदाय था जो दाढ़ी-मूंछ (कूर्चक) रखने के कारण कूर्चक कहलाता होगा। वरांगचरित्र के कर्ता जटाचार्य सिंहनन्दि सम्भव है ऐसे ही साधुओं में थे जिनकी जटाओं का वर्णन (जटाः प्रचलवृत्तयः) आचार्य जिनसेन ने अपने आदिपुराण में किया है।

कदम्बवंशी राजाओं के एक लेख (९९) में इस सम्प्रदाय का यापनीय और निर्ग्रन्थों के साथ उल्लेख है। लेख में 'यापनीयनिर्ग्रन्थकूर्चकानां' बहुवचनान्त पद सूचित करता है कि यापनीय, निर्ग्रन्थ और कूर्चक तीन पृथक् सम्प्रदाय थे। कूर्चक सम्प्रदाय के भी कई संघ थे इससे उक्त सम्प्रदाय का लेख नं १०३ में बहुवचन (कूर्चकानाम्) प्रयोग किया है। यदि लेख नं० ९९ के कूर्चक पद को बहुवचनान्त मान निर्ग्रन्थ पद को उसका विशेषण मान लें, तो कहना होगा कि वह संघ निर्ग्रन्थ अर्थात् दिगम्बर सम्प्रदाय का ही एक भेद था। कदम्ब मृगेशवर्मा ने अन्य दो जैन सम्प्रदायों के समय इसे भी भूमिदान देकर सत्कृत किया था। दूसरे एक लेख (१०३) में इस संघ के अवान्तर वारिषेणाचार्य संघ का उल्लेख

है। साथ में लिखा है कि उक्तसंघ के प्रधान मुनि चन्द्रक्षान्त को कदम्ब नरेश हरिवर्मा ने अपने पितृव्य शिवरथ के उपदेशसे सिंह सेनापति के पुत्र मृगेश द्वारा निर्मापित जैन मन्दिर की अष्टाह्निका पूजा के लिए तथा सर्व संघ के भोजन के लिए वसुन्तवाटक नामक ग्राम दान में दिया था। लेख नं० १०४ में अहरिष्टि नामक एक और श्रमण संघ का उल्लेख है जिसे सेन्द्रक सामन्त भानुशक्ति की प्रार्थना पर कदम्ब नरेश हरिवर्मा ने मरदे नामक ग्राम दान में दिया था। उक्त संघ के आचार्य धर्मनन्दि को यह दान में भेंट किया गया था ताकि वे अपने अधीन चैत्यालय की पूजा आदि का प्रबन्ध कर सकें और उस दान का उपयोग साधुओं के लिए भी कर सकें। यद्यपि इस लेख में कूर्चक सम्प्रदाय का उलेख नहीं है तथापि जान पड़ता है कि वारिषेणाचार्य संघ के समान ही अहरिष्टि श्रमण संघ भी कूर्चकों का एक भेद था।

द्राविड़ संघ

द्रविड़ देश में रहने वाले जैन साधु समुदाय का नाम द्राविड़ संघ है। इस संघ के अनेकों लेख प्रस्तुत संग्रह में हैं। इन लेखों में इसे द्रमिड़, द्रविड़, द्रविण, द्रविड, द्राविड, दविल, दरविल या तिवुल नाम से उल्लिखित किया गया है। नामगत ये सब भेद लेखक या उत्कीर्णक के कारण हुए प्रतीत होते हैं। द्रविड़ देश वास्तव में वर्तमान आन्ध्र और मद्रास प्रान्त का कुछ हिस्सा है जिसे सुविधा की दृष्टि से तामिल देश भी कह सकते हैं। इस देश में जैनधर्म पहुँचने का समय बहुत प्राचीन है। उस देश के प्राचीन साधु समुदाय का कोई संघ रहा होगा। उसका क्या नाम था यह हमें मालुम नहीं पर देवसेनाचार्य ने अपने दर्शनसार में अन्य संघों के उत्पत्ति के वर्णन में द्राविड़ संघ के सम्बन्ध में लिखा है कि पूज्यपाद के शिष्य वज्रनन्दि ने वि० सं० ५२६ में दक्षिण मथुरा (मदुरा) में द्राविड़संघ की स्थापना की। इस संघ को वहाँ जैनाभासों में गिनाया गया है और वज्रनन्दि के

---

१. जैन साहित्य और इतिहास (द्वितीय संस्करण) पृष्ठ ५५६-५६३

विषय में लिखा है कि उस दुष्ट ने कछार, खेत, बसदि और वाणिज्य से जीविका निर्वाह करते हुए शीतल जल से स्नान करते हुए प्रचुर पाप अर्जित किया।[1] इस कथन में सच्चाई कहां तक है यह तो हम नहीं कह सकते पर इन लेखों में इस संघ के अनेक प्रतिष्ठित और विद्वान् आचार्यों को देखते हुए ऐसा लगता है कि शायद संघीय विद्वेष के कारण मूलसंघ के उक्त आचार्य ने एक प्राचीन आचार्य के सम्बन्ध में ऐसी कटूक्ति कह दी हो।

इस संघ से सम्बन्धित इस संग्रह के सभी लेख ईस्वी १०-११वीं शताब्दी या उसके ही बाद के हैं। इससे पहले इसकी प्राचीनता का द्योतक शायद ही कोई लेख मिला हो, तथा दसवीं शताब्दी से पहले का ऐसा कोई ग्रन्थ भी नहीं जो इस संघ के इतिहास पर प्रकाश डाले।

इस संघ के प्रायः सभी लेख कोङ्गाल्ववंशी, शान्तरवंशी तथा होय्सल-वंशी राजाओं के राज्यकाल के हैं जिससे ज्ञात होता है कि उन वंशों के नरेशों का इस संघ को संरक्षण प्राप्त था। अधिकांश लेख होय्सल नरेशों के हैं। इन लेखों से यह भी ज्ञात होता है कि इस संघ के आचार्यों ने पद्मावती देवी की पूजा एवं प्रतिष्ठा के प्रसार में बड़ा योग दिया था। इस संघ के कई लेखों में शान्तर और होय्सलवंश के आदि राजाओं द्वारा राज्य सत्ता पाने में पद्मावती के चमत्कार या प्रभाव की सहायता दिखायी गई है। लेखों से यह भी ज्ञात होता है कि इस संघ के साधु बसदि या जैन मन्दिरों में रहते थे। उनका जीर्णोद्धार और ऋषियों को आहार दान, तथा भूमि, जागीर आदि का प्रबन्ध करते थे।

---

१. सिरिपुज्जपादसीसो दाविडसंघस्स कारगो दुट्ठो।
णामेण वज्जणंदी पाहुडवेदी महासत्थो ॥ २५ ॥
पञ्चसए छब्बीसे विक्कमरायस्स मरणपत्तस्स।
दक्खिणमहुरा जादो दाविडसंघो महामोहो ॥ २६ ॥
कच्छं खेत्तं वसहिं वाणिज्जं कारिऊण जीवन्तो।
ण्हंतो सीयलनीरे पावं पउरं च संचेदि ॥ २७ ॥

इस संघ के आदि एवं प्राचीन कुछ लेख होय्सलों के उत्पत्ति स्थान अङ्गदि (सोसेवूर) से ही प्राप्त हुए हैं। इस स्थान के एक लेख नं० १६६ (सन् ९९० के लगभग) में इस संघ को द्रविड संघ कोण्डकुन्दान्वय, तथा दूसरे लेख नं० १७८ (सन् १०४० ई० ?) में मूलसंघ द्रविडान्वय लिखा है। पर ई० ११ वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के लेख नं० १८८,१८९,१९०,१९२,२०२, २१४,२१५,२१६ और २२६ में इसका द्रविड़ गण के रूप में नन्दिसंघ इरुङ्गला-न्वय या अरुङ्गलान्वय के साथ उल्लेख किया गया है। इन निर्देशों से यह अनु-मान होता है कि प्रारम्भ में नव संगठित द्रविड़ संघ ने अपना आधार या तो मूलसंघ को या कुन्दकुन्दान्वय को बनाया होगा पर पीछे यापनीय सम्प्रदाय के विशेष प्रभावशाली नन्दिसंघ में इस सम्प्रदाय ने अपना व्यावहारिक रूप पाने के लिए उससे विशेष सम्बन्ध रखा या द्रविड़ गण के रूप में उक्त संघ के अन्त-र्गत हो गया। पीछे यह द्रविड़ गण इतना प्रभावशाली हुआ कि उसे ही संघ का रूप दे दिया गया और साथ में कुछ लेखों (२१३-२१५) में नन्दिसंघ को नन्दिगण के रूप में निर्दिष्ट किया गया पर पीछे उसको उसी रूप (नन्दिसंघ) में उल्लेख किया गया है। दर्शनसार (१० वीं शता०) में द्रविड़ संघ को यापनीयों के साथ जो जैनाभास कहा गया है, वह संभव है, इस ओर ही संकेत कर रहा है।

होय्सलों के उत्पत्तिस्थान अङ्गदि (सोसेवूर) से इस संघ के आदि एवं प्राचीन लेखों की प्राप्ति से हम अनुमान करते हैं कि इस संघ के प्रारम्भिक आचार्यों ने जैन धर्म संरक्षक होय्सल नरेशों को ऊपर उठाने में अवश्य सहायता की होगी, अथवा प्रगतिशील दोनों—राज्य एवं संघ—ने एक दूसरे को बढ़ाने की कोशिश की होगी[1]। होय्सल वंश के अनेकों नरेश और सेनापति इस संघ के

१. बहुत संभव है कि होय्सल वंश के समुद्धारक सुदत्तमुनि (४५७) या वर्धमान मुनि (६६७) लेख नं० १६६ में आये त्रिकाल मौनि देव हों या विमलचन्द्राचार्य के सधर्मा कोई और मुनि हों।

भक्त थे हालां कि उन्होंने अपनी भक्ति एवं आदर दूसरे जैन संघों के प्रति भी प्रदर्शित किया है। धार्मिक उदारता सचमुच में उस युग की देन थी।

इसके बाद इस नवीन संघ के एक प्रमुख आचार्य के रूप में वज्रपाणि पण्डित का नाम आता है। लेख नं० १७८ में इन्हें द्रविड़ान्वय मूलसंघ का तथा नं० १८५ में सूरस्थ गण का लिखा है। पिछले लेख में उनकी एक गृहस्थ शिष्या के दान का उल्लेख है। लेख नं० १७८ की शुरू की पक्तियां भग्न हैं पर 'तर्कोच्चालित' आदि विशेषणों से प्रतीत होता है कि थे बड़े तार्किक थे। ये होय्सल नरेश राचमल्ल भूपाल (नृपकाम) के गुरु थे और इन्होंने होय्सलों के उत्पत्तिस्थान सोसेवूर में अपना जीवन बिता कर संन्यास मरण किया था। लेख में यद्यपि काल निर्देश नहीं है फिर भी उनका समय द्रविड़ संघ का प्रथम साहित्यिक उल्लेख करने वाले ग्रन्थ दर्शनसार और होय्सल नृपकाल के समय के आसपास होना चाहिये। देवसेनाचार्य के दर्शनसार में जिस वज्रनन्दि का वर्णन किया गया है और उनके द्वारा प्रवृत्त जिस शिथिलाचार की ओर संकेत किया गया है, उससे प्रतीत होता है कि इस संघ की स्थापना देवसेन के समय (१० वीं शता०) या उससे कुछ पूर्व हुई है। वि० सं० ५२६* के जिस वज्रनन्दि को ग्रन्थकर्ता ने शिथिलाचार फैलाने का दोषी ठहराया है, उसका उल्लेख किसी लेख या उनसे पूर्व किसी ग्रन्थ में नहीं मिलता। फिर जिन कटुशब्दों द्वारा एक संघ के अनुयायी द्वारा दूसरे संघ के प्रतिष्ठापक आचार्य की भर्त्सना की गई इससे प्रतीत होता है कि वे समकालीन या कुछ ही समय पूर्ववर्ती रहे होंगे। संभव है इस लेख के वज्रपाणि ही वज्रनन्दि हों, पर इस अनुमान की पुष्टि के लिए अभी और प्रमाणों की आवश्यकता है।

वज्रपाणि पण्डित की आगे पीछे की गुरुपरम्परा का वर्णन हमें किसी लेख से प्राप्त नहीं हुआ। इसके बाद इस संघ के लेखों में नन्दिसंघ के आचार्यों की परम्परा चलने लगती है। इस संघ के अनेकों ऐसे लेख हैं जो कि पट्टावली कहे जा सकते हैं पर उनमें गुरुपरम्परा का क्रम व्यवस्थित न होने से कम से कम प्राचीन आचार्यों के क्रम पर विश्वास नहीं किया जा सकता। अनेकों लेखों

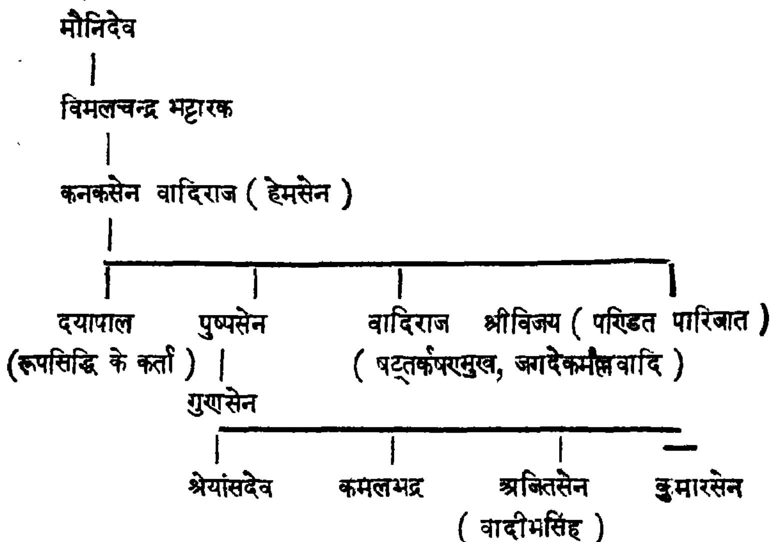
(२१३-२१४ आदि) में वर्धमान, एवं गौतमस्वामी के उल्लेख पूर्वक कतिपय प्रसिद्ध जैनाचार्यों का निर्देश किया गया है—जैसे कोण्डकुन्दाचार्य, भद्रबाहु, समन्तभद्र-स्वामी, सिंहनन्दि, अकलंक देव, वज्रनन्दि, पूज्यपाद स्वामी आदि। इन लेखों में यह दिखाने का प्रयत्न किया गया है कि प्रायः सभी प्रतिष्ठित प्राचीन आचार्य द्रविड़ संघ के नन्दिसंघ के अन्तर्गत थे। हम पहले संभावना कर चुके हैं कि नन्दि संघ द्रविड़ संघ में यापनीय संघ से आया है। नन्दिसंघ की एक प्राचीन प्राकृत पट्टावली भी है[1] जिसमें भगवान् महावीर के बाद ६८३ वर्षों तक की परम्परा दी गई है। उसके बाद के क्रम का उल्लेख करने वाली कोई प्रामाणिक पट्टावली उपलब्ध नहीं होती। संभव है द्रविड़ संघ में आकर नन्दिसंघ के पश्चात्कालीन आचार्यों ने अपनी स्मृति से कुछ परम्परा को सुरक्षित रखने के लिए लेखों में उक्त आचार्यों का निर्देश किया हो। यह निर्देश सूचित करता है कि उक्त आचार्य उस नन्दिसंघ के अन्तर्गत थे जो कि प्रारम्भिक शताब्दियों में याप-नीय था।

इस संघ के अन्तर्गत नन्दिसंघ के साथ प्रत्येक लेख में अरुङ्गलान्वय का उल्लेख मिलता है। अरुङ्गलान्वय किसी स्थानविशेष की अपेक्षा सूचित करता है। अरुङ्गल नाम का स्थान भी तामिल प्रान्त के गुडियपत्तन तालुका में है जो कि एक प्राचीन जैन स्थान था। हम यापनीय संघ के वर्णन में देख चुके हैं कि तामिल प्रान्त में यापनीय नन्दिसंघ का अस्तित्व पूर्वीय चालुक्यों के राज्य में था। द्रविड़ संघ, नन्दिसघ, अरुङ्गलान्वय इन तीनों शब्दों का एकत्र प्रयोग हमें निःसन्देह सूचित करता है कि वह तामिल प्रान्त का नन्दिसंघ था जो कि अरुङ्गल स्थान से उद्भूत हुआ था। इससे अब हमें यह कहने में संकोच न होना चाहिये कि तामिल प्रान्त के यापनीयों के नन्दिसंघ से ही द्रविड़ सघ के नन्दि-संघ को उत्तराधिकार मिला था।

---

१. षट्खंडागम, पुस्तक १, पृ० २४-२७। संभव है यह पट्टावली प्राचीन याप-नीय नन्दिसंघ की हो।

११-१२ वीं शताब्दी में इस संघ के मुनियों की गद्दियाँ कोङ्गाल्व राज्य के मुल्लूर तथा शान्तर राजाओं की राजधानी हुम्मच में थीं। हुम्मच से प्राप्त लेख नं० २१३-२१६ में इस संघ के अनेकों आचार्यों का परिचय मिलता है। इनमें श्रेयांस पण्डित, उनके सधर्मा कमलभद्र और वादीभसिंह अजितसेन पण्डित के पूर्ववर्ती और समकालीन आचार्यों की परम्परा दी गई है। जो इस प्रकार है:—



इनमें मौनिदेव और विमलचन्द्र भट्टारक वे ही मालुम होते हैं जिनका उल्लेख अंगदि से प्राप्त लेख नं० १६६ (लगभग ६६० ई०) में द्रविड़ संघ कुन्दकुन्दान्वय के आचार्य के रूप में किया गया गया है। शायद ये ही द्रविड़ संघ के आदि प्रवर्तक आचार्य रहे हों। कनकसेन वादिराज का दूसरा नाम लेख नं० २१३ और २१५ में हेमसेन दिया गया है। संस्कृत में कनक और हेम का अर्थ भी एक होता है। इन्हें श्रीविजय, वादिराज, दयापाल आदि के गुरु के रूप में कहा गया है। वादिराज की उपाधियाँ षट्तर्कषण्मुख और

जगदेकमल्लवादी थीं। वादिराज भी हमें एक उपाधि मालुम होती है, क्योंकि लेख नं० ३४७ में इनका असली नाम श्री वर्धमान जगदेकमल्ल वादिराज दिया गया है। इनके सधर्मा रूपसिद्धि नामक व्याकरण ग्रन्थ के कर्ता दयापाल थे। मल्लिषेण प्रशस्ति (२६०, प्रथम भाग ५४) में उपर्युक्त पट्टावली के अनेकों आचार्यों का उल्लेख तथा प्रशंसावाक्य दिये गये हैं। उसमें वादिराज के गुरु का नाम मतिसागर दिया गया है और दयापाल को उनका सधर्मा माना गया है। उसी प्रशस्ति के ३५ वें पद्य में मतिसागर की प्रशंसा के बाद ३६-३७वें पद्य में हेमसेन मुनि की प्रशंसा की गई है, पर दोनों आचार्यों का कोई सम्बन्ध नहीं बतलाया गया। हेमसेन तो निःसन्देह हुम्मच के उक्त दोनों लेखों के कनकसेन वादिराज (हेमसेन) ही हैं। पर वादिराज के गुरु मतिसागर भी थे, यह बात हमें उनकी षट्तर्कषण्मुख प्रतिभा के परिचायक उनके न्यायशास्त्र के ग्रन्थ न्यायविनिश्चयविवरण की प्रशस्ति से मालुम होती है। लेखों से यह सिद्ध होता है कि मतिसागर और हेमसेन (कनकसेन) दो व्यक्ति थे। संभव है एक तो वादिराज के दीक्षागुरु और दूसरे विद्यागुरु रहे हों। हमारे इस आशय का समर्थन न्यायविनिश्चयविवरण की प्रशस्ति के दूसरे पद्य से भी होता है जहाँ श्लेषात्मक ढंग से जिनेन्द्र की स्तुति करते हुए वादिराज ने 'सन्मतिसागरकनकसेनाराध्यम्' लिखा है। वादिराज बड़े ही विद्वान्, लेखक एवं वादी आचार्य थे। इन्हें चालुक्य नरेश जयसिंह तृतीय जगदेकमल्ल (सन् १०१६-१०४४) ने जगदेकमल्लवादि नामक उपाधि दी थी (२६० पद्य ४२, प्रथम भाग ५४)। लेख नं० २१५ में इन्हें अकलंक, धर्मकीर्ति और अक्षपाद के प्रतिनिधिरूप माना गया है।

वादिराज के अन्य सधर्माओं में पुष्पसेन और श्रीविजय पण्डित थे। पुष्पसेन हमें वे ही प्रतीत होते हैं जिनकी पादुकाओं की स्थापना का स्मारक लेख नं० १७७ (सन् १०३० के लगभग) में है। इनके शिष्य का नाम गुणसेन था जिनके कई लेख मुल्लूर से प्राप्त हुए हैं। ये कोङ्गाल्व नरेश राजेन्द्र चोल के कुलगुरु थे (१८८-१६२)। लेख नं० २०१ में इन्हें पोय्सलाचारि लिखा

है जिससे ज्ञात होता है कि इनका प्रभाव होय्सल राजाओं पर भी था। लेख नं० २०२ (सन् १०६४ ई०) इनके समाधिमरण का स्मारक है और उन्हें द्रविल-गण, नन्दिसंघ, अरुङ्गलान्वय का नाथ तथा अनेक शास्त्रों का वेत्ता लिखा है। लेख नं० १७७ और लेख नं० २०२ में अंकित वर्षों से ज्ञात होता है कि ये ३४ वर्षों (१०३० ई०–१०६४ ई०) तक बराबर जिनशासन की प्रभावना करते रहे। हुम्मच के लेख नं० २१३ में इनका नाम वादिराज के बाद की पीढ़ी के आचार्यों में दिया गया है और मल्लिषेण प्रशस्ति के पद्य ५३ में इनकी प्रशंसा की गयी है।

श्रीविजय पण्डित के सम्बन्ध में लेख नं० २१३ से विदित होता है कि वे अनेक प्रतिष्ठित आचार्यों के गुरु थे। उनका दूसरा नाम वोडेयदेव या ओडेयदेव था जो कि तिर्यगुडि के निडुम्बरे तीर्थ, अरुङ्गलान्वय, नन्दिगण के अधीश्वर थे। इन्हें तामिल प्रान्त (तामेल्लरु) से सम्बन्धित बताया गया है (२१४) पर इनका अधिक समय हुम्मच में बीता था ऐसा उक्त स्थान से प्राप्त लेखों से मालुम होता है। इनके गृहस्थ शिष्यों में नन्नि शान्तर एवं प्रसिद्ध जैन महिला चट्टलदेवी प्रमुख थे।

श्रीविजय के शिष्यों में श्रेयांसदेव को लेख नं० २१३ में उर्वीतिलक जिना-लय का प्रतिष्ठापक लिखा है। दूसरे शिष्य कमलभद्र लेख नं० २१४ और २१६ के अनुसार भुजबल शान्तर आदि तथा चट्टल देवी द्वारा सम्मानित थे। तीसरे शिष्य अजितसेन[1] बड़े ही विद्वान् थे। उनकी कई उपाधियाँ थीं—जैसे शब्द-

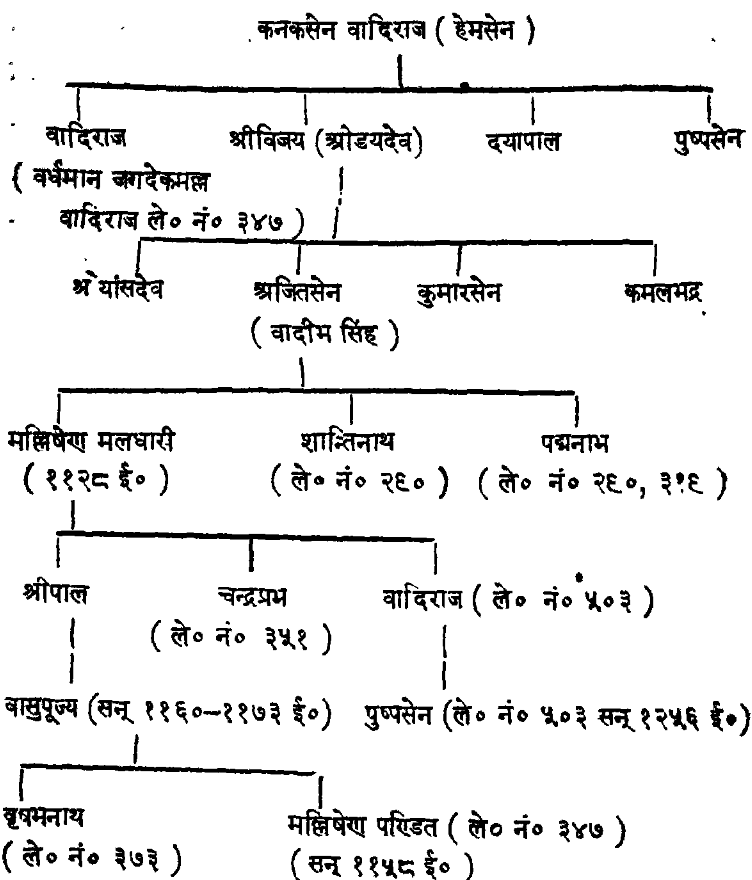
---

१. कुछ विद्वान् इन अजितसेन वादीभसिंह का गद्यचिन्तामणि और क्षत्रचूडामणि के कर्ता वादीभसिंह अजितसेन से साम्य स्थापित करते हैं, पर यह ठीक नहीं क्योंकि ग्रन्थकर्ता अजितसेन के गुरु का नाम पुष्पसेन था। इस लेख के अजितसेन के गुरु सधर्मा एक पुष्पसेन अवश्य थे पर वे ग्रन्थकर्ता अजितसेन के गुरु थे यह लेखों से नहीं ज्ञात होता।

चतुर्मुख, तार्किकचक्रवर्ती एवं वादीभसिंह (२१४)। लेख नं० २४८ में इन्हें वादिघरट्ट, तार्किक चक्रवर्ती, एवं वादीभपञ्चानन कहा गया है। ये विक्रम शान्तर द्वारा पूजित थे। उसने पञ्चवसदि जिनालय के लिए इन्हें ग्रामादि भेंट में दिये थे (२२६)। पीछे विक्रम शान्तर के पुत्र त्रिभुवनमल्ल शान्तर ने अपनी दादी की स्मृति में इन्हीं गुरु का स्मरण कर एक मन्दिर का शिलान्यास किया था (२४८)। इन मुनि के अन्तिम समय का स्मारक लेख नं० १३२ है जिसका समय लगभग १०६० ई० दिया गया है। लेख नं० २१४ में इनके सधर्मा मुनि कुमारसेन का नाम दिया गया है जो कि वैद्यगजकेशरी थे। लेख नं० २१३ में इनके समकालीन शान्तिदेव और दयापाल नामक दो मुनियों का उल्लेख है। शान्तिदेव के सम्बन्ध में मल्लिषेण प्रशस्ति में लिखा है कि इनके पवित्र पादकमलों की पूजा होय्सल विनयादित्य द्वितीय (सन् १०४७ से, ११०० ई०) करता था। लेख नं० २०० से भी यह बात समर्थित होती है। इस लेख के अनुसार सन् १०६२ में इनकी मृत्यु के उपलक्ष्य में एक स्मारक खड़ा किया गया था। दयापाल के सम्बन्ध में मल्लिषेण प्रशस्ति में केवल प्रशंसा पद दिये गये हैं।

हुम्मच के लेखों से प्राप्त इतिवृत्त के बाद इस संग्रह के अनेकों लेखों से[1] जो संघ की आचार्यपरम्परा ज्ञात होती है वह इस प्रकार है—

१—इस सग्रह के अन्य लेख हैं—२६४, २६५, २७४, २८७, २८८, २९० ३०५, ३१९, ३२६, ३२७, ३४७, ३५१, ३७३, ३७५, ३७९, ३८०, ४१०, ४२५ और ४९६.



मूलसंघ के गण, गच्छ एवं अन्वय

हम पहले लिख चुके हैं कि यापनीय और द्रविड संघ के वर्णन के बाद मूलसंघ के गण गच्छादि का लेखों से प्राप्त होने वाले वाला परिचय देंगे। इसके सम्बन्ध में ११ वीं शताब्दी के आचार्य इन्द्रनन्दि के श्रुतावतार में और उसके

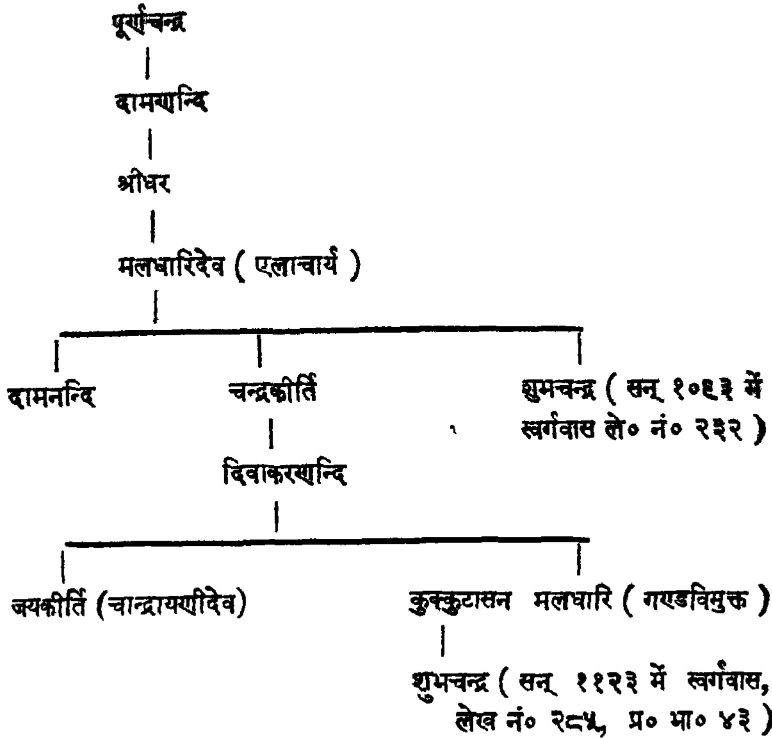
प्रस्तुत संग्रह में देशियगण से संबन्धित ६५-७० लेख हैं पर कुछ ऐसे लेख हैं जिनसे ७-८ आचार्यों का एक गुरुवंश बन सकता है और कुछ से गण की विभिन्न पट्टावलियां। लेखों के पर्यालोडन से विदित होता है कि कर्नाटक प्रान्त के कई स्थानों में इस गण के केन्द्र थे। उन स्थानों में हनसोगे (चिक हनसोगे) प्रमुख था। यहाँ के आचार्यों से ही पीछे इस गण की हनसोगे बलि या गच्छ निकले हैं। गच्छ का साधारण अर्थ होता है शाखा और बलि (कन्नड शब्द बलय या बलग) का अर्थ होता है परिवार = आध्यात्मिक परिवार या समुदाय।

चिक हनसोगे से प्राप्त लेख नं० १७५, १६५, १६६ और २२३ से विदित होता है कि यहाँ इस गण की अनेक बसदियाँ (मन्दिर) थीं, जिन्हें चङ्गाल्व नरेशों द्वारा संरक्षण प्राप्त था। हनसोगे (पनसोगे) बलि या गच्छ के आचार्यों की लेख नं० २२३, २३२, २३६, २४१, २५३, २६६, २८४ एवं २८५ कीसहायता से प्राप्त एक परम्परा अगले पृष्ठ पर दी गई है। इसका बहुत कुछ समर्थन धवला के अन्त में दी गई आचार्य शुभचन्द्र सिद्धान्तदेव की ग्रन्थप्रशस्ति से भी होता है[१]।

लेखों से प्राप्त इस गुरुपरम्परा में और प्रशस्ति में दी गई परम्परा में कुछ अन्तर है। प्रशस्ति में गुरुवंश कुन्दकुन्द, गृद्धपिच्छ और बलाकपिच्छ से चला है और इस परम्परा के पूर्णचन्द्र को देशिय गण के प्रतिष्ठापक देवेन्द्र सिद्धान्त से जोड़ने का प्रयत्न हुआ है। उनके बीच में वसुनन्दि और रविचन्द्र सिद्धान्तदेव नामक दो आचार्यों का नाम दिया गया है। देवेन्द्र सिद्धान्त के पहले गुणनन्दि पण्डित का नाम भी रखा गया है। मालुम होता है कि प्रशस्ति के आधार १२वीं शताब्दी के द्वितीय, तृतीय दशकों के लेख (२५५, २८५ आदि) रहे होंगे। प्रशस्ति के तथा अन्य लेखों के द्वितीय शुभचन्द्र सिद्धान्त देव प्रसिद्ध सेनापति गंगराज के गुरु थे।

---

१. षट्खण्डागम, पुस्तक पृष्ठ ७–१०।



इस गण की एक और शाखा का नाम इंगुलेश्वर बलि है जिसके आचार्य गण प्राय: कोल्हापुर के आस पास रहते थे (४११ एवं ५७१ आदि)। इस से सम्बन्धित अनेकों लेख (४११,४६५, ५१४, ५२१, ५२४, ५२८, ५७१, ५८४, ५९६, ६००, ६२५ और ६७३) हैं पर इन लेखों से इस गण की ठीक गुरुपरम्परा नहीं दी जा सकती। १२-१३ वीं शताब्दी के लेखों में माघनन्दि आचार्य का नाम प्रथम दिया गया है (४११, ४६५, ५१४ आदि)। १४ वीं-१५ वीं शताब्दी लेखों में अभयचन्द्र और उसके शिष्य श्रुतमुनि का नाम आगे आता है तथा १६ वीं शताब्दी के लेखों में चारुकीर्ति का नाम।

लेख ४७८ में इस गण की एक बाणद बलिय का नाम दिया गया है।

इस गण का प्रसिद्ध एवं प्रमुख गच्छ पुस्तक गच्छ है। जिसका कि उल्लेख अधिकांश लेखों में है। इसी गच्छ का दूसरा नाम वक्रगच्छ है (२५६, प्रथम भा० ५५ और ४२६)।

नन्दिगणः—मूलसंघ, कोण्डकुन्दान्वय, देशियगण, पुस्तक गच्छ से सम्बन्धित तथा सन् १११५ से ११७६ ई० के बीच के श्रवणबेल्गोल से प्राप्त लेख नं० २५५ (४७) २८५ (४३) ३३२ (५०) ३६२ (४०) और ३८८ (४२) में आचार्यों की कई पट्टावलियां दी गई हैं। इनमें बीच या अन्त में आचार्यों के साथ मूलसंघ देशियगण आदि लिखा है पर आदि में दो चार मंगलाचरण के श्लोकों के बाद केवल नन्दिगण का उल्लेख कर एक सामान्य परम्परा दी गई है जो इस प्रकार है:—

पद्मनन्दि (कोण्डकुन्द)
उनके अन्वय में
|
उमास्वाति (गृद्धपिच्छ)
|
बलाकपिच्छ
|
गुणनन्दि
|
देवेन्द्र सैद्धान्तिक
|
कलधौतनन्दि

लेख नं० ३६२ की थोड़ी विशेषता यह है कि बलाकपिच्छ के बाद समन्तभद्र, देवनन्दि (पूज्यपाद) और अकलंक का नाम दिया गया है। इनमें गुणनन्दि,

देवेन्द्र सिद्धान्त आदि देशियगण की परम्परा से सम्बन्धित हैं यह हम पहले देख चुके हैं पर उनके पहले के कोण्डकुन्दाचार्य, उमास्वाति, समन्तभद्र आदि आचार्यों के नाम द्रविड संघ से सम्बन्धित नन्दिगण के ११ वीं शताब्दी के लेखों (२१३, २१४, २८७ आदि) में भी दिखाई देते हैं। इस तरह मूलसंघ और द्रविडसंघ के लेखों में नन्दिगण के प्राचीन आचार्यों के प्राय: एक से नामों को देखकर ऐसा लगता है कि इन दोनों संघों में कोई प्राचीन नन्दिगण (संघ) बाहर से शामिल किया गया होगा, तथा ये सब आचार्य उसी गण के रहे होंगे और इस विषय में हम संकेत भी कर आये हैं कि यापनीय संघ के नन्दिसघ को ही द्रविड संघ और मूलसंघ ने अपनाया था। यापनीय संघ के साथ नन्दिसंघ के प्रगट या अप्रगट रूप से किये गये कतिपय उल्लेखों से यह ज्ञात होता है कि यापनीयों में नन्दिसंघ महत्त्वपूर्ण था (१०६, १२१, १२४, १४३)। प्राकृत भाषा में नन्दिसंघ की जो प्राचीन पट्टावली उपलब्ध है वह संभव है इसी संघ की थी[1]। उसमें वीर निर्वाण सं० ६८३ तक की वंशपरम्परा दी गई है। संस्कृत में नन्दिसंघ की एक और पट्टावली उपलब्ध है[2] पर वह मूलसंघ के पश्चात्कालीन आचार्यों की है उसका प्राकृत पट्टावलि से कोई सम्बन्ध नहीं।

इस सम्भावना के बाद उपर्युक्त मूलसंघ के लेखों में जो पट्टावलियाँ दी गई हैं उन पर हम संक्षिप्त में कह देना चाहते हैं कि लेख नं० २५५ (४७) और ३२२ (५०) में प्राय: एकसी गुरुपरम्परा दी गई है पर वह कलधौतनन्दि के बाद देशिय गण के उपर्युक्त निर्दिष्ट अन्य लेखों से नहीं मिलती। लेख नं० ३६२ (४०) में देशिय गण को नन्दि गण का प्रभेद कहा गया है और उसमें जो पट्टावली दी गई है वह जैन शिलालेखसंग्रह के प्रथम भाग की भूमिका के पृष्ठ सं० १३२ में अङ्कित है। लेख नं० २८५ (४३) में कलधौतनन्दि एवं रविचन्द्र के बाद जो गुरुपरम्परा मिलती है वह देशिय गण इनसोगे बलि की पट्टा-

---

१. षट्खण्डागम, पुस्तक १, पृष्ठ २४-२७

२. जैन सिद्धान्त भास्कर, भाग १, किरण ४ पृष्ठ ७१, ८१.

वली में हमने जो दी है वही है। लेख नं० ३८८ (४२) में इनलोगों बलि के मलधारि देव के बाद एक दूसरी गुरुपरम्परा दी गई है जो उक्त लेख से जान लेना चाहिये।

इसके बाद लेख नं० ५८६ (१०५, १४वीं शताब्दी) और ६२५ (१०८, १५ वीं शताब्दी) में नन्दिगण को नन्दिसंघ कहा गया है और उसे मूलसंघ के अर्थ में प्रयुक्त किया है। इन दोनों लेखों में सेन, नन्दि, देव और सिंह संघों का एक काल्पनिक इतिहास दिया गया है। लेख नं० १०५ के ऐतिहासिक महत्त्व के लिए प्रथम भाग की भूमिका के पृष्ठ १२४-१२७ देखें। ये दोनों लेख एक सुन्दर काव्य कहे जा सकते हैं।

सूरस्थगणः—मूलसंघ का एक गण सूरस्थ गण नाम से प्रसिद्ध था यह लेख नं० १८५ २३४, २६६, ३१८, ४६० और ५४१ से ज्ञात होता है। लेखों में इसका सूरस्त, सुराष्ट्र एवं सूरस्थ नाम से उल्लेख है। इन लेखों में इसके अन्वय गच्छ आदि का निर्देश नहीं है पर इस संग्रह के बाहर के कुछ लेखों से ज्ञात होता है कि इसमें चित्रकूट अन्वय या गच्छ था[1]। सूरस्थ एवं सूरस्त नाम कैसे पड़े यह कहना कठिन है। सुराष्ट्र नाम से प्रतीत होता है कि इस गण के साधु शुरू में सुराष्ट्र देश में रहते रहे होंगे, पर सुराष्ट्र का प्राकृत या अपभ्रंश रूप तो सुरट्ठ होता है सूरस्थ नहीं। संभव है उत्कीर्णक ने सुरट्ठ का पुनः संस्कृत रूप देने के प्रयत्न में सूरस्थ कर दिया हो पर यह भी एक दो लेख में सम्भव था सब में नहीं। इस तरह सूरस्थ गण की व्युत्पत्ति अब भी भ्रान्त है। हो सकता है कि कोई सूरस्त नाम का दक्षिण भारत में क्षेत्र हो जहाँ से इस गण के मुनियों ने अपना नाम ग्रहण किया हो।

सूरस्थ गण का सर्वप्रथम उल्लेख सन् ९६४ के एक जैन लेख में मिलता है। कहा जाता है कि सूरस्थ गण प्रारम्भ में मूल संघ के सेनगण से सम्बन्धित था[2]।

---

१. जैन एन्टीक्वेरी, भाग ११, अंक २, पृष्ठ ६३, ६५

२. जैनिज्म इन साउथ इण्डिया, लेख नं० ४६ पृष्ठ ३६७-३७४ (जीवराज ग्रन्थमाला सोलापुर)

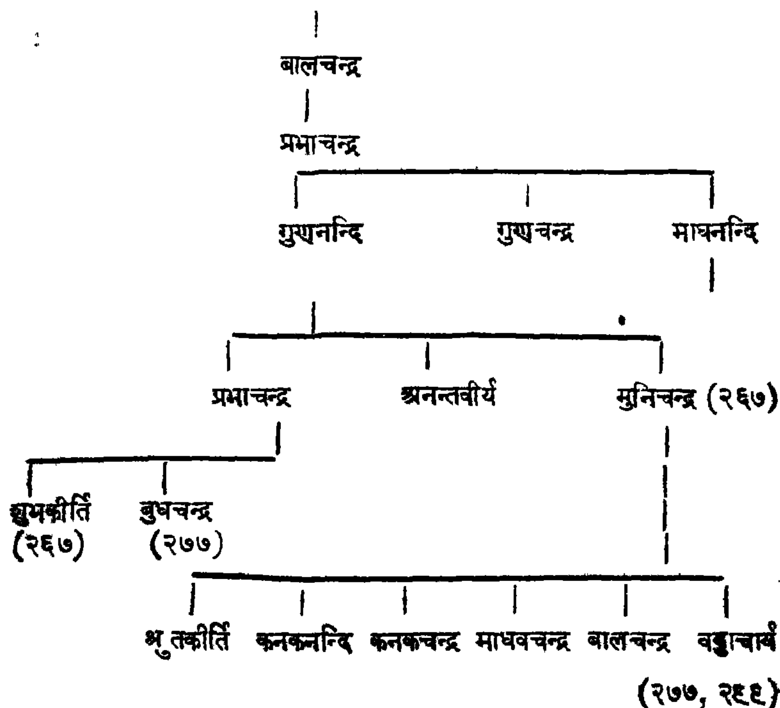
इसके बाद प्रस्तुत संग्रह के ११ वीं शताब्दी के पूर्वार्ध के लेख नं० १८५ में इसका उल्लेख है जहाँ यह मूलसंघ के साथ द्रविड़ान्वय से युक्त है। इस पर हम अनुमान करते हैं कि द्रविड़ संघ के आदि गठन काल में, संभव है, इस गण के साधुओं ने भाग लिया हो या उस संघ के साधुगण मूलसंघ सुरस्थ गण में सम्मिलित रहे हों। इस गण के लेख, ११ वीं के पूर्वार्ध से लेकर १३ वीं शता० के अन्त तक के मिलते हैं। सभी लेख छोटे हैं केवल लेख नं २६६ को छोड़कर। इसमें सौभाग्य से इस गण की एक छोटी पट्टावली दी गई है जो इस प्रकार है:— अनन्तवीर्य, बालचन्द्र, प्रभाचन्द्र, कल्नेलेय देव (रामचन्द्र), अष्टोपवासि, हेमनन्दि, विनयनन्दि, एकवीर और उनके सधर्मा पल्लपण्डित (अभिमानदानिक)। लेख में पल्ल पण्डित की बड़ी प्रशंसा है। इनका समय सन् १११८ ई० (२६६) दिया गया है। इस गण के किसी भी लेख में कुन्दकुन्दान्वय का उल्लेख नहीं है। संभव है यह गण मूलसंघ की प्रभावशालिनी कुन्दकुन्दान्वय धारा में स्थान न पाने के कारण पिछली शताब्दियों में अपनी स्थिति को न सम्हाल सका हो।

क्राणूर गणः—क्राणूर गण के सम्बन्ध में यापनीय संघ के विवेचन में हम संभावना प्रकट कर आये हैं कि क्राणूर गण यापनीयों के कण्डूर गण के नाम का शब्दानुकरण है। कण्डूर या क्राणूर दोनों किसी स्थान विशेष को सूचित करते हैं जहाँ से कि उक्त गण के साधु समुदाय ने नाम ग्रहण किया है। इस गण के ११ वीं शताब्दी के उत्तरार्ध (२०७, सन् १०७४ ई०) से लेकर १४ वीं शताब्दी के अन्त तक लेख मिलते हैं। इस संग्रह में १७-१८ लेख इस गण से सम्बन्धित हैं जिनसे मालुम होता है कि इसमें प्रसिद्ध दो गच्छ थे—मेषपाषाण गच्छ (२१६, २६७, २७७, २६६, ३५३) तथा तिन्त्रिणीक गच्छ (२०६, २६३, ३१३, ३७७, ३८६, ४०८, ४३१, ४५६, ५८२)। मेषपाषाण का अर्थ है मेषों के बैठने का पाषाण। यह कोई स्थल विशेष होना चाहिए जहाँ से इस गण के के साधुओं का शुरू शुरू में सम्बन्ध रहा होगा। तिन्त्रिणीक एक वृक्ष का नाम है। ये पाषाणान्त और वृक्ष परक नाम इस गण के यापनीय संघ के साथ पूर्व सम्बन्ध

की स्मृति दिलाते हैं¹।

लेख नं० २६७, २७७ और २६६ से मेषपाषाणगच्छ की इस प्रकार गुरु-परम्परा प्राप्त होती है (तिथिक्रम के अनुसार लेख नं० २६६ (पुरले) को सबसे पहले होना चाहिए)।

सिंहनन्दि आदि अनेकों आचार्यों के नाम बिना किसी सम्बन्ध को दिखाये

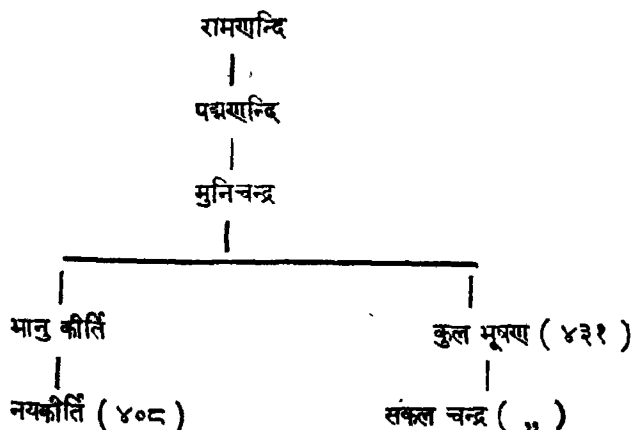


१. यापनीयों में श्रीमूलमूलगण पुन्नागवृक्षमूलगण तथा कनकोपल (कनकपाषाण) आदि गण थे। गण एवं गच्छ पीछे एकार्थ में भी प्रयुक्त हुए हैं।

इन लेखों में मूलसंघ कुन्दकुन्दान्वय के नाथ स्वरूप सिंहनन्दि आचार्य का उल्लेख है जिन्हें गंग महीमण्डलिककुलसंवरण या समुद्धरण कहा गया है। लेख नं २७७ में अर्हद्बलि, बेट्टद-दामनन्दि भट्टारक, बालचन्द्र भट्टारक, मेघचन्द्र त्रैविद्य आदि आचार्यों के नाम बिना किसी सम्बन्ध बताये दिए गये हैं।

इन लेखों से ज्ञात होता है कि ११-१२ वीं शताब्दी के गंगनरेश भुजबल गंग बर्मदेव उसकी रानी गंग महादेवी तथा चार पुत्र मारसिंग, नन्निय गंग, रक्कस गंग और भुजबल गंग चौथी और पांचवी पीढ़ी के आचार्यों के भक्त थे और उन्हें दानादि से सम्मानित किया था।

क्राणूर गण के तिन्त्रिणीक गच्छ की आचार्य परम्परा लेख नं० ३१३, ३७७ ३८६, ४०८ और ४३१ से इस प्रकार मालुम होती है।



इनमें मुनिचन्द्र और उनके शिष्य की लेखों में बड़ी प्रशंसा है। वे कल्याणी के चालुक्यों के अधीन सामन्तों के गुरु थे। भानुकीर्ति यंत्र, तंत्र, मंत्र में प्रवीण थे। वे बन्दणिकापुर के अधिपति थे (३७७) तथा मण्डलाचार्य कहलाते थे और इस पद पर करीब ४० वर्ष तक रहे (३१३, ४०८)।

मूलसंघ के देशिय गण और क्राणूर गण की अपनी बसदियाँ होती थीं और इन दोनों में वास्तविक भेद था यह बात हमें दडिग से प्राप्त एक लेख से मालूम होती है जिसमें लिखा है कि होय्सल सेनापति मरियाने और भरत ने दडिगणकेरे स्थान में पाँच बसदियाँ बनवायी थीं उनमें चार तो देशिय गण के लिए और एक क्राणूर गण के लिए[1]।

१४ वीं शताब्दी के बाद क्राणूर गण का प्रभाव बलात्कार गण के प्रभावशाली भट्टारकों के आगे क्षीण हो गया। इसके बाद इसके विरले ही उल्लेख मिलते हैं।

बलात्कार गणः—इस गण के सम्बन्ध में हम कह चुके हैं कि नामसाम्य को देखते हुए यह यापनीयों के बलिहारि या बलगार गण से निकला है। बलिहारि और बलगार, सम्भव है, स्थान विशेष के सूचक हैं[2] पर उससे निकले बलात्कार शब्द से ऐसा सूचित नहीं होता। बलात्कार शब्द का अर्थ पीछे १६ वीं शताब्दी के विद्वानों ने बतलाया है कि: चूंकि इस गण के आदि नायक पद्मनन्दि आचार्य ने सरस्वती को बलात्कार से बुलाया था इसलिए बलात्कार गण और सरस्वती गच्छ नाम प्रसिद्ध हुआ[3]। जो हो, लेखों से बलात्कार के इस अर्थ की कोई सूचना नहीं मिलती।

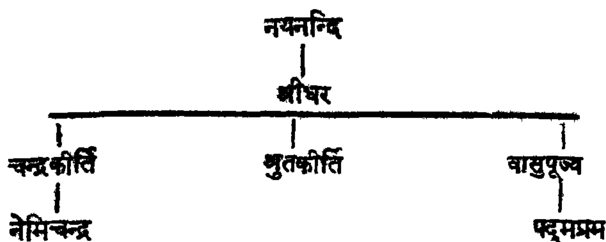
बलात्कार गण का सर्व प्रथम नाम ले० नं० २०८ (सन् १०७५ ई० के लगभग) में मिलता है जिसमें इस गण के चित्रकूटाम्नाय के मुनि मुनिचन्द्र और उनके शिष्य अनन्तकीर्ति का उल्लेख है। लेख २२७ (सन् १०८७ ई०) में इस गण के कुछ मुनियों की परम्परा दी गई है जो निम्न प्रकार है:—

---

१. जैन एन्टीक्वेरी भाग ६, अंक २, पृष्ठ ६६, नं० ५८

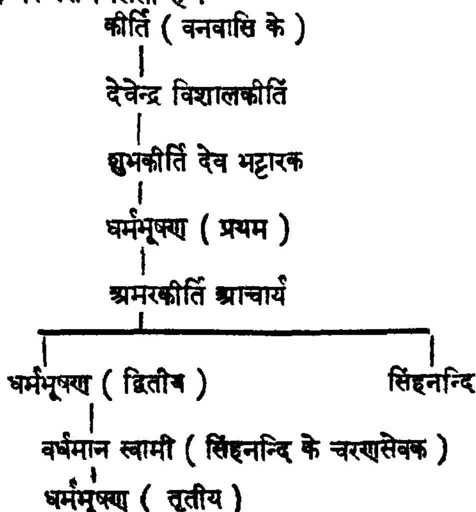
२. दक्षिण भारत में बलगार नामक एक गांव था (मेडीवल जैनिज्म, पृष्ठ ३२७)

३. जैन साहित्य और इतिहास (प्र० सं०) पृष्ठ ३४३।



लेख के अन्त में गण का नाम बालत्कार गण दिया गया है। इसके बाद लेख नं० २४६ और ४४४ में इस गण के मुनि कुमुदचन्द्र भट्टारक व कुमुदेन्दु का नाम तथा उन्हें कुछ सेट्टियों द्वारा दान का उल्लेख है। लेखों में कोई समय नहीं दिया गया। इसके बाद चौदहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध तक इस गण के कोई लेख नहीं है। चौदहवीं शता० के उत्तरार्ध के लेखों से इस गण का विशेष प्रभाव द्योतित होता है। विजयनगर साम्राज्य के नरेश इनका सम्मान करते थे। लेख नं० ५६६ में वीर बुक्कराय के राज्यकाल में इस गण के एक अग्रणी आचार्य सिंहनन्दि का उल्लेख है। उनकी उपाधियाँ–राय, राजगुरु तथा मण्डलाचार्य थीं। उक्त लेख उनकी गृहस्थ शिष्या का समाधिमरण स्मारक है।

लेख नं० ५७२ (प्रथम भाग १११) और ५८५ में इस गण की निम्न प्रकार की परम्परा मिलती है :—



लेख नं० ५८५ बड़े महत्त्व का है। इसमें मूलसंघ के साथ नन्दिसंघ का तथा बलात्कार गण के सारस्वत गच्छ का उल्लेख है। साथ ही इस गण के आदि आचार्य के रूप में पद्मनन्दि को लिखा है और उनके कुन्दकुन्द, वक्रग्रीव, एलाचार्य, गृध्रपिच्छ नाम दिए हैं। हमें लेखों से इस परम्परा के आचार्य अमरकीर्ति तक केवल प्रशंसा के अतिरिक्त विशेष कुछ नहीं मालुम होता है। लेख नं० ५७२ (सन् १३७२) से धर्मभूषण द्वितीय की। उनके शिष्य वर्धमान मुनि द्वारा निषद्या निर्माण का उल्लेख है। लेख नं० ५८५ में सिंहनन्दि आचार्य को सेनापति इरुगप का गुरु लिखा है। ये सिंहनन्दि वे ही प्रतीत होते हैं जिनका उल्लेख हमें लेख नं० ५६६ में मिला है। धर्मभूषण तृतीय का कुछ विद्वान् वर्तमान न्यायदीपिका ग्रंथ के कर्ता से साम्य स्थापित करते हैं[1]। ये विजयनगर सम्राट् देवराय के गुरु थे, यह बात हमें लेख नं० ६६७ के एक श्लोक से विदित होती है। देवराय प्रथम का समय सन् १४०६ ई० से १४२२ तक है। लेख में धर्मभूषण तृतीय का समय सन् १३८६ दिया गया है जो संभव है उनके पट्टारोहण के आस पास का समय हो।

लेख नं० ६६७ (सन् १५५४ के लगभग) और ६६१ (सन् १६०८ ई०) में इस गण की एक गुरुपरम्परा इस प्रकार दी गई :—

सिंहकीर्ति
|
मेरुनन्दि, वर्धमान आदि अ
⋮
विशालकीर्ति (सन् १४६७–१५५४ ई०)
|
विद्यानन्द (सन् १५०२–१५३० ई०)
|
देवेन्द्रकीर्ति (सन् १५३०–१५५० ई)
|
विशालकीर्ति द्वितीय (सन् १५५०–१६०८ ई०)

---

१. पं० दरबारीलाल न्यायाचार्य, न्यायदीपिका, प्रस्तावना, पृष्ट ९२–९९।

लेख नं० ६६७ में जैनधर्म की प्रभावना करने वाले अनेकों आचार्यों का नाम शुरू में दिया गया है जो कि विभिन्न संघों एवं गणों से सम्बन्धित हैं। सिंहकीर्ति से पहले धर्मभूषण तृतीय का भी उल्लेख है पर उन दोनों के बीच कोई सम्बन्ध का निर्देश नहीं है। हो सकता है कि ये सिंहकीर्ति, धर्मभूषण तृतीय से जुदी किसी और गुरुपरम्परा के हों। उन्होंने दिल्ली के बादशाह मुहम्मद सुरित्राण की सभा में बौद्धादि वादियों को जीता था। इस बादशाह का समय सन् १३२६ से १३३७ तक था। मेरुनन्दि आदि के विषय में हमें कुछ नहीं मालुम। विशाल कीर्ति ने विजयनगर नरेश विरूपाक्ष के दरबार में विजय पत्र प्राप्त किया था तथा सिकन्दर सुरित्राण (सुल्तान सिकन्दर सूर सन् १५५४ ई०) के दरबार में विरोधियों को जीता था। इससे विशालकीर्ति का ८०-६० वर्ष का दीर्घ जीवन मालुम होता है। विद्यानंद की उपाधि वादी थी इन्होंने अनेकों दरबारों में विरोधियों को वाद में परास्त किया था। इनकी अनेक यशस्वी विजयों का वर्णन लेख में दिया गया[1] है। इसी तरह उनके शिष्य देवेन्द्रकीर्ति थे। लेख में तिथिका निर्देश नहीं है तथा वर्णन व्यतिक्रम से आचार्यपरम्परा ठीक नहीं मालुम हो पाती।

लेख नं० ६१७ में उत्तर भारत में बलात्कार गण के मदसारद गच्छ की गुरुपरम्परा दी गई है वह निम्न प्रकार है—

धर्म चन्द्र
|
रत्न कीर्ति
|
प्रभा चन्द्र
|
पद्मनन्दि
|
शुभचन्द्र

१. जैन एन्टीक्वेरी भाग ४ पृ०१—२१ तथा मेड्येवल जैनिज्म, पृष्ठ ३७१—३७५।

इसी तरह लेख नं० ७०२ में पश्चिम भारत के बलात्कार गण सरस्वती गच्छ कुन्दकुन्दान्वय की भट्टारक परम्परा दी गई है जो इस प्रकार है—सकलकीर्ति, भुवनकीर्ति, ज्ञानभूषण, विजयकीर्ति, शुभचंद्र, सुमतिकीर्ति, गुणकीर्ति, वादिभूषण, रामकीर्ति तथा पद्मनन्दि।

काष्ठासंघ

काष्ठासंघ की उत्पत्ति के सम्बन्ध में अनेक विवाद हैं। दसवीं शताब्दी में देवसेनाचार्यकृत दर्शनसार ग्रन्थ में लिखा है कि दक्षिण प्रांत में आचार्य जिनसेन के सतीर्थ्य विनयसेन के शिष्य कुमारसेन ने उत्तर पुराण के रचयिता गुणभद्र के दिवंगत (संवत् ९५३) होने के पश्चात् काष्ठासंघ की स्थापना की थी, पर यह उल्लेख कालक्रम आदि अनेक दृष्टियों से युक्तियुक्त नहीं प्रतीत होता है[1]। १७ वीं शताब्दी के एक ग्रन्थ वचनकोश में इस संघ की उत्पत्ति के सम्बन्ध में लिखा है कि उमास्वामी के पट्टाधिकारी लोहाचार्य ने इस संघ की स्थापना उत्तर भारत के अमरोहा नगर में की थी। इस कथन में सचाई जो हो पर १९-२० वीं शताब्दी के लेखों में काष्ठासंघ के अन्तर्गत लोहाचार्य अन्वय का उल्लेख मिलता है। प्रस्तुत संग्रह के एक लेख नं० ७५६ (सं० १८८१) में यही बात हम पाते हैं।

इस संग्रह में इस संघ से सम्बन्धित सभी लेख उत्तर और पश्चिम भारत से ही प्राप्त हुए हैं। लेख नं० ६३३ और ६४० में इसका नाम काञ्चीसंघ लिखा है, जो कि माथुरान्वय (मयूरान्वय) एवं पुष्करगण के साथ होने से लगता है कि यह काष्ठासंघ का ही अपर नाम होना चाहिए। इस संघ के प्रमुख गच्छ या शाखायें चार थीं:— नन्दितट, माथुर, बागड़ और लाटबागड़। ये चारों नाम बहुतकर स्थानों और प्रदेशों के नामों पर रखे गये हैं। नन्दितट से संबन्धित एक ले० नं० ११६ इस संग्रह के प्रथम भाग में है जिसमें कि नन्दितट को भूलकर मण्डित-तट लिखा गया है। संभव है इस गच्छ का संबन्ध दक्षिण से था। माथुर गच्छ

---

१. जैन साहित्य और इतिहास, पृष्ठ २७७ (द्वि० सं०)।

या अन्वय से संबन्धित ६ लेख प्रस्तुत संग्रह में हैं। अथूणा से प्राप्त लेख नं० २०५ क में यद्यपि काष्ठासंघ का उल्लेख नहीं है फिर भी उसके प्रसिद्ध अन्वय माथुरान्वय का निर्देश है और लेख से इस संघ के एक आचार्य छत्रसेन का नया नाम मालूम होता है। लेख नं० ५८६ में मसार से प्राप्त तीन प्रतिमालेखों में इस संघ के आचार्य कमलकीर्ति का नाम देकर एक लेख में उन्हें माथुरान्वय का लिखा है। ग्वालियर से प्राप्त दो लेख नं० ६३३ और ६४० में तोमरवंशीय नरेश डूंगरसिंह और उसके पुत्र कीर्तिसिंह (१५ वीं शता०) के समय इस संघ के कतिपय प्रतिष्ठित भट्टारकों के नाम मिलते हैं। लेख नं० ६३३ में भट्टा० गुणकीर्ति और उनके शिष्य यशःकीर्ति का उल्लेख है, साथ में प्रतिष्ठाचार्य श्री पण्डित रइधू का भी। भट्टा० यशःकीर्ति वे ही हैं जिन्होंने अपभ्रंश भाषा में पाण्डवपुराण (वि० सं० १४९७) और हरिवंशपुराण (वि० सं० १५००) की रचना की थी। अपभ्रंश चंदप्पहचरिउ भी इनकी रचना है। इन्होंने प्रसिद्ध कवि स्वयम्भू के हरिवंशपुराण की जीर्ण-शीर्ण खण्डित प्रति का समुद्धार भी किया था। ये गुणकीर्ति भट्टारक के अनुज तथा शिष्य भी थे। प्रतिष्ठाचार्य रइधू, प्रसिद्ध कवि रइधू ही हैं जिन्होंने बीसों ग्रन्थों की रचना की थी। ये महान् कवि होने के साथ साथ भट्टारकीय पण्डित थे, प्रतिष्ठा आदि में भाग लेते थे इसलिए प्रतिष्ठाचार्य कहलाते थे। ग्वालियर से प्राप्त ले० नं० ६४० में और बारा गंज से प्राप्त लेख नं० ६४३ में इस संघ के कुछ दूसरे भट्टारकों के नाम गुरुपरम्परा पूर्वक मिलते हैं, वे हैं— क्षेमकीर्ति, हेमकीर्ति, विमलकीर्ति (६४०) तथा क्षेमकीर्ति, हेमकीर्ति, कमलकीर्ति एवं रत्नकीर्ति (६४३)। संभव है इन दोनों लेखों के भट्टारक एक परम्परा से सम्बन्धित थे और लेख नं० ६३३ की परम्परा से जुदे थे, क्योंकि ज्ञानार्णव की लेखक-प्रशस्ति से मालुम होता है कि उक्त लेख के भट्टारक यशः-कीर्ति के बाद उनकी गद्दी पर उनके शिष्य मलयकीर्ति और प्रशिष्य गुणभद्र भट्टारक हुए थे[1]। ले० नं० ६४३ में भट्टारक रत्नकीर्ति को मण्डलाचार्य लिखा

१. जैन साहित्य और इतिहास, पृष्ठ ५३५ (प्रथम संस्करण)।

है। माथुर गच्छ (अन्वय) पुष्कर गण का उल्लेख करने वाला सं० १८८१ का एक लेख पभोसा (कौशाम्बी) से प्राप्त हुआ है जिसमें भट्टारक जगत्कीर्ति और उनके शिष्य ललितकीर्ति का निर्देश है।

माथुर गच्छ या संघ का इतना प्रभाव था कि आचार्य देवसेन को अपने ग्रन्थ दर्शनसार में इसकी गणना अलग करना पड़ी। माथुर संघ नाम भी स्थान के कारण पड़ा है—मथुरा नगर या प्रान्त का जो मुनिसंघ है वह माथुर संघ। मथुरा प्राचीन काल से जैन धर्म का प्रमुख स्थान रहा है यह हम मथुरा से प्राप्त बहुसंख्यक लेखों से जान चुके हैं। स्थान सापेक्षिकता के कारण संघों, गणों एवं गच्छों के नाम को लेकर बाबू कामताप्रसाद जी जैन ने काष्ठासंघ की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कल्पना की है कि यह संघ मथुरा के निकट जमुना तट पर स्थित काष्ठा ग्राम से निकला[1] है, या हो सकता है कि काष्ठासंघ जैन मुनियों के उस साधुसमुदाय का नाम पड़ा जिसका मुख्य स्थान काष्ठा नामक स्थान[2] था।

काष्ठासंघ माथुरान्वय के प्रसिद्ध आचार्यों में सुभाषितरत्नसन्दोह आदि अनेक ग्रन्थों के रचयिता आ० अमितगति हो गये हैं जो परमार नरेश मुंज और भोज के समकालीन थे (वि० सं० १०२० से १०७३)।

काष्ठासंघ, की दूसरी शाखा लाट बागट से भी सम्बन्धित दो लेख प्रस्तुत संग्रह में हैं और वे हैं दूबकुण्ड से प्राप्त ले० नं० २२८ और २३५। सन् १०८८ ई० के लेख नं० २२८ में इस शाखा (गण) के देवसेन, कुलभूषण, दुर्ल्लभसेन, शान्तिषेण एवं विजयकीर्ति नामक आचार्यों के नाम गुरु-शिष्यपरम्परा के रूप में दिये गये हैं। अन्तिम आचार्य विजयकीति उक्त प्रशस्ति के रचयिता थे। यदि पूर्ववर्ती चार आचार्यों का समय १०० वर्ष मान लिया जाय

---

१. जैन सिद्धान्त भास्कर भा० २, किरण ४, पृष्ठ २८-२९।

२. पं० नाथूराम जी प्रेमी ने बतलाया है कि दिल्ली के उत्तर में जमुना के किनारे काष्ठा नगरी थी जिस पर नागवंशियों की एक शाखा का राज्य था। १४वीं शताब्दी में 'मदनपारिजात' निबन्ध यहीं लिखा गया था।

नरेश का नाम, दडिग कोङ्गुणि देते हैं और उसका समय सन् ईस्वी-२०० के लगभग मानते हैं[1]।

प्रस्तुत संग्रह में इस वंश का सबसे प्राचीन ले० नं० ९० है, जिसे गुप्त काल के प्रारंभ का होना चाहिये। इसमें कोङ्गुणिवर्मा प्रथम से माधववर्मा द्वितीय तक पाँच नरेशों की वंशावली दी गई है यदि प्रथम राजा के राज्य का प्रारंभ समय ई० सन् २०० के लगभग मान लिया जाय और प्रत्येक नरेश को ३५-४० वर्ष या उससे कुछ अधिक वर्ष का राज्यकाल दिया जाय (जो कि संभव है) तो लेख के अन्तिम राजा माधव द्वितीय का समय ई० सन् ३७५-४०० के लगभग या कुछ बाद आता है। उक्त लेख में इस बात का उल्लेख नहीं है कि कोङ्गुणि-वर्मा और उसके बाद के दो नरेश किस धर्म के प्रतिपालक थे। पर इस बात का वहाँ स्पष्ट निर्देश है कि तृतीय नरेश हरिवर्मा महाधिराज का उत्तराधिकारी विष्णु-गोप नारायण भक्त था और उसका उत्तराधिकारी माधववर्मा त्र्यम्बकभक्त था[2]। माधववर्मा द्वितीय ने चिर प्रनष्ट देवभोग, ब्रह्मदेय आदि को फिर से संचालित किया था और कलियुग में धर्मोद्धार किया था (९४)। इसका विवाह कदम्बवंशी नरेश काकुस्थवर्मा की बेटी से हुआ था क्योंकि गंगवंश के अनेक लेखों में इसके बेटे अविनीत को कदम्बनरेश कृष्णवर्मा (संभव है प्रथम) का प्रिय भागिनेय लिखा है[3] (९५, १२१, १२२)। कृष्णवर्मा काकुस्थवर्मा का द्वितीय पुत्र था। त्र्यम्बकभक्त होते हुए भी माधववर्मा द्वितीय की धार्मिक नीति बड़ी उदार थी।

---

१. मैसूर एण्ड कुर्ग इन्सक्रिप्सन्स पृष्ठ,३२, ४९.

२. लुइस राइस महोदय सन्देह करते हैं कि इन ताम्रपत्रों में प्रत्येक राजा के साथ पूर्व निर्धारित या सांचे में ढले हुए के समान जो विवरणात्मक वाक्य दिये हैं, वे संभव है, तथ्य नहीं हैं। वे मानते हैं कि ब्राह्मण प्रभाव के कारण ताम्रपत्र उत्कीर्ण करने वाले ने स्वेच्छा पूर्वक तथ्यों को विकृत कर उनके जैन होने पर पर्दा डाला है।

३. पीछे कदम्बों का परिचय भी देखिये।

लें० नं० ६० के अनुसार उसने अपने राज्य के १३ वें वर्ष में आचार्य वीरदेव[1] की सम्मति से मूलसंघ द्वारा प्रतिष्ठापित जिनालय के लिए कुछ भूमि और कुमारपुर गाँव दान में दिया था।

माधव द्वितीय का पुत्र एवं उत्तराधिकारी कोङ्गुणिवर्म धर्ममहाधिराज अविनीत था। ले० नं० ६४ में इसके प्रतापी होने का वर्णन है। लेख से ज्ञात होता है कि यह जैनधर्मानुयायी था। इसने अपने गुरु परमार्हत विजयकीर्ति के उपदेश से अपने राज्य के प्रथम वर्ष में ही मूलसंघ के चन्द्रनन्दि आदि द्वारा प्रतिष्ठापित उरनूर के जैन मन्दिर के लिए एक गाँव प्रदान किया था तथा एक दूसरे जिनमन्दिर के लिए चुंगी से प्राप्त धन का चतुर्थ भाग दान में दिया था। लु० राइस महोदय उक्त लेख का समय सन् ४२५ के लगभग मानते हैं। यदि उनका यह अनुमान सच है तो कहना होगा कि अविनीत सन् ४२५ के लगभग राजगद्दी पर बैठा था। अविनीत ने बहुत समय तक शासन किया था क्योंकि उसके बेटा दुर्विनीत का समय अनेक प्रमाणों के आधार पर लगभग सन् ४८० और ५२० ई० के बीच बैठता है[2]। अविनीत जैनधर्मानुयायी था यह बात मर्करा से प्राप्त ताम्रपत्रों (९५) से भी सिद्ध होती है[3]।

---

१. जैन धर्म के केन्द्र प्रकरण में हमने इन वीरदेव और सोनभण्डार के वैरदेव मुनि में साम्य स्थापित किया है।

२. प्रो० ज्योतिप्रसाद जैन, 'गङ्गनरेश' दुर्विनीत का समय', जैन एन्टीक्वेरी, भाग १८, अंक २, पृष्ठ १-११।

३. मर्करा से प्राप्त ताम्रपत्र असली नहीं है क्योंकि उनमें पश्चात्कालीन अकालवर्ष पृथ्वीवल्लभ (राष्ट्रकूट नरेश) का निर्देश है तथा जो आचार्यपरम्परा दी गई है वह ई० ९-१० वीं शताब्दी की मालुम होती है। लेख में समयोल्लेख के साथ यह निर्देश नहीं है कि वह किस (शक या विक्रम) संवत् का है।

अविनीत का उत्तराधिकारी एवं पुत्र दुर्विनीत संस्कृत और कन्नड भाषा का बड़ा विद्वान् था। उसे एक ताम्रपत्र में 'शब्दावतारकार, देवभारतीनिबद्ध बृहत्कथा' आदि कहा गया है। राइस महोदय एवं डा० सालेतोरे आदि विद्वान् इस पद की व्याख्या कर यह सूचित करते हैं दुर्विनीत जैन वैय्याकरण पूज्यपाद का शिष्य था और उसने पूज्यपाद द्वारा लिखे शब्दावतार को कन्नड भाषा में परिवर्तित किया था[1]। उसने भारवि के किरातार्जुनीय काव्य के १५ सर्गों पर संस्कृत टीका भी लिखी थी (१२१-१२२)। इसके समय का उल्लेख किया जा चुका है। हां, इसके समकालीन कोई जैन लेख हमारे संग्रह में नहीं हैं।

इसके बाद इस वंश के राजाओं का वर्णन ई० सन् ७५० के लेख नं० ११६ तथा बाद के लेखों (१२०-१२२) में मिलता है। इससे ज्ञात होता है कि गङ्ग वंश एक स्वतन्त्र राज्य था, उसने किसी की पराधीनता स्वीकार न की थी। इन लेखों से दुर्विनीत के बाद के नरेशों—मुष्कर, श्रीविक्रम, भूविक्रम, शिवमार प्रथम (नवकाम) श्रीपुरुष, शिवमार द्वितीय एवं मारसिंह प्रथम तक वर्णन मिलता है। लेख नं० १२१ और १२२ में इन राजाओं की राजनीतिक सफलताओं और सामरिक विजयों का उल्लेख है।

शिवमार द्वितीय के पुत्र मारसिंह प्रथम के सम्बन्ध में उसके समकालीन लेख नं० १२२ से ज्ञात होता है कि ई० सन् ७९७ में वह युवराज ही था। उसके राज्यकाल का ऐसा कोई लेख नहीं मिला जिससे कहा जाय कि वह राजा हो सका हो।

इसके बाद ईस्वी सन् ७९७ से ८८६ तक इस वंश का कोई लेख इस संग्रह में नहीं आ सका।

मण्णे से प्राप्त सन् ८०२ ई० के एक लेख (१२३) से ज्ञात होता है कि राष्ट्रकूट गोविन्द तृतीय के समय में राष्ट्रकूट वंश दूसरे वंश की प्रतियोगिता में

---

१. मेडीवल जैनिज्म, पृष्ठ १९–२३।

ऊपर उठ गया था। उसने गङ्गों को बहुत समय से पराधीन देख उन्हें मुक्त किया पर उनके उद्धत स्वभाव के कारण पुनः बांध दिया। गङ्ग वंश के पराधीन होने की बात सन् ८६० के कोन्नूर से प्राप्त एक लेख (१२७) से भी ज्ञात होती है। इतिहासज्ञों का अनुमान है कि गङ्ग वंश के इन बुरे दिनों में शिवमार द्वितीय उक्त वंश की गद्दी पर था। उसने राष्ट्रकूट वंश की अधीनता मान ली थी। इस राजा के सम्बन्ध में लेख नं० १८२ में लिखा है कि यह राष्ट्रकूट नरेश अमोघवर्ष प्रथम (८१४-८७७ ई०) का पञ्चमहाशब्दधारी महामण्डलेश्वर था। इसने कल्भावी में एक जैन मन्दिर बनवाकर उसके लिए एक गांव दान में दिया था।

इसके बाद भी जैनधर्म की परम्परा इस वंश के नरेशों में बराबर चलती रही। लेख नं० १३१ से ज्ञात होता है कि सन् ८८७ में सत्यवाक्य कोंगुणिवर्मा ने अपने राज्याभिषेक के १८ वें वर्ष में एक जैन मन्दिर के उद्देश से भट्टारक सर्वनन्दि के लिए १२ गांव दान में दिए थे। इतिहासज्ञ इस राजा को राचमल्ल द्वितीय मानते हैं जिसे राष्ट्रकूट नृप कृष्ण द्वितीय ने हराया था। इस लेख में और इसके बाद के लेखों में इस वंश की राजधानी का नाम कुवलालपुर (वर्तमान कोलार) और किले का नाम उच्च नन्दगिरि नाम दिया गया है। लेख नं० १३८ से विदित होता है कि सत्यवाक्य (राचमल्ल द्वितीय) तथा उनके भतीजे एरेयप्परस (चतुर्थ) ने कुमारसेन भट्टारक को दान दिया था। ले० नं० १३६ के अनुसार एरेयप्परस के पुत्र नीतिमार्ग अर्थात् राचमल्ल तृतीय का राज्य उत्तरोत्तर बढ़ रहा था। उसने कनकगिरि तीर्थवसदि को दुगुना कर भट्टारक कनकसेन को दान दिया।

सूदी से प्राप्त सन् ६३८ का एक लेख (१४२) इस वंश के इतिहास की दृष्टि से बड़े महत्त्व का है। इसमें गंगवंश की आदि से लेकर बूतुग द्वितीय तक सारे राजाओं की वंशावली दी गई है तथा कहीं कहीं उनके राजनीतिक महत्त्व के कार्यों का भी उल्लेख किया गया है। इस लेख में लिखा है कि बूतुग द्वितीय ने अपनी पत्नी द्वारा निर्मापित एक जैन मन्दिर के लिए कुछ भूमि दान में दी।

बूतुग, राचमल्ल तृतीय का भाई एवं उत्तराधिकारी था, तथा राष्ट्रकूट नरेश कृष्ण तृतीय अकालवर्ष (६३८-६६६ ई०) का बहनोई और सामन्त राजा था।

बूतुग द्वितीय का पुत्र मारसिंह तृतीय इस वंश का बड़ा प्रतापी राजा हुआ है। लेख नं० १४६ और १५२[1] में इसकी जो अनेक उपाधियाँ दी गई हैं और उसके लिए जो प्रशंसात्मक वाक्य प्रयुक्त हुए हैं उनसे इसके प्रतापी होने में कोई संदेह नहीं रह जाता। लेख नं० १४६ के अनुसार उसने पुलिगेरे नामक स्थान में एक जिन मन्दिर बनवाया जो कि इसके नाम पर 'गंगकंदर्प जिनेन्द्र मन्दिर' कहलाता था। लेख न० १५२ के उल्लेखानुसार इसने अनेक पुण्य कार्य किए थे, और जैन धर्म के उत्थान में बड़ा योग दिया था। इसी लेख में उसकी अनेक सामारिक विजयों का उल्लेख है। उक्त लेख के अनुसार इस राजा ने अन्त में राज्य का परित्याग कर अजितसेन भट्टारक के समीप तीन दिवस तक सल्लेखना व्रत का पालन कर बंकापुर में देहोत्सर्ग किया था। यह राजा राष्ट्रकूट नरेशों का महासामन्त था और इसने कृष्ण तृतीय के लिए अनेक देश जीत कर दिये थे तथा इन्द्र चतुर्थ का राज्याभिषेक कराया था। इसका और इसके बेटे राचमल्ल चतुर्थ का मंत्री और सेनापति प्रसिद्ध चामुण्डराय था।

राचमल्ल चतुर्थ के समय का केवल एक लेख (१५४) प्रस्तुत संग्रह में है। उसने श्रवणबेल्गोल निवासी श्रीमत् अनन्तवीर्य के लिए पेर्गदूर नामक ग्राम तथा कुछ और दान दिये थे। इसके राज्यकाल में सेनापति चामुण्डराय ने श्रवणबेल्गोल स्थान में बाहुबलि की एक विशालमूर्ति का निर्माण कराया था।

गंग वंश के राजाओं में अन्तिम उल्लेखनीय नाम है रक्कसगंग पेर्म्मानडि राचमल्ल पंचम का जो कि सन् ६८४ में सिंहासनारूढ हुआ था। उसका असली नाम अरुमुलि देव था। वह बूतुग द्वितीय की दूसरी पत्नी रेवकन्निम्मडि से उत्पन्न पुत्र वासव का पुत्र था। इसने अपनी कन्याओं के विवाह द्वारा पल्लवों

---

१. जैन शिलालेख संग्रह, प्रथम भाग, लेख नं० ३८.

और शान्तरवंश से संबन्ध स्थापित किया था। हुम्मच से प्राप्त लेख नं० २१३ से विदित होता है कि नन्नि आदि शान्तर राजकुमारों की अभिभाविका प्रसिद्ध जैन महिला चट्टल देवी इसी की पुत्री थी। इसके गुरु द्रविड संघ के विजय देव भट्टारक थे। इस राजा ने अपने वंश की गिरती हुई हालत को सुधारने का प्रयत्न किया पर सफल न हो सका।

यद्यपि इस वंश का अन्त सन् १००४ में राज राज चोल प्रथम की लड़ाई में हो गया, तो भी यह यत्र तत्र शाखाओं के रूप में जीवित बना रहा।

ऊपर निर्दिष्ट इस वंश के लेखों के अतिरिक्त दूसरे वंश के लेखों (नं० १७२, २२२, २५१, २५३, २६७, २७७, २६६, ३१४, ४३१) में गंगवंश के अनेकों महामण्डलेश्वरों एवं राजाओं का नाम आता है। ले० नं० २६७, २७७ एवं २६६ में तो इस वंश की प्रारम्भ से अन्त तक की वंशावली दी गई है, पर पीछे के राजाओं के सम्बन्ध में बहुत ही कम बातें मालुम होती हैं जिनसे क्रमबद्ध इतिहास नहीं लिखा जा सकता।

प्रस्तुत शिलालेख संग्रह के देखने से इस बात में तनिक भी सन्देह नहीं रह जाता कि इस वंश के राजा प्रारम्भ से ही जैन धर्म और साहित्य के उपासक एवं संरक्षक साथ ही अपनी उदारनीति के कारण दूसरे सम्प्रदायों को भी दान आदि द्वारा संरक्षण प्रदान करते थे। इस वंश के संरक्षण में जैन धर्म ने अपना स्वर्णयुग देखा है।

२. कदम्बवंशः—प्रस्तुत संग्रह में कदम्ब वंश से सम्बन्धित १० लेख (६६, ६७, ६८, ६६, १००, १०१, १०२, १०३, १०४ और १०५) संग्रहीत हैं जिनमें कतिपय तो संस्कृत भाषा की सुन्दर काव्यात्मक शैली के नमूने हैं। यद्यपि इन लेखों में कोई काल-निर्देश नहीं है पर जिन राजाओं के ये लेख हैं उनका समय अन्य प्रमाणों से ज्ञात होता है इसलिए हमें इन्हें लगभग सन् ३६६ से ५५० के भीतर के मानना चाहिए।

इन लेखों से कदम्ब नरेशों के गोत्रादि विदित होते हैं। तदनुसार वे मानव्य गोत्र एवं हारितीपुत्र अंगिरस के वंशज तथा काकुस्थान्वयी थे। यद्यपि यह वंश

६

ब्राह्मणधर्मानुयायी था पर इसके कतिपय नरेशों की धार्मिक नीति बड़ी ही उदार थी और कुछ तो जैनधर्म प्रतिपालक भी थे। इस वंश का आदि नरेश मयूर-शर्मा माना जाता है पर उपर्युक्त लेखों में उसका तथा उसके बाद के चार नरेशों का नाम नहीं दिया गया। प्रस्तुत लेखों में इस वंश के पांचवें नरेश काकुस्थवर्मा से ही वंश परम्परा का उल्लेख है।

काकुस्थवर्मा के समय का केवल एक लेख (९६) अबतक उपलब्ध हुआ है। इसमें काकुस्थ वर्मा को कदम्बयुवराज लिखा है तथा उल्लेख है कि उसने ८० वें वर्ष में अपने एक जैन सेनापति श्रुतकीर्ति के लिए अर्हन्तों के खेट ग्राम में, वद्रोवर क्षेत्र दान में दिया था। लेख के ८० वाँ वर्ष को इतिहासज्ञ गुप्त संवत् का मानते हैं। इस मान्यता का आधार यह है कि कदम्बों का अपना कोई संवत् नहीं चला था तथा काकुस्थवर्मा की कुछ कन्याओं में से एक का विवाह गुप्त नरेश चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य द्वितीय (सन् ३७५-४१५ ई०) के एक पुत्र से हुआ[1] था। गुप्त संवत् के लेखा के अनुसार युवराज काकुस्थवर्मा का समय ३१९ +८०=३९९ ई० होना चाहिए। इसके बाद काकुस्थवर्मा ने राजा के रूप में कुछ वर्ष अवश्य राज्य किया होगा। हम गंग अविनीत के सम्बन्ध में लिख आये हैं कि उसे काकुस्थवर्मा की एक पुत्री विवाही गई थी। समय की दृष्टि से अविनीत (लग० सन् ४०० ई० के बाद) और काकुस्थवर्मा प्रायः समकालीन भी थे। काकुस्थ वर्मा पलासिका में राज्य करता था, पर उसके पुत्र और प्रपौत्र वैजयन्ती से राज्य करते थे। सम्भव है पलासिका, कुछ समय के लिये उनसे छिन गई थी।

काकुस्थवर्मा का पुत्र शान्तिवर्मा था (९९) उसके सम्बन्ध का इस संग्रह में कोई लेख नहीं है। ले० नं० ९९ में इसके सम्बन्ध में लिखा है कि जैसे दुर्जन किसी स्त्री को बलात् खींचता है उसी तरह उसने शत्रु के गृह से लक्ष्मी को आकृष्ट किया था। यह उल्लेख उसके किसी संघर्ष का द्योतक है। उसका बेटा मृगेश

---

१. दि० च० सरकार, सक्सेसर आफ सातवाहनाज, पृष्ठ २५६

वर्मा हुआ जिसके राज्य काल के तीन लेख (९७, ९८, ९९) प्रस्तुत संग्रह में हैं। ले० नं० ९७ से ज्ञात होता है कि उसने अपने राज्य के तीसरे वर्ष में अर्हन्तदेव के अभिषेक, उपलेपन एवं पूजनादि के लिए भूमिदान किया था। उसने अपने राज्य के चतुर्थ वर्ष में एक गाँव को तीन भागों में विभाजित कर एक भाग अर्हन्महाजिनेन्द्र के लिए, दूसरा भाग श्वेताम्बर श्रमण संघ तथा तीसरा भाग दिगम्बर श्रमण के उपभोग के लिए दान में दिया था (९८)। आठवें वर्ष में उसने पलासिका नामक स्थान में एक जिनालय बनवाकर ३३ निवर्तन प्रमाण भूमि को यापनीयों के लिए तथा निर्ग्रन्थ सम्प्रदाय के कूर्चकों के उपभोग के लिए दान में दे दिया (९९)। ले० नं० ९९ में उसे एक धर्मविजयी नृप लिखा है। यह लेख राजनीतिक इतिहास की दृष्टि से महत्व का है। इसमें उसे उन्नत गंग कुल को नष्ट करने वाला तथा पल्लव वंश के लिए प्रलयाग्नि लिखा है[१]। इस लेख से मालुम होता है मृगेशवर्मा पलाशिका से राज्य कर रहा था।

मृगेशवर्मा के तीन बेटे थे रविवर्मा, भानुवर्मा और शिवरथ। उनमें रविवर्मा उसका उत्तराधिकारी हुआ। उसके राज्यकाल के तीन लेख (१००, १०१, १०२) इस संग्रह में हैं। ले० नं० १०० के अनुसार सेनापति श्रुतकीर्ति के पौत्र जयकीर्ति ने कदम्ब राजाओं द्वारा परम्परा से प्राप्त पुरुखेटक ग्राम को रविवर्मा की आज्ञा से अपने माता पिता के कल्याणार्थ यापनीय संघ के कुमारदत्त प्रमुख आचार्यों को दान में दे दिया। ले० नं० १०१ राजनीतिक इतिहास की दृष्टि से महत्त्व का है। इसमें लिखा है कि विष्णुवर्मा प्रभृति राजाओं को नष्ट कर तथा कांचीपति चण्डदण्ड को पराजित कर रविवर्मा पलाशिका में समवस्थित था। इतिहासज्ञ इस लेख के विष्णुवर्मा को काकुस्थवर्मा के द्वितीय पुत्र कृष्णवर्मा (प्रथम) का इस नाम वाला ज्येष्ठ पुत्र मानते हैं, जिसने सम्भव है, मुख्य शाखा के विरुद्ध विद्रोह खड़ा किया

---

१. इस लेख में गंगकुल के जिस नरेश से मतलब है वह पेरूर शाखा का गंग नृप अय्यवर्म या माधव प्रथम होना चाहिये। पल्लव नृप को सिंहवर्म का पुत्र स्कन्दवर्मा होना चाहिये। (सक्शेसर आफ सातवाहनाज, पृष्ठ २६४)।

था; तथा काञ्चीपति चण्डदण्ड को नन्दिवर्मा पल्लव या उसका कोई एक उत्तराधिकारी मानते हैं[1]। इस ले० के अनुसार दामकीर्ति (श्रुतकीर्ति का पुत्र) के अनुज श्रीकीर्ति ने अपनी माता के कल्याणार्थ अपने स्वामी रविवर्मा से चार निवर्तन भूमि लेकर जिनेन्द्र के लिए दान में दी। ले० नं० १०२ से ज्ञात होता है कि रविवर्मा के ११ वें राज्य वर्ष में उसके अनुज भानुवर्मा से किसी पण्डर भोजक ने १५ निवर्तन भूमि प्राप्त कर जिनेन्द्र के लिए दान में दे दी। रविवर्मा का राज्यकाल साधारणतः सन् ४७८ से ५१३ ई० के लगभग माना जाता है।

रविवर्मा का उत्तराधिकारी उसका पुत्र हरिवर्मा हुआ। इसके राज्य के दो लेख (१०३–१०४) इस संग्रह में हैं। ले० नं० १०३ से ज्ञात होता है कि उसने अपने राज्य के चतुर्थ वर्ष में अपने चाचा शिवरथ के उपदेश से पलाशिका में सिंह सेनापति के पुत्र मृगेश द्वारा निर्मापित जैन मन्दिर की अष्टाह्निका पूजा के लिए तथा सर्व संघ के भोजन के हेतु कूर्चकों के वारिषेणाचार्य संघ के हाथ में चन्द्रक्षान्त को प्रमुख बनाकर वसुन्तवाटक ग्राम दान में दिया। इसी तरह ले० नं १०४ से ज्ञात होता है कि उक्त नरेश ने अपने राज्य के पांचवें संवत्सर में सेन्द्रक राजा भानुवर्मा की प्रार्थना पर अहिरिष्टि नामक दूसरे श्रमण संघ के लिए मरदे नामक ग्राम दान में दिया। हरिवर्मा का राज्य काल सन् ५१३ से ५३४ ई० में माना जाता है।

कदम्बों की एक शाखा और थी जिसके कुछ नरेशों ने मुख्य शाखा से विद्रोह किया था यह हमें ले० नं० १०१ से ज्ञात होती है। इस शाखा से सम्बन्धित इस संग्रह में केवल एक लेख (१०५) है। जो कि कृष्णवर्मा प्रथम के राज्यकाल का है। इतिहासज्ञों ने इस कृष्णवर्मा को शान्तिवर्मा का अनुज एवं काकुस्थवर्मा का पुत्र माना[2] है। ले० नं० १०५ में उसके अश्वमेधयाजिन्, समरार्जित विपुल ऐश्वर्य, एकातपत्र आदि विशेषण दिये हैं जो कि इसके प्रताप

---

१. सक्शेसर आफ सातवाहनाज, पृष्ठ २७२–२७३।

२. सक्शेसर आफ सातवाहनाज, पृष्ठ २८२।

के सूचक हैं। लेख में इसके प्रियतनय देवराज का उल्लेख है जो कि युवराज था। वह त्रिपर्वत का शासक था तथा जिनधर्म का भक्त था। उसने अर्हन्त भगवान् के चैत्यालय की पूजा मरम्मत आदि के लिए यापनीय संघों के लिए कुछ खेत दान में दिये थे।

गंग वंश के कई लेखों में अविनीत महाधिराज को कदम्ब कुल के कृष्णवर्मा का प्रिय भागिनेय माना जाता है। कदम्ब नरेशों में कृष्णवर्मा दो हो गये हैं। अविनीत का मामा कौन कृष्णवर्मा था इसमें इतिहासज्ञ एक मत नहीं है। फिर भी समकालीन राजवंशों के इतिहास पर दृष्टिपात करने से यह प्रतीत होता है उसे कृष्ण वर्मा प्रथम होना चाहिए[1]। कृष्णवर्मा प्रथम अविनीत का समकालीन भी था।

३. चालुक्य वंशः—प्रस्तुत संग्रह में इस वंश से सम्बन्धित अनेकों लेख संगृहीत हैं जिनसे मालुम होता है कि ये मानव्य गोत्र तथा हारीति के वंशज थे, वराह इनका लांछन था। इस वंश के राजाओं की साधारणतः वल्लभ एवं सत्याश्रय उपाधियाँ थीं। इस वंश की एक शाखा जिसे पश्चिमी चालुक्य कहा जाता है वातापी (बादामी) नामक स्थान से ६ वीं ईस्वी से ८ वीं ईस्वी तक शासन करती रही और पीछे दो शताब्दी बाद १०वीं से १२वीं तक कल्याणी नामक स्थान से। इसी तरह दूसरी एक शाखा पूर्वी चालुक्य के नाम से विख्यात थी और आंध्र देश के वेंगी नामक स्थान से ७ वीं शताब्दी से ११-१२ वीं शताब्दी तक सत्तारूढ रही। इस तरह इस वंश ने दक्षिण भारत के बहु भाग पर शासन किया।

(क) पश्चिमी चालुक्यः—जैन लेखों में इस वंश का सबसे प्राचीन दानपत्र (१०६) शक सं० ४११ (ई० ४८९) का आड़ते से मिला है। यह ले० सत्याश्रय पुलकेशि का था। तदनुसार उस राजा ने चोल, चेर, केरल, सिंहल और कलिङ्ग के राजाओं को कर देने वाला बना दिया था एवं पाण्ड्य

---

१. प्रो० ज्योतिप्रसाद, 'गंग नरेश दुर्विनीत का समय', जैन एण्टीक्वेरी, भाग १२, अंक २, पृष्ठ १–११

आदि मण्डलीक राजाओं को दण्डित किया था। लेख का उद्देश्य है कि उक्त नरेश के शासनकाल में सेन्द्रकवंशी सामन्त सामियार ने अलक्तक नगर में एक जैन मन्दिर बनवाया था और राजाज्ञा लेकर चन्द्र ग्रहण के समय कुछ जमीन और गाँव दान मे दिये। इस लेख के समय के सम्बन्ध में इतिहासज्ञ एकमत नहीं है। डा० रा० गो० भण्डारकर प्रभृति विद्वानों की धारणा है कि पुलकेशि प्रथम के सिंहासनारूढ होने का समय ई० सन् ५५० से पहले नहीं हो सकता, पर यह लेख उस नरेश के राज्यकाल को ६२ वर्ष पहले ले जाता है। जो हो, इस लेख में पुलकेशि प्रथम के वंश गोत्रादि के निर्देश के अतिरिक्त पितामह का नाम जयसिंह और पिता का नाम रणराग दिया गया है। ले० नं० १०६ से ज्ञात होता है कि रणराग के शासनकाल में उसके एक सेन्द्रक सामन्त दुर्गशक्ति ने पुलिगेरे के प्रसिद्ध शंख जिनालय के लिए भूमिदान दिया था।

पुलकेशि प्रथम का उत्तराधिकारी उसका बेटा कीर्तिवर्मा प्रथम था। उसके शासन काल के एक लेख (१०७) के कन्नड अंश से ज्ञात होता है कि कीर्तिवर्मा ने कुछ सरदारों के निवेदन पर जिनेन्द्र मन्दिर के पूजा विधान के लिए कुछ खेत प्रदान किये थे। इसी तरह उक्त लेख के संस्कृत अंश से ज्ञात होता है कि उसने अपने सरदारों द्वारा निर्मापित जिनालय एवं दानशाला आदि के लिए भी कुछ खेतों का दान दिया था।

कीर्तिवर्मा प्रथम का बेटा पुलकेशि द्वितीय हुआ जिसके काल का एक प्रसिद्ध लेख एहोले (१०८) से प्राप्त हुआ है, जिसे कविता के क्षेत्र में कालिदास एवं भारवि की कीर्ति पाने वाले जैन कवि रविकीर्ति ने रचा था। भारतवर्ष का तत्कालीन राजनीतिक इतिहास जानने के लिए यह लेख बड़े महत्त्व का है। इसमें पुलकेशि द्वितीय के पिता कीर्तिवर्मा और चाचा मंगलीश की सामरिक विजयों के उल्लेख के बाद पुलकेशि द्वारा राज्य प्राप्ति और उसकी विस्तृत दिग्विजय का वर्णन मिलता है। उक्त लेख के अनुसार पुलकेशि उत्तर भारत के सम्राट् हर्षवर्धन का समकालीन था और उसने दक्षिण की ओर बढ़ते हुए हर्ष का हर्ष (उत्साह) विगलित कर दिया था। लेख के अन्त में लिखा है कि प्रतापी पुल-

केशि के आश्रित कवि रविकीर्ति ने पाषाण का एक जैन मन्दिर शक सं० ५५६ में बनवाया था।

इस वंश के अन्य ले० नं० १११, ११३, ११४ से ज्ञात होता है कि चालुक्य नरेश प्रारम्भ से लेकर जैन धर्म और उसके उपास्य स्थानों को संरक्षण देते आये हैं। ले० नं० १११ पुलकेशि द्वितीय के पौत्र विनयादित्य के राज्य-काल का है और नं० ११३ विजयादित्य तथा नं० ११४ विक्रमादित्य द्वितीय के राज्यकाल का है। इनसे विक्रमादित्य द्वितीय तक की वंशावली के अतिरिक्त हमें इन राजाओं के राजनीतिक इतिहास की कोई सूचना नहीं मिलती। ये लेख छोटे दान पत्र के रूप हैं। ले० नं० ११३ से मालुम होता है कि विजयादित्य ने अपने पिता के पुरोहित उदय देव पण्डित अर्थात् निरवद्य पण्डित को एक गाँव दान में दिया था। इसी तरह ११४ वें लेख से मालुम होता है कि विक्रमादित्य द्वितीय ने पुलिगेरे नगर में धवल जिनालय की मरम्मत एवं सजावट करायी थी। तथा मूलसंघ देवगण के विजयदेव पण्डिताचार्य के लिए जिनपूजा प्रबन्ध के हेतु भूमिदान दिया था।

विक्रमादित्य द्वितीय के बाद चालुक्य कुल के बुरे दिन आते हैं। यह बात हमें ले० नं० १२२, १२३,१२४, एवं १२७ से सूचित होती है। गंग और राष्ट्रकूट राजाओं ने इस साम्राज्य को तहस नहस कर दिया और लगभग २०० वर्षों तक यह फिर न पनप सका। इस बीच काल में इसका स्थान राष्ट्रकूट वंश को मिला।

इस राजवंश का इतिहास पढ़ने से मालुम होता है कि सन् ६७४ के आस पास तैलप द्वितीय ने इस वंश का पुनरुद्धार किया तथा कल्याणी नामक स्थान को राजधानी बनाया। नूतन शक्ति प्राप्त इस वंश के कतिपय राजाओं ने यद्यपि उतने उत्साह के साथ तो नहीं, फिर भी जैनधर्म की यथाशक्ति सेवा की। कवि-चरिते नामक ग्रन्थ से मालुम होता है कि तैलप द्वितीय महान् कन्नड जैन कवि रन्न का आश्रयदाता था। यह धारा नरेश मुंज और भोज का समकालीन था।

ले० नं० १८२ में अमोघवर्ष के उल्लेख के बाद गंगनरेश शिवमार सैगोट्ट का नाम दिया गया है जिससे मालुम होता है कि यह अमोघवर्ष प्रथम (सन् ८१४–८७७ ई०) के समय का है। पर लेख में गलत रूप से शक सं० २६१ दिया गया है और किसी कङ्करस सैगोट्ट गंग का उल्लेख है जिससे लेख जाली मालुम होता है। फ्लोट महोदय इसके उत्तरार्ध भाग को सच्चा मानते हैं।

कृष्ण तृतीय (अकालवर्ष) के पौत्र इन्द्र चतुर्थ के सम्बन्ध में ले० नं०१६३ (सन् ६८२) से ज्ञात होता है कि वह पोलो के खेल में बड़ा निपुण था। उसने श्रवणबेलगोल में सल्लेखनापूर्वक मरण किया था। इस लेख में इन्द्र के अनेक विशे-ण दिये गये हैं और कहा गया है कि वह गंग गंगेय (बुतुग द्वितीय) का कन्यापुत्र एवं राजचूड़ामणि का दामाद था। ले० नं० १५२[1] से ज्ञात होता है कि राष्ट्रकूट नरेश कृष्ण तृतीय के लिए गंग नरेश मारसिंह तृतीय ने गुर्जरप्रदेश को जीता था एवं और कृष्ण तृतीय के पौत्र इन्द्र चतुर्थ का राज्याभिषेक किया था। इन लेखों से ज्ञात होता है कि उस काल में इन दोनों राजवंशों में घनिष्टता थी।

६. कलचूरि वंश:—ले० नं० ४०८ से हमें ज्ञात होता है कि चालुक्य नूर्म्मडि तैल (तैल तृतीय) के बाद चालुक्य राज्य की लक्ष्मी कलचूरितिलक बिज्जल के हाथ चली आई। कलचूरि वंश बहुत प्राचीन है इसका उल्लेख हम एहोले के लेख (१०८) में पाते हैं जहाँ चालुक्य मंगलीश द्वारा उनके परास्त होने का उल्लेख है। कलचूरि वंश के अन्य लेखों से तथा इस संग्रह के लेख नं० ४०८, ४३५ से ज्ञात होता है कि ये अपनी उत्पत्ति उत्तर भारत के कालञ्जर नामक स्थान से मानते थे। लेख नं० ४०८ में बिज्जल की शूर वीरता का वर्णन है। उसका भाई मैलुगिदेव था। लेख से बिज्जल के तीन पुत्रों—सोयिदेव (राय-मुरारि), शंकम (निःशंकमल्ल), आहवमल्ल (रायनारायण)—और पौत्र कन्दार का नाम एवं परिचय मिलता है। उक्त लेख में लिखा है कि राजा बिज्जल को सताङ्ग सम्पत्ति दिलाने वाला उसका एक जैन सेनापति रेचि था जो

---

१. जैन शिलालेख, सं० भाग १, ले० नं० ३८।

'वसुधैकबान्धव' कहलाता था। लेख का विषय है कि आहवमल्ल (रायनारायण) कलचूरि के शासनकाल में उक्त सेनापति ने मागुडि गाँव के रत्नत्रय चैत्यालय के लिए भानुकीर्ति सिद्धान्त देव को तलवे गांव दान में दिया था।

लेख नं ४३५ से मालुम होता है कि बिज्जल के शासनकाल में वीरशैव मत का बोलवाला था। उक्त मत का आचार्य एकान्तदरामय्य जैनों पर अत्याचार कर रहा था (४३५, ४३६)। यद्यपि कलचूरि जैन धर्मानुयायी थे, उनके शासन पत्रों पर तीर्थंकर की पद्मासन मूर्ति, इन्द्रादि सेवकों के साथ बनायी जाती थी, पर बिज्जल समय की गति देखते हुए वीर शैवों की ओर झुका, और कहा जाता है है कि उन्हीं के द्वारा उसकी मृत्यु भी हुई। लेख नं० ४६५ से ज्ञात होता है कि उसके सेनापति रेचि ने उसे छोड़ कर जैन धर्मावलम्बी होय्सल नरेश वीर बल्लाल द्वितीय का आश्रय लिया था। लेख नं० ४४८ में उल्लेख है कि कुन्तल देश से बिज्जल के शासन को हटाकर बल्लाल होय्सल ने उसे अपने अधीन कर लिया था। इस तरह दक्षिण भारत में इस वंश का शीघ्र ही अन्त हो गया।

७. होय्सल वंशः—चालुक्यों के पतन के बाद दक्षिण भारत में दो नई शक्तियों का जन्म होता है। ये दोनों अपने को यादव वंश से उत्पन्न मानते हैं। उनमें चालुक्य साम्राज्य के दक्षिण भाग पर अधिकार करने वाले होय्सल थे और उत्तर भाग पर यादव (सेऊण)।

गङ्ग वंश के समान होय्सल वंश के अभ्युदय में जैन प्रतिभा का बड़ा भारी हाथ रहा। जैन गुरुओं ने इस वंश के उत्थान में योग देकर अहिंसा और अनेकान्त की दुन्दुभि को फिर एक बार दक्षिण प्रान्त में बजाया। इस वंश का उत्पत्ति स्थान सोसेवूर (सं० शशकपुर) था जिसे राइस सा० ने वर्तमान अङ्गडि (मुडगेरे तालुका, कडूर जिला, मैसूर राज्य) माना है। अंगडि से इस वंश से सम्बन्धित अनेकों लेख भी प्राप्त हुए हैं। यहीं इस वंश की कुलदेवता वासन्तिका देवी का मन्दिर अब भी विद्यमान है। संभव हैं यहीं इस वंश की उत्पत्ति से संबंधित एक महत्त्वपूर्ण घटना हुई थी जिसका उल्लेख कतिपय जैन

लेखों में मिलता है। श्रवणबेल्गोल से प्राप्त सन् ११२३ के एक लेख[1] से ज्ञात होता है कि एक समय इस वंश के प्रवर्तक प्रथम पुरुष सल से एक जैन मुनि ने एक कराल व्याघ्र को देखकर कहा कि–पोय्सल–हे सल! इसे मारो। लेख नं० ४५७ के अनुसार यह घटना इस प्रकार है:— कुन्तल आदि देशों का अधिपति, यदुकुल के सल को बनवास देश का मुख्य क्षेत्र दान में देना चाहता था। उस समय सुदत्त मुनिप ने पद्मावती को एक चीते के रूप में प्रकट करवाया। पद्मावती को चीते के रूप में देखते ही उन्होंने सल से कहा— पोय्सल (सल, मारो)। जिस पर उसने चीते को सल (डण्डे) से मारा और देवी पद्मावती के समक्ष उसके साहस का प्रदर्शन कराया। इससे राजा का नाम पोय्सल पड़ा।

इस घटना के उल्लेख से इतना तो मालुम होता है कि सल उस समय एक होनहार। सरदार था जैन प्रतिभा को राज्याश्रय से वंचित होते समय यह आवश्यक प्रतीत हुआ कि वह किसी उदीयमान सरदार को आगे बढ़ाये जो जिनधर्म को पुनः संरक्षण प्रदान करे। इतिहास हमें बताता है कि सचमुच ही इस वंश ने अपने अन्तिम दिनों तक जैन धर्म को आश्रय प्रदान किया था।

इस वंश के उद्गम होने के पहले अंगडि एक जैन केन्द्र था यह बात हमें लेख नं० १६६ से ज्ञात होती है। लेख नं० २०१ तथा अन्य लेखों से ज्ञात होता होता है कि इस वंश के शासक अपने को मले परोल गण्ड (पहाड़ी सामन्तों में मुख्य) मानते थे, जिससे मालुम होता है कि वे लोग पहाड़ी जाति के थे। यद्यपि प्रस्तुत संग्रह के लेखों से वंश के प्रारम्भ के तीन नरेश—सल, विनयादित्य प्रथम एवं नृपकाम–के सम्बन्ध में विशेष नहीं मालूम होता है पर अन्यत्र उल्लेखों से अनुमान किया जाता है कि ये तीनों नरेश सुदत्त मुनि के प्रभाव में थे[2]। नृपकाम के सम्बन्ध में ले० नं० ३४७ से ज्ञात होता है कि वह विनयादित्य

---

१. जै० शि० सं० प्रथम भाग, ५६; प्रस्तुत संग्रह का २८२ या २८३ वां लेख।
२. सालेतोरे, मेडीवल जैनिज्म, पृष्ठ ६४–७१

द्वितीय का पिता था। लेख नं० २७८[1] में नृपकाम होयसल का जैन सेनापति गंगराज के पिता एचि के संरक्षक के रूप में उल्लेख है। लेख नं० १७८ के आधार पर कुछ इतिहासज्ञ इस नरेश का समय सन् १०२२ या १०४० (?) के लगभग निर्धारित करते हैं, तदनुसार इसका दूसरा नाम राचमल्ल पेम्र्मानडि था जो कि गंगवाडी के मुनियों में प्रसिद्ध था[2]। इसके गुरु द्रविड़संघ के वज्रपाणि ने सोसवूर (अङ्गडि) में अपना जीवन व्यतीत कर अन्त में संन्यासपूर्वक देह त्यागा था। नृपकाम का पुत्र विनयादित्य द्वितीय हुआ जिसने सन् १०४०—११०० के लगभग शासन किया। लेख नं० २९०[3] से ज्ञात होता है कि इसके गुरु शान्तिदेव थे, जिन की चरणसेवा से उसे राज्यलक्ष्मी प्राप्त हुई थी। लेख नं० २८९[4] में उल्लेख है कि उसने अनेक तालाब एवं जैन मन्दिर बनवाये थे। लेख नं० १२५ से ज्ञात होता है कि विनयादित्य के राज्यकाल में अङ्गडि में मकर जिनालय नाम से एक प्रसिद्ध चैत्यालय था। ले० नं० २०० के अनुसार उक्त नरेश के गुरु शान्तिदेव सन् १०६२ ई० में दिवंगत हुए थे। उक्त अवसर पर उस नरेश ने और सभी नगरवासियों ने मिलकर उनकी स्मृति में एक स्मारक बनवाया था। यह नरेश चालुक्य नृप विक्रमादित्य षष्ठ का सामन्त था। उसका बेटा एरेयङ्ग (त्रिभुवनमल्ल) सोमेश्वर तृतीय भूलोकमल्ल चालुक्य का सामन्त था (२१८)। ले० नं० ४०३[5] और ३६३[6] में उसे चालुक्य नरेश का बलद (दक्षिण) भुजादण्ड कहा गया है। ले० नं० ३४८ में कई पद्यों द्वारा इसकी सामरिक वीरता की प्रशंसा

---

१. जै० शि० सं० प्रथम भाग लेख नं० ४४

२. राबर्ट सेवल, हिस्टोरिकल इन्स्क्रिप्सन्स आफ सदर्न इण्डिया, पृष्ठ ३५१

३. जै० शि० सं० प्रथम भाग, ले० नं० ५४.

४. वही — ले० नं० ५३.

५. वही—ले० नं० १२४.

६. वही—ले० नं० १३७ (?)

की गई है और अनेकों उपाधियाँ दी गई हैं। लेख नं० २३३[1] से, जो कि एरेयंग के राज्यकाल का ही है, ज्ञात होता है कि वह गंग मण्डल पर राज्य करता था। उसने अपने गुरु जैनतार्किक गोपनन्दि को श्रवणबेल्गोल की वसदियों के जीर्णोद्धार के हेतु कुछ ग्राम दान में दिये थे।

इतिहासज्ञों का अन्य लेखों के आधार पर विश्वास है कि एरेयंग अपने अन्तिम दिनों तक युवराज बना रहा और उसका वृद्ध पिता विनयादित्य गद्दी पर बैठा रहा। होय्सल वंश में एरेयंग प्रथम व्यक्ति था जिसने वीर गङ्ग उपाधि धारण की। पीछे इसके उत्तराधिकारियों में यह उपाधि बड़ी प्रिय समझी गई।

लेख नं० २६५ से ज्ञात होता है कि एरेयङ्ग की रानी एचलदेवी से बल्लाल, विष्णुवर्धन (विट्टिग) एवं उदयादित्य नामक तीन पुत्र हुए। लेख नं० २६६ में इसके एक दामाद का उल्लेख है जिसका नाम हेम्माडिदेव था, यह गंगवंशोत्पन्न एवं जैन धर्मानुयायी था। लेख नं० २१८ के अनुसार मालुम होता है कि उसके ज्येष्ठ पुत्र बल्लाल ने कुछ समय के लिए शासन किया था यद्यपि उक्त लेख का शक संवत् १००० सन्देहास्पद है। इस लेख में बल्लाल के शौर्य की प्रशंसा भी है। लेख नं० ५६६ तथा ६२५ [2] से ज्ञात होता है कि उसके जैन गुरु चारुकीर्ति मुनि थे जिन्होंने इसे असाध्य बीमारी से बचाया था। बल्लाल का शासन काल सन् ११०० से ११०६ ईस्वी तक माना जाता है।

बल्लाल का उत्तराधिकारी उसका भाई विष्णुवर्धन हुआ। यह इस वंश का सबसे बड़ा प्रतापी राजा था। इस राजा ने कर्नाटक देश को चोल आधिपत्य से मुक्त किया था। इस संग्रह में उसके राज्य के अनेकों लेख संग्रहीत हैं। लेख

---

१. वही—ले० नं० ४६२।

२. वही—ले० नं० १०५, १०८

नं० २६३, २६४, २८३, २८७, २८६, ३०४, ३४८, ३६३ एवं ४०३[1] में विष्णु-वर्धन के अनेकों विरुदों तथा प्रतापादि का उल्लेख है। उसके आठ जैन सेनापतियों —गङ्गराज, बोप्प, पुणिस, बलदेव, मरियाने, भरत, ऐच एवं विष्णु ने अनेकों महत्व के युद्धों में उसे विजय प्रदान कर उसके राज्य को मजबूत बनाया था। लु० राइस महोदय की मान्यता है कि सन् १११६ ई० के पहले विष्णुवर्धन ने जैन धर्म को छोड़कर रामानुजाचार्य के प्रभाव में आकर वैष्णव धर्म ग्रहण कर लिया था। सत्य जो हो पर उसके मन पर जैन प्रभाव और कृतज्ञता इतनी अधिक थी कि जैनत्व के प्रति श्रद्धा एवं भक्ति में उसने कमी नहीं की थी। लेख नं० २८७ और ३०१ से ज्ञात होता है कि सन् ११२५ और ११३३ ई० में भी जैन धर्म के प्रति श्रद्धालु था। २८७ वें लेख के अनुसार उसने चोल सामन्त अदियम, पल्लव नरसिंह वर्म, कोङ्ग, कलपाल तथा अङ्गरन के राजाओं को पराजित किया था तथा पीछे वसदियों के जीर्णोद्धार के हेतु तथा ऋषियों को आहार दान देने के लिए अपने जैन गुरु द्रविड़ संघ के श्रीपाल त्रैविद्य देव को चल्य (शल्य) नामक ग्राम दान में दिया था। लेख नं० ३०१ (सन् ११३३) से विदित होता है कि उसके एक सेनापति बोप्पदेव द्वारा हनसोगेबलि के द्रोहघरट्ट जिनालय की स्थापना के बाद जिस समय पुरोहित लोग चढ़ाये हुए भोजन (शेषा) को विष्णुवर्धन के पास बङ्कापुर ले गये. उसी समय वह एक शत्रु पर विजय प्राप्त कर आया था, तथा उसकी रानी लक्ष्मी महादेवी से पुत्ररत्न उत्पन्न हुआ था। उसने उनका स्वागत कर प्रणाम किया और यह समझकर कि इन्हीं पार्श्वनाथ भग०की स्थापना से उसे युद्ध में विजय, पुत्रोत्पत्ति एवं सुख समृद्धि मिली है, उसने देवता का नाम विजयपार्श्व तथा पुत्र का नाम विजय नरसिंह देव रखा था। ले० नं० २८३[2] से ज्ञात होता है कि उसकी एक पत्नी शान्तलदेवी जैन धर्म परायणा था। उसकी एक उपाधि थी उद्वृत्तसवतिगन्धवारणे अर्थात् उच्छृङ्खल सौतों के लिए मत्त हाथी। उसने श्रवणबेल्गोल में 'सवति गन्धवारण' वसदि भी बनवायी थी। उसके अनेक

१. वही—(२८३ से क्रमशः) ले० नं० ५६, ४९३, ५३, १४४, १३८, १२४, १३७।
२. वही—ले० नं० ५६

दानादि कार्यों का वर्णन जैन महिलाओं के प्रकरण में दिया गया है। विष्णुवर्धन से सम्बन्धित प्रायः सभी लेखों में उसके जैन सेनापतियों मन्त्रियों एवं अफसरों की शूर वीरता, दानादि कार्यों का वर्णन है जो कि प्रसगानुसार पृथक् किया गया है।

यद्यपि विष्णुवर्धन ने होय्सल वंश को दक्षिण भारत की राजनीति में समुन्नत बनाया था और अपने वंश के पूर्व अधिपति चालुक्य वंश से बहुत कुछ स्वतंत्र कर लिया था, पर वह सम्राट् का पद धारण न कर सका। लेख नं० २६५ से सिद्ध होता है कि वह चालुक्याभरण त्रिभुवनमल्ल (विक्रमादित्य षष्ठ) का आधिपत्य स्वीकार किया था। उसके अन्तिम वर्षों के लेखों (३१८ आदि) में भी उसे महामण्डलेश्वर कहा गया है।

इतिहासज्ञों की मान्यता है कि विष्णुवर्धन सन् ११४० ई० में दिवंगत हुआ और उसका बेटा नरसिंह (प्रथम) गद्दी पर आरूढ़ हुआ। यद्यपि विष्णुवर्धन के राज्यकाल का उल्लेख करने वाले लेख सन् ११४६ ई० तक के मिलते हैं पर या तो वे पुराने लेखों की पुनरावृत्ति हैं या जाली हैं। जैन लेखों में ऐसा ही एक लेख (३१८) उसकी मृत्यु के दो वर्ष बाद का है। विष्णुवर्धन को नरसिंह के अतिरिक्त एक और पुत्र था। ले० नं० २६३ (सन् ११३० ई०) से ज्ञात होता है कि उसका ज्येष्ठ पुत्र श्रीमन् त्रिभुवनकुमार बल्लालदेव राज्य कर रहा था। उसकी बहिनों में सबसे बड़ी हरियब्बरसि थी जो जैन धर्मपरायण थी। उक्त राजकुमार के संबंध में इससे अधिक और कुछ ज्ञात नहीं।

नरसिंह प्रथम के राज्यकाल के भी अनेकों लेख इस संग्रह में दिये गये हैं (३२४, ३२८, ३३३, ३३६, ३४७, ३४८, ३५१, ३५२, ३५६, ३६३, ३६७)। ये सामन्तों, सेनापतियों एवं अफसरों से सम्बन्धित हैं। लेख नं० ३४८[१] से ज्ञात होता है कि उक्त नरेश के भाण्डागारिक एवं मंत्री हुल्ल ने

१. वही-ले० नं० १३८.

श्रवणबेल्गोल में चतुर्विंशति जिन मन्दिर निर्माण कराया। यह मन्दिर आजकल भी भण्डारिबस्ति कहलाता है। उक्त लेख में लिखा है कि एक समय नरसिंह अपनी दिग्विजय के समय श्रवणबेल्गोल आये और उक्त जिनालय को देख प्रसन्न हो उसका नाम भव्य चूड़ामणि रखा। नरसिंह ने उस समय मन्दिर के पूजनादि प्रबन्ध के लिए 'सवणेरु' नामक ग्राम दान में दिया। यही बात ले० नं० ३४८ में भी लिखी है। अन्य लेखों से प्राप्त इसके सेनापतियों एवं महाप्रधानों का वर्णन दूसरे प्रकरण में दिया गया है। इन लेखों से ज्ञात होता है कि उक्त नरेश ने अपने शासनकाल में होय्सल वंश की समृद्धि के लिए कोई विशेष प्रयत्न नहीं किये। केवल अपने पिता द्वारा अर्जित राज्य वैभव और उसके यश का ही उपयोग करता रहा। लेख नं० ३३९ में इसकी एक उपाधि 'जगदेकमल्ल' दी गई है जो सूचित करती है कि यह चालुक्यों का आधिपत्य स्वीकार करता था।

नरसिंह का उत्तराधिकारी उसका प्रतापी बेटा बल्लाल द्वितीय हुआ जिसे लेखों में वीर बल्लाल कहा गया है। यह बड़ा बहादुर राजा था। इसने होय्सल वंश को स्वतन्त्र बनाया और राज्य में शान्ति एवं सुख समृद्धि स्थापित की। इसका राज्य सन् ११७३ से १२२० ई० तक अर्थात् ४८ वर्ष के लगभग रहा। इस नरेश के राज्यकाल के भी अनेकों लेख इस संग्रह में दिये गये हैं। लेख नं० ३७३ (सन् ११६८) इसकी युवराज अवस्था का है जिससे ज्ञात होता है कि यह अपने पिता के शासनकाल में सक्रिय सहयोग देता था। इसके जैन गुरु का नाम वासुपूज्य सिद्धान्त देव था। लेख नं० ३७९ और ३८१[1] इसके राज्य के प्रथम वर्ष के हैं। ले० नं० ३७९ से विदित होता है कि अपने पट्टबन्धोत्सव में महादान दिये थे। शक सं० १०९५ की श्रावण शुक्ला एकादशी (दशमी) रविवार को उसका राज्याभिषेक हुआ था। उस दिन उक्त लेखा-

---

१. वही—ले० नं० ४९१.

नुसार उसके महासांधिविग्रहिक मंत्री बूचिमय्य ने त्रिकूट जिनालय बनवा कर, उसकी पूजादि के लिए द्रविड संघ के वासुपूज्य सिद्धान्तदेव को मरिकली गाँव भेंट किया। इसी तरह लेख नं० ३८१ से विदित होता है कि उसका दण्डाधिप हुल्ल था। यह हुल्ल उसके पितामह विष्णुवर्धन के समय से ही उक्त वंश की सेवा में था। बल्लाल देव ने उस वर्ष भानुकीर्ति व्रतीन्द्र को पार्श्व और चतुर्विंशति तीर्थंकर की पूजा हेतु मारुहल्लि ग्राम दान में दिया तथा हुल्ल के अनुरोध से बेक्क गाँव भी भेंट में दिया। ले० नं० ३६६[1] में लिखा है कि बल्लाल ने अपने पिता द्वारा दिये गये तीन गाँवों के दान को हुल्ल मंत्री द्वारा पूरा कराया।

इस राजा के इस संगह के अनेक लेख उसके सेनापतियों, मंत्रियों एवं सेठों से संबंधित है जिनका वर्णन पीछे प्रकरणों में दिया गया है। उसकी सामूहिक विजयों के सम्बन्ध में ले० नं० ३६४ में लिखा है कि इसने उच्चंगि के किले को जीता था, तथा ले० नं० ४३१ से विदित होता है कि उसने सेवुण राजा को हराया और ले० नं० ४४८ से ज्ञात होता है कि उसने कुन्तल देश पर कलचूरि बिज्जल के शासन को हटाकर अपने अधीन किया था। ले० नं० ४६५ से मालुम होता है कि इसका एक जैन दण्डनायक रेचि था जो कि ४०८ वें ले० में कलचूरि वंश का दण्डाधिनाथ बतलाया गया है। दोनों लेखों का अध्ययन करने से मालुम होता है कलचूरि नरेश के धर्म परिवर्तन के कारण तथा बल्लाल द्वारा अपने स्वामी के परास्त होने पर संभव है वह उसका सेनापति हो गया हो।

बल्लाल द्वितीय के पुत्र नरसिंह द्वितीय के राज्य का केवल एक लेख (४७५)[2] हमारे संग्रह में है जिसमें उसकी पृथ्वीवल्लभ, महाराजाधिराज, सर्वज्ञचूड़ामणि आदि उपाधियाँ दी गई हैं। लेख में उक्त नरेश के राज्य में एक सेठ द्वारा गोम्मटेश्वर की पूजा के हेतु किये गए दान का उल्लेख है।

---

१ वही—ले० नं० ६०.

२. वही—ले० नं० ८१.

हमें नरसिंह द्वितीय के पुत्र सोमेश्वर के समय के दो लेख (४६५[1] एवं ४६६) मिलते हैं। ले० नं० ४६५ में सोमेश्वर की विजय एवं कीर्ति का परिचय उनकी उपाधियों से ज्ञात होता है। उक्त नरेश के सेनापति शान्त और उसके पुत्र सालरण्ण ने मनलकेरे में जैनमन्दिर का जीर्णोद्धार कराया था। द्वितीय लेख में वीर बल्लाल तक तो ठीक रूप से वंशावली दी गई पर पीछे की वंशावली नहीं। लेख में काल निर्देशको देखते हुए कहा जा सकता है कि यह उसके समय का है।

सोमेश्वर के राज्य के उत्तराधिकारी उसकी दो रानियों के दो पुत्र, नरसिंह तृतीय एवं रामनाथ हुए। नरसिंह तृतीय के चार लेख प्रस्तुत संग्रह में दिए गये हैं। ले० नं० ४६६ के अन्तर्गत दो लेखों से ज्ञात होता है कि सोमेश के पुत्र नरसिंह ने अपने जीजा द्वारा बनवायी गई चहार दीवारी एवं मकान की मरम्मत कराकर विजयपार्श्वदेव की सेवा में अर्पण किया था तथा कुछ महीने बाद अपने उपनयन संस्कार के समय उक्त देव की पूजादि के निमित्त दान दिया था। ले० नं० ५१२[2] में उक्त नरेश द्वारा तथा होन्नचगेरे के सम्भुदेव द्वारा भूमिदान का उल्लेख है। ले० नं० ५२८[3] में होय्सलराय शब्द से इस नरेश का निर्देश इसके गुरु महामण्डलाचार्य माघनन्दि का उल्लेख तथा वेल्गोल के जौहरियों द्वारा भूमिदान का कथन है। चूँकि लेख का समय उक्त नरेश के राज्यकाल में पड़ता है इसलिए होय्सलराय से नरसिंह तृतीय ही समझना चाहिये।

अन्यत्र उल्लेखों से ज्ञात होता है कि रामनाथ तथा नरसिंह के उत्तराधिकारी बल्लाल तृतीय ने भी जैन धर्म को संरक्षण प्रदान किया था[4]।

इस तरह हम देखते हैं कि इस वंश के आदि पुरुष से लेकर अन्तिम राजा तक सभी जैन धर्म के प्रति श्रद्धालु, भक्त एवं उसे संरक्षण प्रदान करने वाले थे।

---

१. वही—ले० नं० ४६६.
२. ,, ले० नं० ६६.
३. ,, ले० नं० १२६.
४. सालेतोरे, मेडीवल जैनिज्म, पृष्ठ ८५–८६

८. विजय नगर राज्यः—होय्यसल साम्राज्य १३ वीं शताब्दी तक दक्षिण भारत में विद्यमान रहा पर मुसलमानों के दो तीन हमलों से वह ध्वस्त हो गया। उसका अन्तिम राजा बल्लाल तृतीय, मदुरा के सुल्तान गियासुद्दीन द्वारा मार डाला गया। दक्षिण के अन्य हिन्दू साम्राज्य भी खतरे में थे। वे सब सचेत हो विजय नगर के नायकों के झण्डे के नीचे आये।

विजय नगर साम्राज्य के संस्थापक अपने को यादव वंश का मानते हैं (५८५ श्लो० १५)। इस वंश का संस्थापक था संगमेश्वर या संगम (५६१) जिसके संबंध में हमें विशेष कुछ मालुम नहीं। इसके दो बेटों ने मिलकर हिन्दू शक्ति को नेतृत्व प्रदान किया। हरिहर प्रथम जिसके सम्बन्ध में कहा जाता है कि वह सन् १३३६ में गद्दी पर बैठा था सन् १३५५ तक जीवित रहा। प्रस्तुत सग्रह में उसके समय के दो ले० नं० ५५८, ५५६ हैं जिनमें उसे महामण्डलेश्वर, हिन्दुवराय, सुरताल श्री वीर कहा गया है। उसका उत्तराधिकारी उसका भाई बुक्कराय हुआ जिसने सन् १३५५ से १३७७ ई० तक राज्य किया। इसके राज्य के ६—७ ले० प्रस्तुत संग्रह में दिए गये हैं, जिनमें उसे महामण्डलेश्वर कहा गया है। ले० नं ५६६ में उसे पूर्व दक्षिण पश्चिम समुद्राधीश्वर तथा ले० नं० ५६२ में अभिनव बुक्कराय कहा गया है। ले० नं० ५६१ में उसके एक पुत्र विरुपण्ण वोडेयर का उल्लेख है। ले० नं० ५६१, ५६५[1] एवं ५६६ में उक्त नरेश की धार्मिक नीति का निरूपण है। तदनुसार वह अपने राज्य में जैन और वैष्णवों में कोई भेद नहीं देखता था और जब कभी विवाद के प्रश्न उठते थे तो दोनों के पारस्परिक मेल मिलाप कराने में उद्यत रहता था। उसके राज्य के शेष लेख प्रायः समाधिमरण के स्मारक हैं।

बुक्कराय का उत्तराधिकारी उसका पुत्र वीर हरिहरराय द्वितीय हुआ जिसने सन् १३७७ से १४०४ ई० तक शासन किया। इसके राज्यकाल के करीब १३

---

१. जैन शि० सं०, प्रथम भाग, ले० नं० १३६.

लेख इस संग्रह में हैं जो कि प्रायः साधारण जनता, सरदारों एवं सेनापतियों से सम्बंधित हैं। ले० नं० ५७६ में उसके एक जैन सेनापति वैचप्प का उल्लेख है जो कि उसके पिता के समय से उक्त पद पर था। उक्त लेख में उसकी कोंकण देश से लड़ाई का वर्णन है जिसमें बैचप्प की जीत हुई थी। ले० नं० ५८१ में हरिहर द्वितीय के पुत्र बुक्कराय द्वितीय तथा बैचप्प सेनापति के पुत्र इरुगप्प महामंत्री का उल्लेख है। ले० नं० ५८५ में चैच (वैचप) और इरुगप्प की प्रशंसा के साथ बुक्क और हरिहर की प्रशंसा है। सन् १३८६ में इरुगप्प ने विजयनगर में एक मन्दिर बनवाया और उसमें कुन्थु जिननाथ की स्थापना की थी। ले० नं० ५८६ में और उसके बाद के लेखों में महामण्डलेश्वर के स्थान में उक्त राजा की अश्वपति, गजपति आदि तथा महाराजाधिराज उपाधियां मिलती हैं। ले० नं० ६०२[1] में हरिहरराय की मृत्यु का उल्लेख है। उक्त लेखानुसार वह सन् १४०४ (शक सं० १३२६ भाद्रपद कृष्ण १० सोमवार) में दिवंगत हुआ था।

हरिहर द्वितीय का उत्तराधिकारी उसका बेटा बुक्क द्वितीय हुआ जिसने १४०४ से १४०६ ई० के बीच राज्य किया था पर उसके राज्य का एक भी जैन लेख प्रस्तुत संग्रह में नहीं है। उसका उत्तराधिकारी देवराय हुआ जो कि उसका भ्राता था। इसने १४०६ से १४२२ ई० तक राज्य किया। इसके राज्य के ६ लेख प्रस्तुत संग्रह में हैं। ले० नं० ६०४ में उसकी अधिराट् जैसी उपाधियाँ दी गई हैं तथा ६०५ में इसकी प्रशंसा की गई है। ले० नं० ६०६ में उसकी अनेक उपाधियों के साथ उसके जैन सेनापति गोप का उल्लेख है। लेख नं० ६१५ के अन्तर्गत दो लेखों से विदित होता है कि उसका एक बेटा हरिहरराय था जो कि जैन धर्मानुयायी था। उसने कनकगिरि के विजयनाथ देव की उपासना आदि के लिए मलेयूर ग्राम दान में दिया था।

ले० नं० ६१६ एवं ६२० में इस वंश की वंशावली दी गई है जिससे

१. वही—ले० नं० १२६

विदित होता है कि देवराय का उत्तराधिकारी विजय अर्थात् बुक्क तृतीय था जिसने कुछ ही महीने राज्य किया था। ले० नं० ६१८ में विजय बुक्कराय के सम्बंध में लिखा है कि उसने स्वर्ग प्राप्ति के लिए गुम्मटनाथ स्वामी की पूजा एवं सजावट के लिए तोटहल्लि गाँव भेंट में दिया था। वह भगवद् अर्हत् परमेश्वर का आराधक था। उसका उत्तराधिकारी उसका पुत्र देवराय द्वितीय हुआ। ले० नं० ६१९ और ६२० में इस वंश की देवराय द्वितीय तक वंशावली दी गई है। ले० नं० ६१९ के अनुसार उक्त ताम्रपत्रों का दाता यही देवराय था। ६२० में इस वंश के प्रत्येक राजा की प्रशंसा में एक एक शार्दूलविक्रीडित छन्द दिया गया है। देवराय द्वितीय की प्रशंसा में अनेक छन्द हैं और कहा गया है कि उसने अपने पान सुपारी बगीचे में एक चैत्यालय बनवाया था और मन्दिर में श्री पार्श्वनाथ स्वामी की प्रतिमा विराजमान की थी। इस नरेश ने सन् १४२२ से १४४६ तक राज्य किया। ले० नं० ६३५[1] (सन् १४४६ ई०) में इसकी मृत्यु का संवत् दिया गया है।

देवराय द्वितीय का उत्तराधिकारी उसका बेटा मल्लिकार्जुन हुआ पर उसका एक भी लेख प्रस्तुत संग्रह में नहीं है। इसकी मृत्यु के बाद सन् १४६५ में उसका भाई विरूपाक्ष तृतीय गद्दी पर बैठा। उसका राज्य सन् १४८५ तक था। उसके समय का एक लेख नं० ६४९ (सन् १४७२) है जिसमें उसकी अनेक उपाधियाँ—पृथ्वीमनोवल्लभ, महाराजाधिराज, राजपरमेश्वर आदि—दी गई हैं। यह संगम वंश का अन्तिम राजा था। इसके मंत्री सालुव नरसिंह ने इसे मार कर राज्य छीन लिया और इस तरह सन् १४८५ में इस वंश का अन्त हो गया। इस वंश के बाद विजयनगर पर शासन करने वाले अन्य वंश भी हुए हैं। उनमें तुलुव और आरवीडु वंश ख्यात हैं। तुलुव वंश के तृतीय नृप कृष्णदेव राय का नाम इतिहास में विशेष प्रसिद्ध है। अन्य उल्लेखों से ज्ञात होता है कि इसने

---

१. वही—ले० नं० १२५

जैन धर्म को अच्छी तरह संरक्षण प्रदान किया था [१]। उसका उत्तराधिकारी उसका भाई अच्युत राय हुआ था। लेख नं० ६६७ में लिखा है कि वादि विद्यानन्द ने नरसिंह के कुमार कृष्णराय के दरबार में परमतवादियों को अपने वाग्बल से परास्त किया था तथा उनके चरण कमलों को कृष्णराय के भाई अच्युतराय अपने मुकुट से पूजते थे।

विजय नगर राज्य पर शासन करने वाले आरवीडु वंश के दो नरेशों के राज्य काल के दो लेख नं० ६९१ (सन् १६०८) और ७१० (सन् १६३७) भी इस संग्रह में उपलब्ध है। प्रथम लेख वेङ्कटाद्रि प्रथम के समय का है। जिसमें उसे राजाधिराज आदि उपाधियां दी गई हैं और उल्लेख है कि मेलिगे नामक स्थान में बोम्मण श्रेष्ठी ने जिन मन्दिर बनवाकर अनन्त जिन की प्रतिष्ठा की थी। इसी तरह दूसरे लेख में वेङ्कटाद्रि द्वितीय का अनेक उपाधियों के साथ उल्लेख है। उसे कलिकाल अष्टम चक्रवर्ती कहा गया है। इस लेख में लिंगायत और जैनों के बीच उठे धार्मिक विवाद पर आपसी समझौता होने का उल्लेख है।

विजय नगर राज्य के लेखों को देखने से हमें भली भांति ज्ञात होता है कि जनता के बीच विशेषतः नायकों और गौडों के बीच जैन धर्म प्रिय था। वे उसका विधिवत् पालन करते, दान देते तथा अन्त में समाधि विधि पूर्वक देहत्याग करते थे। हिरियावलि एवं नव निधि आदि ऐसे स्थान थे कि जहाँ समाधि विधि साधक आचार्य रहते थे। स्त्रियां अपने पति के मरने के बाद या तो सहगमन [१] (सती होकर) या समाधि विधि से मरण करती थीं। सती प्रथा के दो तीन दृष्टान्तों से ज्ञात होता है कि जैन समाज हिन्दू संस्कारों से प्रभावित होने लगा था। उनके धार्मिक मामलों में वैष्णवों की ओर से भी समय समय पर बाधाएं आने लगी थीं।

९. मैसूर राज्यवंशः—मैसूर राज्य के सम्बंध के इस संग्रह में प्रायः वे ही लेख हैं जो कि जैनशिलालेख संग्रह प्रथम भाग में वर्णित हैं। केवल दो लेख नं० ७५८

---

१. देखो, लेख नं० ५५६, ५७४, ६०५,

(सन् १८९८ केलसुरु से प्राप्त) एवं नं० ७६४ (सन् १८२६) नरसीपुर से प्राप्त नये हैं, जो कि मुम्मुडि कृष्णराज चतुर्थ के राज्यकाल के हैं। इसका राज्य सन् १७९९ से १८३१ ई० तक था। पहले भाग के लेख नं० ४३३, ९८ एवं ४३४ इस संग्रह में लेख नं० ७५२, ७५७ एवं ७६६ के रूप में संगृहीत हैं, जो कि इसी नरेश के समय के समझने चाहिये, कृष्ण राज तृतीय (राज्य काल ई० १७३४–१७६१) के नहीं।

ई. दक्षिण भारत के छोटे राजवंश एवं सामन्त गण।

१. सेन्द्रक कुलः–इस कुल की उत्पत्ति नागवंश से कही जाती है। लेख नं० १०९ में इन्हें भुजगेन्द्रान्वय का कहा गया है। इनका देश नागरखण्ड था जो कि बनवासि प्रान्त का एक भाग था। पहले ये कदम्बों के सामन्त थे पर पीछे कदम्बों के पतन के बाद बादामी के चालुक्यों के सामन्त हो गये। प्रस्तुत संग्रह के लेख नं० १०४, १०६ एवं १०९ से ज्ञात होता है कि ये जैन धर्मानुयायी थे। इस वंश के सामन्त भानुशक्ति राजा ने कदम्ब हरिवर्मा से जैनमन्दिर की पूजा के लिए दान दिलाया था (१०४) तथा चालुक्य जयसिंह (प्रथम) के राज्य में सामन्त सामियार ने एक जैन मन्दिर बनवाया था (१०६)। लेख नं० १०९ से ज्ञात होता है कि चालुक्य रणराग के शासन काल में विजयशक्ति के पौत्र एवं कुन्दशक्ति के पुत्र दुर्गशक्ति ने पुलिगेरे के प्रसिद्ध शंख जिनालय के लिए भूमिदान दिया था।

२. नीगुन्द वंशः—इस वंश का उल्लेख गंगवंश के एक लेख नं० १२१ में मिलता है। वहां लिखा है कि बाणकुल को भयभीत करने वाला दुण्डु नाम का एक नीगुन्द नामक युवराज हुआ। उसका बेटा परगूल पृथ्वी नीगुन्द राज हुआ उसकी पत्नी कुन्दाच्चि थी जिसकी माता पल्लव नरेश की पुत्री थी तथा उसका पिता सगर कुल का मरुवर्मा था। परगूल और उसका पिता दुण्डु दोनों जैन थे। उसकी पत्नी कुन्दाच्चि ने लोक तिलक नामक जैन मन्दिर बनवाया। जिसके लिए

परगूल ने अपने अधिपति नरेश से एक ग्राम दान में दिलाया था। उक्त लेख में कुरडु के जैन गुरु विमलचन्द्राचार्य का उल्लेख है।

३. शान्तर वंश—दक्षिण भारत में जैन धर्म को शक्तिशाली बनाने में शान्तरवंशी राजाओं का बड़ा भारी हाथ था। प्रस्तुत संग्रह के अनेक जैन लेख इस बात के प्रमाण हैं।

शान्तर राजाओं के वंश का नाम उग्रवंश था और सातवीं शताब्दी के लगभग पश्चिमी चालुक्य नरेश विनयादित्य के शासनकाल में यह वंश हमारे सामने आता है। राज्य के रूप में इस वंश को स्थापित करने वाले प्रथम पुरुष का नाम जैन लेखों में, जिनदत्तराय मिलता है। लेख नं० १४६ के अनुसार यह जिनदत्तराय कलस राजाओं के खानदान कनककुल में उत्पन्न हुआ था। उसने जिनाभिषेक के लिए कुम्बसेपुर नामक गांव दान में दिया था। जिनदत्तराय के प्रताप का वर्णन ले० नं० १६८ में दिया गया है जिससे विदित होता है कि उसने पद्मावती देवी के प्रसाद को प्राप्त कर एक राक्षस के पुत्र को अपने भुजबल से भयभीत कर दिया था। ले० नं० २१३ और २४८ से जिनदत्तराय और उसके वंश के सम्बन्ध की अनेक सूचनायें मिलती हैं। इनसे मालुम होता है कि इस वंश की उत्पत्ति उत्तर भारत के मथुरा नगर में हुई थी और जिनदत्तराय ने पद्मावती के प्रसाद से पट्टिपोम्बुच्चपुर (वर्तमान हुम्मच) में अपना शासन स्थापित किया था। इसके बाद शान्तर लोगों की राजधानी बहुत समय तक हुम्मच ही रही। इस वंश के अनेकों लेख भी हुम्मच से ही प्राप्त हुए हैं।

जिनदत्तराय के वंश में कुछ समय बाद तोलापुरुष विक्रमशान्तर हुआ जिसने मौनिभट्टारक के लिए एक पाषाणवसदि (१३२) बनवाई थी। ले० नं० २१३ से विदित होता है कि विक्रम शान्तर ने एक महादान देकर सान्तलिगे हजार नाड् नाम का एक भिन्न राज्य स्थापित किया, इससे वह कन्दुकाचार्य, दानविनोद, विक्रमशान्तर इन तीन नामों से प्रसिद्ध हुआ। उसका पुत्र चागि शान्तर हुआ जिसने चागि समुद्र का निर्माण कराया था। उक्त लेख से ज्ञात होता है कि चागि के बाद क्रमशः वीर, कन्नर, कावदेव, त्यागि, नन्नि, राय, चिक्कवीर, अम्मन

तथा तैल (सन् ८५० ई० के लगभग से १०२५ ई० के लगभग तक) इस वंश में उत्पन्न हुए। दुर्भाग्य से इन सबके सम्बन्ध में कोई लेख नहीं मिलते।

तैल (प्रथम) के तीन पुत्र थे उनमें वीर शान्तर (द्वितीय) ज्येष्ठ था। वही राज्य का अधिकारी हुआ। उसके राज्य के इस संग्रह में दो लेख हैं। ले० नं० १९७ में उसके अनेक विरुद दिये गये हैं। ले० नं० १९८ से ज्ञात होता है कि उसने समस्त विरोधियों को नष्ट कर अपने राज्य को निष्कण्टक कर दिया था। इस लेख में उसकी पत्नी चागलदेवी द्वारा निर्मापित तोरण एवं मन्दिर आदि कार्यों तथा दानों की प्रशंसा है। वीरशान्तर का अधिराजा त्रैलोक्यमल्ल चालुक्य (सोमेश्वर प्रथम-सन् १०४२–१०६८ ई०) था इसके नाम पर ही वीर शान्तर का दूसरा नाम त्रैलोक्यमल्ल पड़ा (१९७, १९८)। ले० नं० २१३ से ज्ञात होता है कि इसका विवाह जिन भक्त कुल गंगवंश में हुआ था। उसका ससुर रक्कस गंग था। उसकी पत्नी कञ्चलदेवी (वीर महादेवी) से उसे चार पुत्र उत्पन्न हुए—तैल, गोग्गिग, ओडुग और बर्म्म। ये सब जैन धर्म के परम भक्त थे। इन भाइयों ने अपनी जैन धर्मपरायणा मौसी चट्टलदेवी के सहयोग से जैन धर्म की प्रभावना के अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य किये थे। इस संग्रह में तैल-शान्तर के राज्यकाल के ७ लेख (२०३, २१२, २१३, २१४, २१५, २१६, २२६) हैं जो सभी हुम्मच से प्राप्त हुए हैं। ले० नं० २०३ से ज्ञात होता है कि तैल द्वितीय ने सन् १०६६ में अपनी राजधानी पोम्बुर्च्चपुर में एक जिनालय बनवाया था, जिसका नाम भुजबल शान्तर जिनालय था। अन्य लेखों में उसके भाइयों के धार्मिक कार्यों का उल्लेख है। तैल द्वितीय भी अपने पिता के समान चालुक्य त्रिभुवन मल्ल (विक्रमादित्य षष्ठ) के अधीन था। उसका विरुद भी था त्रिभुवन मल्ल। उसने अपनी माता वीरब्बरसि की स्मृति में, वादिघरट्ट अजित सेन पण्डितदेव का नाम लेकर एक बसदि की नींव रखी थी।

ले० नं० २४८ और २२६ से ज्ञात होता है कि तैल शान्तर के पम्पादेवी नाम की एक पुत्री तथा श्रीवल्लभ नाम का पुत्र था तथा ओडुग शान्तर के तैल

(तृतीय) नामका पुत्र था। अन्यत्र उल्लेखों से ज्ञात होता है कि तैल तृतीय श्रीवल्लभ् का उत्तराधिकारी हुआ[1]। ले० नं० ३४६ में इस वंश के अन्तिम अंश का वर्णन है। यह लेख तैल चतुर्थ के वर्णन से प्रारम्भ होता है। तैल चतुर्थ, श्रीवल्लभ शान्तर का पुत्र था। इसकी पत्नी अक्कादेवी थी जिससे काम, सिंह और अम्मण ये तीन पुत्र हुए। काम से जगदेव और सिंगिदेव दो पुत्र तथा अलिया देव पुत्री हुई। काम, तैल चतुर्थ का उत्तराधिकारी हुआ और जगदेव कामदेव का। उक्त लेख में अलियादेवी के दान कार्यों का वर्णन है। यह देवी गंगवंश के राजकुमार होन्नेयरस की पत्नी थी।

यद्यपि पीछे के शान्तर नरेश वीर शैवधर्म की ओर झुक गये थे तो भी जैन धर्म को कृतज्ञता के भाव उनके मन में बराबर थे। २-३ शताब्दी बाद भी इस वंश के नायकों को अपने पूर्वजों के धर्म की याद बनी रही। कारकल से प्राप्त दो लेखों (६२४ और ६२७) से हमें ज्ञात होता है कि जिनदत्तराय के वंशज भैरव के पुत्र वीर पाण्ड्य ने कारकल में बाहुबलि की प्रतिमा बनाकर प्रतिष्ठित कराई थी तथा वहीं जिनभक्त ब्रह्म (क्षेत्रपाल) की प्रतिमा भी प्रतिष्ठापित की थी।

४. कोङ्गाल्ववंशः—कोङ्गाल्ववंश राजाओं का शासन कोङ्गलनाड ८००० प्रान्तपर था जो कि वर्तमान कुर्गके उत्तरीभाग येलु सावीर प्रान्त और मैसूर के हसन जिले के दक्षिणीभाग अर्कुलगुद तालुका को शामिल किये था। यहाँ के पूर्व इतिहास का हम पता नहीं पर ११वीं शताब्दी इस्वी से कोङ्गाल्व नरेशों के शिलालेखों से ज्ञात होता है कि उस समय यह क्षेत्र महत्वपूर्ण था।

इस वंश के जो भी लेख प्रस्तुत संग्रह में हैं उनसे उनके राजवंश का विशेष परिचय नहीं मिलता पर उनकी जैन धर्मपरायणता का परिचय अवश्य मिलता है। सन् १०५८ ई० के लेखों (१८८, १८६, १६०) से मालुम होता है कि राजेन्द्र कोङ्गाल्व ने अपने पिता द्वारा निर्मापित बसदि के लिए भूमिदान दिया था। उसकी मां ने भी एक बसदि बनवाई थी और उसमें अपने गुरु गुणसेन

१—राबर्ट सेवेल, हिस्टोरिकल इन्स्क्रिप्सन्स आफ सदर्न इण्डिया, पृष्ठ ३६०

पश्चिम देव की प्रतिमा प्रतिष्ठित की थी। ले० नं० १६० में राजेन्द्र का पूरा नाम राजेन्द्र चोल कोङ्गाल्व दिया गया है। सन् १०७० के एक त्रुटित लेख (२०६) में पृथुवि कोङ्गाल्व नाममात्र मिलता है उसके आगे का अंश नहीं पर ले० नं० २२०[1] में उसका पूरा नाम राजेन्द्र पृथ्वी कोङ्गाल्व अदटरादित्य दिया गया है। इसने अदटरादित्य नामक चैत्यालय निर्माण कराया था। पहले के उद्धृत लेखों और इस लेख से ज्ञात होता है कि उसका शासन काल कम से कम सन् १०५६ से १०७६ ई० तक अवश्य था। उक्त लेख में राजेन्द्र कोङ्गाल्व की महत्त्वपूर्ण अनेकों उपाधियाँ दी गई हैं जिनसे मालुम होता है कि वे सूर्यवंशी थे और चोलवंश से उनकी उत्पत्ति हुई थी। उन्हें ओरेयूर पुरवराधीश्वर कहा गया है। ओरेयूर व उरगपुर चोलराज्य की प्राचीन राजधानी थी। इस वंश के नरेश प्रारंभ से ही होय्सल राजाओं के अधीन सामन्त थे तथा पीछे विजय नगर राज्य के अधीन बने रहे।

प्रस्तुत संग्रह में इस वंश के और राजाओं के लेख नहीं आ सके। ले० नं० ५६० (सन् १३६१) में कोङ्गाल्ववंशी किसी राजा की रानी सुगुण देवी द्वारा प्रतिमा स्थापना एवं दानादि कार्यों का उल्लेख है। इससे विदित होता कि इस वंशके नरेश चौदहवीं शताब्दी या उसके बाद तक जैन धर्म पालन करते रहे।

५. चङ्गाल्व वंशः— कोङ्गाल्वों के दक्षिण में चंगाल्व वंश का राज्य था। पहले वे चंगनाड् (मैसूर रियासत का वर्तमान हुणसूर तालुका) के अधिपति थे। पश्चात् इनका राज्य पश्चिम मैसूर और कुर्ग में फैला था। यद्यपि ये शैव सम्प्रदाय के थे पर प्रस्तुत संग्रह के कुछ लेख यह सिद्ध करते हैं कि ११ वीं शताब्दी के अन्तिम एवं १२वीं के प्रथम दशकों में वे जैन धर्मावलम्बी थे। ले० नं० १७५, १९५, १९६ एवं २२३ से ज्ञात होता है कि वीर राजेन्द्र चोल नन्नि चंगाल्व ने देशियगण, पुस्तक गच्छ के लिए कुछ बसदियाँ बनवायी थीं। लेख न० २४० और २४१ में कथन है कि उसी राजेन्द्र चंगाल्व ने सन् ११०० में

१—जैन शिलालेख संग्रह, प्रथम भाग, ले० नं० ५००

न्द-तीर्थ की बसदि को, जिसे पहले राम ने बनवाया था और जिसको गंगोंने दान में दिया था, फिर से बनवाया।

ले० नं० ३७७ में उल्लेख है कि कदम्बवंशी सोविदेव ने किसी चंगाल्व राजाको हरा दिया था-और ४५२ में लिखा है कि होय्सल सेनापति ने चंगाल्व नृप को मार भगाया था। पर इन राजाओं का क्या नाम है, हमें मालुम नहीं। ले० नं० ६६१ में सूचना है कि सन् १५१० के लगभग इस वंश के एक नरेश के मंत्री पुत्र ने गोम्मटेश्वर की ऊपरी मञ्जिल का जीर्णोद्धार कराया था।

६. निडुगल वंशः—१३ वीं शताब्दी ईस्वी में इस वंश का राज्य उत्तर मैसूर प्रान्त के कुछ हिस्से पर था। ये अपने को चोल महाराज तथा ओरेयूर पुरवराधीश्वर कहते थे। इस वंश के दो लेख (४७८ और ५२१) हमारे संग्रह में हैं जिनसे मालुम होता है कि इस वंश के कुछ नरेश जिनधर्म भक्त थे। ले० नं० ४७८ में इस वंश की एक वंशावली दी गई है जो कि तीसरे वंशधर से प्रारंभ होती है, यथा–चोल राजाओं में हुआ मंगि, उससे बिब्ब, उससे गोविन्द, उसका पुत्र हुआ इरुङ्गोल (प्रथम)। इरुङ्गोल का पुत्र हुआ भोगनृप जिससे बर्म्म (ब्रह्म) नृप हुआ। उस बर्म्म नृप की रानी वाचालदेवी से इरुंगोल द्वितीय हुआ। इस नरेश ने अपने आश्रित एक जैन व्यक्ति गंगेयन मारेय के अनुरोध पर पार्श्व जिनबसदि के लिए कुछ भूमियों का दान दिया। उक्त बसदि का निर्माण उक्त जैन ने कराया था। उस बसदि की पूजा आदि के लिए कुछ किसानों ने चन्दा एवं तैलादि दान की व्यवस्था की थी। ले० नं० ५२१ में उसकी अनेक उपाधियाँ दी गई हैं तथा उक्त जिन बसदि का नाम ब्रह्म जिनालय दिया गया है जो कि सम्भव है उसके पिता के नाम पर रखा गया था। उक्त बसदि के लिए सन् १२७८ ई० में मल्लि सेट्टि ने सुपारी के २००० पेड़ों के २ हिस्से दान में दिये थे। इरुंगोल द्वितीय के सम्बन्ध में इतिहासज्ञों की मान्यता है कि वह जैन धर्मावलम्बी था[१]।

१—राबर्ट सेवेल, हिस्टोरिकल इन्स्क्रिप्सन्स आफ सदर्न इण्डिया, पृष्ठ ३६६

इरुगोल प्रथम के सम्बंध में श्रवण बेल्गोल से प्राप्त दो लेखों (३४८, ३७८[1]) से ज्ञात होता है वह भी जैन था। उसके गुरु नयकीर्ति सिद्धान्त देव थे तथा वह होय्सल विष्णुवर्धन द्वारा पराजित हुआ था।

७. चेर वंश—चेर वंश की एक शाखा अदिगैमान् का एक लेख (४३४) हमारे संग्रह में है, जिससे उस वंश का थोड़ा परिचय मिलता है। उक्त लेख में एलिनि उर्फ यवनिका नामक एक अदिगैमान् सरदार का उल्लेख है। दूसरा सरदार राजराज था। उसका पुत्र विडुकादलगिय पेरुमाल अर्थात् व्यामुक्त श्रवणोज्ज्वल था, जिसे लेख में तकटानाथ कहा गया है। अन्यत्र उल्लेखों से मालुम होता है कि वह सन् ११६८–१२०० ई० में जीवित था। उक्त लेख के अनुसार व्यामुक्त श्रवणोज्ज्वल ने अपने पूर्वज यवनिका द्वारा तुण्डीर मण्डल के अर्हत्सुगिरि पर प्रतिष्ठापित यक्ष-यक्षिणी की प्रतिमाओं का जीर्णोद्धार कराया तथा एक घण्टा दान में दिया और एक नाली भी बनवायी थी। लेख से ज्ञात होता है कि इस शाखा के तीनों पुरुष जैन धर्म में रुचि रखते थे।

८. शिलाहार वंश—शिलाहार अपने को जीमूतवाहन का वंशज मानते हैं। प्रस्तुत संग्रह में पश्चात्कालीन शिलाहारों के केवल तीन लेख संगृहीत हैं, जो कि कोल्हापुर और उसके आसपास प्रदेश में राज्य करते थे। ले० नं० ३२० और ३३४ में इस वंश की वंशावली दी गई है जिसमें जतिग से इस वंश का प्रारम्भ माना गया है। जतिग को नरेन्द्र, क्षितीश कहा गया है। जतिग के चार बेटे थे—गोङ्कल, गूवल, कीर्तिराज और चन्द्रादित्य। इसमें गोङ्कल का पुत्र मारसिंह हुआ जिसके पाँच पुत्र थे:—गूवल, गंगदेव, बल्लाल, भोजदेव, गण्डरादित्य। उक्त दोनों लेख गण्डरादित्य के पुत्र विजयादित्य के राज्य के हैं जो कि भूमिदान संबंधी है। इन लेखों में उसके जो विरुद दिये गये हैं उनसे ज्ञात होता है कि वह अपने समय का बड़ा प्रतापी मण्डलेश्वर था। बल्लालदेव और

२—जैन शिलालेख संग्रह, प्रथम भाग, ले० नं० १३८, ४२

गण्डरादित्य के सम्बन्ध में ले० नं० २५० में उल्लेख है कि उसने जैन मुनियों के लिए एक भवन दान में दिया था। उसकी महामण्डलेश्वर उपाधि थी। भोजदेव के सम्बन्ध में अन्यत्र उल्लेख से मालुम होता है कि उसके दरबार में रहकर सोमदेव ने शब्दार्णव चन्द्रिका बनायी थी।

६. रट्ट वंश—इस वंश के अनेक लेख इस संग्रह में दिखाई देते हैं। इस वंश के राजे जैन धर्म के संरक्षक राष्ट्रकूट एवं चालुक्य नरेशों के सामन्त थे। हुल्त्स महोदय की मान्यता है कि इस वंश का व्यवहारी नाम रट्ट था जब कि राष्ट्रकूट अलंकारिक एवं शाही रूप था। जो भी हो, रट्ट लोग राष्ट्रकूट कृष्ण तृतीय के समय से प्रभाव में आये थे। सौंदत्ति से प्राप्त एक लेख (१३०) से मालुम होता है कि रट्टों में प्रथम जिसने प्रमुख अधिकारी होने का पद पाया था वह था मेरड का पुत्र पृथ्वीराम। उसे यह पद राष्ट्रकूट कृष्ण तृतीय की अधीनता में मिला था। उससे पहले वह मैलाप तीर्थ के कारेयगण के इन्द्रकीर्ति स्वामी का शिष्य था। ले० नं० १६० में पृथ्वीराम के पुत्र, प्रपौत्र एवं उनकी पत्नियों के नाम दिए गए हैं। संभव है ये सब सामन्त या महासामन्त थे। इसके बाद इस वंश की परम्परा का क्रम कुछ भंग हो गया है।

वंशावली का द्वितीय अंश २०५ और २३७ वें लेख में वर्णित है, जिसमें नन्न से सेन द्वितीय तक वंश परम्परा दी गई है। इन लेखों में तथा पीछे के लेखों में कार्तवीर्य को लत्तलूपुरवराधीश्वर तथा महामण्डलेश्वर आदि कहा गया है। ले० नं० ३६६, ४४६, ४४६, ४५३, ४५४ और ४७० इसी वंश से संबंधित है जिनमें सेन द्वितीय से ४-५ पीढ़ी तक अर्थात् कार्तवीर्य चतुर्थ, मल्लिकार्जुन और लक्ष्मीदेव द्वितीय तक की वंशावली दी गई है। ज्ञात होता है कि इस वंश का अभ्युदय ई० सन् ६७८ के लगभग से १२२६ ई० तक रहा। इस वंश के प्रथम पुरुष पृथ्वीराम ने राष्ट्रकूट वंश की अधीनता में वृद्धि की पर उसके उत्तराधिकारी शान्तिवर्मा से लेकर सेन द्वितीय तक कल्याणी के चालुक्यों की

अधीनता में रहे। सेन द्वितीय पीछे स्वतन्त्र हो जाता है और संभव है कि उसके बाद के सभी वंशधर स्वतन्त्र थे।[1]

वंश के आदि पुरुष पृथ्वीराम के सम्बन्ध में ले० नं० १३० में कहा गया है वह एक जैन मुनि का विनीत छात्र था। उपर्युक्त लेखों से मालुम होता है कि कार्तवीर्य और मल्लिकार्जुन ने अपने दानों द्वारा जैन धर्म को अच्छी तरह संरक्षित किया था।

१०. यादव वंशः—यह वंश अपनी उत्पत्ति विष्णु से मानता है (३१७) पर इसके प्रारम्भिक इतिहास के विषय में हमें कुछ नहीं मालुम। इस संग्रह के जैन लेखों से ज्ञात होता है कि वे राष्ट्रकूटों के तथा पीछे कल्याणी के चालुक्यों के सामन्त थे। ईस्वी १२ वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में यह शक्ति कुछ स्वतन्त्र होती दिखती है। प्रारम्भिक यादवों को सेउण देश के यादव भी कहते हैं। पीछे इन्होंने देवगिरि में अपने राज्य को स्थापित किया था।

प्रस्तुत संग्रह में इस वंश के राजा सेउणचन्द्र तृतीय से लेकर रामदेव या रामचन्द्र तक के शिला लेख संग्रहीत हैं। ले० नं० ३१७ से ज्ञात होता है कि राजा सेउणचन्द्र तृतीय ने चन्द्रप्रभ भगवान् के मन्दिर के खर्च के लिए अंजनेरी में तीन दुकानें दान मे दी थीं पर उसकी राजनीतिक स्थिति का पता नहीं चलता। ४२१ वें लेख में उल्लेख है कि होय्सल नृप वीरबल्लाल द्वितीय ने, सन् ११६८ के लगभग सेऊणदेश के किसी राजा को जिसके पास अगणित हाथी घोड़े तथा वीर योद्धा थे, युद्ध में अकेले ही हराया। इतिहास को देखने से पता चलता है कि उस समय वहाँ भिल्लम पञ्चम का बेटा जैत्रपाल (जैतुगि) प्रथम शासन कर रहा था। उसके शौर्यसम्पन्न विशेषणों से ज्ञात होता है कि उस समय तक यादवों का प्रभाव एवं स्थिति अच्छी हो गई थी। जैत्रपाल प्रथम का बेटा सिंहण हुआ जिसका राज्य सन् ११६१ ई० से १२४७ ई० तक था।

---

१. विशेष इतिहास के लिए देखो, दिनकर देसाई, महामण्डलेश्वरज अण्डर दि चालुक्याज आफ कल्याणी, बम्बई, १६५१

इसके ३७ वें वर्ष को द्योतन करने वाला एक समाधिमरण स्मारक लेख (४६०) प्रस्तुत संग्रह में दिया गया है। इसी तरह सिंहण के पौत्र कन्हार देव या कन्धार देव के समय का वैसा ही एक लेख (५०२) इसी संग्रह में है। इस वंश से सम्बन्धित ले० नं० ५११ में वंशावली वाला भाग त्रुटित है, तो भी इससे इतना ज्ञात होता है कि कन्धार देव का सहोदर महदेव था तथा कन्धार-राय का पुत्र रामदेव (रामचन्द्र) था। उक्त लेख के अनुसार दण्डेश कूचिराज ने अपने स्वामी महदेव के करकमलों द्वारा अपनी पत्नी के नाम पर निर्मापित लक्ष्मी जिनालय को कुछ दान दिलवाया था। रामचन्द्र या रामदेव के राज्य काल के ५ लेख (५१३, ५३५, ५३८, ५४०, ५४१) इस संग्रह में हैं जो कि दाताओं द्वारा दिये दान के स्मारक हैं। सन् १२६२-६५ के बीच के ले० नं० ५३८, ५४०, ५४१ में उक्त राजा की भुजबल प्रौढ प्रताप चक्रवर्ती आदि उपाधियाँ दी गयी हैं।

होय्सल वंश के समान ही इनका राज्य मुसलमानों ने नष्ट कर दिया।

११. संगीतपुर के सालुव मण्डलेश्वरः—१५ वीं ई० के उत्तरार्ध से लेकर १६ वीं के उत्तरार्ध तक संगीतपुर के शासक जैन धर्म के नेता के रूप में हमारे सामने आते हैं। तौलव देश (उत्तर कनारा जिला) में संगीतपुर, जिसे हाडुहल्लि भी कहते हैं, एक समृद्ध नगर था। उस नगर के शासक काश्यप गोत्र तथा सोमवंश के कहलाते थे। ले० नं० ६५४ में इस नगर का बड़ा सुन्दर वर्णन है। वहाँ का शासक महामण्डलेश्वर सालुवेन्द्र था जोकि चन्द्रप्रभ भगवान् का भक्त था। लेख में उक्त राजा के अनेक विशेषण दिये गये हैं जिससे विदित होता है कि वह राज्य और जैनधर्म दोनों को अच्छी तरह पालन कर रहा था। उसके मंत्री का नाम पद्म या पद्मण था जो कि शाही खान्दान का था। उसे सन् १४८८ में सालुवेन्द्र महाराज ने एक ग्राम भेंट दिया जिसे उसने जिनधर्म की उन्नति के लिए दान में दे दिया (६५४)। इसी मंत्री ने १० वर्ष बाद सन् १४६८ में पद्माकरपुर में एक चैत्यालय बनवाकर पार्श्व जिन की स्थापना की तथा अनेक दान दिये (६५८)।

महामण्डलेश्वर सालुवेन्द्र के पिता का नाम संगिराय था तथा अनुज का नाम कुमार इन्दगरस वोडेयर था। इन्दगरस का दूसरा नाम इम्मडि सालुवेन्द्र था जो कि अपनी शूर वीरता के लिए प्रसिद्ध था (६५६)। वह जैनधर्म का भक्त था और उसने बिदिरू में वर्धमान स्वामी की पूजा के निमित्त दान की व्यवस्था की थी।

आगे इस वंश के सालुव मल्लिराय, सालुव देवराय, सालुव कृष्णराय के नाम मिलते हैं जिन्होंने जैनधर्म को संरक्षण प्रदान किया था। सालुव कृष्णराय, सालुव देवराय की बहिन पद्मामबा का पुत्र था। ले० नं० ६६७ से ज्ञात होता है कि ये तीनों शासक प्रसिद्ध जैन वादी विद्यानन्द मुनि के भक्त थे। सालुव मल्लिराय और देवराय के दरबारों में उक्त मुनि ने अनेकों प्रतिवादियों को परास्त किया था। ले० नं० ६७४ में तीनों राजाओं के पूर्वजों का परिचय तथा एक दूसरे के सम्बन्ध का परिचय दिया गया है। वहाँ उन्हें क्षेमपुर का शासक भी कहा गया है।

५. जैन सेनापति एवं मन्त्रिगण

इन लेखों पर दृष्टिपात करने से यह निश्चय रूप से मालुम होता है कि दक्षिण भारत में जैन धर्म ने अपना व्यावहारिक रूप अच्छी तरह पा लिया था। जैन सन्तों के उपदेश से न केवल व्रत नियमादि पालन कर अन्त में समाधि से देहोत्सर्ग करने वाले व्यक्ति ही प्रभावित थे बल्कि विशाल सेनाओं के नायक दण्डाधिपति एवं राज्यसंचालक मंत्रिगण भी प्रभावित हुए थे। अहिंसा का सन्देश केवल उनकी श्रद्धा का विषय न था, वह तो देश की प्रगति में बाधक होने की जगह साधक था। उसके बिना चाहे धार्मिक क्षेत्र हो या राजनीतिक, स्वतन्त्रता संभव न थी।

इन लेखों में अनेकों वीर सेनानियों की अमर कहानियाँ भरी पड़ी हैं। उनमें से प्रमुख कुछ का संक्षिप्त परिचय यहाँ प्रस्तुत किया जाता है।

१. श्रुतकीर्तिः—जैन धर्म के आश्रयदाता कदम्बों के सेनापति श्रुतकीर्ति और उसके वंशजों की भक्ति उल्लेखनीय है। ये लोग यापनीय संघ के आचार्यों के भक्त थे। पलाशिका (हल्सी) और देवगिरि से प्राप्त लेखों में इस वंश का चरित चित्रित है। ले० नं० ९९ से विदित होता है कि श्रुतकीर्ति सेनापति ने अपने कल्याण के लिए बदोवर क्षेत्र को अर्हन्तों के लिए दे दिया था जो कि उसने अपने स्वामी कदम्ब काकुस्थ्यवर्मा से खेटक ग्राम में प्राप्त किया था। लेख नं० १०० में इसके गुणों की प्रशंसा है और इसे भोजवंश का या भोजक लिखा है। वह काकुस्थ्यवर्मा का विशेष कृपापात्र था। उक्त लेख के अनुसार काकुस्थ्य वर्मा के बेटे शान्तिवर्मा के पुत्र मृगेश ने श्रुतकीर्ति की पत्नी एवं दामकीर्ति की मां को खेटग्राम धर्मार्थ दे दिया था। उसी लेख में लिखा है उस दामकीर्ति का ज्येष्ठ पुत्र जयकीर्ति था जिसके गुरु आचार्य बन्धुषेण थे। उसने अपने माता पिता के पुण्यार्थ खेटक ग्राम को यापनीय संघ के आचार्य कुमारदत्त को दे दिया था। ले० नं० १०१ में दामकीर्ति के छोटे भाई का नाम श्रीकीर्ति था जो कि अपने कुल के अनुरूप धर्मात्मा था। ले० नं० ९७ और ९९ में दामकीर्ति का उल्लेख है जिनसे ज्ञात होता है कि वह कदम्ब शान्तिवर्मा की धार्मिक प्रवृत्तियों का प्रेरक था। उन दिनों पलाशिका (हल्सी) यापनीय संघ का केन्द्र था और श्रुतकीर्ति के वंशज उक्त संघ के अनुयायी थे।

२. चामुण्डरायः—इसका प्रिय नाम 'राय' भी था। इतना शूरवीर, इतना दृढ़ भक्त एवं इतना स्वामिभक्त मंत्री कर्नाटक के इतिहास में दूसरा और कोई नहीं दिखाता। उसके समय के अनेकों लेखों और उसकी कन्नड भाषा में कृति चामुण्डराय पुराण से उसके जीवन का परिचय मिलता है। ले० नं० १६५ (प्रथम भाग, नं० १०९) से ज्ञात होता है कि वह ब्रह्मक्षत्र कुल में पैदा हुआ था। वहाँ उसे 'ब्रह्मक्षत्रकुलोदयाचलशिरोभूषामणि' कहा गया है। यह गंग नरेश राचमल्ल चतुर्थ का सेनापति था पर मालुम होता है कि वह उसके पिता मारसिंह तृतीय के समय भी सेनापति था। मारसिंह के विषय में लिखा जा चुका है कि वह उस वंश का बड़ा प्रतापी नरेश था। वह राष्ट्रकूट नरेश कृष्ण तृतीय

का महासामन्त था। श्रवणबेल्गोला से प्राप्त ले० नं० १५२ (प्रथम भाग, ३८) और १६५ (प्रथम भाग, १०६) में इसकी अनेक विजयों का वर्णन किया गया है। ले० नं० १५५ (प्रथम भाग, ६१) में वर्णित अनेक विजयों का श्रेय राजा मारसिंह को दिया गया है पर उक्त लेख के कथन को ले० नं० १६५ और चामुण्डराय पुराण के सहारे पढ़ने से वास्तविकता समझ में आ जाती है। राचमल्ल की 'जगदेकवीर' उपाधि सूचित करती है कि ये सब विजयें उसके राज्य में सम्पन्न हो सकी थीं। मारसिंह और राचमल्ल ने ये सब युद्ध अपने अधिराट् राष्ट्रकूट कृष्ण तृतीय और इन्द्र चतुर्थ के लिए सेनापति चामुण्ड राय के द्वारा जीते थे।

उपर्युक्त लेखों में चामुण्डराय की शूरवीरता को सूचित करने वाली अनेक उपाधियाँ दी गई हैं। खेद है कि ले० नं० १६५ छः पद्यों के बाद अकस्मात् समाप्त हो जाता है जिससे हमें उसके सम्बन्ध की पूरी जानकारी नहीं हो पाती। उसके जीवन के अन्य पहलुओं को उसकी अमरकृति चामुण्डराय पुराण और उसके आचार्यों के ग्रन्थों से जाना जा सकता है।

उसकी अमर कीर्ति की प्रतीक श्रवणबेल्गोल में बाहुबलि की जगद्विख्यात एक विशाल मूर्ति (५७ फुट ऊँची) प्रतिष्ठित है। इस मूर्ति के निर्माण का हेतु ले० नं० ३६५ में वर्णित है जिसका कि अन्यत्र उल्लेख किया गया[1] है। चामुण्डराय के दो गुरु थे एक का नाम था अजितसेन और दूसरे का नाम नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती। श्रवण बेल्गोल के एक लेख (प्रथम भाग, १२२) से ज्ञात होता है कि इस सेनापति ने चिक्क बेट्ट पर एक बसदि बनवाई थी तथा ले० नं० १५७ (प्रथम भाग, ६७) से ज्ञात होता है कि उसके पुत्र जिनदेवण्ण ने भी जो कि अजितसेन मुनि का शिष्य था, एक बसदि बनवाई थी।

चामुण्डराय की जैन धर्म के प्रति की गई सेवाओं की छाप दक्षिण भारत में

---

१. देखो, 'जैनधर्म के केन्द्र' प्रकरण।

शताब्दियों तक रही। ले० नं० ३६३ (प्रथम भाग, १३७) में एक प्रसंग में लिखा है कि जिन शासन के स्थिर उद्धार करने में प्रथम कौन है? तो उत्तर होगा राचमल्ल भूपति के वरमंत्री राय (चामुण्डराय) (पद्य २२)।

३. शान्तिनाथ—इसके सम्बन्ध में ले० नं० २०४ में लिखा है कि वह सहजकवि, चतुरकवि, निस्सहायकवि··· नुनमहाकवीन्द्र था। उसकी उपाधि सरस्वतीमुखमुकुर थी। उसका यश अति विशद था और वह जिन शासन रूपी सरसरोजिनी का कलहंस था। उसने अपने राजा लक्ष्मनृप से प्रार्थना कर बलिनगर में लकड़ी के बने जैन मन्दिर को पाषाण का बनवाया। इस मन्दिर का नाम मल्लिकामोद शान्तिनाथ था।

१२ वीं शताब्दी में होय्सल वंश से सम्बन्धित हम अनेक जैन सेनापतियों को देखते हैं। इस वंश का प्रतापी नरेश विष्णुवर्धन था। उसकी अनेक विस्तृत विजयों का श्रेय उस नरेश के आठ जैन सेनापतियों को था। ये सेनापति थे—गंगराज, बोप्प, पुणिस, बलदेवण्ण, मरियाने, भरत, ऐच और विष्णु। इन सेनापतियों के कारण ही होय्सल राज्य दक्षिण भारत की प्रधान शक्तियों में गिना जाने लगा।

४. गंगराज—इन सेनापतियों में प्रधान था गंगराज। इसके सम्बन्ध में जैन शिलालेखसंग्रह प्रथम भाग की भूमिका में पर्याप्त लिखा गया है। इसके जीवन वृत्त को जानने के लिए इस संग्रह में दो दर्जन से अधिक लेख हैं। प्रस्तुत द्वितीय तृतीय भाग में इस सेनापति से सम्बन्धित केवल ले० नं० २६३, २६६, २६९, ३०१ और ४११ के मूल पाठ हैं। शेष २८५ (४३) २७८ (४४) २५४ (४६) २५५ (४७) २६० (६५) २८१ (४४६) २८३ (४८९) ३६६ (९०) के मूल पाठ प्रथम भाग में दिए गये हैं, कोष्ठक में उन लेखों की संख्या दी गई है। प्रथम भाग के ले० नं० ७५, ७६, ४४७ और ४७८ इन भागों के लेखों की संख्या से नहीं पहिचाने जा सके। लेख २६३, २६६ और २६९ में उसकी अनेक सामरिक विजयों का उल्लेख तथा जैन मुनियों और

मन्दिरों को अनेक प्रकार के दानों का उल्लेख है। इन लेखों में उसके दो जैन गुरुओं–मेघचन्द्र सिद्धान्त देव एवं शुभचन्द्र सिद्धान्त देव–का नाम मिलता है। ले० नं० ३०१ में गंगराज की बड़ी प्रशंसा की गई है। उसकी मृत्यु के स्मारक स्वरूप उसके पुत्र बोप्प सेनापति ने दोर समुद्र में एक जिनालय बनवाकर पार्श्वनाथ की मूर्ति स्थापित की थी। उक्त लेख में लिखा है कि अनेक उपाधियों से विभूषित गंगराज ने अगणित ध्वस्त जैन मन्दिरों का पुनर्निर्माण कराया था। अपने अनवधि दानों से उसने गंगवाडि ९६००० को कोपण के समान चमकाया था। गंगराज के मत से ये ७ नरक थे—झूठ बोलना, युद्ध में भय दिखाना, परदारारत रहना, शरणार्थियों को शरण न देना, अधीनस्थों को अपरितृप्त रखना, जिनको पास में रखना चाहिए उन्हें छोड़ देना और स्वामी से द्रोह करना।

उक्त जिनालय का नाम गङ्गराज की एक विशिष्ट उपाधि पर से द्रोहघरट्ट जिनालय पड़ा था। इसी जिनालय की स्थापना को अपनी सुख समृद्धि के वर्धन में हेतु मानकर होय्सल विष्णुवर्धन ने इसे ग्रामादि दान दिये थे। (३०१)।

५. बोप्प—गंगराज का पुत्र दण्डेश बोप्प देव भी बड़ा ही शूरवीर एवं धर्मिष्ठ था। उसने उपर्युक्त द्रोहघरट्ट जिनालय के सिवाय दो और मन्दिर बनवाये थे, कम्बदहल्लि से शान्तीश्वर बसदि तथा सन् ११३८में त्रैलोक्यरञ्जन बसदि जिसका दूसरा नाम बोप्पण चैत्यालय था (३०३)। इसे ले० नं० ३०३ में बुधबन्धु, सतां बन्धुः कहा गया है। इसी तरह ले० ३०१ और ४११ में उसके अनेक विशेषणों के साथ उसकी वीरता की प्रशंसा की गई है। ले० नं० ३०४ में उल्लेख है कि सन् ११३४ में उसने शत्रु पर आक्रमण किया और उनकी प्रबल सेना को खदेड़कर अपने भुजबल से कोङ्गों को परास्त किया था।

६. पुणिसः—गंगराज के बहादुर साथियो में पुणिस भी था। उसके पूर्वज अमात्य होते आये थे। उसका पितामह पुणिसम्म चमूप था जो कि सकल शासन वाचक चक्रवर्ति था। उसके ज्येष्ठ पुत्र चामण का पुत्र पुणिस था। यह होय्सल नरेश विष्णुवर्धन का सान्धिविग्रहिक था। ले० नं० २६४ में उसकी सामरिक शूर

वीरता के कार्यों का वर्णन है। उसने अनेकों देश जीतकर होय्सल विष्णुवर्धन को दिये। पुणिस, गंगराज के समान ही विशाल हृदय का था। उसने धर्म और मानवता की समान दृष्टि से सेवा की। ले० नं० २६४ में लिखा है कि युद्ध के कारण जो व्यापारी बिगड़ गये थे, जिन किसानों के पास बीज बोने को नहीं था, जो किरात सरदार हार जाने से अधिकार वंचित हो नौकर हो गए थे, उन्हें तथा उन सबको जिनका जो नष्ट हो गया था, वह सब पुणिस ने दिया और उनके पालन पोषण में मदद की। उक्त लेख में यह भी उल्लेख है कि उसने एरगोनाड् के अरकोट्टार स्थान में अपने द्वारा बनवाई गई त्रिकूट बसदि से संलग्न बसदियों के लिए भूदान दिया तथा निर्भय होकर गंगों की तरह गंगवाडि की बसदियों को शोभा से सज्जित किया।

७. बलदेवण्ण:—विष्णुवर्धन का चौथा सेनापति बलदेवण्ण था। ले० नं० २६५ मे इसके सम्बन्ध मे थोड़ा परिचय मिलता है। वह राजा अरसादित्य और आचाम्बिके का तृतीय पुत्र था। उसके दो बड़े भाइयों का नाम पम्पराय और हरिदेव था। लेख में उसके 'मंत्रियूथाग्रणि, गुणी, सकलसचिवनाथ एवं जिनपादांघ्रि सेवक' आदि विशेषण दिये गए हैं।

८-९. मरियाने और भरत:—होय्सल विष्णुवर्धन के सेनानायकों में दो भाई-दण्डनायक मरियाने और भरत या भरतेश्वर भी थे। इनके वंश का परिचय ले० नं० ३०७, ३०८ और ४११ में दिया गया है जिससे ज्ञात होता है कि इसके वंशज होय्सल राजवंश से सम्बन्ध रखते थे। इस कारण इन दोनों भाइयों का पद सर्वाधिकारी, माणिकभाण्डारी तथा प्राणाधिकारी था। विष्णुवर्धन ने मरियाने दण्डनायक को अपना पट्टदाने (राज्य गजेन्द्र) समझकर ही उसे सेनापति बनाया था। ये दोनों भाई जैसे शूर वीर थे वैसे ही धर्मिष्ठ थे। लेख में इन्हें 'निरवद्य-स्याद्वादलक्ष्मीरत्नकुण्डल, नित्याभिषेकनिरत, जिनपूजामहोत्सहजनितप्रमोद, चतुर्विधदानविनोद' आदि कहा गया है। ले० नं० ३०७ में भरत के अनेक गुणों की प्रशंसा की गई है। वहाँ लिखा है कि उसका धन जिनमन्दिरों के लिए था, दया सभी प्राणियों के लिए थी, उसका अच्छा मन जिनराज की पूजा

में था, औदार्य सज्जन वर्ग के लिए तथा दान सन्मुनीन्द्रों के लिए था। श्रवण-बेल्गोल से प्राप्त ले० नं० ३५४[1] और ३५५[2] से विदित होता है कि उसने श्रवणबेल्गोल में ८० नई बसदियाँ बनवायीं और गंगवाडि की २०० पुरानी बसदियों का जीर्णोद्धार कराया था। इन दोनों भाइयों के गुरु थे देशीगण, पुस्तक गच्छ के आचार्य माघनन्दि के शिष्य गण्डविमुक्त व्रती। ले० नं० ४११ से ज्ञात होता है कि ये दोनों भाई विष्णुवर्धन के बेटे नारसिंह के समय में भी विद्यमान थे। इन दोनों ने ५०० होन्नु देकर उक्त नरेश से सिन्दगेरी आदि तीन गाँवों का प्रभुत्व प्राप्त किया था।

१०. ऐचः—गंगराज का भतीजा एवं उसके बड़े भाई का पुत्र ऐच भी विष्णुवर्धन के सेनापतियों में था। उसकी शूरवीरता आदि के सम्बन्ध में विशेष तो नहीं मालुम पर ले० नं० ३०४ (प्रथम भाग १४४) में लिखा है कि उसने कोपण, बेल्गुल आदि स्थानों में अनेक जिन मन्दिर बनवाये और सन् ११३५ में संन्यासविधि से प्राणोत्सर्ग किया। गंगराज के पुत्र बोप्प ने अपने चचेरे भाई की स्मृति में निषद्या बनवाई थी।

११. विष्णु दण्डाधिप—ले० नं० ३०५ से ज्ञात होता है कि विष्णुवर्धन होय्सल का एक और सेनापति था जिसका नाम विष्णु दण्डाधिप या कुमार दण्डनायक बिट्टियण्ण था। इसने आधे महीने में ही दक्षिण प्रान्त की विजय कर ली थी। विष्णुवर्धन होय्सल का यह दाहिना हाथ था। यह बचपन से ही उक्त नरेश का प्यारा था। लेख में लिखा है कि किशोरावस्था प्राप्त होने पर नरेश ने इसका बड़े उत्सव के साथ स्वयं ही उपनयन संस्कार कराया, सात आठ वर्ष की आयु के बाद जब वह समस्त शास्त्र विज्ञान में पारंगत हुआ तब उसको अपने प्रधान मंत्री की सर्व लक्षण सम्पन्न पुत्री ब्याह दी और १०—११ वर्ष की उम्र में महाप्रचण्ड दण्डनाथ तथा सर्वाधिकारी का पद दिया।

---

१. प्रथम भाग, ३६८.

२. वही, ११५,

यह सेनापति बड़ा ही धर्मिष्ठ एवं दानी था। इसने कई सार्वजनिक कार्य कराये थे तथा राजधानी दोरसमुद्र में एक जिनालय बनवाया था। इसके गुरु का नाम श्रीपाल त्रैविद्यदेव था जिन्हें उक्त जिनालय के प्रबन्ध और ऋषियों के आहार दान के हेतु उसने एक ग्राम और भूमियां दान में दी थीं।

१२. मादिराज—विष्णु वर्धन का एक जैन मंत्री महाप्रधान मादिराज था। ले० नं० ३१६ में उसके धार्मिक गुणोंकी बड़ी प्रशंसा की गई है। वह श्रीकरण का अधिपति था और अपनी वक्तृता से सभा भवन को प्रभावित किये था। वह कोष का लेखा रखता था। उसके भी गुरु श्रीपाल त्रैविद्यदेव थे। विष्णुवर्धन के उत्तराधिकारी नरसिंह के भी चार सेनापति जैन धर्मावलम्बी थे। वे थे देवराज, हुल्ल, शान्तियण्ण और ईश्वर चमूप।

१३. देवराज—ले० नं० ३२४ में देवराज का उल्लेख है। इसका गोत्र-कौशिक था। लेख में इसे 'श्रीजिनधर्मनिर्मलाम्बरहिमकर' एवं 'श्रीहोय्सल महीशराज्यभूभृन्निलय मणिप्रदीपकलश' कहा गया है। राजा नरसिंह ने उसकी धर्मबुद्धि और स्वामिभक्ति से प्रसन्न होकर उसे सूरनहल्लि गाँव दिया जहाँ उसने जिन चैत्यालय बनवाया जिसके लिए होय्सलदेव ने अष्टविधार्चन और आहार दान के निमित्त १० होन्नु दान में दिये और गाँव का नाम पार्श्वपुर रख दिया। उक्त ले० में उसके गुरु मुनिचन्द्र का नाम दिया है। उन गुरु की पट्टावली भी उक्त ले० में दी गई है।

१४. हुल्ल—नरसिंह होय्सल का द्वितीय सेनापति हुल्ल या हुल्लप था। उस युग में जैन धर्म के उद्धारकों में चामुण्डराय और गंगराज के बाद हुल्लप का ही नाम आता है। इसके सम्बन्ध में जैन शिलालेख संग्रह प्रथम भाग की भूमिका में पर्याप्त लिखा गया है। इस संग्रह में ये ले० नं० ३४८, (१३८) ३६२ (४०) ३६३ (१३७) ३८१ (४९१) ३९६ (९०) इस सेनापति से सम्बन्धित हैं। कोष्ठक में प्रथम भाग के लेखों की संख्या दी गई है। इस सेना-

पति ने होय्सल विष्णुवर्धन, नरसिंह और बल्लाल द्वितीय के राज्य में होय्सल वंश की सेवा की थी।

१५. शान्तियण्ण—ले० नं० ३४७ में उक्त नरेश के एक और जैन सेनापति शान्तियण्ण का नाम मिलता है। वह पारिसण्ण और बम्मलदेवी का पुत्र था। पारिसण्ण मरियाने दण्डनायक का दामाद था। लेख में उसे महा-प्रधान, पट्टिस भण्डारि (भालों का अध्यक्ष) कहा गया है। उसने युद्ध में शत्रुओं को परास्त कर अन्त में अपने प्राण दे दिये। उस पर नरसिंह ने उसके पुत्र शान्तियण्ण को कब्बुगुण्ड का स्वामी तथा सेना का दण्डनायक बना दिया। उक्त स्थान में शान्तियण्ण ने अपने पिता की स्मृति में एक बसदि बनवायी और उसकी सुरक्षा के लिए दान दिया। उसके गुरु मल्लिषेण पण्डित थे।

१६. ईश्वर चमूपः—ले० नं० ३५२में उक्त नरेश के राज्य में एक जैन सेना-पति का और उल्लेख है। वह है महाप्रधान, सर्वाधिकारी, दण्डनायक एरेयङ्ग का पादोपजीवी ईश्वर चमूप। ये दोनों श्वसुर दामाद थे। ईश्वर चमूपति ने जिना-लयों की मरम्मत करवायी और उसकी पत्नी माचियक्क ने मय्दबोलल नामक पवित्र तीर्थ में एक जिन मन्दिर एवं एक तालाब बनवाया। उसके गुरु का नाम गण्डविमुक्त मुनिप था।

नरसिंह के उत्तराधिकारी बल्लाल द्वितीय के समय भी होय्सल राज्य का भाग्य निर्माण करने वाले कुछ जैन सेनापति थे।

१७. रेचरसः—ले० नं० ४६५में उल्लेख हैकि बल्लालदेवकी रत्नत्रय और धर्म में दृढ़ता सुनकर कलचूर्य कुल के सचिवोत्तम रेचरस ने बल्लालदेव के चरणों में आश्रय पाकर अरसियकेरे में सहस्रकूट जिन की प्रतिमा स्थापित की और मन्दिर की व्यवस्था के लिए राजा बल्लाल से हन्दरहालु ग्राम प्राप्त कर अपने वंश के गुरु सागरनन्दि सिद्धान्त देव को सौंप दिया। उक्त जिनालय का नाम एल्कोटि जिना-लय था। इस रेचरस के सम्बन्ध में ले० नं० ४०८ में लिखा है कि वह ३१ वर्ष पहले सन् ११८२ में कलचूरिवंश के नरेश बिज्जल का दण्डाधिनाथ था। उक्त लेख में इसकी अनेक विध प्रशंसा एवं वंश का परिचय दिया गया है।

उस लेख में लिखा है कि रेचण को कलचुरि नरेशों से बहुत से देश मिले थे उनमें नागर खण्ड था। वहाँ मागुडि नामक स्थान में, शान्तिनाथ जिनालय के लिए उसने दानादि दिये थे। श्रवणबेल्गोल से प्राप्त एक लेख नं० ४२६ (प्रथम भाग ४७१) से ज्ञात होता है कि उसने सन् १२०० के लगभग शान्तिनाथ भगवान् की प्रतिष्ठा करायी और बसदि को कोल्हापुर के सागरनन्दि को सौंप दिया। लेख में उसे 'वसुधैकबान्धव' कहा गया है।

१८. बूचिराजः—होय्सल बल्लाल द्वितीय का दूसरा सेनापति बूचिराज था। ले० नं० ३७६ में उसे मन्त्रीश्वर एवं सांधिविग्रहिक कहा गया है। उसमें चतुर्विध पाण्डित्य था तथा वह संस्कृत और कन्नड दोनों भाषाओं में कविता कर सकता था। इसके अतिरिक्त उसकी धर्मिष्ठता की अनेक विध प्रशंसा की गई है। उसने सन् ११७३ में राजा बल्लाल के पट्टबन्धोत्सव के समय सीगेनाड के मारिकलि स्थान में त्रिकूट जिनालय बनवाया और मन्दिर की पूजा, जीर्णोद्धार एवं आहार दान आदि के लिए अपने गुरु वासुपूज्य सिद्धान्त देव को मारिकलि ग्राम भेंट में दिया।

१९. चन्द्रमौलिः—उक्त बल्लाल नरेश के राज्य में जैनधर्म के प्रति उदारता दिखलाने वाला एक शैव मंत्री चंद्रमौलि था। ले० नं० ४०९ (प्रथम भाग ४९४) में वह भारत शास्त्र, आगम, तर्कव्याकरण, उपनिषद्, नाटक, काव्य आदि में विद्वन्मान्य था तथा बल्लालनृप के दाहिने हाथ का दण्डस्वरूप था। यद्यपि वह स्वयं कट्टर शैव था पर उसकी पत्नी आचलदेवी परम जैन धर्मावलम्बिनी थी। उस देवी ने श्रवणबेल्गोल तीर्थपर बड़ी भक्ति के साथ पार्श्वनाथ का मन्दिर निर्माण कराया और मंत्री चंद्रमौलि ने राजा बल्लाल से स्वयं प्रार्थना कर उक्त जिनालय की पूजादि के लिए बम्मेयनहल्लि नामक गाँव दान में दिलाया।

२०. नागदेवः—बल्लाल द्वितीय के मंत्रियों में एक जैन मंत्री नागदेव भी था। वह बोम्मदेव सचिव का पुत्र था। ले० नं० ४२८ (प्रथम भाग १३०) में लिखा है कि वह जैन मन्दिरों का प्रतिपालक था तथा राजा ने उसे पट्टन-

स्वामी बनाया था। उसके गुरु का नाम नयकीर्ति सिद्धान्तदेव था। उसने सन् ११९५ में श्रवणबेल्गोल तीर्थ पर पार्श्वदेव के आगे नृत्यरंगशाला एवं शिला-कुट्टिम बनाकर अपने दिवंगत गुरु की स्मृति में एक निषिधि बनवायी थी। जिनधर्म के लिए नागदेव की स्थायी कृति थी श्रवणबेल्गोल में 'श्रीनिलय' नगर-जिनालय का निर्माण तथा उसके लिए भूमिदान। उसके प्रतिपालन के लिए उसने खण्डलि और मूलभद्र के वंशज श्रवणबेल्गोलवासी वणिजों को नियुक्त किया था।

२१. **महादेव दण्डनाथः**—जैन मंत्रियों में उस मंत्री का नाम भी उल्लेखनीय है। वह बल्लाल द्वितीय के महामण्डलेश्वर एक्कलरस का महाप्रधान था। उसके गुरु का नाम सकलचन्द्र भट्टारक था। लेख नं० ४३१ में लिखा है कि उसने सन् ११९८ में उद्धरे नामक स्थान में एक अनुपम जिनालय बनवाया और उसका नाम एरग जिनालय रखा और उक्त जिनालय की पूजा, जीर्णोद्धार के हेतु स्वयं बहुत प्रकार के दान दिये तथा एक्कलरस आदि से भी विविधदान दिलाये।

२२. **कम्मट माचय्यः**—सन् १२०० के लगभग के कुम्बेयनहल्लि ग्राम से प्राप्त एक ले० नं० ४३७ (प्रथम भाग ४९५) में एक और जैन मंत्री का उल्लेख है। वह है महाप्रधान, सर्वाधिकारी, तन्त्राधिष्ठायक, कम्मट माचय्य। उसने उक्त सन् में अपने श्वसुर के साथ कुम्बेयनहल्लि नामक ग्राम में पार्श्वादि-मल्ल जिनालय के लिए दान दिया था। उक्त लेख में यह भी लिखा है कि महा-प्रधान, सर्वाधिकारी हरियण्ण ने कुम्बेयनहल्लि के देव की प्रतिष्ठा की थी।

२३. **अमृतः**—ले० नं० ४५२ से विदित होता है कि बल्लाल द्वितीय के अमृत नाम का एक और दण्डनायक था जो कि महाप्रधान, सर्वाधिकारी, महापसायस (आभूषणाध्यक्ष) एवं भेरुदन मोत्तदिष्टायक (उपाधिधारियों का अध्यक्ष) था। लेख में उसे कविकुलज और चतुर्थवर्ण (शूद्र) का कहा गया है। उसे धार्मिक, धर्ममति, पुण्याधिक, मंत्रिचूडामणि, सौम्यरम्याकृति कहा गया है। उसने ओक्कुलगेरे में सन् १२०३ में एक्कोटि नामक जिनालय बनवाया और सभी

पाम्बब्बे ने, जो अभयनन्दि पण्डितदेव की शिष्या नाणब्बेकन्ति की शिष्या थी, केशलोंच करने के बाद तप के पूरे ३० वर्ष पूर्ण किए और पांच अणुव्रतों (?) को धारण कर दिवंगत हुई। लेख में उसके व्रत एवं तपस्या की प्रशंसा है।

कोङ्गाल्व वंश की जैनधर्म के प्रति भक्ति सुविदित है। उक्त वंश के राजा राजेन्द्र कोङ्गाल्व की मां पोच्चब्बरसि ने सन् १०५० में एक बसदि बनवायी थी, और उसमें अपने गुरु गुणसेन पण्डितदेव की मूर्ति स्थापित की थी तथा सन् १०५८ में उसने उक्त बसदि को भूमिदान दिया था (१८८, १८९)। ले० नं० ५६० में कोङ्गाल्व वंश की एक और महिला सुगुणिदेवी का नाम दिया गया है जिसने अपनी माता के पुण्यार्थ एक प्रतिमा की स्थापना की और भूमिदान दिया।

जैन सेनापतियों की पत्नियों का भी जैनधर्म की सेवा में बड़ा हाथ था। इनमें सबसे उल्लेखनीय नाम है सेनापति गंगराज की पत्नी लक्कले या लक्ष्मी-मती का। वह लक्ष्मीमती दण्डनायकिति कहलाती थी। उसे लेख नं० २५८ (प्रथम भाग, ६३) में गंग सेनापति के 'कार्ये नीतिवधू' और 'रणे जयवधू' कहा गया है। उसने सन् १११८ में श्रवणबेल्गोल में एक जिनालय बनवाया था। ले० नं० २६८ (प्रथम भाग ५६) से ज्ञात होता है कि सेनापति गंगराज ने अपने राजा विष्णुवर्धन से एक गांव पारितोषिक रूप में पाकर अपनी माता पोचल देवी एवं अपनी भार्या लक्ष्मी देवी द्वारा निर्मापित जैन मन्दिरों के रक्षार्थ अर्पण किया था। लक्ष्मीमति ने भी आहार, अभय, औषधि और शास्त्र इन चारों दानों को देकर 'सौभाग्यखानि' पद पाया था (२५५, प्रथम भाग, ४७)। ले० नं० २७२ (प्रथम भाग, ४८) में लक्ष्मीमति के रूप, गुण, शील आदि की प्रशंसा की गई है। इस धर्मपरायण महिला ने सन् ११२१ में संन्यास विधि पूर्वक शरीर त्यागा था। सेनापति गङ्गराज ने अपनी साध्वी पत्नी की स्मृति में एक निषद्या बनवा दी थी।

गङ्गराज के बड़े भाई का नाम बम्मदेव चमूप था। इसकी पत्नी जक्कणब्बे थी जो कि दण्डनायकीति कहलाती थी। वह सेनापति बोप्प की माता थी तथा शुभचन्द्रदेव की शिष्या थी। प्रथम भाग के ले० नं० ४४६ और ४८९ से ज्ञात

होता है कि उसने मोक्षतिलक नामक व्रत किया था और पाषाण पर नयणदेव की मूर्ति खुदवायी थी। उसी वर्ष उसने श्रवणबेल्गोल में मूर्ति की प्रतिष्ठा करायी एवं वहाँ एक तालाब खुदवाया था। ले० नं० २८५ (प्रथम भाग, ४३) में इस महिला की बड़ी प्रशंसा है।

ले० नं० २८८ से एक और जैनधर्म भक्त महिला का नाम ज्ञात होता है। वह है कालियक्कव्वे, जो कि चालुक्य नरेश त्रिभुवनमल्ल के सामन्त पाण्ड्य भूपाल के सेनापति सूर्य की पत्नी थी। इसने सन् १२२८ में साम्बनूरु में एक सुन्दर जिनालय बनवाया और पूजा के हेतु तथा पुजारी की आजीविकार्थ मन्दिर के पुरोहित को कुछ भूमि दान में दे दी।

ले० नं० ३१३ में हमें दानशील तीन महिलाओं के नाम मिलते हैं। गंग नरेश मारसिंह की छोटी वहिन सम्मियब्बरसि ने उद्धरे नामक स्थान में अनेक जैन मुनियों को दान दिलाया और पञ्चवसदि जिनालय को सजाया था, तथा वसदि के लिए सवणविलि नामक ग्राम दान में दिया था। उसी लेख में कनकियब्बिरसि नामक एक महिला का उल्लेख है। उस महिला ने जहाँ जिन मन्दिर नहीं थे वहाँ जिन मन्दिर बनवाये और जहां जैन यतियों की आमदनी के क्षेत्र नही थे वहां उसने दान दिये। तीसरी महिला शान्तियक्क ने, जो कि बोप्प दण्डेश की भतीजी एवं केतिसेट्टि की पत्नी थी, उद्धरे में एक बसदि बनवायी।

ले० नं० ३३६ में जैन धर्म परायणा दो बहिनों का नाम आता है। वे हैं जक्कव्वे और पद्मियक्क। जक्कव्वे के विषय में लिखा है कि वह होय्सल नरेश नरसिंह के पुराने सेनापति चाविमय्य की पत्नी थी। उसने हेरगू में एक जिनालय बनवाकर पार्श्वनाथ की प्रतिमा प्रतिष्ठित करायी तथा पूजनादि प्रबन्ध के लिए नरसिंह से भूमि का दान भी ले लिया था। इसी तरह ले०नं० ३५२ में ईश्वर चमूप की पत्नी माचियक्क द्वारा जिन मन्दिर निर्माण एवं भूमिदान का उल्लेख है। ले० नं० मालियक्क को अन्तनून गुणरत्नमण्डन एवं चातुर्वर्णसमुदयैकशरण्य कहा गया है।

जैन धर्म पर अचल श्रद्धा रखने वाली एक विशिष्ट महिला आचल देवी का उल्लेख करना यहाँ आवश्यक है। वह शैव धर्म को मानने वाले सेनापति चन्द्र-मौलि की पत्नी थी। वह अपने चार प्रकार के दान के लिए विख्यात थी। उसके इस कार्यों में उसके पति ने कभी बाधा नहीं दी बल्कि धार्मिक उदारता के कारण उसने सहायता ही की है। आचल देवी ने श्रवणबेल्गोल में एक जिनालय बनवाया और उसके पति ने अपने नरेश होय्सल बल्लाल से बम्मेयन हल्लि नामक गांव दान में दिलाया (ले० नं० ४०३, प्रथमभाग १२४)। ले० नं० ४०४ (प्रथम भाग १०७) से ज्ञात होता है कि वीर बल्लाल ने उक्त महिला की प्रार्थना पर बेक्क नामक ग्राम भी गोम्मटेश्वर की पूजा के हेतु दिया था।

मंत्री एचण की पत्नी सोमल देवी भी जैन महिलाओं में उल्लेखनीय है। ले० नं० ४५१, ४५५ और ३५६ में उसकी प्रशंसा है। उसने बेलवत्त नाड् में एक जैन बसदि का निर्माण कराया और उसके पूजन के हेतु दान भी दिया था।

यह नहीं समझना चाहिए कि राजघराने, सामन्तों एवं सेनापतियों की पत्नियों में ही जिन धर्म के प्रति विशेष अनुराग था बल्कि वैसा ही अनुराग नागरिकों की पत्नियों में भी देखने को मिलता है। ले० नं० ३५३ में लिखा है कि हेगडि जक्कय्य और उसकी पत्नी जक्कब्बे ने दीडगुरु में एक चैत्यालय बनवाया और पार्श्वनाथ भगवान् की स्थापना करके देवपूजा और ऋषियों के आहार के लिए भूमिदान दिया।

ले० नं० ३८३ में जैनधर्म पर दृढ़ श्रद्धा रखनेवाली हय्यले महासती का उल्लेख है। उक्त लेख में लिखा है कि उक्त सती ने मृत्यु के समय अपने पुत्र भूवय नायक को बुलाकर कहा कि स्वप्न में भी मेरा ख्याल न करना, केवल धर्म का विचार करना। यदि मुझे और तुम्हें पुण्योपार्जन करना है तो जिन मन्दिर बनवाओ ⋯आदि। इसके बाद जिनेन्द्र के चरणों में पंच नमस्कार मंत्र को जपते हुए उसने समाधि से देह त्याग दिया। ले० नं० ३८४ से मालुम होता है कि

इसी तरह चन्द्रायण देव की गृहस्थ शिष्या हरिहर देवी भी समाधिमरण से दिवंगत हुई थी। ११वीं शताब्दी के मध्य के नल्लूर से प्राप्त एक लेख (१८३) में जक्कियब्बे नामक श्राविका भी संन्यसन विधि से स्वर्गत हुई थी।

१२वीं शताब्दी के उत्तरार्ध और १३वीं के पूर्वार्ध के ऐसे अनेकों लेख इस संग्रह में हैं जिनमें समाधिभावना से देहोत्सर्ग करनेवाली अनेकों महिलाओं का उल्लेख है। ले० नं० ४२३ में शान्तियक्क या शान्तले, ले० नं० ४३६ में मालब्बे तथा ले० नं० ४२७ में अक्कब्बे का नाम, यहाँ उदाहरण के रूप में समझना चाहिये।

८. धार्मिक उदारता एवं स हृष्णुता

इन लेखों में सहिष्णुता के अनेक उदाहरण मिलते हैं। जैनाचार्यों और जैन नेताओं, नरेशों, सामन्तों और सेठों में भारतीय संस्कृति के अनुरूप यह विशेष गुण था और इस भावना का उन्होंने निष्पक्षभाव से प्रदर्शन भी किया।

इन लेखों से जैनाचार्यों की विद्वत्ता एवं इतिहासप्रियता के साथ साथ उनकी विस्तीर्ण हृदयता का परिचय मिलता है। उन्होंने शिलालेखों की रचना ही अपने स्थानों और धर्म और सम्प्रदाय के लेखों के उपयोग के लिए नहीं की प्रत्युत अन्य धर्म और सम्प्रदाय के उपयोग के लिए भी की। उदाहरण स्वरूप दिगम्बराचार्य रामकीर्ति ने चित्तौड़गढ़ से प्राप्त प्रशस्ति (३३२) वहाँ के तोकलजी के मन्दिर के लिए लिखी थी। बृहद्गच्छ के जयमंगल सूरि ने सुन्ध पहाड़ी से प्राप्त एक लेख (५०७) लिखा जो कि वहां चामुण्डा देवी के मन्दिर से प्राप्त हुआ है। इसी तरह यशोदेव दिगम्बर ने ग्वालियर के कच्छवाहों की प्रशस्ति तथा रत्नप्रभसूरि ने गुहिलोत वंश के घाघसा एवं चिर्वा से प्राप्त लेख लिखे। पीछे के ये लेख इस संग्रह में नहीं है। यहाँ यह न समझना चाहिये कि वे लेख उन स्थानों में जैनों से छीन कर ले जाये गये हैं, प्रत्युत इसके विपरीत, वे लेख विशेषतः उन स्थानों के लिए ही जैनाचार्यों ने लिखे थे, क्योंकि उन लेखों के अन्त में जैनाचार्यों के नाम, गुरु परम्परा, गण, गच्छ के सिवाय हमें ऐसा कुछ नहीं मिलता जो जैनों से सम्बन्धित हो। यहां

तक कि मङ्गलाचरण के पद्य भी अजैन देवी देवताओं के मंगलाचरण से प्रारम्भ होते हैं। हाँ, कुछेक में ॐ सर्वज्ञाय नमः, पद्मनाथाय नमः आदि से उनका प्रारम्भ हुआ है। ये लेख निश्चय रूप से जैनाचार्यों की विशाल हृदयता को सूचित करते हैं।

जैनाचार्यों की इस नीति का अनुसरण जैन नेताओं ने भी किया। ले० नं० १८१ (सन् १०४८) से विदित होता है कि एक जैन महामण्डलेश्वर चामुण्ड-राय ने बनवसेनाड़ में जिननिवास, विष्णुनिवास, ईश्वरनिवास, और जैन मुनियों के लिए निवास बनवाये थे। इसके समान ही और दूसरे सामन्त थे जो जैन और ब्राह्मणों में भेद नहीं मानते थे। ले० नं० २४६ से विदित होता है कि नोलम्बवाड़ी के शासक बम्मरस ने सन् ११०६ में एक जैन मन्दिर तथा सर्पेश्वर देव के लिए चुंगी से प्राप्त आय को तथा कई प्रकार के और दानों को दिया था। सामन्तों की ऐसी रुचि को सूचित करने वाले और भी लेख हैं। ले० नं० ३५६ से मालुम होता है कि सामन्त गोव, महेश्वर, बौद्ध, वैष्णव एवं अर्हन् इन चार समयों का प्रतिपालक था।

ब्राह्मण और जैनों के बीच असाधारण हार्दिक सम्बन्ध था। ले० नं० ४४८ से ज्ञात होता है कि सन १२०४ में नागर खण्ड के पाँच अग्रहारों के ब्राह्मणों ने स्थानीय अधिकारियों, सेठों, नागरिकों और किसानों के साथ मिलकर बन्दिलिके के शान्तिनाथ की पूजा के लिए भूमिदान किया।

धार्मिक उदारता के विषय में अदलकुल के सामन्तों का नाम विशेष उल्लेख-नीय है। इस वंश के सामन्त विष्णुवर्धन ने सन् ११४० में अपने ही क्षेत्र में एक शिवमन्दिर तथा अदल जिनालय बनवाया था (३१५)। इसी वंश के एक ले० नं ३३३ का मंगलाचरण सर्वधर्म समन्वय की भावना से ओतप्रोत है (शिवाय धात्रे सुगताय विष्णवे जिनाय तस्मै सकलात्मने नमः)। इस लेख में उदारचेता सामन्त बाचि की विस्तार पूर्वक प्रशंसा की गई है। उक्त सामन्त ने कैदाल नामक स्थान में न केवल जैन मन्दिर ही बनवाया था बल्कि गंगेश्वर, नारायण, चलवरिवरेश्वर तथा रामेश्वर के मन्दिर भी बनवाये थे। उसने अपनी

पत्नी भीमले के नाम पर भीम जिनालय तथा भीम समुद्र नामक विशाल तालाब बनवाकर पार्श्वदेव के नाम पर कर दिया था। उक्त लेख में बाचिराज को चतुः समय-धर्मोद्धार-धौरेय कहा गया है।

हमें अन्य जैन लेखों से मालुम होता है कि १२ वीं शताब्दी के मध्य तक धार्मिक उदारता की भावना का अच्छा प्रचार था पर तेरहवीं के अन्तिम पाद के बाद १०० वर्षों तक दक्षिण भारत के ऊपर मुस्लिम आक्रमणों के कारण उनसे रक्षा के महत्त्वपूर्ण प्रश्न के आगे धार्मिकता का प्रश्न फीका पड़ गया।

किसी तरह मुस्लिम आतङ्कों का जोर कम करने के लिए विजय नगर साम्राज्य की स्थापना हुई। इस वंश के राजाओं में धार्मिक निष्पक्षता का एक बड़ा महत्त्वपूर्ण गुण था। सन् १३६३ के एक लेख (५६१) से विदित होता है कि बुक्कराय प्रथम के शासन काल में जैन मन्दिर की सीमाओं के विषय में जब हेद्दर नाड के लोगों और मन्दिर के आचार्यों में झगड़ा उठ खड़ा हुआ तो राज्य की ओर से उस मामले की जाँच पड़ताल हुई। राज्य के प्रधान मंत्री नागरण्ण ने वृद्धजनों की एक सभा में फैसलाकर मन्दिर की ठीक सीमा बाँधकर शासन पत्र भी लिख दिया।

इसके पाँच वर्ष बाद सन् १३६८ में बुक्कराय के सामने जैनों और भक्तों (श्रीवैष्णवों) के बीच धार्मिक विवाद फिर खड़ा हुआ। ले० नं० ५६५ (प्रथम भाग, १३६) और ले० नं० ५६६ में इन घटनाओं का चित्रण है। इन लेखों में लिखा है कि जैनों ने अपने ऊपर वैष्णवों द्वारा हुए अन्याय की शिकायत लिखित रूप में बुक्कराय से की तब बुक्कराय ने स्वयं इस बात की जाँच की और जैनों के हाथ को वैष्णवों और उनके आचार्य के हाथ में रखकर कहा कि जैन दर्शन एवं वैष्णव दर्शन में कोई भेद नहीं है। जैन धर्म वाले भी पंच महावाद्य बजा सकते हैं। जैन धर्म की हानिवृद्धिको वैष्णवों को अपनी हानिवृद्धि समझना चाहिये। वैष्णवों को इस विषय के शासन पत्र समस्त बसदियों में लगाना चाहिये। जब तक सूर्य और चन्द्र हैं तब तक वैष्णव जैन धर्म की रक्षा करेंगे। जो इस नियम को तोड़ेगा वह राजा, संघ एवं समुदाय का द्रोही

होगा। ले० नं० ५६६ के अन्त में लिखा है कि जैनों और वैष्णवों ने मिलकर वसुवि सेट्टिको संघ नायक की उपाधि दी।

उपर्युक्त तीन लेखों से ज्ञात होता है कि विजयनगर नवोदित हिन्दू समाज के अधिनायकों में देश की सुरक्षा और शान्ति के साथ धार्मिक निष्पक्षता का बड़ा ध्यान था। इस बात के प्रमाण अन्य लेखों में भी मिलते हैं जो कि इस संग्रह में नहीं है।

धर्म समभाव की इस भावना का प्रभाव हम कतिपय शिलालेखों के प्रारंभिक मंगल पद्यों में भी पाते हैं। ले० नं० ६४६ पार्श्वनाथ जिनेश्वर के नमस्कार से प्रारम्भ होता है। तत्पश्चात् जिनशासन की प्रशंसा व पञ्चपरमेष्ठियों के नमस्कार के बाद नमस्तुंगशिरः आदि पदों से शम्भु की स्तुति है। उसके बाद वराह और शम्भु की स्तुति की गई है। ले० नं० ६८८ में भी जिनशासन की स्तुति तथा शम्भु की स्तुति साथ साथ की गई है।

जैन और शैवों के परस्पर मेल मिलाप को प्रदर्शन करने वाले एक महत्वपूर्ण लेख की ओर भी हम ध्यान दें। ले० नं० ७१० के प्रारम्भ में जिनशासन और शम्भु की स्तुति के बाद एक घटना का उल्लेख है। विजयनगर के आरवीडु वंश के नरेश वेंकटाद्रि द्वितीय के राज्य में एक वीर शिव हुचप्प देव ने हलेवीड की विजय पार्श्व बसदि के खम्भे पर लिंग मुद्रा लगा दी थी जिसे विजयप्प नामक जैन ने साफ कर दी। तब पद्मएण सेट्टि आदि जैनों ने यह समझा कि इससे दूसरे धर्म वालों की भावना को क्षति पहुँचेगी, वीर शैवों के मुखियों से निवेदन किया। इस पर दोनों सम्प्रदाय के लोग इकट्ठे हुए और उचित जांच के बाद उन्होंने आज्ञा निकाली की कि विभूति और विल्वपत्र प्रदान करने के बाद जैन लोग आचन्द्रसूर्य अपनी सब धर्म विधि कर सकते हैं। इसके बाद इस शासन पत्र पर राज्य की स्वीकृति ली गई और वह वीर शैवों की ओर से जैनों को समर्पण किया गया। लेख के अन्त में वीर शैव सम्प्रदाय ने अपने उदार भाव दिखलाये हैं कि जो व्यक्ति जैन धर्म का विरोध करेगा वह महामहत्तु के चरणों से निकाल दिया जायगा, वह शिव, जंगम तथा काशी, रामेश्वर के लिंग का द्रोही समझा जायगा।

अन्त में महामहत्तु की स्वीकृति के बाद बर्धतां जिनशासनम् लिखा है।

९. जैनधर्म पर संकट

१२ वीं शताब्दी के बाद दक्षिण भारत में जैन धर्म के पतन के एवं विशृंखलित होने के चार प्रधान कारण थे।

प्रथम तो वह राज्याश्रय से वंचित हो गया था, गंग, राष्ट्रकूट, होय्सल जैसे साम्राज्य नष्ट हो चुके थे।

द्वितीय, पश्चात्कालीन जैन नेता गण ब्राह्मण धर्म के नवोदित रूप वैष्णव और वीर शैव सम्प्रदाय से जैन धर्म की रक्षा करने में उदासीन हो रहे थे। जैनाचार्यों में ऐसे कोई प्रभावक आचार्य न थे जो कि धार्मिक क्षेत्र में प्रतिद्वन्द्वियों को परास्त करते।

तृतीय, जैन मन्दिरों को आश्रय देने वाले व्यापारी संघ, वीर वणिज आदि वीर शैव धर्म के प्रभाव में आकर जैन धर्म को छोड़ चुके थे। शेष सामान्य जन वर्ग में ऐसी शक्ति न थी कि वे संगठित हो विधर्मियों का प्रतिरोध कर सकते।

चतुर्थ, वीर शैव धर्म के आचार्यों ने जैन धर्म के केन्द्रों पर हमला करना प्रारम्भ किया और स्थानीय सामन्तों को अपने धर्म में परिवर्तित कर उनसे ही जैनों का तिरस्कार कराया।

उपर्युक्त बातें जैन लेखों पर दृष्टिपात करने से भलीभाँति सिद्ध होती हैं। इस संग्रह के लेख नं० ४३५ और ४३६ से वीर शैव धर्म के एक आचार्य एकान्तद रामय्य के सम्बन्ध में ज्ञात होता है कि उसने कलचूरि नरेश बिज्जल को अपने प्रभाव में लाकर जैनों पर भयंकर उत्पात किए थे। उसने अब्लूर में जैन-मूर्ति को फेंककर वेदी को ध्वस्त कर दिया और शिवलिंग की स्थापना की। इस पर जैनों ने कलचूरि नरेश बिज्जल से शिकायत की पर वह तो उक्त आचार्य के प्रभाव में था। इसने उनका उपहास किया और एकान्तद रामय्य को प्रोत्साहन देते हुए जय पत्र प्रदान किया (४३५)। उसी लेख से ज्ञात होता है कि चालुक्य वंश का अन्तिम नरेश सोमेश्वर चतुर्थ भी उस मत का अनुयायी हो गया था।

विजय नगर राज्य के ले० नं० ५६१,५६५,५६६ और ७१० से विदित होता है कि दूसरे सम्प्रदाय के लोग जैनों पर ज्यादती करते थे पर तत्कालीन राजाओं की उदार एवं निष्पक्ष नीति के कारण उनकी सुरक्षा बनी रही। ले० नं० ७१० से ज्ञात होता है कि जैनों को अपमानजनक शर्तें मानने को भी बाध्य होना पड़ा, पर उन्होंने अपने पड़ोसियों की भावना की रक्षा के लिए वह शर्त भी मान ली। उक्त लेख में लिखा है जैन लोग पहले विभूति और विल्व पत्र बांटकर अपनी सब धर्म विधि कर सकते हैं। जैनियों ने जब यह शर्त मान ली तो उसका प्रभाव दूसरे धर्म वालों पर तत्काल हुआ और उन्होंने भी प्रतिज्ञा की कि जैन मन्दिरों आदि को कोई क्षति पहुँचावेगा तो वह उनके धर्म से बाहर कर दिया जायगा। जैनियों में उनकी अहिंसा नीति का ही प्रभाव था कि वे परमत सहिष्णु थे और इससे वे आजतक भारत में रह सके।

१०. जैन धर्म के केन्द्र

प्रस्तुत लेख संग्रह को ध्यान से पढ़ने से मालुम होता है कि भारत में उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम सभी ओर अनेक प्रभावक जैन केन्द्र थे। इन केन्द्रों का इतिहास देखने पर विदित होता है कि जैनाचार्यों ने जैन धर्म को राजाओं और सामन्तों के दरबारों तक ही सीमित न रखा था बल्कि साधारण जनता के बीच भी उसे जनप्रिय बनाने के प्रयत्न किये थे। इसीलिए राजाओं और सामन्तों के सतत परिवर्तित होते रहने पर एवं उनके प्रभुत्व का लोप होने पर भी जैन धर्म की नींव भारतवर्ष में अक्षुण्ण बनी रही।

(अ) उत्तर भारत के जैन केन्द्रों में मथुरा एक समय प्रमुख स्थान था। इस सम्बन्ध में हम पर्याप्त लिख चुके हैं। इसके अतिरिक्त, उदयगिरि-खण्डगिरि (उड़ीसा) पभोसा, राजगृह, रामनगर (अहिच्छत्र), उदयगिरि (सांची), देवगढ़, दूबकुण्ड, ग्वालियर, बबागंज, बड़नगर, खजुराहो, और महोबा के नाम उल्लेखनीय हैं।

उदयगिरि-खण्डगिरि—उड़ीसा प्रान्त में भुवनेश्वर के पास की उक्त

दो पहाड़ियां जैन तीर्थों के इतिहास की दृष्टि से बड़े महत्व की हैं। यहाँ से भारतीय लेखों में महत्वपूर्ण एक लेख (२) हाथी गुम्फा से प्राप्त हुआ है जो जैन सम्राट् खारवेल के इतिहास पर प्रकाश डालता है। उक्त लेख में लिखा है कि यहाँ आदिनाथ भगवान् की एक प्रतिमा थी जिसे मगध का राजा नन्द उठा ले गया था। इसका अर्थ यह हुआ कि नन्दकाल से ही यह स्थान एक जैन केन्द्र था। इस संग्रह में दो और लेख (३ और २४५) इस स्थान के दिये गये हैं। अन्तिम लेख सूचित करता है कि ११वीं शताब्दी में भी यह जैन तीर्थ था। इसका प्राचीन नाम कुमारी पर्वत था। यहाँ से और भी अनेक लेख मिले हैं। जिनकी प्रतिलिपि स्व० वेणीमाधव वरुआ ने ओल्ड ब्राह्मी इन्स्क्रिप्सन्स् नामक ग्रन्थ में दी है।

प्रभोसाः—इलाहाबाद के पास कौशाम्बी जैन और बौद्धों का एक प्राचीन तीर्थस्थान है। कौशाम्बी के पास ही प्रभास पर्वत नाम की एक पहाड़ी है जो प्राचीन काल से ही जैन तीर्थ रही है। इस स्थान के तीन लेख (६, ७ और ७५६) इस संग्रह में दिये गये हैं। प्रथम दो लेख वहाँ की प्राचीन दो गुफाओं से प्राप्त हुए हैं। इन लेखों की लिपि शुंगकालीन है। उनसे मालुम होता है कि अहिच्छत्र के आषाढ़सेन ने जो कि वहसतिमित्र (मगध नरेश) का मामा था, काश्यपीय अर्न्हतों के उपयोग के लिए ये गुफाऐं बनवायीं। काश्यप, भग० महावीर का गोत्र था। संभव है ये गुफाएं भग० महावीर के अनुयायी भिक्षुओं के लिए बनवायी गईं थीं। तीसरा लेख १६ वीं शताब्दी का है। ये तीनों लेख इस बात को सिद्ध करते हैं कि यह स्थान प्राचीन काल से अब तक बराबर जैनों का मान्य तीर्थ है।

राजगृहः—यह स्थान जैन, बौद्ध और हिन्दुओं का पवित्र तीर्थ है। इस स्थान के तीन जैन लेख (८७,८३९ और ७४३) इस संग्रह में दिये गये हैं। ले० नं० ८७ पाँचवें पर्वत वैभार की तलहटी में एक गुफा से प्राप्त हुआ है जिसे सोन भण्डार कहते हैं। यह लेख बड़े महत्त्व का है और इस प्रकार पढ़ा गया है:—

१. निर्वाण लाभाय तपस्वियोग्ये शुभे गुहेऽर्हत्प्रतिमा प्रतिष्ठे

२. आचार्यरत्नं मुनि वैरदेवः विमुक्तयेऽकारयद्दीर्घतेजाः ॥

जिसका भाव है कि किसी मुनि वैरदेव ने निर्वाण प्राप्ति के हेतु दो गुफाएं बनवायीं।

जन० कनिंघम ने आर्क्यो० स० रिपो० के प्रथम भाग में इसकी प्रतिलिपि छापी थी और टी० ब्लॉख महोदय ने इसे पढ़कर एपि० इण्डिका के ८ वें भाग में प्रकाशित कराया। ब्लॉख महोदय इसे लिपि विद्या की दृष्टि से तीसरी या चौथी शताब्दी का कहते हैं। इस लेख के आ० वैरदेव कौन थे यह ठीक तरह से नहीं कहा जा सकता। कुछ विद्वान् इसे श्वेताम्बर पट्टावलियों के वज्रस्वामी मानते हैं जिनका समय सन् ५७ ई० है[1]। हमारा अनुमान है कि ये वैरदेव ले० नं० ६० (सन् ३६० के लगभग) के वीरदेव होना चाहिये जो कि मूलसंघ के आचार्य थे और जिनके सम्बंध में लेख में 'श्रीमद् वीरदेवशासनाम्बरावभासनसहस्रकर' अर्थात् भग० महावीर के शासन रूपी आकाश को प्रकाशित करने वाला सूर्य, विशेषण दिया गया है। लेख की लिपिका समय ३ री ४ थी शताब्दी, हमें वैरदेव से वीरदेव का साम्य स्थापन करने को बाध्य करता था। यदि यह अनुमान ठीक है तो मानना होगा वीरदेव का प्रभाव उत्तर भारत में राजगृह की ओर और दक्षिण भारत में कन्नड प्रान्त में बराबर था।

इस स्थान के दो अन्य लेख १८ वीं शताब्दी के हैं जिनसे सिद्ध होता है कि यह स्थान जैनों का अविच्छिन्न रूप से तीर्थ रहा है।

राम नगरः—(अहिच्छत्र) से प्राप्त अनेकों लेखों में से केवल दो लेख (५३,८४३) इस संग्रह में दिये गये हैं। ले० नं० ८४३ के कोत्तरि शब्द से ज्ञात होता है कि यहाँ अनेकों जैन मन्दिरों के ढेर थे। अब भी वहाँ कोत्तरि के

१—जर० बिहार० रि० सो०, भाग ४६, अंक ४, पृष्ठ ४००–४१२; उमाकान्त प्रेमचंद शाह—राजगिर की जैन गुफा सोन भण्डार के मुनि वैरदेव।

अपभ्रंश रूप में कतारि खेरा नामक छोटी पहाड़ी है। यह स्थान एक समय दिग० सम्प्रदाय का केन्द्र था[1]।

उदयगिरिः—(साँची) यहाँ की एक अकृत्रिम गुफा से एक लेख (६१) मिला है जो इस स्थान को जैन केन्द्र होने की सूचना देता है।

देवगढ़ से प्राप्त ले० नं० १२८ से ज्ञात होता है कि गुर्जर प्रतिहार नरेश मिहिर भोज के समय इसका एक नाम लुअच्छगिरि था वहाँ शान्तिनाथ भगवान् का एक मन्दिर था। दो अन्य लेखों (६१७, ६१८) से जो कि १५ वीं शताब्दी के हैं, विदित होता है कि यहाँ मूलसंघान्तर्गत नन्दिसंघ मदसारद गच्छ, बलात्कार गण का अच्छा प्रभाव था।

११ वीं शताब्दी में **दुबकुण्ड**, काष्ठासंघ के लाटवागट गण का प्रमुख स्थान था। यह स्थान ग्वालियर से ७६ मील दक्षिण पश्चिम दिशा में है। इस क्षेत्र के आसपास कच्छवाहों (कच्छप घाट वंश) का राज्य था। सन् १०८८ ई० में महाराजाधिराज विक्रमसिंह कच्छवाहा ने यहाँ के एक जैन मन्दिर को दान दिया था। उस मन्दिर की स्थापना एक जैन व्यापारी साधु लाहड़ ने की थी जो जायसवाल वंश का था। उसे विक्रमसिंह ने श्रेष्ठि की पदवी दी थी। यहाँ काष्ठासंघ लाटवागट गण के प्रमुख गुरु देवसेन की पादुकाओं की स्थापना सन् १०९५ ई० में की गयी थी (२२८, २३५)।

ग्वालियर से प्राप्त दो लेखों (६३३, ६४०) से विदित होता है कि १५ वीं शताब्दी में तोमर वंशी राजाओं के काल में यह स्थान काञ्चीसंघ (काष्ठासंघ का दूसरा नाम) माथुरान्वय, पुष्करगण के भट्टारकों का प्रमुख केन्द्र था। इन लेखो में उक्त संघ के कतिपय भट्टारकों के नाम दिये गये हैं।

बबागंज (मालवा) से प्राप्त १२ वीं शताब्दी से १५ वीं तक के तीन लेखों से विदित होता है कि यह प्रमुख जैन केन्द्रों में एक था। सन् ११६६ में

१—यहाँ से प्राप्त अनेकों लेख, अनेकान्त, वर्ष १० किरण ३–४ में प्रकाशित हुए में।

यहाँ एक प्रभावक जैन मुनि रामचन्द्र थे, जो राज्यमान्य मुनि (भूपतिवृन्दवन्दित-पदः) थे। ये सर्वसंघतिलक देवनन्दि मुनि के शिष्य थे जो कि राज्यमान्य लोक नन्दि मुनि के शिष्य थे (३७०, ३७१)। १५ वीं शताब्दी में यह स्थान ग्वालियर के भट्टारकों के अधीन था (६४३)।

खजुराहो के जैन और हिन्दू मन्दिर भारतीय शिल्पकला के विशिष्ट नमूने हैं। यहाँ से प्राप्त अनेक लेखों में से केवल १२ मूर्तिलेख इस संग्रह में है इनमें कुछ लेखों से विदित होता है कि यह स्थान ग्रहपति वंश (गहोई वैश्यों) का प्रमुख केन्द्र था। यहाँ के सन् ९५५ के एक लेख से मालुम होता है कि यहाँ जिननाथ का एक प्रसिद्ध मन्दिर था जिसे चन्देल नरेश धंग के राज्य में पाहिल्ल नामक सेठ ने अनेक वाटिकायें बगीचे दान में दिए थे (१४७)।

इसी तरह महोबा भी चन्देल नरेशों के समय में एक जैन केन्द्र था। इस संग्रह में इस स्थान से प्राप्त सं० ११६९ से सं० १२२१ अर्थात् ५२ वर्ष के ८ मूर्ति लेखों से विदित होता है कि यहाँ जैन लोग निर्विघ्न रीति से सोत्साह प्रतिष्ठा आदि कराते थे। ले० नं० ३३७, ३४२ पर चन्देल नरेश मदन वर्म्म का नाम और ले० नं० ३६५ में परमर्दि का नाम एवं राज्य संवत्सर दिया हुआ है।

(आ) इस संग्रह में पश्चिम भारत के संगृहीत लेखों को देखने से विदित होता है कि इस क्षेत्र में श्वेताम्बर सम्प्रदाय के अनेक जैन केन्द्र थे जैसे आबू, सिरोही, अजमेर, अनहिलवाड़, खम्भात, दोहद, दिलमाल, नड्डुलाई, नडोले जैसलमेर, पालनपुर, बयाना आदि। गिरनार से प्राप्त २–३ लेख दिग० सम्प्रदाय के हैं, शेष बहुसंख्य लेख श्वेताम्बर सम्प्रदाय के हैं। शत्रुञ्जय से ११८ संग्रहीत लेखों में दिगम्बर सम्प्रदाय का केवल एक लेख (७०२) है जिसमें मूलसंघ, सरस्वतीगच्छ बलात्कारगण कुन्दकुन्द अन्वय के भट्टारकों की पट्टावली दी हुई है। यहाँ सं० १६८६ में अहमदाबाद के संघपति हुंवड़ ज्ञातीय श्री रत्नसी के वंशजों ने, जब कि शाहजहाँ का राज्य प्रवर्तमान था, श्री शान्तिनाथ की प्रतिमा स्थापित की थी।

(इ) दक्षिण प्रान्त के प्रमुख जैन तीर्थों और केन्द्रों में श्रवणवेल्गोल, पोदनपुर, पलासिका, पुलिगेरे, कोपण, हनसोगे, हुम्मुच, बल्लिगाम्बे, कुप्पटूर, हलेबीड़, मलेयूर, मुल्लूर, मुगलूर, अंगड़ी, बन्दालिके, आवलि, उद्रि, कारकल, गेरसोप्पे आदि प्रसिद्ध थे।

श्रवण वेल्गोल—यहाँ के सम्बन्ध में विशेष कुछ नहीं कहना है क्योंकि उसके माहात्म्य को प्रकट करने के लिए जैन शिला लेख के ५०० शिलालेख प्रथम भाग के रूप में प्रकाशित हो चुके हैं। इस स्थान की परम्परा का सम्बन्ध अनेक विद्वानों के मत से श्रुतकेवली भद्रबाहु और सम्राट् चन्द्रगुप्त से है। कुछ विद्वानों के मत से उज्जयिनी के द्वितीय भद्रबाहु और उनके शिष्य गुप्तिगुप्त से है। जो भी हो पर जै० शि० सं० प्रथम भाग के प्रथम लेख का साधारणतः अर्थ करने से यहां की परम्परा का सम्बन्ध भद्रबाहु द्वितीय से ही मालुम होता है।[1]

---

१. 'जैन परम्परानो इतिहास' के लेखक विद्वान् मुनि श्री दर्शन विजय जी आदि (त्रिपुटी महाराज) ने आर्य सिंहगिरि के उत्तराधिकारी आर्य वज्रस्वामी और भद्रबाहु द्वितीय के जीवन चरित में अनेक प्रकार का साम्य दिखलाया है और संभावना प्रकट की है कि यदि दोनो आचार्यों को एक मान लिया जाय तो श्वेताम्बर दिगम्बर इतिहास संबंधी अनेक गूथियां सरल रीति से उत्कल जा सकती हैं। इन वज्रस्वामी का जन्म वीर संवत् ४९६ में, दीक्षा काल वीर सं० ५०४ में युगप्रधान पद ५४८ में और सं० ५८४ में स्वर्गगमन हुआ था। वे लिखते हैं:—दिगम्बर ग्रन्थों में इस अरसे में द्वितीय भद्रबाहु होने का उल्लेख है जिनके दूसरे नाम वज्रयशा (तिलोयपण्णत्ति) महायशा (महापुराण), यशोबाहु (उत्तर पुराण, हरिवंश पुराण), जयबाहु (श्रुतावतार), वज्रर्षि (हरिवंश पुराण स० १ श्लोक ३३), महायशा (आवश्यक निर्युक्ति) मिलते हैं। श्रवणवेल्गोल के चन्द्रगिरि स्थित एक लेख में उल्लेख है कि श्रुतकेवली भद्रबाहु की परम्परा में महानिमित्तज्ञ भद्रबाहु ने उज्जयिनी में रहते हुए १२ वर्षीय दुष्काल को आते देख

दक्षिण कर्नाटक की ओर विहार किया और ७०० शिष्यों के साथ इस पहाड़ी पर आये। उन्होंने यहाँ अपने समाधिमरण की आराधना के लिए केवल एक शिष्य को साथ रख शेष को विसर्जित कर दिया इत्यादि (पृष्ठ २८४–२६२)।

आगे मुनिश्री लिखते हैं कि आर्य वज्रस्वामी ने वि० सं० १७४ में अपने शिष्य संघ के साथ बारह वर्ष के दुष्काल में दक्षिण जाकर एक पहाड़ी के ऊपर अनशन किया और समाधि पूर्वक स्वर्गगमन किया। इस भूमि की इन्द्र ने रथ के द्वारा तीन प्रदक्षिणा की इससे इस पहाड़ का नाम 'रथावर्तगिरि' पड़ा।

इस रथावर्तगिरि का असली नाम क्या था और वर्तमान में उसका नाम क्या है, इस बात का कहीं स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता। किन्तु हमें लगता है कि आज जो इन्द्रगिरि (विन्ध्यगिरि) के रूप में पहाड़ी बोली जाती है वही वास्तव में रथावर्त गिरि है, और उसके ऊपर जो विशालकाय मूर्ति है वह आर्य द्वितीय भद्रबाहु स्वामी याने वज्रस्वामी की मूर्ति है।

आ० वज्रस्वामी ने अनशन के लिए प्रथम एक पहाड़ी पसन्द किया था अपने एक बालमुनि को भी छोड़ने के लिए उन मुनि को वहीं रख उस पहाड़ी का त्याग कर सामने की दूसरी पहाड़ी पर अनशन किया और बालमुनि ने पहली पहाड़ी पर अनशन किया।

इसके पश्चात् उनके प्रशिष्य आचार्य चन्द्रसूरि यहीं पधारे थे और उनके उपदेश से उसी पहाड़ी की विशाल शिला पर आ० वज्रस्वामी की विशाल काय प्रतिमा बनी। ये दोनों पहाड़ियाँ आज इन्द्रगिरि और चन्द्र-गिरि नाम से प्रसिद्ध हैं, इत्यादि।

(देखो, जैन परम्परानो इतिहास, भा० १, लेखक त्रिपुटी महाराज, प्रकाशक—श्री चारित्र स्मारक ग्रन्थ माला, अहमदाबाद, १६५२, पृष्ठ ३३७-३३६)

जो भी हो पर 'अनेकग्रामशतसंख्यं मुदित जन धन कनक सस्य गोमहिषाजावि कुल समाकीर्ण जनपदं प्राप्तवान्" उल्लेख जिस स्थान के लिए किया गया है वह पुन्नाट देश के उत्तरी भाग के सिवाय और कोई दूसरी जगह नहीं है।

पोदनपुर—तीर्थ के सम्बन्ध में हमें ले० नं० ३६५[1] (सन् ११८०) से विदित होता है कि भरत चक्रवर्ती ने पोदनपुर के समीप ५२५ धनुष प्रमाण बाहुबलि की मूर्ति प्रतिष्ठित करायी थी। कुछ काल बीतने पर मूर्ति के आसपास की भूमि कुक्कुट सर्पों से व्याप्त और बीहड़ बन से आच्छादित होकर दुर्गम्य हो गयी थी। राच-मल्ल नृप के मंत्री चामुण्ड राय को बाहुबलि के दर्शन की अभिलाषा हुई पर यात्रा के हेतु जब वे तैयार हुए तब उनके गुरु ने उनसे कहा कि वह स्थान बहुत दूर और अगम्य है। इस पर चामुण्ड राय ने वैसी मूर्ति की प्रतिष्ठा कराने का विचार किया और उन्होंने वैसा कर डाला।

कहा जाता है कि यह पोदनपुर निजाम हैदराबाद प्रान्त के निजामाबाद जिले का 'बोधन' नामक गाँव है जो कि १० शताब्दी के पूर्वार्ध में राष्ट्रकूट नरेश इन्द्र चतुर्थ की राजधानी था और वहां वैष्णवों का बोलबाला था तथा वहाँ एक विशाल वैष्णव मन्दिर भी बनवाया गया था। यहाँ अब भी जैन एवं ब्राह्मण पुरातत्त्व की सामग्री मिलती[2] है।

पलासिका:—हलसी या हलसिगे (जिला बेलगांव) से प्राप्त ६ लेखों से ज्ञात होता है कि पांचवीं शताब्दी ईस्वी में कदम्बों के राज्यकाल में पलासिका एक प्रमुख जैन केन्द्र था। यहां यापनीय, निर्ग्रन्थ एवं कूर्चक ये तीनों सम्प्रदाय समान भाव से आदृत थे। ले० नं० ९६ में लिखा है कि कदम्ब नरेश काकुस्थवर्मा ने अपने जैन सेनापति श्रुतकीर्ति को धार्मिक कार्य के लिए एक क्षेत्र दान में दिया था। ले० नं० ९९ के अनुसार कदम्ब मृगेशवर्मा ने अपने पिता की स्मृति में

---

१. जैन शि० ले० संग्रह, नं० ८५.
२. सालेतोरे, मेडीवल, जैनिज्म, पृष्ठ १८६.

यहाँ एक जैन मन्दिर बनाकर यापनीय, निर्ग्रन्थ और कूर्चकों को दान में दिया था। इसी तरह ले० नं० १०० उल्लेख करता है कि अष्टाह्निका पर्व मनाने के लिए कदम्ब नरेश रविवर्मा और अन्य लोगों ने पुरुखेटक गांव यापनीय संघ को दिया था। ले० नं० १०१-१०२ के अनुसार यहाँ कदम्ब रविवर्मा और उसके छोटे भाई भानुवर्मा द्वारा जिन भगवान् की पूजा के लिए दान दिये गये थे। ले० नं० १०३ से विदित होता है कि कदम्ब नरेश हरिवर्मा ने पलासिका में सिंह सेनापति के पुत्र मृगेश द्वारा निर्मापित जैन मन्दिर में अष्टान्हिका पूजा के लिए और सर्व संघ के भोजन के लिए, कूर्चकों के वारिषेणाचार्य संघ के लिए, चन्द्रक्षान्त को प्रमुख बनाकर दान दिया था। इसी तरह ले० नं० १०४ के अनुसार अहि-रिष्ट नामक श्रमण संघ के लिए सेन्द्रक राजा भानुवर्मा की प्रार्थना पर हरिवर्मा ने दान दिया था। इस तरह कदम्ब राजाओं की ४-५ पीढ़ी तथा पलासिका याप-नीय, निर्ग्रन्थ और कूर्चक सम्प्रदाय का प्रमुख केन्द्र रहा है।

पुलिगेरे (लक्ष्मेश्वर):—इस स्थान के सातवीं से दशवीं शताब्दि ईस्वी के संग्रहीत पाँच लेखों से मालुम होता है यह एक जैन तीर्थ था। यहाँ शंखव-सदि नामक विशाल जैन मन्दिर था जिसकी छत ३६ खम्भों पर थमी थी। इस बसदि के नाम से इस स्थान का नाम शंखतीर्थ पड़ा था। ले० नं० १०६ से विदित होता है कि सेन्द्रक राजा दुर्गशक्ति ने शंखजिनेन्द्र की नित्य पूजा के लिये कुछ भूमि दान में दी थी। ले० नं० १११ के अनुसार चालुक्य विनया-दित्य सत्याश्रय ने इस मन्दिर को अपने राज्य के ५ वें या ७ वें वर्ष में माघ पूर्णिमा के दिन दान दिया था। ले० नं० ११३ में उल्लेख है कि चालुक्य वंशी विजयादित्य सत्याश्रय ने अपने राज्य के ३४ वें वर्ष में इस मन्दिर के लिए दान दिया था और ले० नं० ११४ से ज्ञात होता है कि सन् ७३४ ई० में विक्रमादित्य ने शंखतीर्थ बसदि का जीर्णोद्धार कराया था। यहाँ शंख बसदि के अतिरिक्त एक और जिनालय था, जिसका नाम धवल जिनालय था। ले० नं० १४६ इस तीर्थ के इतिहास की दृष्टि से बड़े महत्त्व का है। उक्त लेख के अनुसार सन् ९६८ में इस तीर्थ का विशाल रूप हो गया था। यहाँ गंगराजा मारसिंह गङ्ग-

कन्दर्प ने एक जिनालय बनवाया जो कि शंख बसदि तीर्थ बसदि मण्डल के लिए मण्डन स्वरूप था। उसका नाम उक्त राजा के नाम पर गङ्गकन्दर्प भूपाल जिनेन्द्र मन्दिर रखा गया और उसके लिए दान देते समय सीमा के रूप में अनेक जैन एवं अजैन बसदियों का उल्लेख है।

कोपणः—यह स्थान श्रवण वेल्गोल के बाद बड़े महत्त्व का जैन तीर्थ रहा है। शिलालेखों के पर्यवेक्षण से प्रतीत होता है कि यह ७ वीं से लेकर १६ वीं शताब्दी तक जैनों का महातीर्थ रहा है। प्रस्तुत संग्रह में कोपण के सम्बन्ध के ११ वीं शताब्दी के पहले के लेख संग्रहीत नहीं पर उसके बाद के जो भी लेख हैं उनमें उसकी प्रसिद्धि का ही उल्लेख है। ले० नं० १६८ से विदित होता है कि सन् १००० के लगभग कोपण तीर्थ के कुछ यात्री श्रवण वेल्गोल आये थे। ले० नं० २६९ में लिखा है कि जैनों के सहस्रों तीर्थों में प्रमुख तीर्थ कोपण था। ले० नं० २५५ में उल्लेख है कि जैन सेनापति गंगराज ने अपनी अनवधिक दानशीलता से गङ्गवाडि ९६००० को कोपण के समान चमका दिया था। यही बात ले० नं० ३०१ और ४११ से पुष्ट होती है। ले० नं० ३०४ के अनुसार गंगराज के ज्येष्ठ भ्राता बम्मदेव के पुत्र ऐच दण्डनायक ने कोपण वेल्गोल आदि स्थानों में अनेक जिन मन्दिर निर्माण कराये थे। उसी लेख में कोपण को 'कोपण आदि तीर्थदलु' अर्थात् एक प्रमुख या आदि तीर्थ के रूप में माना गया है। सन् ११५९ (३५४) में सेनापति हुल्ल ने कोपण महातीर्थ में २४ जैन साधुओं के संघ के लिए अक्षयदान दिया था। ले० नं० ४५१ में उल्लेख है कि ऐचण ने वेलगवत्तिनाड् में एक ऐसा जिनालय बनवाया था जैसा उस प्रदेश में और कहीं नहीं था और इस तरह उसने बेलगवत्तिनाड को कोपण के समान बना दिया।

१६ वीं शताब्दी में भी कोपण का महत्व कुछ कम न हुआ था। इस शताब्दी के महान् विद्वान् वादि विद्यानन्द के विषय में ले० नं० ६६७ में उल्लेख है कि इन्होंने कोपण तथा अन्य दूसरे तीर्थों में महोत्सव करके विद्यानन्द नाम से प्रसिद्धि प्राप्त की।

डा० राइस महोदय कोपण को निजाम हैदराबाद के दक्षिण-पश्चिम में स्थित वर्तमान कोप्पल को माना है। इस विषय में अब सन्देह नहीं है।

चिक्क हनसोगे:—जैन तीर्थों में चिक्क हनसोगे का नाम भी प्रमुख था। इस संग्रह के लेखों से प्रतीत होता है कि उक्त स्थान ११ वीं शताब्दी के पहले से भी जैन धर्म का केन्द्र था। ले० नं० २४० से ज्ञात होता है कि वहां एक समय ६४ बसदियां थीं जो कि अब सब ध्वस्त हालत में हैं पर उन्हें देखने से मालुम होता है कि वे चालुक्य शिल्प की शैली में सुन्दर ढंग से निर्मित हुई थीं। ले० नं० २२३ (लगभग सन् १०८० ई०) से विदित होता है कि दामनन्दि भट्टारक के अधिकार क्षेत्र में पनसोगे के चङ्गाल्व तीर्थ की सारी बसदियाँ थीं, अब्बेय बसदि तथा तोरेनाड् की बसदि भी उनके प्रधान शिष्यगण के अधिकार में थी। ले० नं० १६६, २४० और २४१ से उन बसदियों का एक विचित्र इतिहास मालुम होता है कि इन बसदियों के आदि प्रतिष्ठापक मूलसंघ, देशीगण, होत्तगे गच्छ के रामस्वामी थे जो कि दशरथ के पुत्र, लक्ष्मण के भाई सीता के पति और इक्ष्वाकु कुल में उत्पन्न हुए थे। पीछे इन्हीं बसदियों को दान देने वाले क्रमशः शक, नल, विक्रमादित्य, गंग और चङ्गाल्व थे। सन् १०६० के लगभग यहां चंगाल्व नरेश राजेन्द्र चोल नन्नि चंगाल्व ने कुछ बसदियों का निर्माण कराया था।

हनसोगे के जैन गुरुओं का बड़ा प्रभाव था। इनकी एक शाखा हनसोगे बलि नाम से प्रसिद्ध थी। सन् १३०३ में हनसोगे के बाहुबलि मलधारि देव के शिष्य पद्मनन्दि भट्टारक ने होन्नेयन हल्लि में गंध कुटी निर्माण करायी थी तथा १५ गद्याण का दान भी दिया था (५५१)। पन्द्रहवीं शताब्दी के लगभग कारकल के शासकों को जैन धर्म के प्रभाव में लाने वाले इसी स्थान के गुरु थे। हनसोगे के ललितकीर्ति मुनीन्द्र के उपदेश से शक सं० १३५३ फाल्गुन शुक्ल १२ के दिन सोमवंश के भैरवेन्द्र के पुत्र पाण्ड्य राय ने कारकल में बाहुबलि की प्रतिमा बनाकर प्रतिष्ठित करायी थी (६२४)।

हुम्मचः—शान्तर कुल के संस्थापक जिनदत्तराय के समय (६ वीं शता०) से यह बराबर महत्व पूर्ण जैन तीर्थ रहा है। इस संग्रह के लगभग २२ लेखों से यह बात भली भाँति सिद्ध होती है। यहां की प्राचीन बसदि का नाम पालियक्क बसदि था जो कि सन् ८७८ के लगभग निर्मापित हुई थी। ले० नं० १४५ से से ज्ञात होता है कि तोलापुरुष शान्तर की पत्नी पालियक्क ने अपनी माता की मृत्यु पर उसे पाषाण बसदि के रूप में खड़ा किया था और इसके लिए बहुत से दान दिऐ थे। सन् ८९७ के ले० नं० १३२ में उल्लेख है कि तोलापुरुष विक्रमादित्य ने मौनिसिद्धान्त भट्टारक के लिए एक पाषाण बसदि बनवायी। सन् १०६२ के दो ले० नं० १९७ और १९८ क्रमशः सूले बसदि और पार्श्वनाथ बसदि से प्राप्त हुए हैं। प्रथम लेख में पट्टणस्वामि नोक्कय्य सेट्टि के दानों का उल्लेख है और दूसरे में वीर शान्तर की पत्नी चागलदेवी के दान कार्यों की प्रशंसा है। सन् १०६५ के एक लेख (२०३) में उल्लेख है कि त्रैलोक्यमल्ल शान्तर ने अपने गुरु कनकनन्दि देव को यहां दान दिया था। सन् १०७७ के ५ लेख उसी तीर्थ से प्राप्त हुए हैं जिनमें से ले० नं० २१२ में तैलह शान्तर के दानों और पट्टणस्वामि नोकय्य सेट्टि की प्रशंसा है। ले० नं० २१३ बहुत ही विशाल लेख है जो कि पञ्चकूट बसदि के प्राङ्गण में एक बड़े पाषाण पर उत्कीर्ण है। पञ्चकूट बसदि प्रसिद्ध उर्वीतिलक जिनालय का ही नाम है। इस लेख के अनुसार चट्टलदेवी ने अपने पति एवं पुत्रादि की याद में तालाब कुआं, बसदि, मन्दिर, नाली, पवित्र स्नानागार, सत्र, कुंज आदि प्रसिद्ध धर्म एवं पुण्य के कार्यों को सम्पन्न कराया था। चट्टलदेवी शान्तरकुल और गंगवंश से सम्बन्धित कांची की रानी थी। लेख में शान्तर वंश और गंग वंश की वंशावली तथा द्रविड़ संघ, अरुङ्गलान्वय नन्दिगण की पट्टावली भी दी हुई है। इस लेख के अनुसार पंचकूट जिनालय का स्थापना काल शक सं० ९९९ था। ले० नं० २१४ में पंचकूटबसदि के निर्माण कार्य का विशेष इतिहास दिया गया है और मन्दिर के प्रतिष्ठाचार्य श्रेयांस देव की (ले० नं० २१३ के समान ही) परम्परा दी गई है। ले० नं० २१५ में नन्नि शान्तर, राजा ओड्डुग और चट्टलदेवी आदि

११

ानियों की तथा हेमसेन (कनकसेन) दयापाल, पुष्पसेन, वादिराज, अजितसेन आदि आचार्यों की प्रशंसा की गई है। ले० नं० २२६ में शान्तर राजाओं के दान का उल्लेख है। ले० नं० ३२६ में उल्लेख है कि सन् ११४७ में विक्रम शान्तर की बड़ी बहिन पम्पादेवी ने उर्वीतिलक जिनालय के समान ही शासन देवता की मूर्ति निर्माण करायी थी, तथा उसने उसके भाई और पुत्री ने पञ्च-बसदि के उत्तरीय पट्टसाले को बनवाया था। ले० नं० २३८, ४६७, ४९४, ४९७, ५००, ५०३, ५४२, तथा ५९७ समाधिमरण के स्मारक लेख हैं। ले० नं० ६६७ बहुत विशाल है और विजयनगर साम्राज्य के प्रसिद्ध विद्वान् वादि विद्यानन्द तथा तत्कालीन राजाओं पर उनके प्रभाव का सुन्दर वर्णन करता है।

बल्लिगाम्बे :—के भी जैन तीर्थ होने के अनेक लेख प्रमाण हैं। यहाँ सन् १०४८ में जजाहुति शान्तिनाथ से सम्बद्ध वलगारगण के मेघनन्दि भट्टारक के शिष्य केशवनन्दि अष्टोपवासि भट्टारक की बसदि थी। इस बसदि के लिए उक्त सन् में महामण्डलेश्वर चामुण्डराय ने कुछ भूमि का दान दिया था (१८१)। यहाँ सन् १०६८ में जैन सेनापति शान्तिनाथ ने काष्ठ से बनी हुई प्राचीन मल्लिकामोद शान्तिनाथ तीर्थंकर की बसदि को पाषाण की बनवाया था तथा इस मन्दिर के निमित्त वहाँ माघनन्दि भट्टारक को कुछ जमीन दान में दी थी (२०४)। इस लेख में तथा इससे पहले के ले० नं० १८१ में उल्लेख है कि यहाँ सभी धर्मों के—जिन, विष्णु, ईश्वर आदि के मन्दिर थे। ले० नं० २०४ की अन्तिम पंक्तियों से यह भी विदित होता है जगदेकमल्ल (जयसिंह तृतीय जगदेकमल्ल) तथा चालुक्य गंग पेर्म्मानडि विक्रमादित्य ने उक्त बसदि को पहले कुछ जमीनें दान में दी थीं। ले० नं० २१७ (सन् १०७७) से मालुम होता है कि यहाँ के चालुक्य गंग पेर्म्मानडि जिनालय को विक्रमादित्य चतुर्थ ने सेन गण के आचार्य रामसेन को एक गाँव दान में दिया था। सन् ११८६ ई० करीब का एक लेख (४२०) समाधि मरण का स्मारक है। ले० नं० ४५३ और ४५४ (सन् १२०५ ई०) में एक जैन बसदि के लिए एक जैन राजा (सम्भव है रट्ट वंश के राजा)—द्वारा दान का उल्लेख है। इन दोनों लेखों में रट्टवंश के पिछले

राजाओ कीं वंशावली दी गई है। इस सबसे यही मालुम होता है कि बल्लिगाम्बे ११-१२ वीं शताब्दी के प्रमुख जैन केन्द्रों में एक था।

कुप्पटूरः—के सम्बन्ध में संगृहीत कतिपय लेखों से ज्ञात होता है कि यह स्थान ११ वीं से १५ वीं शताब्दी तक एक महत्त्वपूर्ण जैन केन्द्र था। ले० नं० २०६ से विदित होता है कि कदम्ब राज्ञी मलाल देवी ने सन् १०७७ में पार्श्वदेव चैत्यालय की स्थापना की थी और पद्मनन्दि भट्टारक ने उसकी प्रतिष्ठा करा के उसका नाम वहां के ब्राह्मणों के नाम पर 'ब्रह्म जिनालय' रखा था। यहीं देशी गण के आचार्य देवचन्द्र के शिष्य श्रुत मुनि थे जिन्होंने एक मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया था, और सन् १३६७ में समाधिगत हुए थे (५६३)। ले० नं० ५५५ से विदित होता है कि सन् १४०२ में कुप्पटूर एक प्रसिद्ध स्थान था। विजय नगर के सम्राट् हरिहर के समय यहां एक जैन मन्दिर था, जिसमें कदम्बों का एक शासन पत्र मिला था। सन् १४०८ के ले० नं० ६०५ से विदित होता है कि कुप्पटूर नागर खण्ड का तिलक स्वरूप था वहां अनेक जैन रहते थे, तथा अनेक जैन चैत्यालय थे। वहां का शासक जैन धर्मावलम्बी गोपमहाप्रभु था।

अङ्गडिः—यह होय्सल वंश का उत्पत्ति स्थान था। इसका दूसरा नाम सोसेबूर था। १० वीं शताब्दी के मध्य से इसके जैन केन्द्र होने के अनेक प्रमाण मिलते हैं। ले० नं० १६६ से ज्ञात होता है कि यहां द्रविड़ संघ के प्रसिद्ध मुनि विमलचन्द्र पण्डित देव थे जिन्होंने सन् ९९० में लगभग संन्यास विधि से मरण किया था और उनकी शिष्याओं ने इस उपलक्ष्य में स्मारक खड़ा किया था। इसी तरह ले० नं० १७८ वज्रपाणि मुनि के समाधिमरण का स्मारक है। ये वज्रपाणि होय्सल नरेश नृपकाय राच मल्ल के गुरु थे। ले० नं० १९४, २०० २४२ भी समाधिमरण के स्मारक हैं। ले० नं० १८५ से मालुम होता है कि ये वज्रपाणि मुनि सूरस्थ गण के थे। उनकी शिष्या जाकियब्बे ने कुछ जमीनें वहां के मकर जिनालय के लिए छोड़ दी थीं। इस लेख के समय विनयादित्य होय्सल का राज्य प्रवर्तमान था। ले० नं० २०१ में पाषाणशिल्पियों के प्रधान, माणिक होय्सलाचारि द्वारा निर्मित एक बसदि का उल्लेख है। यह बसदि मुल्लूर के गुणसेन

पण्डितदेव को सौंप दी गई थी। इसी तरह ले० नं० ३६७ (सन् ११६४) में उल्लेख है कि यहाँ एक बसदि पट्टणसामि नागसेट्टि के पुत्र ने बनवायी थी जिसके लिए सन् ११६४ में वीर विजय नरसिंह देव ने दान दिया था। सन् ११-७२ के एक लेख (३७८) में एक होन्नंगिय बसदि के लिए किसी कम्बरस नामक व्यक्ति द्वारा दान का उल्लेख है।

बन्दालिके:—इस स्थान की तीर्थ रूप में प्राचीनता यहाँ से प्राप्त सन् ६१८ (ठीक ६११) के एक लेख (१४०) से विदित होती है जहाँ इसे बन्दनिके तीर्थ रूप में लिखा है। उक्त सन् में नागर खण्ड सत्तर की शासिका जक्कियब्बे ने सल्लेखना पूर्वक देहत्याग किया था। सन् १०७५ के एक लेख (२०७) में भी इसका तीर्थ के रूप में उल्लेख है। वहाँ शान्तिनाथ बसदि के लिए चालुक्य नृप सोमेश्वर ने कुछ भूमि दान में दी थी। ले० नं० ४०८ से ज्ञात होता है कि कदम्ब वंश की एक शाखा की अधीनता में इस स्थान की कीर्ति एवं यहां के शान्तिनाथ जिनालय की प्रसिद्धि जगह जगह फैल रही थी। इसी लेख के अनुसार एक बार यहां के जिनालय को देखने होय्सल सेनापति रेचण आया था। उसने इस मन्दिर के दर्शन से प्रसन्न होकर पूजा के खर्च के लिए एक गाँव दान में दिया था। इसी शान्तिनाथ जिनालय में सन् १२०० के लगभग सोमलदेवी नामक महिला ने समाधि मरण किया था (४३३)। ले० नं० ४३८ के अनुसार उक्त बसदि के लिए तीन गाँव दान में दिये गये थे। ले० नं० ४४८ में बन्दालिके (बान्धव नगर) की समृद्धि एवं सौन्दर्य का अच्छा वर्णन है। यहाँ एक सेट्टि ने शान्तिनाथ देव के लिए एक मण्डप खड़ा किया था। ललितकीर्ति सिद्धान्त के शिष्य शुभचन्द्र पण्डित ने इस तीर्थ का प्रबन्ध (पारुपत्य) अपने हाथ लेकर उसे समुन्नत किया था एवं नागर खण्ड सत्तर के सभी प्रमुख व्यक्तियों ने, प्रजा ने, और किसानों ने अनेक दान दिये थे और होय्सल सेनापति मल्ल ने उक्त क्षेत्र की रक्षा की थी। उक्त जिनालय के प्रबन्धक शुभचन्द्र देव ने सन् १२१३ में सन्यासपूर्वक देहत्याग किया था (४५६)।

उद्धरे (उद्रि):—इस तीर्थ के १२ वीं से १४ वीं शताब्दी के ही लेख इस संग्रह में हैं जिनसे मालुम होता है कि यहाँ प्रसिद्ध तीन बसदियाँ थीं—पञ्च बसदि, कनक जिनालय एवं एरग जिनालय। सन् ११२६ में यहाँ का शासक गंगनरेश मारसिंह का पुत्र महामण्डलेश्वर एक्कलरस था उसके सेनापति सिंगण का विरुद जैनचूडामणि था (२६१)। यह एक्कलरस नाना देशों के विद्वानों और कवियों के लिए कर्ण के समान दानी था। वह वहाँ की सारी प्रवृत्तियों का संचालक था। उसकी फुआ सुग्गियब्बिरसि ने यहाँ पञ्चवसदि में रहने वाले साधुओं के लिए दान दिया था (३१३)। एक दूसरी महिला कनकब्बिरसि ने वहाँ बहुत से दान दिये (३१३)। इसका अनुकरण कर दूसरी महिलाओं ने भी दान दिये थे। राजा एक्कल ने कनक जिनालय को भूमि दान दिया था। (३१३)। सन् ११९८ के एक लेख (४·३१) में उल्लेख है कि होय्सल सेनापति महादेव दण्डनाथ ने वहाँ एरग जिनालय नाम का एक विशाल जिनालय बनवाया था। उसने उक्त मन्दिर के लिए अनेक दान भी दिये थे। इसी लेख में लिखा है कि उद्धरे बनवासी देश के शासकों के रक्षण और कोष भवन के रूप में अद्वितीय स्थान था। सन् ·३८० के एक लेख (५७९) से विदित होता है कि इस स्थान में विजयनगर नरेश हरिहर राय द्वितीय के समय में बैचप नामक एक जैन वीर रहता था। उसने अपने देश को अतातायियों से बचाने के लिए उनसे युद्ध किया और उन्हें परास्त करने में अपने जीवन की बलि दे दी। ले० नं० ५६६ में बैचप के पुत्र सिरियण्ण की जिनधर्म भक्ति का और उद्धरे की महिमा का वर्णन है। सन् १४०० में सिरियण्ण ने समाधि विधि से देह त्याग किया था। चौदहवीं शताब्दी में उद्धरे अति समुन्नत एवं प्रख्यात स्थान था, यहाँ तक कि इस स्थान के आचार्य ने अपने वंश का नाम उद्धरे वंश रख लिया था। यहाँ के आचार्यों मुनिभद्र देव ने हिसुगल बसदि बनवायी थी तथा मुलगुन्द के जिनेन्द्र मन्दिर का विस्तार कराया था। ले० नं० ५८८ उनके समाधिमरण का स्मारक है।

हलेबीड:—जैन धर्म का एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र होय्सलों की राजधानी हलेबीड

था। जिसका कि दूसरा नाम उक्त वंश के लेखों में दोरसमुद्र या द्वारावती मिलता है। प्रस्तुत संग्रह में इस स्थान का पुराना लेख सन् १११७ के लगभग का (२६३) है जो कि विष्णुवर्धन नृप के समय का है। इसमें जैन मंत्री गंगराज के कार्यों की बड़ी प्रशंसा है। सन् ११३३ के ले० नं० ३०१ में विष्णुवर्धन की दिग्विजय का, तथा साथ में सेनापति गंगराज द्वारा अगणित जैन मन्दिरों के जीर्णोद्धार कार्यों का उल्लेख है। गंगराज के पुत्र बोप्प ने दोर समुद्र में पार्श्वनाथ बसदि का निर्माण कराया था और अपने पिता की स्मृति में पार्श्वनाथ की मूर्ति स्थापित की थी। राजा विष्णुवर्धन को दैवयोग से इसी अवसर पर युद्ध विजय, पुत्रोत्पत्ति और सुख समृद्धि मिली थी। उसने इस मांगलिक स्थापन को ही उक्त बातों में निमित्त मान बड़ी प्रसन्नता से देवता का नाम विजयपार्श्व एवं पुत्र का नाम विजय नारसिंह देव रखा और जावगल नामक गाँव तथा अन्य प्रकार के दान दिये। उक्त लेख से यह भी मालुम होता है कि मन्दिर के पुरोहित नयकीर्ति सिद्धान्तदेव को तेली दास गौंड ने भूमिदान दिया तथा उसने और राम गौण्ड ने उत्तरायण संक्रमण में बहुत से दान दिए। सन् ११६६ के एक लेख (४२६) में यहाँ की शान्तिनाथ बसदि के लिए कुछ किसानों द्वारा गाँव एवं तालाबों के दान का तथा वसदि के आचार्य, स्थानीय किसान वर्ग, एवं गाँव के ६० कुटुम्बों द्वारा दान की रक्षा का उल्लेख है। ले० नं० ४६६ के अन्तर्गत दो लेखों का संकलन हुआ है। पहले लेख में होय्सल नरसिंह तृतीय द्वारा जीर्णोद्धार कार्य का तथा दूसरे में उक्त राजा द्वारा अपने उपनयन संस्कार के समय दान का उल्लेख है। सन् १२७४ के एक लेख (५१४) में बालचन्द्र पण्डित देव के चमत्कार पूर्ण समाधि मरण का वर्णन है। उनके स्मारक रूप में भव्य लोगों ने उनको तथा पंच परमेश्वर की प्रतिमायें बनाकर प्रतिष्ठित की थीं। इसी तरह ले० नं० ५२४ (सन् १२७६) में उक्त बालचन्द्र पण्डितदेव के श्रुतगुरु अभयचन्द्र महासैद्धान्तिक के समाधिमरण का उल्लेख है। ये अभयचन्द्र अनेक शास्त्रों के प्रकाण्ड पण्डित थे। इसी तरह इस लेख के २० वर्ष बाद बालचन्द्र पण्डित देव के प्रधान शिष्य रामचन्द्र मलधारि देव के समाधिमरण

का अनोखा वर्णन है (५४८)। ले० नं० ५४६ में एक अद्‌भुत सूचना है। उसमें उल्लेख है कि वहाँ से ईशान दिशा की ओर १५ बिलस्त के अन्तर पर शान्तिनाथ देव जिनकी ऊँचाई ६ बिलस्त है, जमीन के अन्दर गड़े हैं, कोई भव्य पुरुष उनको बाहर निकालकर उनकी प्रतिष्ठा कर पुण्य लाभ ले। सन् १६३८ के महत्त्वपूर्ण एक लेख (७१०) में जैन और शैवों की एकता तथा परधर्म सहिष्णुता का वर्णन है।

मलेयूर:—चामराजनगर तालुके में जैन धर्म का एक मजबूत गढ़ मलेयूर था। यहाँ के कनकाचल पर्वत पर अनेक बसदियाँ थीं। सन् ११८१ में यहाँ की पार्श्वनाथ बसदि के लिए अच्युत वीरेन्द्र शिक्यप वैद्य की पत्नी चिक्कतायी ने पूजा प्रबन्ध के लिए, मुनियों के नित्यदान के लिए और हमेशा शास्त्रदान के लिए किन्नरीपुर ग्राम को दान में दिया था (४०१)। यहाँ के १४ वीं से लेकर १९ वीं शताब्दी तक के १० लेखों से विदित होता है कि यहाँ अनेक बसदियाँ थीं।

आवलि नाड:—सोराब तालुके के अनेकों जैन केन्द्रों में प्रसिद्ध केन्द्र आवलिनाड् (हिरिय आवलि) था। मध्य युग में इस स्थान के अनेकों सामन्तों ने, उनकी पत्नियों ने तथा नगरवासियों ने अपने उत्साहपूर्ण धर्मसेवन से इस स्थान को अमर बना दिया था। जैनधर्म की दृष्टि से उस स्थान का महत्त्व यद्यपि १२ वीं शताब्दी में भी था (२८६, ३२२) पर विशेषकर यहाँ १४ वीं शताब्दी के मध्य से लेकर पन्द्रहवीं शताब्दी के प्रथम दशकों के अनेक लेखों से, जो कि इस संग्रह में दिये गये हैं, विदित होता है कि यहाँ जैन धर्म की धारा अच्छी तरह प्रवाहित थी। इन लेखों में अधिक संख्या समाधिमरण के स्मारक लेखों की है। इन लेखों से ज्ञात होता है कि यहाँ के सामन्त आवलि प्रभु या आवलि महाप्रभु कहलाते थे और अपने जीवन के अन्तिम क्षणों को सुधारने में कितने जागरूक रहते थे।

तवनिधिः—सोराब तालुके का यह स्थान भी एक जैन तीर्थ था। यहाँ से अनेकों जैन लेख मिले हैं पर यहाँ केवल ६ ही लेख संगृहीत हैं जो कि सब समाधिमरण के स्मारक हैं जिनसे ज्ञात होता है कि ऐसे स्थानों में समाधिविधि सम्पन्न कराने वाले आचार्य होते थे जहाँ कि श्रावक जन अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में आकर संन्यासविधि से जीवन त्याग करते थे।

मुल्लुरुः—यह स्थान कुर्ग तालुके में है। यहाँ के ११ वीं से १४ वीं शताब्दी तक के ८ लेख संग्रहीत हैं जिनसे विदित होता है कि यहाँ शान्तीश्वर बसदि, पार्श्वनाथ बसदि एवं चन्द्रनाथ बसदि नाम के तीन जिनालय थे। ले० नं० १७७, १८८, १६१, २०२, २०६ से विदित होता है कि यह स्थान कोङ्गाल्व नरेशों की श्रद्धा एवं विनय का क्षेत्र था। यहां राजेन्द्र चोल कोंगाल्व के समय में एक प्रसिद्ध आचार्य गुणसेन पण्डित थे, जिनके भक्त, उक्त परिवार के सभी लोग थे। उक्त सभी लेख दान या समाधि के स्मारक हैं। ले० नं० ५६० (सन् १३६१) से सिद्ध होता है कि यहाँ चौदहवीं शताब्दी के अन्तिम दशकों तक कोङ्गाल्व राज्य का अस्तित्व था, और वे लोग जैन धर्म के बराबर भक्त थे। इस लेख में चन्द्रनाथ बसदि की पुनः स्थापना का उल्लेख है।

मुगल्लर (मुगुलि):—हसन तालुके का यह स्थान होय्सल राज्य में एक समय जैन धर्म का केन्द्र था। प्रस्तुत संग्रह में यहां के चार लेख संग्रहीत हैं जिन से ज्ञात होता है कि यहाँ १२ वीं शताब्दी में द्रविड़ संघान्तर्गत नन्दिसंघ अरुङ्ग-लान्वय की गद्दी थी। उस गद्दी के अधिकारी श्रीपाल त्रैविद्य के शिष्य वासुपूज्य देव थे। ले० नं० ३२७ से मालुम होता होता है कि यहाँ होय्सल विष्णुवर्धन के राज्य में एल्कोटि जिनालय नामक एक प्रसिद्ध मन्दिर था। यहीं महाप्रभु पेर्म्मानडि के पुत्र गोविन्द ने बड़ी बसदि बनवायी थी। उस मन्दिर के भट्टारक वासुपूज्य देव को उक्त जिनालय के लिए नारसिंह होय्सल देव ने कुछ भूमि का दान दिया था।

कारकलः—तुलु देश में यह महत्त्वपूर्ण जैन केन्द्र है। इस स्थान का इति-

द्वारा हुम्मच के शान्तर वंश के साथ जुड़ा हुआ है। जिनदत्तराय ने ६ वीं शताब्दी में शान्तर राज्य की नींव हुम्मच की राजधानी बनाकर डाली थी और उसी शताब्दी में वह उसे कलस नामक स्थान में ले गया था। ले० नं० ५२२ से विदित होता है कि सन् १२७७ में उक्त राजाओं की राजधानी कलस ही थी। कुछ लेखों से ज्ञात होता है कि चौदहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में शान्तर नरेश अपनी राजधानी कलस से कारकल ले आये थे। इसी शताब्दी में यहाँ के राजाओं पर लिंगायत मत का प्रभाव भी पड़ने लगा था। परन्तु १५ वीं १६ वीं शताब्दी के लेखों से मालुम होता है कि वे जैन धर्म के भी प्रतिपालक थे। सन् १४३२ के एक लेख (६२४) से मालुम होता है कि शक सं० १३५३ के फाल्गुन शुक्ल १२ बुधवार को भैरवेन्द्र के पुत्र वीर पाण्डेयशी या पाण्ड्यराय ने यहाँ वाहुबल की प्रतिमा बनाकर प्रतिष्ठित करायी थी। यह कार्य उन्होंने देशीगण की पनसोगे शाखा में ललितकीर्ति मुनीन्द्र के उपदेश से किया था। ले० नं० ६२७ में वीर पाण्ड्य की मनो कामना पूर्ण करने के लिए ब्रह्मदेव (जिसकी मूर्ति वहीं थी) से याचना की गई है। ले० नं० ६६४ से मालुम होता है कि सन् १५३० में कारकल की गद्दी पर वीर भैररस वोरेयड थे। उसकी बहिन कालल देवी ने कल्लबस्ति के पार्श्वनाथ के लिए अनेक प्रकार के दान दिये थे। ले० नं० ६८० से ज्ञात होता है कि सन् १५८६ में ललित कीर्ति मुनीन्द्र के उपदेश से भैरव द्वितीय ने चतुर्मुख बसदि बनवायी, जिसके दूसरे नाम त्रिभुवनतिलक जिनालय या सर्वतोभद्र भी थे। इस लेख में भैरव द्वितीय द्वारा अन्य अनेकों मूर्तियों की स्थापना का उल्लेख है।

वेणूर:—कारकल तालुके में इस छोटे से गाँव में गोम्मटस्वामी की एक विशाल मूर्ति मिली है जिसकी स्थापना सन् १६०४ में तिम्मराज ने की थी, जो कि प्रसिद्ध चामुण्डराय के वंशज थे। इस मूर्ति की स्थापना श्रवणवेल्गोल के भट्टारक चारुकीर्ति पण्डितदेव की सलाह से की गई थी (६८६, ६९०)।

गेरसोप्पेः—१५-१६ वीं शताब्दी के जैन केन्द्रों में गेरसोप्पे का नाम प्रमुख था। अब तक यहाँ की स्थिति को प्रकट करने वाले अनेकों लेख प्रकाशित हो चुके हैं। प्रस्तुत संग्रह के कतिपय लेखों से उसकी महत्ता पहचानी जा सकती है। गेरसोप्पे के राजवंश का वैवाहिक सम्बन्ध संगीतपुर और कारकल के राजाओं से था। गेरसोप्पे का नाम बढ़ाने का श्रेय वहाँ के राजाओं और जैन नागरिकों को विशेष था। ले० नं० ६७४ में इस नगर का सुन्दर वर्णन है जिससे मालुम होता है कि यहाँ अनेक भव्य जिनालय थे, योगियों के निवास तथा विद्वानों की मण्डली थी। इस लेख से विदित होता है कि सन् १५६० में यहाँ अनन्तनाथ और नेमीश्वर नामक दो विशाल चैत्यालय थे। उक्त लेख में यहाँ के वणिक् वर्ग के धार्मिक कार्यों का उल्लेख है। यहाँ के उदारचेता कतिपय सेट्टियों के दान कार्य का उल्लेख हमें श्रवणबेल्गोल से प्राप्त कुछ लेखों में भी मिलता है। ले० नं० ६६६[1] से विदित होता है कि सन् १४१२ में गेरसोप्पे के गुम्मटण्ण सेट्टि ने यहाँ आकर पाँच बसदियों का जीर्णोद्धार कराया था। इसी तरह ले० नं० ६७१[2] से ज्ञात होता है कि सन् १४१६ के लगभग गेरसोप्पे की श्रीमती अब्बे और समस्त गोष्ठी ने चार गद्याण का दान दिया था। लै० नं० ६७०[3] (सन् १५३६) में चार बातों का उल्लेख है जिनमें गेरसोप्पे के सेट्टियों से लेन देन सम्बन्धी कुछ आपसी समझौतों के उपलक्ष्य में आहार के लिए दान देने की प्रतिज्ञाएँ करायी गई हैं।

मैसूर राज्य से पन्द्रहवीं शताब्दी के अनेक जैन लेखों से ज्ञात होता है कि यहाँ और भी अनेक जैन केन्द्र थे जैसे सरगूरु (६१८) मोरसुनाड् (६२१), निडगल्लु पर्वत (४७८, ६३७) यिडुवणि (६४६) वोगेयकेरे (६५५) आदि।

---

१. प्रथम भाग, १३१

२. प्रथम भाग, १३५

३. ,, ६६–१०२

कर्नाटक प्रान्त के अन्य कई जैन केन्द्रों का नाम इन शिला लेखों से विदित होता है जैसे नन्दिपर्वत (११४), तडताल (२३२), चामराज नगर (२६४), कैदाल (३३३), एलम्बल्लि (३४६), नित्तूर (४३६–४४१, ४६६), हिरिय-महालिगे (४३८) कुन्तलापुर (४४६), सोरब (४५७), जोगमत्तिगे (५२१), कलस (५२२), होन्नेयनहल्लि (५५१), हरवे (६५२) आदि।

(ई) तामिलदेश के अनेक जैन केन्द्रों में से केवल तीन स्थानों के लेख प्रस्तुत संग्रह में संग्रहीत हो सके हैं।

वल्लीमल्लैः—यह स्थान उत्तरी अर्काट जिले के बन्दिवास तालुका में है। यह ६–१० वीं शताब्दी में जैन धर्म का केन्द्र था। यहां गंगराजा शिवमार के प्रपौत्र, श्रीपुरुष के पौत्र तथा रणविक्रम के पुत्र राचमल्ल सत्यवाक्य ने इस स्थान को अपने अधिकार में करके एक मन्दिर बनवाया था (१३३)। यहां किसी बाणवंशी राजा के गुरु देवसेन की प्रतिमा स्थापित की गई थी। ये देवसेन भट्टारक भवणन्दि के शिष्य थे (१३६)। इस प्रतिमा की स्थापना एक जैन मुनि श्री अज्जनन्दि भट्टार ने की थी (१३५)। यहां से प्राप्त एक दूसरी प्रतिमा के लेख से मालुम होता है कि ये अज्जनन्दि भट्टारक बालचन्द्र के शिष्य थे और इन्होंने गोवर्धन भट्टारक की प्रतिमा की स्थापना की थी (१३४)।

पञ्चपाण्डवमलैः—इस स्थान से प्राप्त दो लेखों में से एक (११५) से ज्ञात होता है कि पल्लव राज नन्दि पोत्तरसर (नन्दि) के ५० वें राज्य संवत्सर में पोन्नियक्कियार नामक यक्षी और नागनन्दि गुरु की एक पाषाण पर मूर्ति खुदवायी गई थी। ले० नं० १६७ से विदित होता है कि अपनी रानी की प्रार्थना पर वीर चोल ने तिरुप्पानमलै देवता के लिए एक गांव की आमदनी बाँध दी पर लेख पलिच्चन्दम् शब्द से मालुम होता है कि यहाँ एक प्रसिद्ध जैन बसदि थी। ये दोनों लेख ६ वीं, १० वीं शताब्दी के हैं।

तिरुमलै—उत्तरी अर्काट जिले में यह स्थान ११ वीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही जैन केन्द्र रहा है। इस नाम का अर्थ पवित्र पर्वत होता है। यहाँ सन्

१००५ ई० में चोलराजा राज प्रथम के २१ वें वर्ष में एक जैन मुनि गुणवीर ने अपने काव्यादि कला में विशारद गुरु गणिशेखर के नाम पर एक नहर या मोरी बनवायी थी (१७१)। दूसरे लेख नं० १७४ से ज्ञात होता है कि राजेन्द्र चोल प्रथम के १२ वें राज संवत्सर में मल्लियूर के एक व्यापारी की पत्नी ने तिरुमलै में एक जैन मन्दिर की पूजा और दीपक के लिए दान दिया था इस मन्दिर को राजराज चोल की पुत्री कुन्दवै ने बनवाया था इसलिए इसका नाम कुन्दवै जिनालय था। ले० नं० ४३४ से विदित होता है कि इस पर्वत को अर्हसुगिरि (अर्हत् का पर्वत) कहते थे जिसका तामिल नाम एणगुणविरै तिरुमलै (अर्हत् का पवित्र पर्वत) कहा गया है। यहाँ चेर वंशके राजा अतिगैमान् ने केरल नरेश द्वारा संस्थापित यक्ष यक्षिणी की प्रतिमाओं का जीर्णोद्धार कराकर प्रतिष्ठापित किया था और एक घण्टा दान में दे यहाँ मोरी बनवायी थी। ले० नं० ५५७ में उल्लेख है कि राजनारायण शम्बुवराज के १२ वें वर्ष में पोन्नूर निवासी मण्डै पौन्नाण्डे की पुत्री नल्लाताल ने एक जैन प्रतिमा की प्रतिष्ठापना की थी। इसी तरह ८३१ वें लेख में उल्लेख है कि परवादिमल्ल के शिष्य अरिष्टनेमि आचार्य ने एक यक्षी की प्रतिमा बनवाकर स्थापित की थी।

(उ) आन्ध्र देश में जैन धर्म का आगमन संभवतः कलिंग देश से हुआ था वह भी ईशा की दो शताब्दी पूर्व जैन सम्राट् खारवेल के समय में। पर शिलालेखों से जैनधर्म के केन्द्रों के प्रमाण ७ वीं शताब्दी से ही मिलते हैं। इस शताब्दी में यहां जैन धर्म को प्रश्रय कतिपय पूर्वी चौलुक्य नरेशों ने दिया था। प्रस्तुत संग्रह में केवल दो केन्द्रों के लेख ही आ सके हैं।

ले० नं० १४३ से ज्ञात होता है कि नेल्लोर जिले के ओंगले तालुका में मल्लिय पूण्डि ग्राम में कटकाभरण नाम का एक प्रसिद्ध जैन मन्दिर था इसे कृष्णराज के पोत्र दुर्गराज ने बनवाया था। यह स्थान यापनीय संघ नन्दि गच्छ

१. संभव है वह राजा राज राज चोल तृतीय का समकालीन था।

का प्रमुख केन्द्र था मन्दिर के अधिष्ठाता धीरदेव मुनि थे जो कि जिननन्दि के शिष्य थे। उक्त जिनालय के लिए मल्लियपूण्डि ग्राम दान में दिया गया।

इसी तरह अत्तिलिनाड् में कलुचुम्बरु नामक स्थान में एक सर्वलोकाश्रय जिनालय था। ले० नं० १४४ से ज्ञात होता है कि सन् ६४५ से ६७० के लगभग पूर्वी चालुक्य अम्म द्वितीय (विजयादित्य षष्ठ) ने उक्त जैन मन्दिर की भोजन शाला की मरम्मत के लिए दान दिया था। यह दान पट्टवर्धिक वंश की श्राविका चामेकाम्बा की ओर से उसके गुरु अर्हनन्दि को दिलाया गया था। थे मुनि बलिहारिगण अड्डकलि गच्छ के थे।

गुलाबचन्द्र चौधरी

सहायक ग्रन्थ निर्देश

१.	पं० नाथू राम प्रेमी,	जैन साहित्य और इतिहास, प्रथम, द्वितीय संस्करण, बम्बई.
२.	डा० हीरालाल जैन,	जैन शिलालेख संग्रह, प्रथम भाग, बम्बई १६२८
३.	डा० अनन्त सदाशिव अल्तेकर,	राष्ट्रकूटाज् एण्ड देयर टाइम, पूना, १६३४.
४.	डा० भास्कर आनन्द सालेतोरे,	मेडीवल जैनिज्म, बम्बई, १६३४.
५.	डा० दिनेशचन्द्र सरकार,	सक्सेसर आफ सातवाहनाज्, कलकत्ता, १६३६.
६.	डा० बे० मा० बरुआ,	ओल्ड ब्राह्मी इन्स्क्रिप्सन्स्, कलकत्ता, १६२६.
७.	डा० मजूमदार और पुसलकर,	एज आफ इम्पीरियल यूनिटी, बम्बई १६५१.
८.	,, ,,	क्लासिकल एज, बम्बई, १६५४
६.	डा० गुलाबचन्द्र चौधरी,	पोलिटिकल हिस्ट्री आफ् नार्दर्न इण्डिया फ्राम जैन सोर्सेज (७–१२ वीं शताब्दी), बनारस (अप्रकाशित)
१०.	रावर्ट सेवेल और कृष्णस्वामी आयंगर,	हिस्टोरिकल इन्स्क्रिप्सन्स आफ सदर्न इण्डिया मद्रास, १६३२.
११.	एम० आर० शर्मा,	जैनिज्म एण्ड कर्नाटक कल्चर, धारवाड, १०४०
१२.	प्रो० नीलकण्ठ शास्त्री,	हिस्ट्री आफ साउथ इण्डिया, आक्सफोर्ड १६५४
१३.	विलियम कोल्हो,	होय्सल वंश, बम्बई, १६५०
१४.	दिनकर देसाई,	मण्डलेश्वराज़ अण्डर दि चालुक्याज़ आफ कल्याणी, बम्बई, १६५१
१५.	वेंकट रमनय्य,	ईस्टर्न चालुक्याज आफ वेंगी,
१६.	मुनि दर्शन विजय जी,	पट्टावली समुच्चय, प्रथम भाग, वीरमगाम, १६३३
१७.	त्रिपुटी महाराज,	जैन परम्परानो इतिहास, अहमदाबाद, १६५२
१८.		प्रेमी अभिनन्दन ग्रन्थ, टीकमगढ़ १६४६
१६.		जैन सिद्धान्त भास्कर, आरा, भाग १—२१
२०.		अनेकान्त, देहली, १—१०
२१.		इण्डियन एण्टीक्वेरी

सन्दरवरिं बलिक तदीय-श्रीमद्-द्रमिल-संघाग्रेसररप्प **पात्रकेसरि-स्वामि**गलिं **वक्र-ग्रीवाचा**......रिन्दनन्तरम् ।

यस्य दि............न् कीर्त्तिस्त्रैलोक्यमप्यगात् ।
येव स भात्येको **वज्रनन्दी गणाग्रणी** ॥

अवरिं बलिक **सुमति-भट्टारक**रवरिं बलिक...**समय-दीपक**............रं उन्मीलित-दोष-क.........रजनीचर-बलमुन्दोधित-भव्य कमलमाटतूर्ज्जित**मकलङ्क** प्रमाण-तपन स्फु......॥ अवरिं बलिक **चक्रवर्त्ति-भट्टारकरवरिं** बलिक **कर्म्म-प्रकृति**.........वरिं बलिक पल्लवन गुरुगलु **विमलचन्द्राचार्य्य**रवरिं बलिक **परिवादिमल्ल**-देवरवरिं बलि **कनकसेन** श्री-**वादिराज-देव**रवरिं अलिक गंग कुल-कमल-मार्त्तण्डनप्प **बूतुग-पेर्म्मांडिय** गुरुगलु श्री-**विजय-भट्टारक**रवरिं बलिक चक्रवर्त्ति-**अयसिंह**-देवन गुरुगलागि ।

गत-सर्व्वज्ञाभिमानं सुगतनपगतात-प्र...दं **कणादं** ।
कृत-नीति-भ्रान्ति-नश्यन्-निज-नय-नयनालोकनं सन्द **लोका-**
यत निन्नी-मर्य्य-मात्रंग न नुदिगलोलवेंम्बिनं मारि लोकोन्-
नतमाप्तर्हन्मताम्भोर्निधि...विभवं **वादिराजेन्द्र**-भावं ॥

अवरिं बलिक यादवान्वय-चूडामणियप्पेरेयङ्ग-देवङ्गे गुरुगलु जगद्गुरुगलु-मेनिसि ।

चरणानुस्मरणा......य-निकरक्लिष्टार्त्थ-संसिद्धियं ।
तर् वाचं ग्रहणं **कुमार्ग**-युत-वादि-व्रातमं तूले दुर्-।
द्धर-चारित्रद दुर्जयोर्जित-वन्त-श्रीयोलपु तम्मोल् मनो-
हरमागल् तलदर्स्समन्त**जितसेन स्वामिगल्** कीर्त्तियं ॥ अवर सधर्म्मरु ।

कन्तुवनान्तु मेय् देगेयदोडिसि दुर्म्मद-कर्म्म-वैरि-वि-।
क्रान्तमनेय्दे भाञ्जसि लसत्परमागम-विस्त्वादन्दिदा- ।
नीन्तन-**तीर्त्थ-नाथ**रेने रूढियनान्त **कुमारसेन-सै-**
द्धान्तिक रादमुज्जल...जिन-धर्म्म-यशो-विलासमम् ॥

अवरिं बलिक **श्रीमदजितसेन-स्वामि**गलग्र-पुत्ररुं कात्पवित्ररुमागि ।

सले सन्द योग्यतेयनग्गलिसिद दुर्द्धर-तपो-विभूतिय पेम्पिम् ।
कलियुग-गणधररेम्बुदु नेलनेल्लं **मल्लिषेण-मलधारिगलं** ॥

अवरिं बलिक **अकलंक**-सिंहासनमनलंकरिसि तार्किकचक्रवर्त्तिगलु **वादीभ-सिंह** रुमेम्ब पेसरेसेये ।

अवसर्पिण्यर्द्धदिन् [दि] तुलुगडे जिन-जीमूत-संघात-मी भू-
भुवनन् तेङ्कादुवन्नं सुरिद सकल-विद्या-नादि-पूरदिन्ती ।
वि विपश्चित्पापसन्तापमनुडुगिसुतिर्द्दप्युदादं मुनीन्द्र- ।
प्रवर-**श्रीपालयोगीश्वर** नेनिय जगत्-सार्थकृत्-पुण्य-तीर्थं ॥
आवन विषयमो षट्-तर्कविल-बहु-भंगि-संगतं **श्रीपाल**- ।
त्रैविद्य-गद्य-पद्य-वाचो-विन्यासं निसर्ग्ग-विजय-विलासम् ॥

अन्तु जगद्गुरुगलेनिसिद **श्रीपाल-त्रैविद्य-देवर** कालं कर्च्चि **श्रीमदि-म्मडि-दण्डनायक बिट्टियण्णनो**-समदिय खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारक्कं देवता-पूजेगमिल्लिर्प्प रि(ऋ)षिसमुदायदाहारदानक्कं **शक-वर्ष १०५६** नेय**नल-संवत्सरदुत्तरायण-संक्रान्ति** यन्दु **श्रीविष्णुवर्द्धन-पोय्सल देवर** श्री हस्तदिं धारेयेरेपिसि परमेश्वरदत्ति माडि बिडिसिद ग्राम **मय्से-नाड बीजे-बोललदर** सामान्तर (आगेकी ६ पंक्तियोंमें सीमाओंका वर्णन है) **दोरसमुद्रद** पट्टण-स्वामि वोण्डादि-सेट्टिय मग **नाडवलसेट्टिय** कय्यलु हिरि-यकेरेयोलगण तावरेयकेरेयोलगाद नेलनं मारुगोण्डी-बसदिगे कोट्ट श्री हिरियकेरेय केलगण तावरेयकेरेय वडगण-कोडिय विष्णुभट्टन तोट...सण गलेय...लु चतुरस्न १५ गलेय भूमियं मारुगोण्डी-बसदिगेबिट्ट ॥ **द्वादशसोमपुरवाद होलेयकेरे-रेय** हन्नेरडुवृत्तियोलगोण्डु वृत्तियं **गोग्गण-पण्डितर** म...से **गुलियण्णन** कय्यलु मारुगोण्डी-बसदिगे बिट्ट ॥ (वे ही परिचित श्लोक)

(प्रथम भाग नष्ट हो गया है)

[राजा एरेगंगके पुत्रने अपनी रानियोंका परित्याग करके, राज्य छोड़कर, और चेङ्गिरिके निकटके देशमें मरते वक्त देह त्याग करते हुए नरसिंहकी पत्नियोंके ऊपर अधिकार जमा लिया था, अङ्करको नष्ट कर दिया था

और गंगाकी ओर मुड़कर उत्तरदेशके राजाओंका सत्यानाश किया। उत्तर के आक्रमणमें सफलता प्राप्त कर उसके हाथीने पाण्ड्य राजाकी सेनाको कुचल दिया था, भयङ्कर महान् युद्धोंमें चोल और गौलोंको हराया। कञ्ची-गौण्ड-विक्रम-गंगने पाण्डयका पीछा करके नोलम्बवाडिको अधिकृत करके उच्चंगिपर दखल कर लिया। इसके बाद तेलुङ्ग (तैलंग) देशकी तरफ़ बढ़ा, और इन्द्र...को सारी सम्पत्ति सहित कैद कर लिया। इसके बाद भसणको, जो सारे राष्ट्रका कण्टक था, समूल नष्ट किया और बनवसे बारह हज़ारको अपने कडित (हिसाबकी किताब) में लिख लिया। क्षणार्धमें राजाविष्णुने (एरे-गंगके पुत्रने) प्रसिद्ध पानुङ्गल् ले लिया, किसुकलपर राज्य करने वाले...... नाथको अपनी नजरसे ही मार डाला। जयकेसीका पीछा करके पलसिगे १२००० का तथा......५०० पर अधिकार जमा लिया।

इस महाक्षत्रिय विष्णुवर्द्धन देवके अनेक पद और उपाधियोंमें से कुछेक ये हैं:—चोलकुलप्रलय-भैरव, चेरस्तम्बेरमराजकण्ठीरव, पाण्डय कुलपयोधिबडवा-नल, पल्लवयशोवल्लीपल्लवदावानल, नरसिंहवर्म्म-सिंह-सरभ, निश्चलप्रतापद्वीप-पतित-कलपालादि-नृपाल-शलभ। कञ्चीपर अधिकार करनेवाला (कञ्चि-गोण्ड), विक्रम-गंग वीर-विष्णुवर्द्धनदेव जिस समय इस तरह गंगवाडि ९६०००, नोणम्ब-वाडि ३२००० तथा बनवसे १२००० पर सुख व शान्तिसे राज्य कर रहा था :—

उसके पादमूलसे प्रभूत (उत्पन्न) तथा उसके कारुण्यरूपी अमृतप्रवाहसे परिवर्द्धित **विष्णु-दण्डाधिप** था। (उसकी प्रशंसा) विष्णु-दण्डाधिपका नाम **इम्मडि-दण्डनायक बिट्टियण्ण** था। इस दण्डनायकने आधे महीने (१५ दिन) में ही दक्षिण विजय कर ली थी। विष्णुवर्द्धन-देवका यह दाहिना हाथ था। बहुत-सी उपाधियों और पदोंसे युक्त यह महाप्रधान, इम्मडि-दण्डनायक बिट्टियण 'सर्व्वाधिकारी' और सर्वजनोपकारी होता हुआ शान्तिसे समय व्यतीत कर रहा था:—

इसके बाद पद्यमें विष्णु-दण्डाधिनाथके उन्हीं पराक्रमोंका वर्णन आता है जिनका वर्णन पहिले गद्यमें हो चुका है।

विष्णु-दण्डाधिपकी भूत-कुल-परम्परा इस प्रकार थीः—सबसे पूर्वमें (आदि ब्रह्माके युगमें) काश्यप प्रजापति थे, जिनसे बहुत-से महान् पुरुष उत्पन्न हुए; उनके बाद एक **उदयादित्य** हुए, जिनकी पत्नीका नाम शान्तियक्के था। उनका पुत्र **विष्णु-राज-दण्डाधीश** था। उसकी पत्नी चन्दले थी, उनका पुत्र **उदयण** था। उदयणका छोटा भाई **विष्णु** हुआ, जो नये चन्द्रमाकी तरह आकार और यशमें बढ़ता ही गया।

इसके किशोरावस्था प्राप्त होने पर स्वयं काञ्चिगोण्ड विक्रमगंग विष्णुवर्द्धन देवने, उसको अपने पुत्रके समान मानकर, बड़े उत्सवसे स्वयं ही उसका उपनयन संस्कार किया। सात या आठ वर्षकी उमरके बाद जब वह समस्त शास्त्र-विज्ञानमें पारंगत हो गया तब उसको अपने प्रधान मन्त्रीकी पुत्री ब्याह दी। और १० या ११ वर्षकी उम्रमें बुद्धिमें कुशाग्रकी तरह तीक्ष्ण होने और चार उपाधियों (राजभक्ति, निस्पृहता, संयम और धैर्य) में पूर्ण होने पर विष्णु-वर्द्धनदेवने दुगुने विश्वासके साथ उसे 'महा-प्रचण्ड-दण्डनाथ' का पद दिया। और उसे सर्वाधिकार दे देनेसे वह सर्वाधिकारी तथा समस्त जनोंका उपकार करने की सामर्थ्य वाला हो गया।

पूर्ण यौवन प्राप्त होने पर समस्त सार्वजनिक कामोंके करनेसे अनुभवकी वृद्धि होनेपर महापवित्र स्थानोंमें दान देनेके बाद, उसने यादव राज्यकी राजधानी दोरसमुद्रमें यह विष्णुवर्द्धन जिनालय बनवाया।

इस महापुरुषके गुरुकी गुरु-परम्परा इस प्रकार थीः—वर्द्धमान स्वामीके बाद केवली और श्रुतिकेवलियोंके हो जानेके बाद, जिन शासनके प्रभावको सहस्र-गुणा बढ़ानेवाले समन्त भद्र स्वामी हुए। उनके बाद, उसी द्रमिल-संघके अग्रणी पात्रकेसरी-स्वामी हुए। तत्पश्चात् क्रमसे वक्रग्रीव-वज्रनन्दी गणाग्रणी, सुमतिभट्टारक, जिनसमयदीपक अकलङ्क-चन्द्रकीर्त्ति-भट्टारक-कर्मप्रकृति-पल्लवाधिपगुरु विमलचन्द्राचार्य-परिवादिमल्लदेव, कनकसेन-वादिराजदेव—श्रीविजयभट्टारक (बूतुग-पेर्म्माडिके गुरु-जयसिंहदेवके गुरु वादिराजेन्द्र—जो दर्शन शास्त्रके प्रकाण्ड विद्वान् थे)—यादवान्वय-चूड़ामणि एरेयङ्ग-देवके गुरु अजितसेन-स्वामी (उनकी

प्रशंसा है, इनके एक सतीर्थ्य कुमारसेन-सैद्धान्तिक हुए, जो अपने समयके तीर्थनाथ कहे जाते थे—उनके बाद अजितसेन स्वामीके ज्येष्ठ पुत्र मल्लिषेण-मलधारि हुए, जो कलियुगके गणधर माने जाते थे। तत्पश्चात् वादीभसिंह अकलङ्कको गद्दी सँभालने वाले मुनीन्द्रप्रवर श्रीपाल-योगीश्वर हुए, जिन्होंने सम्यग् ज्ञानका प्रचार कर अज्ञानके हटानेमें बड़ा काम किया। उन्होंने अनेक तर्कशास्त्रके ग्रन्थ बनाये थे।

इन जगद्गुरु श्रीपाल-त्रैविद्य-देवके पैरोंका प्रक्षालन करके,—इम्मडि-दण्ड-नायक विहियण्णने 'बसदि' की मरम्मत, भगवानकी पूजाके प्रबन्ध, तथा ऋषियोंके आहारदानके लिये, (उक्त मितिको) विष्णुवर्द्धन-पोय्सलदेवके हाथोंसे मरसे-नाड्में बीजवोलल्का गाँव प्राप्त किया और उसे परमेश्वरको दानमें दे दिया। इसी तरह दोरसमुद्र-पट्टण-स्वामी (नगरसेठ) बाण्डाडि-सेट्टि के पुत्र नाडवल-सेट्टिसे खरीदी गयी (उक्त) दूसरी भूमि भी उक्त मंदिरको दानमें दे डाली। द्वादश सोमपुरके १२ हिस्सोंमेंसे एक जो होलेयब्बेगर था—वह भी दानमें दे दिया। (वे ही अन्तिम श्लोक)।]

[EC,V,Bbur tl., No. 17]

३०५ क

अर्थूणाका शिलालेख

अर्थूणा (उच्छूणक)-संस्कृत।

[विक्रम सं० ११६६, वैशाख सुदि ३]

१—२० ॥ ॐ नमो वीतरागाय।

स जयतु जिनभानुर्भव्यराजीवराजी-
जनितवरविकाशो दत्तलोकप्रकाश.।
परसमयतमोभिर्न स्थितं यत्पुरस्तात्
क्षणमपि चपलासद्दादिखद्योतकैश्च ॥ ॥ छ ॥

२—आसीच्छ्रीपरमारवंशजनितः श्रीमण्डलीकाभिधः

कन्हस्य ध्वजिनीपतेर्निधनकृच्छ्रीसिंधराजस्य च ।

जज्ञे कीर्तिलतालवालक इतश्चामुंडराजो नृपो

योऽवंतिप्रभुसाधनानि बहुशो हंति स्म

३—देशे स्थलौ ॥ २ ॥ श्रीविजयराजनामा तस्य सुतो जयति मंति (जगति) विततयशाः । सुभगो जितारिवर्गो गुणरत्नपयोनिधिः शूरः ॥ ३ ॥ देशेऽस्य पत्तनवरं तलपाटकाख्यं पण्याङ्गनाजनजिता—

४—मरसुंदरीकम् । अस्ति प्रशस्तसुरमन्दिरवैजयन्तीविस्ताररुद्धदिननाथकर-प्रचारं ॥ ४ ॥

तस्मिन्नागरवंशशेखरमणिर्निःशेषशास्त्राम्बुधि-

जैनेन्द्रागमवासनारससुधाविद्धास्थिमज्जाभवत् ।

५— श्रीमानंबरसंज्ञकः कलिबहिर्भूतो भिषग्रा (ग्र्या) मणी-

र्गार्हस्थे (स्थ्ये)पि निकुंचिताद्यप्रसरो देशव्रतालंकृतः ॥ ५ ॥ यस्याव [श्य] क [क] र्मनिष्ठितमतेः श्रेष्ठा वनांते भवन्नंतेवासिवदाहितांज-लिपुटा ।

६—श्रोसः (प·) कृतोपासनाः । यस्यानन्यसमानदर्शनगुणैरन्तश्चमत्कारिता शुश्रूषां विदधे रुतेव सततं देवी च **चक्रेश्वरी** ॥ ६ ॥ **पापाक**स्तस्य सूनुः समजनि जनितानेकभव्यप्रमोदः प्रादुर्भू—

७—तप्रभूतप्रविमलधिषणः पारदृश्वा श्रुतानां [।] सर्वायुर्वेदवेदी विदितसकल-रुक्क्रान्तलोकानुकम्पो निर्नीताशेषदोषप्रकृतिरपगदस्तत्प्रतीकारसारः ॥ ७ ॥ तस्य पुत्रास्त्रयोऽभूवन्भूरिशा-

८—स्त्रविशारदाः । **आलोकः साहसा**ख्यश्च **लल्लुका**ख्यः परोनुजः ॥८॥ यस्त-त्राद्यः सहजविशदप्रज्ञया भासमानः स्वांतादर्शस्फुरितसकलैतिह्यतत्त्वार्थसारः । संवेगादिस्फुटतरगुणव्य-

९—कसम्यक्प्रभावः तैस्तैर्दानप्रभृतिभिरपि स्वोपयोगी कृतश्रीः ॥ ९ ॥ आधा
[रो] यः स्वकुलसमितेः साधुवर्गस्य चाभूद्भ्रे शीलं सकलजनताह्लादिरूपं
च काये। पात्रीभूतः कृतियतिधृतीनां

१०—श्रुतानां श्रियां च सानन्दानां धुरमुदवहद्द्योगिनां योगिनां च ॥ १० ॥ यो
माथुरान्वय नभस्तलतिग्मभानोर्व्याख्यानरंजितसमस्तसभाजनस्य । श्री-
छत्रसेनसुगुरोश्चरणारविंदसे—

११—वापरो भवदनन्यमनाः सदैव ॥ ११॥
तस्य प्रशस्तामलशीलवत्यां हेलाभिधायां वरधर्मपत्न्यां। त्रयो बभूवुस्तनया
नयाढ्या विवेकवंतो भुवि रत्नभूताः ॥ १२ ॥ अभवदमल—

१२—बोधः पाहुकस्तत्र पूर्वः कृतगुरुजनभक्तिः सत्कुशाग्रीयबुद्धिः। जिनवचसि
यदीयप्रश्नजाले विशाले गणभृदपि विमुह्येत् कैव वार्ता परस्य ॥ १३ ॥
करणचरणरूपानेक—

१३—शास्त्रप्रवीणः परिहृतविषयार्थो दानतीर्थप्र [वृत्तः]। ग (श) मनियमित-
चित्तो जातवैराग्यभावः कलिकलिलविमुक्तोपासकीयप्र (व्र) ताढ्यः ॥ १४ ॥
कनिष्ठस्तस्याभूद्भुवनविदितो भूषण इति श्रियः पात्रं—

१४—कांतेः कुलगृहमुमायाश्च वसतिः। सरस्वत्याः क्रीडागिरिरमलबुद्धेरतिवनं क्षमा-
वल्याः कंदः प्रविततकृपायाश्च निलयः ॥ १५ ॥ स्मरः (रो) सौ रूपेण प्रबलसु
[भ] गत्वेन गणभृत् कुबेरः संप-(॥)

१५—त्या समधिकविवेकेन धिषणः। महोन्नत्या मेरुर्जलनिधिरगाधेन मनसा विद-
ग्धत्वेनोच्चैर्य इह वरविद्याधर इव ॥१६॥ जैनेन्द्रशासनसरोवरराजहंसो मौनी-
न्द्रपादकमलद्वय—

१६—चंचरीकः। निःशेषशास्त्रनिवहोदक नाथनक्रः। सीमंतिनीनयनकैरवचारु-
चन्द्रः ॥१७॥ विदग्धजनवल्लभः सरससारशृंगारवानुदारचरितश्च यः सुभग-
सौम्यमूर्तिः सुधीः। प्रसाद—

१७—नपरा नमद्वरविलासिनीकुन्तलन्यस्तपदपंकजद्वितयरेणुरत्युन्नतः ॥ १८ ॥ प्रथमधवलप्राये मेघे गतेपि दिवं पुनः । कुलरथमरो येनैकेनाप्यसंभ्रममुद्धृतः । गुरुतरविप-

१८—द्गर्त्तग्रावग्रहाद्दुदनादिव (तारि त्र) स्थिरमतिमहास्थाम्ना नीतो विभूतिगिरेः शिरः ॥१८॥ द्वे भार्ये **भूषणस्य** स्तः **लक्ष्मी सीलीरी** विश्रुते । पतिव्रतत्वसंयुक्ते चारित्रगुणभूषिते ॥२०॥ स सी-

१६—लिकायामुदपादि पुत्रान् सन्तानयोग्यान् गुरुदेवभक्तः । आलोकसाधारणशांतिमुख्यान् स्वबन्धुचित्ताब्जविकाशभानून् ॥२१॥ आयुस्ततमर्हीद्रसारनिहितस्तोकाम्बुवन्नश्वरं

२०—संचिंत्य द्विपकर्णचंचलतरां लक्ष्म्याश्च दृष्ट्वा स्थितिं । ज्ञात्वा शास्त्रसुनिश्चयात् स्थिरतरे नूनं यशः श्रेयसी तेनाकारि जिनगृहं...भूमेरिदं भूषणम् ॥ २२ ॥ भूषणस्य क-

२१—निष्ठो यो **लल्लाक** इति विश्रुतः । देवपूजापरो नित्यं भ्रातुरादेशकृत् सदा ॥ २३ ॥

ज्येष्ठो **बाहुक**नामा यः सीडकायामजीजनत्
शुभलक्षणसंयुक्तं पुत्र**मम्बट**संज्ञकम् ॥ २४ ॥

२२—**वर्षसहस्रे याते षट्षष्ठ्युत्तरशतेन संयुक्ते** विक्रमभानोः काले स्थलीविषयमवति सति विजयराजे ॥ २५ ॥ **विक्रम संवत् ११६६ वैशाख सुदि ३ सोमे** वृषभनाथस्य प्रतिष्ठा ॥

२३—श्री वृषभनाथधाम्नः प्रतिष्ठितं **भूषणेन** बिम्बमिदं । **उच्छूणकनगरे**स्मिन्निह जगतौ वृषभनाथस्य ॥ २६ ॥ युगलं ॥०॥ तुर्यवृत्तात्समारभ्य वृत्तान्येतानि

२४—षोडश । आद्यवृत्तेन युक्तानि कृतवान् **कटुको** बुधः ॥ २५ ॥ भाइल्लोवंशेऽभूत्तजः श्रीसावडो द्विजः । तत्सूनोर्भादुकस्येयं निःशेषाथ पद्मा कृति ॥ २५ ॥ वालभान्वयकायस्थराजपालस्य

२५—सूनुना । संधिविग्रहसंस्थेन लिखिता वासवेन वै ॥ २९ ॥ यावद्रावण-
रामयोः सुचरितं भूमौ जनैर्गीयते [।] यावद्विष्णुपदीजलं प्रवहति व्योम्न्य-
स्ति यावच्छशी । अर्ह-

२६—द्वक्त्रविनिर्गतं श्रवणकैः याव [च्छ्रु]तं श्रूयते तावत्कीर्तिरियं चिराय जयता-
त्संस्तूयमाना जनैः ॥ ३० ॥ उत्कीर्णा विज्ञानिकसूमाकेन ॥ ० ॥ मंगलं
महाश्रीः ॥ ० ॥

शिलालेखका परिचय[1]

[डूंगरपुरके अन्तर्गत अर्थूणा (उच्छूणक) नामका एक स्थान है, जो एक समय विशाल नगर था; और परमारवंशी राजाओंकी राजधानी रह चुका है। एक समय यह स्थान एक छोटे-से गाँवके रूपमें आबाद है और इसके पास ही सैकड़ों मन्दिरों तथा मकानो आदिके खण्डहर भग्नावशेषके रूपमें पाये जाते हैं। यह शिलालेख यहींसे मिला है जो आजकल अजमेरके म्यूजि-यममें मौजूद है।

उक्त शिलालेख वैशाख सुदि ३ विक्रम सं० ११६६ का लिखा हुआ है और उस वक्त लिखा गया है जबकि परमारवंशी मंडलीक (मदनदेव) नामके राजाका पौत्र और चामुण्डराजका पुत्र 'विजयराज' स्थलि देशमें राज्य करता था। उच्छूणक नगर में, उस समय 'भूषण' नामके एक नागरवंशी जैनने श्री वृषभदेवका मनोहर जिनभवन बनवाकर उसमें वृषभनाथ भगवान्की प्रतिमाको स्थापित किया था, उसीके सम्बन्धका यह शिलालेख है। इसमें भूषणके कुटुम्बका परिचय देनेके सिवाय, माथुरान्वयी श्री छत्रसेन नामके एक आचार्य

---

१. पं० जुगल किशोर मुख्तार ; अर्थूणाका शिलालेख, जैनहितैषी, भाग १३, अंक ८, पृ० ३३२ से उद्धृत।

का भी उल्लेख किया है, जो अपने व्याख्यानोंद्वारा समस्त सभाजनोंको सन्तुष्ट किया करते थे और भूषणका पिता 'आलोक' जिनका परमभक्त था। माथुरसंघी इन आचार्यका, अभी तक, कोई पता नहीं था। माथुरान्वयसे सम्बन्ध रखने वाली काष्ठासंघकी उपलब्ध गुर्वावलीमें भी छत्रसेन गुरुका कोई उल्लेख नहीं है[1]। इस शिलालेखसे माथुरसंघके एक आचार्यका नया नाम मालूम हुआ है।

३०६

अजमेर-प्राकृत

[सं० ११९५ = ११३८ ई०]

संवत् ११९५ आगणसुदि ३ आचार्य **गदानन्दी**कृते पण्डित**गुणचन्द्रेण** शान्तिनाम प्रतिमा कारिता।

अर्थ स्पष्ट है।

[J. A.S.B., VII, p. 52, no. 6]

३०७

सिन्दिगेरे;-संस्कृत तथा कन्नड

[शक १०६० = ११३८ ई०]

[सिन्दिगेरे में, ब्रह्मेश्वर बसदिके दालानके स्तम्भ पर]

(पूर्वमुख)

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रयं श्री-पृथ्वी-वल्लभं महाराजाधिराजं परमेश्वरं परम-भट्टारकं सत्याश्रयकुलतिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत्-**त्रिभुवनमल्ल-देवर** विजय-

---

१. देखो जैनसिद्धान्त भास्कर, किरण ४, पृ० १०३

राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्क-तारं सलुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि सम-धिगत-पञ्च-महाशब्द महा-मण्डलेश्वरं द्वारावतीपुरवराधीश्वरं यादवकुला-म्बरद्युमणि सम्यक्त्व-चूड़ामणि मलेपरोळ् गण्डाद्यनेक-नामावली-समलंकृतरप्प श्रीमत् त्रिभुवनमल्ल तळकाडु-कोङ्गु-नङ्गलि-गङ्गवाडि-नोळम्बवाडि-बनवसेहानु-ङ्गलु-हलसिगे-गोण्ड भुजबल वीरगङ्ग होय्सळ देवरु श्रीमद्-राजधानि-दोर-समुद्रद वीडिनलु सुख-संकथा-विनोददिं पृथ्वी-राज्यं गेय्युत्तमिरे तत्पादपद्मोपजी-विगळु श्रीमन्महाप्रधानं हिरिय-मरियाने-दण्डनायकर मगं दाकरस-दण्ड-नायकर पुत्ररु द्रोह-घरट्ट-गङ्गपटय-दण्डनायकर बाचरस-दण्डनायकर सोवरस-दण्डनायकरळियन्दिरुमप्प श्रीमन्महा-प्रधानं हिरिय-भण्डारि-मरि-याने-दण्डनायकरुं श्रीमन्महाप्रधानं दण्डनायकं भरतरुमप्पगलु शक वर्ष १०६० नेय पिङ्गळ-संवत्सरद पुष्य-सु १० आदिवारदुत्तरायण संक्रा-न्तियलु तुलापुरुष महादानदलु तम्म नेलेपूरु सिन्दङ्गेरेय बसदिगे श्री-विष्णुवर्द्धन होय्सल-देवर कय्यलु धारा-पूर्व्वकं हडेदु बिट्ट सवगोन-हळ्ळिय सीमा-सम्बन्धमेन्तेन्दडे (आगेकी २० पंक्तियोंमें सीमाओंकी चर्चा है तथा हमेशा का अन्तिम श्लोक)

(दक्षिण मुख)

जय-जया-शरणं रण-क्षिति-हत-क्षत्रं हत-क्षत्र- निर् ।
द्दय-निर्द्दारित-देह-लोहित-पयश्-शातासि शातासि-दुर् ।
जय-धारा-चकितारि-रक्षण-भुजा-दण्डं भुजा-दण्ड-को- ।
टि-युवद्-वीर-वधू-प्रमोदि भरत-श्रीमच्चमूवल्लभं ॥
नय-युक्त-क्रम-विक्रमं क्रम-नमद्-भू-मण्डलं मण्डल- ।
प्रिय-वृत्तं प्रिय-वृत्त-संगत-गुण-ग्रामं गुण-ग्रामणी- ।
नयनानन्दकरं करार्प्पित-धनु-र्ज्या-राव-दूरीकृता- ।
रि-यशो-राशि जितोद्धताजि भरत-श्रीमच्चमूवल्लभम् ॥
अवनी-नूत-यशं यशो-धवलिताशा-मण्डलं मण्डला- ।
ग्र-विलूनारि-बलं बल-प्रभु-नमच्चञ्चच्छिखा-शेखरी- ।

भवदात्माङ्घ्रि-नरवोत्करं कर-गतारि-श्री-विलासं विला- ।
सवती-मानित-मीनकेतु **भरत**-श्रीमच्चमू-वल्लभम् ॥
स्मर-लीलं स्मर-लोल-लोल-ललित-भ्रू-भ्रू-धनुर्व्विभ्रमो- ।
त्कर-लीलायत-दृष्टि दृष्ट-विलसत्-पुष्पेषु पुष्पेषु-जर्- ।
ज्जरितोन्मत्त-विलासिनी-जन-मनो-मानं मनो-मान-खे- ।
द-रतोत्कण्ठ-वधू-कदम्बि **भरत**-श्रीमच्चमू-वल्लभम् ॥
जित-मन्त्रं जित-मन्त्र-नूत-महिम-स्तोमं हिम-स्तोम-शु- ।
भ्रतमात्मीय-यशं यशो-लहरिका-मज्जगत्-तर्प्पि तर्- ।
प्पित-लोक-स्तुत-कीर्त्ति कीर्त्तित-भुज-स्तम्भं भुज-स्तम्भ-सं- ।
भृत-विक्रान्त-वधू-करेणु **भरत**-श्री मच्चमू-वल्लभम् ॥
जित-विद्विष्ट-चमू-चमूप-विलसन्मन्त्रं लसन्मन्त्र-सा- ।
धित-दुर्वृत्त महो-महोर्ज्जित-मही-चक्र महीं-चक्र-सं- ।
स्तुत-दोर्म्मण्डल मण्डलाग्र-दमितानम्रारि नम्रारि-कीर्- ।
त्तित-दिग्-वर्त्तित-जैत्र-लक्ष्मि ***भरत****-श्रीमच्चमूवल्लभम् ॥*
प्रतिपक्ष-क्षिति-केतु केतु-जनित-द्विड्-भीति भीति-द्रुता- ।
श्रित-रक्षा-निळयं लयानल-लुठत्-तापाग्नि-कोपाग्नि-शो- ।
षित-युद्धोद्धत-जीवनं वन-शिखि-प्रोद्यत्प्रतापं प्रता- ।
प-तल-श्री-परिलब्ध-लक्ष्मि **भरत**-श्रीमच्चमूवल्लभम् ॥
करवाळाहत-विद्विषं द्विषदसृक्-पूर-प्लुतेभं प्लुते- ।
भं रथालम्बित-खड्गि खळिग-निहतश्वौघं हताश्वौघ-जर्- ।
जरितान्त्रौघ-विकर्षि-फेरव-रव-व्याजृम्भितं जृम्भितो- ।
द्धुर-दोर्द्दण्ड-भवजिताजि **भरत**-श्रीमच्चमू-वल्लभम् ॥
ललनानीकमनो-मनोभव भव-स्फाराळिकाख्यानळो- ।
ज्वळ-तेजो-निज-बाहु बाहु-निहत-द्विड् (द्वि) द्विट्-च्चिरो-देवकीर्- ।
त्ति-लता-वेल्लित-वार्द्धि वार्द्धि-वलय-क्षोणि-तळ-स्तुत्य निन्-
न लसद्-वक्षदोळिक्के लक्ष्मि **भरत**-श्रीमच्चमू-वल्लभम् ॥]

३१०–३११

श्रवणबेलगोला—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक १०६१ (?) = ११३९ ई०]

३१२

बादामी—कन्नड़।

[शक १०६१ (?) = ११३९ ई०]

नमः श्री-वासुदेवाय भोगिने योगमूर्त्तये ।
हरेश्वराय सत्याय नित्याय परमात्मने ॥

स्वस्ति समस्त भुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परमभट्टारक [सत्या] श्रय-कुळ-तिळक चाळुक्याभरण [श्री] मतु-प्रतापचक्रवर्त्ति **जयदेकमल्लदेव** [र] विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमा-[चं]द्रार्कतारं बरं सलुत्तमिरे [॥] [त] त्पादप[द्मो]पजीवि [।] श्रीवल्लभनमळ' भू [दे]वाब्धि सरोजभृङ्गनङ्गजकल्पं कोविद-शुक-सहकारं देवं श्री**कालिदास**दण्डाधी[श]म् ॥ समधिगतपं[च]महाशब्द महासा[म]-न्ता[धि]पति महाप्रचण्डदण्डनायक समस्ताधिकारि मनेवेर्गडे काविम[र]स......ने (?) गल्द (?) **कालिदास**चमूनाथनाद.................... ....सुजनैकनिळयं श्री-ना...............धीशं ॥ मत्तन्ते काळिमरसङ्गुत्तम[1].........**महादेव**-चमूपोत्तमनुदग्रमहिमं मत्तेभवलं विनीतनाततसौ(शौ)र्य्यं ॥ इन्तेनिसिद **महादेव**-दण्डनायकनुं **पालदेव**दण्डनायकनुं चालुक्य-जगदेक मल्लवरिषद एरडे(ड)नेय **सिद्धार्थि-संवत्सरद कार्त्तिक सु(शु)द्ध त्रयोदसि (शि) सोमवारदन्दु** श्रीमद्योगिजनहृदयानन्दनेनिप परमानन्ददेवरु माडिसि(द) योगेश्वरदेवर्गे बादाबिय सिद्धायदोळगे हतु (त्तु) गद्याण पोन्नु बरिसवरिसक्के कुडुहदेन्दाचन्द्रार्क्कस्थायियागे (गि) पेमाडे-**रामदेव**-रसन बिन्नपदिं बिट्टरु ॥ [श्रम] दिन्दितिद [नेय्दे काव पुरुषङ्गायु' [जय] श्रीयु [मक्कें] यिदं कायदे [कायत्र पापिगे कुरुक्षेत्रं] गळोळु वार

---

१. सम्भवतः यहाँ पाठ 'उत्तमसुपुत्र मोगेदं' है ।

[णासियोळे र्-कोटि मुनीन्द्रदं कविले] यं वेदाळ्यरं कोन्दुदेन्दपशं सागु] मि(दें) [दुसारिद्पुदी शैलाद्वरं धात्रियोळु ॥]

यह लेख बताता है कि किस तरह, जगदेकमल्लके राज्यके द्वितीय वर्ष सिद्धर्थि संवत्सरमें उसके दो अधीनस्थ दण्डनायक **महादेव** और **पालदेव**ने रामदेव नामके किसी सरदारकी प्रार्थना करने पर मन्दिरको वार्षिक दानके रूपमें १० गद्याण 'सिद्धाय' नामके करकी आयसे दिये।

चालुक्य वंशावलीमें दो जगदेकमल्ल आते हैं : एक तो **जयसिंह द्वितीय** जिसका काल, सर डब्ल्यू ईलियट (**Sir W. Elliot**) के मतके अनुसार, **शक ९४० से ९६२** (?) है,—और दूसरा **सोमेश्वर तृतीय का ज्येष्ठ पुत्र एवं उत्तराधिकारी,** जिसकी सिर्फ उपाधि, नाम नहीं, शिलालेखों में आता है और जिसका समय, उसीके अनुसार **शक १०६० से १०७२** है।

इस प्रकार दोनोंके राज्यके प्रारम्भका अन्तराल १२० (१०६०–९४०) वर्ष आता है। यह काल २ युगके बराबर होता है। इसके संवत्सरका नाम तथा राज्यका वर्ष अभी भी लेखको सन्देहापन्न बनाये रखते हैं। लेकिन ईलियटके मैनुस्क्रिप्ट कलैक्शन (**Elliot Ms. Collection**) से जे. एफ. फ्लीटको इस बातका पता चला कि जयसिंह द्वितीयने 'श्रीमत्प्रतापचक्रवर्त्ति' यह पदवी कभी धारण नहीं की थी, और उधर यह पदवी सोमेश्वर द्वितीयके उत्तराधिकारीकी उपाधियों में हमेशा आती है। अतएव यह लेख द्वितीय जगदेकमल्लके समयका है, और इसकी तिथि **शक १०६१ (११३९–४० ई०)** है, जो कि **'सिद्धार्थ' संवत्सर** था।]

३१३

बुग्रि—संस्कृत तथा कन्नड़।

वर्ष कालयुक्त [११३९ ई० (लू. राइस)।]

[बुग्रिमें, बन-शङ्करी मन्दिरके पूर्वकी ओरके पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

भद्रं **समन्तभद्र**स्य **पूज्यपाद**स्य सन्मते. ।
अकलङ्कगुरोर्भूयात् शासनायाघनाशिने ॥
धुरदोळ् **चाळुक्य-चक्रेश्वरन**धिक-बळं **तैलपं** सत्य-रत्ना- ।
करना-**सत्याश्रयं** विक्रम-भुज-बलदिं **विक्रमादित्य** भूपम् ।
वर-तेजं **अय्यणं** भूतळ-नुत-**जयसिंह** मनोजात-रूपम् ।
धरेपोळ् **त्रैलोक्यमल्लं** निरुपमनेसेदं **सोम**नुर्व्वी-ललामम् ॥
त्रिभुवन-जन-नुतनेसेदम् !
त्रिभुवनमल्लं विरोधि-बळ-हृत-सेल्लम् ।
विभवद **भूलोकमल्लं** ।
विभु सले **जगदेकमल्ल** नाळदं धरेयन् ॥
कुन्तळ-विषयक्काधिपति ।
कुन्तळ-चक्रेशनल्लि **बनवसे नागेळ्** ।
कन्तु-श्री-निळयं सले ।
भ्रान्तेम् **जिडुलि**गेर्यल्लि**युद्ध**रेयेसेगुम् ॥
बेळेदिर्द्द-गन्ध-शाळी-वन-परिवृतदिम् तेङ्कु-पङ्केज-षण्डङ-
गळि (नो)प्पं पेच्चु तोर्प्पा-वकुल-तिळकादि चम्पकाशोक-जम्बू- ।
कुळदि जम्बीर-पूगद्रुम-कुरवकदि नागवल्ली-तटाकङ्- ।
गळिनादं हर्म्यदिन्दुद्दरे बुध-जन-सम्प्रीतियं माडुतिक्कुम् ॥
धरणीशं **गङ्ग-वंशं** जन-नुतनिरिवा-**चट्टिगं** वैरि-भूपा- ।
ळरुमं बेङ्कोण्ड-गण्डं सोगयिसे हरि-जा-**कञ्चि**गंधाळियिट्टम् ।
मरेयं तान्...नाडोळगण हणवं कोण्डना-**मारसिगम्** ।
वर-तेजं कीर्त्ति-राजं रण-मुख-रसिकं **मारसिंग नृपेन्द्रम्** ॥
गङ्ग-कुळ-कमळ-दिनकरन् ।
अङ्कज-सन्निभननून-दान-विनोदम् ।
भङ्गिसिदं वैरिगळम् ।
तुङ्ग-यशं नेगळ्दनोप्पे**येकल-भूपम्** ।

वृत्त ॥ परमात्थं बीर-तीर्त्थं पर-हित-चरितात्थं सदा-माकितात्थंम् ।
तरुणी-सम्मोहनात्थं मनसिज-वनितारूप-संमुद्रितात्थंम् ।
वर-शिष्टानीकत्थं सले कुडे पडेगु लोक-संरक्षणात्थंम् ।
पुरुषात्थं स्वार्थमेन्देक्कल-नरपति भू-लोककन्ति...तिक्कुम् ॥
बलवद्विद्विष्ट-भूपालरनवय[व]दिं कादि बेङ्कोण्ड-मण्डम् ।
दळवेल्लं बोडे गण्डं विरुद-भटरु बेन्नित्तु पोपल्लि गण्डम् ।
कळनं पेल्दद्दे गण्डं रिपु-मदहरणं गङ्ग-मार्त्तण्ड-देवम् ।
तळेदं भू-कान्तेयं चेक्कल-नृप-तिलकं चारु-दोर-दण्डदिन्दम् ॥
क्रूरारातीभ-कुम्भ-स्थळ-विदलन-कण्ठीरवं विश्व-विद्या ।
धरं श्री-भारती-मण्डन-कुच-मणि-हारं मनोजात-रूपा- ।
कारं गम्भीर-नीराकारनमल-गुणं सत्य-भाषा-विभूषम् ।
तारा-शुभ्राभ्र-गङ्गा-शशि-विशद-यशङ्केक्कलङ्कोप्पुतक्कुम् ॥
अङ्ग-कलिङ्ग-वङ्ग-कुरु-जाङ्गळ-कोशळ-मध्यदेश-मद्- ।
रङ्ग-तुरुष्क-गौड-मगधान्ध्रमवन्ति वराट-चोळ दे- ।
शङ्गळ पण्डितर् ककविगमुत्तम-याचकगेय्दे कोट्टु कर्- ।
णङ्गे समानमागे सलेयेक्कलनित्तपनोप्पे वित्तमम् ॥
श्रमदिन बरि-वोनलिन्दम् । कमनीयं कल्प-वल्लि पुट्टुव तेरदिम् ।
प्रमदा-रत्नं जनियिसल् अमळाङ्गने सुग्गियब्बरसि धारिणियोल्- ॥
परमेष्ठि-स्वामि देय्वं गुरु तनगेसवो-माघणन्दि-व्रतीन्द्रम् ।
वर-भव्यर् वन्धु-वर्ग्गं निरुपम- मरेयं एरिंदा-मारसिङ्गम् ।
नरपाळमण्णना-सुग्गियब्बरसि यताशर्ग्गे कोट्टन्न-दानम् ।
धरेगोप्पम्बेत्तुदा-पञ्चवसदि जसवं बीरुगुं मादादन्दम् ॥
वीर-जिनेन्द्र-पाद-सरसी [रु] ह-राजित-राजहंसेयम् ।
चारु-चरित्रेयं गुण-पवित्रेयनूज्जित-दान-शीलेयम् ।
भारति-कण्र्णपूरे मुनि-राज-पयो [रु] ह-भृङ्गेयं गुणा- ।
धारद सुग्गियब्बरसियं धरे बण्णिसुतिक्कुमागळुम् ॥

सवणन-बिळिलोळे बिट्टळ् । भुवन-स्तुते मत्तरोप्पे सले पन्नेरडम् ।
भव-हर-पञ्चवसदिगा- । प्रवरान्विते **सुग्गियब्बरसि** धारिणियोल् ॥
कतिपय-कालान्तरितं । हितवेनिपा-पूर्व्व-वृत्ति तळेयलु पडेगुम् ।
सततं जिन-पूजोत्सव- । रतेयप्पा-**कनकियब्बरसियिं** धरेयोळ् ॥
जिन-पूजेगे जिन-महिमेगे । जिन-राजन मजनक्के जिन-भवनक्कम् ।
जिन-मुनिगेसवी-दानमन् । अनवरतं माड्डुतिक्कुं **कनकियब्बरसि** ॥
जिन-गृहमिल्लदल्लि जिन-मन्दिरमं जिन-गेहमागियुम् ।
जिन-मुनिगळ्गे दान-निचयं दोरकोळ्द थाविनल्लिया- ।
मुनि-जनगित्तु कीर्त्ति-लते पल्लविसुत्तिरे लोकदल्लियन्त् ।
अनुपममागला- **कनकियब्बरसि**योप्पुतविक्कुं धात्रियोळ् ॥
सुर-कुजमनिळिसि **शक्रन** । सुरभियनिन्नेबुदेन्दु चिन्तामणियम् ।
परिहरिसि कुडले वल्लळे । परमार्त्थं **चट्टियब्बरसि** धारिणियोळ् ॥
जनकनु **मारसिङ्ग**-नृपनग्रज**नेकल** भूप वल्लभम् ।
दिनकर-तेजनोप्पे **दशधर्म्म** नृप**क्करेयङ्ग**नग्र-नन्- ।
दननुजात **केशव**-नृपाळ चतुर्विध-दानदिन्द मान्- ।
तनदोळे **चट्टियब्बरसि**यं बुध-मण्डलि मेच्चि बण्णकुम् ॥
परमाराध्यं जिनेन्द्रं गुरु ऋषि-निवहं **बोप्प-दण्डेश** मावम् ।
निरुतं **बोप्पब्बे**यन्ता-जनति जनकना-**कोटि-सेट्टि** प्रमोदम्- ।
वेरशिर्द्दी-**शान्तियक्कं** करवेसदिरला-पत्नि सम्यक्त्व-रत्ना- ।
करनप्पी-**कोति-सेट्टु**द्दरेय बसदियं माडिदं पुण्य-पुञ्जम् ॥
विमळ-यशो-वितानन कळङ्कनुपार्जित जैन-धर्म्मना- ।
गमिक-जन प्रपूर्ण्ण-विकचाब्ज- सरोवर-राजहंसनेन्द् ।
अमम धरित्रि बण्णिपुदु भव्य-शिखामणि भव्य-बन्धुवम् ।
सुमति-निवासनं नेगळ्द केतननुत्तम-दान-सत्वनम् ॥
परम-**श्री-मूलसंघं** सोगयिसुतिरे श्री-**कोण्डकुन्दान्वयम्**···।
इरे श्री-**काणूर्ग्गणं** गच्छमेसदिरे सन्दा-**तिन्त्रिणीका**ख्यमोधं ।

बेरसा-श्री-**रामणन्दि-व्रति-पति**येसेदं **पद्मणन्दि-व्रतीन्द्रम्** ।
वर-शिष्यङ्ग्र-शिष्यं नेगळ्दनु **मुनिचन्द्राख्य-सिद्धान्त-देवम्** ॥
अन्तवर शिष्यनेसेगुं । आन्तेम् श्री-**भानुकीर्ति-सिद्धान्तेशम्** ।
क (श) त्रु-मद-दर्प-दळनम् । सन्तत-बुध-कळप-मुबनेगळ्दं धरेयोळ् ॥
कनक-जिनालयवेसेदिरल् । अनुपमनेकल-नृपाळ **सवणन-विलिलोळ्** ।
जन-नुतमेने भानुकीर्त्ति- । मुनिगोप्पिरे बिट्ट मत्तरं पन्नेरडम् ॥
नेगळे **चाळुक्य-चक्रि**-वर्षं **जगदेक-महीश** सासिरम् ।
मिगिलरुवत्तु-कालयुत-माघ•••दा दशमी बृहस्पती ।
सोगयिसे वार पन्नेरडु-मत्तरना कोडगेय्महादमम् ।
तगरदे भानुकीर्त्ति-मुनीगेकल बिट शशाङ्कनुळिळनम् ॥
कोटि-पयं कविलेयनेळ्- । कोटि-तपोधनर वेद-विदरं पन्निर् ।
कोटियने कोटि-तीर्थदे । कोटि-महा-दिनदोळळिदनिन्तिदनळिदम् ॥
(इमेशाका अन्तिम श्लोक) श्री-**वन्दणिके**य तीर्थद प्रतिबद्ध•••॥

[जिन-शासनकी प्रसंशा । पृथ्वीका शासन करनेवाले क्रमशः ये राजा हुए:—]

१ चालुक्य-चक्रेश्वर तैलप; २ सत्याश्रय; ३ विक्रमादित्य; ४ अय्यण; ५ जयसिंह; ६ त्रैलोक्यमल्ल; ७ सोम; ८ त्रिभुवनमल्ल; ९ भूलोकमल्ल; १० जगदेकमल्ल ।

कुन्तल-देशमें, बनबसे-नाड्में, जिड्डुलिगेमें उद्धरेके वृक्षों और बगीचोंका वर्णन ।

गंग-वंशके राजा मारसिंगका वर्णन । राजा एक्कलकी प्रशंसा । अङ्गादि नानादेशोंके विद्वान् और कवियोंके लिए वह कर्णके समान दानी था ।

सुग्गियब्बरसिकी प्रशंसा । उसके गुरु माघनन्दि-व्रतीन्द्र थे, राजा मारसिंग उसका बड़ा भाई था । सुग्गियब्बरसिने यतीशोंको आहारदान तथा बढ़िया पञ्च-बसदि दी थी । बसदि के लिए सवणविळिमें भूमिदान किया था ।

कनकियब्बरसिने इस पूँजीमें और भी वृद्धि की । वहाँ जिन-मन्दिर नहीं थे

वहाँ जिन-मन्दिर बनवाये, और जहाँ जिन-मुनियोंको आमदनीका क्षेत्र नहीं था वहां उसने दान दिये।

चट्टियब्बरसि कामधेनु और चिन्तामणिके समान थी। उसके पिता राजा मारसिंग थे, ज्येष्ठ भाई राजा एक्कल, पति राजा दशवर्म्मा था, जिसका एरेयङ्ग ज्येष्ठ पुत्र था, और उसका छोटा भाई राजा केशव था।

शान्तियक्केके परमदेव जिनेन्द्र थे, गुरु ऋषि-गण थे, बोप्प-दण्डेश उसका चाचा, बोप्पले उसकी मां, कोटि-सेट्टि उसके पिता थे,—उसके पति केति-सेट्टिने उद्द (द्र) रेकी बसदिका निर्माण कराया।

मूलसंघ, कोण्डकुन्दान्वय, काणूर-गण और तिन्त्रिणीक-गच्छमें रामणन्दि-व्रति-पति—पद्मणंदि—मुनिचन्द्र सिद्धान्त-देव—भानुकीर्त्ति-सिद्धान्तेश क्रमशः शिष्य-परम्परामें हुए। अन्तिम मुनिको राजा एक्कलने कनक-जिनालयके साथ-साथ चालुक्य-चक्री जगदेव राजाके राज्यमें (उक्त मितिको) भूमिदान दिया]

[Ec, VIII, Sorab Tl. No. 233]

२१४

रायबाग;—संस्कृत तथा कन्नड।

[१]

["रायबाग गाँवमें नरसिंगशेट्टिके जैन मन्दिरके पाषाणखण्ड पर।"]

यह एक चालुक्य शिलालेख है। इसमें **दासिमरसु** सेनानायकके दानका वर्णन है। यह दान **सिद्धार्थी संवत्सर** के आषाढ़ महीनेकी कृष्णपक्षकी त्रयोदशी, सोमवारको, जबकि सूर्य दक्षिणायन हो रहा था, किया गया था। यही संवत्सर **जगदेकमल्लदेव** राजाके राज्यका दूसरा वर्ष था। यह दान **हूविनबाग** के नरसिंगशेट्टिके जैन मन्दिरके लिये किया गया था। सर डब्ल्यू, ईलियटकी सूची में दो चालुक्य राजाओंकी 'जगदेकमल्ल' उपाधि है,—एक तो **जयसिंह द्वितीय** की, जिसका क़रीब-क़रीब काल **शक ९४० से शक ९६२** तक दिया हुआ है,

और दूसरे का नाम तो नहीं दिया हुआ है, परन्तु इतना मालूम है कि वह सोमेश्वर तृतीयका उत्तराधिकारी था। शक वर्ष ६४२, उसी तरह शक वर्ष १०६२ सिद्धार्थी संवत्सर था, और तदनुसार वर्त्तमान लेखका काल सन्देहास्पद है, लेकिन सम्भवतः **शक १०६२ (११४०-१ ई०)** यथार्थकाल है।

[JB, X, P. 183-184, N. o. 10.]

३१५

मौट शिवगङ्गा;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[बिना काल-निर्देशका [लगभग ११४० ई० (लू. राइस) ।]

[गङ्गाधरश्वर मन्दिरके मण्डपके खम्भे पर]

एतन्मित्र-कुळाम्भोज-भास्करस्य यशस् स्थिरम्।
विष्णोरडळ-वंश-श्री **नायक**स्यैव शासनम् ॥
ललितेन्दु-द्युतियं तेरलिम भवनं माडिट्टगे संकरा-।
चळमं मेङ् कडिदिट्टरो शिव-गृहं माडिट्टरा पुण्य-सङ्-।
कुळमं येळिमेनङ्के कूतु **शिवगङ्गे शाद्रि**योळ् माडिदम्।
कुळ-नामं गडिमेन्दु देव-गृहमं **सामन्त-कङ्कासनम्** ॥
अदळ-कुळ-रत्न-भूषणन्। अदळ-कुलाम्भोज-**भानुवदळे**श्वरमेन्दु।
उदुभव-चरितं माडिद-। नुदुच-यशं **बिट्टि-देवनी-**शिवगृहमम् ॥
पूवलि पूजे निवेद्यं। दाविंगे जळ गन्ध धूपवत्तते पात्रम्।
पावुळमेनिप्पुवनारैद्। आवगमवं कपके बप्पं धनमं कोट्टम् ॥

अन्तुमल्लदेयुं निज-जनकन पेसरिं ब्रह्मेश्वर-देवालयं वूरं ब्रह्मसमुद्रमं नेगल्द••• मत्तम्।

अदळ-जिनालयङ्कळदळेश्वर-देवगृहङ्गळित्तिवेन्द्।
अदळसमुद्रमेन्देसेव विष्णुसमुद्रमिवेन्दु धर्मदिम्।

पुदिदवनन्दु माडिसिद कट्टिसिदं केषेयं निबान्वयक्क् ।
उद्भवमागलेन्ददळ-वंश-शिखामणि [वि] ष्णुवर्द्धनम् ॥
अल्लि बळिक तम्मवरो परोक्ष-विनयमागे बोचसमुद्रमेम्ब केषेयं कट्टिसि
शिव-महिमेयेडेगे केशव- । भवनोद्धरणक्के...ऐ-कोडिगेधर्म्म- ।
प्रवरम्मं बेडितनितर्- । त्थमनिवनीव बिट्टि-देवनदटर देवम् ॥
स्वस्ति श्री विष्णु-सामन्त स्थिरं जीवि

[इस लेखमें बताया गया है कि बिट्टि-देव, अपरनाम विष्णुवर्द्धन, शिवगङ्गेशाद्रि (**Mount Shivaganga**) में शिव-मन्दिर बनवाया था। बिट्टि-देव अदळ-कुळका था। उसने, इसके सिवाय, अदळ-जिनालय, अदलेश्वर-देवगृह भी बनवाये थे।]

[EC. Ix, Nelamangala U., No. 84]

३१६

मुगुलूर—कन्नड़।

[विना काल-निर्देशका, ११४० ई० (लू. राइस).]

[बस्तिके अन्दर पड़ी हुई मूर्त्ति के पीठस्थलपर]

श्रीपाल-त्रैविद्य-देवर गुड्डगळु मेळसिन **मारि-सेट्टि**यरिं नेगर्त्तिय **गोवन-सेट्टि**यरु **सीगे-नाड मुगुळि**यलु बसदियं माडिसिदरु...माडिसि श्री-**पार्श्व**-देवर प्रतिष्ठेयं माडिसि आ-बसदियुमं आ-देवर भूमियुमं तम्म गुरुगळिगे धारा-पूर्व्वकं माडि कोट्टरु ॥

[श्रीपाल- त्रैविद्य-देवके गृहस्थ- शिष्य मारि-सेट्टि और गोवन-सेट्टिने सीगे-नाडमें मुगुळिमें एक 'बसदि' बनवायी और उसमें पार्श्व-देवकी स्थापनाकर, बसदि और उसकी जगह (जमीन) देवताके लिये अपने गुरुको अर्पित करदी।]

[E, C, V. Hassan U. 129.]

२१७

—अञ्जनेरी (नासिक के पास);—संस्कृत

—[शक १०६३=११४२ ई०]

यादववंश शिलालेख

(१) ओं पंच परमेष्ठिभ्यो नमः। स्वस्ति श्री शक संवत् १०६३ दुंदुभिसंवत्सरांतर्गत ज्येष्ठ सुदि पंचदश्यां सोमे अनु-

(२) राधानक्षत्रे सिद्धयोगे अस्यां संवत्सरमासपक्षदिवसपूर्व्वायां तिथौ समधिगताशेषपंचमहाशब्दद्वारावतीपुरवरमे-

(३) श्वर विष्णुवंशोद्भवयादवकुलकमलकलिकाविकासभास्करयादवनारायण सामंतपितामह सामंतजमरा इत्यादिसमस्त-

(४) निजराजावलीविराजितमहासामंत श्रीसेउणदेवविजयराज्ये तत्पाद-प्रासादावाप्तमहामहत्तमः प्रतापसंतापितवैरिवर्गः

(५) संग्रामशौंड [:] शूरवैरिघटाविमर्द्दनकण्ठीरवः अनवरतदानार्द्रीकृतदक्षिणकरप्रकोष्ठः निशितनिस्तृंश (निस्त्रिंश) विदारितारा-

(६) तिकरिकुंभस्थलगलितमुक्ताफलमंडितरणांगण (रणांगण) मनस्विनीमानोन्मूलनकंदर्पः दर्प्पाधर्म्मरं (र) हितः सौ (शौ) र्योदार्यदयादाक्षि-

(७) ण्यधर्म्मगुणसत्योत्साह मंत्रशीलसंपन्न [:] प्रजापालनानंदशत्रुपराजयानंतोषितकीर्तिप्लावितदिग्वलयः[1] अनेकराजनीतिशा-

---

१ इस वाक्य का ठीक अर्थ नहीं निकलता। यदि 'पराजयानं' के बाद 'द' लुप्त हुआ मान लें, तो 'शत्रुपराजयानंदतोषित' ऐसा पाठ होगा और जिसका ठीक अर्थ भी निकलेगा।

६. सेउणचन्द्र (द्वितीय.) शक ६६१.

... ...

... ...

... ...

(१३१) **सेउणचन्द्र (तृतीय)** शक १०६३.

[IA, XII, P. 126-128]

३१८

कसलगेरी—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

—[शक १०६४=११४२ ई०]—

[कसलगेरी (देवलापुर परगना) में, कल्लेश्वर मन्दिरके सामनेके पाषाण पर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्बधतां प्रतिविधानहेतवे ।
अन्यवादिमदहस्तिमस्तकस्फोटनाय घटने पटीयसे ॥

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं **द्वारावतीपुर**वराधीश्वरं यादव-कुलाम्बरघुमणि सम्यक्त्वचूडामणि मलेपरोळु गण्ड कोत्तु-नङ्गलि-गङ्गवाडि-नोळम्बवाडि-तलेकाडु उच्चङ्गि-बनवसे-हानुङ्गलु-गोण्ड भुजबळ **वीर-गङ्ग-होय्सळ-विष्णु वर्द्धन-देवर** विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्क्कतारं सल्लुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि ।

स्वस्ति स्वस्तिळके शुभैश्शुभतमैः पुण्याहवैः कीर्त्तयां ।
स्थाप्यन्ते जित-पार्श्व" जिनपादपङ्कजटळे श्री-ह्री-धृतिर्द्धार्यताम् ।
त्वं दत्तं देयातु देव-देवभुवने मुत्तयङ्गनावल्लभो

सामन्तं जय-श्रीय-वर्द्धनकरं **सोमं** स्थिरं जीयातु ॥
उदेयं गेय्वमृतं (r) शुबिम्ब भुवनक्कुत्साहमं माक्कु बिन्-
दु तज्जननिगाचन्द्रार्क्कतारं यशस्प्रसरं केयिमगे तन्-
देगे तन्न बाहुबलदिं दोर्दण्डदर्प्पिष्टरं तर्दिदं सौ-
ळने सीळ द् अदर्प्पिदं बेङ्कोण्डनी-सामन्त सोमं धराचक्रदळु ॥
प्रळ्य-प्रक्षोभ-वाताहतदे कदडि मर्य्यादेयं दाण्टि धात्री-
तळकत्यन्तदौर्व्वानळकोपाटोपवेशं कयिमगे चोळ-
कळमल्लकल्लोळमप्पन्तु पिरिदे घळं बन्दु बिट्टम् ।
हृदुवनकेरेंयोळु **वीर-पेर्म्माडि-देवम्** ॥
मदगन्देभमदान्ध वारिचयदिन्देय्तन्दुदाबीडना ।
बिडलासात्तेन्दुदासात्तन्-
दुदेनलु **वीरगङ्ग**नेने भीमाटवी-हृदु-स्थान-नदी-तीरमन् ।
अय्दे साल्दमोघसरलिदेच्चनाकरियं करियय्कणम् ॥
वोदविद-मददिन्दिरदेय्तरे बीडनदर् कुम्भस्थळममम् ।
बिरियेच्चु कोन्दनेन्दडे करियय्कणनेम्बुदातनं जगमेल्लम् ॥

अन्तु **वीर-गङ्ग-पेर्म्माडि हृदुवनकेरेय कदुलेय** तडि विडदु चातुर्दन्तबलं बेरसु **चोळ**न मेले नडेयुतं बन्दिरे काडेने बीडं कविये पाय् वुदं कण्डु **अय्कणं** करियनेच्चडे **कलुकणिनाडा**ऽवं **करियय्कण**नेन्दु वीरपट्टमं कट्टि सुखदिन्दिरे ।

करियय्कय-सावन्तन । पिरिय-मगं **नाग**नातनग्रतनूजं
सुरधेनुकल्पवृक्षद । दोरेयेनिसिद **सुग्ग-गौण्ड**नदिरद गण्ड ॥
एने नेगल्द सुग्ग-गऊण्डन । तेनेयं **सावन्त-सोम**नाहवभीमम् ।
जिनपादकमळभृङ्गं । जिननाथस्नपनजलपवित्रितगात्रम् ॥
मदवदरातिनायकरनाहवदोळ् तरिदिक्कि कीर्त्तियम् ।
नेरेये दिगन्तरं मेरेदुदारते सिंहनाददिन्द् ।
ओदविद-भीम-सूद्रकनो धनञ्जय-रामनो दुन्दुमारणो ।

नळ-नहुषादि सोमदेवनेने सोवण धन्यनो पन्नगे-वैनतेयनो ॥
मारन सतिगं सीतेगे । रेवतिगनु (रु) न्धतिगे अचिमब्बेगे सदृशं पेळु ।
सारगुणं सोमन सतिगुदारगुणं निन्वन्नेयराह मारब्बेणी-धारिणियलु ॥
आतन सतियं पोलिपडी- । भूतळदोळु रूपु अजवनितेगे रतिगन्त्
आ-सति पार्श्वटियेनि- । प जिनतु-पाद-भक्त माचले-नारि ॥

आ-मारय्वे सोमनोडने लीलेयिं...उळ र कुल-ललेनेयेनिसि बळचर-निचय-निचित-कुन्द-कुटु-मळ-बदन-वन-रवतेये बन-लक्ष्मये कल्प-त्तरुवेनिसि बहु-पुत्रियरं पडेदु जिन-जननियेने जिनधर्म्मंक्काधारी-भूतेयु आहाराभय-भैषज्य-शास्त्र-दीन-विनोदेयु जिनगन्धोदकपवित्रीकृतोत्तमाङ्गेयु जिनसमयसमुद्धरणेयु पारिश्व-देव-पादाराधकेयुमप्प ।

जिनपति दैव पोरेदाल्दने होय्सळविष्णुभूप सज्-
जननुते मारे माचले गुणान्वितेयर्तनगग्रपुत्ररेन्द् ।
अनुपम-चट्ट-देव कलि-देवने सन्द्-
अनुपम-कीर्त्तियं नेरॆये ताल्दद-भव्यने सोवणनी-धरित्रियलु ॥

स्वस्ति समस्तगुणसम्पन्ननुं विबुधप्रसन्ननुं आहाराभयभैषज्यशास्त्रदानविनोदनुं जिनगन्धोदकपवित्रीकृतोत्रमाङ्गनुं जिनसमयसमुद्धरणनुं तोडल्दर डोक्कियु तोडरे बल-गण्डनुं नुडिदु मत्तेननुं परनारी-पुत्रनुं पार्श्व-देव-पादाराधकनुमप्प कलुकणि-नाडाल्व सामन्त-सोवेय-नायकं भानुकीर्त्ति-सिद्धान्त-देवर गुड्डं कलुकणि-नाड् आल्वं हेब्बिडिरुब्बाडियलु उत्तुंगचैत्यालयवं माडि श्री पार्श्वदेवरं प्रतिष्ठे माडि श्रीमूलसंघ-सुरस्ट (स्थ)-गणद ब्रह्मदेवर कालं कर्च्चि धारापूर्वकं माडि कोट्ट देवर अङ्ग-भोगक्कमाहारदानक्कं बसदिय जीर्ण्णोद्धारक्कं बिट्ट दत्ति शक-वर्ष १०६४ नेय दुन्दुभि-संवत्सरद पौष्य-मासदुत्तरायण-संक्रमण-पञ्चमी-बृह (स्पति) वारदन्दु बसदिगे वायव्यद देसेयलु अक्कनहळ्ळिय सीमान्तर वेन्तेन्दडे (अन्तिम ८ पंक्तियोंमें सीमाकी चर्चा है, और इसके बाद अन्तिम पद्य)

[उसी पाषाणके बायीं ओर–]

स्वस्ति **कल्कणि-नाड एक्कोटि-जिनालय** वेन्दु समे...रू कूडि कोट्ट हेसरु ॥
स्वस्ति रूवारि-**माचोज** कलुकणिनाड आचार्य्य कलियुग-विश्वकर्म्म

[जिनशासनकी प्रशंसा ।

जिस समय (अपनी हमेशाकी उपाधियों सहित), भुजबल वीर-गङ्ग-होय्सळ-विष्णुवर्द्धन-देवका विजयी राज्य अपनी वृद्धि पर थाः–तत्पादपद्मोपजीवी **सामन्त-सोम** था (उसकी प्रशंसा) ।

जिससमय वीर-गङ्ग पेर्म्माडि चोल राज्य पर आक्रमण करनेके लिये हदुवनकेरीमें कदुले नदीके किनारे-किनारे जा रहे थे, एक जंगली हाथी भागता हुआ आकर सेना पर टूट पड़ा । अय्कणने उस हाथीको अपने बाणोंसे मार दिया, जिसपर कलुकणि-नाड्के शासकने उसे 'करिय्-अय्कण' की उपाधि दी ।

करिय्-अय्कणका सबसे बड़ा पुत्र **नाग** था, उसका ज्येष्ठ पुत्र **सुग्ग-गऊण्ड** था, उसका पुत्र सामन्त-सोम था । उसकी मारय्वे और माचले नामकी पत्नियाँ थीं । मारय्वे की बहुत-सी पुत्री हुई, पर माचले के पुत्र हुए, जिनमें ज्येष्ठ चट्टदेव और कलि-देव थे ।

कलुकणि-नाड्के शासक, सामन्त-सोवेय-नायक ने (अपनी बहुत-सी उपाधियों सहित), जो कि धार्मिक जैन और भानुकीर्त्ति-सिद्धान्तदेवके गृहस्थ-शिष्य थे, हेब्बिदरूव्वीडिमें एक ऊँचा चैत्यालय बनवाया और उसमें पार्श्व-जिनकी स्थापना करके पूजा-सेवाके खर्चके लिये, मन्दिर की मरम्मत तथा आहारदानके लिये, श्री मूलसंघ तथा सूरस्त (स्थ) गणके ब्रह्मदेवके पादों को प्रक्षालनपूर्वक '**अरुहन-हल्लि**' नामक गाँव दानमें दिया ।

जिनालयका नाम 'कल्क (कलुक) णि का एक्कोटि जिनालय' रक्खा था । शिल्पि का नाम **माचोज** था । यह कलुकणि-नाड् का आचार्य, कलियुग का विश्वकर्म्मा था ।]

[E C, IV, Nagamargala U., no, 94 and 95]

११ अय्यन-सिंगः सकळ-गुण-तुङ्गः। रिपु-मण्डळी (ळि) कभैरवः। विद्विष्ट-गज-कण्ठीरवः।

१२ इडुवरादित्यः। कलियुग-विक्रमादित्यः। रूपनारायणः। नीति-विजित-चा-

१३ रायण.। गिरि-दुर्ग-लङ्घनः। विहित-विरोधि-बंधनः। शनिवारसिद्धिः। धर्म्मैकबुद्धिः। महा-

१४ लक्ष्मीदेवी-लब्ध-वरप्रसादः। सहज-कस्तूरिकामोदः। एवमादि-

१५ नामावली-विराजमान-श्रीमद्-**विजयादित्यदेवः**। **वळवाड**-स्थिर-शिबिरे सुख-संकथा-विनोदेन राज्यं कु-

१६ र्व्वाणः। **शक-वर्षेषु पञ्चषष्ट्य त्तर-सहस्र-प्रमितेष्वतीतेषु प्रवर्त्त-मान-दुं-**

१७ **दुभि-संवत्सर-माघ-मास-पौर्ण्णमास्यां सोमवारे। सोमग्रहण-**पर्व्व-निमि-

१८ त्त **माजिरगेखोल्ला**नुगत-हाविन-हेरिलगे-ग्रामे। सामन्त-कामदेवस्य हडप

१९ वलेन श्री-मूलसङ्घ-देशीयगण-पुस्तक-गच्छाधिपतेः **क्षुल्लकपुर**-श्री रूप-नारायण-जि-

२० नालयाचार्य श्रीमन्**माघनन्दि**सिद्धान्तदेवस्य प्रिय-च्छा [त्] त्रेण। सकलगुणरत्न-पात्रेण।

२१ जिन-पदपद्म-भृङ्गेन। विप्रकुल-समुत्तुङ्ग-रङ्गेण। स्वीकृत सद्भावेन। **वासुदेवेन**

२२ कारितायाः वसतेः श्री-पार्श्वनाथदेवस्याष्टविधार्च्चनार्थं। तच्चैत्यालय-खण्ड-

२३ स्फुटित-जीर्णोद्धरार्थं। तत्रत्य-यतीनामाहारदानार्थं च। तत्रैव ग्रामे

२४ **कुण्डि**-दण्डेन निवर्त्तन-चतुर्थ-भाग-प्रमितं क्षेत्रं। द्वादश-हस्तसम्मितं गृह-निवेशनं

२५ च। तन्**माघनन्दि**सिद्धान्तदेव-शिष्यानां **माणिक्यनन्दिपण्डित-देवानां**। पादौ प्रक्षाल्य धारा-पू-

२६ र्व्वेकं सर्व्वनमस्यं सर्व्व-बाधा-परिहारमाचन्द्रार्क्कतारं सशासनं दत्तवान् ॥
२७ तदागामिभिरस्मद्वंश्यैरन्यैश्च । राजभिरात्मसुख-पुण्य-यशस्सन्तति-वृद्धिभिः। स्व-
२८ दत्ति-निर्व्विशेषं प्रतिपादनीयमिति ॥ शान्तरसक्के ताने नेलेयाद
२९ जिन-प्रभु तन्न दैवमश्रान्त-गुणक्के ताने नेलेयाद तपोनिधि **माघनन्दि** सैद्धान्तिक-
३० योगी **तन्न** गुरु । तन्नाधिपं विभु कामदेव-सामंतनिदुत्तमत्वमिदु पुण्यमिदुन्नति **वासुदेवेन** ॥

भावार्थ

[यह शिलालेख कोल्हापुर शहरके शुक्रवार दरवाजेके पासके जैनमन्दिरके सामनेके एक पत्थर पर उत्कीर्ण है ।

शिलालेखमें शीलदार कुलके **महामण्डलेश्वर** विजयादित्य देवके एक भूमिदानका उल्लेख है। पहलेके दो श्लोकोंमें जैनधर्मके यश की गाथा गाई गई है। तत्पश्चात् ३–१५ तक की पंक्तियोंमें दाताकी निम्नलिखित वंशावली और उसका वर्णन है— **शीलदार** क्षत्रिय वंशमें **जतिग** नामका एक युवराज था, जिसके चार लड़के, गोङ्कल गूवल, कीर्त्तिराज, और चन्द्रादित्य थे। राजपुत्र गोङ्कलका लड़का **मारसिंह** था। उसके पुत्र **गूवलगङ्गदेव, बल्लालदेव, भोजदेव,** तथा **गण्डरादित्य-देव** थे। और **गण्डरादित्यदेव**का पुत्र **महामण्डलेश्वर विजयादित्यदेव** था। उनके ये पद थे—'नगरपुरवराधीश्वर, श्री शिलाहारनरेन्द्र, निजविलास-विजितदेवेन्द्र, जीमूतवाहनान्वयप्रसूत, शौर्य्यविख्यात, सुवर्णगरुड़ध्वज, युवतिजन-मकरध्वज, निर्द्दलित-रिपुमण्डलीक-दर्प्प, मरुवङ्क-सर्प्प अप्पनसिंग, सकलगुणतुङ्ग, रिपुमण्डलिक-भैरव, विद्विष्टगज कण्ठीरव, इडुवरादित्य, कलियुग-विक्रमादित्य, रूपनारायण; नीतिविजितचारायण, गिरिदुर्गलं

धन, विहितविरोधिबंधन, शनिवारसिद्धि, धर्म्मैकबुद्धि, महालक्ष्मीदेवी-लब्ध-वरप्रसाद, तथा सहजकस्तूरिकामोद।'

पंक्ति १५-२६ में **विजयादित्यने,** अपने **वळवाड**के निवासस्थान पर आरामसे राज्य करते हुए, सोमवारके दिन चन्द्रग्रहण के अवसरपर, दुन्दुभिवर्षकी माघ महीने की पूर्णिमा तिथि सोमवारको भूमिदान किया। यह दुन्दुभिवर्ष शक वर्ष १०६५ के बीत जाने पर ही लगा था। जमीन **कुण्डी** नामक देशी माप से चौथाई **निवर्तन** थी। उसी सालमें १२ हाथका एक मकान भी अर्पण किया था। जमीन और मकान दोनों **आजिरगखोल्ल** नामके जिलेके **हाविन-हेरिलगे** गाँवके थे। यह एक मन्दिरको दान किया गया था जिसे माघनन्दि सिद्धान्तदेवके शिष्य तथा कामदेव-सामन्तके अधीनस्थ वासुदेवने बनवाया था। यह दान मन्दिर के जीर्णोद्धार तथा वहीं रहनेवाले मुनियोंके लिये आहारदानके प्रबन्धके लिये था। माघनन्दि सिद्धान्तदेव **क्षुल्लकपुर** (कोल्हापुर ही का दूसरा नाम) के रूपनारायण जैनमन्दिरके पुजारी (या पुरोहित) थे, मूलसंघ, देशीयगणके पुस्तकगच्छ के प्रधान थे। उनके एक दूसरे शिष्य **माणिक्यनन्दि पण्डितदेव** थे। इस दानके करते समय इन्हीं पण्डितदेवके पादोंका 'प्रक्षालन किया गया था। इस दानको सब करों और बाधाओंसे सदैवके लिये मुक्त किया गया था। २७-२८ की पंक्तियोंमें भविष्यमें होनेवाले राजाओंसे प्रार्थना की गयी है कि वे इस दानकी हमेशा रक्षा या सन्मान करते रहें, क्योंकि यह उन्हीं एक का किया है। और यह शिलालेख अन्तमें पुरानी कर्णाटकलिपिमें वह कहते हुए समाप्त होता है :—

शान्तरस प्रधान जिन देव ही मेरे देव हैं, अश्रान्त गुणवाला तपोनिधि, योगी माघनन्दि सैद्धान्तिक ही मेरे गुरु हैं और कामदेव सामन्त ही मेरे राजा या मालिक हैं।']

[EI, IV. No. 27, T and A.]

३२१

मत्तावार—कन्नड ।

—[शक १०९५=११७३ई०]

[मत्तावार (चिकमगलूर परगना) में, पार्श्वनाथ मन्दिर के एक पाषाण पर]

स्वस्ति **शक वरुषद् सासि ९५ सन्द रुधिरोद्गारि (य)-संवत्सर** ··· ···
··· ··· **दिरेशनिवारदन्दु** ··· ··· य बुध **अकवे गन्ति हेग्गोरेय**
मत्तिकापुरदिन्द पुरबेय्दलु । सुरव्रत ··· ··· ··· **देवेन्द्र बुधम्** ॥

श्रावकर तोयेतर बु- । धावळि-परमोपकारि मति-चतुर कळा- ।
कोविदर बन्धु जन-मा- । निदान-पथरण्य सु-कवि-**देवेन्द्र**-बुधम् ॥

गौजड-वेग्गडेय गुरुगळ् **देवेन्द्र-पण्डित**रिगे अवर मदमाळ्गि **देकब्बेय**
निषदिय कल्लं मत्तवारद गामुण्ड **बूचि-वेग्गडे नारणवेग्गडे**य्यं पडिकर-**माडुव**
मावलय्य नु निलिसिदरु

[(उक्त मितिको) गौजके वेग्गडेके गुरु देवेन्द्र-पण्डित की पत्नी
देकब्वे का स्मारक-पाषाण मत्तावारके गामुण्डोंने खड़ा किया था ।]

[Ec, VI, Chik magalur tl, no 162]

३२२

हिरे-आवली—संस्कृत—तथा कन्नड

[सोरब परगना, हिरे-आवली-गांव]

[ध्वस्त जैन बस्तिके पास २५ वें पाषाणपर]

स्वस्ति समस्तसुरासुरमस्तकमकुटांशुजाळजळधौतपद प्रस्तुतजिन धर्म्म ··· ··· मस्तं-
भितचंद्रमखिलभव्यजन ··· श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥

स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वरं परमभट्टारकं सत्याश्रयकुळतिळकं चाळुक्याभरणं श्रीमज्जगदेकमल्लदेव ··· निर्म्मळकीर्त्ति ··· चोल्चंद ··· ··· मंडितवीरश्रीयं निळे सळे नेगर्द्द रजेय ··· नुर्व्विगे ··· समुद्रदि ··· ··· ··· विपुळकष्टमनेंतिरुतिंप्पं ··· वनेक चळुक्य-पेर्म्मचमूप ··· ॥

श्रीजगदेकमल्ल महीनाथन लक्ष्मिगे रम्य हर्म्यदि-
भ्राजितमष्ट ··· ळगं-मिवदळे निप्पमैमेयं
साजदेताळ्दि तत्पतिगे वार्द्धिवरं नेळनं निमिर्च्चिरा-
राजित पट्टसाहणियोळोळ्दोरे बम्मणदण्डनाथनोळ् ॥ ··· दळं सैरिपु-यकेरगदो ळ्पं मीरे ताप्रभावदंदे किडलीय-युगंदे यप्पुदें नाडेरदंदिनं तन्नुडि नन्नियागि नडेदोडं स्वामिसंपत्तिगास्पदवाद अनेक विक्रमविलास योगदंडाधिप ॥

वृ॥ चित्तदलुमल्लदेतन्न ।
सत्यद गुणविल्ल घनदे नीरेरिकरं ।
नित्तरिसि मूरुलोकम्- ।
नुत्तरिसितु निन्न कीर्त्तिलतेयुं कृतियुं ॥

कंद ॥ अय्दं जिनपदगणेगं ।
मेय्देगेयदे मनद धृतिय कामिनियरोळं- ।
तेय्दि ··· ··· बेससे ··· सुलु ।
मय्दुनमल्लरस क ··· नाहवरामं ॥
शंकरदेवतनूजनु ।
किंकरनेनिसिर्द्द स-णदान्वयदोडेयं ।
शंकिसदे धर्म्मदोळवं ।
शंकाधिगुणंगळं ··· यरेयिसिदं ॥

स्वस्ति समस्तप्रशस्तिसहितं श्रीमन्महाप्रधानं योगेश्वरदण्डनायकं बनवसे पन्निच्छासिरमनाळुतमिरे जिड्डुळिगे एप्पत्तर अधिकारि पेर्ग्गडे मय्दुन° माल्लिदेवं । श्रीमच्चाळुक्य विक्रमवर्षद दुंदुभि संवत्सरद पुष्यसुद्ध सोमवारदंदुत्त-

रायणसंक्रांतिय पर्व्वनिमित्त दंडनायकगे बिन्नपंगेय्दु श्रीमद्दवलिय **पार्श्वदेवर्गे** कारुगुलियबयल साल माविनल्लि बिट्ट केय्यि ··· दुण्डिय गलेयलु कम्म 5—1

स्वस्ति समस्तजिनपादांभोबवरप्रसादरुमप्प **मुद्दगाकुण्डनुं** (others named) अक्कसालेब्बगरणियोल् ··· प्रतिष्ठेयं मडि समस्तप्रजेगळिद्दु । स्वस्ति यमनियम-स्वाध्यायध्यानधारणमौनानुष्ठान जपगुणसंपन्नरप्प । श्री**मूलसंघद सेनगणद पोगरि गच्छद वीरसेनपंडितदेवर** सहधर्म्मिगळप्प **माणिक्यसेन पण्डितदेवर** कालं कर्च्चि धारापूर्व्वकं माडि सर्व्वनमस्यमागि कोट्टरु । ई धर्म्मव प्रतिपालिसिदर् अनन्तपुण्यमनेय्दुवरु इदनळिदवरु अधोगति इळिवरु ॥

(हमेशाका अन्तिम श्लोक)

[काल सन् ११४२–४३ ई० । दुन्दुभि वर्ष, पुष्य शुद्ध सोमवारकी उत्तरायण संक्रान्ति । यह लेख पश्चिमी चालुक्य राजा जगदेकमल्ल द्वितीय के राज्यका उल्लेख करता है और उसके बनवसे-१२००० के प्रदेशपर शासन करने वाले योगेश्वर दण्डनायक सेनाध्यक्षकी तारीफ़ करता है । पेर्गडे मय्दुन मल्लिदेव सेनाध्यक्षकी अनुमतिसे बिड्वलिगे-७०के राज्य पर शासन कर रहा था और इसने आवलीके भगवान् पार्श्वनाथको एक भूमिका दान दिया था ।

एक और दान, संभवतः एक जैन मन्दिरको मुद्द गावुण्ड तथा और दूसरे लोगोंके द्वारा किया गया था (इसकी विगत लुप्त है) । ये लोग जैनधर्मके पक्के भक्त थे । यह दान वीरसेन पण्डित देवके सहधर्मी माणिक्यसेन पण्डितदेवके पाद-प्रक्षालन पूर्वक किया गया था । वीरसेन पण्डितदेव मूलसंघ, सेनगण और पोगरि गच्छके थे ।]

[EC, VIII, sorat tl. no 125]

३२३

श्रवणबेलगोला—संस्कृत तथा कन्नड ।

[शक १०६८=११४५ ई०]

[देखो, जैन शिलालेख संग्रह, प्रथम भाग]

३२४

यल्लादहल्लि = संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[वर्ष क्रोधन = ११२४ ई० (लू० राइस)]

[यल्लादहल्लि (मेल्कोटे प्रदेश) में, गाँवके दक्षिण-पूर्वमें, ध्वस्त बस्तिके पासके पाषाण पर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
यस्य सद्धर्ममाहात्म्यात् सौख्यं जग्मुर्मुनीश्वराः ।
तस्य श्रीपार्श्वनाथस्य शासनं वर्द्धतां चिरम् ॥
जयति विगत-संख्याराति-भूपाल-भूमि-
ध्वज-गज-तुरगादीन् संविजित्याग्रहीद्यः ।
सकळ-समय-धर्म्माचार-शौर्य्योरु-विद्वद्-
गुण-मणि-खनि भूभृत् पोय्सळ-क्ष्मापतिस्सः ॥
श्रीकान्तानेत्रनीलोत्पलवदनसरोजात-स-स्मेर-लीला-
लोकं लोकत्रयोज्जृम्भितविशदयशश्चन्द्रिकादोःप्रताप-
व्याकीर्णं त्यक्त-युक्त-क्रम-कठिन-कुभृच्चक्रखेद-प्रमोद-
श्रीकं श्रीविष्णुभूपं बेळगुगे जगमं राजमार्त्तण्डरूपम् ॥
जळधि-व्यावेष्टितोर्व्वीपतियेनिसि सुखं बाळो चन्द्रार्क्कतारं ।
तळकाडं कोण्ड-गण्डं निगुळर पदेयं कूडे बेङ्कोण्ड-गण्डम् ।
तळवारल् तळ्त भूपालर हेडतलेयं थोप्पेनल् होय्द गण्डम् ।
बलवद्राज्याङ्गलं तन्नलगिन मोनेयोळ् पाय्दु कटकोण्डगण्डम् ॥
तलेमलेथादियागे निमिर्द्दुग्गङ्गमदमनावगम्भद्रा-
व्ळ-पद-घातदिन्दरेदु सण्णिसुत्तुं नडेतन्दु तन्दु तन्न दोर-
बळदलि कोङ्ग बेङ्किरिय मीसेगळं ससिकन्ते विष्णु-दोर्-

बलदले कित्तनोत्तिरिसि कळञ्जिन तेगिन तेञ्जिन नन्दनङ्गळं ॥

स्वस्ति समधिगत पञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वर **द्वारावतीपुर**वराधीश्वर। **यादवकुला**म्बरद्य मणि। मण्डलीक-चूडामणि। श्रीमद् अच्युत-पादाराधना-लब्ध-जिष्णु-प्रभावम्। दिक्पालक-पराक्रमाक्रमाक्रमण-पटु-पराङ्मुख-स्वभावम्। शत्रु-क्षत्रिय कलत्र-गर्भस्रव-सम्पादक-गभीर-शङ्ख-नाद। वासन्तिका-देवी-लब्ध-वर-प्रसाद। हिरण्यगर्भ-तुलापुरुषादि-महा-क्रतु-सहस्र-सन्तर्पित-पितृ-देव-गुरु-सम ••• निरुपम-क्षत्र-गुण-निर्जित-किराब-विष्णु-**वीर-विजयनारायण-पुरा**द्यं ख्यात-देव-कुळ-कुळ चळ-कुळ (कुळ)-यादवजळधि-विष्णुसमुद्र विलास-मुद्रित-मही-लोकन् अविकरण चातुर्य्य-चतुरानन। चतुर्व्वेदपाण्डित्य-मण्डितगोष्ठिषडानन समरमुखगृहीताहितमहीकान्त-कामिनीजन-मुखनिरीक्षणक्षणकृतसूर्य्यनिरीक्षण नृसिंहध्याननिश्चलीभूत-निर्मळचरित्र। पराङ्गनापुत्र। सकळजनसत्यनित्याशीर्व्वाद-सामर्थ्य सम्पादितकल्पायुरारोग्याभिवृद्धि-युक्त दुर्द्धरसमरकेळीसंसक्त दोर्ब्बळावळेपदुश्शीलाश्वपतिगजपति प्रमुखराज-लोक-निर्द्दयनिर्द्दळनोपार्जिताश्वगजादिनानाविधरत्ननिचय-रुचिरलक्ष्मीविलासम्। सरस्वतीनिवासम्। **चोळकुल**प्रलय-भैरवम्। चेरम-स्तम्बेरम-राजकण्ठीरव। **पाण्ड्य-कुल**पयोधि बडवानल। पल्लवयशोवल्लीपल्लवदावानल। **नरसिंहवर्म्मसिंह** सरभ निश्चल-प्रतापाधिपतित-**कळपाळा**दि-नृपाल-सलभम्। निज-सेना-नाथ-निर्द्दलित **जगन्नाथपुर** जगद्-दारिद्र्य-विदारण-प्रवीण-कारुण्य-कटाक्ष-निरीक्षण प्रत्यक्ष-पक्षे क्षण-चतुस्समुद्र-मुद्रित-वसुमती-मनोहर-लक्ष्मी-वल्लभ। भयलोभदुर्लभ। नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितम् श्रीमत्-**कञ्चि-गोण्ड विक्रमगङ्ग वीर-विष्णु-वर्द्धन-देवरु गङ्गवाडि**-तोम्बत्तरु-शरीरनुं। **नोळम्बवाडि**-मूवत्तिर्-च्छासिरमुं। **बनवसे**-पन्नि-र्च्छासिरमुं। **हलसिगे**-पन्निर्च्छासिरमुबेरडरु-नूर्व्वरं दुष्टनिग्रह-शिष्ट-प्रतिपालन-पूर्व्वकवेक-च्छत्र-च्छायेयिन्दाळ्दनामहानुभावनिं बळिय।

कन् ॥ तन्देयल् अच्छोदित-तेर्ट-। दिन् दवे नेगल्दादिरासिब-पडविगे समनेम्ब।
ओन्दु-विभव-प्रभावते-। यिन्दं **नरसिंह**नरसु-गेय्युत्तिर्द्दम् ॥

वृ० ॥ हिमर्दि सेतु-वरं तोलल्दु नेलनं निष्कण्टकं मादुत्- ।
ळिळ महोग्राजियोळान्तिदिर्दिदर्टि **चङ्गाल्व**नं कोन्दुवा-

समदेभावळियं हय-प्रततियं चेम्बोङ्गळं नूत्नरत्-
नमुमं कोण्डु नृसिंहं-भूपनेळेयं दोस्-स्तम्भदोळ् तार्ल्दिदम् ॥

व ॥ अन्तु समस्त-मण्डलिक-सामन्त-सेनानाथ-परिजन-परिवृतनागि दोरसमुद्रद नेलेवीडिनोळ् समुत्तुंग सिंहासनासीननागि सुखसङ्कथाविनोदर्दि राज्यं गेय्यु-त्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि । स्वस्ति समस्तराज्यभरनिरूपितमहामात्यपदवीप्रख्यातं शक्तित्रयसमन्वितं श्री-वीर-**विष्णुवर्द्धन-देव**-सप्ताङ्ग-लक्ष्मी-रक्षणाक्ष- (र) रक्षक सत्य-शौच-स्वामि-हितादि-सद्-गुण-शिक्षकं चतुर्व्वेदमहादाननिरतं श्रीमद-भिनवभरत श्री वीर **विष्णुवर्द्धनदेव**भुज्यविजयमण्डितमानवाकारचक्रम् । स्वामि-समादेश-साधितसकलदिक्चक्र । कौशिक कुलाम्बरदिवाकरम् । सम्य-क्त्वरत्नाकर । नामादिसमस्त प्रशस्तिसहितम् श्रीमन्महाप्रधानम् ।

वृ० ॥ कुडे नृपमेरे होय्सळ-महीभुजनक्करदक्केयिन्दे तां ।
पडेदनशेषराज्यकरभारधुरन्धरनेन्दु तन्त्र-वेग-
गडेतनमं निरन्तरवेनल् प्रभु-शक्तियनान्त पेम्र्मे नूर्-
म्मडि मिगिलादुदे-बोगळ्वेनुन्नतियं विभु-**देव-राजन**म् ॥

अन्तु पति-हितनुं सकळ-नियतनुवेनिसिद देव-राजन गुरुकुलुवेन्तेन्दोडे ।

श्लो० ॥ जयत्यमरनागेन्द्रपूजिताङ्घ्रि युगं प्रभोः ।
वर्द्धमानजिनेन्द्रस्य शासनं कर्म्मनाशनम् ॥

अन्तु श्रीवर्द्धमान-स्वामिगळ दिव्य-तीर्थदोळु केवलिगळु श्रुतकेवलिगळु बुद्धि-प्राप्तरुं अप्प परम-मुनिगळु सिद्ध साध्यरुमागे तत्तीर्थसामर्थ्यमं सहस्रगुणं माडि **समन्तभद्र-स्वामि**गळु **अकलङ्कदेव**रुं । **गृद्धपिञ्छाचार्य्य**रुं (। व्) आदियागे पलम्बरुं श्रुत-धररु सन्द बलिक्के श्रीमूलसङ्घद श्री कोण्डकुन्दान्वयद देशिय-गणद पुस्तक-गच्छद विशिष्टदोळगे **सागरनन्दि सिद्धांत-देव**रभिनव-गणधररे-निसिदरवर शिष्य**रहंनन्दि-मुनि**-पुङ्गवरवर शिष्यरु तर्क्क-व्याकरण-**सिद्धान्ताम्बुरुह**-वन-दिनकररुमेनिसिद श्रीमन्-**नरेन्द्रकीर्त्ति-त्रैविद्यदेव**रवर सधर्मर् षट्त्रिंशद्गुण-मणिमण्डनमण्डितरु पञ्चविधाचार-निरतरुमप्प श्रीमन्मु**निचंद्र-भट्टारक**र श्री-पादार-विन्दाराधक ।

नियत-स्याद्वादविद्याविभवभवनमागिर्प्पं निद्धूत-दोष- ।
श्रयमभ्युद्यत्तपोलक्ष्मिगे सले नेलेपागिर्प्पं रूढाकलङ्का- ।
न्वयदोळ् भव्याळिगेल्लं मोदलेनिसि करं पेम्पुवेत्तु पेर्म्मा- ।
डिय वंशं लोकवं कीर्त्तियोळ् बेळगितुज्ज्वळाचार-सारं ॥

अक्कर ॥ नय-विनयमननुकरिसुवननु- ।
नयदिं तेजोधिकनेने नेगर्द्द पेर्म्माडिय पेर्म्मगने श्री- ।
मय्यनातन चित्त-प्रिये देवलब्बे पति-भ- ।
क्तियोळा-सीतेगमरुन्धतिगमेणेयेनिपळ् ॥

अवर्गे मगं समस्त-गुण-रत्न-सुधाम्बुधि मसणि-सेट्टि भू-
भुवन-विनूतनातननुजं नेगर्द प्रभु मारि-सेट्टि बान्- ।
धव-जन-सर्व्व-भव्य-जन-कल्प-महीरुहना-महात्मनी- ।
तवद-विभूतियं पडेदुदर्हतेयं घरेयोळ् निरन्तरम् ॥

दोरसमुद्रद नडुविदु । मेरु-महीधरमेनल्के माडिसिदं श्री- ।
मारमनुतुङ्ग-जिना- । गारमनिदु विश्वकर्म्म-निर्म्मितमेनिसल् ॥

आ-विभुविनणुग-दर्म्मं । गोविन्दं मन्दरावनीधर-धैर्य्यम् ।
श्री-वनिता-वल्लभना- । गोविन्दनवोल् महीमनःप्रियनादम् ॥

वसुधेगे कौस्तुभमेनली- । बसदियनी-मुगुळियल्लि सद्भक्तियिनेत्- ।
तिसिदनेने मत्ते गोविन्द-सेट्टियं पोगलादर्प्परे बुध-निधियं ॥

भू-विदितने भीमय्य म-हा-विभवे पुत्रि नागियक्कनुमिवरी- ।
गोविन्दन जिन-गृहकृति- । पावन-चरितर् निरन्तरं पडि सलिपर् ॥

अवरग्र-तनूजमय-नय-शीलनप्रतिम-धर्म्म-सहा (नि) यक्कनरातिपूज्य-दुर्ज्जयनखिलेष्ट-शिष्ट-जन-रक्षण-दक्षनु......सरं नेगळ्द महा-प्रभु वेडदे पुण्डा-बिट्टि-सेट्टिय गुण... ...मं पोग [ळ] ला-चतुरास्यनु... ... ...युतं मायोपायक्के पेसवतिधर्न्यं स्वस्ति य... ... ...यनेनल् नाकि-सेट्टिय... ... ...सरा-पेम्पुमं निमिर्च्चि गोत्र-पवित्रनाद गोविन्द... ... ...समन्तभद्रस्वामिगळ ... ...वाचार्य्यरिं कनकसेन-वादिराज-देवरिं धनपाळ भट्टारकरिं

श्री··· ···**कसेन**-भट्टारकरिं **मलधारि**-स्वामि··· ··· ···त्रैविद्य-देवरिं श्री-**वासुपूज्य**-सिद्धान्त-देवरिं··· ···देवरिं बन्द द्रमिळ··· ··· ···विलयमो षट्-तर्कविळ-बहु-भङ्गी-संगत-**श्रीपाळ**-त्रैविद्य-गद्य-पद्य - वाचो-विन्यास - निसर्ग-विजय-विलासम् ॥

सच्चरित्र-पवि··· ···विद्या-संशुद्ध-बुद्धये ।
विद्वज्जन-प्रपूज्याय **वासुपूज्याय** ते नमः ॥

इन्तु नेगल्तेवेत्त तम्म गुरु-कुलद पेम्पं नेगळि गोविन्द-सेट्टि माडिसिदनिन्ती-जिनालयम् ॥

मनु-चरितर् समस्त-भुवन-पावनीय-जिनेन्द्र-धर्म्म-वा-।
रिनिधि-सरोजिनी-प्रभव-राग-विवर्द्धन्य-राजहंसरण्।
णनुमनुजन्मनं गुण-युतग्गुणवजन-पारिजात रा- ।
मनिम्मडियागियुं **भरतराज**-चमूपनुमेम्बुदी-जगम् ॥
भारतदोळ् कानीनु- । दारतेयोळ् धर्म्म-नन्दनं सत्त्वदोळा- ।
चारदोळ् सिन्धु-नन्दन । ··· टडे **भरत-राज-दण्डाधीशम्** ॥

ई- **गोविन्द-जिनालय**क्के **प्रभव**-संवत्सरदुत्तरायण-संक्रान्ति व्यतीपातदन्दु ··· रदलि... आगि श्री-**नारसिंह-होय्सळ देवं श्रीपाळ-त्रैविद्य-देव**र शिष्य-रप्प **वासुपूज्य-सिद्धान्त-देव**र कालं कर्च्चि धारापूर्व्वकं श्रीमद्भद्दारं **मुगुळि**-यलि बिट्ट वृत्तिय सीमा-सम्बन्धि हिरियकेरेय केळगे गद्दे (आगेकी चार पंक्तियों में दान का विशेष वर्णन है) आ-बेद्दलेयोळगागि देवर सोडरिंगे गाणदलर-वाने ण्णेयूरोळगाव बण्डमारे वडहं गोण्डु विशद वण-सिद्दायवित्तुवल्लि··· ऐदु-पणवं महाजनं कोडुवरिन्तिनितुवं मूर्वत्तिर्व्वर्म्महा जनंगळ् धारापूर्व्वकं माडि कोट्टरु (आगेकी चार पंक्तियों में कुछ परिचित वाक्यावयव तथा श्लोक हैं) ई-धर्म्म-वनळिदतेळें [ते] य नरकं पुगुवं केरेय म ··· ··· डिमेयं ता-कट्टिसिद केरेयल्लि कण्डुगगद्देयं देवरिंगे बिट्टनु ॥ अशेष-महाजनङ्गळ् मत्तद-केरेयल्लि कण्डुग गद्देयं बिट्टरु । कळदलु म्-ट्टळ भट्ट ··· ··· ··· ···

[जिन-शासन की प्रशंसा । यह एल्कोटि-जिनालय है । राजा विष्णुकी प्रशंसा,

जिसने हिमालयसे लगाकर सेतु तक और सेतुसे लगाकर हिमालय तक तमाम शत्रु राजाओं को नष्ट कर दिया।

जिस समय द्वारावतीपुरवराधीश्वर, मलेय-चक्रवर्ती विष्णुवर्द्धन होय्सल देव शान्ति से अपने राज्य का शासन कर रहे थेः—

उनके चरण-कमलसे आजीविका करनेवाला, (अन्य-अन्य विशेषणों के साथ) अजितसेन भट्टारक का शिष्य महाप्रभु पेर्म्माडि हुआ। उसकी सन्तति निम्न-लिखित थीः—

(अनेक प्रशंसाओं के बाद) पेर्म्माडि का ज्येष्ठ पुत्र भीमय्य था, उसकी पत्नी का नाम देवलब्बे था। उनके पुत्र मसणि-सेट्टि और मारि-सेट्टि थे। दोरसमुद्र के मध्यमें मारमने एक बहुत ऊँचा जिनालय बनवाया। उसका पुत्र गोविन्द था। उसने मुगुली में एक बसदि बनवायी, जिसके लिए भीमय्य और उसकी पुत्री नागियक्कने पूजा का सामान दिया। उसके दो पुत्र थे,—बिट्टि-सेट्टि और नाकि-सेट्टि।

उसके गुरु वासुपूज्य की परम्परा समन्तभद्र स्वामी से लेकर कनकसेन, वादिराज, धनपाल,… …कसेन, कलधारि,… …वासुपूज्य,… …और श्रीपाल से होकर आई थी। उनके पैरों का प्रक्षालन करके मुगुलि अग्रहार में **नारसिंह-होय्सल देव** ने गोविन्द जिनालय के लिये उक्त भूमिका दान दिया।]

[**Ec, V, Hassn U., no 130.**]

३२८

बस्ति;—कन्नड़-भग्न।

[वर्ष प्रभव या पार्थिव (?)]

[बस्ति (चिक्कुरुळी प्रदेश) में, जिन्नेदेवर बस्तिके सामने के मानस्तम्भ पर]

स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर त्रिभुवनमल्ल तळकाडु-गोण्ड कोङ्गु-नङ्गलि-गङ्गनाडि-नोणम्बवाडि-बनवासि-हानुङ्गलु-गोण्ड भुज-बल वीर-गङ्ग प्रताप-चक्रवर्त्ति… श्री-

महाप्रधानी-दोरसमुद्रदल्लु सुखसङ्कथाविनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे ॥ श्रीमन्महा-प्रधानं हेग्गडे शिव-राज ··नम्बिहडे सोमय्यनु श्रीमत्-माणिक्य ······ जिनालयक्के पार्थिवसंवत्सरद आषाढ-सुद्ध-पाडिमि-आदिवार ··· ··· अतितिथिय-राहार-दानक माणिक्यदोळल माडि··· ··· ···चतुस्सीमेयलि गेदे गात्तु कम्बळ माळ् गाळ नूळ् ······ तोरे-मग्ग होले-मग्ग यिनितुमं धारा-पूर्वक-माडि कोट्टदत्ति

बसडिगे बिट्टी-धर्म··· । ··· करं सलिसुतिर्द्दंवर्गं पुण्यं ।
······ अळिद्वर्गं । पसुवुं ब्राह्मणन कोन्द गति समनिसुगुम् ॥

श्रीमतु माणिक्यदोळल मूलस्थ चन्दककोजन सुपुत्रं परवादि-मल्लोजं······ शासनमं ······ बाळिसुवदु ॥ वीतराग नमोऽस्तु मङ्गलमहा श्री

[जिससमय, (अपने वैदिक पदों सहित), प्रताप-चक्रवर्ती (१ नरसिंह-देव) अपने राज्यका सुख और बुद्धिमत्तासे शासन करते हुए राजधानी दोरसमुद्र में विद्यमान थेः—महाप्रधान हेग्गडे शिवराज ······ सोमय्प ने माणिक्य-दोळलु जिनालयको दान दिया।

चण्डककोज, जो माणिक्यदोळलुका मुख्य आदमी था, के पुत्र परवादि मल्लोज इस शासनकी रक्षा करेगा। वीतराग को नमस्कार।]

[Ec, 1V Krishnarajapet Tl, no 36]

३२६

खजुराहो—संस्कृत

(विक्रम सं० १२०५, माघ वदी ५)

ॐ ॥ ग्रहपत्यन्वये श्रेष्ठिपाणिधरस्तस्य सुत श्रेष्ठि ति-(त्रि) विक्रम तथा आल्हण । लक्ष्मीधर ॥ संवत् १२०५। माघ वदि ५ ॥

[यह लेख भी २ इञ्च लम्बी १ ही पंक्ति में है। इसके अक्षरोंका आकार करीब ½ इञ्चका है इसमें श्रेष्ठी (सेठ) पाणिधरके पुत्रोंका नाम दिया है। उनके नाम हैं—त्रिविक्रम, आल्हण और लक्ष्मीधर।]

El, l, no XIX no7 (P,153)

३३०

खजुराहो—संस्कृत

जैन मन्दिरोंकी प्रतिमाओं परसे तीन शिलालेख

[बिना काल निर्देश का]

१ [ग्र] हपत्यन्वये श्रेष्ठि श्रीपाणिधर [॥]

[यह अधूरा शिलालेख एक ही पंक्तिमें है, जो कि ५¾ इञ्च लम्बी है। लगभग ½ इञ्च अक्षरोंका आकार है। ग्रहपति—अन्वयु। जैसे इस शिलालेखमें है वैसे ही वह आगेके दो शिलालेखोंमें भी आया है।

[EI,I. P. 152.]

३३१

खजुराहो—संस्कृत

[संवत् १२०५=११४८ ई०]

[इस शिलालेख के लेखक का पता नहीं है। इतना ही मालूम है कि यह संवत् १२०५ का है।]

[A. Cunningham, Reports, XXI, P. 68, o, a.]

३३२

चित्तौड़ (राजपूताना);-संस्कृत-भग्न ।

[सं० १२०७ = ११५० ई०]

पं० १. ओं ॥ नमः सर्व्व [ज्ञा] य ॥ नमो...[प्र] त्यार्च्चिदर्व्व (र्घ) संकल्प-जन्मने । शर्व्वाय परमज्योति [र्द्ध] स्तसंकल्पजन्मने ॥ जयतात्स मृडः श्रीमान् मृडा...[1]

२. दनाम्बु (म्बु) जे । यस्य कण्ठच्छवी रजे से (शे) वालस्येव वल्लरी । यदीय-शिखरस्थितोल्लसदनल्पदिव्यध्वजं समण्डपमहो नृणामपि वि[दू]-

३. रतः पश्यतां अनेकभवसंञ्चितं क्षयमियर्त्ति पापं द्रुतं स पातु पदपंकजानतहरिः समिद्धेश्वरः ॥ यत्रोल्लसत्यद्भुतकारिवाञ्चः स्फुर [न्ति चि]-

४. त्ते विदुषां सदा तत् । सारस्वतं ज्योतिरनन्तमन्तर्विस्फूर्ज्जतां मे जतजाड्य-वृत्ति । जयन्त्यजश्र (स्र) पायूष'बिन्दुनिष्यन्दिनोमनाः । कवीनां [सम]

५. कीर्त्ती (र्त्ती) नां वाग्विलासा महोदयाः ॥ न वैरस्य स्थितिः श्रीमान् न जलानां समाश्रयः । रत्नराशिरपूर्व्वोस्ति चौलुक्यानामिहान्वयः ॥ तत्रो-

६. दपद्यत श्रीमान्सद्वृत्तस्तेजसां निधिः । मूलराजा (ज) महीनाथो मुक्ता-मणिरिवोज्व (ज्व) लः ॥ वितन्वति भृशं यत्र क्षेम (मं) सर्व्वत्र सर्व्वथा । प्रजा राजन्वतीं नून (नं) ज-

७. ज्ञेसौ चिरकालतः । तस्यान्वये महति भूपतिषु क्रमेण यातेषु भूरिषु सुपर्व्व-पतेर्न्निवासं । प्रोर्णु त्य वीध्रयशसा ककुभां मुखानि श्रीसिद्धरा-

८. जनृपतिः प्रथितो व (ब) भूव ॥ जयश्रिया समाश्लिष्टं ये विलोक्य समंततः । भ्रांत्वा जगंति यत्कीर्त्तिज (र्ज) गा [दे] मरमंदिरम् ॥ तस्मिन्नमरसाम्रा-

९. जां (ज्यं) संप्राप्ते नियतेव्वसात्[2] कुमारपालदेवोभूत्प्रतापाक्रांतशात्रवः ॥ स्वतेजसा प्रसह्येन न परं येन शात्रवः । पदं भूभृच्छिरस्सूच्चैः कारि-

१. छूटे हुए अक्षर 'नीव' हैं ।

२. 'तेर्व्वशात्' पढ़ो ।

१०. तो वं (वं) धुरप्यलं ॥ आशा यस्य महीनाथैश्चतुरम्बु (म्बु) धिमध्यगैः । ध्रियते मूर्द्धभिर्म्मंम्रे (म्रै) र्देवशेषेव सन्ततम् ॥ महीभृन्निकु (कु) जेषु शाकंभरी-

११. शः प्रियापुत्रलोके न शाकंभरीशः । अपि प्रास्तशत्रुर्भयात्कंप्रभूतः स्थितौ यस्य मत्तेभवाजिप्रभूतः ॥ सपादलक्षमामर्द्य नम्राकु-

१२. तभयानकः । [स्व] य [म] यान्महीनाथो ग्रामे शालिपुराभिधे ॥ सन्निवेश्य सि (शि) विरं पृथु तत्र त्रासितासहनभूपतिचक्रम् । चित्रकू-

१३. टगिरिपु [ष्क] लशोभां द्रष्टुमार नृपतिः क्रतुकेन ॥ यदुच्चसुरसद्माग्रोपरि-ष्टात्प्रपतन्सदा । रथं नयत्यलं मंदं मंदं भंगभयाद्रवि. ॥ य-

१४. त्सौधशिखरारूढकामिनीमुखसंनिधौ । वर्त्तमानो निशानाथो लक्ष्यते लक्ष्म-लेखया ॥ प्रफुल्त (ल्ल) राजीवमनोहरानना विवृत्तपाठीनविलोललोच—

१५. —।[१] ‿—त [भृङ्गावलिरोमराजयो रथांगवक्षोरुहमंडलश्रियः ॥ परिभ्रमत्सारसहंसनिस्वनाः सविभ्रमा हारिमृणालवा (बा) हुकाः । वृ (बृ)-हन्निर्तंवा (बा) मलवारि—

१६. —‿—[२] मुदे सतां यत्र सदा सरोङ्गनाः ॥ स (सु) रभिकुसुमगंधाकृष्ट-मत्तालिमालाविहितमधुररावो यत्र चाधित्यकायां । स्खलिततरणिभानुः सल्ल—

१७. — —‿— —‿ ‿ मयिषति शश्वत्कामिनः कामिनीभिः ॥ शुभे यद्वने शाखिशाखांतराले प्रियाः क्रीडया संनिलीना निकामं । घने [प]—

१८. ‿ — —‿— —‿—[णां] [न] नूगंधसक्तालयः सूव (च) यन्ति ॥ प्राप कदापि न या हृदये शं सानुनयं समया हृदयेशं । यद्वनमेत्य सु [सं ?]—

---

१. यहांके त्रुटित अक्षर संभवतः 'नाः । प्रम' हैं ।
२. यहांके त्रुटित अक्षर संभवतः 'राशयो' हैं ।

१६. ◡ ◡ — — — ◡ ◡ — ◡ ◡ —[र] तरागं ॥ एवमादिगुणे
दुर्गो स्वर्गे वा भुवि [सं] स्थिते । राजा विष्णुः परमीत्या संचरन्निजलील—
२०. या ॥ ति.........[ता ?] श्रयसंकुलम् । ददर्शागाधगंभीरस्वच्छं स्वमिव
मानसम् ॥ निर्म्मलं सलिलं यत्र पि—
२१. हितं प [द्मि]—◡— ।......जे नीलाब्ज (ब्ज) राग [भू] श्रियम् ॥
विमुच्य व्योम पातालरसा यत्र त्रिमार्गगा । लोका—
२२. न् पु [नाति]... .....◡—◡— ॥ [त] स्योत्तरतटेऽ द्रात्तीन-
म्रामरसमर्चितं । श्रीसमिद्धेश्वरं देवं प्रसिद्धं—
२३. जगती ◡— ॥............◡—◡ ते । त्रैसंध्य [तू] र्यनादेन
कलि (लिं) निर्भर्त्सयन्निव ॥ य [स्त ?] वस्याधिपत्येस्थान्पुरा म—
२४. ट्टारिकोत्त [मा ।] ..[वी] नृपाभ्य [र्च्या ?]...◡—◡— ॥
तस्याः शिष्याभवत्साध्वी सुव्रतवात भूषिता । गौरदेवीति वि [ख्या]...
[ता ?] कृतोद्यमा ॥ सु [मनो ?]—
२५. संसेव्या [मा ?]...यविनाशिनी । दुर्गा हि.........◡—◡[ता] ॥
यत्तपः पावनं वीक्ष्य पवित्रीकृतसज्जनं । सस्मरुः पूर्व्वयमि...◡—◡— ॥
शिवं प्रपूज्य त [त्प]—
२६. ...[म] गमत्प्रभुः । प्रणम्य [तावुभौ ?] भक्त्या सि (शि) रसा
◡—◡— ॥...[तस्वां] तः पूजार्थं हरपादयोः । कुमारपाल-
देवोदाद्ग्रामं श्री◡—◡— ॥......त्यां—
२७. टा दक्षिणपूर्व्वोत्तरपश्चिमतः सरःपाली भूणादित्य...राज...दीपार्थं घाण-
कमेकं सज्जनोप्यदात् दंडनाथ......मेतद्दानम—
२८. श्री ज [य] कीर्ति शिष्येण दिगंव (ब) रगणेशिना । प्रशस्तिरीदृशी
चक्रे...श्र रामकीर्तिना ॥ संवत् १२०७ सूत्रधा......[1]

---

१. इस पंक्तिके नीचे भी कुछ अक्षर खोदे गये थे; लेकिन प्रतिलिपिमें वे बिलकुल पढ़ने योग्य नहीं हैं ।

[(२८ वीं पंक्ति में) लेखका काल सं० १२०७ दिया हुआ है, जो, विक्रम संवत् मान लेनेसे, ११४६-५० या ११५०-५१ ई० ठहरता है; और इसका उद्देश्य चालुक्य राजा कुमारपालकी चित्रकूट पर्वत, आधुनिक 'चित्तौड़गढ़', की यात्रा, तथा वहाँ उसके द्वारा उस समय पर्वत पर 'समिद्धेश्वर [शिव]' देवके मन्दिरके लिये किये गये कुछ दानोंका उल्लेख करना है ।

"ॐ नमः सर्व्वज्ञाय" इन शब्दों के बाद, लेखमें पाँच श्लोक हैं । इनमेंसे शर्व, मृड, और समिद्धेश्वरके नामसे शिव परमात्माकी स्तुति करते हैं, जबकि अन्य दो सरस्वतीकी सहायताकी कामना, तथा कवियोंकी रचनाओंकी यशोगाथा गाते हैं । [पं० ५ में] लेखक चालुक्योंके वंशकी प्रशंसा करता है । उस अन्वय [वंश] में मूलराज राजा उत्पन्न हुआ था [पं० ६], और उसके तथा उसके बादके अन्य राजाओंके स्वर्गारोहणके बाद राजा सिद्धराज आये [पं० ७], जिनके उत्तराधिकारी कुमारपाल देव हुए [पं० ८] । जब इस राजाने शाकम्भरी (वर्त्तमान साँभर] के राजाको हरा दिया [पं० १०] और सपादलक्ष देशको मर्दन कर दिया [पं० ११], वह शालपुर नामके स्थानमें गया (पं० १२), और वहाँ अपनी छावनी (Camp) डालकर वह चित्रकूट [चित्तौड़गढ़] पर्वतकी सुन्दरताको देखने आया; वहांके मन्दिरों, राज-प्रासादों, झीलों या तालाबों, ढाल और जंगलोंका वर्णन १३-१६ की पंक्तियोंमें है । कुमारपालने वहाँ जो कुछ देखा उससे उसका चित्त प्रसन्न हुआ, और उत्तर दिशाकी तरफ ढालपर बने हुए 'समिद्धेश्वर' देवके मन्दिरमें आकर [पं० २२] उसने शिव ईश्वर और उसकी पत्नीकी पूजाकी, और मन्दिरके लिये एक गाँव दानमें दिया जिसका नाम सुरक्षित न रह सका [पं० २६) । पं० २७ में अन्य दान [एक 'घाणक' या कोल्हू दिये जलानेके लिये, आदि] बनाये गये हैं; और पंक्ति २८ बताती है कि जयकीर्त्तिके शिष्य रामकीर्तिने जो दिगम्बर सम्प्रदाय के मुख्य थे, यह 'प्रशस्ति' लिखी है, और लेखके उपर्युक्त कालका निर्देश करती है ।]

[EI, II, no xxxiii, Tl-421-424]

३३३

कैदाल;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक १०७२–११५० ई०]

[कैदाळ (गूलूरु परगना) में, प्रसन्न गङ्गाधर मन्दिर में पाषाणों पर]

(पहला पाषाण) ।

जयन्ति यस्यावदतोऽपि भारती-विभूतयस्तीर्थकृतोऽपि···।
शिवाय धात्रे सुगताय विष्णवे जिनाय तस्मै सकळात्मने नमः ॥
दिनकृत्-तेजक्के तेजं समनेसवदटुद्वृत्त-कण्ठीरवक्कन्त् ।
एनसुं साद्दश्यवार्पन्तमर-कुजके माषण्डलं नोळपडन्ता- ।
ग्यन-आहाटोप-भीमार्ज्जुन-नृग-नल-भूपालरोळ् णाटियेन्टी- ।
जनमेल्लं कान्तिसल् धात्रगे पतियेसेद **नारसिंघ-क्षितीशम्** ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वर **द्वारावती-पुर**-वराधीश्वर **यदु कुला**म्बर-द्युमणि सम्यक्त्व-चूड़ामणि श्रीमत्-**त्रिभुवन-मल्ल तळकाडु कोङ्गु-नङ्गलि गङ्गवाडि-नोळम्बवाडि-बनवसे - हानुङ्गल्लु-हलसिगे - बेळवोल-बुच्चङ्कि**-गोण्ड भुजबळ-वीर-गङ्ग विष्णुवर्द्धन-श्री-**नारसिंघ-देवरु** दुष्ट-निग्रह-शिष्ट-प्रतिपाळनं माडि **दोरसमुद्रद** नेलवीडिनोळु सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेयुत्तमिरे तत्पाद-पद्मोपजीवि ॥ स्वस्ति समधिगत-मञ्च महा-शब्द महा-सामन्तं वीर-लक्ष्मी-कान्तं नाल्वत-नाल्वर गण्ड **मान्यखेड-पुर**-वराधीश्वरं चतुर्मुख दायिग-गोन्दळं बडिवं तोडर्दर डोङ्कि**पवळ**रादित्यं **मरुगरे-नाडा**ळवं सामन्त-**गूळि-बाचिगे** ।

जिन-पति कूतु बेळ्य सुख-सम्पदमं हरनोल्दु कीर्त्तियम् ।
कनक-सरोरुहवं वर-चिरायुवमिम्बिनलि ईगळच्युतम् ।
मनमोसेदोप्पुतिर्प सिरियं वर-बुध जयाभिवृद्धियम् ।
मनसिज-रूप-बाचि निनगीगे शशाङ्क-कुळाद्रियुल्लिनम् ॥

सिंगद सौर्य्यवङ्कजन रूपु मुरारिय शक्तियागङ्गुम् ।
पिङ्गदे कर्ण्णनीव-गुणविन्द्रन लीले भुजङ्ग-राजनोळ् ।
सङ्गळिसिर्द्द पेर्मे सुरशैलद बिण्पुवोषल्दु निन्दवी- ।
गङ्गन पुत्रनोळ् सुभट-त्रान्वियोळूर्जित-सव्यसाचियोळ् ॥
चरेपोळ् चागद पेम्पिनिं रवि-सुतं संग्राममदोळ् रामनिं ।
पिरियं सौचदोळञ्जना-तनयनोळ् सादृश्यचे······· ।
निरुतं निर्मळ-धर्म्म-सूनुवेळे योळ् तानाद नाल्वत्त-ना- ।
ल्वर-गण्डङ्गिदिराम्प गण्डरोळरे विश्वम्भरा-भागदोळ् ॥
अदळ-कुळ-कमळ-हंसन- ।
नदळान्वय-राज्य-भवन-मणि-तोरणन- ।
प्पदळर रामं बात्रिय ।
विदिताम्नायमनलम्पिनिम् प्रकटिसुवे ॥
श्री-रमणी-प्रियं जगदोळूर्जित-तेजनपार-पौरुषम् ।
वीर-रस-प्रियं जसके नल्लनुदारनदेन्तु नोळ्पडम् ।
धारिणियल्लि ताने सुभटाग्रणि एम्बिनमोप्पिगोण्डदम् ।
वारिज-नाभनन्तदळ-वंश-कुळाम्बर-भानु बासयम् ॥
बासणिसि जगमणोळ्पिम् । भासुरतरमेनिप कीर्ति-दुकुलदिनांत ।
सासिर्म्मडि भीमङ्गेने । बासेयनन्तेसेदनावनुर्व्वी-तलदोळ् ॥
आतङ्गे तनयनादं । भूतलदोळ् राम भीमनिन्दर्जुननिम् ।
मातेनो सुभटनधिक-वि- । नूतं तां नेगर्द्दनेळगे गङ्गद-गङ्ग ।
ओवदिदिरान्त वैरियन् ।
आवगवान्तिरिदु गेल्दु जयदुन्नतियिम् ।
रावणनिं मिगिलेनिपम् ।
केवळमे जसदिनेसेद गङ्गद-गङ्ग ॥
अन्तेनिसि नेगर्द्द गङ्गन ।
सन्तति कलि-युग-धनञ्जयं कुल-तिलकम् ।

चिन्तामणि तानेनिपम् ।
भ्रान्तिल्लदे बेळ्र बनके नायक-बसव ॥
तत्-तनेयनान्त वैरिय ।
नेत्तरना-मृत-कोटिगेष्द्दुत्सवदिम् ।
गुत्तनुमनिळिसिदं जयद् ।
उत्तरदिं सुत्ति हरिव गङ्ग घरेयोळ् ॥
मत्त-गज-वैरि निपं । त्रित्तरदिन्दान्त शत्रुगं रूपिनोळा- ।
चित्त नेळिपं गुण ।
दुत्तरदिं सुत्ति परिव गङ्गं जगदोळ् ॥
अवन मगनधिक-त्रलनी- ।
भुवनकाश्चर्यवागे तन्नेय सौय्यम् ।
नव-लंश्वर बसवेयन् । अवितथ-वाक्यक्के ताने मोदलेनिसिर्द ॥
असदलवेनिसिद कीर्त्ति- । प्रसरतेयं तळेदु खेचरङ्गेणेयादम् ।
वसु...पोगळल्के नायक- । बसवं त्रैलोक्य-वीर मषेयुगे काव ॥
कुलवे सेयलु बलवेमयलु । त्रलवेसेयल् तेजवेसेयलुर्व्वी-तळदोळ् ।
कलि-बसवङ्गनुनयदिं । चलवषिवं तनेयनादनुत्सवदिन्दम् ॥
अट्टे कुणिदाडे रणदोळ् । निट्टुर-गति तोर्द्दरङ्कुशं रण-धीरम् ।
क...ळहितरिगे भयं । बुदल् चलवषिघनिषिवनान्तरि-त्रलवम् ॥
सामन्तं चलवषिवङ्गा-मद-करि-गमन तनेयनादं मुददिम् ।
भीम-भुज...अदळर । रामं श्री-गङ्गनमळ-लक्ष्मी-सङ्गम् ॥
भीमङ्गेणे भुज-बळदिं । रामङ्गेणे शौर्यदेळगेपिं रुपिनोळा- ।
कामङ्गेणेयेनलोप्पि...। ई-महियोळ् गङ्गनमळ-लक्ष्मी-सङ्गं ॥
आतन पराक्रममदेन्तेन्दोडे ।
अदटप्पुण्डरि-नायकप्पुलबरन्दोन्दागि... ।
मदर्दि निन्दोडवन्दिरं बवनवोळ् सामन्त-काळानलम् ।
मिदुळं नेचर धारे सूसे मळाइंय्यय्य जीयेक्किनम् ।

कदनोद्योगदे गङ्गन••गेल्दनान्तारातिसन्दोहमम् ॥
येडरिदरातियेम्बवन वंशमनुम-कुठारदिन्दवम् ।
कडिदु विरोधि-पर्व्वतमनागडे तन्न भुजा••वज्रदिम् ।
किडिसि बयाङ्गना-रमणनूर्जित-गङ्गनिळा-तळाग्रदोळ् ।
तोडर्दर-डोक्कियार्चिसिदनुन्नतिसं शशि-सूर्यरुळ्ळिनम् ॥
एरेदङ्गा-सुर-धेनुवं मिगुवनान्तर्गोवियोळ् रोषदिम् ।
नरनिन्दं घन-शौर्य्यनङ्गभवनं रोडाडिपं रूपिनिम् ।
परिपाळ् शक-विळासदि••भळर•••नोडे नाल्वत्त नाल् ।
वर गण्डं कलि-गङ्गनार्गवधिक सामन्त-कण्ठीरवम् ॥
आतन सति **बेनकाम्बिके** । सीतेगरुन्धतिगे रतिगे••• ।
ख्यातिगे गुणदुन्नतिगं । मातेम् तां परिपवल्ते धात्री-तळदोळ् ॥
कन्तु-शर-श (स) दृश-रूपिं । चिन्तामणि विबुध-जनकव्•••जनकं
भ्रान्तिल्लदेम्•••••।•••अमर्दु नेगल्द बेनकाम्बिकेयम् ।

आ—दम्पतिगळ्गे ।

हरिगं गोमिनि-कान्तेगं मनसिजं रुद्रङ्गे रुद्राणिगम् ।
परमोत्साहदे षण्मुखं जनि [यि] पन्ती-धीर-गङ्ग••• ।
•••लक्ष्मीपतियप्प श्री-बेनविका- **मादेविगं** पुट्टिदम् ।
हर-पादाम्बुज-वृं (भृं) ग-**बाचय**•••••••••••• ॥
अदळ-कुळमेम्ब कुलदोळग् । उदयसिदं दिनपनन्ते तेजोनिलयन् ।
कदन-धनञ्जयनहितर । मद-हरणं शूर-बाचि तोडर्दर डोक्के ॥
तोडर्द विरोधिगन्तकनु बेडिदवङ्गे कल्प-भूरुहम् ।
तडेयदे बन्दु कण्ड शरणार्तिगे वज्रद कोटेयेम्बुदी- ।
पोडवि निरन्तरं जसके नल्लननम्बुजनाभनन्ननम् ।
तोडर्दर डोक्केयं सुभट-बाचियनूर्जित-सव्यसाचियम् ।
अदळ-कुलाम्बर-द्युमणि दायिगरन•••ले गेल्द लीलेयिन्द् ।
ओदविद मान्यखेड-पुरदीशनुदारनपार-पौरुषम् ।

कदन-धनञ्जय······साहस-गङ्गनुर्व्वियोळ् ।
मदनन रूपिनिन्देसेद बाचियै धन्यनदेन्तु नोळ्पडम् ॥
तोडदर गण्ड वैरिगळ गण्ड मदान्धर गण्ड वीरदिन्द् ।
एडर्वर गण्ड मेच्चदर गण्ड पिसुण्बर गण्डनेन्दुदम् ।
तोडेयद गण्डनाहवके सोलद गण्डनदेन्तु नोल्पडम् ।
तोडदर दोर्क्के बाचि निनगार ह्रोरे गण्डरिवा-तळाग्रदोळ् ॥
बुरदोळ् श्री-वधु कौस्तुभम्बोलेसेवळ् बाग्-वाण······थिम् ।
परमानन्ददे वक्त्रदोळ् तिलकमं पाल्तिर्प्पळन्तोल्दु तोळ् - ।
बेरगिं वीरर बीर-लाञ्छम नयदि कूतिक्कुं नाल्वत्त-नाळ् - ।
वर गण्डं कळि-बाचियोळ् सुबगनोळ् सामन्त-सङ्क्रन्दनोळ् ।
हरियं मार्कोळुगुं भयङ्गोळुविनं दिग्-दन्ति-दन्तङ्गळम् ।
पिरिदाश्चर्य्यदे कित्तुं तोर्क्कुवदटिं दिक्पाळ-सन्दोहमम् ।
करेदिन्तिन्तिरिवेङ्गु तन्न बळदि नोळ्पाग नाल्वत्त-नाळ् - ।
वर-गण्डं कळि बाचि-देवनधिकं सामन्त-सङ्क्रन्दनम् ॥
धरेयं यीइ दिनेश-सूनु-सदृशं त्यागक्के शौर्य्यक्के तान् ।
अरविन्दोदरनल्ते पाट निज-रूपि···पुष्पायुधम् ।
दोरे तामादरेनल्के शौचदळं ताळिर्द नल्वत्त-नाळ् - ।
वर गण्डं कलि-बाचि-देवनेसेदं सामन्त-सङ्क्रन्दनम् ॥
भरदिन्दान्त विरोधियं रण-मुख-व्यापारदोळ् तन्न दुर् - ।
द्धर-बाहा-बळदिं पडल्वदिसेयुं भूताळियुं काळियुम् ।
नोरे-नेत्तर-ण्णोणनेम्बिवं नोणोयुतन्तेर्द्दिडे नाळ्वत्त-नाळ् - ।
वर गण्डं कळि-बाचि-देवं गेलुगुं सामन्त-सङ्क्रन्दनम् ॥
सुर-भूजावळि पणुदेय्दे नयदिं धात्री-तळक्केम्बिनम् ।
निरुतं दान-विनोदि कीर्त्ति-निळयं वैरीभ-पञ्चाननम् ।
स्मर-रूपं करेदीवनार्ग्गवधिकं तानाद नाल्वत्त-नाळ् - ।
वर-गण्डं कल्ल्-बोचि-देवनधिकं सामन्त-सङ्क्रन्दनन् ॥

सामन्तं सुर-धेनुवित्तु तणिपळ् विश्वम्भरा-भागमम् ।
सामन्तं रिपु-सैन्यमं तरियला-प्रत्यक्ष-वीरार्ज्जुनम् ।
सामन्तं शरणेन्दवङ्गे दयेयिं गम्भीर-रत्नाकरम् ।
सामन्तं कलि-बाचियाग्रजनिकं वैरीभ-पञ्चाननम् ॥
मरुगरे-नाडाळ्वं गुण- । देरेयं सामन्त-बाचियदळग रामम् ।
मरुगरे-नाडोळगे हे- । ररिकेय कय्दाळदल्लि धर्म्मोन्नतियम् ॥
आ—कय्दाळद विळासार्पदवदेन्तेन्दोडे ।
तुरुगिद मामरदिं बेळेद् । एरयिद सौगन्धि-शाळियिं पू-गोळदिं ।
केरेयिं देवाळयदिं । नेरे सोगयिस तोक्कु लीलेयिं कय्दालम् ॥
विविधालङ्कृत-देव-सौध-तळदिं वेश्याङ्गना-बाटदिम् ।
कवि-राज-प्रवरक्कळिं सुळिव नाना-गेय-चातुर्य्यदिम् ।
नव-देशीय-विळासदिं सुबगिनिं कय्दाळमोप्पिप्पुदा- ।
दिविजेन्द्रोन्नत-लोकमं नगुवबोल् तन्नुद्ध-सौन्दर्यदिम् ॥
धनदनुमानिळिप परदरि ।
मनुगळनिळिप मुनिगळिं बगेवागळ् ।
मनसिजननिलिप विटरिम् ।
बनितेयरिं नाडे सोगयिकुं कय्दाळम् ॥

(दूसरा पाषाण) ।

अन्तनेक-विळासक्कावासमुं सकल-लक्ष्मी-निवासमुमेनिसि सोगायिसुव कय्दाळदोळ् ।

कन्द ॥ उद्धरिसि जैन-भवनमन् । उद्धरिसि सि(शि)वालयङ्गळं मुददिन्दन्त् ।
उद्धरिसि विष्णु-गेहमन् । उद्धरिसिदनल्ते बाचि जसदुन्नतियम् ॥
सोगयिप कामधेनु जिन-शासन-लक्ष्मिगे कल्प भूरुहम् ।
मृगधर-भूषणागम-तपस्विगे सिध-रस-प्रवाहमेम् ।
नेगेदुदु बुद्ध-कोयिकेने चिन्तितदीव महांशु-रत्नवा- ।

नगधरनागमशरिगमेन्दोडे बाचियिदेम् कृतार्थनो ॥
धरेगेसेव नाल्कु-समेपद । सिरि कल्यावनिरुहं बुध-जनकेम् ।
दोरेवेत्त पेम्पिनिन्दं । पिरियं धर्म्मावतार गङ्गन पुत्रम् ॥
श्री-लीलायतनक्के ताने नेलेयाय्तेम्बोन्दु संसेव्यदिम् ।
नीलग्रीव-पदाब्ज-भृङ्गनधिकं श्री-बाचि-देवं यश- ।
लोलं वीर-गुणाम्बुरासि मुददि कय्टाळदोळ चेल्विनिम् ।
कैलासक्केणेयागि माडिसिदनी गङ्गेश्वरावासमम् ॥
श्री-नारायण-गृहमं । श्री-नारी-रमणनदळ-वंश-कुलाम्बर- ।
भानुवेनिसिद्दं बाचिय- । नूनं माडिसिदनलुते तोडर्दर डोक्कि ॥
चलवरिवेश्वरमं गुण- । जलधि जय-श्रीगधिपं बुध-जनकं तां ।
बलियेनिप बाचि-देवं । कुल-नगमं मिगुव पेम्पिनिं माडिसिदम् ॥
श्री-महिमं गुण निळयं । भीम-पराक्रमनु बाचि-देवं मुददिम् ।
रामेश्वर-सदनमना- । हेमाद्रिगे मिगिलिदेम्बिनं माडळ्सिदम् ॥
भारतदोळ्ळादुदीग सुरशैळविदेम्ब मनोनुरागदिम् ।
धरे पोगळन्तु सन्दटळ-वंश-शिखामणि बाचि-देव ताम् ।
वर-जिन-मन्दिरङ्गळने माडिसि लोकदोळोल्दु कीर्तिगा- ।
भ(भा)रतनो गुत्तनो शिवियो खेचरनो बलि चारुदत्तनो ॥
रामन बाणदिन्दे लघुवादुदु नोर्प्पड मत्त-वानरर् ।
प्रेमदे पर्व्वत-प्रततियिदमे कट्टिद सिन्धु तन्ननी- ।
भीम-पराक्रम मुडदे कट्टिसिदोळ्पन पेम्पिनिन्दे ताम् ।
भीम-समुद्रवेळिपु [दु] वार्धिय गुणिपन पणिपनेल्गोयम् ॥
उदधिय गुणगस्त्य-मुनि-पुङ्गवनिन्दमे निन्दुदागियुम् ।
मदनहर-प्रताप रघु-रामन रामन बाण-घातदिन्द् ॥
उरिदुददेषुदेन्दु सुभटाग्रणि बाय पेम्पिनन्ददिन्द् ।
बदळसमुद्रवेळिपुदु तन्न महत्वदिनम्बुराशिय ॥
दिव्यूरं वेग्राळिगे । सर्व्वेश-पदारबिन्दनदळर रामम् ।

दोर्-बळ-विभासि बाचम् । सर्व्वबाधं परिहारवेनिसिये कोट्ट ॥

इन्तु चतुस्-समय-धर्म्मोद्धार-धौरेयं श्रीमन्-महा-सामन्त-गूलि-**बाचि-देवन**नेक-देवालय-बसदि-विष्णु-गृहङ्गळं माडिसियु महा-तटाकङ्गळं कट्टिसियु **स [श] क-वर्षं १०७२ डेनेय प्रमोद-संवत्सरद फाल्गुन-मासदमास्ये-यादिवार-सूर्य्यग्रहण-व्यतीपातदन्दु** तम्मय्य **सामन्त-गंगैयंगे** परोक्ष-विनेयवागि श्री**गङ्गेश्वर-देव...**यन पेसरलु देगुल माडिसि देवर प्रतिष्ठे माडिया-गङ्गेश्वर-देवरङ्ग-भोगक्कमष्ट-विधार्च्चने-तपोधनराहार-दानक्कं देगुलद खण्ड-स्फुट-जीर्ण्णोद्धारक्कं **हिरिय-केरेय** केळगे बिट्ट गद्दे सलगे ३ मानियलु बिट्ट गद्दे सलगे ३ बेद्दले सलगे १ मन्नवायङ्गे दिव्बूरं परोक्ष-विनेयवागि स-ब्राह्मणरिगे सर्व्वबाधा-परिहारवागि धारा-पूर्व्वकं माडि भूमि-दानवं कोट्ट मत्तं श्री-केशव-देव-रङ्ग-भोगकमष्ट-विधार्च्चनेगं ब्राह्मणराहार-दानकं देगुलद खण्ड-स्फुट-जीर्ण्णोद्धारकं दिव्बूर केरेय केळगे किट्ट गद्दे सलगे १० आगद्देय बळिय तोण्ट बेद्दलेयुदं सलु-वुदु मत्तं तम्म मुत्तय्यं सामन्तं चलबरिबङ्गे परोक्ष-विनेयवागि कित्तगळियलु चलबरेश्वरमेन्दाय(त)न पेसरलु देगुलवं माडिसि आ-चलबरेश्वर-देवरङ्ग-भोगक्कं अष्टविधार्च्चनेगं तपोधनराहार-दानक्कं देगुलद खण्ड-स्फुटित-जीर्ण्णोद्धारक्कमा-कित्तगळिय केरय केळगे बिट्ट गद्दे सलगे ३ बेद्दले सलगे १ मत्तं तन्न मगळ **कुमारि चेन्नवे-नायकिति**गे परोक्ष-विनेयवागि श्री-**रामेश्वर देवर** देवालयमं माडिसि आ-देवरङ्ग-भोगक्कमष्ट-विधार्च्चनेगं तपोधनराहार दानक्कं देगुलद खण्ड-स्फुट-जीर्ण्णोद्धारक्कं हिरिय-केरेय केळगेयुम् गद्दे सलगे ३ मानियलु गद्दे सलगे ३ बेद्दले सलगे १ मत्तं **रामेश्वर-देवर** नन्दा-दिविगेगे सर्व्व-बाधा-परिहारवागि बिट्ट येत्तु-गाण १ मत्तं सामन्त-**बाचि-देवन** मनस्-सरोवरालंकार राजहंसिनि ॥

कन्द ॥ भूमिगे सरि पेम्पिन्दं । कामाङ्गनेगधिकवेसेव शौचोन्नतियिम् ।

भीमले एन्दतिमुददिन्द् । ई-महि बण्णिपुदु **बाचि-देवन** सतियं ॥

जिन-पतिदेय्य तन्दे कलि योद्दरे-नाकनोल्पनान्त तन्-।

बननि विनूते चिम्बले महासति गूळिय-**बाचि-देव** सन्-।

जन-नुत वीर तन्न पतियन्दोडे पोल्ववरार् धरित्रियोळ् ।
वनितेय······भीमलेयोळूर्जित-पुण्य-गुणाभिरामेयोळ् ॥
रतिगं गोमिनिगं पा-। र्वतिगं मिगिलु सुबगिनिं सम्बददिं तान् ।
अतिशय-रूपोन्नतियिं । क्षितियोळे ले बाचियरसि भीमले-नारि ॥

इन्तु नेगर्द्द महा-सौभाग्य-शील-सौन्दर्य्य-सम्पन्नेयप्पं परिवार-सुरभि **भीमवे**-नायकितियर्गे परोक्ष-विनेयवागि श्रीमन्महा-सामन्त-**बाचि-देवं भीम-जिनालयमेन्दु** बसदियं माडिसियुं **भीमसमुद्र**मेन्दु कन्ने-गेरेयं कट्टिसियुमा-केरेय केळगे भीम-जिनालयद श्री-**चन्न-पार्श्व-देव**रङ्ग-भोगक्कमष्ट-विधानार्च्चनेगं ऋषियराहार-दानक्कं बसदिय खण्ड-स्फुट-जीर्णोद्धारक्कं कोट्टु बिट्ट गर्द्दे सलगे ८ मत्तमा-भीमसमुद्रद होलदलु बेद्दले सलगे २ मत्तं सम्यक्त्व-चूडामणियेनिसिद **सेनबोव-मारमय्यं** सामन्त-गूलि-**बाचिदेव**न कैय्यलु भूमियं पडेदु **मुदुगेरे**-गिळिद बागिनोळ् **मारसमुद्र**मेन्दु कन्ने-गेरेयं कट्टिसि आ-केरेयं भीम-जिनालयद श्री-चन्न-पार्श्व-देवरङ्ग-भोगक्कमष्ट-विधार्च्चनेगं ऋषियराहार-दानक्कं बसदिय खण्ड स्फुट-जीर्णोद्धारक्कं कोट्टु बिट्टरिन्ता-मारसमुद्रमादियागि समस्त देवालय-विष्णु-गृह-बसदिगे बिट्ट-भूमियं कुरुक्षेत्र **बाणरा(रणा)सि-प्रयागे**-अघ्यतीर्थमेन्दु प्रतिपालिसुवुदु ॥

मत्त ॥ परमानन्ददे **बाचि-देव**नभयं दिब्बूलै-गण्डुगम् ।
दोरेबेत्तगाद गर्द्दे-बेद्दलयनन्ता-तोण्ट-सद्-गेहमं ।
स्थिर-तेजं कुडलिन्तुदात्त-पडेदं चातुर्य्य-चन्द्रेश्वरम् ।
वर-विद्या-निधि **बाचि-राज**विबुधं चन्द्रार्करुळ्ळन्नेगम् ॥
सुरगिरिमुळ्ळिनं जलधिमुळ्ळिन तारनगेन्द्रबुळ्ळिनम् ।
सुरनदिमुळ्ळनं शिरियुमुळ्ळिनवग्गद सूर्यरुळ्ळनम् ।
सुर-सभेमुळ्ळिनं वरदे भारतियु······तारमुळ्ळिनम् ।
धरे शशिमुळ्ळिनं निळुके गूलिय-वाचिय धर्म्म-शासनम् ॥

(वही अन्तिम श्लोक)।

[जिस समय, द्वारावतीपुरवराधीश्वर, यदुकुलाम्बरद्युमणि, तलकाडु कोङ्गु नङ्गलि गङ्गवाडि नोलम्बवाडि बनवसे हानुङ्गल् हलसिने बेल्वोळ और उच्चंगि

पर कब्जा करने वाले भुजबल-वीर-गङ्ग विष्णुवर्द्धन नारसिंघ-देव, शान्ति से राज्य करते हुए, दोरसमुद्र के निवासस्थल पर थेः—

तत्पादपद्मोपजीवी मान्यरवेडपुरवराधीश्वर, अदल लोगोंके लिये सूर्य, मरुगरे-नाड्का अधिपति सामन्त गूळि-बाचि था। उसकी प्रशंसायें, गङ्ग-पुत्रके रूप में उसका वर्णन। उसका पुत्र गुड्डद गङ्ग था। उसके कुलमें नायक बसव हुआ। उसका पुत्र गङ्ग था, जिसने गुत्तको हराया था। उसका पुत्र बसवेय था। उसका पुत्र चलवरिव था। उसका पुत्र गङ्ग था, जिसकी स्त्री बेनवाम्बिके थी, और उनका पुत्र मान्यरवेड-पुरका अधीश बाचय या वाचि था उसकी विस्तार-पूर्वक प्रशंसा।

मरुगरे-नाड्का अधीश, अदल-राम, सामन्त-बाचि मरुगरे-नाड् के कयूदाल (कैदाल) में अतीव उच्च धर्मका पालन कर रहा था। कयूदाळकी शोभा का वर्णन। वहाँ उसने जिन मन्दिर, शिव मन्दिर और विष्णु मन्दिर सभी को सहारा दिया। और वहाँ उसने यह गङ्गेश्वर मन्दिर, एक नारायण मन्दिर, एक चलवरिवेश्वर मन्दिर, एक रामेश्वर मन्दिर, और जिन मन्दिर बनवाये। तथा उसने भीमसमुद्र और अडळ समुद्र नाम के तालाब बनवाये। तथा दिब्बर ब्राह्मणोंको दिया।

इस प्रकार चार मतोंके धर्मको बढ़ाते हुए, सामन्त गूळि-बाचि-देवने, बहुत-से मन्दिर, बसदि, और विष्णु-मन्दिर, तथा बड़े-बड़े तालाब बनवा कर,—(उक्त मितिको), सूर्य-ग्रहणके समय, अपने पिता सामन्त गङ्गैयकी मृत्युके स्मारकमें, उनके नामसे एक मन्दिर बनवाकर उसमें गङ्गेश्वर-देवको स्थापना की, और मन्दिरकी मरम्मत, पूजा-विधि, तथा मुनियोंके आहारके लिये (उक्त) हिरिय-केरेकी ज़मीन दी।

इस तरह केशव-देव, चलवरिवेश्वर-देव, रामेश्वर-देवके लिये भी भूमियाँ प्रदान कीं। तथा अपनी पत्नी भीमलेके नामपर,—जिसका देव जिनपति था, पिता याळरे-नाक और माता चिम्बले थीं,—भीम जिनालय नामकी बसदि बन-

वायी, भीम समुद्र नामका पवित्र (Virgin) तालाब बनवाया और उस तालाबकी सारी जमीन चन्न-पारिद्य देवके लिये प्रदान कर दी।

तथा सेनबोव मारमय्यने, सामन्त गूळि-बाचि-देवसे भूमि प्राप्त करके, मार-समुद्र नामका पवित्र तालाब बनवाकर भीम जिनालयके पार्श्व-देवके नाम कर दिया।

इन विभिन्न दानोंको बाणार(राण)सी, प्रयाग इत्यादि पवित्र तीर्थोंके समान समझा जाय। ये सब दान विद्या-निधि मा (बा) चि-रजके अधीन किये गये थे। शासन हमेशा कायम रहे, इसकी कामना।]

[Ec, XII. Tumkur Tl., No. 9.]

३३४

बामणी;—संस्कृत और कन्नड़।

[शक १०७२—११५० ई०]

१. स्वस्ति ।। जयत्यमळ-नानार्थ-प्रतिपत्ति-प्रदर्शकम् । अर्हतः पुर [,] दे [व]-
२. स्य शासनं मोह-शासनम् ।। श्री-**शीलहार**-वंशे **अतिगो** नाम [क्षि]-
३. तीशस्समजातस्तत्पुत्रौ **गोङ्कल गूवलौ** । तत्र **गोङ्कलस्य** सु [नु]-
४. **र्म्मारसिंहदेव**स्तदपत्यं **गण्डरादित्यदेव**-तस्य नन्दनः । समधिग-
५. तपञ्चमहाशब्द-महामण्डलेश्वरः । **नगर-पुर**-
६. वराधीश्वरः । श्री **शीलहार**-वंश-स (न) रेन्द्रः । जीमूतवाहनान्वय-
७. प्रसूतः । सुवर्ण-गरुड़-ध्वजः । मरुवक्क-सर्पः । अय्यनसिंघ-
८. गः । रिपु-मण्डलिक-भैरवः । विद्विष्ट- [ग] ज-कण्ठीरवः । इडुवरादित्यः ।
९. कलियुग-विक्रमादित्यः । रूप-नारायणः । गिरि-दुर्ग्ग-लंघनः । श-
१०. निवार-सिद्धिः । श्री-महालक्ष्मी-लब्ध-वरप्रसाद इत्यादि-नामावलि-विराजमानः।
११. श्रीमद्-विजयादित्यदेवः । वळवाड-स्थिर-शिबिरे सुख-संकथा-वि-
१२. नोदेन विजय-राज्यं कुर्व्वन् । **शक-वर्षेषु त्रिसप्तत्युत्तरसह**-

१३. **ख-प्रमितेष्वतीतेषु अङ्कतोऽपि १०७२ प्रवर्त्तमान-प्रमोद-संव-[त्स]-**
१४. **र भाद्रपद-पूर्णमासी-शुक्रवारे सोमग्रहण-पर्व्व-निमित्त-**
१५. **णवु [क] गेगोळा**नुगत-**मडलूर**-ग्रामे सणगमय्य-चं [ध]-
१६. व्वयोः पुत्रेण । पुन्नकब्बायाः पत्या जेन्तगावुण्ड-हेम्म-
१७. गावुण्डयोः पित्रा **चोघारे-कामगावुण्डेन** कारितायाः ।
१८. श्री पार्श्वनाथवसतेर्द्देवानामष्टवि [ध] र्च्चन-निमित्तं । वसतेः ख-
१९. ण्ड-स्फुटित-जीर्ण्णोद्धारार्त्थं । तत्रस्थित-यतीनामहा-
२०. र-दानार्त्थं च तस्मिन्नेवग्रामे **कुण्डिदेश**-दण्डेन निव-
२१. र्त्तन-चतुर्थ-भाग-प्रमित-क्षेत्रम् । तनैव दण्डेन त्रि-
२२. शत्स्तम्भ-प्रमाण पुष्पवाटीं । द्वादशहस्तप्रमाण-
२३. गृह-निवेशनं च स राजा निज-मातुल-लक्ष्मण-सामन्त-विज्ञा-
२४. पनेन तस्यैव गोत्रदानार्त्थं श्री-मूलसंघ-देशीयग-
२५. ण-पुस्तकगच्छ-**क्षुल्लकपुर**-श्री-रूपनारायण-चैत्याल[य]-
२६. स्याचार्य्यः ॥ श्री-**माघनन्दिसिद्धान्तदेवो** विश्व-मही-
२७. स्तुतः । **कुलचन्द्र**मुनेः शिष्यः कुन्दकुन्दान्वयां—
२८. शुमान् ॥ अपि च ॥ रोदो-मण्डलमङ्ग किं स्व-वपुषा
२९. व्याप्नोति शक्रद्विपः किं क्षाराम्बुधिरावृणोति भुवनं गङ्गाम्बु
३०. किं वेष्टते । स्यानाऽयं प्रिय-सुस्थिरः समरुचत् कि सान्द्र-चन्द्रात-
३१. पो यत्कीर्त्येत्थमनूद्धतक्कणमसौ श्री-**माघनन्दी** जयेत् ॥त-
३२. न्मुनीन्द्रस्यान्तेवासिना**महनन्दि** सिद्धान्तदेवानां यादौ
३३. **प्रक्षाल्य धारा-पूर्व्वकं** सर्व्व-नमस्यं सर्व्व-बाधा-परिहारमाच-
३४. **न्द्रार्क्कतारं** स-शा [स] नं दत्तवान् ।।@।। **स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसु-**
३५. **न्धरां । षष्टिं वर्षसहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः ॥ न विषं विषमि-**
३६. **त्याहुर्व्वस्वं विषमुच्यते । विषमेकाकिनं हन्ति देवस्वं पु-**

३७. त्र-पौत्रकम् । अपि च ॥ सवत्सां कपिलां शस्त्र्या हत्वास्या
३८. मांस-शोणिते । गङ्गायां सोऽस्ति यो गृण्हात्यमुं धर्म्मोव्वरां
३९. नरः ॥ तत्पातकफलेनासौ यावच्चन्द्रदिवाकरं । तावद्घोरतरं दुःख-
४०. मश्नुते नरकावनौ ॥ अन्यच्च ॥@॥ मातुस्साद्र्-कपालेन सोऽत्ति मा-
४१. तम-वेश्मसु [।] श्व-मांसं भिक्षया लब्धं गये (?) यो धर्म्मभूहरः ॥@॥
४२. भद्रमस्तु जिनशासनाय ॥ सम्पद्यतां प्रतिविधानहेतवे । अन्य-
४३. वादि-मदहस्ति-मस्तक-स्फाटनाय घटने पटीयसे ॥@॥ अक्कसाले **बं-**
४४. **म्म्योजन** पुत्र । **अभिनन्ददेवर** गुड्ड **गोम्योजन** खडरगे ॥@@@॥

सारांश

[यह शिलालेख एक पत्थर पर उत्कीर्ण है। यह पत्थर **बामणी** गांवके जैनमन्दिरके दरवाजे पर अवस्थित है। बामणी गाँव **कामल** शहरसे दक्षिण-पश्चिम ५ मील पर है। कामल कोल्हापुर रियासतका एक मुख्य शहर है।

इस शिलालेखमें **शीलहार** वंशके **महामण्डलेश्वर विजयदित्यदेव** के एक दूसरे दानका उल्लेख है। २-१० की पंक्तियोंमें दाताकी वही वंशावली और वर्णन है जो नं० ३२० के कोल्हापुरके शिलालेखमें है, सिर्फ इसमें दूरके अपने ६ सम्बन्धियों (कीर्तिराज, चन्द्रादित्य, गूवल द्वितीय, गङ्गदेव, बल्लालदेव और भोजदेव) तथा नौ अपने कम महत्त्वके विरुदों (पदों) को छोड़ दिया है। पंक्ति ११-३४ में उल्लेख है कि अपने निवासस्थान **वळवाड** में रहकर ही शासन करनेवाले **विजयादित्य देव** ने अपने मामा सामन्त लक्ष्मणके कहनेसे तथा अपने गोत्रदानके लिये, **जब कि प्रमोद वर्ष चालू था, अर्थात् १०७३ शक वर्षके व्यतीत होने पर, भाद्रपद महीनेकी पूर्णिमा तिथिके शुक्रवारको चन्द्रग्रहणके निमित्तसे—एक भूमिका दान किया।** यह भूमि कुण्डिके नापसे नापमें चौथाई निवर्तन थी। साथमें तीस स्तम्भ (खम्भे) प्रमाण पुष्पवाटिका, १२ हाथका एक मकान भी थे। यह सब भूमि वगैरः···**जतु** **[क] गेगोल्ल** जिलेके **मडलूर** गाँवकी थी। इस दानका प्रयोजन यह था कि

इससे चौधौरे कामयाकुण्डके बनवाये हुए उसी गांवके मन्दिर की पार्श्वनाथ भगवानकी अष्टविध पूजन होती रहे, जो कुछ मन्दिरके मकानका बिगाड़ हो वह सुधरता रहे तथा वहां रहनेवाले मुनिजनोंके लिये उससे उनके उपहारका प्रबन्ध होता रहे। यह दान शिलालेख नं० ३२० में वर्णित श्री माघनन्दि सिद्धान्तदेव के ही एक और शिष्य श्री अर्हनन्दि सिद्धान्तदेवके पैरोंका प्रक्षालन करके किया गया था। इस शिलालेखमें, नं० ३२० के कोल्हापुर वाले शिलालेखमें न मिलनेवाली एक नई बात श्री माघनन्दिसिद्धांतदेव के विषयमें यह है कि उन्हें यहाँ **कुल चन्द्रमुनिका शिष्य** तथा **'कुन्दकुन्दके अन्वय का एक सूर्य'** बतलाया है। अन्तमें पंक्ति ४३-४४ में पुरानी कन्नड़में यह बताया है कि इस लेखको सुनार बम्योजके पुत्र तथा अभिनन्दनदेवके शिष्य **गोळोज**ने खोदा था।]

[EI, III, No. 28, T. R. A.]

३३५

कोन्नूर;-संस्कृत।

—[बिना काल-निर्देशका, पर १२ वीं शताब्दिका मध्य (कीलहार्न) ।]—

५९. मिथ्याभाव-भवातिदर्प्प-पर-तद्दुश्शासनोच्छेदकम् प्राशाशा-वशवर्त्तमा-

६०. न-जनता-सत्सौख्यसम्पादकम् [।] नानारूप-विशिष्ट-वस्तु-परम-स्याद्वाद-लक्ष्मी-पदम् जेजीयाज्जिन-राजशासनमिदं स्वाचार-सार-प्रदम् ॥ [४४]

६१. सिद्धान्तामृत-वार्द्धि-तारकपतिस्तर्क्काम्बुजाहर्प्पतिः शब्दो-द्यानवनामृतैक-सरणि-र्य्योगीन्द्र-चूडामणिः [।] **त्रैविद्याधर**-सार्त्थ-

६२. नाम-विभवः प्रोद्भूत-चेतोभवः[१] जीयादन्यमता-वनीभृदशनिः श्री-**मेघचन्द्रो** मुनिः ॥ [४५] इदे हंसी-बृंद-मीम्दल्बगेदपुदु

६३. चकोरी-चयम् चञ्चुविन्दं कदुंकल्साद्दप्पुदीशं जडेयो-ळिरिसलेन्दिर्द्दपं सेज्जेगेर-ल्पदेदप्पं कृष्णनेम्बन्तेसेदु बिस-लसत्-कन्दली-कं-

---

१. 'भवो' पढ़ो।

६४. द-कान्तम् पुदिदत्ती **मेघचन्द्र**-त्र (त्रै) तितिळक-जगद्वर्त्ति-कीर्त्ति प्रकाशम् ॥
[४६] वैदग्ध्य-श्री-वधूटी-पतिरखिळ-गुणालंकृतिम्मेंघचं-
६५. द्र-त्रै विद्यस्यात्मजातो मदन-महिभृतो भेदने वज्रपातः [।] सैद्धांताब्यू-
(व्यू) ह-चूडामणिरनुपळ (म)-चिन्तामणि-
६६. र्म्मू (र्भू) बनानाम् योऽभूत् सौजन्य-रुन्द्र-श्रियमवति मही **वीरनन्दी**
मुनींद्रः ॥ [४७] यश्शब्दज्ञ-नभस्थली-दिनमणिः काव्यज्ञ-चूडाम-
६७. णिर्य्यस्तर्क्कस्थिति-कौमुदी-हिमकरस्तूर्य्यत्रयाब्जाकरः [।] यस्सिद्धान्त-विचार-
सार-धिषणो रत्न-त्रयी-भूषणः स्थे-
६८. यादुद्धत-वादि-भूभृदशनिः श्री-**वीरनन्दि**-मुनिः ॥ [४८] यन्मूर्त्तिर्ज्जगतां
बनस्य नयने कर्प्पूरपूरायते यद्वृत्तिर्व्विदुषां त-
६९. तेश्श्रवणयोर्म्माणिक्यभूषायते [।] यत्कीर्त्तिः ककुभां श्रियः कचभरे मल्लील-
तांतायते जेजीयाद् भुवि **वीरनन्दि**-मुनिपस्सै-
७०. द्धांत-चक्राधिपः ॥ [४९] * श्री-**कोण्डकुन्दा**न्वयाम्बर-द्युमणि विद्वज्जन-
शिरोमणि समस्तानवद्य-विद्याविलासिनी-विलास-मूर्त्ति श्री-**वीरनन्दि**-सै [द्धा]-
७१. न्तिक-चक्रवर्त्तिळु श्रीमन्-महास्थानं **कोळनूर** महाप्रभु-हुलियमरसनुं मूरु-
पुर-पञ्च-मठ-स्थानङ्गळु ताम्र-शासन [मं]
७२. नोडि बरेयिसिमेनल्का शासनदोळेन्तिद्दुदन्ती शिलाशासनमं बरेयि [सु]
दरु [॥] मङ्गळ महा-श्री श्री श्री नमो[1] ...... [॥]

[इस लेखमें (जो मूल लेख की पं० ५६-७२ तकमें है), जैनधर्म तथा मेघचन्द्र-त्रैविद्य और उनके पुत्र वीरनन्दी इन दो मुनियोंकी प्रशंसाके बाद, बताया गया है कि कोळनूरके 'महाप्रभु' हुलियमरस तथा और लोगोंकी प्रार्थनापर वीरनन्दीने एक ताम्र-शासनको फिरसे यहाँपर शिला-शासनके रूपमें लिखवाया। इस ताम्र-शासनको इन लोगोंने स्वयं उनके पास देखा था।

1. यहाँपर कुछ अक्षर (कमसे-कम छः) घिस गये हैं।

श्रवण-बेल्गोलके एक शिलालेखसे हम जानते हैं कि माघचन्द्र-त्रैविद्यका स्वर्गारोहण वृहस्पतिवार, २ दिसम्बर १११५ ई० को हुआ था; और श्री पाठकके[1] द्वारा प्रकाशित एक सूचनाके अनुसार, वीरनन्दीने अपने 'आचारसार' ग्रंथकी समाप्ति उस तिथिको की है जिसे एफ़ कीलहॉर्नने यूरोपियन कलैण्डर के अनुसार सोमवार, २५ मई ११५३ ई० नियत की है। उपर्युक्त लेखके कथनानुसार इस लेखके पूर्वभाग (पंक्ति १-५६) की जब नकल की गई थी और जब यह शिलालेख उत्कीर्ण किया गया था वह काल, उक्त दोनों मुनियोंके काल निर्णयके प्रकाश में, करीब-करीब **१२ वीं शताब्दिका मध्य** ठहरता है।

[EI, VI, no 4 (II part; line 59-72).] T L Tr.

३३९

लण्डन (हॉर्निमन म्यूज़ियम) संस्कृत।

सं० १२०८ = ११५२ ई०

[जिन मिस्टर हॉर्निमन (Mr. Horniman) के म्यूज़ियम में यह मूर्ति-लेख मिला है उसकी मूर्ति उन्होंने म्यूज़ियम के क्यूरेटर (Curator) मि० क्विक (Mr. Quick) के कथनानुसार, सन् १८९५ में लण्डन में ख़रीदी थी :—Rh. D.]

मूर्ति जैनोंके बयालीसवें तीर्थङ्कर नेमिनाथ की है। चरण-पाषाणपर बहुत ही सुरक्षित तीन पंक्तियोंका एक लेख है। लेख नागरी अक्षरों और व्याकरण की अशुद्धियों से भरी हुई संस्कृत में है। **लेख** और **अनुवाद** निम्न है :—

---

1. देखो Ind. Art. Vol. XIV. p. 14. श्री पाठकने जो तिथि दी है वह यह है 'शक १०७६, श्रीमुख संवत्सर, सोमवार, द्वितीय ज्येष्ठ सुदी प्रतिपद।'

लेख

१. ॐ संवत् १२०८ वैशाख वदि ५ गुरौ ॥ **मण्डिल पुरात्** ग्रहपत्यन्वे (न्वये) श्रेष्ठि-**माहुल** तस्य सुत श्रेष्ठि-श्री-महीपति भ्रातु बाल्हे महीपति-सुत **पापे कूके साल्हू देदू [आल्हू ?]**

२. **विवोके सवपते** सर्व्वे नित्यं

३. प्रणमंति (मंति) स [ह] ॥।

अनुवाद :—ॐ ! संवत् १२०८, वैशाख वदी ५, गुरुवारको । मण्डिलपुर (बुन्देलखण्डका एक नगर) से, ग्रहपति वंशके श्रेष्ठी माहुल; उसके पुत्र श्रेष्ठी महीपति; उसके भाई बाल्ह; और महीपतिके पुत्र पापे, कूके, साल्हू, देदू, [आल्हू ?], विवीके और सवपते—ये सब मिलकर नित्य (रोज़) इस प्रतिमा-की वन्दना करते हैं ।

[JRAS, 1898, p. 101-102] T. L. Tr.

३३७

महोबा;—संस्कृत ।

[सं० १२११ = ११५४ ई०]

श्रीमान् **मदनवर्म्मदेव** राज्ये,
सं० १२११, आषाढ़ सुदि ३, सनौ,
देवश्री नेमिनाथ—रूपाकार **लाखण** ।

इस शिलालेखमें २ पंक्तियाँ हैं, जिसमेंकी नीचेकी **केवल एक पंक्ति ही** ऊपरके लेखमें आयी है । मूर्तिके चरण तल पर शंखका चिह्न है, जिससे जाना जाता है कि यह श्री नेमिनाथकी मूर्ति है ।

[A. Cunningham, Reports, XXI, P. 73, T.]

३२८

होललकेरे;—संस्कृत ।

वर्ष श्रीमुख [११५४ ई० (लू राइस) ।]

[होळल्केरेमें, सेट्टर नागप्पसे प्राप्त एक ताम्र पत्र पर]

श्रीमत्-पञ्च-कल्याण-वैभवाय नमः ॥

श्रीमत्परम-गम्भीर-इत्यादि ॥

स्वस्ति श्री यम-नियम-स्वाध्याय-ध्यान-मौनानुष्ठान-जप-तप-समाधि-शील-गुण-सम्पन्नरुमप्प ओ......कडियाण-परिग्रहादित्यरं मध्याह्न-कल्प-वृत्तरुमप्प **पारिश्व (पार्श्व) सेन-भट्टारक-स्वामि**यवरु । **होळलकेरे**य श्री-शांतिनाथ-देवर जीर्ण्णालयमं...द्धारमं माडिसिदरु ॥ श्री-मूल-संघद् **बोदण्ण-गौड**-मुन्तादवरु माडिसिद धर्म्मंवु विघ्नवागिरलु आ-गौडर सत्-पुत्रराद् सोमण्ण-गौड शान्तण्ण-गौड आदण्ण-गौड-मुन्तादवरु । **प्रताप-नायक**रिगे नूरु-गद्याणवनिक्कि बेडिकोण्डुदु **हिरिय-केरेय** हिन्दण-तोटमुं गद्देयुमं बेद्दलमं नम्मवर मनेय-काणिकेयुमं सर्व-बाधा-परिहारवागि श्री-अमृत-पडिगे गुरुगळ आहार-दानक्के **शक-वर्ष १०७६ नेय श्रीमुख संवत्सरद् माघ-शुद्ध १० शुक्रवार** बिट्ट दत्ति ॥ यिदक्के देवता-महोत्सवद विवर । **भाव-नाम-संवत्सरद् वैशाख-शुद्ध तदिगे सोम-वार** विमान-शुधि (द्धि) वास्तु-विधि नान्दी-मङ्गल ध्वजारोहण भेरी-ताड़न अङ्कुरार्प्पण बृहच्छान्तिक मन्त्र-न्यास अङ्ग-न्यास केवल-ज्ञानद महा-होम । महा-स्नपनाभिषेकक्के अग्रोदक-प्रभावने-यन्नु कलश-प्रभावनेयन्नु माडिसि पुण्योपार्ज्जने-यनु माडिसिकोण्डरु । वर्ष प्रति अक्षय-तदि [गे] यल्लि नडेयुव महोत्सव-प्रभा-वनेगे...अष्टाह्निक-पर्व्वगळिगे श्रवण-पौर्ण्णमी-उत्सवक्के भाद्रपद-शुद्ध-चतुर्द्दशि-अनन्त-नोंहि-कलश-प्रभावने महा-आराधने-मुन्तादक्के । कार्त्तिक-मासदल्लि कृत्ति-कोत्सवक्के माघ-ब. चतुर्द्दशियल्लु जिनरात्रे-महोत्सवक्के । चतुस्-सीमे-विवर । तोटक्के मूडलु हिरे-केरे । तेङ्कलु हेद्दारि । पडुवलु नेट्ट-कल्लु । बडगलु हुट्टरे । गद्देगळ चतुस्-सीमेगे नाल्कु-दिक्किगु नाल्कु-मुक्कोडे सह नाल्कु-नेट्ट कल्लु । बेद्दलु-भूमिगु

इदे-गुरितु। सुवनद श्री-धर्म्मव नडेसिकोण्डु बरवड्डु। (वे ही अन्तिम श्लोक)
शासनक्के भद्रं भूयाद् वर्द्धतां जिन शासनम् ॥

[पाँच कल्याण-वैभव जिसके होते हैं उसके लिये नमस्कार।]

जिन शासनकी प्रशंसा।

स्वस्ति। साधुके गुणोंसे युक्त पारिश्वसेन-भट्टारक-स्वामीने होळलकेरेके शान्तिनाथ-देवके ध्वस्त मन्दिरको फिरसे सुधरवाया था। श्री मूलसंघके बोद्दण्ण-गौड और दूसरे लोगोंके द्वारा दिया गया दान जो रुक गया था उसके लिये उस गौडके पुत्रों (जिनके नाम दिये हैं) और अन्य लोगोंने १०० गद्याण सहित प्रताप-नायकको भेंट में देते हुए प्रार्थना-पत्र दिया, तब पारिश्वसेन-भट्टारक-स्वामी-ने हिरिय-केरेके पीछेकी जमीन और लोगोंके घरोंसे मिली हुई भेंटे, सर्वकरोंसे मुक्त करके, देवकी पूजा और गुरुओंके आहार-प्रबन्धके लिये (उक्त दिन) दान-में दे दीं। इसके बाद देवता-महोत्सवकी एक सूची और भूमिकी सीमाएँ आती हैं। वे ही अन्तिम श्लोक।]

[EC, XI, Holalere tl., no. 1]

३३६

हेरगू—संस्कृत तथा कन्नड।

—[शक १०७७-११५५ ई०]—

[हेरगू (आलूर परगना), जैन-बस्तिके सामनेके पाषाणपर]

श्रीमत्पवित्रमकलंकमनन्तकल्पं
स्वायम्भुवं सकलमंगलमादि-तीर्थम्।
नित्योत्सवं मणिमयं नियतं जनानाम्
त्रैलोक्य-भूषणमहं शरणं प्रपद्ये ॥

श्री-वीतराग ॥

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महामण्डलेश्वरं **द्वारावती**-पुरवराधीश्वरं **यादव** वंशोद्भव कोङ्गु-नङ्गलि-गंगवाडि-नोणम्बवाडि- बनवसे-हानुंगल्लु- हलसिगे-गोण्ड भुज-बलवीर-गंग जगदेकमल्ल **होय्सळ-वीर-नारसिंह-देवरु** श्रीमद्राजधानी-**दोरसमुद्रद** नेलवीडिनलु दुष्ट-निग्रह शिष्ट-प्रतिपालनव माडि सुख-संकथा-विनोददिं पृथ्वीराज्यं गेय्युत्तमिरे तत्पादपद्माराधकं पर-बळ-साधक-नामादि-समस्त-प्रशस्ति सहितं श्रीमन्महाप्रधानं हिरिय-हडवळं **चाविमय्यन** नेगर्त्तेयेन्तेन्दडे ।

इननं तेजदोळ् इन्द्रनं विभवदोळ् **चाणक्यनं** नीतियोळ् ।
मनुवं चारु-चरित्रदोळ् जळधियं गाम्भीर्य्यदोळ् धैर्य्यदोळ् ।
कनकाद्रीन्द्रमनेय्दे पोल्वनदटिं त्रैलोक्यमं मेच्चिद-
ज्जुनं श्री-पडवल्ल-चामनेनलिन्नेवण्णिपं बण्णिपं ॥
वर-वनिता-जनङ्गळ मनं कुसुमास्त्र-शारक्के सन्दुधो-
त्कर-कर-पङ्कजं बहु-सुवर्ण्ण-चयक्कधिनाथ-मन्दिरम् ।
स्थिरतर-राज्य-लक्ष्मिगेडेयादवु रूप-विलासदेळ्गेयिम् ।
निरुपम-दानदिं पति-हितोन्नतियिं पडवळ्ळ चामन ॥
अनुपममप्प बन्धु-निवहं निज-पद्ममनर्घ-रत्न-म- ।
डन-तति पञ्च-वर्ण्णमखिळोग्र-भुजासिये चञ्चु दुष्ट-दु
ज्जन-रिपु-भूभुजभुजगरागे नेगर्त्तेयनांत **बिट्टि-दे**- ।
वन गरुडं समन्तेसेदनी-धरेपोळ् पडवल्ल-चामणम् ॥
इन्तु पोगर्त्तेगं नेगर्त्तेगं नेलेयाद हिरिय- । हडवल्ळ-चाविमय् ।
यन सर्व्वांग-लक्ष्मी हिरिय-हडवळिति **अक्कव्वे**यर नेगर्त्तेय् एन्तेन्दडे ।
निरुतं पूजिर देय्वमोप्पुव जिनं सिद्धान्त-चक्रेश्वरम् ।
गुरु मत्ता-**नयकीर्त्ति-देव**-यति ताय् आचव्वे बम्मय्यनुं ।
······प्रेमद तन्दे मिक्क सुभदिं लोकैक-रक्षा-क्षमम् ।
पुरुषं श्री-पडवल्ल-चामनेनलिं **अक्कव्वे**यिं धन्यरार् ॥
रतियवळु रूपिं भा- । रतियवळु वाग्विलासदिं सौष्ठवदिं ।
क्षितियवळु पेम्मेगरुन्- । वतियुवळ **अक्किकव्वे** कान्ता-रत्नम् ।

कोमळवागि ताने शुभ-लक्षण-युक्तमेनिप्प मूर्त्तियिम् ।
व्योममनेय्दे पर्ब्बि दिशु-दन्ति-वरं निमिदिर्द्द कीर्त्तियिम् ।
श्री-मुखदिन्दमुद्भविप सत्यद मेल्-नुडियिन्दे गोत्र-चि- ।
न्तामणि अक्किकब्बे सले रञ्जिसिदळ् साचि-देवियन्ददिम् ॥
कन्देरेये वन्दि-जनमा- । नन्ददिना-क्षणदे कल्प-कुजदारवेयी- ।
वन्ददिनीवळ् बेळ्पुड- । नेन्दुं अक्कब्बे-देवि जगती-तळदोळ् ॥
तक्कळ मिक्क सोर्मुडिय वृत्त-कुचंगळ.........नो - ।
टक्कलरञ्चिवेम्ब नगे-गङ्गळ रोक्कमेनिप्प होन्न-व- ।
ण्णक्के विशेषमप्पघर-कान्तिय जक्कल-नारियोन्दु भा- ।
वक्के गुणक्के वाग्विभवदुन्नतिगार् दोरे पेण्डिरुर्व्वियोळ् ॥
जिन-राजाङ्घ्रियनोप्पुवर्च्चनेगळिं सद्भक्तियिन्दर्च्चिपळ ।
विनयं गुन्दडे-लोक-पूज्यरेनिसिप्पाचार्यरं प्रीतिय-
प्प नवाज्यामृतदन्नदिं तणिपुवळ् श्री-जैन-गेहङ्गळम् ।
मनदुत्साहदे माळ्पाळी-धरणियोळ् जक्कब्वे यिन्तप्परार् ॥
तळदोळशोकेयोप्पुव तळिर्म्मुख-पङ्कजदोळ् सरोजवा-
सुळि-गुरुळोळियोळ् मधुप-संकुलमोळ्नुडिगळ्गे मिक्क-को-
क्किळ-मरि यानदोळ् गज-समुच्चयमुद्ध-पयोधरक्के पो- ।
ङ्कळशमेनिप्पिवेन्दोरेये जक्कले-नारिय रूपिनेळ्गेयोळ् ॥
रव अक्कम् (अवरक्कम्) ।
जिन-राजननतिमुददिन्द् ।
अनेकवेनिपर्च्चनङ्गळिन्दर्च्चिसि सज् ।
जनरोळु मिगिलेने नेगळ्दा- ।
विनयद कणि पद्मियक्कनेने मेच्चदरार् ॥
अवर गुरुगळु ।
सकळ-व्याकरणार्त्थ-शास्त्र-चयदोळ् काव्यङ्गळोळ् मिक्कना-
टिकदोळ् वस्तु-कवित्वदोळ् नेगल्द सिद्धान्तङ्गळोळ् पारमा- ।

त्यिकदोळ् **किकदोळ् समस्त-कळेयोळ् पाक्ङिन नडेयू-
षिकनार्द नयकीर्त्ति-देव-यतिपं सिद्धान्त-चक्रेश्वरम् ॥
हेरगोळ्ळितेन्देल्लं । निक्ते विवसिसे केळदु बसदियनत्या- ।
दरदिन्दे माडि जक्कले । धरेयं धर्म्मक्के कोट्टु जसमं पडेदळ् ॥

अदेन्तेन्दडे **शक-वर्षं १०७७ नेय युव-संवत्सरद पुष्यदमावास्ये** आदिवारदुत्तरायण-संक्रान्तियन्दु श्रीमन्महाप्रधानं हिरिय-हडवळं चाविमय्यन सर्व्वाङ्ग-लक्ष्मी हिरिय-हडवळति श्री-मूल-संग (घ) द देशिय-गणद पुस्तक-गच्छद कोण्ड कुन्दान्वयदाचार्य्यर श्री-**नय-कीर्त्ति**-सिद्धान्त-चक्रवर्तिगळ गुड्डि **जक्कव्वेयर** महोत्साहर्दि तावु हेरगिनलु प्रतिष्ठेयं माडिसिद श्री-चेन्न-पार्श्वनाथ-स्वामिगळ श्री-पाद-पद्माष्ट-विधार्च्चनक्कं उत्तुंग-चैत्यालयद खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारणक्कं रिषिय-राहार-दानक्कवेन्दु श्रीमतु हेरगिन प्रभुगळू-रोडेय-सोमनाथिमय्य बूविमय्य सिङ्ग-गावुण्डनोळगाद समस्त-प्रभुगळ समस्त-प्रधानर सन्निधानदलु श्रीमन्महामण्डलेश्वर-**नारसिंह-देवगं** विन्नहं गेय्दु हिरिय-केरेय कीलेरियल्लि कल्ल-तुम्बिन समीपदलु बिडिसिद गद्दे सलगेयय्दु वेद्दलेयल्लि स्थलवोन्दु ।

[जिस समय (अपने सर्वपदों सहित) होय्सल वीर-नारसिंह-देव अपने वास-स्थल शाही नगर दोरसमुद्रमें रहते थे और शान्ति एवं बुद्धिमत्तासे अपने राज्यका शासन कर रहे थे :—

उनके पादपद्मका उपजीवी पुराने सेनापति चाविमय्य थे, जिनकी प्रशंसामें कहा गया है कि वे बिट्टिदेवके गरुड़ थे। उनकी पत्नीका नाम जक्कव्वे था। उसकी बड़ी बहिन (उसकी प्रशंसा) पद्मियक्क थी। दोनोंके गुरु सिद्धान्त-चक्रेश्वर नयकीर्त्ति-देव-यतिप थे।

हेरगू की अच्छा स्थान होनेकी सबसे प्रशंसा सुनकर, जक्कलेने इच्छापूर्वक एक मन्दिर वहाँ बनवाया, और इसे भूमिदान भी दिया। इससे उसकी बहुत प्रसिद्धि हुई।

(निर्दिष्ट मितिको) महाप्रधान, पुराने सेनापति चाविमय्यकी पत्नी, श्रीमूल-संघ, देशिय-गण, पुस्तक गच्छ और कोण्डकुन्दान्वयके आचार्य नयकीर्त्ति-सिद्धान्त-

चक्रवर्त्तीकी शिष्या (श्राविक), जक्कब्बेने, बहुत हर्षके साथ भगवान् चेन्न-पार्श्वनाथकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा करवाके,—अष्टविध पूजनको चालू रखने, उसके ऊँचे मन्दिरकी मरम्मत आदिके लिये, और ऋषियोंको आहार-दान देनेके लिये, हेरगूके सरदारोंकी उपस्थितिमें, महामण्डलेश्वर नारसिंह-देवसे प्रार्थना करके, (निर्दिष्ट) भूमिका दान दिया ।]

[EC, V, Hassan Tl., No. 57.]

३४०

खजुराहो—संस्कृत ।

[सं० १२१२=११५५ ई०]

[इस शिलालेखके भी लेखका पता नहीं है । श्री वीरनाथ (महावीर स्वामी) की प्रतिमाके चरण-पाषाणमें यह लेख अङ्कित है । शिल्पीका नाम कुमार सिंह (या सिनहा) लिखा हुआ है ।]

[A. Cunningham, Reports, XXI, P. 68, P. A.]

३४१

महोबा;—संस्कृत ।

[सं० १२१३=११५६ ई०]

"संवत् १२११, माघ सुदि ५ गुरू (गुरौ) ।"

इस प्रतिमा पर चकोरका चिह्न है, इससे यह प्रतिमा सुमतिनाथकी है । लेख एक ही लम्बी पंक्तिका है । सबसे पहले उक्त कालका उल्लेख है । इसमें किसी राजाका नाम नहीं दिया हुआ है, और इसके अन्तमें शिल्पी रूकार (रूपकार) लाखनका नाम आता है ।

[A. Cunningham, Reports, XXI, P. 73, A.]

दुन्निकरक्के कैपिडियोलादुदु तन्न जसं जगक्के कैयू- ।
गन्नडियादुदेन्देसेदनो जगदोळ् जगदेव-भूभुजम् ॥
समदारात्यङ्गना-मङ्गळ-कटक-हटित्-कर्ण्ण-पर्ण्णापहं वि- ।
क्रमवी-काळेय-दोषापह···मळ-चरित्रं···विशिष्टे- ।
ष्ट-मनस्-तापापहं तन्नतुळ-वितरणोद्यागवेन्दन्दे लोको- ।
त्तमनादं **सिङ्गि-देवं** जग-विरुदरळेवं समग्र-प्रभावम् ॥
अवरोडने पुट्टिदळु भू- ।
भुवनं वित्तरिसु वत्तिमब्बेयो पेळेम् ।
बवोलेसद**ळळिया दे**- ।
वि विशुद्धाचारदिं विनिर्म्मळ-गुणदिम् ॥
रवर-पुरदोळ् नेरे सेनुव-।
पुरदोळ् माडिसिदळेसेव जिन-भवनमनन्त् ।
एरडमळिया-देवियवो- ।
लरसियरार् प्पुण्यवति [य] री-वसुमतियोळ् ॥
सले शोभाकरवागे सेतुविनोळत्युत्साहदिं भव्य-मण्- ।
डळि बाप्पेम्बिनन वोन्दे कण्ठदोळे सम्यग्दर्शन-ज्ञान-निर्-
म्मल-चारित्र-गुण-प्रयुक्ते जिन-राजागारमं भक्तियिम् ।
अळिया-देवि समन्तु माडिसिदळुर्व्वी-स्तुत्यमं नित्यमम् ॥
चतुरे चतुर्व्विध-दानो- ।
न्नतियोळ् जिन-राज-भवनमं माडिसि भू- ।
नुत-कीर्त्ति **होम्नेयरसन** ।
सति **अळिया-देवि** नेगळ्दळवनी-तळदोळ् ॥
भुज-बल-भीम भीम-सम-विक्रम कोङ्कण-रक्षपाल वि- ।
श्व-जन-विनूत निर्म्मल-कदम्ब-कुळोज्वळ गङ्ग-तुङ्ग-वं-
शज-नृप-**होज पोज**-महिपाळन मर्म्मं जिनेन्द्र-पाद-पङ्- ।
कज-मद-भृङ्ग निन्नोरेगे वप्पुवनावनिळा-तळाग्रदोळ् ॥

यी-दोरेय होन-नृपतिगव् ।
आ-दुरित-विदूरे अळिय-देविगवोगेदम् ।
मेदिनि बण्णिसलखिळ-गु- ।
णोदधि **जयकेशि-देव**नेम्व कुमारम् ॥
नेगळ्दा-श्री-जयकेशि-देवनमरी-सन्दोह-संभोग-कां- ।
त्वेगे मेय्दन्दडे पेत्त-**तायळिय-देवी**-कान्ते मोहात्थदिन्- ।
दे गुणाम्भोनिधिगा-मगङ्गे विपुल-श्रेयो-निमित्तं जगम् ।
पोगळल् सेतुविनोळु विनिर्म्मिसिद्ळुद्ध-श्री-जिनागारमम् ॥

स्वस्ति समस्त••प्रख्यात-सीतेयुं **बिज्जल-देव** तनूजातेयुमप्प **अळिया-देवि-** यरु **शक-वर्ष १०८१ नेय प्रमाथि-संवत्सरद पुष्य-शुद्ध-चतुर्द्दशी-शुक्र-वारदन्दु । उत्तरायण-संक्रान्तिय-पुण्य-दिनदोळ्**••• •••गुळिलळिया-देवियरुं होन्नेयरसरुं तम्म धर्म्मक्के बिट्ट भूमियावुदेन्दडे (यहाँ दानकी विशेष चर्चा आती है) मूल-संघद काणूर-गणद तिन्त्रिणि-गच्छद **बन्दणिकेय तीर्त्थ-**दाचार्य्यर् **भानुकीर्ति-सिद्धान्त-देवर** कालं कर्चि धारा-पूर्व्वकं माडि चारु-पूजा-निमित्तं कोट्टरु (हमेशाका अन्तिम श्लोक) ।

[जिन शासनकी प्रशंसा] ।

जिस समय (स्वाभाविक चालुक्य पदों सहित) त्रिभुवन मल्लदेवका विजयी राज्य प्रवर्द्धमान था :—

तत्पादपद्मोपजीवी, पट्टि-पोम्बुर्च्चपुरवराधीश्वर, दक्षिण-मधुराका अधिनायक राय-तैलह (प)-देव सान्तलिगे हजार पर शासन कर रहा था । राजा तैल-शान्तरकी प्रशंसा । उसकी पत्नी अक्कला-देवी थी, जो नन्नि शान्तरकी छोटी बहिन भी । और उसके तीन पुत्र थे,—काम, सिंह, और अम्मण । सबमें बड़े कामकी प्रशंसा । उसकी पत्नी बिज्जल देवी थी । इनके पुत्र जगदेव और सिङ्गि-देव थे । उनकी प्रशंसायें । उनकी बहिन अळिया-देवी थी । उन्होंने सेतुमें एक बढ़िया जिन मन्दिर बनवाया था । वह होन्नेयरसकी पत्नी थी । यह होन्नेयरस

(अपर नाम होन पोन) कदम्ब-कुलका प्रकाश, तथा गङ्ग-वंशमें उत्पन्न हुआ था। उस और अलिया-देवीसे जयकेशी-देव उत्पन्न हुये थे और उन्होंने सेतुमें जिन मन्दिर बनवाया था। तथा विज्जल देवीकी पुत्री अलिया-देवीने, (उक्त मितिको), होन्नेयरसके साथ, इस मन्दिरके लिये (उक्त) भूमियोंका दान दिया। यह दान दो "सिवने" का था। यह दान उन्होंने मूलसंघ, काणूर्-गण तथा तिन्त्रिणि-गच्छके भानुकीर्त्ति-सिद्धान्त-देवके, जो बन्दनिके तीर्थके आचार्य थे, पाद-प्रक्षालनपूर्वक किया गया था। हमेशाका अन्तिम श्लोक।]

[EC. VIII, Sagar Tl., No. 159-]

३५०

पालनपुर—संस्कृत तथा गुजराती।

[सं० १२१७ = ११६० ई०]

श्वेताम्बर सम्प्रदायका लेख।

[EI, II, No. V, No. 10 (P. 28), T. L, A.]

३५१

कबलो;—संस्कृत तथा कन्नड़।

शक १०८२=११६० ई०

[कब्बळी (सक्रेपट्टण परगना) में पुराने गांवकी जगह पर एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द-महामण्डलेश्वरम् द्वारावतीपुरवराधीश्वरम् । शशाङ्कपुर-नि [वास]-वासन्तिका-देवी-लब्ध-
वर-प्रसादनुम् । निजासि-दण्ड-खण्डित-प्रचण्ड-दायादनुम् ।
श्वेतातपत्र-शीतकिरण-विकसित-सकळ-जन-नयन-कुवळयनुं-।

निज-भुज-भुजंगराज-सञ्चारित-वसुन्धरा-वळयनुम् ।
यदु-कुल-कमल-कमलिनी-कमनीय-तरुण-तरणियुम् ।

सम्यक्त्व-चूडामणियुं । कनक-धारा-वर्ष-परिपूरित-सकळ-याचक-चातक-चक्रवाल-वळञ्छनतुं । शार्दूल-लाञ्छननुम् । हर-हसित-विशाद-कीर्त्ति-वर्त्तित-ब्रह्माण्डनुं । मलेपरोळ् गण्डनुं । मद-मुदित-मधुकर-निकुरम्ब-चुम्बित-कट-तट-विराजमान-सामज-समाजनुम् । मले-राज-राजनुम् । लक्ष्मीरमण-रमणीय-चरण-सरसिरुह-संचरण-चतुर-षट्चरणनुम् । निज-विजय-राज्य-राज-लक्ष्मी-मणिमयाभरणनुम् । सु-कवि-शुक्ति संकथाकर्ण्णनोदीर्ण्ण-पुलक-दन्तुरित-कपोळफळकनुम् । नीसि-नितम्बिनी-ललाट-तिळक-नुम् । सु-रुचिर-चरण-नरवर-मणि-दर्प्पण-प्रतिफळित-विनत-रिपु-नृपोत्तमांगनुवू । अन्तु पोगळ्तेगं नेगळ्तेगं जन्म-भूमियागि ।

मदर्दि मेलेत्तिदा-माळवन पदकमं कोण्डवं **चक्रकूटम्** ।
बेदरल् बेङ्कोण्डु **सोमेश्वरन** करिगळं कोण्डवं माण्बने पेळ्-।
दुदनेम्बो गेय्युदिल्लेन्द**दिगननुरे** बेङ्कोण्डु कोण्डं जय-श्री-।
सदनं तद्देशमं तत्-**तळवन-पुरमं** जिष्णु-विष्णु-क्षितीशम् ॥
तळकाडोल् सुळिदाडि तुङ्ग-नगवप्प **उच्चंगि**यं सार्द्दना-।
कुळ-चित्तं **बनवासे**यागे नडेदार्प्पिं **बेळ्वलं** गोन्डु निश्-।
चलितं **पेद्दोरे**गेम् स-तोषदोसेदा-**हानुङ्गलो**दत्तु होय् -।
सळ-भूपालन शौर्य्य-सिंहवसुद्धद्-भूपर् भयङ्कोळ्विनं ॥

अन्तेनिसिदाश्चर्य्य-शौर्य्यदिं कोङ्गु-नङ्गलि-गङ्गवाडि-नोणम्बवाडि-बनवासे-हानुं-गल्लु-हलसिगे-बेळ्वलवोळगागि कञ्चियादि-यागि हेद्दोरे-पर्य्यन्तवाद स*** ***सङ्गळं दुष्ट-निग्रह-शिष्ट-प्रतिपाळनं माडि भुज-बल वीर-गङ्ग **त्रिभुवनमल्ल होय्सळ-विष्णुवर्द्धन-देव***** *********राजधानि-**दोर-समुद्र**दोळु सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि ।

सरसति निनगिनितु कळा-। परिणते नेगळ्**द्जितसेन-भट्टारक**रिम् ।
दोरेवेत्तु देवियाद्दिर् -। पिरियतनं निजदत्तुदवर महत्वम् ॥

सले सन्दा-योग्यतेय-अग्गलिसिद् दुर्द्धर-तपो-विभूतिय पेन्पिम् ।
कलि-युग-गणधररेम्बुदु । नेळनेळ्ळं **मल्लिषेण-मलधारि**गळम् ॥
आवनविषयमो पटु-त-। कोविळ-बहु-भंगि-संगत**श्रीपाल**-।
त्रैविद्य-गद्य-पद्य-व-। चो-विन्यासं निसर्ग-विजय-विळासं ॥
आळापं बेड माण् मार्-मलेयदिरेले नीं वाडि बन्दिर्दपं भू-।
पाळोद्यद्-मौळि-माला-विळसित [·········] पदाम्भोज-युग्मम् ।
चोळ-क्षत्रादि-भूभृत्-सभेयोळु पलरं गेल्दु बेङ्कोण्डनी-**श्री-**
पाल-त्रैविद्य-देव पर-मत-कुधरानीक-दम्भोळि-दण्डम् ॥
जिन-धर्माम्बर-तिग्म- रोचि सु-चरित्रं भव्य-नीरेज-नन्-।
दन-मित्रं मद-मान-माय-विजितं **चन्द्रप्रभे**न्द्रात्मजम् ।
विनयाम्भोनिधि-वर्द्धनं जन-नुतं तानेन्दु संवर्ण्णिसल् ।
मुनि-नाथं सळे **वासुपूज्य**नेसेदं सिद्धान्त-रत्नाकरम् ॥

श्री-**भूतबलि-पुष्पदन्त-भट्टारक**रिं । **समन्तभद्र-स्वामि**गळि-न्द्**कलंक-देव**रिम् । **वक्रग्रीवाचार्य्य**रिम् । **वज्रणन्दि-भट्टारक**रिं **कनकसेन-वादि-राज-देव**रिं । श्री-**विजय-भट्टारक**रिं । **दयापाळ-भट्टारक**रिं । श्री-**वादिराज-देव**रिन्द् । **अजितसेन-भट्टारक**रिं । **मल्लिषेण-मलधारि-स्वामि**गळिं । **श्रीपाल-त्रैविद्य-देव**रिम् । श्री-**वासुपूज्य-सिद्धान्त-देव**रिम् । उत्तरोत्तरमागि बन्द श्रीमद्द्रविळ - संघदरुङ्गळान्वयद गुड्डरप्प श्रीमतु-**नारसिंघ-होय्सळ-गावुण्ड**म् ॥

पदनरिदासे दप्पिसदे बेळ्पर बेळ्पुदनित्तु सद्गुणा- ।
स्पदनेनिसल्के निन्न पेसरेम् गळ होय्सळ-गौण्डनेम्बुदे ।
[··] शिबियेम्बुदे खचर-नायकनेम्बुदे चारुदत्तनेम्-।
बुदे बलियेम्बुदे रवितनूभवनेम्बुदे गुत्तनेम्बुदे ॥
जिनपति-भक्तियान्त पति-भक्तिवुदारते शक्ति सज्जन-।
[··] कृत-युक्तियय्दे गुणवय्दे-गुणङ्गळनावगं पोग-।
ळ्दनवरतं निमिच्चुतिरे होय्सळ-गौण्डिन चित्त-वार्धिवर्-।

द्धन-कर-चन्द्र-लक्ष्मियेने बण्णिसलोप्पदे **केळ्ळेगौण्डियम्** ॥
कुल-धात्रीधर-धैर्य्यनब्धि-वर-गाम्भीर्य्यं समस्तावनी- ।
वळय-व्यापित-चारु-कीर्त्ति वनिता-कामं गुण-स्तोमनुच्-
चळ-वाणी-स्तन-हारनर्थ्यतिशयाधारं करं पेम्पनिन्त् ।
एळेयोळ् ताळ्दिदतो जगन्नुत-गुणं श्री-**कदम्ब-शेट्टि**-प्रभु ॥
आतन चित्त-प्रिये वि- । ख्यातियनान्तद्रिसुतेगमम्बुधि-सुतेगम् ।
सीता-वधुगं रतिगव- । देतेरदिं **चट्टियक्क**नग्गळवेनिपळ् ॥
रतिगवरुन्धतिगं सर- । सतिगं रेवतिगमेसेव पार्व्वतिगं श्री-
सतिगं समनेनिसि महा- । सति चट्टियक्क तोळगि बेळगि-दळिळेयम् ॥

भावकनेन्दु सच्चरित्रनेन्दु समुन्नतनेन्दु सत्पुरुषनेन्दु समुज्ज्वळ-कीर्त्तियेन्दु सर्व्वविनि सन्ततं सले पोगळवुदु **नम्नि-शेट्टि**यम् । **लोक-गावुण्ड**गं **माकवे-गावुण्डि**गं हुट्टिद मगळु **चट्टवे-गवुण्डि**य मगं **होय्सळ-गवुण्डं** तम्मल्वेगे परोक्षवागि बसदियं माडिसिदम् । होय्सळ-गवुण्डनु ऊर समस्त-प्रजे-गावुण्डुगळुबिद्दु बसदिगं देवालयक्कं भूमि समानवागि बसदिगे उत्तरायण-संक्रमण-व्यतीपातदन्दु **अहोबल-पण्डित** रिगे कालं कच्चि धारा-पूर्व्वकं माडि कोट्ट गद्दे सलगे नाल्कु बेद्दले मत्तरु नाल्कु माने येरडु कळनोन्दु केरेय केळगण तोण्ट ओन्दु गाण ओन्दु ॥
१०८२ नेय प्रमादि-संवत्सरद पौष्य-मास-उत्तरायण-संक्रान्ति-व्यतीपातदन्दु-नारसिंह-होय्सळ-देवर कय्यलु धारा-पूर्व्वकं माडिसि-कोण्डु बसदिगे भूमियं बिट्टरु ॥ (आगेकी चार पंक्तियोंमें हमेशाके अन्तिम श्लोक हैं) कब्बळिय भूमि-पुत्रकरप्प गौडु-गळ पेसरं पेळवे (कुछ नामोंके बाद) समस्त-प्रजे-येल्लविद्दु बसदिगे धारा-पूर्व्वकम्माडिदरु । इन्तिवरुभ्यानुमतदि बरेद **नेल्कुदरे**य-ऊरोडेय **कलि-देवु माणि-बोज** ॥

[जिन शासनकी प्रशंसाके बाद, विष्णुवर्द्धनके अनेक पद और उपाधियाँ । उसने मालवका केन्द्रीय नगर हस्तगत कर लिया; चक्रकूटको डराकर उसने सोमेश्वरके हाथियोंका पीछाकर उन्हें पकड़ लिया । अदिगका पीछा करके उसके देश तथा राजधानी तळवनपुरको अधिकृत कर लिया । इस राजाने तळकाडु, उच्चंगि,

बनवासे, बेळवल, पेद्दोरे और हानुङ्गल सभी पर अधिकार जमाकर शत्रु-राजाओंमें भय उत्पन्न कर दिया।

जब, भुज-बल वीर-गङ्ग त्रिभुवन मल्ल होय्सल विष्णुवर्द्धन-देव राजधानी दोर-समुद्रमें बैठकर शान्ति और बुद्धिमत्तासे राज चला रहा था :—

तत्पादपद्मोपजीवी,—अजितसेन-भट्टारक, मल्लिषेण-मलधारी (कलियुगी गणधर), श्रीपाल-त्रैविद्य-देव और चन्द्रप्रभके पुत्र मुनिनाथ वासुपूज्य-सिद्धान्त-देव थे।

द्रमिल-संघके अरुङ्गलान्वयका एक गृहस्थ-शिष्य **नारसिंघ-होय्सळ-गावुण्ड** था। (उसकी प्रशंसा)। उसकी पत्नी केल्ले-गौण्डि थी। कदम्ब-सेट्टि-की प्रशंसा, जिसकी पत्नी चट्टियक्क थी। नन्नि-सेट्टिकी प्रशंसा।

लोक-गवुण्ड और माकवे-गवुण्डीकी पुत्री चट्टवे-गवुण्डीके पुत्र होय्सल-गवुण्ड-ने, अपनी माताकी स्मृतिमें, एक बसदि खड़ी की, और उस नगरके समस्त प्रजा तथा किसानोंके सामने, (उक्त) कुछ भूमि बराबर-बराबर बसदि और मन्दिरको बाँट दी। यह सब अहोबल-पण्डितके पाद-प्रक्षालनपूर्वक किया। और (उक्त मितिको) बसदिको वह सब भूमि दे दी जो उसे नारसिंह-होय्सल-देवसे मिली थी।

यह दोनों पार्टियोंकी सम्मतिसे नेल्कुदरेके प्रधान, कलिदेव-माणिवोज-ने लिखा।]

[EC, VI, Kadur, Tl., No., 69.]

३५२

पण्डितरहल्लि;—संस्कृत तथा कन्नड।

[**बिना काल-निर्देशका, पर लगभग ११६० ई० का**]

[**पण्डितरहल्लि (करडगेरे परगना) में, मन्दरगिरि-बस्तिके प्राङ्गणमें एक पाषाण पर**]

श्रीमत्परमगंभीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥

नमो वीतरागाय ।

श्रीयं श्री-वक्षदोळ् सुस्थिरमेनिसि जगं बण्णिसल् तात्दि वीर- ।
श्रीयं दो-र्द्दण्डदोळ् सा (शा) स्वत (श्वत) मेने तळेदी-लोक-संस्तुत्य-वाणि- ।
श्रीयं वक्त्राब्जदोळ् वाग्-वरनेने मेरेदं यादवाम्नाय-राज्य- ।
श्रीयं स्वाङ्गीकृतं माडिद नृप-तिळकं **नारसिंह**-क्षितीशम् ॥

स्वस्ति समाधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरं **द्वारावती-पुर**-वराधीश्वरं **यादव**-कुलाम्बर-द्युमणि सम्यक्त्व-चूडामणि मलपरोळु-गण्डाद्यनेक-नामावली-समालंकृतरप्प श्रीमत् ·····मल्ल तलकाडुकोङ्गु-नङ्गलि-बनवसे-उच्चङ्गि-हानुङ्गल् गोण्ड भुजबल वीर-गंग होय्सळ-**नारसिंह-देवरु** श्रीमद्-राजधानि-**दोरसमुद्रद** नेले-वीडिनोळ् सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेयुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि ॥

स्फुरदुरु-दीधिति-प्रकटितोग्र-भुज··विळासि-दुर्-।
धरतर-विक्रम-क्रमदोळाऽतिवर्त्तियेनल्के सन्दनी- ।
धरे पोगळल्के रूढिये··चमूपति-रत्नना-नृपे- ।
श्वरन नेगळ्ते-वेत्त मनेगं मोनेगं नेगळ्देक-मुख्यदिम् ॥

एरगदराति-राय······परजोङ्कयप्पिनम् ।
किरिपि भुजासियं जसमनेण्-देसेयानेय··गोम्बिनोळ् ।
निरिसि समग्र-साहसमनी-धरेयोळ् मेरेयुत्तमिप्पं हेर्- ।
अरिकेय **दण्डनाथनेरेयङ्ग**नेनल् नेगल्दं धरित्रियोळ् ॥

[स्] वस्ति श्रीमन्महा-प्रधानं सर्व्वाधिकारि सेनापति-दण्डनायक एरेयङ्गमय्यङ्गळ पाद पद्मोपजीवि ॥

स्थिरमेने गोत्र-मित्र-विबुधाश्रय··मं निमिर्चिच बन्- ।
धुर-महिमोन्नतिक्केगेडेयागिकरं चेलुवागि भूभृद्-उद्- ।
धुर-लकुमी-प्रधाननेसेदिर्द्दभिमान-मन्दरम् ।
पिरिदेनिसिर्द्द**नोश्वर-चमूपति** मन्दरदिं निरन्तरम् ॥

मन्निपनेन्न निन्न···नेगल्दिम्मडि-दण्डनाथनोल्द् ।
एन्नेय भाव नान् निनगे मावनेनेन्तुमवश्य-पोष्य··।

••नदे सन्द विक्रमदळुक्केयगुर्व्विनोळाळद्नीश्वरम् ।
तन्नदटिन्दवादं परेयङ्ग-चमूपन चित्त-वृत्तियम् ॥
मचमा-प्रधान-चूडारत्नन विषयाधिकारि••नेगल्तेय पोगल्तेयं पेळ्वडे ।
करेवदु कामधेनुवेने धेनु पोर्ल सले पत्ति धान्यमम् ।
नेरदळर्दर्थमुमळतेयुं पिरिदादुददेन्तु नोळपडम् ।
तेरे विपरीतविन्न नुडियोळ्तोर्दाळल्लेनल् ••श्वरम् ।
मरुवलि-मण्णे-तेङ्गरे-नेगळतेय-कल्वळियेम्ब नाळ्गळम् ॥
कन्दिरे मुं चिरन्तनर जीर्ण्ण-जिनालयं मोदल्-।
गोण्डु निरन्तरं मेरेये माडिसि रूढियनीतनन्ते कम्-।
कोण्डवनावनीश्वरने धर्म-गुणोन्नतनातनिर्द्द भू-।
मण्डलमावगं स-फलमादुदेवं द्विज-वंश-मण्डनम् ॥
आ-महानुभावन सति ।
लावण्याम्भोधिय वे-। ला-वन-वन-लते-सुधाब्धि-संभव-लक्ष्मी-।
देवतेयेनिसुवल् ईश्वर-। देवन वधु माचियक्कनबळाभरणम् ॥
आ-पुण्यवतियन्वय-प्रभावमेन्तेन्दडे ॥
श्रीगे निवासवागि पेसर-वेत्तनेगळ्तेय नाकि-सेट्टिगम्
नागवेगं तनूभवनगुर्व्विनसोहणि बिट्टिगाङ्गना-।
भोग-पुरन्दरङ्गे सति चन्द्रवे तत्सुते माचियक्कनेन्द् ।
आगळमक्करिं विबुध-मण्डलि बण्णिसलोप्पि तोरिदळ् ॥
निरुपम-कीर्त्तियं तळेदु मेर्म्मेगे ताय्-मनेयागि सत्-कळा-।
धर-मुखियाद चन्द्रदेगे पेर-म्मगळागि समस्त-लोकमम् ।
पोरेदनमोघनीश्वरनोळिर्दनुतं तरुणी-विलासमम् ।
धरियिसि पुट्टिदळ् लक्ष्मि-देवियेे माचवेयेम्ब नामदिम् ॥
द्विगुणिसुतिप्पुदाद दर-हास-विळास-नवीन-चन्द्रिका- ।
प्रगुण-गुणङ्गळिं कुवळयक्के विळासमनेन्दोडुद्ध-ली- ।
लीगे नेलेयाद माचलेयनून-लसद्-वदनेन्दु•••रू- ।

ढिगे नेगळिदन्तु-मण्डलदोळिद्दं कळङ्कमनीगलागुमे ॥
कळिरसलोरे·········। जल्पर मातिरखि पोलरीश्वरनेम्बी-।
कळ्र-महीजमनप्पिद । कल्प-लता-ललिते··**माचियक्क**······॥
परमाप्तं जिननातनिन्तु जनकं श्री-**बिट्टिगाङ्कं** गुणो-।
द्धर तन्नम्बिके **चन्दिकब्बे** येनिसिर्दी-**माचियक्कङ्गे** सद्-।
गुरुगळ् पोस्तक-गच्छ-देशिय-गण-श्रीकोण्डकुन्दान्वयो-।
द्धरणर् **गण्डविमुक्त-देव-मुनिवर** श्री-मूल-सङ्घोत्तमर् ॥
अन्तनून-गुण-रत्न-मण्डनेमुं चातुर-वर्ण्ण-समुदयैक-शरणेयुमेनिसि नेगल्द श्रीमत्-पेर्-गडिति **माचियक्कं** श्री-**मध्दवोळल** दिव्य-तीर्थदोळ् सत्-धर्म्मापंचेयिम् ।
नोडलिदु शित-विमानदे । नाडेयु मिगिलेनिसि नेगळ्द जिन-मन्दिरमं ।
कूडे धरे पोगळे माचवे । माडिसिदलगण्य-पुण्य- युवती-रत्न ॥
अन्तु माडिसि ॥
आ-बधु-**माचवे** सले प-। द्मावतिगेरेयेम्ब केरेय कट्टिसि कोट्टळ् ।
भाविसे बसदिगे तन्न य-। शो-वधु दिग्-वधुगळोडने नलिदाडुविनम् ॥
मत्तमा-तीर्त्थद बसदिय देवरिगे मुन्न नडेव वृत्तिय सीमा-सम्बन्धमेन्तेन्दडे (यहाँ दानकी विशेष विगत आती है) मङ्गळ महा श्री । (वही अन्तिम श्लोक)······

[जिन-शासनकी प्रशंसा ।

जब भुजबळ वोर-गङ्ग होय्सळ नारसिंह-देव, शान्ति और बुद्धिमत्तासे शासन करते हुए, राजधानी दोरसमुद्रमें विराजमान थे :—तत्पादपद्मोपजीवी,–(प्रशंसा सहित) दण्डनाथ–एरेयङ्ग था। दण्डनायक-एरेयङ्गमय्यका पादोपजीवी ईश्वर-चमूपति था। वे दोनों आपसमें श्वसुर और दामाद थे। (उनकी प्रशंसायें), और उसने जिनालयकी मरम्मत करवायी थी। उसकी (ईश्वर-चमूपतिकी) पत्नी माचियक्क थी, जो नाकि-सेट्टि और नागवेके पुत्र साहणि-बिट्टिगके चन्दवेकी ज्येष्ठ पुत्री थी; उसकी प्रशंसायें। जिनपति उसके इष्टदेव, पिता बिट्टिग, माँ चन्दिकब्बे थीं। माचियक्कके गुरु पुस्तक-गच्छ, देशिय-गण, कोण्डकुन्दान्वय तथा मूलसंघके गण्डविमुक्त-देव-मुनिप थे।

३६७

अङ्कडि—कन्नड भग्न।

वर्ष तारण [= ११६४ ई० (लू० राइस)।]

[अङ्कडि (गोणीबीडु परगना) में, पाँचवें पाषाणपर]

… … … … … … …श्री स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रयं श्री-पृथ्वी-वल्लभं महाराजाधिराजं परमेश्वरं परम-भट्टारकं **यादव**कुलाम्बर-द्युमणि सम्यक्त्व-चूड़ामणि मलेराज-राज मलेपरोळ् गण्ड गण्ड-भेरुण्ड कदन-प्रचण्डनसहाय-शूर सनिवार-सिद्धि गिरि-दुर्ग्ग-मल्ल चलदङ्कराम… … … … … … **वीर-विजय नारसिंह-देवनुम्** ॥ **तारण-संवत्सरद चैत्र-सुद्ध**… … … … **अन्दु सोसेवूर** पट्टणसामि **नागि-शेट्टिय**… … … … … **मय्यनुं** … … … … … माडिद बसदि इदके कोट्ट… … … … … …बिट्ट दत्ति।

[(अपनी उपाधियों सहित) वीर-विजय-नरसिंह-देवने (उक्त मितिको) उस 'बसदि' के लिये जिसे सोसवूर के 'पट्टण-सामि' नाग सेट्टि [के पुत्र]…… मय्यने बनवायी थी, दान दिया।]

[EC, VI, Mudgere tl., no 15.]

३६८

गिरनार—संस्कृत।

—[शक १२१२-११६५ ई०]—

यह लेख श्वेताम्बर सम्प्रदायका मालूम पड़ता है।

[Revised Lists art. rem. Bombay (ASI, XVI), p. 359, no 27, t. and tr.]

३६९

गिरनार—संस्कृत ।

[सं० १२२३ = ११६६ ई०]

नं० ३६८ के अन्तका लेख है। उसीका अन्तिम भाग है।

[op. cit. p. 369, no 30, t and tr.]

३७०

बवागञ्ज (मालवा);—संस्कृत ।

[सं० १२२३ = ११६६ ई०]

मन्दिरके पूर्वकी ओर

यस्य स्वच्छतुषारकुन्दविशदा कीर्तिर्गुणानां निधिः
श्रीमान् भूपतिवृन्दवन्दितपदः **श्रीरामचन्द्रो मुनिः।**
विश्वक्ष्माभृदखर्वशेखरशिखा सञ्चारिणी हारिणी
उर्व्यां शत्रुजितो जिनस्य भवनव्याजेन विस्फूर्जति ॥१॥
रामचन्द्रमुनेः कीर्तिः सङ्कीर्णं भुवनं किल।
अनेकलोकसङ्घर्षाद् गता सवितुरन्तिकं ॥
संवत् १२२३ वर्षे भाद्रपदवदि १४ शुक्रवार।

लेख स्पष्ट है।

[JASB, XVIII, p. 950-952, no 1. t and tr.]

३७१

बवागञ्ज मालवा; संस्कृत।

[सं० १२२३ = ११६६ ई०]

मन्दिरके दक्षिणकी ओर।

ॐ नमो वीतरागाय ॥

आसीद्यः कलिकालकल्मषकरिध्वंसैककंठीरवो
वेनक्ष्मापतिमौलिचुम्बितपदः यो **लोकनन्दो मुनिः**
शिष्यस्तस्य ससर्वसङ्घतिलकः **श्रीदेवनन्दोमुनिः**
धर्मज्ञानतपोनिधिर्यतिगुणग्रामः सुवाचां निधिः ॥१॥
वंशे तस्मिन् विपुलतपसां सम्मतः सत्त्वनिष्ठो
वृत्तिं पापां विमलमनसा त्यज्यविद्याविवेकः।
रम्यं हर्म्यं सुरपतिचितः कारितं येन विद्या
शेषा कीर्त्तिर्भ्रमति भुवने **रामचन्द्रः** स एषः ॥
संवत् १२२३ वर्षे।

स्पष्ट है।

[JASB, XVIII, p. 951-952, no 2, t. and tr.]

३७२

कम्बदहल्लि—कन्नड।

[**शक** १०८९=११६७ ई०]

[कम्बदहल्लि (बिण्डिगनवले प्रदेश) में, जैन बस्तिके रङ्ग-मण्डपमें]

स्वस्ति श्रीयुतमूलसंघमदु तां शङ्घं गणं देसियम्।
पोस्तग् गच्छमदन्वयं बेळे समं तां कोण्डकुन्दान्वयम्।
भू-स्तुत्यं **इनसोगे**-दिव्य-मुनिगं पादार्चनक्कं कळा-
भ्यस्तरगं मिव-वंशजर्गंमिदु तां श्री-**पार्श्व**-दान-स्थळम् ॥
धरे तन्नं बण्णिसल् बिण्डिगनविलेयोळ् आ-**नेम-दण्डेश**-दिक्-कुञ्-
जरनर्थ्यं पेट्ट-ताय् **मुद्दरसि** विमळ-गङ्गान्वय-ख्यातेयागल्।
दोरेवेत्ती-**पार्श्व-देव**-प्रभु कलि-युग-भीमार्हं-गेहादि-जीर्णो-
द्धरणं गेय्दावगं सोभिसे सोंपे-वेसनं गेय्सदं पुण्य-पुञ्जं ॥
सले देव-क्षेत्रदोळ् **बिण्डिगनविले**योळिप्पंतु-नाल्-कण्डुगं नीर्-
ण्णेलनन्तव्यत्तरं बेद्दलेयनति-भळं नेम-मन्त्रीश-पुत्रम्।

कुलकं तां **पार्श्व-देवं** सले कलि-युग-भोमाई-सत्-पूजेगोल्दी-
ये लसद्वंश्यङ्गे दिव्य-व्रति-समितिगे विद्यार्थिगुत्साहदित्तम् ॥

शक-वर्ष १०८६ नेय सर्व्वजितु-संवत्सरद माघ ब० ५ शुक्रवार-वन्दु पार्श्व-देव चतुर्विध-दानके बिट्ट दत्ति ॥

[यही स्थान है जो पार्श्वने श्री मूलसंघ देशिय-गण, पोस्तक-गच्छ और कोण्डकुन्दान्वयके हनसोगेके दिव्य मुनिके चरणोंकी पूजाके लिये, विद्वानोंके लिये तथा निजवंशजोंके लिये दिया था।

पार्श्वदेव-प्रभुने,—जिनके पिता नेम-दण्डेश थे और माता मुद्दरसि थीं जो विमल गङ्ग वंशमें प्रख्यात थीं,—विण्डिगनविलेके जैन मन्दिरको सुधरवाया, और उसके लिये कुछ जमीन अपने वंशजोंके लिये, दिव्य व्रतियोंके लिये, और विद्यार्थियोंके उपयोगके लिये दी।]

[EC, IV, Nagmangala Tl, No. 20]

३७२

वन्दूर—संस्कृत और कन्नड

[शक १०६० = ११६८ ई०]

[वन्दूर (जावगल्लु परगने) में, जैन-बस्तिके स्थलपर एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
जयति सकलविद्यादेवतारत्नपीठं
हृदयमनुपलेपं यस्य दीर्घं स देवः ।
जयति तदनु शास्त्रं तस्य यत् सर्व-मिथ्या-
समय-तिमिर-हारि ज्योतिरेकं नराणाम् ॥
श्री-कान्तय्यंदु-कुळ-र
त्नाकरदोळ् कौस्तुभादिगळ-वोल् पलरं ।

लोकोपकार-परिणत- ।
रेकीकृत-सकल-राज-गुणरप्पिनेगम् ।
सळनेम्बनागे यादव- ।
कुळदोळ् पुलि पायॅ कण्डु मुनि पुलियं पोय् ।
सळ एने पोय्दुदरिं पोय्- ।
सळ-वेसरवनिन्दवागे तद्वंशजरोळ् ॥
विनयं प्रतापमेम्बी- ।
जननाथोचित-चरित्र-युगदिं जगमं ।
जन-नयनवेनिसि नेगळ्दं ।
विनयादित्यं समस्त-भुवन-स्तुत्यम् ॥
आतङ्गति-महिमं हिम- ।
सेतु-समाख्यात-कीर्त्ति सन्मूर्त्ति-मनो-।
जातं मर्द्दित-रिपु-नृप- ।
जातं तनुजातनादनेरेयङ्ग-नृपम् ।
बल्लिदरवनीपतिगळो- ।
ळेल्लं धर्म्मार्त्थ-काम-सिद्धि-वोलवनी- ।
वल्लभरातन तनयर् ।
बल्लाळं बिट्टि-देवनुदयादित्यम् ॥
मूवररसुगळोळं तां ।
भाविसे मध्यमनदागियुं नृप-गुण-सद्- ।
भावदिनुत्तमनादम् ।
भावि-भवद्-भूत-जिष्णु **विष्णु** नृपालम् ॥
मलेयं साधिसि माण्डने **तळवनं काञ्ची-पुरं कोयतूर् ।**
मले-नाडा-तुळु नाडु नीलगिरिया-कोळालवा-कोङ्गु-नं-।
गलियुच्चंगि-विराट-राज-नगरं वल्लूरिवेल्लं भुजा- ।
बलदिं लीलेये साध्यवादुदेणेयार् **विष्णु-**क्ष्मापाळनोळ् ॥

अन्तेनिसिद विष्णु-मही- ।
कान्तन तनयं नयानुरूपोपायम् ।
सन्तत-भुज-प्रतापा- ।
क्रान्त-नरं **नारसिंह**नाहव-सिंहम् ॥
आ-**नारसिंह**-नृपतिय ।
मानस-कळ-हंसे पट्ट-**माडेवियो**-धा- ।
त्री-नुते**गेचल-देवि**गे ।
नाना-गुण-गणद कणिगे चिन्तामणिवोल् ॥
सकळ-कळा-परिपूर्ण्ण ।
सकळोर्व्वी-नयन-सुख-दन-कळङ्कं तान् ।
अ-कुटिळनपूर्व्व-नव-र्श- ।
त्करं **बल्लाळ-दे**वनुदयं गेय्दम् ॥
विनय-श्री-निधियं विवेक-निधियं ब्रह्मण्यनं पूर्ण्ण-पु- ।
ण्यननुद्दाम-यशोर्त्थियं जित-जगत्-प्रत्यर्त्थियं सद्-सज्- ।
जन-संस्तुत्यननुद्भवद्-वितरण-श्री-**विक्रमादित्य**नं ।
मनुजेशर् मलेराज-राजननदे**बल्लाळ**नं पोल्वरे ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरं । **द्वारावतीपुर**वराधीश्वरम् । **यादवा**न्वय-सुधा-वार्धि-वर्द्धन-माकर-सान्द्र-चन्द्रम् । विभवाधरीकृतामरेन्द्रम् । वासन्तिका-देवी-लब्ध-वर-प्रसादम् । विरचित-वीर-वितरण-विनोदम् । रिपु-राज-कदली-षण्ड-खण्डन-प्रचण्ड-मद-वेदण्ड । मलपरोळ्-गण्ड-मण्डळिक-गिरि-वज्र-दण्ड । गण्ड-भेरुण्ड । रण-रंग-धीर । जगदेक-वीरक-नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितम् । तळकाडु-कोङ्गु-नङ्गलि-गङ्गवाडि-नोळम्बवाडि - हुळिगेरे-हलसिगे - बनवसे—हानुङ्गल् गोण्ड भुज-बल वीर-गङ्ग-प्रताप **होय्सळ-बल्लाळ-देवं** दोरसमुद्रद नेलेवीडिनोळ् सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे तदन्वय-गुरु-कुळ-क्रममदेन्तेने ।

श्रीमद्-**द्रमिळ**-सङ्घेऽस्मिन्**नन्दि**संघेऽस्त्य**रुङ्गळः** ।
-अन्वयो भाति योऽशेष-शास्त्र-वाराशि-पारगैः ॥

श्री-वर्द्धमान-स्वामिगळ धर्म्मतीर्त्थं प्रवर्त्तिसुवल्लि गणधररेनिसिद [**गौतम-स्वामि**गळिन्दं । **भद्रबाहु-भट्टारक**रिन्दं **भूतबलि-पुष्पदन्त-स्वामि**गळिन्दम् **एकसन्धि-सुमति-भट्टारक**रिन्दम् । **समन्तभद्रस्वामि**गळिन्दम् । **भट्टाकलंकदेव**रिन्दम् । **वक्रग्रीवाचार्य्य**रिन्दं । **वज्रणन्दि-भट्टारक**रिन्दम् । **सिंहणन्द्याचार्य**रिन्दम् । **पर-वादिमल्ल-श्रीपाळ-देव**रिन्दम् । **कनकसेन-श्रीवादिराज**रिन्दम् । **श्री-विजय-देव**रिन्दम् । **श्री-वादिराज-देव**रिन्दम् । **अजितसेन-पण्डितदेव**रिन्दम् । **मल्लिषेण-मळधारि-स्वामि**गळिन्दनन्तरम् ।

तमगाशा-वशमादुदुन्नत-महीभृत्-कोटि तम्मिन्दे बिण्प ।
अमर्दत्ती-धरेगेय्दे तम्म मुखदोळ् पट्-तर्क्क-वाराशि-वि- ।
भ्रममापोषन-मात्रमादुदेनलिं मातेनगस्त्य-प्रभा- ।
वमुमं कीळपडिसित्तु पेम्पिनेसकं **श्रीपाल-योगीन्द्ररं** ॥

अवरग्र-शिष्यर् ॥

श्रीपाळ-त्रैविद्य-विद्या-पति-पद-कमलाराधना-लब्ध-बुद्धिः ।
सिद्धान्ताम्भोनिधान-प्रविसरदमृतास्वाद-पुष्ट-प्रमोदः ।
दीक्षा-शिक्षा-सु-रक्षा-क्रम-कृति-निपुणः सन्ततं भव्य-सेव्यः ।
सोऽयं दाक्षिण्य-मूर्त्तिर्ज्जगति विजयते **वासुपूज्य-व्रतीन्द्रः** ॥

अवर गुड्डुगळ् रत्न-त्रय-समन्वितर् **ब**...**देव**नातन वधु **सावियक्क**म् ॥

अवर्गे तनूभवं जित-मनोभव-रूप-नपार-पौरुषम् ।
विविध-कळा-विळास-भवनं प्रभु **बेळ्ळिय-वासि-सेट्टि** भू- ।
भुवनमनेय्दे रक्षिसुव दानद-धर्म्मद पेम्पिनिं सुधा- ।
र्णवदेणेयप्प कीर्त्तियनुपार्ज्जिसिदं विबुधैक-बान्धवम् ॥
पडेवं सद्-धर्म्म-मर्य्यादेयोळे परदु-गेय्दर्थमं न्यायदिन्दम् ।
पडेदर्त्थं देवता-पूजेगे बसदिगे शिष्टेष्ट-दानक्के निच्चम् ।
कुडे मर्त्तं तन्न भाग्यं तव-निधियेने नीळ्दुण्मि कैगण्मे पेम्पम् ।
पडेदं देसं वियन्मण्डप-कळित-यशः-कल्पवल्ली-विलासम् ॥

आतन सति **बोकियक** ॥ अवर सोदरळियन्दिर् **हेग्गडे माडिराजनुं संकर-सेट्टि**यरं ॥ आ-बेळ्ळिय-दाणि-सेट्टि दोरसमुद्रदल् माडिसिद होय्सळ-जिनालयक्के बिट्ट **बन्दुबुर**दल्लि माडिराजनुं सङ्कर-सेट्टियुं माडिसिद पार्श्व-देवर्गो बसदियं **पुष्पसेन-देव**र्म्मोडिसिदरादेवरष्ट-विधार्च्चनेगं ऋषिगळाहारदानक्कं जीर्णोद्धार-क्कवागि **वासुपूज्य-सिद्धान्त-देवरं** अवर शिष्य **पुष्पसेन-देवरं माडि-राजनुं संकर-सेट्टि**युं समस्त-प्रजे-गावुण्डुगळुं सरागदिन्दा-चन्द्रार्क्क नडेवन्तागि शक-वर्षं १०९० नोन्दनेय सर्व्वधारि-संवत्सरदुत्तरायण-संक्रमण-ग्रहण-व्यतीपातदन्दु धारा-पूर्व्वकं बिट्ट तळ-वृत्ति ॥ (आगे की ६ पंक्तियोंमें दानकी विशेष चर्चा है) सुङ्कद हेग्गडेगळ् बिट्ट नन्दा-दीविगेगे कै-गाण वोन्दु इन्तु वासुपूज्य-सिद्धान्त-देवर्त्तम्म शिष्य **वृषभनाथ-पण्डित**र्गिगनितुवं धारा-पूर्व्वकं कोट्टर् (वे ही अन्तिम वाक्या-वयव और श्लोक)

त्रैविद्य-देव-शिष्यम् ।
देवार्च्चन-दान-धर्म्म-निरतं सततम् ।
देवव्रत-परिशुद्धम् ।
भू-विदितं **पुष्पसेन मुनि**-जन-विनुतम् ॥

[सर्व प्रथम जिन शासनको प्रशंसामें दो श्लोक हैं। पहलेकी ही तरह होय्सल राजाओंकी उन्नतिका वर्णन। विष्णुके विषयमें कहा गया है,—मलेको अधीन करके क्या वह चुप रहा? तळवन, काञ्चीपुर, कोयट्टूर, मलेनाड्, तुळु-नाड्, नीलगिरि, कोळाळ, कोङ्गु, नङ्गलि, उच्चंगि, विराट्-राजा का नगर, वल्लूर,—इन सबको अपने भुजाबलसे, लीलामात्रमें जीत लिया।

जिस समय (अपनी सर्व उपाधियों सहित), होय्सल बल्लाल-देव दोरसमुद्रमें निवास कर रहे थे:—उसके 'गुरुकुल' की परम्परा निम्नभाँति थीः—

द्रमिलसंघान्तर्गत नन्दिसंघमें एक अरुङ्गळ-अन्वय है, उसमें बड़े-बड़े शास्त्र-पारग विद्वान् आचार्य हो गये हैं। वर्द्धमान स्वामीके तीर्थमें क्रमसे इन लोगोंके द्वारा धर्मतीर्थका विकास हुआ,—गणधर गौतम स्वामी, भद्रबाहु-भट्टारक, भूतबलि

और पुष्पदन्त-स्वामी, एकसन्धि सुमति-भट्टारक, समन्तभद्र स्वामी, भट्टाकलंक-देव वक्रग्रीवाचार्य्य, वज्रनन्दि-भट्टारक, सिंहनंद्याचार्य, परवादि-मल्ल श्रीपाल-देव, कनकसेन श्री-वादिराज, श्री-विजय-देव, श्री-वादिराज-देव, अजितसेन-पण्डित-देव, और मल्लिषेण-मलधारि-स्वामि: तदनन्तर श्रीपाल-योगीन्द्र हुए (इनकी प्रशंसा)। इनके मुख्य शिष्य वासुपूज्य-व्रतीन्द्र हुए (इनकी प्रशंसा)।

इनके गृहस्थ-शिष्य, रत्नत्रयके समान, ब···देव, उसकी पत्नी सावियक्क, और इनका पुत्र (प्रशंसा पूर्वक) वेल्लिमें दासि-सेट्टि थे। इसकी पत्नी बोकियक्क थी. इन दोनोंकी बहिनके लड़के हेग्गड़े मादिराज तथा संकर-सेट्टि थे।

बन्दुरमें मादिराज और संक-सेट्टिने पार्श्व-देवके लिये एक मन्दिरका निर्माण कराया, और पुष्पसेन-देवने पार्श्व-देवकी मूर्त्ति बनवायी। उन देवकी अष्टविध पूजनके लिये, मुनियोंको आहार देनेके लिये, तथा मन्दिरकी मरम्मतके लिये,— वासुपूज्य सिद्धन्ति-देव, उनके शिष्य पुष्पसेन देव, मादिराज, संकर-सेट्टि, तथ.. सभी प्रजा और किसानोंने (उक्त मिति को) ग्रहणके समय, ३३ बिलस्तके एक डण्डेसे नापकर भूमि-दान किया (भूमिका वर्णन)। 'सुङ्क' (या चुङ्गी)के हेग्गडेने हमेशा जलनेके लिये एक हाथकी तेलकी चक्की दी।

इस तरह यह सब वासुपूज्य-सिद्धान्त-देवने अपने शिष्य वृषभनाथ-पण्डितको सौंप दिया। हमेशाकी तरह अन्तिम श्लोक। पुष्पसेन-मुनिकी प्रशंसा।]

[EC. V, Arsikere Tl., No. 1.]

३७४

बिजोली;—संस्कृत।

[सं० १२२६ = ११७० ई०]

लेख श्वेताम्बर सम्प्रदाय का मालूम होता है।

[JASB, LV, p.27–32, Tr ;p. 40–46, t.]

३७५

मूडहल्लि;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[कालनिर्देश नहीं, पर सम्भवतः लगभग ११०० ई० (लु. राइस)]

[मूडहल्लि (हदिनाड प्रदेश) में, चन्न-केशवके मन्दिरकी दीपक-स्तम्भके ऊपर]

··· ··· ··· अति पूजित-यति वर्द्धमान अपश्चिम-तीर्थनाथ भमान्मना दिश··· ··पततं··· ··· ···

श्रीमद्द्रमिल-संघेऽस्मिन्नन्दिसंघेऽस्त्यरुङ्गलः ।

अन्वयो भाति निश्शेष-शास्त्र-वाराशि-पारगैः ॥

(दूसरी तरफ़)··· ··· ··· अजितसेन-देव-मुनिपो ह्याचार्यतां प्राप्तवान् ।

[इस लेखमें द्रमिलसंघान्तर्गत नन्दिसंघके अरुङ्गल अन्वयकी तारीफ़ है । इस अन्वयमें प्रायः सभी आचार्य या मुनि 'निश्शेष-शास्त्र-वाराशि-पारग' थे ।··· ··· अजितसेन-देव मुनिने आचार्य पदवी प्राप्त की ।]

[EC, III, Nanjangud Tl., No. 133.]

३७६

हुल्लीगेरी—संस्कृत

[बिना काल-निर्देशका, पर संभवतः लगभग ११०० ई० (?)]

[हुल्लीगेरीपुर (कुवरेगुल्ली ताल्लुक) में, बसन मन्दिर के सामनेके स्तम्भ पर]

श्रीम··· ···सर्व्व ने··· ···रं सायया मनेय मण्डुद्या··· ···नित्य पूजा··ण

आसीत् संयमिना पृथ्व्यां होमैनान्यन्महातपः ।

तच्छंशिना शील-स्तम्भो जिनचन्द्रेण निर्मितः ॥

[इस पृथ्वी पर पशु-यज्ञके सिवाय संयमीके द्वारा प्रत्येक महातप विद्यमान था; इसी बातको सर्वविदित करानेके लिये जिनचन्द्रने यह पाषाण-स्तम्भ खड़ा किया था ।]

[EC, III, Mandya., Tl., No. 34.]

३७७

तेवरतेप्प—संस्कृत तथा कन्नड़।

११७१ ई०

[तेवरतेप्पमें, वीरभद्र मन्दिरके सामनेके पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीर स्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥
सागर-वारि-वेष्टित-समस्त-धरा-रमणी-घन-स्तना- ।
भोग विदेम्बिनं विदित-विस्तृत-सारताराप्रहारदिम् ।
नागरखण्ड-पत्र-परिवेष्टन्दिम् जन-नेत्र-पुत्रिका- ।
रागमनित्तु माण् दुदे मनस्-सुख-दं **बनवासि-मण्डळम्** ॥
बळसिद नन्दनावळिगळिं शुक-सङ्कुळदिं पिकाळियिम् ।
बळेदेरगिर्द्द शाळि-वनदिं भ्रमराळियिनित्तु-वाटियिम्०।
तिळिगोळदिं लता-भवनदिं कमळाकरदिं कुमुद्वती- ।
कुळदिनिदेम् मनङ्गोळिपुदो सततं **बनवासि-मण्डळम्** ॥
अदनाळ्वनखिळ-रिपु-नृप- ।
मद-मर्द्दननर्त्थिगर्त्थमं पदेदीवम् ।
पद-नत-रक्षा-दक्षम् ।
विदित-यशं **सोवि-देव**-भूतळनाथ ॥
आ-कादम्ब-कुळ-तिळकन विक्रम-प्रक्रमवेन्तेन्दडे ॥
अदटर्म्मेच्चियक्के जीरर्व्विहदनुळिदु कुम्बिक्के विद्विष्ट-भूपर् ।
म्मदवं बिदिक्के शेषाक्षतमनोसेवरोतिक्के सर्व्वस्वमं ब- ।
ळ्ळिदकं तन्दिक्के मारान्तवनिप-सतियर् कण्ण-नीरिक्के पूण्डि-
क्किदना-**बङ्काळव**-धात्रीपतिगे निगळवं **सोवि-देव**-क्षितीशं ॥
(क) ॥ मदवदरातियं तविसलग्गळ-गण्ण **कदम्ब-चक्रनेम्**- ।

बुदे पेसरग्र-मण्डळिक-**गण्डर दावणि**येम्बुदे दिटक्क ।
अदिरदराति- **मण्डळिक-भैरव**नेम्बुदे **सोवि-देव**नेम्- ।
बुदे **निगळंकमल्ल**-नृपनेम्बुदे **सत्य-पताक**नेम्बुदे ॥
क ॥ पर-नृप-बन्धकने गण्-।
डर दावणि कलिये मण्डळिक-भैरवनेम् ।
स्थिर-सत्य-वाक्यने डुसि- ।
वर शूलं **सोवि-देव**ननुपम-भावम् ॥
नागरखण्डं बनवसेग् ।
आगिक्कुं भूषण-वोलन्तदरोळगिम्- ।
बागि सले **तेवरतेप्पम्** ।
नाग-लता-पूग-वनदिनसदळवेसेगुम् ॥
आ-तेवरतेप्पदधिपति ।
भूतळपति **सोवि-देव**-पद-युगळ-सरो- ।
जात-मद-मधुक ॑ वि- ।
ख्यात-यशं **बोप्प-गौण्ड**नाहव-शौण्ड ॥
वृत्त ॥ अमरेज्यं मन्त्रदोळ् शौचदोळमरनदीजं प्रजा-पाळन-प्र- ।
क्रमदोळ् धर्म्मात्मजं सप्रभुतेयोळमळाब्जेक्षणं निश्चयं ता-
ने महो-लोकाग्रदोळ् गावण-कुळ-तिलकं बोप्प-गावुण्डनेन्देन्- ।
दु मनस्-सम्प्रीतियिं बण्णिपुदखिळ-धरा-चक्रवानन्ददिन्दं ॥
आ-तेवरतेप्पदधिप- ।
ख्यातिय नानेननेननभिवर्ण्णिसुवेम् ।
भूतळमे ताने बण्णिपुद् ।
ईतने गुणियेन्दु **बोप्प-गौड**ननिशम् ॥
आ-त्रिभुविन सति **लक्ष्मी**- ।
देविगे सौभाग्य-भाग्य-लक्षण-गुण-सद्- ।
भावाकृतियिन्दं मेल् ।

सिद्धान्ताम्भोनिधान-प्रविसरदमृतास्वादपुष्ट प्रमोदः ।
दीक्षा-शिक्षा-सुरक्षाक्रमकृतिनिपुणस्सन्ततं भव्य-सेव्यः
सोऽयं दाक्षिण्य-मूर्त्तिर्ज्जगति विजयते वासुपूज्य-व्रतीन्द्रः ॥

श्रीमद्-वज्रणंदि-देवर शिष्यरु मुगुळिय पारश्व-देवरु रुधिरोद्गारि-संवत्सरद भाद्रपद-ब १३ ब्र ॥... ... ...

लेख स्पष्ट है।

[EC. V, Harsam Tl., No. 128.]

३८१

बेक;—संस्कृत तथा कन्नड।

[शक १०९५ = ११७३ ई०]

[जै. शि. सं०, प्र. भा.]

३८२

दोहद;—संस्कृत-भग्न

[श्वेताम्बर सम्प्रदायका लेख]

[IA, X, p. 158, t.]

३८३

करडालु;—कन्नड।

[शक निर्देश रहित, पर ११७४ ई० ? (लू. राइस) ।]

[करडालुमें, ध्वस्त बस्तिमें एक खम्भेपर]

अनुपम-पुण्य-भाजने जिनेन्द्र-पदाब्ज-विलीन-चित्ते पा- ।
वन-सु-चरित्रे हर्य्यले-महासति तदवसान-कालदोळ् ।

मनुज-मनोधनं करेदु बूवय-नायक केम्मगेम नीम् ।
कनसिनोळप्पडं नेनेयदिर्नेने सास्वतमप्प धर्म्ममम् ॥
धर्म्ममनागळुं मुददे माल्पुदु माडिदोडप्युदावुदा- ।
धर्म्मदिनेम्बेयप्पोडे सुरेन्द्र-नरेन्द्र-फणीन्द्र-राज्यमन्- ।
तो र्प्मोदलप्पुदागि कडेयोळ् वर-मुक्तियनीवुदन्तरिम् ।
धर्म्म दनागु सत्य-निधि बूवय-नायक बेडिकोण्डे नाम् ॥
एनगनुमोदन-पुण्यम् ।
निनगं निस्सीममप्प पुण्यं सार्गुम् ।
मनमोसेदु माडिसोन्दम् ।
जिन-गृहमं बूचि-देव धर्म-धुरीणा ॥
एन्देन्दळेम देवर- ।
नेण्टर्कं नीने पूजिसि चिक्कथनम् ।
कुन्दि करिगन्द दन्ता- ।
नन्ददे रचिपुदुपेच्चे गेय्दडे दोषम् ॥
तदनन्तरमभिषवमं ।
मुडदिं जिन-पतिगे माडि गन्धोदकमम् ।
सदमळ-चरित्रे कोण्डळ् ।
बेदरिपेनघ-बलमनेम्बी-मनदुत्सवदिम् ॥
तोरेदु जिनेन्द्र-चन्द्र-पद-सन्निधियोळ् पद-पञ्चकङ्कळम् ।
मरेयदे भोरेनुच्चरिसुतुं नेरे सुत्तिद मोह-पाशमम् ।
परिदु जगज्जनं पोगळे हुच्यंवे नारि समन्तु सैय्पु कण् - ।
दरेदवोलेम् समाधि-विधियिन्दिरदेय्दिदळिन्द्र-लोकमम् ॥
बरवं केळ्दमरावती-पुरद-देवी-सङ्कुळं बन्दु नू- ।
पुरमम्मुत्तिन हारमं कटकमं केयूरमं वज्रदुङ्-।
गुरमं माणिकदोलेयं तुडिसि बेगं देवि नीनेरु रा- ।
ग-रसं••• •••मिगली-विमानमनेनुत्तं तन्दवर् स्साचिंदर ॥

पेरि विमानमं बरे सुराङ्गनेयर् नळि-वो [ळ]··· ··· ··· ।
त्तोरुविनं महोत्सवदे सेसय्निकके सुरानक-स्वनम् ।
मीरे घनाघन-ध्वनियनेत्तिद सत्तिगे चन्द्र-बिम्बमम् ।
बीरे विलासदिं बिडिदु चामरमिक्कि समन्तु पोकळा- ।
नीरे महानुभावे सति हर्य्यल-देवि सुरेन्द्र-लोकमम् ॥

[(प्रशंसा सहित) महासती हर्य्यलेने अपनी मृत्युके समय, अपने पुत्र बूवय-नायकको बुलाकर कहा,—स्वप्न में भी मेरा ख़याल न करना, लेकिन धर्म्मका ही विचार करना । हमेशा धर्म्म करो, क्योंकि ऐसा करने से तुम्हें इनाम (जिनके नाम दिये हैं) मिलेगा । हे बूवि-देव ! यदि मुझे और तुझे दोनोंको पुण्योपार्जन करना है, तो जिन मन्दिर बनवाओ । मेरे देवके मित्रोंका (?) हमेशा आदर करना और अपने लघु चाचाका हमेशा खयाल रखना । इसके बाद, जिनपतिपर लेप करके, उसने चन्दनका जल लिया इस निश्चयसे कि वह अपने तमाम पापोंको धो दे ।

तब, जिनेन्द्रके चरणोंकी उपस्थितिमें, बिना भूले पाँच शब्दों (पञ्च नमस्कार मंत्र) को बहुत जोरसे उच्चाचरण करते हुए, जिन इच्छाओंके जालसे वह घिरी हुई थी, उसे तोड़ते हुए, स्त्री हर्य्यलेने, समाधिके आश्रयसे इन्द्रलोकमें प्रवेश किया ।]

[EC, XII, Tiptur Tl, No. 93]

३८४

करडालु;—कन्नड ।

वर्ष जय [= ११७४ ई० ? (लू. राइस) ।]

[करडालुमें, ध्वस्त बस्तिमें एक खम्भेपर]

··· ··· श्री-चान्द्रायण-देवर··· ··· ह-(हरि)हर-देवि ॥
स (श) तपत्र-ननदिं सरोवर-कुलं मेरु प्र-कूट-प्रमोन्- ।

नतियिन्दद्रिजेयिं मदेभ-घटेयिं सैन्याळि सन्-मार्ग··· .··· ।
··· ··· काव्य-निबन्धमेन्तेसगुमेन्ती-लोकदोळ् लोक-सं- ।
स्तुत चन्दायण-देवरिन्देसेगुवी-श्री-कोण्डकुन्दान्वयम् ॥
एरेव बुधाळिगाभित-धनकनुरागदोळित्तु मत्तवा- ।
दरिसुव दानदिन्दे सुर-भूजमनेळिपळेन्दे बण्णिकुम् ।
परम-जिनेन्द्र-पाद-कमळार्च्चन-निभर-भक्ति-युक्तेयम् ।
हरिहर-देवियं नेगळ्द शासन-देवियनी-धरा-तळम् ॥
वर-जय-(सं) वत्सरं विनुत-जेष्ठ-युतं सित-पक्षमष्टमी- ।
परिगतमिन्दुवारदोळनिन्दित-पञ्च-पदङ्गळं सुखोत्- ।
कर-निळयङ्गळं नेरेये तन्नोळे··· ···सुतं समाधियिम् ।
हरिहर-देवि-विश्व-विबुध-स्तुतेयेय्दिदळिन्द्र-लोकमम् ॥
निरुपमेयं चरित्र-युतेयं वनिता-जन-रत्नेयं मनो- ।
हर-जिन-मार्ग-वारिनिधि-चन्द्रिकेयं सुकृतैक-पुञ्जेयम् ।
पर-हित-चित्तेयं बगेयदन्तकनेम्ब दुरात्मनोय्दनी- ।
हरिहर-देवियं विबुध-वन्दितेयं भुवनाभिरामेयम् ॥

जिनेश्वर नमो वीतरागाय शान्तये नमोऽस्तु ॥

[कौण्डकुन्दान्वयके चन्द्रायण-देवकी प्रशंसा,—जिनकी गृहस्थ-शिष्या हरिहर-देवी थी । उसकी भक्तिकी प्रशंसा । (उक्त सालमें), पञ्च-नमस्कार मन्त्रका उच्चारण करते हुए, समाधिके द्वारा, उसने इन्द्रलोक प्राप्त किया । जिनेश्वर, वीतराग और शान्तके लिये नमस्कार हो ।]

[EC, XII, Tiptur, Tl, No, 94.]

३८५

हेरगु;—संस्कृत तथा कन्नड़।

वर्ष जय [११०४ ई० ? (लू० राईस)]

स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वरं द्वारावतीपुरवराधीश्वरनुं कोङ्गु-नङ्गलि-गङ्गवाडि-नोणम्बवाडि-बनवसे-हानुङ्गल्लु-गोण्ड भुजबल वीरगङ्गनसहायशूर निश्शङ्क-प्रताप होय्सळ-श्रीबल्लाळ-देवरु दोरसमुद्रद राजधानीयल्लि सुख-सङ्कथा-विनोददिं पृथ्वी-राज्यं गेय्युत्तमिरे जयसंवत्सरद पुष्यदमावासे-मंगळवार-व्यतीपात-उत्तराषाढ़ा-नक्षत्रदन्दु हेरगिन बसदिगे मोदलु गद्यान १ क्कं बळि-सहितवागि गद्याणविप्पत्त-नाल्कक्कं भूमियं धारापूर्वकं माडि बिट्ट स्थल हिरिय-केरेय किल्व-यलल्लु बिट्टिग-गट्टवोन्दु ऊरिन्द इडुवण होलदल्लि बेद्दले नाल्वत्तेरडु गेण गळेयल्लु कम्भ ३२½ बिट्ट दत्ति ॥

गतलीलं लाळनाळम्बित-बहळ-भयोग्र-ज्वरं गूर्ज्जरं सन्- ।
धृतशूलं गौळनङ्गीकृत-कृशतर-सम्पल्लवं पल्लवं चू- ।
र्ण्णित-चूळं चोळनादं कदन-वदनदोळ् भेरियं पोय्सेवीरा- ।
हित-भूभृज्जाळ-काळानळनतुलबलं वीर-बल्लाळ-देवम् ।
मनमोल्दुद्यद्यशश्रीपति नेले मोदलागल् सल्वन्तेरळ्-पोन्- ।
ननपारौदार्य-पय्युंन्नतनुमुदयियुं मेरुवा-चन्द्रनुं निल्- ।
विनवस्युत्साहदिन्दं पेरगिन जिनगेहक्के बिट्टं पुरश्री- ।
जन-लीलानङ्ग-रूपं मथन-जय-भुजं वीर-बल्लाळ-देवम् ।
अतिशोभाकरमप्प विष्णुजिन वक्षस्थानदोळ् लक्ष्मियुन्- ।
नति वेत्तिर्प्पबोलिक्कें कीर्त्ति-युतनोळ् श्री-चामनोळ् कूडि सं- ।
गत-सत्वंबड्डु-पुत्ररं पडेदुतं आकल्पं चन्द्रार्क्करं ।
क्षितियुं मेरु-नगेन्द्रमुळ्ळनेगमिं भद्रं शुभं मङ्गळम् ॥
इवनीयन्ददिनेय्दे पालिसिदवर्ग्गिष्टार्थ-संसिद्धि सं- ।

भविकुं कोण्डछिदङ्गे गङ्गे गये केदारं कुरुक्षेत्रमेम्ब् ।
इवरोळ् पेसदे पार्वरं गोरवरं गो-बृन्दमं पेण्डिरम् ।
तवे कोन्दिक्किद पापमेम्बुगुमवं बीळ्गुं निगोदङ्गळोळ ॥
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम् ।
षष्टि-वर्ष-सहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥

[इस लेखमें बताया गया है कि जब (अपनी उपाधियों सहित) होय्सल बल्लाल-देव शाही नगर दोरसमुद्रमें था, और शान्ति से राज्य कर रहा था— (उक्त मितिको) हेरगूकी बसदिके लिये (उपर्युक्त) भूमि-दान किया । (उसकी प्रशंसा, जिनमेंसे एक यह भी है) जब वह प्रयाण करता था, तो लाड़, गुर्ज्जर, गौल (ड), पल्लव, और चोल राजाओंको भयका सञ्चार हो जाता था ।]

[EC, V, Hassan, Tl., No. 58.]

३८६

विजोली—संस्कृत

[सं० १२३१ = ११७५ ई०]

लेख श्वेताम्बर सम्प्रदायका मालूम होता है ।

[JRAS, 1906, p. 700-701.]

३८७

क्यातनहल्लि—कन्नड़ ।

मन्मथवर्ष [११७२ ई० (लू० राइस)]

[क्यातनहल्लि (क्यातनहल्लि तालुके) में, कोदण्डराम मन्दिरके पत्थर पर]

श्रीमत्परमगम्भीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर तळकाडु-गङ्गवाडि-नोणम्बवाडि -

गोण्ड भुज-बल वीर-गङ्ग असहायशूर निःशङ्कप्रताप **होय्सळ-वीर-बल्लालदेव** श्रीमद्-राजधानी **दोरसमुद्र** नेलवाडिनलु सुक (ख)-संकथा-विनोददिं राज्यं गेवुत्तिर्द(रे) **मन्मथ-संवत्सरद मार्ग्गसिर सु १ आदिवारदन्दु श्रीयादव-नारायण**-चतुर्व्वेदि-मङ्गलदल्लु श्रीकरणद कलियणन कोडगेयोळु अय्वत्तु-कोळग गद्देयं साहिर-कोळग बेद्लेयं श्रीकरणद हेमाडे···ळयण्णन कय्यलु **बल्लाळ-दे**···गे क्रयद होन कोट्ट सर्व्व-बाधा-परिहारवागि **कोडेहाळ-बसदिगे** चन्द्रार्क्क-तारम्बर सल्वन्तागि धारापूर्व्वकं माडि येरेयण बिट्ट दत्ति ।

[जिस समय होय्सळ **वीर-बल्लाल-देव** राजधानी दोरसमुद्रमें रहते हुए शासन कर रहे थे, उस समय कोडेहाल-बसदिके लिये कुछ जमीन **यादव-नारायण** अग्रहारमें खरीदी गयी थी और वह बिना कियायेके दी गयी थी ।]

[EC, III, Srirangapatan Tl., No. 146]

३८८

श्रवणबेल्गोला—संस्कृत तथा कन्नड ।

[शक १०९९ = ११७९ ई० (लगभग)]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

३८९

एलेबाल;—कन्नड-भग्न

[शक १०९९ = ११७७ ई०]

[पुलेबालमें, बसव-देव मन्दिरके पासके पाषाणपर]

··· ··· ······ सेतु ॥ ··· ··· ······ सोकदिन्दं कळसिदुदु ··· ··· ··· ··· ·· ··· **नागचलि-कुल**दिं गम्भीरदिन्दं ··· ··· ··· एदं बनियिसे नन्दन-वनदिन्दन् ··· ··· ···, ·····पनी-वनप ······ ··· ··· **नागर-खण्डद**

.... बरिसि चन्द्रादित्यरुळ्ळन्नेगं चिर-लग्नं बरे-पट्ट .... लि धारिणियोळु च्चोद्यमेनलु कडम्ब......... धिपति **सोयि-देव**-भूपति-तिळकं जन-नुत-**कदम्ब-वंश** स ...... तिक्कुं बिरुदर बिरुदं बिट्टु मेयिक्कुतिक्कुं कदनक्किन .... ल्लं यिदे पुल्लं कर्चि नीरं पुगुतरलु मेण्णागि पुत्तेरगुं .... यि-देव-प्रतापम् ॥

अदटर बेर कित्तु सुभटोत्तमरं बेदर् ...... ।
.... णनेम्बुद- ।
ल्लदे रण-रङ्ग-शूद्रकन साहस-भीमन सोयि ...... ।
.... नं सले विश्व-धात्रियोळ् ॥
बनवसे-नाडधिकारं । जन-नुत- ...... ।
.... लन्तामान् । तनदन्दं-पडेद **विक्रमादित्य**-नृपम् ॥
वीरारातिग .... ।
...... सले शील्दु नुङ्गि नोणेगुं दोर्-दण्ड-चण्डासियिम् ।
भोरेन्दा .... ।
धीरोदात्तन वर्णिकुं बुध-जन श्री-**विक्रमादित्य** ...... ॥
.... निट्टदे **हय्वे कोङ्कणम्** ।
बेडगिन **गङ्गवाडि तुळनाडे** .... ।
............बेसनेनद भूभुजरारु कप्पमम् ।
कुडदवनीशर् .... त्रियोळ् ॥

स्वस्ति समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्रीमन्-महा-म .... से पन्निर्च्छा-सिरमनाळुत्तं सुख-सङ्कथा-विनोददि राज्यं .... ॥

.... ।
.... ।
.... एलेवल्लि कौकु नारङ्ग-फलम् ।
रागदेळ.................. ।

··· ··· सत्-पङ्केज-षण्डङ्गलि कुवलयदिं नाग-पुन्नागदिन्दम् ।
कळ ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ।
तिळक-श्री-चम्पकामोददिनेसगु सदा नागवल्लि-विलासम् ।
··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· प्राज्य-लक्ष्मी-निवासम् ॥
गावणिण-कुलदे पुट्टिद ।
भाविसे केरेय ··· ··· ··· ··· ··· ··· ।
··· ··· ··· य पोगळे पुट्टिद ।
केवळमे देकि-सेट्टि बुध-सुर-भूज ॥
सङ्क-ग ··· ··· ··· ।
··· ··· ··· सेट्टि कृतार्त्थम् ।
बिङ्कदेळम्बळिळयोळम् ।
भोङ्कने जिन-गृहमम् माडि कीर्त्तिय ··· ··· ॥
··· ··· ··· ··· ति गुरुवी-भानुकीर्त्ति-व्रतीन्द्रम् ।
··· ··· ··· ··· ति गुरुवी-भानुकीर्त्ति-व्रतीन्द्रम् ।
जननि प्रख्यातेयादी ··· ··· ··· ··· ··· दम् ।
तनगन्ता-पल्लि बाळाम्बिके जन-नुत-नी-शङ्क-गावुण्ड मावं ।
जन-वन्द्यं दे ··· ··· ··· ··· ··· ··· लक्ष्मी-विळासम् ॥
केरेयम-सेट्टिय सुतरेम् ।
किरु-कुळरे केतमल्ल ··· ··· ··· ।
··· ··· ··· ··· ··· कल्प महीजम् ।
नेरेयेसेगं देकि-सेट्टि यनुवरु घरेयोळ् ।
··· ··· ··· ··· पाद-सरोज-भृङ्गनम् ।
सु-कवि-जन-स्तुतं विबुध-कल्प-महीजन बण्णिकुं स ··· ··· ।
··· ··· ··· ··· ·· शा-करि-दन्तव मुट्टे पर्व्वुगुम् ।
विकसित-भव्य-पङ्कज-दिवाकरनेन् ··· ··· ··· ॥
··· ··· न-पद-पङ्कज-भृङ्गम् ।

जिन-महिमोत्तुंग विश्व-लक्ष्मी-सङ्गम् ।
जिन-महिम ··· ··· ··· ··· ।
··· ··· ··· ··· **देकि-सेट्टि** कीर्त्ति-विळासम् ॥
जिन-समय-वार्धि-हिमकर ।
जिन-मत-ल ··· ··· ··· ··· ।
··· ··· नम-निदानं तनगेने ।
बन-नुत-नी-**देकि-सेट्टि** धारिणिगेसेदम् ॥

अवर गुरु ··· ··· दडे ॥

कुन्तळ-गौड़-माळव-बनाहुति-दोहळि पोट्टियाण या ।
··· ··· ··· ··· विदर्भणदिन्दे बन्दु सै- ।
द्धान्तिक-**पद्मणन्दि**-सुतनी-मुनिचन्द्रनोळेय्दे ··· ।
··· ··· यिन्तु हरेदत्तु समस्त-धरा-तळाग्रदोळ् ॥
अतितीव्रानल-काळकूट ··· ··· बिननुङ्गिदुद्- ।
धतनं माणदे ··· नाडिसुव कन्दर्प्प बरल्कम्मने ।
··· ··· ··· ··· बयलुगे ··· ··· ··· ··· वी- ।
र-तप-श्री-**मुनिचन्द्र-देव**-मुनियङ्गक्कुं पेरङ्गक्कौमे ॥
आरैवडे भेचक्रम् ।
बारह ··· ··· ··· गणित-स्थिति तत्- ।
सारतर-सूक्ष्म-तत्त्व-वि- ।
चारं **मुनिचन्द्र**-यतिगे हस्तामळकम् ॥

अवर ··· ··· तेन्दडे ॥

श्रीमन्**मूल**-पदादि-**सङ्घ**-तिळके श्री-**कोण्डकुन्दान्वये** ।
कानूर् नाम-**गणो** ··· ··· ··· **तिन्त्रिणीकाह्वये** ।
शिष्यः श्री-**मुनिचन्द्र-देव**-यमिनः सैद्धान्त-पारङ्गमो ।
जीयाद् ··· ··· ··· श्री-**भानुकीर्त्तिर्म्मुनिः** ॥

उरगोग्र-ग्रह-शाकिनी-विहग-भूत-प्रेत ··· ग-मी- ।
कर-मेता ··· ··· ··· गणं भू-चक्रदोळ् तोरलु- ।
द्धरिसित्तलदे यन्त्र ओदिदुदे मन्त्रं कोट्ट बेर् त्तन्नव- ।
च्चरि सैद्धा ··· ··· ··· ··· नि नाथोग्राशे सामान्यमे ॥

स्वस्ति श्रीमत्-स (श) क-नृप-कालातीत-संवत्सर-सतंग ··· ··· भप्पनेय १०६६ नेय श्रीमत्-कळचुर्य्य-भुज-बळ-चक्रवर्त्ति राय ··· ··· नेय हेमळम्बि-संवत्सरद ज्येष्ठ-सुद्ध-दशमियादिवारदन्दु ··· ··· ण-सङ्क्रान्ति-व्यती ··· ··· ··· यियोळ् श्रीमद्-एळम्बळिय देकि-सेट्टि तन्न माडिसिद शान्तिनाथ ··· ··· उदिय खण्ड-स्फुटित ··· ··· यर-जीयराहार-दानकं चातुर्व्वर्ण-श्रवण-संघक्केन्दु श्रीमन्मूल-संघद काणूर्-गण ··· ··· गच्छद कोण्डकुन्दान्वयद तुल-वंशद वीर-बळ-माळातिश्य (शय)-श्रयोत्कृष्टानादि-संसिद्ध ··· ··· पुराधिनाथ-श्री-शान्तिनाथ-घटिकास्थानद मण्डळाचार्य्यरप्प श्री-भानुकीर्त्ति-सि ··· ··· कालं कर्च्चि धारा-पूर्व्वकं माडि गोळिकेरेय बयललु (यहाँ पर दानकी विगत दी है) अन्ता-स्थानमं तम्म शिष्यरप्प मंत्रवादि-मकरध्वज श्रुत ··· ··· रिगे कोट्टरु ॥ (हमेशाके अन्तिम श्लोक और वाक्यावयव)।

[(शिलालेखका अधिकांश मिटा हुआ है)।

नागवल्लि-कुल और नागरखण्डका वर्णन । कदम्ब राजा सोयि देवकी प्रशंसा । बनवसे-नाड्का शासन विक्रमादित्यको मिला था, जिसे हय्वे, कोंकण, प्रसिद्ध गङ्गवाडि, और तुळु ··· ··· के राजा आकर भेंट देते थे ।

जिस समय, अपने समस्त पदों सहित, महा-म [ण्डलेश्वर] ··· बनवसे १२००० पर शासन कर रहे थे :—नागवल्लिके आकर्षणोंका वर्णन । गावणिग कुलमें उत्पन्न हुआ केरेय [म-सेट्टि] था, जिसका पुत्र देकि-सेट्टि था । सङ्क-गवुण्डने देकि-सेट्टिके साथ मिलकर एलम्बळ्ळिमें एक जिनमन्दिर बनवाया । उसके (सङ्क-गवुण्डके) भानुकीर्त्ति-व्रतीन्द्र गुरु थे, माँ प्रसिद्ध ··· ···, पत्नी गङ्गाम्बिके

और उसका श्वसुर विश्व-विख्यात ...... था। केरेयम-सेट्टिके चेतमल्ल और देकि-सेट्टि पुत्रोंमेंसे देकि-सेट्टिकी जैनधर्मके महान् संपुष्टिदाताके रूपमें प्रशंसा।

मूलसंघ, कोण्डकुन्दान्वय, काणूर्-गण, तथा तिन्त्रिणिक-गच्छके मुनिचन्द्र-देवके शिष्य भानुकीर्त्ति-मुनिकी प्रशंसा (जैसा कि क्रमाङ्क ३७७ वें शिला-लेखमें है।

(उक्त मितिको), एलम्बळ्ळि देकि-सेट्टिने, अपने द्वारा बनायी हुई शान्ति-नाथ-बसदिकी मरम्मतके लिये, जीयस् तथा श्रवणोंकी चारों जातियोंके भोजन-प्रबन्ध (या आहार-दान) के लिये, शान्तिनाथ-घटिका-स्थान-मण्डळाचार्य्य भानुकीर्त्ति-सिद्धान्त-देवके पाद-प्रक्षालन-पूर्व्वक,—(उक्त) भूमिका दान दिया। और वह 'स्थान' उसने अपने शिष्य मन्त्रवादी मकरध्वजको अर्पण कर दिया।

हमेशाके अन्तिम श्लोक।]

[EC, VIII, Sorab, Tl., No. 384.]

३९०

हेरगू;—संस्कृत तथा कन्नड़।

वर्ष दुर्मुखी [११७७ ई० (लू० राइस)]

स्वस्ति श्रीमतु-दुम्मुखि-संवत्सरद चैत्र-सुद्ध-दसमी-सोमवार-दन्दु हेरगिन चेन्न-पारिश्व-देवर नन्दा-दीविगेगे श्रीमतु सुङ्कद हेग्गडे हेरगिन बाचरस-गट्टियरस-बम्म-देव-बल्लय्यङ्गळु सुङ्कवं बिट्टरु एत्तु-गाण ओन्दक्कं आ-तेल्लिगर मने-देरे ओन्दुवं ऊरोडेय-नारसिंगण्ण मार-गवुण्ड सेनबोव-सोमय्यनोळगाद समस्त-प्रजे-गळिद्दु बिट्ट धर्म्मं ॥

[(उक्त मितिको) चुङ्गीके अध्यक्ष (नाम दिया है) ने हेरगूके भगवान चेन्न-पारिश्व (पार्श्व) के हमेशा बलनेवाले दीपके लिये चुङ्गीके दाम छोड़ दिये। और चौकीदार (Headman) सेनबोव (जिन दोनोंके नाम दिये हैं)

और समस्त प्रजा एक बैलके कोल्हूका कर तथा एक तेलीके घरका कर देती थी (?)।]

[EC, V, Hassan, Tl., No. 59.]

३९१

अजमेर;—प्राकृत।

[सं० १२३४ = ११७७ ई०]

संवत् १२३४ जेठ सुद १३ बुधदिने साधुतुल्हा पुत्रवान हालु पार्स्व (श्वं) नाम वेवपाल प्रणमतिमिहा।

अर्थ स्पष्ट है।

[JASB, VII, p. 52, No. 3, t.]

३९२

खजुराहो;—संस्कृत।

[सं० १२३४=११७७ ई०]

[यह लेख किसी जैन प्रतिमाके अधः पाषाणपर उत्कीर्ण है और खजुराहोमें पाये जानेवाले जैन-शिला-लेखोंमें सबसे पीछेके (उत्तरवर्ती) कालका है।]

[A. Cunningham, Reports, XXI, p. 69, 5, a.]

३९३

श्रवणबेल्गोला;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[वर्ष हेवलम्बि = ११७७ ई० ? (लू० राइस)]

[जै. शि. सं., प्र. भा.]

२४६ 394

हट्ण—संस्कृत तथा कन्नड ।

[शक ११०० = ११७८ ई०]

[हट्ण (नेल्लीकेरी परगना) में, वीरभद्र मन्दिरके पास एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
श्रीपति-जन्मदिन्देसेव यादव-वंशदोळाद दक्षिणोर्-
व्वीपतियप्पनोर्व्वं सळनेम्ब नृपं सळेयिन्दे कोपन- ।
द्वीपियनोन्दनोर्व्वं मुनि पोय्सळ येन्दडे पोय्दु गेल्दु दिग्-
व्यापि-यशं नेगळ्ते-वडेदं गड **पोय्सळ**नेम्ब नामदिं ॥
स्वस्ति श्रीजन्मगेहं विधृत-निरुपमोदात्त-तेजो-महोर्व्वंम् ।
विस्तारान्तः-कृतोर्व्वी-तळमवनत-भूभृत्-कुल-त्राण-दक्षम् ।
वस्तु-व्रातोद्भव-स्थानकममलयशश्चन्द्रसम्भूतिधामं-
प्रस्तुत्यं नित्यमम्भोनिधि-निभमेसेगुं पोय्सळोर्व्वीश-वंशम् ॥
अदरोळ् कौस्तुभदोन्दनर्घ्य-गुणमं देवेभदुद्दाम-स-
त्वदगुर्व्वं हिमरश्मियुज्वलकलासम्पत्तियं पारिजा-
तदुदारत्वद पेम्पनोर्व्वने नितान्तं ताळ्दि तानल्ते पु-
ट्टिदनुद्वृत्त-तामो-विभेदि **विनयादित्या**वनीपालकम् ॥
कन्द ॥ विनयं बुधरं रञ्जिसे । घन-तेजं वैरि-बलमनञ्जिसे नेगळ्दं ।
विनयादित्य-नृपालकन् । अनुगत-नामात्थंनमल-कीर्त्ति-समर्त्थं ॥
बुध-निधि **विनयादित्य**न । वधू **केळेयब्बरसि**येम्बोळात्मास्यविभा-
विधुरित-विधु परिजन-का- । मधेनु नेगळ्दळ् सुशीलगुणगणधामं ॥
आ-दम्पतिगे तनूभवनादं तनगेरंगदरि-नृपाळरनं भो-
··द बोळेरंगिपोनाहव- । मेदिनियोळे नेगळ्दनेरेयंनेळे**ओरयङ्गम्** ॥
वृ ॥ आतं चालुक्य-चक्रेशन बलद भुजा-दण्डमुद्दण्ड-भूप-

मर्य्यादिक्केतेन्दोडे चतुस्समुद्रपर्य्यन्तं बरं नडवन्तागि १२० नूरिप्पत्तेन्तुकत्ते-कोण-मण्डि-मैत्र-दोणि-दुर्गि-गळ-पयमत्रेयळ् नडेवडं सुङ्क-परिहारवागि कोट्टर् मत्तं शासन-परिहारिगरेनदे वोकल लोन्दु पणवं बिट्टर् ॥ यिन्ती केयि-मने-तोट-मुख्य-समस्त आय-दायवेल्लमं सर्व्वबाधापरिहारवागि धारा-पूर्व्वकं माडि बिट्टर् ॥ स्वस्ति श्रीमत्-**कोण्डकुन्दाचार्य्या**न्वयद श्री-**मूल-संघद देशीय-गणद पोस्तक-गच्छद** श्री-**कोल्लापुरद निम्ब-देव**-सावन्त मडिसिद **श्री-रूपनारायण-देवर** बसदिय प्रति-बद्धमप्प **तेरिदाळद** गोङ्क-जिनेन्द्र-मन्दिरक्के **कोल्लापुर**दगस्त्येश्वरद कणगिलेश्वरद **महालक्ष्मी-देवि**य गोकागेय महालिङ्ग-देवर यिन्ती घटिक-स्थानदाचार्य्यरु मुख्य-एळ्-कोटि-पुव-संख्यात-गणगळ् महामण्डळियागि **तेरिदाळद** मूल-स्थानद **कलिदेव-स्वामि**गे प्रतिबद्धं माडि आ **नेमिनाथ-स्वामि**य प्रतिष्ठाकालदला **गोङ्क-जिनालय**दाचार्य्यरप्प **प्रभाचन्द्र-पण्डित-देव**रिगिदेम्म जोग-वट्टिगेय स्थानमेन्दु जोगवट्टिगेय निक्किदर् ॥ बसदिय मेले शूद्रकन सिंहद चक्रद चिह्नमेम्बिदं तिसुळद् घण्टेयं परेय नागदेनिप्पवनेळु-कोटि- तापसर्गे महा-विरोधि-यवनीश्वर-वैरियेनुत्तविक्किदर्म्मिसुगुव जोग-वट्टिगेयना मुनि- संकेयं कोटि-तापसर् ॥

[IA, XIV, p. 14–26, (line 56–68)] t. and. tr.

४०३

श्रवणबेल्गोला—संस्कृत तथा कन्नड ।

[शक ११०४ = ११८१ ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

४०४

श्रवणबेल्गोला—कन्नड ।

[बिना काल निर्देशका]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

४०५

श्रवणबेल्गोला—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[बिना काल निर्देशका]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

४०६–४०७

श्रवणबेल्गोला—कन्नड़-भग्न ।

[बिना काल निर्देशका]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

४०८

चिक-मागडि;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक [१] १०४ = ११८२ ई०]

[चि] [.ग]डिमें, बसवण्ण मन्दिरके प्राङ्गणमें एक स्तम्भ पर]

श्र मत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
श्रीराजिप्पुदु धर्म्मदिं नियत-धर्म्मं शान्तियिं शान्ति-वि- ।
स्तारं कुन्थु ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ।
··· यकर् विनुत-धर्म्मं शान्ति सत्-कुन्थुवेम्ब- ।
ई-रत्नत्रय-देवरूजितमेनल् दीर्ग्घायुमं श्रीयुमम् ॥
प्रकटं व्यास ··· ··· ··· ··· स्वरूपं नित्य-भावं विकर्- ।
त्रिकमावेष्टित-मारुत-त्रितयवा-षड्-द्रव्य-सम्पन्न-व- ।
र्त्तकमोप्पिदुंदु नोडे नाडेयुवघो-मध्योर्ध्व-लोक ··· ।
··· लोककर्केसेदिप्पुदन्तुभय-कर्म्मोद्योग-निर्म्माण-खल्- ।

लीलं द्वीप-समुद्र-वर्ग्ग-वळयीभूत-प्रभूत-स्थळी- ।
माळाळ ... ... भू-रमणं जगद्धितनी-महत्त्वक्केनल्केम् ।
णडुवोप्पं बेत्तुदो तां लवण-जलधि रत्नम्मणल् लद्दिम नीर्- ।
वेण्णोडरिप्पा-कल्प-वृक्ष-प्रसव ... ... देवेळ्वेनोळ्पम् ॥

कं ॥ वार्-वळय-निकरवेम्बा- ।
नीर्वेलिय नडुवे नेरदु जम्बू-चिह्नम् ।
सार्विनवीप्सित-फळमम् ।
पार्विनवेळेगिम्बिदाय्तु **जम्बू-द्वीपम्** ॥
इदु जम्बू-द्वीप ... निदु सुरोर्व्वीरुहौदार्य्यदिन्दिन्त् ।
इदु राजद्वैर्य्यदिन्दिन्तिदु जनित-जिन-स्थान-भोग्योपयोगा- ।
भ्युदय-श्री-लीलेयिं राचरसन तेरदिन्दुन्नतत्वक्के पक्का- ।
दुदेवेनुत्तं चन्द्र-सूर्य्या ... ... राराजिसिक्कुम् ॥
दोरेवेत्ता-**मेरु**विन् तेङ्कण-देशेयोळदेनोळ्पुवेत्तिद्दुदो श्री- ।
भरत क्षेत्रं करं तुम्बिगळ मधुर-मन्द्र-स्वरोद्गीतदिं मे- ।
ल्ले-रलिगळ्ळाडुवेल्लेल्लेलेम ... ... पुष्पयञ्जळि हण्ण-गोञ्चल्- ।
वेरगिन्दं चूतवल्ली-विततिगळेसेदा-लास्य-सारस्यदिन्दम् ॥
कं ॥ श्रीमज्जनदिं सुमनो- । धामतेयिं भ्रमर-शोभेयिं कर्णाट- ।
सीमेयना-भरत-श्री- । ... तोर्प्पु ... नाडे **कुन्तळ-देशम्** ॥

वचन ॥ मत्तमल्लि जनद कोण्टेयुं गुणद व्यवहारमुं बिनदद व्यवसायमुं रसद तोरे-गणिनेसेव केळी-वनङ्गळुं बिरयिगळ कामनयिक्के ...रेयं गोण्डिर्प्प ळीळेयिं नेरेद-कमळिनिगळुं वसन्तकेळिगे समेद पोण्डोणिगळ-गोण्डळमुं धर्म्मक्के नेर्म्मंमुं भोगक्कागरमुमाद घटिका-स्थानमुं रत्न-समृद्धिगे सोल्तु स ... ... मगळ गोण्डुदेनिप परिखेयिं राजमण्डलसमाजमेनिप कामिनीयर मुख-कमळ-निकरमुं ग्राम-नगर-खेड-खर्व्वण-मडम्ब-द्रोणामुख-पुर-पत्तन-राजधानिगळ बन ... ... मेळ्ळि नोळ्वडवल्लि मेरेदु नव-विषमागि तोर्प्पं **कुन्तळ**-देसक्के ॥

क ॥ क्रमदिं विक्रमदिं दा- । न-मनोहर-वृत्तियिं **चाळुक्य**-नृपाळो- ।
त्तमरात्म-कीर्त्तिया-भू- । रमणिगे मुत्तुगळ तोडवेनल् प्रियरादर् ॥
चाळुक्य-भूभुजर्दिवि- । केळिगोळिरे पेरगे नेरेये काम्पुवोलिर्द्दर् ।
भू-वधुगे **रट्ट**रवरं । सोवुत्तं **तैल**नाल्दिदं नेरे चरेयम् ॥
अवर्दा-तैलङ्गे **सत्याश्रय**ने मगनवङ्गात्मजं **विक्रमन्** तान् ।
अवनिन्द **न्त्तय्यणं** तां किरियने **जयसिंहा**ङ्कनुं तम्मनन्ता- ।
हवमल्लं तत्सुतं तत्-तनयनेसव **सोमेश्वरं** तन्महीशं- ।
गे सळं **पेर्म्माडि-देवं** मगनवन मगं ताने **भूलोकमल्लम्** ॥
समनिसितवङ्गे **जगदे**- ।
कमल्लनेनिसिर्द्द पुत्र-रूपदे तेजो- ।
रमणीयतेयवननुजम् ।
रमणं मेरेदं जगक्के **नूर्म्मडि-तैलम्** ॥
बळिकं नलविं साद्दल् । **चाळुक्य**-राज्य-रामे **बिज्जळो**र्व्वीपतियं ।
कळचूरि-तिळकननेम् पेङ् । गळ चित्तं होसतनरसुतिर्प्पुदु होसते ॥

वृ ॥ दाडेगळुण्टिवङ्गे रणदोळ् सले मूडुववेरिदानेयोळ् ।
कोडुगळुण्टु मत्तेरडवङ्कुसदन्न ··· ··· ग ।
··· ··· डोळवन्तवन्य-नृप-रक्त-विसिक्तनवेन्दराति··· ।
दोडदे निल्वनावनेनुतिर्प्पुदु बिजलनं जगज्जनम् ॥
असि लते कूडे गण्डु मगुळ्दत्तहितावनिपाळ-भूमि-पेण् ।
मसगिदुदल्लदान्तवरोळा-सुर-कान्तेयगन्ति-बेटवु- ।
व्वसवेनिसित्तु कादिदेडे नेत्तर-जोगिने केसोरन्तेयम् ।
पसरिसितेन्दु बन्दु शरणेम्बुदु **बिज्जलनं** द्विषज्जनम् ॥
बळेदन्ता-बिज्जळङ्गेनद्टेसेदुदो पेळ् **सिंहला**धीश्वरं बे- ।
त्तळिगं **नेपाळ**कं घट्टवळनडपदाळ् **केरळं गुर्ज्जरं** कं- ।
मळिगं मत्ता-**तुरुष्कं** कुदुरे वेसदवं **लाल**नादच्चुळाय्तं ।

रेळेयं **पाण्ड्य** **कळिङ्ग** करि-गरिचरनागाळवेसेङ्गय्ये निच्चं ॥
जगमं सम्प्रीतियिं **बिज्जल**-नृपतिय तम्मं भुजा-गर्व्वदिं **मै**- ।
ळुगि-देवं पाळिसुत्तं मेरेद बळिकवा-**बिज्जळो**र्व्वीश-पौत्रम् ।
त्रिगुणीभूत-प्रतापं तळेदनेळेय ··· **कन्दार**-क्षोणिपं तन- ।
जगती-नाथानुतातं बळिकमवनियं ताळ्दिदं **सोवि-देवम्** ॥
क्रमदिं **कर्ण्णाट**मं **कुन्तळ**मनोलविनिं तीळिद तळकय्सि रम्यां- ।
गमनिम्बिम्बिम्बिपोळ्पं पडेदु पृथुल-**लाट**क्के **काञ्ची**प्रदेश- ।
क्के मनम्बेत्तेय्दे रागं बुदिद-कर-सरोजातमं नीडिया-**रा**- ।
यमुरारि-क्षोणिपं मेदिनियनिनिसु वन्देक-भोग्यक्के दन्दम् ॥
आतन तम्मनर्ज्जित-गुणं विभु-**मैलुगि-देव**नाळ्दिदम् ।
भू-तळमं बळिक्कमवनिं किरियातनेनिप्पनादोडम् ।
ख्यातियिनार्म्बल्ते हिरियातनेनल् वरे **शङ्कमो**र्व्वीप- ।
व्रात-नुतं धरा-बळयमं परिरक्षिसुतिर्द्दनोळ्मेयिम् ॥

कं ॥ शङ्कन कीर्त्ति-प्रभेयिन्- ।
दं कामिनि भमि गौर-रुचियिन्देसेदेम् ।
शङ्किनियादळो गीता- ।
लङ्कृत-नाना-विनोद-विळसित-गतियिम् ॥

वृ ॥ सवनार् **निश्शङ्कमल्ल**-क्षितिपतिगे तच्चक्रियिन्दं बळिक्का- ।
हवमल्लं राय-नारायणनधिक-गुणं शङ्क-भूपानुजं भू- ।
भुवनाराध्यं धरा-मण्डलमनतुळ-दोर्द्दण्डदिन् ताळ्दिदं नोळ- ।
पवर्गोक-च्छत्रमं मेय्सिरि मेरेविनेगं प्राज्य-साम्राज्यदिन्दं ॥
क्रमदिन्दा-**बिज्जळो**र्व्वीपतिगे पडेदु सप्तांग-सम्पत्तियं म- ।
त्तमदं तच्चक्रियिन्दित्तलुमोदविद राजावळी-ळोलेगं तन्- ।
दुमिदे ससाङ्गमं काणिसिदनेने-जगं मन्त्रदिं तन्त्रदिं वि- ।
क्रमदिं श्रीयिं सदाचारदिनोसेदेसेदं **रेचि-दण्डाधिनाथम्** ॥
कळचूर्य्य-क्षितिपाळ-राज्य-लते पर्व्वल् तन्न दोष-शाखेयं ।

विळसन्**मन्दर**-सानुगं विबुध-सेव्यं विस्तृत-च्छायन- ।
स्खळितौदार्य्य-विळास-भासि सुमनस्-संपूर्णनुद्यद्यशः- ।
फळदिं **रेचण-दण्डनाथ**नेसेदं लोकैक-कल्प-द्रुमम् ॥
जिननं तन्न मनमं मनः-प्रकृतियं सद्-विद्यया-विद्येयम् ।
तनुवन्ता-तनुवं विळासवदनुघल्-लक्ष्मिया-लक्ष्मियम् ।
विनुतौदार्य्यवदं जगं जगमनिम्त्रि-कीर्त्तियालिङ्गिसल् ।
जन-वन्द्यं विभु-रेचिराजनेसेदं चारित्र-रत्नाकरम् ॥
कवि-तति बल्मेगोलगिसे कामिनियर् सोबगिङ्गे सोले बेळ- ।
पवर्गलुदार-वृत्तिगोलविं नर-शासनवागे राज्यमुद्- ।
भवदिनोडर्च्चि जैन-समयाम्बुधि कीर्त्ति-सुधांशुवि पोदळ्- ।
के वडेये रेचिराजनेसेदं जसदि वसुधैक-बान्धवम् ॥
नडेद-नेलं रणोर्व्वरेयोळन्तनितुं तनगज-पुजरिम् ।
पडेद-नेलन्दलेम्बनसिगन्य-नृपाळरनिक्कदुन्ते किळ- ।
तडे कडु-दोसवेम्बनसहं मिगे बेङ्कडे पट्टे ताने बेड- ।
गुडुववोलेम्बनेनदटनो कलि-**रेचण-दण्डनायकम्** ॥
अनुपम-दान-शौर्य-रण-शौर्य्यमने-वोगळदप्पेनाम् द्विषज- ।
जनपरोळोन्दुवच्चरसियर्गो सयम्बरवागे सग्गदोळ् ।
जनियिसितिन्द्र-भूरुहके तोरणदिन्तविलेम्बुदेय्दे मे- । .
दिनि वसुधैक-बान्धव-चमूपति रेचणनेम् कृतार्त्थनो ॥
पेडे-वणि शेषनोळ् सरसिजोदरनम्बुधियोळ् मृगाङ्कवन्द् ।
उडुपनोळद्रिजार्द्धवभवाङ्गदोळा-मद-लुब्ध-भृङ्गविर- ।
प्पेडे दिगि-भङ्गळोळ् कुरुपु दोर्प्पिनेगं जगमं मुसुङ्किविड- ।
गडलेने कीर्त्ति रेचनेसेदं जसदि वसुधैक-बान्धवम् ॥
श्रीवच्छं सिरियिं समृद्धनेसेवा-नागाम्बिका-सूनु-भो- ।
गावासं वसुधैक-बान्धवनुदारं स्तुत्य-गौरी-सुख- ।
श्री-विष्टं वृषभध्वज-प्रियतमं नारायणात्मोद्भवम् ।

भावं बेत्तिरे चेल्वनेन्देनिसिदं श्री-**रेचि-दण्डाधिपम्** ॥
तरदि देशाजळ्दुं श्री-**कळचूरि-कुळ**-चक्रेशरिं पेत्तुदी-**ना**- ।
गर-खण्डकरिथवट्टा-नृपरोळ् पडेदिम्बिन्दबाळ्दिइर्प्पना- **रे**- ।
चरसं तानेन्दोडे-वण्णिपुदो निसदवी-देशदिन्दोळ्मेयं बि- ।
त्तरदिं पङ्कज-रूपं **बनवसे**यादरोळ् श्रीय-वोलिप्पुदेम्बेम् ॥
कुसुम-रजं रवावळि तळिर् सोव डाडुव कीर-जाळवेम्ब् ।
एसकदे चल्वुवेरिद्-नेलं नेले-वेर्च्चिद पूगोळम्बिसुर्- ।
प्पेसगद-नुण्-बिसल् सुळिव कम्मेलरीळ्दिसे इन्चनोप्पुवा- ।
गसवेसेयल्के नाडेसवुदेन्तु बसन्तद सृष्टियेम्बिनम् ॥

कं ॥ आ-नागर-खण्डमना- ।
ल्पा-नृप-विनुत-**कदम्ब**रन्ता-नृप-स- ।
न्तानाम्बुजदोळे सकल-क- ।
ळा-निळयं **ब्रह्म** भूभुजं जनियिसिदं ॥
आ-विभुविङ्गं **चट्टल**- ।
देविगवुदायिसिदनखिळ-नीति-क्रम-सं- ।
भावित-राजाचार- ।
श्री-वधुगेसेयल्के शौर्य्यदोप्पं **बोप्पम्** ॥
मेदिनिगे **बोप्प-देव**नित् ।
आदुदु हगे हुगद बाळ बाळ्वेलियवङ्ग् ।
आदळ् वल्लभे विनुत- ।
श्री-देवियवर्ग्गे पुट्टिदं **सोम-नृपम्** ॥

वृ ॥ नुडिगललन्दे म्रद्दु-नुडि **सत्य-पताक**नेनिप्पुदोप्पिद- ।
ट्टदि **निगळंक-मल्ल**नेने राजिपुदोजे **कदम्ब-रुद्र**नेम्ब्- ।
ओडेतनवं नेगळ्चिदुदु **गण्डर-डावणि**येम्ब्-नाममम् ।
पडेदुदु **सोम** भमिपन शौर्य्य-गुणावलियेम् कृतार्थनो ॥
निनगन्ता-काममीगळ् केळ्रेयनेनिपुदं तोर्प्पुवोलेम्मनेर्च्चे- ।

च्चु नितान्तं निज पादकेरथिपनेनुतं कान्तेयरोळे काळ्गा- ।
नन-**काश्मोर**-द्रवं पद्विद निगळद् चाञ्चाळ्वनङ्गके सेवा- ।
वनितारागम्बोळागळ् मेरेवुदनुदिनं **सोम**-भूमीश-पादम् ॥
मुनिदोडे-**सोम**-भूपनमंगप्पेंडेया-बनवासेयन्तदन्त् ।
अनितुमदीगळातन भुजासि-लता-वृत्तवाश्तु पोक्कुसिल्- ।
किनोळिरे पोल्लदेन्दधितरोडि समुद्रद वेळेगण्डु ताव् ।
अनुमिसि बेळेगोण्डु सुखमिर्प्परिदेनदाटङ्के नोन्तनो ॥
विरुदर् ब्भीतोर्व्विपाळर् म्मदन-परवशीभूतेयर् विद्येयुळ्ळर् ।
श्शरणेन्दर् स्सेवकर् ब्बेळपवर्गोल्दीवनी-**सोम**-भूमी- ।
श्वरनेन्दुं रागदिं सङ्गतमनभयमं बेटवं दृष्टियं सय्त्- ।
इरवं सम्प्रीतियं बेळपुदनेने जनवौदार्य्यदि वर्ण्यनादम् ॥
तोळ तोडप्पुं मच्चिपेडें-वत्तुगे चुम्बिसुविम्बु **सोम**-भू- ।
पाळनोळेक-भोग्यवेनिसल् तनगागिरला-स्थळङ्गळम् ।
पाळिप कापु बीर-सिरि लक्ष्मि सरस्वतियेन्दे सैरिपळ् ।
मेळिसलीवळे पेररनेन्देने **लच्चल-देवि**योप्पुवळ् ॥
एनिपा-दम्पतियोल्मेगगळिसलोप्पं प्राज्य-साम्राज्य-का- ।
मिनि माडल् बिगियप्पनेय्तरे परोर्व्वीपाळरि कप्पविन्त् ।
इनिसुं माडदिरल्के दुष्ट-तति तप्पं पुट्टिदं **बोप्प**नेम्ब्- ॥
इनेगं बोप्प-नृपाळनप्रतिम-पुण्यं राजिसित्तुर्व्वियोळ् ॥
कं ॥ ई-बोप्पं देवकिगाद्- । आ-बोप्पं तप्पदप्पनरिदेम् कीर्त्ति- ।
श्री-बाय्-देरेदोडे काणल्क् ।
ई-बन्दुदे भुवन-निकरवेने पेसर्वडेदम् ॥
॥ नगेयल्तेयेमे यिक्कतिर्द-हदिनेण्ट्-अक्षोहिणी-सेनेगन्द् ।
उगुरिं सत्त हिरण्यकात्तकनेनिप्पङ्गन्ददेम् बिट्ट-कङ्क् ।
अगिदन्ता-भयदिन्दे बेन्द मदनङ्गन्दा-महाभागरण्- ।
मुगेयेन्दी विभु-**बोप्प-देव**नलेवं सत्त्वाधिकान्यौघमम् ॥

कदन-क्रीडेयोळुळ्ळ मिन्न दयेयेकिन्तोम्मेयुं तोरदी- ।
मदन-क्रीडेयोळुत्तुदं मरेदळं नीर्-चोक्कळं नाण पुत्त- ।
उदलोन्दिर्द्दडवित्तोडं तलेयने सम्प्रीतियं तोरेयेन्द् ।
ओदवि मेळिते कान्तेयर् म्मेरेवनी-श्री-**बोप्प**-भूपाळकम् ॥

क ॥ सिरियिन्दोप्पुव **बान्धव-** ।
पुरवातन राजधानियन्ता-पुरदोळ ।
सुर-खचरोरग-मणि-मकु- ।
ट-रञ्चित-पद-कान्ति **शान्तिनाथं** मेरेवम् ॥

वृ ॥ पाळभिषेकवन्तेनितदादडवाल्लियदश्यम्प्प पू- ।
माले पदक्के जानुवरविक्किदोडं निमिर्बुण्ण-तोयदिम् ।
लीलेयि मज्जनक्केरेये वामदे शीतळवागि बर्प्पवेम् ।
सालवे **शान्तिनाथ**न महा-महिमत्वमनोल्दु बण्णिसल् ॥

कं ॥ एनिपास्थानाचार्य्यम् ।
मुनि विनुतं **भानुकीर्त्ति-सिद्धान्ति** जगज्- ।
जन-वन्द्यं निज-गुरु-कुळ- ।
वनज-विकाशमनोडच्चुयं तपदिन्दम् ॥
अलर्द्दुदेन्तेनला-गुरु- ।
कुळवा-गौतमनेनिप्प गणधरनिन्दित्- ।
तलनेक-**मूलसंघा-** ।
विळ-यति-पतियाद **कोण्डकुन्दान्वय**दोळ ॥
श्री-रावणन्दि-सिद्धा- ।
न्ताराव-सरोवरक्के तोडवेनिपं वाक्- ।
श्री-रम्य-**पद्मणन्दि**-त- ।
पो-रमे पिडिदिर्द्द पद्ममेने तच्छिष्यम् ॥
तन्मुनि-नाथन शिष्यं ।
मन्मथ-सह वल्लदङ्गना-रति सुखमम् ।

सन्मुनि-सद्गुरु-कुवळय- ।
भृन्मति पोसतेनिसि नेगळ्दना-**मुनिचन्द्रम्** ॥
वृ ॥ लोकमनावगं बेळगिदं बसदिं **मुनिचन्द्र-देव**न- ।
प्राकृत-जैन-योग-निळयं प्रकटीकृत-[त]त्व-निर्ण्णयम् ।
स्वीकृत-शब्द-शास्त्रनुररीकृत-तर्क्क-कळा-कळापनू -
रीकृत-काव्य-नाटकनधःकृत-मीनपताक-विक्रमम् ॥
कं ॥ तच्छिष्यं प्रकटीकृत-कीर-
त्ति-च्छत्रं **भानुकीर्त्ति काणूर्-ग्गण-भू-** ।
मि-च्छत्र **तिन्त्रिणीक-सु-** ।
गच्छं श्री-**नृप-वंश**नेसेदं जगदोळ् ॥
वृ ॥ शान्त-रसीत्थ-मूर्त्ति दिगिभ-व्रज-मस्तक-वर्ति-कीर्त्ति सैद्- ।
धान्तिक-चक्रवर्त्ति जिन-पाद-निधान-सु-दीप-वर्त्ति चै- ।
रन्तन-जैन-योगिसम-वर्त्तियेनल् **मुनि-भानुकीर्त्ति** पेम् -
पं तळेदं स्व-मन्त्रि-गति-धूर्त्त-जनक्रतिवर्त्तियेम्बिनम् ॥
नियतं तन्मुनिनाथ-शिष्यनेसेदं सन्मार्ग्ग-सम्पत्तियिम् ।
नयकीर्त्ति-व्रति-नायकं विबुध-वाञ्छा-दायकं जैन-त- ।
त्व-यथार्थागम-कायकं कृत-यशस्-संस्नायकं ध्वंसिता- ।
भय-निस्यन्दित-पुष्पसायकनुदग्रौदार्य्य-सन्दायकम् ॥
कन्द ॥ अन्तेसेदाचार्य्यावळिय- ।
इं तिळिदागमङ्गळं जिन-समयोच्- ।
चिन्तामणि **सं(शं)कर-सा-** ।
मन्तं शान्तियने माडि शङ्करनेनिपम् ॥
विदित-पराक्रमनेनिपा- ।
कदम्ब-नृप-तिळक **बोप्प-देव**न राज्या- ।
भ्युदयके ताने मोदलेनि- ।
सिदना-सामन्त-**शङ्करं** नयदिन्दम् ॥

सामन्त-शङ्करनिन्दुद्- ।
दामते-बेडेदिर्द्द **नण्डु-वंशद** सिरि मुन्न् - ।
ए-माल्केयेम्बोडन्वय- ।
रामेगे तोडवादनमळ-सङ्ग **सिङ्गम्** ॥
सिङ्गल कान्तेयल्लते सिरियातन केसर-माळेयम्ब चेल् - ।
बिङ्केडेगोण्डु माळनवर्गादनवङ्गणेयागे **माणियक-** ।
अं गुण-युक्ति-कान्तेयनर्गिम्बिने पुट्टिदनेकनेक**के-गौ-** ।
डङ्गनुबातना-**केरेयमं** मेरेदं स्तुति-जीवनोदयम् ॥
कं ॥ अनुदिनमवरिञ्छा-जनि- ।
त-फलं बळये तन्न कालगळनाश्र- ।
यिस नितान्तं केरेयमना- ।
दनदं **रेसव्वे** नल्लळादळु नलविम् ॥
वृ ॥ अवरिर्व्वर्गावुदात्तनप्पनेनिसिर्द्दा-**बोप्पगावुण्डनु** -
द्भवमुं तानु-वुदात्त-वृत्तियुमनन्नौदार्य्यमुं पेर्म्मेयो- ।
प्पवुदागिरे पुट्ट कीर्त्ति-पडेदं तन्निच्चेवोळ् **चाकि-गौ-** ।
डि विमूताङ्गन-वार्द्धियोळ् पडेये सत्-पुण्याङ्कनं **सङ्कनम्** ॥
वर-वनिता-वशङ्करनराति-नृपाळ-भयङ्करं जिने- ।
श्वर-यति-किङ्करं स्वपति-चित्त-मदंकरनिष्टवर्ग्ग-शं- ।
करनखिळार्त्थ-शास्त्र-सु-दृढंकरनात्म-सुखंकरं मनो- ।
हरनेने शंकरं पडेदनोप्पे चरित्रदोळं ··· ··· त्तियम् ॥
दिनमेल्लं दान-केळि-समयमे तनगेन्देम्बिनं नीतियेल्लम् ।
तनेगेन्दागिर्द्दवेन्देम्बिनबरि-कुळवेल्लं स्व-खड्गाहतं-शा- ।
किनियर्गेन्दादुदेन्देम्बिन बोडमेयदल्लं जगत्-पोषणक्केम्- ।
बिनवा-सामन्त-सुखं नेगळ्दनेळेगवातङ्कवागल्के तन्निम् ॥
पथिकङ्गिष्टाङ्ग शिष्टंगघननेनिपवङ्गार्त्ति-यादङ्ग नित्या ।
श्रियिगाळ्गन्यङ्ग मान्यङ्गववनिबेळेय ··· ··· ड्-गोट्टङ्ग भार- ।

ग्रथितङ्गन्तेम्ब्रवङ्गेनेनुतेनुदिसिदङ्गामंवोल्दित्तु दौस्थ्य- ।
व्यथेयं माणिप्पनेम् मान्तनद् कणियो सामन्तरोळ् संकराङ्कम् ॥
पति-मन्त्र-प्रौढ़ि सेवक-तति निरहङ्कारमं मान्यरोळ्रूपम् ।
क्षिति-सन् मर्य्यादेयं बन्धुगळनुदिन-सन्-मानवं धार्म्मिकर् सन्-
मतियं कान्ताबनं मेय्वळियनखिळ-वन्दि-ब्रजं धा- ।
··· ··· बण्णिकुं पुण्यद तवरो दिटं नोडे **सामन्त-शङ्कम्** ॥

कं ॥ करेयेनिप सुरभिगेलेगळ ।
मरेयेनिसिद् कळप-वृक्ष-फळ-ततिगेणेये ।
करेव ··· ··· ··· दारते ।
मेरेवुदु **सामन्त-शङ्कर**नोळनवरतम् ॥

वृ ॥ विनेय-रसङ्गळिं तणिपि याचकरं मनेगोय्दु सन्ततं ।
कनकद बाडनित्तु मिगे सोक्किसि सेव्यर ··· ··· ··· ।
··· ··· आ मारुगोण्डवर नालेगेयं प्रभु-**शंकरं** यशो- ।
घननेनिसिर्द्दनल्लदोडे मारुवरे रसना-निकायमम् ॥

कं ॥ एनिसिद **शङ्कर**-साम- ।
न्तन कान्तेय ··· ··· यिन्दुणे सस्या- ।
वनि **अक्कणब्वेयुं** का- ।
मन सिरि कं-देरदळेम्बिने सोगेयिसिदर् ॥
शान्तेय सूनु **शङ्कर**-तनूद्भवनुद्ध-कदम्ब-रुद्र सा- ।
मन्त ··· ··· समय प्रणतं वसुधैक-बान्धवङ्क ।
अन्तेसेदास-मन्त्रि विभु-ब्रोप्पनोउर्ब्बिदमोळमेगोप्पमम् ।
शान्तते दानवण्मु चरितं सिरि कोमळ-रूपवोप्पिरल् ॥
··· ··· न देवतेयेन्द् ।
एने नेगळ्दा-**अक्कणब्वे**-तनुविं मनदिं ।
मनसिजनुं जिननुं तन्न् ।

इनियक्कुभय-भव-सुखवदेने करवेसेदळ् ॥
जिन-समय-भक्तियि स- ।
...... सुपुत्रर्ग्विरिनेणे शा- ।
सन-देविगे वल्लभन- ।
त्यनुवशनी-**जक्कणब्बे**-गिदुवे विशेषम् ॥
आ-**जक्कणब्बे**यग्र-त- ।
नूजं मेरेदं जगके सुजन-मनोज्ञम् ।
पूजि ... ... ।
... ... सकळ-गुण-निकर-धामं **सोमम्** ॥

वृत्त ॥ तनु पुण्योदय-शोभितं निमिर्दतोळौदार्य-रम्यं मुखम् ।
जन-सम्मोहन-सत्य-वृत्त वलगन् दाक्षिण्य-दीर्घा ... ।
... ... ति रूपके यथा रूपं तथा शीलवेन्द् ।
एने सामन्त-ललाम-सोमनेसेदं सौन्दर्य्य-चातुर्य्यदिम् ॥
करदिन्दं तेगेयल् सशक्ति नी ... ... बन्दा ...; ... ।
र-पुत्रं-नुत-**जक्कणब्बे**य मगं कण्ठीरवारोहरण- ।
केरेवं **सोम**-सहोदरं शिशुतेयोळ् **मुद्दय्य** मुद्दय्यना- ।
दरदिं कळप-कुजतमं पडेवनेन्दा-चूतमं वर्द्धिपम् ॥

कं ॥ अन्तेनिसल् **शङ्कर**-सा- ।
मन्तं सकळत्र-पुत्र-बान्धव-मित्रा- ।
नन्तान्वयनेसेदं निश- ।
चिन्तं धर्म्मार्त्थ-काम-वर्ग्ग-सुमार्ग्गम् ॥
अनुपमिताश्चर्य्य **शा**- ।
न्तिनाथनेन्दा-स्थळानुबन्धदिनिम्बिम् ।
जिन-गृहमं **मागुडि**योळ् ।
विनुतं सामन्थ(त)-शङ्करम्माडिसिदम् ॥

वृ ॥ प्रतिविम्बं पद-ग़तमं कळेवुदा-रङ्गके कम्भके इद्-।
गतमं माळ्पुदु शालभञ्जिकेगळं चित्रिप्पुदा-भित्ति-सन्-।
ततियं बङ्गम-चित्रदिन्देने वनं सामन्थ-शङ्कं बगन्-।
नुतमं माडिसिदं जिनेन्द्र-गृहमं मागुण्डियोळ् रागदिम् ॥
आ-भुवनैक-मण्डन-जिनालयमं नलेविन्दे नोडि सू-
र्य्याभरणाह्वयं बलिपुरि-त्रिपुरान्तक-सूरि-संस्तुतम् ।
शोभिसुतिद्र्दुदी-बसदि तीर्थंकरर्सूशिव-सत् पदस्थरेन्द् ।
[आ-भुवनैक-मण्डन-जिनालयमं नलेविन्दे नोडि सू - ।
र्य्याभरणाह्वयं वलिपुरि-त्रिपुरान्तक-सूरि-संस्तुतम् ।
शोभिसुतिद्र्दुदी-बसदि तीर्त्थंकरर् सूशिव-सत्पदस्थरेन्द् । १]
आ-भव-भावदिम्मुनिवरं स्थळ-वृत्तियनित्तनुत्तमम् ॥
कं ॥ स्थिरवागिरित्तनडकेय । मरनय्नूरुळ्ळ-तोण्टवा-पूडोण्टम् ।
बेरसु सुभूमिय मत्तर । व्वरे गद्देयदोन्दु-गाणवेन्दिन्तिनितम् ॥
वृ ॥ अन्ता-धर्म्म-निकायमं सुळिसुतं न्यायार्जित-द्रव्यदिन्द् ।
अन्तीवृत्तखिळाशेयं सदुपभोगानीकमं भोगिसुत्त् ।
अन्ता-शङ्कम-देव-चक्रि नडेदं बल्लाळ-भूपाळनम् ।
सन्तं तन्न पदाब्ज-सेवेगे-दरल् शौर्य्यार्ण्णवं घूर्णिसल् ।

कं ॥ नडेदातन लक्ष्मिय् कय्-।
पिडिदोडगोण्डखिळ-दण्डनाथ-समेतम् ।
नडेतन्दु ताणगुन्दद ।
नडे-वीडिनोळ् इर्द्दनर्त्थियिं पल-देवसम् ॥
इरे रेचण-दण्डाधी-।
श्वरं जिनेश्वर-पदाभिवन्दने एन्दोप्प्-।
इरे बन्दं मागुडिगा-।
दरदिं श्री-बोप्प-भूप शङ्कर-सहितम् ॥

(चौथी बाजू)

स्वपरमतविकासश्श्रीसुतेः कण्ठपाशो
नमितमुनिगणेशः भव्यबोधोपदेशः ।
श्रुत-परम-निवेशश्शुद्धमुक्त्यङ्गनेशः
जयति वर-मुनीशस्सूरिचन्द्रप्रभेशः ॥

समयदिवाकरदेवो तच्छिष्यः परम-तार्किकाम्बुज-मित्रः
चन्द्रप्रभमुनिनाथो कृत्वा सल्लेखनं शुभतनुत्यागम् ॥

**शाके सायक-खेन्दु-भूमि-गणिते-संवत्सरे शोभकृन्-
नाम्नोष्टे कुजवार-शुद्ध-दशमी-प्रातोत्तराषाढके ।
मासे भाद्रपदे प्रभातसमये चन्द्रप्रभाख्यो मुनि-**
स्सन्यसने समाधिना सुमरणं से ··· गणी द्रागभूत् ॥

यस्यार्यस्य गुरुस्सतां गुणगुरुस्त्रैविद्यविद्यानिधिः
ख्यातोऽसौ समये दिवाकर इति स्यादीक्षया शिष्यकैः ।
तैर्दत्तं सकलं ··· त श्रुतगुणं रत्नत्रयाख्यं क्रमाद्
आराध ··· त्य-समाधि ··· पातिश्चन्द्रप्रभाख्योऽभवत् ॥

य ··· ··· प ··· दशविधो धर्म्मं क्षमा ··· ···
कर गणागमे परिणतिस्साहित्य ··· ··· ···
भ्राजन्ते स भवान् समाधि-विधिना ··· ··· चार्यो दिवं
यातो ध्यानबलान्वितः ··· ··· रागद्वेषमोहास्थिरः ॥

यस्तत्वो ··· ··· ··· ··· वर्द्धन-विधुः कामेभ-कण्ठीरवः
श्रीमद्-द्राविडसंघभूषणमणिस्सद्ज्ञानचिन्तामणिः ।
धृत्वा चारुतपश्चरित्रममलं स्मृत्वा जिनाङ्घ्रिद्वयं
कृत्वा सन्यसनं जिनालयगतो चन्द्रप्रभस्सन्मुनिः ॥

लोके दुष्टजनाकुले हतकुले लोभातुरे निष्ठुरे
सालङ्कारपरे मनोहरतरे साहित्य-लीलाधरे ।
भद्रे देवि सरस्वती गुणनिधिः काले कलौ साम्प्रतं

कं यास्यस्यभिमानरत्ननिलयं चन्द्रप्रभाख्यं विना ॥
साहित्योन्नतपादपं क्षितितले दुष्कर्मणा पातितं ।
वाग्देवी-पृथु-वक्ष-मण्डनमहो सङ्क्षिप्य निर्नासितं ।
सर्व्वज्ञागम-सार-भूधरमिदं द्वेषेण निर्लोठितं ।
श्रीचन्द्रप्रभदेव-देव-मरणे शास्त्रार्णवं शोषितम् ॥

नमोऽस्तु

[इस लेखमें द्रमिल-संघगत नन्दि-संघके अरुङ्गल-अन्वयकी समन्तभद्र-मुनीश्वरसे लेकर चन्द्रप्रभ-मुनिनाथ तककी पट्टावली या शिष्य परम्परा दी हुई है। वह क्रमसे इस प्रकार है :—

१. **समन्तभद्र** मुनीश्वर—वारणासी (वाराणसी = बनारस) में राजाके सामने विपक्षियोंको हराया ।

२. **कुमारसेन**—दक्षिणमें आकरके उनकी मृत्यु हुई, परन्तु मृत्युके बाद भी उनकी कीर्त्ति सारे भारतमें सूर्यकी तरह प्रकाशित हो रही थी।

३. गुरु **चिन्तामणि**—चिन्तामणि काव्यकी रचना की थी। जिनभक्तोंके लिये वास्तवमें ही 'चिन्तामणि' थे ।

४. **चूड़ामणि**—चूड़ामणि काव्यकी रचना की थी, जिसमें काव्यगत अलङ्कारोंका वर्णन था । वे वास्तवमें विद्वच्चूड़ामणि थे ।

५. मुनीश्वर **महेश्वर**—इन्होंने महान् सत्तर ७० शास्त्रार्थोंमें विजय पायी थी। उनके पैर ब्रह्म-राक्षस भी पूजते थे ।

६. **शान्तिदेव** मुनीश्वर—दिशाओंके अन्ततक तपसे समुद्भूत उनकी कीर्त्ति फैली हुई थी। वे बहुत शान्तमूर्ति थे ।

७. **अकलङ्कदेव**—उनकी कीर्त्तिका वर्णन कौन कर सकता है। इनके प्रबल विजयी शास्त्रार्थों से बौद्ध पण्डितोंको मृत्युतकका आलिङ्गन कराया गया था।

८. **पुष्पसेन** मुनि—यह अकलङ्कदेवके साथी (सधर्म्मा) थे।

९. दिगम्बर **विमलचन्द्र**—ये बड़े भारी तार्किक पण्डित थे। शैव, पाशुपत, तथागत (बौद्ध) कापालिक और कापिल मतोंका बुरी तरह खण्डन करते थे। अपने घरके द्वारपर उनके लिये चैलेञ्ज लिखकर टाँग दिया था।

१०. **इन्द्रनन्दि** मुनीन्द्र—इन्होंने 'प्रतिष्ठा-कल्प' और 'ज्वालिनी-कल्प' ग्रन्थोंकी रचना की थी।

११. **परवादिमल्ल**—इन्होंने कृष्णराजके समक्ष अपने नामका निर्वचन इस तरहसे किया था :—गृहीतपक्षसे इतर 'पर' है, उसका जो प्रतिपादन करते हैं वे 'परवादि' हैं, उनका जो खण्डन करता है वह 'परवादि-मल्ल' है; यही नाम मेरा नाम है, ऐसा लोग कहते हैं।

१२. इससे आगेका शिलालेखका बहुत-सा अंश घिसा हुआ है : **मलधारि** और **द्रमिलसंघ** के नाम मिलते हैं।

१३. तत्पश्चात् **अजितसेन-पण्डित** और **चन्द्रप्रभ**, जिनके शिष्य **अजितसेन-देव** थे, की प्रशंसा आती है। इसके बाद, समय-सभामें दिवाकर-सूर्यके समान **समयदिवाकर**के शिष्य **सूरि चन्द्रप्रभ**की प्रशंसा आती है।

१४. **चन्द्रप्रभ**-मुनिनाथने सल्लेखना व्रत धारणकर शकवर्ष ११०५, शोभकृद्वर्ष, मंगलवार, भाद्रपद शुक्ला १०, उत्तराषाढ़ा नक्षत्रमें, प्रभातसमयमें देहोत्सर्ग किया।]

[EC, III, Tirumakudlu Narasipur tl., no 105.]

४११

अळेसन्द्र;—संस्कृत और कन्नड।

[शक ११०५=११८३ ई०]

[अळेसन्द्र (तेळीकेरी प्रदेश) में, गाँव के मुख्य प्रवेशद्वार के दक्षिण की तरफ पड़े हुए पाषाणपर]

श्रीमत्परमगाम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

वीतराग । स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं द्वारावतीपुरवराधीश्वर यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्वचूडामणि वासन्तिकादेवीलब्धवरप्रसाद मलेपरोळु गण्डाद्यनेकनामावलीसमलङ्कृतरप्प श्रीमन्त्रिभुवनमल्ल **विनेयादित्यहोय्सळं कोङ्-गदाळ्वखेडद बयल्-नाड तळेकाड् साविमले**यिनोळगाद भूमियेल्लमं दुष्ट-निग्रह-शिष्टप्रतिपाळनेयिं ।

सळनेम्बनागे यादव- । कुलदोळु पुलि पाये कण्डु मुनि पुलियम्पोय् ।
सळ येने पोय्दुदरिं **पोय्-** । **सळ** वेसरवनिन्दवागे तद्वंशजरोळ् ॥
कन्द ॥ सळ-नृपनि बळियं यदु- । कुळ-वीरप्पॅलबरोगेदरवर अन्वयदोळ् ।
बळवद्विरोधिभूभृत्- । कुलिशं जनियिसिदनेसेये **विनेयादित्यं** ॥
बलिदडे मलेदडे मलेपर । तलेयोळु बाळिदुवनुदित-भव्य-रसवसदि ।
बलिपद मलेयद मलेपर । तलेयोळु कैयिडुवनोडने **विनेयादित्यम्** ॥
आ मण्डलेश्वरन मनोनयनवल्लभे ।
परिजनकं पुर-जनकं परमार्त्थं ताने पुण्य-देवतेयेनलेम् ।
धरेयोळु नेगळ्दळो **केळेयब-** । **बरसि** जनाराध्ये भुवन-वनितारत्नम् ॥

अन्त-रिर्व्वरुं सुखसङ्कथाविनोददिं **सोसवूर** नेलेवीडिनोळु राज्यं गेय्युत्तमिर्द्दु **केळेयल-देवियरु मरियाने**-दण्डनायकनं तन्न तम्मनेन्दु रक्षिसि **विनेयादित्य-पोय्सल देवरुं** तानुमिर्द्दु **मरियाने-दण्डनायकङ्गे देकवे-दण्डनायकितियं** कन्यादानं माडि आसन्दि-नाड **सिन्दगेरेयं** प्रभुत्वसहितं नेलेयागि **शक-वर्ष ९६७ नेय सर्व्वजित् संवत्सरद फाल्गुण-सुद्ध-तदिगे सोमवारदन्दु** कन्या-दानमुं भूमि-दानमुमं धारा-पूर्व्वकं कोट्टु स्व-धर्म्मदिं रक्षिसुत्तमिरे ।

धरणिगे नेगळ्दा-पोय्सळ- । नरपतिग कमनकम्बुकन्धरे केळेयब्-
ब्बरसिगमुदियिसि नेगदं । धरित्रियोळु **वीर-गङ्गनेरेयङ्ग**नृपम् ॥

आ-विभुगं नेगळ्द्देवल- । देविगमुदियिसिदरदटरेने बल्लाळ- ।
क्ष्मा-वल्लभ विष्णु-धरि- । श्री-वल्लभ सुभटनुदितनुदेयादित्यम् ॥
एनितित्तडमेनितिरिदिडम् । अनितोप्पुं कृप्पुमप्पुवे पेर्र्गाद्दुकेम्-
मने नोड दिटरे बळ्ळा- । ळ-नृपाळने चागि वल्लु-देवने बीरं ॥

अन्तु सुख-संकथा-विनोददिं श्रीमद्राजधानी बेलुहुर-बीडिनोळु राज्यं गेय्युत्तं इर्द्दु मरियाने-दण्डनायकन द्वितियलक्ष्मी-समानेयरप्प चामवे-दण्डनायकितिगं पुट्टिद पदुमल-देवि चामल-देवि बोप्पा-देविपरिन्ती-मूवुरुं शास्त्रगीत-नृत्यदलु प्रवुडेयरुं मूरु-राय-कटक-पात्र-जस-दळेयरेनेसि बळेयला-मूवरु कन्यकेयरनोन्दे-हसेयोळ् बल्लाळ-देवं विवाहमाडि सक-वर्षं १०२५ नेय सुभानु-संवत्सरद कार्त्तिक-शुद्धदशमि-बृह(स्पति)वारदन्दु मोलेवाज-रिणक्के मरियाने-दण्डनायकङ्गे सिन्दगेरेय एरडनेय-पर्यायदलु प्रभुत्व-सहितं नेलेयागि पुनर्द्धारापूर्व्वकं कोट्टु सलिसुत्तमिरे ।

तुळु-देशं (चक्र) चक्रगोट्टं तळवनपुर उच्चंगि कोळाल एळुं-
मले वल्लूरकाञ्चि कङ्क्लिबसुव हडिय-घट्टं बयल्-नाडु नीला- ।
चळ-दुर्ग्गं रायरायोत्तम-पुर तेरेयूर्कोयतूर्ग्गोण्डवाडि-
स्थळवं भ्रू-भङ्गदि गेल्दतुळ-भुज-बळातापदि विष्णु-भूपं ॥
अरि नृपरं तडङ्गडिदु बेलियनिक्कि पट्टु प्रतापवुर-
ब्बिरे तळकाड बीडु-गडिदल्कुरें सुट्टु तुरङ्गदाळ्ळि-सञ्-
चरणदिनुत्त वीर-रसदिं हदनाडे कूडे बित्तिदम् ।
सु-रुचिर-कीर्त्तियं नृप-सिखामणि साहस-गङ्ग-होय्सळम् ॥

स्वस्ति श्रीमतु काञ्चि-गोण्ड विक्रम-गङ्ग विष्णवर्द्धनदेवं दोरसमुद्रद नेलेवीडिनोळु पृथ्वी-राज्यं गेय्युत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीविगळप्प हिरिय-मरियाने-दण्डनायकन मय्दुननप्प गङ्गराजदण्डाधीशम् ।

मत्तिन-मातवसिरलि जीर्ण्ण-जिनालय-कोटियं क्रमं-
बेट्टिरे मुन्निनन्ते पल-पूर्व्वदुमं नेरें माडिसुत्तवत्-

युत्तम-पात्र-दानदोदवं मेरेवुत्तिरे गङ्गवाडि-तोम्-
भट्टरु-सासिरं कोपणवादुदु **गङ्गण-दण्डनाथ**निम् ॥
तत्तनय ॥ कदनदोळान्तरं गेळवडेम् गळ निन्न पेसर्जितारियेम्-
बुदे बुध-बन्धुवेम्बुदे जनाग्रणियेम्बुदे **बोप्प-देव**नेम्-
बुदे कलियेच्चि-राज-विभुवेम्बुदे गङ्गन गन्ध-हस्तियेम्-
बुदे रण-रङ्ग-पाण्डु-सुतनेम्बुदे वैरि-घरट्टनेम्बुदे ॥
आतन मटदुनरु संस्त (समस्त) राज्यभरनिरूपितमहामात्यपदवीप्रख्यातरुमभि-
जातरुं श्रीमदर्हत्परमेश्वरपदपयोजषट्चरणरुं । रत्नत्रयाळङ्कृतरुमप्प श्रीमन्महाप्रधानं
मरियाने-दण्डनायकनुं श्रीमदादि-भरतेश्वर नेनिप **भरतेश्वर-दण्डना-
यक**नुं तम्मोळभेद-मावदिं गुणि-गुण-स्वरूपरागि ।
उन्नतवंशनुत्सव-कुलोत्तम भद्र-गुणान्वितं जगत्-
सन्नुतदानयुक्तविभवं मरियाने रिपु-प्रभेदनोत्-
पन्न-जयाभिराममेनगीतने नञ्चिन पट्टदानेयेन्दु ।
एम् नेरें नञ्चि माडिदनो विष्णु-नृपं ध्वजिनी-पतित्वमम् ॥
जिनपति देय्वमात्म-जनकं-प्रभु पेर्गडे **देचि-राज**नोळ्-
पिन कणि तन्न तायू नेगळ्द् **नागल-देवि** चमूप-वक्त्र-चन्-
दन-तिळकं [•••] **मरियाने**-चमूपति नाथनिन्तु सज्-
जन-विनुतान्वयोन्नतिये **जक्कल-देवि**ये धन्ये धात्रियोळ् ॥
तोळतोळगि बेळगि कीर्त्ति- । वळयदिनळवट्ट **विष्ण**-भूपन राज्य-
स्तळके मिसुपेसेव-हेमद । कळस केवळमे **भरत**-दण्डाधीशं ॥
कान्तं श्रीभव्यचूडामणि **भरत**चमूनाथनात्यन्तिक-श्री-
कान्तं त्रैलोक्यनाथं परम-जिनने देवं समभ्यस्त-सद्-सिद्-
धान्तं **श्रीमाघनन्दि**व्रतिपति गुरुगळ् तन्दे **मारैयन्** एन्दन्द् ।
एन्तुं तां धन्येयेन्दी-**हरियले**येने भूमण्डलं बिच्चळिक्कुम् ॥
एणिकेय लोकद-गणिकेयर् । एणेवल्लरु नोडे चिक्क-हरियळे गारुम् ।
गुणदोळु शासन-देवियर् । एणेयप्परु भरत-राजनर्द्धाङ्गनेजम् ॥

इन्तु पोगळ्तेगे नेलेयाद् कौण्डिल्य-गोत्रद **डाकरस-दण्डनायकन एचव-दण्णायकितिय** मक्कळु **नाकण-दण्डनायकनुं मरियाने-दण्डनायकनुं** अवर मक्कळु **भाचण दण्डनायकनातन सति इम्मबे दण्णायकितियुं** डाकरस-दण्डनायक आतन-सति **दुम्मब्बे-दण्णायकिति** अवर मक्कळु **मरियाने-दण्डनायकन् भरतिम्मेय-दण्डनायकनु**मवर तङ्गे ।

जिन-पद-पद्म-भक्ते सुचरित्र-नियुक्ते विनीते माचि-रा-
जन सुते **काव-राजन** मनः प्रिये **चाकले**सद्वधूजना-
नन-विळसल्ललामे मरियानेय सद्भरतेश-दण्डना-
यन किरि-दङ्गे मन्मथन विक्रम-लक्ष्मियोलादमोप्पुवळ् ॥

श्रीमत्काञ्चि-गोण्ड विक्रम-गङ्ग **विष्णुवर्द्धन-देव**नन्वयद **मरियाने**-दण्डनायकनुं **भरत**ण-दण्डनायकनुं सर्व्वाधिकारिगळुं माणिकभण्डारिगळुं प्राणाधिकारिगळुं आगि सुखदिं सलुत्तमिरे । **विष्णवर्द्धनदेवं** श्रीमद्राजधानि-**दोरसमुद्र**द नेलेवीडिनोळु पृथ्वी-राज्यं गेय्युत्तमिरे उत्तरायण-संक्रमानदोळ ···नदोळु तम्म मगनं **बिट्टि-देव**न हेसरनिट्टु १००० होन्नं पाद-पूजेयं कोट्टु **आसन्दि-नाड सिन्दगेरे**युमं बाय्-वेण्णेगे **बग्गवळिळ**युमं **कलिकणि-नाड दिण्डिगनकेरे**य प्रभुत्वमुमं **बिट्टि-देव**न स्वहस्तदिं धारा-पूर्व्वकं इडदु सुखदिनिरे ।

जनियिसिदं विष्णु-मही- । शन वधु **लक्ष्मा-देवि**गनुपम-**नारसिंघा-** ।
वनिपं नतरिपुभूपा- । ळ-निकाय-ललाट-तटाघट्टित-चरणम् ॥

श्रीमन्महा-मण्डलेश्वर **नारसिंघ-देव**रु राज्यं गेयुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीविगळु महाप्रधान **मरियाने**-दण्डनायकरुं **भरतिम्मेय**-दण्डनायकरुं तम्मन्वयद सिन्दगेरेय बग्गवळिळय दडिगनकेरेय प्रभुत्वके ५०० होन्नं पाद-पूजेयं कोट्टु **नारसिंघ-देव**रु कैयलु पुनर्द्दत्तियागि इडदु सुखन्दिनिरे ।

काल-निभ-प्रतापि नरसिंघ-महीपतिगं मदेभ-ली-
लालस-याने कम्बुनिभकन्धरे **एचल-देवि**गं जय- ।

श्री-ललनेशनीतनेने पुट्टिदनूर्जित-पुण्य-मूर्त्ति **बल्ल-**
ल्लाल-नृपाळकं समदवैरिमहीभुवदर्प्पभञ्जनम् ॥
कलिकालदत्रपुत्रप्रबळतरदुराचारसन्दोहदिन्दम् ।
पोले पोद्दल् पेसि बेसत्तळवळिद मही-कान्तेयं रक्षिसल्का-
लबाद्दं ताने बन्दित्ववतरिसिदवोला-**वीर-बल्लाल-देवम्** ।
कुलजात्याचारसारं नृपवरनुदयं-गेय्दनाश्चर्यसौर्य्यम् ॥

श्रीमन्महामण्डलेश्वररन् असहायशूर निश्शङ्कप्रताप होय्सळ-वीर-बल्लाल-देवर तत्पादपद्मोपजीविगळप्प श्रीमन्महाप्रधानं **भरतिम्मय्य-दण्डनायकरुं** श्रीमन्महाप्रधान **बाहुबलि-दण्डनायकरुं** सर्व्वाधिकारिगळु माणिक-भण्डारिगळुं प्राणाधिकारिगळुमागि सुखादिं सलुत्तमिरे ।

भरतचमूपतिगमुचितान्वय-चारु-चरितदोप्पुवा-
हरियले-दण्डनायकितिगं गुणरत्नपयोधि पुट्टिदम् ।
परिचित-नीति-शास्त्र निखिळास्त्र-विशारदनिष्ट-विशिष्ट-भा-
सुर-निधि **बिट्टि-देव**नखिळावनि-मण्डन-मौळि-मण्डनम् ॥
सेनापति मरियानेगे । भानुगे कानीननादवोल् सुतनादम् ।
भानु-सम-द्युति विबुध-नि- । धानं गुणरत्नराशियप्पं **बोप्पम्** ॥
मरियाने-दण्डनाथङ्गरिविन कणियेनिसि पुट्टिदं जन-विनुतम् ।
करमरेयिल्लद जसदिं । नेरेदं जित-वीर-वैरि **हेग्गडे-देवम्** ॥
भरत-चमूपन पुत्रं । पुरुषार्थम्बोधि मान-कनक-नागेन्द्रम् ।
पु···खचर मनु-मुनि- । चरितं **मरियाने-देव**नदटर गोवम् ॥
अनुपम-दण्डनाय-भरतात्मजे भू-नुत- ··· नेचि-राजनङ्-
गने विभु-राय-देव-मरियानेगळम्बिके **सिन्दघट्टदोळ्** ।
घनतर-कूट-कोटि-युत-पार्श्व-जिनेश्वर-गेहमं जगज्-
जन-नुतमागे माडिसिद **शान्तल-देवि** कृतार्त्थे धात्रियोळ् ॥
जिन-जननिगेणेये **जक्कवे** । जननि गड तण्डे नेगळद **हेग्गडे**-पार **र्** ।
अनुनयदे पुत्रनादं । दिन-पतिगे ··· ··· निप-तेजदातं **शान्तं** ॥

तङ्गेयरु **हेमल-देवि कुग्गल-देवि**यरु ।
भरत-चमूपनिं पिरियना-**मरियाने-चमूपना**-मू- ।
वर···गं महाप्रभु महागुणि वीर्य्यद धैर्य्यदागरं ।
भरत-चमूपनङ्गभव-रूपनपास्त-रवि-प्रतापनुद्-
धराळवि विक्रम-क्रम-विनिर्ज्जित-शत्रु-पराक्रमाक्रमम् ।
अन्तेनिप भरतसेना- । कान्तन कडु-होन्न कान्ते **बूचले** भू-च- ।
क्रान्त-स्थापित-शशि-मणि- । कान्ति-लसत्-कीर्त्ति-मूर्त्ति सति **रति**-यन्नळ् ॥
भरत-चमूपगे तम्मं । स्थिर-गुणनभिमतनेने **बाहुबलि-दण्डेशम्** ।
पुरुषार्थ-सार्थ-तीर्त्थं । पर-हित-विद्याधरेन्द्रनिन्द्रेज्य-निभम् ॥
आ-विभुविन सति **नागल**- । **देवि** जगत्ख्याते सीते पति-हितदिन्दम् ।
भावभवाङ्गने रूपि । भाविसे तां बान्मेयिन्द लक्ष्म्येनिप्पळ् ॥
ओदवद-रूपिनिन्दे नयदिन्द्···नोडुव कण्ण बे···तां ।
पदेदनुरागदिन्द चमूपति **भरत**नेम्ब महा-गजेन्द्रमम् ।
पुडिदळु तन्न यौव्वनद कम्बदे (आ-) बाचले-नारि··· ।
पदे जिनभक्ते पुण्यवति दान-विनोदे पतिव्रता-गुणि ॥
बेसनं **बल्लाळ**-भूपम्बेससे **भरत**-दण्डाधिपं रामादिं बा- ।
यु-सुतं रामाज्ञेयिन्दं नडव-तेरदे बीळ्कोण्डु सामग्रियिन्दन्द् ।
असुहृद्देशङ्गळं केसुरिगे वेरेये बिट्टन्ते निष्कण्टकं भू- ।
प्रसरं तानाय्तधीशङ्गेनिसि पगेय चिन्तिल्लदन्तागे कोण्डम् ॥
ताङ्गदे युद्ध-रङ्गदोळिदिर्च्चुवने ··· ··· गर्व्वदिम् ।
··· मलेवन्दडवर्नं ··· ··· ओन्दे थट्टि वीररम् ।
तुङ्ग-भुजासियं तविसि विक्रम-लक्ष्मीगे गण्डनाद पेम्-
पिङ्गे धराजनं पोगळ्वुदी-**भरतेश्वर**-दण्डनाथन ॥
कुदुरेयनेरलञ्जुवणिगाङ्ग्रियनोय्यने नीडे वैरिगळ् ।
कदन-पराङ्मुखर्प्परिदु बेट्टमनेरिदरळ्दुदिक्किदर् ।
नदिगळोळिद्दरङ्गुळिगळं नेरे कच्चिदरेन्दे हुसने-

रिदरिदु दण्डनाथ भरतात्मज बाहुबलि ··· ··· वर्शं ॥
नाभि-सुत-सुतर तेरेंदे स- । नाभिगळ् आदि-प्रभाव-चरितप्रभवर् ।
श्शोभित-शुभ-मति-युतर- । सोभितरी-**भरत-बाहुबलि-दण्डेशर्** ॥

स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वरं तळकाडु-कोङ्गु-नङ्गलि-बनवसे-उच्चङ्गि-हानुङ्गलु-गोण्ड भुजबळ वीरगङ्गन् असहाय-शूर शनिवार-सिद्धि गिरि-दुर्ग-मल्ल चलदङ्कराम निश्शंकप्रताप **होय्सळ-वीर-बल्लाळ-**देवरु श्रीमद्राजधानि-दोरसमुद्रद नेलेवीडिनोळु सुख-सङ्कथाविनोददिं पृथ्वी-राज्यं गेय्युत्तमिरे **शक-वर्ष ११०५ नेय शुभकृत्संवत्सरद मार्ग्गशिर-शुद्ध-पाडिव-सोमवारदन्दु कुमार-वीरनारसिंघ-देवं** जन्मोत्सव-महा-दानदोळ् तम्मन्वयद **सिन्दगेरेय बळ्ळबळ्ळिय** कलुकर्णि-नाड **दडिगणकेरेय अणुवसमुद्र**द प्रभुत्वनुमं अणुवसमुद्रदलु कन्नेबसदियागि माडिसि **आ**-बसदिगं **चाकेयनहळ्ळि**य बसदिगं देवपूजे आहारदानं नडवन्ताणि सेसेयं तेत्तु अणवसमुद्रद सिद्धायद मोदल होन्नोळगे इप्पत्तु-होन्नं बळिसहित नाल्वत्तु-होन्नं ग्वाण-सहित गळिहि श्रीमन्महाप्रधान **भरतिमय्य दण्डनायक**रु श्रीमन्महाप्रधानं **बाहुबलि-दण्डनायकरुं बळ्ळाळ देव**न श्री-हस्तदलु धारा-पूर्व्वकं हडदु **श्रीमूलसंघ देशियगण पोस्तक-गच्छ कोण्डकुन्दान्वय इङ्गळेश्वरद बळि कोल्लापुर**द **सावन्तन-बसदि**य प्रतिबद्ध श्री**माघनन्दि-सिद्धांत-देवर** शिष्यरु श्री**गंधविमुक्त-सिद्धांत-देव**रु अवर शिष्यरु श्री-**देवकीर्तिपण्डितदेव**रु अवर शिष्यरप्प श्री-**देवचंद्र-पण्डितदेवर्गे शक वर्ष ११०६ नेय शोभकृत्संवत्सरद पुष्य-शुद्ध-दशमी-सोमवारद** उत्तरायण-संक्रमण-महादानदलु धारा-पूर्व्वकं माडि कोट्ट दत्तिगळ वृत्ति ॥ (आगेकी ६ पंक्तियोंमें दानकी विशेष चर्चा और हमेशाकी तरह अन्तिम वाक्यावली तथा श्लोक हैं)

[इस लेखमें सबसे पहले जिनशासनकी प्रशंसा है। वीतराग। (अपने पदों सहित) त्रिभुवनमल्ल **विनेयादित्य-होय्सळ**ने कोङ्कण, आल्वखेड, बयल्-नाड्, तलेकाड् और साविमलेसे घिरी हुई तमाम भूमिमें दुष्टनिग्रह-शिष्ट प्रतिपालन किया था।

यादव वंशमें **सळ** हुआ था। एक चीतेको किसीपर शिकार करनेके लिये उछलते हुए देखकर और किसी मुनिके यह कहनेपर कि "मारो (पोय्) सळ !" सळने इसे मारकर 'पोय्सळ' नाम प्राप्त किया था और यह नाम आगे चलकर उसके तमाम वंशका द्योतक हुआ। यदुवंशमें सळके बाद बहुत-से प्रबल राजा हुए, उन्हींमें एक **विनेयादित्य** हुआ। उसकी रानीका नाम केलेयब्बरसि था।

जिस समयमें दोनों (विनेयादित्य और केलेयब्बरसि) सोसवोरुमें रहते हुए सुख और बुद्धिमत्तासे राज्य कर रहे थे शक सं० ६६७ में केलेयल-देवीने मरियाने दण्डनायकसे **देकवे-दण्डनायकिति**को व्याह दिया और भेंटमें आसन्दिनाड्के सिन्दगेरीको उसे दिया।

विनेयादित्य पोय्सळ और रानी केळेयब्बेसे राजा वीर-गङ्ग-एरेयङ्ग उत्पन्न हुआ। वीर-गङ्ग एरेयङ्ग और एचल-देवीसे **बल्लाल, विष्णु** और **उदयादित्य** उत्पन्न हुए थे। बल्लाल या बल्लु-देवकी प्रशंसा।

जिस समय बल्लालदेव अपनी राजधानी बेलुहूरुमें रहकर सुख-शान्तिसे राज्य कर रहे थे, मरियाने-दण्डनायककी दूसरी पत्नी **चामवे दण्डनायकिति**से पदुमलदेवी, चामलदेवी और बोप्पदेवी उत्पन्न हुई थीं। बल्लालदेवने इन तीनों कन्याओंका विवाह एक ही मण्डपमें शक सं० १०२५ में विभिन्न तीन राजाओंकी राजधानियोंमें कर दिया और उनकी दूध पिलाई (wet nursing) की तनखाके रूपमें द्वितीय पीढ़ीके मरियाने-दण्डनायकको पुनः सिन्दगेरीका स्वामित्व दे दिया।

राजा विष्णुने तुळु देश, चक्रगोट्ट, तळवनपुर, उच्चंगि, कोळाळ, सप्तमले, बल्लूर, कञ्चि, कोङ्गु, इडिय-घट्ट, बयल्-नाड, नीलाचल-दुर्ग, रायरायपुर, तेरेपूर कोयत्तूर और गौण्डवाडि-स्थल,—इन सब प्रदेशोंको जीता था। साहस-गङ्ग-होय्सळने विरोधी राजाओंका नाश करके तलकाड्को (खादके लिये) जलाकर घोड़ोंके खुरोंसे उसे जोतकर अपने वीररसकी नदीसे उसे सींचकर अपने यशके अच्छे बीजसे इसे बोया।

जीर्णोद्धारके देवरष्टविघाञ्चंने··· ··· ··· ······ ··· ··· ···ब्राह्मण··· ···
··· ··· ··· ··· ··· ···कोन्द पापके··· ··· ··· ··· ···(हमेशा की तरह अन्तिम श्लोक) स्वस्ति श्री समस्त-कोटि-जिनालयं भद्रमस्तु जिनशासनाय ॥

[जिन शासनकी प्रशंसा ।

जिस समय, (अपने पदों सहित), होय्सळ वीर-बल्लाल-देव हेद्दुरें (कृष्णा नदी) तक उत्तरकी ओर पृथ्वीको स्वाधीन करके सुख और शान्तिसे राज्य करते हुए अपने निवासस्थान दोरसमुद्रमें थे:—तत्पादपद्मोपजीवी होरलाधिकुलाग्रणी एक **गोरव-गवुण्ड** थे। उन्होंने तिप्पूरमें एक जिनालय बनवाया। वह मन्दिर द्रमिलसंघ, नन्दिसंघके आरुङ्गल अन्वयका था। जिनालयकी मरम्मत तथा पूजाके प्रबन्धके लिये उसने मदहल्लि गाँव का, बसदिके उत्तरकी ओरकी जमीन सहित, दान किया था।]

[EC, IV, Guudlupet, tl., No. 27.]

४२६

हलेबोड—कन्नड़ ।

वर्ष नल [शक १११८= ११९६ (कीलहार्न)]

[पार्श्वनाथ बस्तिके प्रवेशद्वारके पासके एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
श्री-**मूलसंघ**-क्रमरत्नाकर-राजहंसो
देशीय-सद्-गणि··· ···रावतंसः ।
जीयाजिनेन्द्रसमयार्ण्णव-तूर्ण-चन्द्रः
श्री-वक्र-गच्छ-तिलको मुनि-बालचन्द्रः ॥

स्वस्ति श्रीमद्-भुजबळ-चक्रवर्त्ति यादव-नारायण-वीर-**बल्लाल-देवर्** सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे। **नळसंवत्सरद कार्त्तिक-शुद्ध-पडिव-बृहस्पतिवा-**

रवन्तु श्रीमन्महा-वड्ड-व्यवहारि कवडमय्यन देवि-सेट्टियरु माडिसिद श्री-शान्तिनाथ-देवर बसदियूरु कोरडुकेरेय कालुहल्लि माचियहल्लिय बम्मतिगट्टव इट्टगेय मल्लरसय्यंगण मक्कळु अप्पय्य-गोपय्य-बाचय्यङ्गळु आ-शान्तिनाथ-देवर बसदिय परिसूत्रदोळगण तम्म माडिसिद पट्टशालेय श्री-मल्लिनाथ'''वरष्ट-विधार्च्चनेगं खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारकं ऋषियरकळाहार-दानक्कं पर्व्वदिनपूजेगं श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यर् माण्डविय बाळचन्द्र-सिद्धान्तदेवर शिष्यर् रामचन्द्र-देवर्गे अरुवत्तु-गद्याण होनं क्रयवागि कोट्ट् कोण्डरा-बम्मतिगट्टद सीमा-सम्बन्धवेन्तेने (आगेकी ३ पंक्तियोंमें सीमाकी चर्चा है) आ-केरेयनिप्पत्तु-होर्न कोट्टु कट्टिसिदर् देवर नित्य-पूजा-क्रममेन्तेने ॥ (आगेकी ६ पंक्तियोंमें दानकी चर्चा है) इन्ति नितुमं सर्व्व-बाधा-परिहारवागि श्री-शान्तिनाथ-देवर बसदिय-आचार्य्यरारोर्व्वरिद्दरिद्दवरुं कोरडुकेरेय गौडुगळु ऊररुवत्तोक्कलुं अरुवण्णवोळगाद अन्यायवेनु बन्दडं तावे तेत्तु सलिसुवरु ई-धर्म्मवं नरवरंगळारैय्दु प्रतिपाळिसुवरु ॥ (इमेशाका अन्तिम श्लोक) मंगल महा श्री ॥

[इस लेखमें सबसे पहले मुनि बालचन्द्रकी प्रशंसा है। वे मूलसंघ, देशियगण और वक्र-गच्छके थे। जिस समय यादव-नारायण वीर-बल्लालदेव शान्ति और बुद्धिमत्तासे राज्य कर रहे थे :—(उक्त मितिको) बहुत पुराने व्यापारी कवडमय्य और देवि-सेट्टिने शान्तिनाथ-देवकी बसदिके लिए कोरडुकेरेके एक छोटे गांव माचियहल्लिके बम्मटिगट्टको बनाया और इट्टगे मल्लरसय्यके पुत्र अप्पय, गोपय्य और बाचय्यने, शान्तिनाथ-बसदिके घेरेके अन्दर अपने द्वारा बनाये गये पट्टशालेके मल्लिनाथ-देवकी अष्टविध पूजाके लिये, महामण्डलाचार्य माण्डवि बालचन्द्र-सिद्धान्त-देवके शिष्य रामचन्द्रदेवको ५० होन्नु देकर उस बम्मटिगट्ट (उसकी सीमायें) खरीदकर भेंट कर दिया; और २० होन्नु देकरके एक तालाब बनवा दिया। इस दानकी रक्षा शान्तिनाथ बसदिके आचार्य, कोरडुकेरेके किसान, और गाँवके ६० कुटुम्ब करेंगे।]

[EC, V, Belur, tl., No. 129]

४२७

चिक्क-मागडि;—संस्कृत तथा कन्नड ।

[संभवतः लगभग १२१२ (?) ई०]

[**चिक्कमागडि में, बसवण्ण मन्दिर के प्राङ्गणमें एक खम्भे पर**]

(पूर्व मुख) स्वस्ति श्रीमत्-प्रताप-चक्रवर्त्ति यादव-नारायण **होय्सळ-वीर-बल्लाळ-देव-वर्षद** २३ नेय ॥

दोरेवेत्ताङ्गिर··त्सरं नेगळद्-मास श्रवणं शुद्ध-वा- ।
सरमळ् देरिसि शुक्रवारमु·····पुष्य-वस्त-सा- ।
ध्य्···सु···बहयाषाढ·········परं त्रि······सत्-
करणं तैतिलमि·····न्दिद विभातं कूडे पु···यिम् ॥
जिन-वाक्यामृत-सेवयिं मनद मिथ्यात्वामयं पिङ्गे द- ।
र्शन-संशुद्धते-वेत्त चित्तदोदविन्दन्तमंही···प्ति···।
अनितुं तन्नविकल्लवेम्···बगेयं बिट्ट कुश-···स्म-शु- ।
द्ध-नयं तन···देव ताळिद् गुणमं **जक्कव्वे** निश्चय्सुतम् ॥
मति-जिन-पाद-पङ्कजदोळ् अन्वितमादुदु दृष्टि नासिका- ।
ग्रतेयोळे निन्दुवागम-पदङ्गळनालिसुतिर्द्दुवागळुम् ।
श्रुति-युगळं···दृष्टि-युत-सन्यसनं नेरेदोप्पे नाक-सं- ।
गति-वडेदळ् समाधि-विधियिं वरे **जक्कले**येम् कृतार्त्थेयो ॥
सले··भानु-ज्योतियिन्दं विकचिसियदरोळ् देव-देवेशनं निश्- ।
श्चळमागिर्द्द···सन्तोषदोळे जिनपनं बानिसुत्ता-लता-को- ।
मळे बिट्टळ् बक्कियकं तनुवनुळिदराप्पोंळ्वरेम्बन्तु तन्नम् ॥
त्रयमं मिथ्यात्व-कर्म्मकमर्द्द गुणद सम्यक्त्व-स··सम्बु- ।
द्धियुमं मुम्मण्डि देश-श्रुतमननितुमं कोण्डु निर्म्मोहे ताय्-तन्- ।
देयुमं बिट्टन्दे सन्यासमनमळिनवं पून्दु जैनेन्द्र-पाद- ।
द्वयमं चित्तदि जक्कव्वे दळेसे···अ·········॥

···त-दर्शने विस्तारित-सु·············र-कळेवर बकले-नाम्बिनाक्·····
ति············नेनेयुत बकले तनुवं बिट्टागवन्ते सुकुम···सुषाशन-पूज्य-
समवशरणमनानाकुळं पोकु बिननभिवन्दिसुव·········

(दक्षिण ओर)

श्रीमत्पुण्य-फलादभूद् भुवि सुता सामन्त-मुख्यस्य या
सा सर्व्वज्ञ-पदारविन्दमसकृत् सम्पूज्य भक्त्यादिशत् ।
शुद्ध-ध्यान-विशोधि-बोधित-मनःपूर्व्वं समाधि-क्रमैस्
साश्चर्यं त्यजति स्व-देहमणुवच्छ्री-जक्कलाम्बा सती ।
चित्तं विस्तार्यं पुण्याश्रव-करण-विधौ सर्व्व-कर्म्माणि नाशी- ।
कर्त्तुं त्यक्त्वा विमोहं समयमुपशमं प्राप्य चात्मोपयोगम् ।
शुद्ध-ध्यानामृताम्भः-प्लुत-म···जिनेन्द्रस्य पादारविन्दम्
प्रस्थाप्यालोक्य देहं त्यजति तृणमिव श्रीमती जक्कलाम्बा ॥
नित्यानन्द-सुखामृताम्बुधि-पयःपूर्व्वावगाहोत्सुका
स्वात्मानुष्ठित-सम्यमात्त-विळसत्-सम्यक्त्व-पोतेन या ।
संसारार्ण्णव-पारमाशु तरणोद्योगं समुत्पादिनी
चित्रं देव-गतिं प्रति त्यजति किं देहं तु जक्काम्बिका ॥
निखिल-वनज-वल्ली-पुष्प-माला-कदम्बैः
घृत-दधि-वर-दुग्धैराभिषिच्यार्च्चयं तीर्त्थान् ।
न भजति हृदि तृप्तिं जक्कलाम्बा स्व-देहात्
समवशरण-नाथं द्रष्टुकामा प्रयाति ॥
दानान्वितेति गुण-रत्न-विभूषितेति
शान्तेति सर्व्व-जनतासु दया-परेति ।
जैनागमोक्त-चरितानुगतेति भव्यः
के न स्तुवन्ति भुवि जक्कल-योषितं ते ॥

(पश्चिम ओर)

श्री-विबुधेन्द्र-वन्दित-जिनेन्द्र-महा-महिमार्च्चना-शची- ।

देवियेनिप्प **अक्कल**-महा-सतियुद्ध-चरित्रमं कला- ।
श्री-विभवङ्गळं विविध-दानमनात्त-जिनेन्द्र-भक्ति-सं- ।
भावित-सत्-समाधि-मृतियिं सुकृतार्त्थिगळारो कीर्त्तिसर् ॥
वनिता-भूषणे सच्-चरित्रवति ताय् **लच्छब्बे** सामन्त-**मण्**- ।
डल-मुद्दं जनकं विनूत-**भरतं** कान्तं सुतत्त्वोपदे- ।
शनना-श्रीमद्**नन्तकीर्त्ति-मुनिपं** पूज्यं जिन-स्वामियेन्द् ।
एने **अक्क**...... वंश-शील......सम्यक्त्वं जगत्-पावन ॥
.........डिगे जिनाग...जिनमतं मतिगा-जिन-सू...सत्पदम् ।
नडेगोडनाडियाय्तेने जिनोक्तियनोदि तदागमार्त्थमम् ।
नडे तिळिदन्ते मुक्तिगिरदेय्दिप शील-गुण-व्रताध्वदोळ् ।
नडेदेडेगेय्दवाल्के गड **अक्कले** नारि महेन्द्र-कल्पदोळ् ॥
नेरेये मुनीन्द्ररुं पोगळ्दणं तले दुगे परिग्रहङ्गळम् ।
तोरेदु गृहीत-सन्यसनदिं निज-बान्धव-मोह-पाशमम् ।
परिदु सुवृत्ते **अक्कले** महा-सति चित्तमनाप्त-तत्त्वदोळ् ।
नरिसि समाधियिं नेरेये साधिसिदळ् सुर-लोक-सौख्यमम् ॥
तळर्दिरदेक-पार्श्व-नियम-स्थिति दृष्टि सु-नासिकाग्रदिम् ।
कळिवेडे बल्पु बळिक्करदे मेय् मिडुकाडदे जैन-भक्ति सञ्-।
चळिसदे माणदुच्चरिसि पञ्च-पदङ्गळगनात्म-तत्त्वदोळ् ।
नेलसिद सत्-समाधि-विधि **अक्कले**-नारिगिदेक-लावणम् ॥

(उत्तरकी ओर) श्री-जिनेन्द्र ॥

त्यक्त्वा देहं विमोहाद् व्रत-गुण-चरित-श्रेणि-निश्रेणि-मार्गाद्
आरुह्य स्वर्ग-दुर्गं निज-भवन-बलादेव यत् तद् गृहीत्वा ।
याहं **अक्काम्बिका**स्मिन् दिवि दिविजवरोऽभूवमात्म-प्रसादाद्
इत्थं तुष्टाव गत्वा समवसरण-भूस्थं नतेन्द्रं जिनेन्द्रम् ॥
जिन नाथाभिषवङ्गळिं जिन-गुण-स्तोत्रङ्गळिन्दं जिनार्- ।

र्च्चनेयिन्दं जिन-भक्तियिं जिन-मुनीन्द्राहार-दानङ्गळिम् ।
जिन-वाक्यार्त्थ-विचारदिन्दलेदु मिथ्या-मार्ग्गमं तत्त्व-भा-।
वनेयिं पेट्टमरत्वदिन्देरगिदळ् **जक्कव्वे** जैनाब्धि योळ् ।।
तत्त्वमना-जिनेन्द्र-मतदिं तिळिदुज्ज्वळमाद शुद्ध-द-।
ष्टित्व-गुणार्क्कनिन्दलरे शील-गुण-व्रत-वारिजाळि मि-।
थ्यात्व-तमस्-तमं परेये सत्पथ-वर्त्तिनियागि शुद्ध-सं-।
वित्वदिनेय्दिदळ् नेगळ्द जक्कले नारि सुरेन्द्र-लोकमम् ।।
ललित-पतिव्रताचरण-चारु-नदी-सलिल-प्रवाहदिम् ।
कलि-मलमं कळल्चि निज-निर्म्मळ-कीर्त्ति-लता-वितानमम् ।
बळेयिसि-शील-शालि-बनमं परिवर्द्धिसि पुण्य-नन्दनङ् -।
गळने निमिर्च्चि **जक्कले** वलं पडेदळ् सुमनो-विभूतियन् ।।
परिकिसि सद्-बुधर् प्पोगळे तन्न चरित्र-गुणाङ्क-मालेयम् ।
विरचिसि सुप्रबन्धमने दिक्- कुळ-भित्तिगळोळ् तेरळ्च मुं-।
बरेदुदनीगळा-दिविज-लोकदळोप्पुव लेख-जाळदोळ् ।
बरेयिपनेन्दु **जक्कले** महा-सतियेरिदळल्ते सग्गमम् ।।
पुगेयवसर्प्पणं भरतदार्य्येयोळन्वितमाद भोग-भू-।
मिगळ विरामदोळ् सुकृत-दुष्कृत-वर्तनेयागि सन्द का-।
ल-गत-च...तु ... ळन्त्यदोळे पञ्चम-कालदोळेन्दिदन्द...।
महात्मरोळ् गुणमे **जक्कले**-नारियोळुत्तरोत्तरम् ।।

[प्रताप-चक्रवर्त्ति-यादव-नारायण होयसल वीर-बल्लाल-देवके २३वें वर्षमें उक्त मितिको जिसका बहुत विस्तृत वर्णन है, परन्तु जो बहुत घिस गया है।

जक्कव्वे (जक्कले)-ने समाधिमरण धारणकर स्वर्ग प्राप्त किया।

(सम्पूर्ण लेख उसकी भक्ति और तपकी प्रशंसासे भरा हुआ है, कुछ भाग संस्कृत में है और कुछ कनड़में है)। उसकी माता लक्कव्वे, पिता मण्डलमुद,

पति विख्यात भरत, तप-साधक उपदेष्टा (गुरु) अनन्तकीर्त्ति-मुनिप। उसने अपना जीवन, शील और उपाधियाँ पद्यमें गुम्फित करा लीं थीं।]

[EC, VII, Shikarpur, tl., No. 196,]

४२८

श्रवणबेल्गोला—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक १११८ = ११९६ ई०]

[जै० शि० सं, प्र० भा०]

४२९–४३०

श्रवणबेल्गोला—कन्नड़।

[बिना कालनिर्देशका]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

४३१

अग्नि;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक १११९=११९७ ई०]

[अग्निमें, वन-शङ्करी मन्दिरके सामनेके पाषाण पर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम्॥

स्वस्ति श्री-पृथ्वी-वल्लभं महाराजाधिराजं परमेश्वरं परम-भट्टारकं यादव-कुळाम्बर-द्युमणि सम्यक्त्व-चूडामणि मलेराज-राज मलपरोळ् गण्ड कदन-प्रचण्डनेकाङ्ग-वीरनसहाय-शूर शनिवार-सिद्धि गिरिदुर्ग-मल्ल चलदङ्क-राम निश्शंक-प्रताप चक्रवर्त्ति होय्सळ-वीर-बल्लाल-देवर राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्क-तारम्बरं सलुत्तमिरे॥

भुवनं भू-चक्र-चक्रायुधनेने नेगळ्दं **वीर-बल्लाळनुर्व्वी-।**
स्तवनीय-प्रांशु-मत्स्य-च्छवि सुचरित-कूर्म्मोदयं सार-सूकरि-।
य विळासं विक्रम-श्री-नरहरि-परमं त्रिक्रमं राम रामो-।
त्सव-रामानन्दि विद्या-सुगतमति-कलि-प्राभव-प्रौढ़-तेजम् ॥
बळवद्-बल्लाळनुग्राहव-पटह-रवं कर्ण्णवन्ताये विद्युत् (विद्विट्)-
कुळ-कान्ता-कर्ण्ण-पुत्रं केडवुदणकवल्तोन्दे केळ् विस्मयं कण्-
मलरिं बाष्पाम्बु कय्यि कडगवडिगळिं नूपुरं वक्त्रदिं सुय्।
तले-कट्टिं माले-वूवाकेगळ गळकदि बिळ्वुदुत्तार-हारम् ॥
जित-धात्री-चक्र चक्राधिप नृप-वर **बल्लाळ** केळ् निनु ओळान्तु-।
द्धत-वीराराति-यूथं विगत-विभवमागिर्द्दं रजिनकुं वि-।
श्रुत-नाना-वाहिनी-सङ्कुळ-परिगत-शोभानुकूलयं सदा-से-।
वित-राजद्राज-वंशं सकळ-कवि-निकाय-स्वनाकीर्ण्ण-कर्ण्णम् ॥
एनसुं तीव्र-प्रतापक्कगिदु दिनकरं मित्रनागिर्द्दपं ने-।
हने राजं राज-नामं तनगे पगेयेनिप्पुम्मळं पेर्च्चि कन्दिर्-॥
प्पनवं मत्तावनण्मं मेरेवनदटनिं तोर्प्पनावं महोग्रा-।
रि-नृपाळं विश्व-भू-चक्रदोळेले चलदिं **वीरबल्लाळ** निन्नोळ् ॥
आनोलविन्द बण्णिसद्डेम् गळ दक्षिण-चक्रि युद्धदोळ्।
तानसहाय-शूरनोनपुर्व्वतियं रिपु-राय-**सेवुणा**-।
नून-गजाश्व-सद्भट-बळङ्गळनळ्कुरदोन्दे-मेय्योळोन्द्-।
दानेयोळोक्किलिक्किद पराक्रमदुन्नति ताने हेळदे ॥

व॥ अन्ता-प्रताप-चक्रवर्त्तियेनिसिद धीरं **वीर-बल्लाळ-देवं** निज-
भुज-बळदिन्दुण्डिगे साध्यं माडि चलदिन्दाळ्द पलवुं देशङ्गळोळ् ॥

वृ॥ पलवुं पूर्ण्ण-तटाकदिं बलेद-नाना-शालि-केदारदोळ्-।
पोलदिं वारिज-षण्डदिं परिमळ-भ्रान्ताळि-माळोद्घ-पु-।
ष्पलता-सङ्कुळदिं फलोन्नमित-चूतादि-द्रुमाजङ्गळिम्।

नेलेयागिर्प्पुदु मन्मथाङ्गे **बनवासी**-देशवेत्तेत्तलुम् ॥
क॥ एने नेगळ्दा-बनवासी- ।
वनिता-मुख-तिळकवेनिप **शिड्कुलिगे**यना- ।
नृपाळ-प्रकरद शौ- ।
र्य्य-निधान-स्थानमेसेवुदु**कुप्प**ट्टेय-पुरम् ॥
व॥ अदेन्तेन्दडे ॥
सरसिज-वक्त्रदिं कुमुद-लोचनदिं विळसल्लताङ्गदिम् ।
सुरुचिर- पल्लवाधरदिना-शुक-भावण्डदिन्दे मल्लिका- ।
परिमलदिं मदाळि-कुळ-कुन्तळदिं वन-लक्ष्मि-रूपनुद्- ।
धरेय पुरोपकण्ठ-बनदोळ् पडेदोप्पुवळावळाव-कालमुम् ॥
मत्तमल्लि ॥
सले तत्-पुराधिनाथर् ।
पलरं मुन्नेगळ्दरवरोळतुळित-शौर्य्यम् ।
चलदर्त्थि-गण्डनेनिपोळ्- ।
गलि बट्टीगनिरिव **बिट्टिगं** पेसर्-वडेदम् ॥
परियिट्टु वरि-भूपा- ।
ळर पुरवं सुट्टु हरिव कञ्चिगनादम् ॥
बिरुदिं तन्नृप-तनयम् ।
धरेयोळ् जयदुत्तरंगनपगत-भङ्गम् ॥
गङ्ग-कुळोत्तमं मरेयनेरिद मेयूगलि **मारसिंग**-भू- ।
पंगे तनूभवं नेगळ्द **कीर्त्ति**-नृपाळकना-नृपङ्गे पु- ।
त्रं गड **मारसिंग**नवनग्र-तनूभवमेन्दोडानदा- ।
वङ्गणे माळ्पेनप्रतिम-रूपन**नेक्कल-देव**-भूपनम् ॥
आ-नेगळ्द**नेक्कल-देव**-म- ।
हि-नाथन तङ्गे **दुखवमरस**न सति धा- ।
त्री-नुते **चट्टल-देवि** क ।

ळा-निधि पडेदळ् पवित्र-पुत्र-त्रयमम् ॥
पर-भूपाळ-पुर-त्रिनेत्रनेरग-क्ष्मापाळकं वैरि-दुर्- ।
धर-दैत्य-प्रकर-प्रताप-हरणोद्यत्केशवं **केशवम्** ।
सरसोदार-कवित्व-तत्त्व-चतुरास्यं **सिंगदेवं** महा- ।
पुरुष-त्रै-पुरुषत्वमं तळेदरन्ता-मूवरुं भूवरर् ॥

अवरोळ् पिरियनेनिसि ॥

मरेदुं पर-सतिगर्- ।
करोलच्युतनल्लदन्य-देय्वकर्प्पिम् ।
मरेयिप निज-धन-लोभक ।
एरगनेरगनेरग-नृपनेने नेगळ्दम् ॥
एने नेगळ्देरग-नृपाळकन्- ।
अनुजं **कोळाल-पुर**-वराधीशं पा- ।
वनतर नन्निय-गङ्गम् ।
विनुत-गुणोत्तुंगनवनी-पति **नरसिंगम्** ॥
आ-विभुविन सति **लकमा**- ।
देवि मुकुन्दङ्गे लक्ष्मि परमेष्ठिगे वा- ।
णी-वधु रुद्रङ्गद्रिजे ।
देवेन्द्राङ्गेसेव-सचियेनल्पेसर्-वडेदळ् ॥
आ-रमणी-विशाळ-विनुतोदार-पद्मदोळञ्जगर्भनन्त् ।
आ-रमणी-निजामळिन-गर्भ-पयोधियोळिन्दु रागदिन्द् ।
आ-रमणी-लसज्-जठर-जाह्नवियोळ् सुरसिन्धु-जं स-वि- ।
स्तारदे पुट्टुवन्ददोळे पुट्टिद**नेक्कल-भूमिपाळकम्** ॥

अदेन्तेन्दोडे ॥ स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरम् **कोळालपुर** वराधीश्वरं गङ्ग-कुल-कमल-मार्त्तण्डं बिरुद-मण्डलिक-शरभ-भेरुण्डं **जयदुत्तरंगं नन्निय-गङ्गं** विराजित-मयूर-पिञ्छध्वजं भूप-रूप-मकरध्वजं श्रीमदच्युत-चरणालिप्त-

चन्दनचर्च्चिताङ्गं विप्राशीर्व्वाद-सत-सहस्र-सम्भृत-शेषाक्षत-पवित्रीकृतोत्तमाङ्गं भूमि-कन्या-स्वर्ण्णान्न-दान-विनोदं सकळ-जन-मनोह्लाद्मेनिसि **देक्कल-देवन** प्रतापमं पेळ्वडे ॥

जवनं जक्कुलिपं कडङ्गि सिडिलं मार्क्कोळवनामीळ-का- ।
ळ-विषोग्राहियेनेत्ति मारिडुवनौर्व्व-ज्वळेयं मर्ग्गिपम् ।
तविपं तीव्र-निषाटद्गळिकेयं तानेन्दोडिन्दुविक्कनि- ।
क्कुवमारान्तपरेक्कल-क्षितिपनं संग्राम-रङ्गाग्रदोळ् ॥
दवरूपं रिपु-काननक्के पवि-रूपं शत्रु-शैळक्के बा- ।
डव-रूपं [द्] विषदर्ण्णवक्के निज-तीव्रात्युग्र-कोप-प्ररू- ।
पवेनल् पोङ्गि कडङ्गि निन्दतुळ-बाहा-गर्व्वदिन्दाम्परार् ।
अवनीपाळकरेक्कल-क्षितिपनं संग्राम-रङ्गाग्रदोळ् ॥
ई बेसेगोळ्वुदेनो सुभटोत्तम**नेक्कल-देव**निष्टरोळ् ।
नम्बुगे दप्पिदन्दु पर-कान्तेयोळोळ् [द्] ओडगूडिदन्दु लो- ।
बम्बिडिदर्थदत्तळिपिदन्दिदिरान्तडे कोल्लदन्दु केळ् ।
अम्बुधि मेरेयिं तोलगुगुं तळर्गु नेळेयिं सुराचळम् ॥
तक्कतनक्के मिक्क पर-कामिनियर्क्कळनेम्म तङ्गेयेम्म् ।
अक्कनेनुत्ते नम्बे मोरेगोण्डोडगूडुव साधु-गळ्ळरे- ।
तक्कुपायोग्यवा-महीपरेम् गळ पोल्वरे शौचदेळोयिन्द् ।
एक्कल-भूपनं पर-वधू-विनुतोदार-पद्म-गर्भनम् ॥
गति-भावं चारि सूत्रं निरिसळवि बळं काङ्क्षे बल्योजे कायुपु-
न्नति गाढं लागु बेगं तेरपु पसरवारेके तेरय्के कूर्प्पङ्- ।
कितवाकारं तडं कित्तडवेनिप भृगु-प्रौढियिं कोल्वनुग्रा- ।
हितनं मारङ्कवं माम्र्मलेदडे चलदि**न्देक्कल**-क्षोणिपाळम् ।
आ-नृपाळनन्वयागत-प्रधानरोळ् ॥
स्तुति-वेत्तं विश्व-लोकोन्नत-वितरण-शीलं रिपु-क्षोणिपाळ- ।
प्रतति-प्रख्यात-दण्डाधिप-कुळ-विळयोदग्र-काळं मही-वन्-

दित-भास्वत्-सच्चरित्र-व्रत-युत-गुण-लोळं जगत्-सेव्य-भव्य-
प्रतिपाळं स्वीकृत-प्राकट-वर-बुध-जाळं **चमूनाथ-माळम्** ॥
आ-विभुविङ्ग सति-**मा-** ।
देविगमोगेदं प्रताप-निधि वैरि-जय- ।
श्री-वरनहित-वनोद्यद्- ।
दावानळनप्प **बोप्प-देव-चमूपम्** ॥
एरेदर्त्थिर्त्थि-चयक्के कळ्प-कुजविप्पन्तिप्पनं बोप्पनम् ।
वर-वंशाम्बुधि-वर्द्धनक्के शशियिप्पन्तिप्पनं बोप्पनम् ।
आ-सेनापति-सति-जिन- ।
शासन-देवते समस्त-चतुर्कोटि कळोद्- ।
भासित-पद्मावति जग- ।
ती-संस्तुतेयेनिप **बोप्पियक्कं** नेगळ्दळ् ॥
आ-दिव्य-सतियेनिप **बो-** ।
प्पा-देविगममळ-कीर्त्ति-बोप्पङ्गं पुण्- ।
योदयदिनोगेदनमृत-म- ।
होदधियोळ् सोमनेगेव-तेरदिं **सोमम्** ॥
धरे बण्णिप्पुदु मन्त्रि-बोप्पन तनूजाराममनं प्रेमदिम् ।
निरवद्यामळ-नाममनं प्रणुत-विद्व[त्]-स्तोमनं प्रोल्लसद्- ।
वर-नारी-ज..-काममनं विनय लक्ष्मी-धाममनं भव्य-बन्- ।
धुर-धर्म्म-व्रत-नेमनं बहु-कळा-निस्सीमनं सोमनं ॥
सूरि-चकोर-सोमननवद्य-कळागम-सोमनुद्धतो- ।
गारि-सरोज-सोमनति-निर्म्मळ-वंश-पयोधि-सोमना- ।
चार-वन-प्रवर्द्धन-वसन्तक-सोमनशेष-भव्य-हृत्- ।
कैरव-सोमनेन्देनिप **सोम**-चमूपनिदेनुदात्तनो ॥
आ-महिमास्पदनेनिसिद- ।
सोम-चमूपङ्गे पति-हितारुन्धति सु- ।

प्रेमान्विते सतियादळु ।

सोवल-मादेवि सिसिगे ससि-लेखेयवोल् ॥
पडेमातेम् विळसत्कळा-परिणतं विद्या-गुणोद्भासि हेग्- ।
गडे-सोमं पति सामि-दख्खकर गण्डं दण्डनाथं जसक् ।
ओडेयं श्री-**महादेव**नात्म-सुतनेन्दन्दिन्दु मत्तन्यरार् ।
प्पडेदर् **स्सोमल-देवि**यन्ते सतियर् स्सौभाग्यमं भाग्यमम् ॥
एने नेगळ्द मंत्रि-सोमन ।
वनितेगे पति-हितेगे सत्-कुल-प्रभवेगे सज्- ।

जन-नुते-सोवल-देविगे ।
तनयर् **म्महदेव-राम-केशव**रोगेदर् ॥
आ-मूवरोळं मध्यमन् ।
ई-महियोळु ताने पलरोळुत्तमनेनिपम् ।
रामं यशोभिरामम् ।

सोमात्मजनमळ-धर्म्म-कर्म्म-प्रेमम् ।
पर-सेना-जय-विक्रमोन्नतियोळादं भीमनुं रामनुं ।
धरणी-स्तुत्य-कळा-विळासदोदविन्दा-सोमनुं रामनुम् ।
वर-नारी-जन-मोहनाकृतियोळुद्यत्-कामनुं रामनुम् ।
सरियेन्दी-जगवेय्दे बण्णिपुदु कीर्त्ति प्रेमनं रामनम् ॥

श्री-रामननुजनेनिसिदन् ।
आ-राम-चमूपननुजनुरु-लक्ष्मण-वि-।
स्तार-सुमित्राधिक-पुण्-।

याराम केशवं जगजन-विनुतम् ॥
एरेदन्दागळे माणिपं बुध-विपत्-संक्लेशवं केशवम् ।
बिरुदिन्दान्तरनेय्दिपं स्फुरदरण्योद्देशवं केशवम् ।
शरणागेन्दडे नीडुवं बहळ-बाहा-पाशवं केशवम् ।

१४ सरसी-सन्दोहदिम् सारसोन्मद-भृङ्ग - पिक-कोक-केकि-शुक-संघानीक-शाकुन्त-नाददिनेत्तम् गणिका-विनोद-कृत-वीणा-नाददिदोप्पुगुम् ॥ व ॥ अन्तपरि-मित-के-

१५ दार-भूमियुमपारजलाश्रयाभिराममुं बहुजनाकीर्ण्ण-मुममेय-गणिका-निवासमुमग-णितवणिग्जनाश्रयमुमेनिसि शोभानिवासमागे ॥

१६ वृ ॥ अवतरिसिर्द्दनल्लि रजताचलदि गिरिजा-समेतमुत्सवदोळे सोमनाथनखिला मरमौलिविनद्धरत्नसंभवकिरणप्रभापटलपुञ्जपरागपदाब्जनत्थियिन्द-

१७ वनत-भाक्तिकाभिमतसिद्धिफलोदयकल्पभूरुहम् ॥क॥ आ सोमनाथपुर-संवासि-तरोळु ब्रह्मपुरिगळोळ् विप्रोळा **व्यास-शुक-वामदेव-पराशर-कपि-ला**दि-सदृशनो-

१८ र्ब्बन्नेगळ्दम् ॥क॥ **श्रीवत्स-गोत्र**नुर्व्वीदेवनुतं निखिलवेदवेदाङ्गविदं पावन-चरित्रगुणसद्भावं **पुरुषो**त्तमं द्विजोत्तमनेनिपम् ॥कं॥ आ विप्रन सति सीता-देविगवा [स] त्य-

१९ तपन-सतिगं गुण-सद्भावदे **पद्माम्बिके** सले पावन-सुचरित्रे पतिहित-व्रतेये-निपळ् ॥ आ दम्पतिगळ् पलकालवनपत्यरागिर्द्दोन्दु देवसं नापुत्रस्य लोकोस्ति येम्ब वेदवाक्यमम् ति-

२० [ळिदु] ॥क॥ पुत्रार्त्थवागि सत्यपवित्राचरणं नेगळ्द**पुरुषोत्तम**नापत्राणनी-शनेन्दु कलत्रान्वितनागि शम्भुवं पूजिसिदन् ॥व॥ अन्नेगमित्त दिविज-दनुज-बृन्द-वन्दित-पादारविन्द-

२१ [नप्प] महेश्वरं कैलास-पर्व्वतद रम्यभूमियोळु केशव-वासवाब्जभवरोलगि-सलसंख्यातगणपरिवृतनुमासहितं वोड्डोलगदोळु सुखसंकथा-

२२ विनोददिन्दमिरे नारदनेम्ब गणेश्वरनिन्तेन्द ॥वृ॥ ओहिल दास चेन्न-सिरियाळ हलायुध बाणनुद्भटर्देहदोळोन्दि बन्द मलयेश्वर केशवराजरा-दिया गेह्दि-

२३ क-सौख्यमं विसुटसंख्यगणं निजवाद भक्ति-सद्गेहदोळिक्किरलु समयमुत्कटवादुवु (दु) **जैन-बौद्ध**रोळळ् ॥ एम्बुदुं महेश्वरं दर-हसित-वदनारविं-

२४ दनागि वीरभद्रनं नीं मनुष्य-लोकदोळु निन्नंशदोळोर्व्वणं पुट्टिसि पर-समयगळं नियामिसेम्बुदुं वीरभद्रनुं **पुरुषो**-

२५ **त्तम**-भट्टर्गो स्वप्नदोळ्तापस-रूपदिं बन्दु पुत्रं पर-समय-नियामकं निमगे पुट्टुगुमेन्दु मत्तमिन्तेत्तेन्द ॥ श्लोक ॥ जैनमार्ग्गेषु ये या-

२६ ता बहवो दक्षिणापथे ते। दूषिता भवन्तु सर्व्वे **रामेण** तव सूनुना ॥ व॥ एन्दु व (प) रम-प्रसादं-माडि पोपुदुं **पुरुषोत्तम-भट्टरु**

२७ क्रि (कृ) तार्थरागि सन्तं-बट्टु मगनं पडेदु जातकर्मादि-क्रियेगळं माडि देवतोद्देशदिं **रामने**न्दु पेसरनिट्टरातनुं तन्न दिव्य-जन्मानुरूपमा-

२८ गे शिव-योग-युक्तनागि निस्पृह त्रि (वृ) त्तियिं चरियिसुत्तुम् ॥ कन्द ॥ एकाग्र-भक्ति-योगदिनेकाकियेनल्के सन्दु शिवनं पिरिदप्पेकान्तदोळाराधि-

२९ सि**येकान्तद-रामने**म्ब पेसरं पडदम् ॥ वृ ॥ सततं सन्दु शिवागमोक्त-विविध क्षेत्रङ्गळोळु शाम्भवायतनानेक-नदी-नद-प्रकरदोळु गौरि (रीं) वरांघ्रिद्व[1]

३० याश्रित-वाक्कायमनोनुगं चरियिसुत्तुं वन्दु कण्डं सुरार्च्चितनं दक्षिण-सोमनाथ-ननघौघ-त्रासियं प्रीतियिम् ॥ व ॥ अन्तु बन्दनवर-

३१ त-विनमदमर-वर-मौळि-मणि-किरण - मञ्जरी - रञ्जिताङ्घ्रियुग्मनप्प **हुलिगेरेय** सोमनाथननाराधि-सुत्तमिप्पुदुमा परमेश्वरं प्रत्यक्षवागि ॥

३२ अत्र श्लोकद्वयम् ॥ **अब्बलूरु**-वर-ग्रामं गत्वा राम ममाज्ञया [।] तत्र वासं कुरु स्वस्थं यज मां भक्ति-योगतः ॥ **जैनैः** सह विवादं च **शङ्कां** हित्वा कु-

३३ रुष्व च । स्वशिरोपि पणं क्रि (कृ) त्वा पुत्र त्वं विजयी भव ॥ एन्दु **सोम**-

---

१ अङ्घ्रिद्वय ।

नाथ-देवर्बेससिदडेकान्तद-रामय्यनब्बळूर ब्रह्मेश्वर-स्थानदोळु निस्पृहवृत्तियिन्द-मिरे ॥ क । (॥)

३४ यु (उ) लिदड्डि-ब्रन्दु **जैन**पलरन्ता **सङ्क-गौण्ड**-सहितं पिरिदुं चलदिं कैवारिसिदर्तोलगदे बिन दैवनेन्दु शिव-संधियोळु ॥ व ॥ आदं केळ्दे-कान्तद-रामय्य-

३५ नति-क्रुद्धनागि शिव-सन्निधियोळन्य-देवता-स्तवनं माडलागदेण्दडदं माणदे नुडियुत्तिरलिन्तेन्दम् ॥ वृ ॥ जगमं माडुवनावनावनावनदना-

३६ पत्का [ल] दोळ्कात्रनिं मिगे कोपं तनगागे संहरिसलावं दक्षणा शम्भु सर्व्व-गनिर्द्दन्ते गत-प्रभाव-वैभाव संसारदोळु बिद्दु दंदुगदोळु बद्दुं तपक्के साद्दुं

३७ सुखमं पोर्द्दिप्पनुं देवने ॥ क ॥ हरनन्तिरीवने निम्मरुहं मुं-कोट्टिटावुदावुदु मुन्नं हरनोळ् पडदरनेकर्व्वरमं बाण-दिनिशाळ-भक्त-गणङ्गळु ॥ क ॥ एने जै-

३८ नरेन्न नीं मुन्निन हितरं हेळलेके निम्नय सि (शि) रमं बनमरियलरिदु कोट्टातनोळि पडे नाने भक्तनातने देवम् ॥ क ॥ एन**लेकान्तद-रामं** मनसिज-रिपुगित्त तलेय

३९ नाम् पडेदडे नीवेनगीव पणमदेनेने मुनिदेन्दर्जिनन किन्तु शिवनं निलिपेवु ॥ क ॥ एने कुडुवुदोलेयं नीवेनगेन्दित्तोले गोण्डु शिरमं तां मोक्कनबरिदु कुडुव पददो-

४० ळु शिवनं सान्निध्यमाडि **रामं** नुडिगुं ॥ वृ ॥ उडुगदे शंभु नीने शरणेम्न-ददं मनमन्यबा (भा) वदोळोडदडमी कि (क्रु) पाणमुखदिं तले पोगदे निल्कदल्लदि-

४१ द्दडे शिव निम्न मुन्नडिगुरुळुगेनुतं कलि **रामना**द्दुं केय्गिडदरिदिकलारयि-सिदं शिरमं शिवनङ्घ्रि-युग्मदोळु ॥ वृ ॥ अरे-गाय्-गोण्डने कित्तु नोडिदने कूर्प्पङ्ग-

४२ ळकि मेपि (मेयू) गाय्दने सेरगं पादने बाळ्गे भक्तरेनुतं बल्लाळ **रामं**

स्व-कन्धरमं चक्केने हुल्लं कट्टनरिवन्तक्केशदिन्दागळन्तरिदीशाङ्घ्रियोळि
[क्कि शंकर-] गणकानन्द-

४३ वं माडिदम् ॥ क ॥ अरिद तलेयेळु-देवसं बरेगं मेरदिं बळिक्कवित्तं हरना-
दरदिं तले कलेयिल्लदे तिरवादुदु लोकवळि (रि) ये रामं पडेदं
॥ क ॥ बेर-

४४ गागि जैनरेल्लं मरिगि जिन-प्रळे (ळ) यवेम्बुदं माडदिरिम्नेडेरगि काळवि-
डिये माणदे बरसिडिळन्तेरागि जिनन तलेयं मुरिदम् ॥ वृ ॥ बडिगोण्डोब्बने
सोक्कि बाळे-

४५ वनमं काडाने पोक्कन्तिरलु कडगलु कापीन बीररं तुरुगमं सामन्तरं तूळ्दु
मार्प्पडेगळु जैनर मारि बन्दुदेनुतुं बेङ्कोट्टु पोगलु जिनं कडेवंनं बडि-
दल्लि कैको-

४६ ळिसिदं श्री-वीर-सोमेशनं ॥ वृ ॥ अदनेल्लं नेरे पोगि बिज्जण-महीपाळङ्गे
जैनकर्कळक्किवदिं पेल्दु विरोधवागे पिरिदुं दूरुत्तिरलु कोप-दुर्म्मदना
बिज्जण भूभुजं मुनिसिनिम्

४७ रामय्यनं कण्डु नीनिदनन्यायमनेके माडिदेयेनल्कोट्टोलेयं तोरिदम् ॥ क ॥
अवरित्त योलेयिदे नीनवधरिसुवुदिक्कु निम्न भण्डारदोळिम्-

४८ नवरोड्डुविरलियिन्नोड्डुवुदार्प्पडे निम्न मुन्दे जिनरं पलरम् ॥ [व] ॥ अन्त-
प्पडी तलेयनरिदवर कैयोळोड्डुवेनवरदं सुट्टिम्बळिक्कवां पडुवेनेनगाने-
सेज्जेय-बस-

४९ दि मुख्यवागियेन्नुरुव (एन्तु-नुरुं-) बसदिय जिनरं पलरनोड्डुवुदेने बिज्जण
रायं नामी कौतुकमं नोडुवेवेन्दु बसदिगळ पण्डितरुमं जैनरुमं करदु
नीमप्पडे

५० बसदिगळं पणं-माडि ओलेयं कुडिवेन्दडवरावी-मुन्नोडद बसदियं दूरल्
बन्देवल्लदिनोड्डि जिन-प्रलयं-माडलु बन्दवरल्लदेने बिज्जण-रायं नक्कु
नीविम्नुसि-

५१ रदे पोगि सुखदिनिरिवेन्दवरं कळिपि **रामय्यंगळिगे**ळरुवरिये जयपत्रमं कोट्टम् ।। वृ ।। अरि-राय-क्षितिभृं-नगारियरिरायाम्भोधि-कुम्भोद्भ-

५२ वं अरि-रायेन्धन-तीव्र-वह्नि अरि-रायानङ्ग-माबेक्षणं अरि-रायोग्र-भुजङ्ग-भूरि गरुडं श्री-**बिज्जणं** वैरि-राज-रमाकर्षण-दोलितासि-सुहृदं कीर्त्यङ्गनावल्लभं ।।

५३ **चोळन**निक्कि **लालन**नचक्करिसि स्थिति-हीन-माडि **नेपाळननन्ध्रनं** तुळिदु **गुर्ज्जरनं** सेरेयिट्टु **चेदि**-भूपाळन मैमेयं मुरिदु **वङ्गन** बीसिसि कादि कोन्दु **बं**-

५४ **गाळ-कलिंग-मागध-पटस्वर-माळव**-भूमिपाळरं पालिसिदं धरा-वळयमं कलि **बिज्जणराय**-भूभुजम् ॥ क ।। कोडदोळगे पुट्टि कडलं कुडिदं घटयोनि पुट्टि **कलचूर्य्यं**-

५५ रोळोगडिसदे च (चा) लुक्यरन्वय-गडलं कुडिदुक्कु सजनं **बिज्जणनोळु** ।। व ।। स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द-महामण्डलेश्वरं । **कालञ्जर**-पुरवराधीश्वरं [।] सुवर्ण्ण-वृष-

५६ भ-ध्वजम् । डमरुग-तूर्य्य-निर्ग्घोषणम् । **कलचूर्य्य-कुल**-कमल-मार्त्तण्डम् । कदन-प्रचण्डम् । मोने-मुट्टे-गण्डम् । सुभटरादित्यम् । कलिगळङ्कुशम् । गज-सा-

५७ मन्त-शरणागत-वज्र-पञ्जरम् । प्रताप-लङ्केश्वरम् । पर-नारी-सहोद,म् । स (श) निवार-सिद्धि । गिरि-दुर्ग्ग-मल्लम् । चलदङ्क-रामम् । निस्स (श्श) ङ्क-मल्ल-निस्यखिल-नामादि-स-

५८ मस्त-प्रशस्ति-सहितम् । श्रीमतु **बिज्जणदेवं रामय्यङ्गळु** माडिद परम-साहसकम् निरतिशयवप्प मा (म) हेश्वर-भक्तिगं मेच्चि वीर-सोमनाथ-देवर देगुल-

५९ द माट-कूठ-प्राकार[1]-खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारक्कं देवरंगभोग-नैवेद्यक्कं **बन-वसे**-पन्निर्च्छासिरद कम्पणं **सत्तलिगेय्** एप्पत्तर मन्नेय **चट्टरसनुमा** (मन्) कम्पणदग्रायित-प्र-

---

[1] यहाँ भी सबकी भाँति 'प्रासाद' पाठ होगा।

६० भु-गौण्डुगळुमं मुण्डिट्टु श्रीमदु-**विज्जनदेवं** **सत्तळिगेयेप्पत्तरोळगे मळु**-
गुन्दवि तेङ्कण **गोगावे**येम्ब ग्राममं प्रसिद्ध-सीमा-सहितं त्रिभोगम्बुमं

६१. श्रीम**देकान्तद-रामय्यङ्गळ** कालं कच्चि धारापूर्व्वकं माडि कोट्टु प्रति-
पालिसिदम् ॥ ओम् [॥] श्री-नुत-कीर्ति-विक्रमदोळोन्दिद **सोम-कुलै**कभूषणं
तानेनिपी ।

६२. **चलुक्य-नृपर**न्वयदोळु वसुधाधिनाथराख्यान-पराक्रमकेळिये धात्रिपरा-
ह्रुतेयागे **तैलपं** ताने चलुक्य-धात्रि-कुलशैलनेनल्लु मुददिन्दे ताळ्दिदं ॥

६३. अन्ता **तैलपदेवङ्गे** **सत्याश्रयदेव**नेम्ब मगं पुट्टिदं तत्तन
विक्रमदेवं तदनुजं **दशवर्म्मदेव**नातन मगं **जयसिंगराय**-नातन
मग**नाहव**-

६४. **मल्ल**नातन मगं **त्रिभुवनमल्ल-पेर्म्माडिराय**नातन मगं **भूलोकमल्ल**-
सोमेश्वरदेवनातन मगं प्रतापचक्रवर्ति **जगदेकमल्ल**नातन तम्मं **त्रैलो**-

६५. **क्यमल्ल-नूर्म्मडि-तैलप**नातन मगं **त्रिभुवनमल्ल-सोमेश्वरदेव**नातन
पराक्रम-प्रभावमेन्तेन्दडे ॥ वृ ॥ कोडुळ्ळुग्र-मदेभवोन्देरडेनल्केम्बत्तुमोङ्गा-
गिरल्कोडि-

६६. ट्टानदे तल्तु कादि गेल्दं (लदं) कोडिळ्ळदोन्दानेयिं नाडं बीडनिभङ्गळं
तुरगमं **सोमेश्वरं** बिल्लमं नोडल्का **कळचू(चु)र्य्य**-वंशमनदं निमूंळवं
माडिदं ॥ वृ ॥ द (ध)—

६७. रे निस्सापत्न्यवागलु सिरि निजवस (श) दिं सन्दुदारक्के तानागरवागलु
कीर्त्ति दिग्पाळक-निकर-मुख-आदेशवागलु जया-सौन्दरि निच्चन्तोळ बाळं
सेरे-विडिदिरे साम्राज्यमं ताळ्दिदं दु-

६८. र्द्धर-शौर्य्यं **वीर-सोमेश्वर**नहित-वधू-नेत्र-नीरेजसोमं ॥ अन्वतमवेनिप
कळचुर्य्य-आन्धं मसुळल्के तम्न जेतदे धरेगनुबन्धं तम्नोळ
सले सम्मं-

६९. धिसे **चालुक्य-राय-सोमं** नेगल्दम् ॥ व ॥ अन्ता **त्रिभुवनमल्ल-सोमेश्वरदेवं** सकल-चमूनाथ-शिरोमणियुं चालुक्य-राज्य-प्रतिष्ठापक-नप्प कु-

७०. मार-**बम्मय्यनुं** तानुं **सेलेयहळ्ळिय-कोप्पदोळ्** सुखसंकथा-विनोद-दिनिर्द्दोन्दु देवसं धर्म्म-गोष्टि (ष्ठि) योलिर्द्दु पुरातन-नूतनरप्प शिवभक्तर गु-

७१. ण-स्तवनं-माडुत्तमिर्द्दु **कान्तद-रामय्यङ्गळब्बलूर**-लिद्दल्लि **जैन**रेल्लं नेरदु बन्दु महाविवादम्माडि नीं तलेयनरिदु-कोण्डु शिवन कैयोळ्पड देयप्पडे जिन-

७२. ननोडेदु शिवनं प्रतिष्ठे-माडुबेन्दोडुमनोड्डियोलेयं कोट्टडेवरु कोट्टोलेयं कोण्डु तन्न तलेयनरिदु-कोण्डु शिवङ्गे पूजे माडि बळिका तळेयं येळ-

७३. देवसकै मुन्निनन्ते तलेयं[1] पो (?)ले-वीळवन्तु पडेदु **बिज्जण-देवन** कैय्यलु जय-पत्रवं पूजे-सहितं कोण्डुदुमं जिनननोडेदु बसदियनळिदु बिदु-

७४. टु नेलनं खाडिसि[2] वीर-सोमनाथ-देवरं प्रतिष्ठेमाडि शिवागमोक्तवागे पर्व्वत-प्रमाणद देगुलमं त्रिकूटवागे माडिसिदरेम्बुदं केळ्दु **त्रिभुवन-मल्ल-सो-**

७५. **मेश्वरदेवं** विस्मयं-बि (ब) ट्टु नोडुवर्त्थियिं बिन्नवत्तलेयं बरयिसि बरिसियवरनिडिर्-गोण्डु तन्नं[3] मनेगोड-गोण्डु पोगि पिरिदुं सत्कारदिं पूजि-

७६. सि श्रीमद्-वीर-सोमनाथ-देवर देगुलद माट-कूटप्राकार-खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारक्कं देवर अङ्गभोग रङ्गभोग-नैवेद्यक्कं चैत्र-

---

१ इस शब्दकी अनावश्यक पुनरावृत्ति मालूम पड़ती है।

२ शायद 'सिडिसि।'

३ 'तन्न' या 'तन्नाय' पढ़ो।

७७. पवित्र-वसन्तोत्सवादि-पर्व्वंगळिगवन्नदान-विद्यादानकं **बनवसे**-पन्निच्छ्र्‌सिरद कम्पणम् **नागरखण्ड**-वेप्पत्तरोळगण अब्बलूरना देवर्गां वूराग-

७८. लु-बेळकुवेन्दु परमभक्तियिन्दा कम्पणद मन्नेय **मल्लिदेवनं** मुन्दिट्टा वूर मेलाळिके-मन्नेय-सुङ्क दण्डदोष-निधिनिक्षेप-सहितवागि **एकान्त-**

७९. **द-रामय्यङ्गळ** कालं कर्च्चि पूर्व्व-प्रसिद्ध-सीमा-सहितं त्रिभोग-सहितं धारा-पूर्व्वकम्माडि परमेश्वर-दत्तियागे (गि) ताब्र (ताम्र)-शासनमं कोट्टानेयनेळि (रि) सि मे-

८०. रयिसि परम-भक्तियिं प्रतिपाळिसिदम् [।।] ॐ [।।] श्रीकण्ठ-पदाम्बुजमन-नाकुल-चित्तदोळे पूजिपं शिव-समय-प्राकारनेळ (नि) सि सले नेगळ्-**देकान्तद-राम**-नीश-

८१. भक्ति-प्रेमम् ।। ॐ [।।] श्रियं दीर्घायुवं कीर्त्तियननुदिनवुं **माळ्के** गीर्व्वाण-वृन्द-ज्यायं श्री-वीर-सोमं विध्रि (धृ) त-हिमकरं **कामदेवङ्गु**दार-श्री-युक्तं—

८२. गद्रिजा-सम्मित-सित-तरळालोल- विस्तार- लीला-नेय् (त्र) आलोकोद्ध-(१) त-श्री-ललित-रति-काळा-लास्य-शैलूष-वेषं ।। स्वस्ति समधिगतपञ्च-महाशब्द-महामं-

८३. डलेश्वरं **वनवासि**-पुरवराधीश्वरं **जयन्ती**-मधुकेश्वर-देव-लब्ध-वर-प्रसादं विद्वज्जनाह्लादकं **मयूरवर्म्मकुल**भूषणं **कदम्ब**-कण्ठीरवं कदन-प्रचण्डं साह-

८४. सोत्तुङ्गं कलिगळङ्कुशं सत्य-राधेयं शरणागत-वज्र-पञ्जरं याचक-कामधेनुवित्य-खिळ-नामावळि-सहितनप्प श्रीमन्महामण्डलेश्वरं **कामदेवरस-**

८५. र्प्पानुज्ञल्लयनूरं दुष्ट-निग्रह-शिष्ट-प्रतिपालनदिनाळुत्तमिर्द्द-**अब्बलूर** वीर-सोमना**थ**-देवरं बन्दु कण्डु **रामय्यङ्गळु** शिवागवा (म)-विधा-

८६. नदिं माडिसिद पर्व्वतोपमानमप्य देगुलमं कण्डवरु माडिस साहसमं स-विस्त केळ्दु मेचि परम-प्रीतियिन्दोड-गोण्डु पोगि

८७. **पानुङ्गल** नेलेवीडिनोळ् प्रधानरुं तानुं **मसुकेय**-मण्डलिक-सहितं सुख-सङ्कथा-विनोददिं कुळ्ळिर्दुं परम-भक्तियिं वीर-सोमनाथ—

८८. देवर्ग्गे **पानुङ्गल्**-अय्नूररोळगण कम्पणं **होसनोड्** प्पट्टरोळगे **मुण्ड-गोड** समीपद **ओगेसरदिं** बडगण **मल्लवळ्ळि**येम्ब ग्राममं प्रसिद्ध-सी-

८९. मा-सहितवागि त्रिभोगाभ्यन्तरं नमस्यमाडिया देवर देगुलद खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारक्कं देव-रङ्गभोग-रङ्गभोग-नैवेद्य [क्रम] चैत्र-

९०. पवित्र-वसन्तोत्सवादि-पर्व्वंगळ्गमन्नदानक्कवेन्दु **रामय्यङ्गळ** कालं कर्च्चि धारा-पूर्व्वकं-माडि-परम-भक्तियिं कोट्टु धर्म्ममं प्रतिपालिसिदम् । (॥) स्वस्त्यस्तु ओम् ॥

९१. इन्ती धर्म्मङ्गळं प्रतिपाळिसिदवरु श्री-वारणासि प्रयागे कुरुक्षेत्र अर्घ्यतीर्थं श्रीपर्व्वतादि-पुण्य-क्षेत्रदल्लि सायिर कविलेगळ कोट्टुं

९२. कोळगुवं होन्नोळ्कट्टिसि चतुर्व्वेद-पारगरप्प सु-ब्राह्मणर्ग्गे सूर्य्यग्रहण-सोमग्रहण-व्यतीपात-संक्रमणादि-पुण्य-कालदोळ्विधि-युक्तवागे कोट्ट

९३. प (फ) लवं पडेवरु ई धर्म्मवनळिदवरा गङ्गे वारणासि कुरुक्षेत्र-प्रयागादि-पुण्य-क्षेत्रङ्गळोळा कविलेगळुवं ब्राह्मणरुवं कोन्द पापमं पडेवरीयर्त्थं सं-

९४. देह विल्लेम्बुदं मुन्नं मनु-वाक्यङ्गळ् (ळं) पेळ्गुं ॥
श्लोक ॥ बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः ।
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥
गण्यन्ते पांसवो

९५. भूमेर्गण्यन्ते वृष्टिबिन्दवः ।
न गण्यते विधात्रापि धर्म्म-संरक्षणे फलम् ॥
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम् ।
षष्टि-वर्ष-सहस्राणि विष्ठायां जा-

९६. यते कृमिः ॥
कर्मणा मनसा वाचा यः समर्थोप्युपेक्षते ।
सम्यस्तथैव चाण्डालः सर्व्व-धर्म-बहिष्कृतः ॥
कुलानि तारयेत् कर्त्ता सप्त सप्त च सप्त च ॥
अधोवपा—
९७ तयेद्धर्त्ता सप्त सप्त च सप्त च ॥
श्लोक ॥ अपि गङ्गादितीर्थेषु हन्तुगामथवा द्विजम् (।)
निष्कृति (:) स्यान्न देवस्व-ब्रह्मस्व-हरणे नृणाम् ॥
सामान्योयं धर्म्म-सेतु—
९८. नृपाणाम्
काले-काले पालनीयो भवद्भिः (।)
सर्व्वानेतान् भाविनः पार्थिवेन्द्रान्
भूयो भूयो याचते रामचन्द्रः ॥
स्वस्त्यस्तु मंगलं च । श्रीश्च ॥ ओम्

९९. ओम् [॥] हरनोळ्तवनिधियन्ताम् दरवुरविल्लेनिसि पडेदु देगुलवं पुरहरन कैळासदन्तिरे वीरचिसिदं शम्भु-भक्ति-धामं **रामम्** ॥ वृ ॥ देगुलकेन्दु भक्त-
१००. जनवादरदिन्दिदिरेद्दं कोट्टड (दं) हागवनादडं कळदुकोळ्ळदे बेडदे नाडे द्दे (दै) न्यदिं पोगि नृपाळरं शिवननुग्रहवत्तयवागे माडिदं देगुल [व] म् हराद्रिगेणे-
१०१. **थागिरे रामनि**देम् कि (कृ) तार्थनो ॥ क ॥ **केशवराज**चमूपं शासनवं पेळ्दनन्तदं तिर्द्दि निरायासने अरदनीशन दासं शिव-चरणकमल-शरणं सरणम् ॥ ॐ [॥]
१०२. स्वस्ति श्रीमतु-हर-धरणी-प्रसूत-**मुक्कण्ण-कादम्ब**- [वंश] दं **बनवासि**-पुरवराधीश्वरदं श्री-मदु (धु) कनाथदेवर दिव्य-श्री-पाद-

१०३. पद्माराधकरं मल्लिदेवरायरं नागरखण्डेय··· ··· ··· ··· ······
रिगे-नाडुमं··· ···

१०४. ··· ··· ··· ··· ···कोट्टरु ॥

[इस प्रकाशित अभिलेखकी कहानीका संक्षेप इस प्रकार है:—

कुन्तल देशके आलन्दे (या आलन्द) नामक नगरका निवासी श्रीवत्स गोत्रका पुरुषोत्तमभट्ट नामका एक शैव ब्राह्मण था। उसके राम नामका एक पुत्र उत्पन्न हुआ। कालान्तरमें, शिवकी अधिक भक्ति करनेके कारण, इसका नाम 'एकान्तद-रामय्य' पड़ गया। उसने बहुत-से शैव तीर्थ स्थानोंकी यात्रा की। और अन्तमें वह हुळिगेरे (लक्ष्मेश्वर) आया जहाँकि 'दक्षिणका सोमनाथ' इस नामसे प्रसिद्ध एक शैव मन्दिर था, इसके बाद अब्लूर जहाँ कि, जैनधर्मके एक मज़बूत गढ़ होनेके सिवाय, ब्रह्मेश्वरके मन्दिरमें एक महत्त्वपूर्ण और प्रभावशाली शैव केन्द्र भी था। अब्लूरमें वह जैनोंके साथ विवादमें फँस गया। जैनोंने वहाँ शङ्कगौण्ड नामके ग्रामणीके अधिनायकत्वमें उसकी भक्तिका अन्त कर दिया। कुछ शर्तं रक्खी गईं और यह एक ताड़-पत्र पर लिख दी गईं। शर्त यह थी कि हारनेपर जैन लोग अपने जिन देवकी जगह शिवकी प्रतिमा स्थापित कर देंगे। एकान्तद-रामय्य शर्तमें विजयी हुआ। इस पर जैनोंने उपर्युक्त शर्तनामेकी शर्तोंका पालन करनेसे इन्कार कर दिया। तब जैनोंके रक्षक, घुड़सवार, सरदार, तथा उनके सैनिकोंके विरोधमें होते हुए भी, उस अकेलेने जिनको उठाकर (फेंककर) वेदीको ध्वस्त कर दिया, और, जैसाकि आगेके लेखसे प्रकट होता है, उसकी जगहपर पर्वत सरीखा एक 'वीर-सोमनाथ' नामसे शिवालय खड़ा कर दिया। इसपर जैन लोग बिज्जलके पास गये और उससे एकान्तद-रामय्यकी शिकायत की। राजाने एकान्तद-रामय्यको बुलवाया और उससे प्रश्न किया कि उसने जैनोंका यह भयंकर नुकसान क्यों किया। इसपर एकान्तद-रामय्यने वही ताड़-पत्र वाला शर्तनामा पेश कर दिया, और बिज्जलसे उसे अपने खजानेमें जमा कर देनेको कहा तथा यह बात भी कही कि अगर जैन लोग अपने

८०० मन्दिरोंको जिनमें आनेसेज्जेयबसदि भी शामिल रहेगी, शर्तपर लगादें तो वह फिरसे वही चमत्कार[1] (feat) दिखलायेगा जिसे कि उसने अभी ही दिखलाया था। इस दृश्यको देखनेकी इच्छासे बिज्जलने जैन मन्दिरोंके जितने विद्वान् थे उन सबको बुलाया और उसी शर्तनामेकी शर्तको दुहरानेके लिए अपने तमाम मन्दिरोंको शर्तपर रख देनेके लिये कहा। जैनोंने यह कहते हुए कि वे अपनी शिकायतकी क्षतिको मिटानेके लिये उसके पास आये हैं न कि उस क्षतिको और बढ़ानेके लिये, दूसरे बारकी इस परीक्षाको माननेसे इन्कार कर दिया। इसपर बिज्जलने उनका उपहास किया और यह शिक्षा देते हुए कि इसके बाद तुम लोगोंको अपने पड़ोसियोंके साथ शान्तिसे रहना चाहिये, उन्हें बरखास्त कर दिया, और एकान्तद-रामय्यको खुली सभामें जयपत्र दिया। तथा, जिस अद्वितीय साहससे एकान्तद-रामय्यने अपनी शिवभक्ति प्रकट की थी उससे प्रसन्न होकर, उसने उसके पैर धोये और वीर-सोमनाथके मन्दिरको गोगाव नामका गाँव, जो बनवासी १२००० में सत्तलिगे-सत्तरके मळुगुण्डके दक्षिणमें है, दानमें दिया।

इसके बाद लेख कहता है कि जिस समय पश्चिमी चालुक्य राजा सोमेश्वर चतुर्थ और उनके सेनापति ब्रह्म शेलेयहळ्ळियकोप्पमें थे, एक आमसभा की गई जिसमें पुराने और नये शैव-सन्तोंके गुणोंका वाचन किया गया था। जब एकान्तद-रामय्यका किस्सा उससे कहा गया तो सोमेश्वर चतुर्थने एक पत्र लिखकर एकान्तद-रामय्यको अपने पास अपने राजमहलमें आनेके लिये कहा। वहाँ उसने उसके पैर धोये और उसी मन्दिरको स्वयं अब्लूर ग्राम ही भेंट किया। यह अब्लूर-ग्राम नागरखण्ड-सत्तरमें है जो बनवासी बारह हजारमें है। और अन्तमें, महामण्डलेश्वर कामदेवने उस मन्दिरको जाकर देखा, सब कहानी सुनी,

---

१. यह चमत्कार और कुछ नहीं सिर्फ कटे हुए सिरको जोड़ देना है। एकान्तद-रामय्यने अपना सिर काट दिया था और फिर शिवको कृपासे उसे पुनः जोड़ लिया था।

एकान्तद-रामय्यको हानगल बुलाया, और वहाँ उसके पैर धोये और मल्लवल्ली नामका गाँव मन्दिरको दानमें दिया। यह मल्लवल्ली गाँव पानुङ्गल-पाँच सौ में होसनाड्-सत्तरमें मुण्डगोडके पास बोगेसरके दक्षिणमें है।]

[EI, V, No. 25, E.]

४३६

अब्लूर—कन्नड।

[बिना काल निर्देशका]

१. श्री-ब्रह्मेश्वर-देवरल्लि **एकान्तद-रामय्य** बसदिय जिननोडुवागि तलेयनरिदु इडेद टावु ।। संक-गावुण्ड बसदिय नोडेयलीयदे (दे) आळुं कुदुरेय्··· ···

२. नोड्रिरलु **एकान्तद-रामय्य** कादि गेल्दु जिननोडेदु लि [ङ्गमं प्रतिष्ठे-माडिदम् ।।]

अनुवाद :—ब्रह्मेश्वर भगवान्‌के पवित्र मन्दिरमें, जब कि एक मन्दिरके 'जिन' शर्त (दाव) पर रख दिये गये थे, एकान्तद-रामय्यने अपना सिर काट डाला और इसको फिरसे प्राप्त कर लिया। जब सङ्कगावुण्डने उसे (एकान्तद-रामय्यको) मन्दिर या वेदीको ध्वस्त नहीं करने दिया और अपने आदमियों तथा घुड़सवारोंको (उस वेदीकी रक्षाके लिये)··· ··· ··· ··· एकान्तद-रामय्यने लड़ाई लड़ी और उसमें विजय प्राप्त की तथा 'जिन'को भग्न करके 'लिङ्ग' की प्रतिष्ठा की।

[EI, V, No. 25, F.]

४३७

कम्बेनहल्लि;—संस्कृत तथा कन्नड।

[बिना काल निर्देशका]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

४१८

बन्दलिके;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[बिना काल निर्देशका, पर संभवतः लगभग १२०० ई०]

[शान्तीश्वर बस्तिके रङ्गमण्डपके दक्षिण-पश्चिम खम्भे पर]

(पश्चिम-मुख) स्वस्ति श्रीमतु **अभयचन्द्र-सिद्धान्ति-देव**रुगळ् शिष्यरु ···क्कन अदर **मुरारि-देव**-दान-प्रतिपालक-वंशोद्भवरु **चारुकीर्ति-पण्डित-देवरु हिरिय-महळिगे**य **पञ्च-बस्ति**य जीर्णोद्धारव माडिदरु। आ-स्थानक्के अरसिन्दलु नाडिन्दलु बिडिसिकोण्ड वृत्ति आ-**ताळगुप्पे**य बस्तिगे पूर्व्वं तोडगि सन्दु बहुदु। **बलेयगारु। बाळेयहळ्ळि। तगुडवत्तिगे** यी-मूरु-ऊरु सर्व्वमान्य अरसियकेरेय केळगे ताळगुप्पेय गऊडुगळु बिट्टदु ४ हाद। मुरवत्तूर गौडुगळु वीर गौण्डन केरेय केळगे बिट्टदु ४ हाद। विदळ २ सासव हेरुबडे १० येत्तु इदिनेण्टु कम्पण-दलु सलुऊदु। बत्तियकेरी सर्व्वमान्य। बलेयगारलि गुरुगळु बिट्ट भूमि अग्निय मूलस्थानके ४ हाद। इच्चड २० मान्य येत्तु इच्चड सर्व्वमान्य समेय-समुच्चयद भोगवट्टिगेय पञ्च-बस्ति यी-धर्म्मक्के ··· ··· रुदरुलन हदिनेण्टु समेबगु कर्त्तरु॥ श्री श्री

[स्वस्ति। मुरारि-देवके दानके प्रतिपालक वंशमें उत्पन्न, अभयचन्द्र-सिद्धान्ती देवके शिष्य चारुकीर्ति-पण्डित-देवने हिरिय-महलिगेकी पञ्च-बस्तिको सुधारा। राजा और नाडूसे जो दान पहले ताळगुप्पेकी बस्तिके लिये मिला था, अर्थात् बलेयगारु, बळेयहळ्ळि और तगडुवत्तिगे,—ये तीन गाँव, सब करोंसे मुक्त, उस मन्दिरके लिये भी लागू हो सकते हैं। (उक्त) कुछ भूमि भी दानमें दी थी।

इस गुणी कार्यके लिये १८ जातियाँ प्रबन्धक हैं।]

[EC, VII, Shikarpur, tl, No. 227.]

४३९

नित्तूर;—कन्नड ।

[बिना काल-निर्देशका, पर लगभग १२०० ई० का]

[नित्तूर (गुब्बि परगना) में, आदीश्वर बस्तिकी उत्तरीय दीवालमें एक पाषाण पर]

श्री-मूल-संघ-देशिय-गण-पुस्तक-गच्छ-कोण्डकुन्दान्वयद श्री (य्) **अभयचन्द्र-सिद्धान्तिक-चक्रवर्त्तिग**ळ प्रिय-शिष्यरागमाम्बुनिधिगळुं सकळ-गुणाकळितरुमप्प **बाळचन्द्र-पण्डित-देव**र प्रिय-गुड्डिगरु ॥

विनय-निधि **माळियक्कं** । अनुपम-गुणमन्ते **बामि-सेट्टि**गळं ताम् ।
जिन-भक्तियिन्दे पडेदळु । जिन-भक्तर्प्पडेव पडवुयोगळलळुम्बम् ॥
शीळान्विते **चौडले**गं । **माळवेय तनूज मल्लि-सेट्टि**गे सुतेया- ।
व्याळ-गज-गमने **पद्मले** । बाळक-माळिक्य **मल्ल**-माळात्मजरुम् ॥
म्रळिदु यवं माळवेयुमन् । उळिइदे सोसे **चौडियक्कनं** माडिपलु स्त्री- ।
कुळ-साहस-षड्-गुणदोन्द्- । अळव समाधियोळे मेरेदु मुडिप्पिदरुते ॥

माळव्वेयुं **चौडियक्क**नुमेम्बिब्बर निषिधि ॥

[श्री-मूलसंघ, देशिय-गण, पुस्तक-गच्छ और कोण्डकुन्दान्वयके अभयचन्द्र-सिद्धान्तिक-चक्रवर्त्तीके शिष्य बालचन्द्र-पण्डित-देवकी प्रिय गृहस्थ-शिष्या,—**माळियक्के** थी ।

चौडले और माळवेके पुत्र मल्लि-सेट्टिकी पद्मले और मल्लम दो पुत्रियाँ उत्पन्न हुई थीं । जब यम (मृत्यु) ने क्रुद्ध होकर, मालवेको न बचाकर, उसकी पुत्रवधू चौडियक्कको भी मारा वह समाधिको प्राप्त हुई, और स्त्रियोचित भक्तिके ६ गुणोंको प्रदर्शित कर दिवंगत हुई । यह स्मारक (निषिधि) माळव्वे और चौडियक्क दोनोंका है ।]

[E C, XII, Gubbi tl., No 5]

४४०

निट्टूरु;–कन्नड़ ।

[बिना काल-निर्देशका, पर संभवतः १२०० ई० का ?]

[निट्टूरु (गुब्बि परगना) में, आदीश्वर बस्तिकी उत्तरीय दीवालमें एक पाषाणके बायी ओर की तरफ]

माळब्बेय मग **बामि-सेट्टिय** मदवळिगे **बूचब्बेय** निषिधि ॥

[माळब्बेयके पुत्र बामि-सेट्टिकी पत्नी बूचब्बेकी निषिधि (स्मारक) यह है ।]

[E C, XII, Gubbi tl., No 6]

४४१

निट्टूरु;–कन्नड़ ।

[बिना काल निर्देशका पर संभवतः १२०० ई० ? का]

[नित्तूरु (गुब्बि परगना) में, आदीश्वर बस्तिको उत्तरीय दीवालमें एक पाषाणके दाहिनी ओर]

माळब्बेय मल्लिळ-सेट्टिय तन्दे गुणद बेडङ्ग मल्लि-सेट्टियुमातन प्रिय-पुत्र **माळेय्यनुमेन्द्** इर्व्वर निषिधि ॥

[मालब्बेके पिता मल्लिसेट्टि, और मल्लि-सेट्टिके प्रिय पुत्र माळय्य दोनोंकी स्मारक यह है ।]

[E.C., XII, Gubbi, tl., No. 7]

४४२

कडकोल;—कन्नड़ ।

वर्ष खर [=१२वीं या १३वीं ई० (फ्लीट) ।]

[१] श्रीमत्-खर-संवत्सरदन्दु
[२] **कत्तेय-ऐचि-सेट्टि** [ट्] य म-
[४] ग **चंद्यन** निषिधिगेय क-
[५] ल् [ल्] उ ॥

अनुवाद—श्रीवाले खर संवत्सरमें,—(व्यापारी) कत्तेय-ऐचिसेट्टि के पुत्र चन्दयके निषिधिगे' का पाषाण ।

[IA, XII, P. 101, No 3] t. and tr.

४४३

सिग्गाम्वे (जिला धारवाड़);—कन्नड़ ।

वर्ष व्यय [=१२वीं या १३वीं शताब्दि ई० (फ्लीट) ।]

[धारवाड़ जिलेमें बङ्कापुर तालुकाका तालुका स्टेशन **सिग्गाम्वे** है । यहाँके कलमेश्वर मन्दिरके सामनेके स्मारक पाषाण पर यह अभिलेख है ।]

[१] स्वस्ति श्रीमत्-**व्यय-संवत्सरद मार्ग्ग-**
[२] **सि (शि) र ब ११ सु (शु)** । देसी (शी) य-गणद **बाळचं-**
[३] **द्रत्रैविद्यदेवर** गु [ड्] ड **सब (?) रसिगि-से** [ट्] **टि**
[४] **यरु** स्वर्ग्ग-प्राप्तनादनु ॥

अनुवाद स्वस्ति ! देशीयगणके बाळचन्द्रत्रैविद्यदेवके गुड्ड (शिष्य या अनुयायी) (व्यापारी) (?) सबरसिङ्गिसेट्टिने, शोभनीक व्यय संवत्सरके मार्गशिर (महीने) के कृष्ण पक्षकी एकादशी, शुक्रवारको स्वर्ग प्राप्त किया ।

[IA, XII, P. 102, No, 5.] t. and tr.

४४४

एहोले—कन्नड़

[बिना कालनिर्देशका; १२वीं या १३वीं ई० शताब्दि (फ्लीट).]

[१] श्री-मूलसङ्घ-बलो (ला) त्कारगणद कुमुदन्दुगळ गुड्ड ऐचि-सेट्टि

[२] यर मग येरम्बरगे-नाड सेट्टिगुत्त रामि-सेट्टियर निषीधि ॥

अनुवाद रामिसेट्टि जोकि एरम्बरगे[1] जिलेका सेट्टिगुत्त था—श्रीमूलसङ्घके बलो (ला) त्कारगणके कुमुदन्दु का गुड्ड (शिष्य) था; और ऐचिसेट्टि (व्यापारी) का पुत्र था, उसकी यह निषीधि (निषधा) है।

[इं ए०, १२, पृ० ९९]

४४५

गिरनार—संस्कृत भग्न।

[बिना काल—निर्देशका]

लेख श्वेताम्बर सम्प्रदायका है

[Revised list and Rem. Bombay (ASI, XVI), p. 351-352, No 8, t. and tr.]

४४६

रायबाग;—संस्कृत।

[शक ११२४ = १२०१ ई०]

[मूल लेखका अब पता नहीं है।]

इस शिलालेखका प्रारम्भ उस राजा कृष्णके वर्णनसे शुरू होता है, जिससे रट्टवंश यशस्वी हुआ था। तदनन्तर राजा सेनका वर्णन है, जो रट्ट राजाओंकी सूची में 'सेन'-नामधारी राजाओं में द्वितीय संख्याका सेन है। इसके बाद

---

१. यह नाम 'एरम्बिरगे' भी लिखा जा सकता है।

वंशावली (Genealogy) कार्त्तवीर्य चतुर्थ और मल्लिकार्जुन तककी दी हुई है। कार्त्तवीर्य चतुर्थका समकालीन एक राजा यादववंशी रेब्ब[1] नामका था। इसके बाद लेख में कुछ दोनोंका उल्लेख आता है जो 'दुर्म्मति संवत्सर' शक ११२४ में किये गये थे। दान करने का दिन वैशाख सुदी पूर्णिमा, शुक्रवार 'व्यतीपात' का समय था। ये दान राजा कार्त्तवीर्यदेवने अपनी माता चन्द्रिका-महादेवीके द्वारा बनाये गये रट्टोंके जैन मन्दिरके लिये तत्कालीन गुरु शुभचन्द्र भट्टारक देवके लिये थे। सीमाओंके निर्धारण में बहुतसे गाँवों और शहरोंके नाम आये हैं।

[JB. X, P. 183, No 9, a.]

४४७

रोहो—संस्कृत तथा गुजराती

[सं० १२५९=१२०२ ई०]

लेख भग्न है और श्वेताम्बर सम्प्रदायका मालूम पड़ता है।

[EI, II, No. 5, No 12 (P. 28-29) t, and tr.]

४४८

बन्दलिके:—संस्कृत तथा कन्नड़।

—[शक ११२५=१२०३ ई०]—

[बन्दलिकेमें, शान्तीश्वर बस्तिके सामनेके पाषाण पर]

कवि-निवह-स्तुतं नेगळ्द रेच-चमूपतियिं बळिक्कमा-
भुवनदोळिन्तनन्त-जिन-धर्म्मधृद्धरियर्द्ध-रेचनम्।
सुविदितमागे बान्धव-पुराधिप शान्ति-जिनेश-तीर्थमम्।
कवडेय बोप्पनुद्धरिसिदं यदु-वल्लभ-राज्य-भूषणम्॥

1—ककहो की के शिलालेखमें भी 'रेब्ब' नाम आया है। पर वहाँका रेब्ब उस रेब्बसे भिन्न है (जे. एफ्. फ्लीट)।

मडगिडलेन्देम् घनमं ।
पडेवने नाळ्-देरद दानमं माड्लुकेन्-।
दोडमेयनर्ज्जिपनारिम् ।
कडु-जाणं भव्यरोळगे कवडेय वोप्पम् ॥
श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥
वसुधा-कान्तेय कुन्तलोपममेनिप्पी-कुन्तल-क्षोणियम् ।
पेसर्व्वेत्ता-नव-नन्द-गुप्त-कुल-मौर्य्यं-क्ष्मापरळ्दर् क्रमव्-।
जसदाण्मर् कलि-रट्टराळ्दरवरिं चालुक्यरळ्दर् व्वळिक् ।
एसेदिर्द्दा-कळचूर्य्य वंशवरोळाळ्दं बिज्जल-क्षोणिपम् ॥
अर्क्कि बळिके धरेयोळ् ।
बक्किदरं तरिंदु निज-भुजासिथिनदर्टं ।
बळ्ळाळ-नृपं धरेयं ।
सल्लीलेयिनाळ्दनखिळ-देशं पोगळल् ॥

आतन वंशावतारमेन्तेने ॥

वृत्तम् ॥ कृष्णन नाभि-पङ्कजजनप्यजनिं वोगेदत्रियत्रिजम् ।
विष्णुवदाभागिं ससि पुट्टिदनातन वंश-सम्भवम् ।
जिष्णु-पराक्रमं पुरु पुरूरवना-नहुषं ययाति रा-।
जिष्णु यदुत्तमं क्रमदे तत्तदपत्यरेनल्के पुट्टिदर् ॥
सळनादं यदु-वंशदोळ् मुडदवं वासन्तिका-देविया ।
चळनाराधनेयं प्रोणर्च्चि शशकोघद्-ग्रामदोळ् पायदोडा-।
गळे तां पेट्-व्वुलि पोय्सळेन्दु सेळेयं जैन-व्रतीन्द्रं जपत्-।
तिळकं कोट्टोडे पोय्ये होय्सळ-नेसर् त्तानादुडी- धात्रियोळ् ॥
सेळे सिन्दद कावागिरे ।
मुळिसिन्दं पाय्द पुलिये पुलियागिरे ताम् ।

तोळतोळ तळदपुदु यदु-नृप-।
कळदोळ् पुलियेसेव-सिन्दवन्दिन्दित्तल् ॥
सळनिन्दं बळिकं नृपाळवरनेकर् य्यादवेशर् म्महो-।
तळमं पाळिसिदर् ब्बळिकं **विनयादित्यङ्गे** पुत्रं जगत्-।
तिळकं **नुश्रेरेयङ्ग**नादनेरेयङ्गङ्गोप्पे **बल्लाळनुम्** ।
विळसद्-विष्णुवुमर्कं-तेज**नुदयादित्याङ्क**नुं पुट्टिदर् ॥
अवरोळ् रञ्जिप **विष्णु-वर्द्धन**-नृपङ्गादं सुतं मेदिनी-।
धवनप्पा-नरसिंह-भूपनदटं **नरसिंहङ्ग**सुत्-।
सवदिन्द्**दैचळ-देवि**गं **यदु-कुल**-प्रोत्तंसनादं सुतम् ।
भुवनानन्दन-मूर्त्ति कीर्त्ति-निळयं **बल्लाळ**-भूपालकम् ॥
निरिदिदिरान्तवरं निज- ।
चरणक्केरगिदरनोसेदु रक्षिसि धरेयम् ।
परिपाळिसुतं सुखदिन्द् ।
इरे **विजयसमुद्र**दाल्लिया- **बल्लाळम्** ॥
धरणी-कान्तेय मुखदन्त् ।
इरे **बनवसे-नाडु** रञ्जिसुवुददरोळ् **ना-** ।
गर-खण्डं तिळकदवोल् ।
परिशोभिपुदाव-कालमुं सिरियोदविम् ॥
ऊरूर्न्नन्दनदि लता-भवनदिन्दूरूर्त्तटाकङ्गळिन्द् ।
ऊरूर्त्तळ्तेले-बळ्ळियिं कोळगळिन्दूरूर् प्पळोर्व्वीजदिन्द् ।
ऊरूर् कब्बिन तोण्टदिं कळवेयिन्दूरूर् प्रजा-व्रातदिन्द् ।
ऊरूर् देव-गृहङ्गळिं विबुधरिन्दूरूर् करं रञ्जिकुम् ॥
परलोळ् परुसं धेनुत्- ।
करदोळ् सुर-धेनु नन्दनदोळमर-कुजम् ॥
करमेसेवन्तिरे सले ना- ।
गर-खण्डदोळेसेवुदेसेव **बान्धव-नागरम्** ॥

वृ ॥ अदु बळसिदं नन्दनदिनम्बुज-षण्डदिनोळ-गबुंगिनिम् ।
पुडिदेले-वळ्ळियिं बेळद-शाळियिनोप्पुव कोण्टेयिं समन्त् ।
ओदविद-लच्मियिं विभवदिं विळसज्जनदिं सु-देव-गे- ।
हद कडु-चेल्विनिन्दमळका-पुरमं नगुतिप्पुदोर्म्मेयुम् ॥
अदनाळ्वं प्रजे मेच्चे गण्डनदटं कादम्ब-बंशोद्भवम् ।
मुडदिं सोम-नृपात्मजातनेनिसिर्द्दा-बोप्प-देवङ्गे पुट्ट् ।
इद सत्पुत्रननून-शौर्य्य-निळयं कन्दर्प्प-तनू-मूर्त्तिय- ।
भ्युदयालङ्कृतनात्त-कीर्त्ति-रमणं श्री-ब्रह्म-भूपाळकम् ॥

आ- बन्दणिकेय शान्तिनाथ-देवर मण्टपमं माडिसि कवडेय बोप्पि-सेट्टियरु सर्व्व-नमस्यमं माडिदम् ॥

नागर-खण्डदोळ् हरन वक्त्रदवोल् नेगळ्दग्रहारमय्द् ।
आगळुमोप्पुगुं निखिळ-वेद-पुराण-सुनीति-शास्त्र-तर्क- ।
आगम-काव्य-नाटक-कथा-स्मृति-यज्ञ-विधानमं मनो- ।
रागदिनोदुवोदिसुवशेष-महाजनदोन्दु-प्पोषदिं ॥
प्रत्येक-वृहस्पतिगळ् ।
नित्यानुष्ठान-चारु-चारित्र-परर् ।
स्सत्य-युतर् त्तेजदोळा- ।
दित्य-सट्टशरल्लियिप्पं माजनवेल्लं ॥
केरेयूर शम्भु-देवनेय् ।
अरितर्क्क सकळ-विद्वेगळ्गं सले कण्- ।
दरवोयेनिसिप्पंनवनम् ।
नेरे पोलल्तु नेरेयनबनुमा-भारतियुम् ॥
उरदे बणञ्जु-धर्म्मदोळगं नयदिं नडेयुत्तमिप्परम् ।
तरिदु सु-धर्म्मदिं नडेवरं प्रतिपाळिप सेट्टिकब्बेयक्- ।
कारेन-सुतङ्गे पुण्य-निधि शंकर-सेट्टिगे सेट्टि-गुत्तरार् ।
प्पेररेणे सत्यदिं विभवदिं नुत-शौर्य्यदिनुद्ध-धैर्य्यदिम् ॥

तनगय्यं **शङ्करं** तज्जननि नेगळ्द **जक्कव्वे**याप्तं जिनं सन्-
मुनि-वन्द्यं **भानुकीर्त्ति-व्रति-पति** गुरु **बल्लाळ**नाळ्दं विनेपर् ।
तनगिष्टर् कान्ते **लच्छाम्बिके** सति सति-नुते **जक्कव्वे-मक्कव्वे**गळ् नन्-
दनेयर् **बल्लाळ-देवं** सुलनेनेयेसेदं वीर- **सामन्त-मुद्दम्** ॥
कविगळ मुद्दनाश्रितर मुद्दननाथर मुद्दनिष्टनप्प-
अवर्गळ मुद्दनर्थिगळ मुद्दनेडर्-न्नेले-गोण्ड शिष्ट-बान्-
धवरेसेवोन्दु-मद्दनेनसु परिका द मुद्दनङ्गना-
निवहद मुद्दनेय्दे सलियं प्रभु-मुद्दनिळा-तळाग्रदोळ् ॥
स्वच्छतर-कीर्त्तियिन्दम् ।
कच्छवियूरडेय **बिट्टियरसं** जगमम् ।
प्रच्छादिशिदनवङ्गति-
तुच्छरेनिप्पूरडेयरदेम् पेळ्णेये ॥
सागर-वळयित-धरणी-
भागदोळत्युन्नतिकेयिं बर्प्पि सत्-
त्यागदिनरि वन्देणेये ।
बेगूर प्रभुगे **माल-गौड**ङ्गन्यर् ॥
सोगयिप्प **कण्णसोगे**य ।
नेगळ्दि**दईरकार्टि-गौड**नरितवनार्प्पम् ।
मृग-रिपु-विक्रमनं नेरे ।
पोगळल्का-चलचमवनुमेनार्त्तं (पं) पने ॥
मळवल्लि येरह-गौडङ्।
एळेयोळ् समनप्परुण्टे सत्यदिनरिविम् ।
वीळसत्-त्यागदिनत्युब्-
ज्वळ-कीर्त्तियिनधिक-शौर्य्यदिं सद्-गुणदिम्
चलद नेले चागदागरं ।
अलघु-गुळङ्गळ निधानमरितद तवरुज्-

ज्वळ-कीर्त्तिय करुवेनिपम् ।
सले इलरिं **दृब्बळूर सोम-गवुण्डम्** ।
मुददे **मुनिचन्द्र-विद्वान्**-।
त-देवरळ्कणि-शिष्यरनुपम-विद्वर्
म्मद-रहितर् स्सलेनेगळ्दर् ।
ब्विदित-गुणर् **ललितकीर्त्ति-सिद्धान्तेश**र् ॥
अवरानन्दन-नन्दनन् ।
अवनी-संस्तुत्यमेनिप काणूर्ग्गण-कै-।
रव-चन्द्रनेनिसि नेगळ्दम् ।
विवेकि **शुभचन्द्र**-विनुत-**पण्डित-देवम्** ।
मळिनते इल्लद कुन्दम् ।
तळेयद सले राहु-पीडे यैदद दोषा-।
वळियोळ् परियिसदस्ता-।
चळकेळसद चन्द्रनेनिसुवं **शुभचन्द्रम्** ॥
चन्द्रगिकेय तीर्थवना-।
नन्दाचार्य्यरवोलुद्धरिसिदं जगदा-।
नन्दकर-ललितकीर्त्तिय ।
नन्दन **शुभचन्द्र**-विनुत-पण्डित-देवम् ।
कुसुम-व्रातदोळम्बुजं जळधियोळ् दुग्धाब्धि ताराळियोळ् ।
ससि चिन्तामणि कल्गळोळ् तरुगळोळ् कल्पोर्व्विपं रत्नदोळ् ।
मिसुपा-कौस्तुभमोप्पुवन्ते जिन-योगि-व्रातदोळ् रञ्जिरम् ।
जसदाण्मं शुभचन्द्र-देव-मुनिपं कानूर्ग्गणोद्धारकम् ॥
इन्तिदु चित्रमेम्बिनेगमेय्दे मोसर् प्पोरसले पाल्गळोर्-।
अन्तिरे पुत्तिनोळ् पुगे बजातिशयं नव-पुष्प-मालिका-।
सन्ततियिन्दमादतिशयं-बेरसोप्पुव **शान्तिनाथ-वीर्**-।
स्थान्तर-पारिपत्यदेसेवं **शुभचन्द्र**-मुनीन्द्रनोर्म्मेयुम् ॥

श्रीमद्-**बल्लाळ**भूपाळकन विनुत-सन्-मंत्रि विप्रान्वयाब्ध-।
स्तोमोद्यद्-भानु नारायण-पद-कमल-द्वन्द्व-भृङ्गं यशश्-श्री-।
धामं साहित्य-विद्याधरनखिळ-गुणालंकृतं मान्तन-प्रो-।
द्दामं श्री-**मल्ल**नी-बन्दणिकेयनोलविं पालिसुत्तिर्प्पनोळिपं ॥
कडिवं मारान्तरं बेगदे करगिसुवं शत्रु-सैन्यङ्गळं सङ-।
गडकेल्लं धैर्य्य-वर्ण्ण-क्रम…णसेये तां तोरुवं कीर्त्तियल्दम् ।
कडु-चेल्वप्पन्तिरल्पोत्तुनखिळ-दिशा-दन्ति-दन्तङ्गळोळ् नोळ्-।
पडे सन्तं **कम्मट**कन्तोडेयनेनिसुवं **मल्ल-दण्डाधिनाथम्** ॥
आ-कम्मटद श्री-मल्लन प्रधाननेनिप ॥
वृ ॥ अलरे विरोधि-सन्तमसमळि्करेयाटविकोद्ध-कैरवम् ।
सले पोडल्देय्दे सज्जन-बिसं प्रविकासमनेय्दे रागमग्-।
गळिसिरे मित्र-चक्र-चयदोळ् बेळेयं नुत-विश्व-धात्रियम् ।
सललित-मूर्त्ति कीर्त्ति-निधि **सूर्य्य-चमूपति** सूर्य्यनन्ददिम् ॥
अन्तु पोगळते-वडेदधिकारि **मल्लि-सेट्टियरुं** द्विज-वंश-कमळ-सूर्य्य-नप्प **सूर्य्य-देवनुं** यम-नियम-स्वाध्याय-ध्यान-धारण-मौनानुष्ठान-जप-समाधि-शील-सम्पन्नरप्प नागरखण्डदग्रहारदशेष-महाजनङ्गळुं सकळ-साहित्य-विद्या - विलासिनी - विलास-मूर्त्तियेनिप **केरेयूर** यूरडेयं **शम्भुदेवनुं** स्वच्छाच्छ-गाङ्गाम्भ-सदृश-कीर्त्ति-वल्लभ-नेनिप **कच्छावियूरडेय बिट्टियरसनुं** बणञ्जु-धर्म्म-वार्द्धि-वर्द्धन-चन्द्र-लेखेयेनिप **त्रिभुवनमल्ल-सेट्टिकब्बेयुं** तदपत्यं शौर्य्य-निधानननप्प **शङ्कर-सेट्टि**युं सकळ-याचक-जन-मनोभिलषित - फळ-प्रदामर-कुज - सदृशनप्प **शंकर-सामन्त**नन्दन-नन्दनं भव्य - जन - बान्धवनप्प नाळ् - प्रभु सामन्त - **मुद्दय्य**नुं रत्नत्रया-भरण-भूषितनप्प **बेगूर माळ गौडनुं** देव-द्विज-गुरु भक्तनप्प **कण्णसोगेय परकाटि-गौडनुं** निखिळ-गुणाळंकृतनप्प **मळवल्लि-परह-गौडनुं** विनेय-गुण-निधाननप्प **बल्लूर सोम-गौडनु**मिन्तिनिबरुं मुख्यवागि नागर-खण्डवेप्पत्तर समस्त प्रभु-गावुण्डुगळेकस्थरागिद्दु . **सक-वर्ष ११२५ सले रुधिरोद्गारि-संवत्सरदुत्तरायण - संक्रमण** - निमित्तवागि **बन्दणिकेय श्री - शान्ति**

नाथ-देव - रभिषेकाष्ट - विधार्च्चने - पूजा - विधानोचित-त्रयक्कं अल्लिय पात्र-पावुळक्कं खण्ड-स्फुटित-जीर्ण्णोद्धारक्कं चातुर्व्वर्ण्णदाहार-दानक्कमेन्दल्लिय तीर्त्थाचार्य्य **शुभचन्द्र-पण्डित-देवर** कालं कर्च्चि सर्व्वबाध-परिहारवागि तम्मनितरुं धारा-पूर्व्वकं माडि बिट्ट दत्ति येन्तेदडे दण्डियहल्लियु बावळियु गङ्गळळ्ळियु स्थळवृत्तियु ऊरूरलु नन्दादीविगेगे नाल्कु-पणमं मुद्देय-सावन्तं चिक्क-मागुण्डिय वडगणोणियिं पडुवलु ५०० मरद अडके-दोटमुं इन्तिनितुमं बिट्टरु धर्म्मदिं प्रतिपाळिसुवन्तप्पवरु गङ्गेय तडियलु सहस्र-कविलेयं नवरत्न-भूषणं माडि सहस्र-ब्राह्मणरिगे दानं माडिद फल-वीधर्म्मक्कळिवनवयमं मनडोळ चिन्तिसिदनावोनावननितु-कविलेयुमननितु-ब्राह्मणरुमं गाङ्गेय तडियोळळिड पाप ॥ (हमेशाके अन्तिम श्लोक)।

[विख्यात रेच-चमूपति; उसके बाद यदुवल्लभराज्यभूषण, बान्धव-पुराधिप **कडवे बोप्प**ने शान्ति-जिन तीर्थ (बन्दलिके) की उन्नति की ।[1]

जिनशासन की प्रशंसा ।

कुन्तल-देश नव नन्दों, गुप्त-कुल मौर्य्य राजाओं; इसके बाद पराक्रमी रट्टों; इसके बाद चालुक्यों; तदनु कलचूरि-वंशके राजा बिजल द्वारा शासन किया गया । तत्पश्चात् इस देशपर राजा बल्लालने शासन किया ।

उसके वंशका अवतार (परम्परा):—होय्सल राजाओंका उदय और बल्लाल तककी वंशावली ही वर्णित है जो पिछले कई शिलालेखोंमें आ चुकी है ।

पृथ्वी रूपी स्त्रीका बनवसे-नाड् चेहरा था, जिसमें नागर खण्ड तिलकके समान मालूम पड़ता था । इसके कुओं, बगीचों और तालाबों इत्यादिका वर्णन । नागरखण्डमें उत्तम बान्धव-नगर चमक रहा था । इसके आकर्षणोंका वर्णन । इसके शासक कदम्ब-वंशके थे; वे सोम-राजाके पुत्र बोध-देव थे । उनका

---

१. यह सब शासनके पूरे लिखे जानेके बाद जोड़ा गया मालूम पड़ता है ।

ब्रह्मभूपालक नामका लड़का था। कन्नडेय बोप-सेट्टिने उस बन्दिणिकेके शान्तिनाथ-देवके लिये एक मण्डप खड़ा किया और विधिपूर्वक यह उसे समर्पण कर दिया।

नागरखण्डमें, हरके मुखोंके समान, पाँच अग्रहार थे, जिनसे ब्राह्मणोंके वेद आदि विद्याओंके पढ़ने-पढ़ानेकी ध्वनि निकलती थी। वहाँके ब्राह्मणोंकी प्रशंसा। केरेयूर शम्भु-देवकी समस्त विद्याओंमें अद्वितीय निपुणता। सेट्टिकब्बेके पुत्र बनञ्जु-धर्म-निवासी संकर-सेट्टिकी; सामन्त-मुद्दकी, जिसके पिता शंकर, मां बक्कब्बे मित्र जिन, गुरु भानुकीर्त्ति-व्रतिपति थे, शासक बल्लाल, पत्नी लच्चाम्बिके, पुत्रियां बक्कब्वे और मल्लब्बे, पुत्र बल्लाल-देव था; कच्छवियूरके मालिक बिट्टि-यरसकी; बेगूरके प्रभु-माळ-गौडकी; कण्णसोगेके एरकाटि-गौडकी; मळवळ्ळिके एरह-गौडकी; तथा अब्लूरके सोम-गौडकी प्रशंसामें श्लोक।

मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवके प्रिय शिष्य ललित कीर्त्ति-सिद्धान्ती थे। उनके पुत्र, काणूर-गण समुद्रके चन्द्रमा, शुभचन्द्र-पण्डित-देव थे। उन्होंने शान्तिनाथ-तीर्थ (बन्दलिके) का प्रबन्ध अपने हाथमें लिया।

राजा बल्लालका प्रसिद्ध मन्त्री मल्ल या कम्मट मल्ल-दण्डाधिनाथ था। उसने बन्दलिकेकी बहुत प्रेमके साथ रक्षा की थी। उसके पराक्रमकी प्रशंसा। उसका मंत्री सूर्य्य-चमूपति था।

नागरखण्ड सत्तरके इन सब मुख्य-मुख्य व्यक्तियोंने, प्रजाने और किसानोंने (उक्त मितिको) तीर्थके पुरोहित शुभचन्द्र-पण्डित-देवके पाद-प्रक्षालनपूर्वक (उक्त) दान दिया।]

[EC VII Shikarpur tl No 225]

शक सं० 1125 ई० 1203

४४९

कलहोली;—कन्नड़

[शक ११२७=१२०४ ई०]

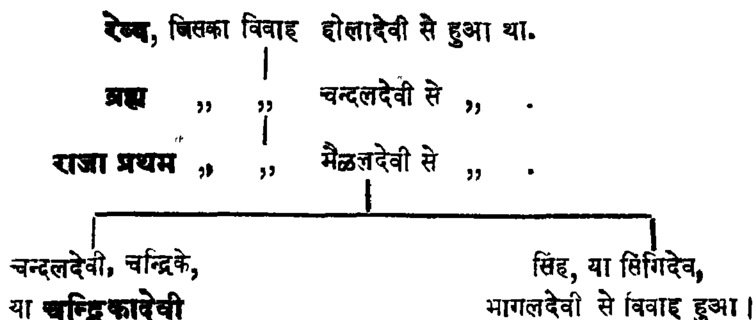
लेख-परिचय

यह लेख कलहोलीके एक पुराने मन्दिर—जो कि अब एक लिङ्ग-मन्दिरके रूपमें, जैसा कि इस भागके सभी जैन मन्दिरोंका हुआ है, परिवर्त्तित है—के पाषाण-तलसे लिया हुआ है। कलहोली बेलगाँव जिलेके **गोकाक** तालुकामें है। इसका पुराना नाम **कलपोडे** है। हम देखते हैं कि रट्टोंकी राजधानी इस समय **वेणुग्राम,** आधुनिक **बेलगाँव** थी। सबसे पहले राजा **सेन**का वर्णन आया है, जो शि० ले० नं० १३० में द्वितीय क्रमपर वर्णित है। इन दोनोंके इस ऐक्यका कथन आगेके किसी भी अन्य आधुनिक शिलालेखमें नहीं दिया गया है, लेकिन कालोंकी तुलना इस निष्कर्ष पर पहुँचाती है। दूसरे, शि० ले० नं० १३० की ३८वीं पंक्तिका 'बृहद्दण्ड' [१]विशेषण इस शिलालेखकी चतुर्थ पंक्तिमें सेनके लिये दिये गये प्रथम विशेषणसे मिलता-जुलता है। इसमें सेनके बादसे तीसरी पीढ़ी तकका उल्लेख है। और अन्तमें कुछ दान आते हैं, जो शक ११२७ (ई० १२०५,६) में, कार्त्तवीर्य चतुर्थकी आज्ञासे **सिन्दन-कलपोडे**में बने हुए जैनमन्दिरकी ओरसे किये गये थे। यह गांव उन गांवोंमें से एक या जो **कुरुम्बेट्ट 'कम्पण'** के नामसे विख्यात थे। यह कुरुम्बेट्ट कुण्डी-तीन हजार जिलेमें शामिल था। लेखसे पता चलता है कि कार्तवीर्य चतुर्थको अपने शासनमें अपने छोटे भाई 'युवराज' **मल्लिकार्जुन**से सहायता मिलती थी। प्रसंगवश लेखमें एक यादव सरदारोंके कुटुम्बका भी उल्लेख आता है जो उस समय **हगरटगे** जिले पर शासन कर रहे थे। आजकल यह किस जिले

---

१. जिसके पास बड़ी भारी या शक्तिशालिनी सेना हो।

या स्थानका नाम है, इसका पता नहीं चलता। यादव कुटुम्बकी वंशावली यों दी है:—



राजा प्रथमकी पुत्री **चन्द्रिकादेवी** रट्ट सरदार लक्ष्मण या लक्ष्मीदेव प्रथमकी पत्नी हुई, तथा कार्त्तवीर्य चतुर्थ और मल्लिकार्जुनकी माता हुई। उल्लेखित दान-प्रदत्त जैनमन्दिरको राज द्वितीयने बनवाया था। मन्दिरके गुरु मूल कुन्दकुन्दाम्नायकी इनसोगे शाखाके थे; उनमेंसे तीनके नाम यहां दिये हैं:—मलधारी, उनके शिष्य सैद्धान्तिकनेमिचन्द्र, उनके शिष्य शुभचन्द्र थे।

ओं नमः सिद्धेभ्यः [॥] श्रीमत्परमगम्भीर स्याद्वादामोघलाञ्छनं [।] जीयात्रै (त्रै) लोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं [॥] श्री जन्मभूमि वरसुरभूजं क्षीराम्बुराशि (शी) यन्ते गभीरं श्री जैन शासनं सले राजिसुतिर्क्कमळ राजपूजित-महिमं ॥ विळसित विपुळामृत गोकुलदिंदं सकलसस्य संपददिं निर्म्मळवर्ण्णं दिन्दे विधु मण्डळदंतिरे कूण्डिमण्डळं कण्णोळिकं ॥ अदनाळ्वं सेनं साहस भीमसेनन सकुडिया विळासेन ना शानरि प्रियवल्लभं प्रथुसभं तीभ्रां (त्रां) शुतेजप्रभं नाना-दानि कीर्तिगने **कार्त्तवीर्य**नखिलोर्व्वीचक्रमं चक्रयांतरे दोर्दण्डदोळान्तनच्युतगुणं श्रीरट्टनारायणं मेरु नभस्तळं जळधि मु (म) त्पतियं नति सन्महत्व (त्व) गम्भीरगुणक्के मत्तरिपुवेन्द मराद्रियनिक्के मेट्टिपा नीरदमार्ग्गमं पुदिदु वारिधियं

भिमेदाणंट कीर्तिया शासमणमों बंणिपुदु पंपिन लंपिने कार्त्तवीर्यन अर्जिततेजनिर्जित-यशं परितर्जितराष्ट्रकंटकं निर्जितदुर्जयारिनिवहं कमलाधिपनन्ते दानि नागार्ज्जुनननन्ते रावणविदारण कारणरामनन्ते मिकार्ज्जुनननन्ते रंजिपनिळेश, शिखामणि मल्लिका-र्जुनं ॥ श्रीचक्रवर्त्तितनुजे कळाचतुरे विशाळलोळलोचने येनि सिरिदेवलदेवि सतीत्वलोचने येने कार्त्तवीर्यवधू पेसवंडदेळ् ॥ स्वस्ति समधिगत पंच महाशब्द महामण्डलेश्वरं लत्तनूर्प्पुरवराधि ईश्वरं त्रिवळीतूर्यनिर्ग्घोषणं रट्टकुळभूषणं सिन्दूरलाञ्छनं सफळीकृतविद्वज्जनाभिवाञ्छनं वीरकथाकर्ण्णनजातरोमांचं साहित्य-विद्याविरिंचं सुवर्णगरुडध्वजं सहजमकरध्वजं संग्राम कौतूहळीकृतगदादण्डं कदनप्रचंडं सिन्धुराराातिबन्धुरकबन्धनर्तनसूत्रधारं वैरिमण्डलिकगण्डतळप्रहारं परवधू-नंदनं विभवसंक्रन्दनं साहसोत्तुंगं समाराधितमहासिंग निदु मोदलादनेकनामा-वळिविराजितं श्री कार्त्तवीर्यदेवं निजानुज युवराज वीर मल्लिकार्ज्जुनदेवं वेरसु वेणुग्राम स्कन्धावारदोळ् सुखदिं साम्राज्यलक्ष्मीयननुभविसुत्तमिरे ॥ श्रीकवि विबुध श्रीरत्नाकळितं जळधियंददि यदुकुल लक्ष्मीकान्तं श्रितकमळानीकं इगरटगे नाडु जगदोळगेसेगुं ॥ आ नाडनाळ्वं यदुवंशं श्रित राजहंस मेसेदिक्कुं व्योमदन्त-क्षियम्युदयं वेत्त करात्तमृतनुरुतेजं कीर्तिभाजं समुद्यदिळेर्य्यं सुमनस्प्रपूज्यनमळ-स्वान्तं जितध्वान्तन्तेप्पिदनादं कमलाधिप प्रभुतेयिं श्रीरेव्वनुर्व्वीश्वरं ॥ आ रेव्व-प्रभुविंगमग्रवधु हीलादेविगं स्वान्वयोद्धारं धीरनुदारनुद्गुणसारं शुंभदंभोधिगम्भीरं वाग्वनितास्तन स्थगितहारं सौख्यसंपादककाचारं ब्रह्मनवोलतक्यर्महिमं ब्रह्माङ्गं पुट्टिदं ॥ जळधिगभीरभृतभूमळय ब्रह्मगं मुन्चितबेलोपम चन्द्रलदेवीगमागेदं मण्डल-नाथं राजनन्ददिं राजरसं । पुदिदिरे रागदिं सकळमण्डलमप्रतिमप्रसाद संपदमखिळा-शेषनेळये पुरिसि जैनमतामृतार्ण्णवं पडेदभिवृद्धियं तळेये तन्न पेसर्गनुरूप मागेयम्यु-दयमनेयिन्दं विमळवृत्त विराजित राजभूभुजं ॥ क्षितिपतिराजराजन मनोरमे मैळलदेवि ता यशस्वति नुतियोग्य भाग्यवति दानदयावति सत्कळासरस्वति य-भिरूप रूपमळभावति जैनपदाम्बुजार्च्चनावति पुरुपुण्य पुत्रवति रंजिसुवळ् सुविशा-ळ शीळदिं ॥ कुलविस्तारक राज राज विभुगं श्रीरोहिणी मूर्ति मैळलमादेवी गभा-ह्मजर्प्पतिहित श्री चन्द्रिकादेवी निर्म्मळचन्द्रिकेयन्ते सिंहमहिपं सास्यम्बो-

लादम्र्महीतळपूज्यर् विबुधेज्यरुज्वळगुण श्रीकान्त रात्यन्तिकं ॥ अनुपमशौर्य्यशाळी यदुवंश शिरोमणि राजराजनन्दने विबुधाभिनंदने घटोदरसुस्थित सर्प्पदर्प्प भुजने पतिचिन्तरंचने जगंनुत जैनमतामृताभिवर्धनकरचारुचंद्रिके महासति चन्द्रिके धन्ये धात्रियोळ् ॥ श्रीपति लक्ष्मीदेवमहीवल्लभवल्लभे कार्त्तवीर्य्यं धात्रीपति **मल्लि-कार्ज्जुन** महीश्वर मातृ महासतील सीतोपमे जैनपूजनसुरेन्द्रवधूपमे रूपकेतु-कान्तोपमे रंजिपळ् नेगळ्द **चन्दळदेवि** समस्तधात्रियोळ् ।

स्फुरितानर्घ्यमणि-प्रणूतकटित प्रख्यातदानेन्द्र भूमि -।
रुहोर्व्वीतळधारितुंगशिखर श्रीमद्भुजादण्डमं-॥
दरदिं वैरि बळाब्धियं मथियिसुत्तुग्रजय श्री वधू -।
वरनादं यदुवंशभाळतिळकं सिंहावनीपाळकं ॥
सबळं गोण्डु समग्रसिंहमहिपं मेल्पातिसल्पा जिमं ।
सबळं वैरिबलं जवंगे कबळं बेताळबावक्के कोट्ट् ॥
पिरि ओणि बळारिगित्त बडिनं हाद्दिं हद्दंगे नेद्दुं ।
मृककेत्तिदबुत्तियेदोड हितर्म्मेंब्बोलि महाम्परे ॥

जनपति सिंगिदेवन मनःप्रिये **भागलदेवी** भाग्यमेदिनि गुणयूथनाथ मुनिदान विनोदिनि संश्रितार्त्तिभेदिनि विबुधप्रमोदिनि कळागममेदिनी नित्यसत्यवादिनि दुरितापनोदिनि पतिव्रते पूजितरूपे रंजिपळ् ॥ भोगपुरन्दर-प्रतिम सिंहामहीपतिगं जिनार्च्चनोद्योग सच्चेचरित्रवति **भागलदेवी**गनाद नात्मजं रागसमागमप्रद सुमूर्त्ति जयंत नतिप्रसिद्ध जैनागमवार्द्धिवर्धनकळा-निधि राजरसं समंजसं ॥ जिनपूजाविबुधाधिपं विपुळतेजं प्राप्तधर्मप्रभावनयं पुण्य-जनोत्तमं गुणगणांभोरासि वैरीप्रभंजनन्र्वीधनदं महीश्वरनेनिप्पी पेपिनिं लोक-पाळनिळं राजिरसं जगद्वळयमं पाळिप्पु देनोप्पुदे । क्षिति सले कूत्तु कीर्तिपुदु मूर्ति मनोभवराजनं समर्च्चितजिनराजनं यदुकुळामृत वारिधिराजनं समुन्नतिगिरिराजनं गुणविराजितनूतसिंहभूपति सुतराजनं विषमवाजि सुशिक्षणवत्सराजनं ॥ पिंगदवार्थे-शौर्यमसुहृंनरलोक जगद्ळंगे राजंगे जगत्प्रमोदजनकाभ्युदयं **यदुवंश** संभवोत्तुंग-गुणाच्युतंगे विजयप्रियवृत्तिनृपाळ सिंह जातंगे पराक्रमं पोसते बंणिसुवन्दु समस्त-

धात्रियोळ् ॥ द्यूतमृगय्पि मांसगणिकापरदारखळप्रसंग चौर्य्यांकुळमनमेबखगयुद्ध-निषिद्ध विनोदनोद्यतभूतळ नाथरप्परदु माण्दु जिनस्तवनार्च्चनाम होख्यातमुनीन्द्र-दानरतप्परे राजनृपाळ निंनबोळ् ॥ सति चन्द्रळदेवि पतिव्रते लक्ष्मीदेवि-मेम्बरीवरू मवनीपति राजनृपन राणियरतिशयगुणयुतयरेनिसि नेगळ्दर्ज्जगदोळ् ॥ स्वस्ति समस्तप्रशस्ति सहित श्रीमन्महामण्डळेश्वरं कुपणपुरवराधीश्वरं यदुकु-ळांवरद्युमणि बुधजनचिन्तामणि निजभुजासिनिर्द्दळितरिपुनृपकंठकदळं नरलोक-जगद्दळं अनवरत जिनसवनसुरभि मलिलपवित्रीकृतोत्तमाङ्गं धर्मकथाप्रसङ्गं जिनसमयसुधार्णवसुधाकरं सम्यक्त्वरत्नाकरनेनिसि नेगल्द क्षत्रियमस्तकामर-णराजनृपं विभुसिंहसूनरत्नं त्रयमूर्ति निर्म्मळिन धर्म्ममेनुत्तदनोल्दु पेळ्ववो-ल् धात्रिगे मिक्क कल्पोळेयोळेत्तिसिदं जिनशासतिगेहमं नेत्रविच्चित्रमं महिते (र्ति) रीट मनप्रतिकूटमं ॥ अन्तनन्तसुख ीकान्त (तं) शान्तिनाथ समुत्तुंग भृत्य निधानमं कनककळश मकरतोरण मानस्तंभविराजमाननं राजरसं सिंदनकल्पोळेयल्लि माडिसि तन्न गुरुगळुं जगद्गुरुगळुवेनिसिद शुभचन्द्रभट्टारक-देवर्गे कोट्टनवर गुरुकुळक्रममेंतेने ॥ जयनिळय कुण्डकुन्दान्वय विश्रुत मूलसंघदेशि पूर्णोदय पुस्तक गच्छदोळतिशयमेने हनसोगेयेम्ब बळि बगेगोळिकुं । गुरुकुळतिळक-प्पविन चरितर्गुणभरितरल्लि नेगल्दव्वीजितस्मर मलधारि मुनीन्द्रर्च्चरणाम्बुजनत-नरेन्द्ररपगततन्द्रर् ॥ पदनखसंकुळं विषमबाणविषाहिमहाविषापहारद मणि नाम-दक्करमे मोहपटुग्रहभेदिमंत्रमंगद भटभाजमंजवरुजाहरणौषधमेन्दोडेननेम्बुदो मळ-धारि मुनिपोत्तम प्रभावतपःप्रभावमं ॥ शान्तरसावतार मळधारिमुनीश्वरवरप्रशिष्य सैद्धान्तिक नेमिचन्द्रगुरुधर्म्मरय श्रुतवार्द्धि नेमिचन्द्रं तममं निवारिप कळागुणभद्र-नमानुषामृतस्वान्त समन्तभद्रनेने बंणिसरारकळंकमृत्तनं । आ सैद्धान्तिक नेमिचन्द्र-यतिवर्याचार्य्य शिष्यर्गुणावास श्रीशुभचन्द्रभासुर यशोभट्टारक ब्वीश्वाधात्रि संपू-जित शीलधारकरुद्यानंगसंहारकर् श्रीसद्दर्शन बोधमृत्त(धामृत पदवीविस्तार निस्तार-कर ॥ शुभचन्द्रं स्वगुणोल्लसत्कुवळयं श्रीचन्द्रिकाशुद्धवृत्तिभवप्रभावदिं दिगम्बरश्रीवृद्धियं मण्डळप्रभुसंपूजितपादनुज्ज्वळ गुणाढ्यं शान्तरूपं कळाविभवात्युंनतभृत्तनभ्युदययुक्तं माळ्पदेनोप्पदे ॥ मारमदापहारिपरमोग्रतपश्शुभचन्द्रदेव भट्टारकशिष्यरी ललित-

कीर्ति समुन्नतनामधेय भट्टारकरिन्दु सल्ललित कीर्तिगळन्वित शान्तमार्तिगळ् सार-चतुष्टयात्यन्तनयवेदिगळुत्तम सत्यवादिगळ् ॥ स्वस्ति समस्त गुण संपन्नरुं भव्यप्रसन्नरुं चन्द्रप्रभदेवविबन्दित पदारविन्दरुं निजात्मभावनाभिरपण्ड (द)रुं श्रीराजनृपाळ सुप्रतिष्ठित शान्तिनाथदेवर बसदियाचार्य्यरुं मण्डळाचार्य्यरुमप्प शुभचन्द्र भट्टारकदेवर्गों श्री-कार्त्तवीर्य्यं देवं आ शान्तिनाथदेवरंगभोगक्कं रंगभोगक्कमा बसदिय खण्डस्फुटित जीर्णोद्धारणक्कमल्लिप्पं मुनिजनंगळाहाराभयभैषज्यशास्त्रदानकं शकवर्ष ११२७ नेय रक्ताक्षिसंवत्सरद पौष्य शुद्ध बिदिगे शनिबारदन्दुत्तरायणसंक्रमणदल्लि कूण्डि-मूरुसासिरद बळिय कुलंबेट्टगंपणदोळगण सिंदनकल्पोळेयल्लिय कळगडियर सिन्द-गमऊण्डं मुख्यवागि हंनीर्व्वं र्भाऊण्डुगल्लेये हन्नेरड्डु तप्पडिय कुचुम्मेह गोलिंदेर-डु सहस्र कंब केय्यं धारापूर्वकं सर्व्वसमस्यवागि कोट्टन्त केय्य सीमे [।] ऊरिं बडणल् कंकणनूर हेद्दारियिं मूडलविलहळ्ळद मुरुविनल्लि नैरुत्य कोणल्नेट्ट कल्लल्लिं बडगमुखं बिळियबाविर्यि मूडलागि पडुवणसीमे नडियल्कें भोरडियल्लि वायव्यद कोणल्नेट्ट कल्लल्लिं मूडमुखं बडगण सीमे नडियलीशान्यद कोणल्नेट्ट कल्लल्लि तेंकमुखं पंचबसदिय मान्यदिं पडुवळागि मूडणसीमे मडियल् नविलहळ्ळदल्लि आग्नेयको-णल्नेट्ट कल्लल्लि पडुमुखं तेंकणसीमे नविलहळ्ळं [।] आ बसदियिं संमन्धद मनेय निवेशनविंमोळनुं गेणु [।] बाचेयविडिय राजहस्तदला वसदियिं बडगळ् राजवीथियिं मूडल् पडुवणे क्केय हस्तं नाल्वत्तु सिरिवागिल कल्लिं मूडळ् पंचबसदिय केरियल्लिगे बडगणेक्केय हस्तविप्पत्तारु आ केरियिं पडुवण भागं बिडिदु मूडणेक्केय हस्त नाल्वत्तु तेंकणेक्केय हस्त ऐवत्तेरडा मान्य दोळगणंगडि नल्कु गाणवोन्दा बसदिय वणबेय निवेशनवक्कु [।] ऊरिं पडुवळ् हूदोंडद कंबं मूवत्तु [॥] मत्तमा ऊर सन्तेयं माडल् वेडिन्चे ळगले मुख्यवागि नल्कुंपट्टणद सेट्टियरुं महानाडागि नेरेदिर्द्दल्लि आ शान्तिनाथदेवर नित्याभिषेकक्कमष्टविधार्च्चनेगं सर्व्वबाधापरिहारवागि बिट्ट एत्तु कत्ते कोणं मोदळादवरवत्तु ६० ॥ मत्तमेळुवरे हंनोन्दुवरेय समस्त मुंमुरिदण्डं मुख्यवागि नाडुगळ् विट्टायद कममेन्तेन्दोडे [।] सकळधान्यमाउद्दु बन्दडं हेरैंगोंमनं [।] भंडिगे बळ्ळवेरड्डु [।] हसरकडके औदु [।] हेवेगेले नूरु [।] होसळकैय्यत्तु हाडक्कें सोल्लिगे एण्णे उतेय होरे मारितक्के

ओन्दु कट्टोले[।] किरुकुळमेनु मारिदडं सट्टुगायं हिडिवत्ति [।] कप्पगे मडिके वन्दु॥

श्रीमन्मायत मूर्ति तीर्थमहिमाविस्तारि धात्रीस्फुरत् ।

तेजश्चक्रधरं जगंनुतयश तन्नन्ददिंदेन्दु रा -॥

राजिप्पी जिन शान्तिनाथ नवनीनाथप्रणुतोदयं ।

राजद्मापतियीगे बेळ्प वरवं चन्द्रार्कत्तारांबरं ॥

ललितपदार्थाळंकृतिगळिनोसर्व रसंगळिंदे बुधरोळ् पुळकावळि सस्यमोगेये कविकुलतिलकं शासनमनोल्दु पेळ्दं पार्श्वं ॥

बहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजभिस्सगरादिभिः [।] यस्य यस्य यदा भूमिह (मिस्त) स्य तस्य तदा फलम् ॥ गण्यन्ते पांसवो भूमेर्गण्यन्ते वृष्टिबिन्दवः [।] न गं (ग) ण्यते विधात्रापि धर्म्मसंरक्षणे फलं ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां [।] षष्टिर्व्वर्ष सहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः ॥ सामान्योयं धर्मसेतुर्नृपाणां काले काले पालनीयो भवद्भिः । सर्व्वा (र्व्वा) नेतान्भाविनः पार्थिवेन्द्रान्भूयो भूयो याचते रामचन्द्रः ॥ मद्वंशजाः परमहीपतिवंशजा वा पापादपेतमनसा भुवि भूमिपालाः । ये पालयन्ति मम धर्ममिमं समग्रं तेभ्यो मया विरचितांजलिरेष मूर्ध्नि । मंगळमहा श्री श्री [॥] अर्हते नमः ।

[JB, X, p. 173-175, a.; p. 220-228, t.; p. 229-239, tr. (ins. No. 5).]

४५०

पुरले;—कन्नड—भग्न ।

वर्ष रक्ताक्ष [१२०४ ई० (लू. राइस) ।]

[वीर सोमेश्वर मन्दिरमें, किसीके आसन-पाषाणपर]

रक्ताक्षि-संवत्सरद भाद्रपद-शुद्ध १३ आ स्वस्ति श्री **वीर-बल्लाळ-देवर** [······] **समुद्रद** नेलेवीडिनलु सुखदि राज्यं गेय्युत्तिरे श्रीमत्-महा प्रधान **हिरिय-हेडेय-असवर मारय्यङ्गळ** सन्निधानदलु······दण्णायक विधु·········हेम-गावुण्ड इडवळकाळय्य गङ्ग-गावुण्ड त्रप्प-गावुण्ड मायि-गावुण्ड माञ्चगावुण्ड लक्क-गावुण्डुगळु बयिचय्य होन्नय्य-मुख्यवाद समस्त-प्रभु-गावुण्डुगळ

तम्मगागि······**कुन्तलापुर**दल्लि सदाचारय्यरप्प **नेमिचन्द्र-भट्टारक-देव**रिगे नाळु-प्रभु·········**सावन्त-मारय्य**नु विचारिसि······काळ-चाउण्ड······ मथण पेम्म······दियरं कण्डु तव·········बरद शीलाशासनवं तोडदु बलात्कारदि तम्म भक्तियागे सलुत्त·········बेण्णवळ्ळिळ-यल्लि·········कोण्डु नाळ्-प्रभुगळु अधिकारि सावन्त-मारय्यनुं मनद्वारेयागि **नेमिचन्द्र-भट्टारकदेवर** कालं तोळदु धारा-पूर्व्वकयागि······शिला-शासनवं बरेदु बेनबसेय दोडिकेय···(महेशाके अन्तिम वाक्यावयव तथा श्लोक)

[(उक्त मितिको) जिस समय वीर-बल्लाल-देव दोरसमुद्रके निवासस्थानमें था;—प्रधान मंत्री हिरिय-हेडेय-अरुवरमारय्यकी उपस्थितिमें, तमाम सरदार और किसानोंने (बहुत-सोंके नाम दिये हैं), कुन्तलापुरके आचार्य नेमिचन्द्र-भट्टारक-देवके लिये···········;—सावन्त मारय्यने बांच-पड़ताल करके, जबर्दस्ती, उस लिखे हुए शिला-शासनको मिटवा दिया और अधिकारी सावन्त-मारय्यके साथ मिलकर, नाळ्-प्रभुओंने, नेमिचन्द्र-भट्टारक-देवके पाद-प्रक्षालन-पूर्वक······एक शिला-शासन लिखवा करके दिया ।]

[E C, VII, Shimoga tl., No 65.]

४५१

गोग्ग;—कन्नड

[बिना काल निर्देशका, पर लगभग १२०९ ई० का]

[गोग्गमें, वीरभद्र मन्दिरके दरवाजेके चौखटके दोनों ओर]

(बाईं ओर)

माडिसिर्द जिनालयमन्·······एल्लियुमिल्ल ऊरेनल् ।
नाडे विराजिसल् **बेळगवत्ति**य-नाडोळनून-भक्तियिम् ।
कूडे विभूतियष्ट-विधार्च्चनेयेम्बिऊ कुन्ददन्तु कोण्ड- ।
आडुतविप्पेनन्दुबेन**लीचण**नन्तिरे भव्यनावव (न) म ॥
ऊरोळ् तप्पदे बसदियन् ।
ओरन्तिरे माडि **बेळगवत्ति**य-नाडम् ।

बारिम्गि नेगळ्द **कोपणक्-** ।
ओरगे माडिदनुदार-निधियीचरसन् ॥

(दायीं ओर)

एरेयन देय्ववाऊदद्दु तनय देय्वमदाऊदातनोळ् ।
नेरद गुणोन्नतिकेयद्दु तनय मिक्क-गुणोन्नतिके कण्- ।
देरदडदाव धर्म्मवधिनाथनोळन्तदे तन्न धर्म्मवेन्द् ।
एसकदे मन्त्रियीचणन वल्लभ **सोवल-देवि** भाविपळ् ॥
नगेनगे मोगवम्बुजभम् ।
मिगे मृग-वीक्षणमनीक्षणं मिगे मृगधरनम् ।
तेगळे मोख-कान्ति चेल्वम् ।
त्रि-गुणिसिदुदु निन्न रूपु **सोवल-देवि** ॥

[ईचणने बेळगवत्ति-नाड्में ऐसा एक जिनालय बनवाया जैसा उस प्रदेशमें और कहीं नहीं था। और इस तरह बेलगवत्ति-नाड्को कोपणके समान बना दिया। मंत्री ईचणकी पत्नी सोवल-देवीकी प्रशंसा।]

[EC, VII, Shikarpur tl., No 317]

४५२

बक्कलगेरे–संस्कृत तथा कन्नड

[शक ११२७ = १२०५ ई०]

[बक्कलगेरे (चगाटे परगना) में, बाण-रङ्गनाथ मन्दिरके बाहरी आंगनके एक पाषाण पर]

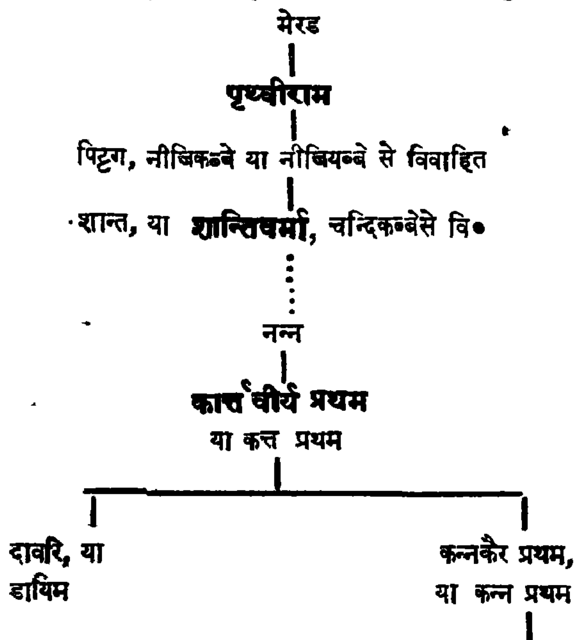
नमः सिद्धेभ्यः ॥ भद्रमस्तु जिन-शासनाय ।
श्रीमत्-परमगंभीर स्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

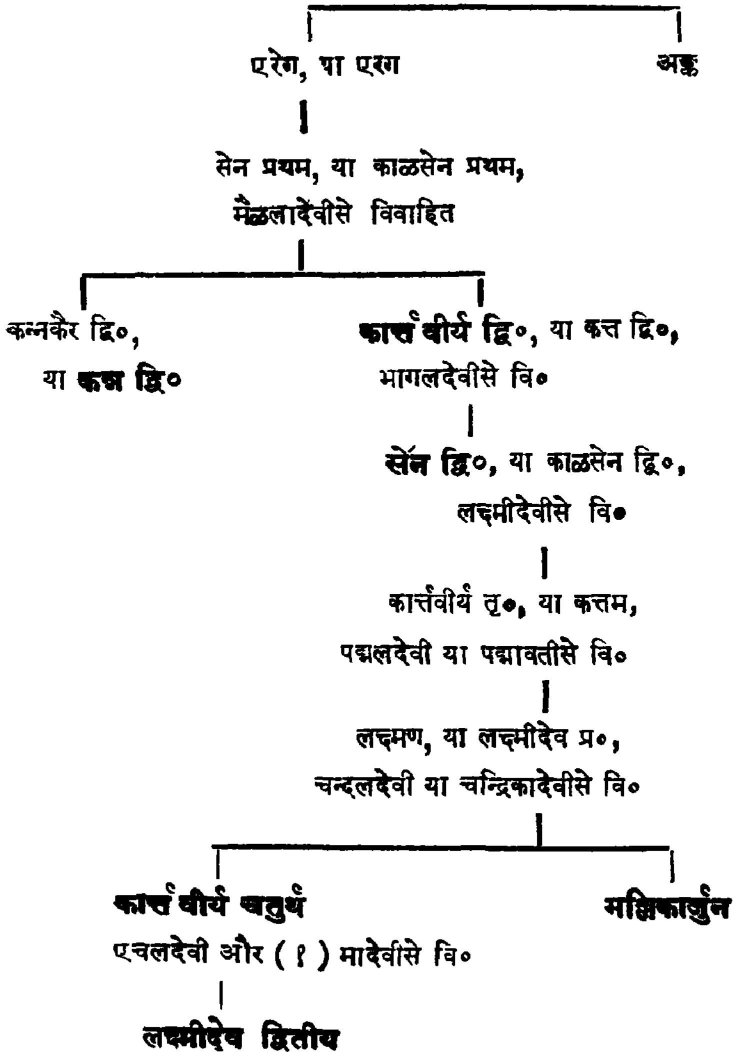
स्वस्ति श्री-पृथ्वी-वल्लभं महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारकं चालुक्याभरणं श्रीमद्-भू-वल्लभ पेर्म्माडि-रायं कल्याणद नेले-वीडिनोळ् **सप्तार्द्ध-लक्ष-**मूमियं दुष्ट-निग्रह-शिष्ट-प्रतिपालनं गेय्दु सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्ये। स्वस्ति सम-

द्वितीय शिलालेखके, जिसका ऐतिहासिक भाग पहले ही लेख-जैसा है, दान भी ठीक उसी काल, उसी व्यक्ति, और उसी कार्यके लिये किये गये हैं। पर इस लेखमें दान स्वयं वेणुग्रामकी भूमिके थे। इस लेखमें कार्त्तवीर्य तृतीयकी पत्नीका नाम **पद्मावती** दिया हुआ है। यही नाम दूसरे कन्नड़ लेखोंमें पद्मल-देवी' आता है।

इन सब ऊपरके शिलालेखों परसे निष्पन्न रट्टोंकी वंशावली इस प्रकार प्रति-फलित होती है:—

[यहां यह ध्यानमें रखना चाहिये कि वंशपरम्परामें सिर्फ एक जगह टूट आती है और वह **शान्तिवर्मा** और **नन्न**के बीचमें है।]




एरेग, या एरग
अङ्क
सेन प्रथम, या काळसेन प्रथम,
मैळलादेवीसे विवाहित
कन्नकैर द्वि०,
या कन्न द्वि०
कार्त्तवीर्य द्वि०, या कत्त द्वि०,
भागलदेवीसे वि०
सेन द्वि०, या काळसेन द्वि०,
लक्ष्मीदेवीसे वि०
कार्त्तवीर्य तृ०, या कत्तम,
पद्मलदेवी या पद्मावतीसे वि०
लक्ष्मण, या लक्ष्मीदेव प्र०,
चन्दलदेवी या चन्द्रिकादेवीसे वि०
कार्त्तवीर्य चतुर्थ
एचलदेवी और (?) मादेवीसे वि०
मल्लिकार्जुन
लक्ष्मीदेव द्वितीय

निम्नकोष्ठक से अब तक के आये हुए रट्टोंकी ऐतिहासिक कालावलीका पता एक ही बारके देखने में लग जायगा:—

रट्टका नाम	किसके अधीन	इन शिलालेखोंसे विदित काल
पृथ्वीराम······	राष्ट्रकूट कृष्णराज जो शक ७६८ तथा शक ८२५ में शासन कर रहा था।	लगभग शक८००
शान्तिवर्मा······	चालुक्य तैलपदेव द्वितीय, शक ८६५ से ९१६.	शक ९०३
कार्त्तवीर्य प्रथम···	चालुक्य सोमेश्वरदेव प्र०, शक ९६२ ? ९६१ ?	······
अङ्क·········	चालुक्य सोमेश्वरदेव प्र०	शक ९७१
कन्न द्वितीय······	············	शक १००६
कार्त्तवीर्य द्वि०···	चालुक्य सोमेश्वर द्वि०,शक ९९१ ? ९९८, और चालुक्य विक्रमादित्य द्वि०, शक ९९८ से १०४६.	शक १०१०
सेन द्वितीय······	चालुक्य विक्रमादित्य द्वि० का पुत्र जयकर्ण। बादमें स्वतन्त्र।	लगभग शक १०५०
कार्त्तवीर्य चतुर्थ, और मल्लिकार्जुन	स्वतन्त्र···········	शक ११२४ और ११२७
अकेला कार्त्तवीर्य च.	वही··· ··· ··· ···	शक ११४१
लक्ष्मीदेव द्वितीय···	वही··· ··· ··· ···	शक ११५१

[JB, X, p. 184-185, No 2 II and 12,] a.

४५५

गोग्ग;—कन्नड़—भग्न ।

[काल लुप्त—पर लगभग १२०७ ई०]

[वीरभद्र मन्दिरके पासके एक तीसरे पाषाण पर]

(अग्रभाग घिसा हुआ है)···नेक-ऋषिय ··· ··· ··· वैशाख सुद्ध ५ बृ··· ··· ··· ···अदके सीम्र बडगल्··· ··· ···वण तुम्ब केळगे पडुवलु··· ··· ··· ··· ···मत्तरु १··· ···ब ५० अदके चतुस्सीमे नट्ट कलु··· ··· ··· ब ५ देवर नन्दा-दिविगेगे गाण १ हत्तेत्तिन बकलु··· ··· ···हुडिके-देरे हडियदे ग असगर वोकलु १ यिन्तिनितुम सुङ्क··· ··· ···विरुपय्यङ्गलु विट दत्ति समस्त-प्रजेगळिंदं कोट्ट धान्यव ग नेल्लु को २ नवणे को २ एळु को १ यिन्तनितु धर्म्ममं श्रीमतु सोवल-देवियरु ई··· ·· कन्या-दान माडि वासुपूज्य-देवर काल कर्च्चि धारा-पूर्व्वक माडिदरु यिन्ती धर्म्ममं नाग-गौडन्···नय-प्रभेतेयागि प्रतिपाळिसुवरू ॥ (हमेशाके अन्तिम श्लोक) ।

[(प्रथम अंश नष्ट हो गया है, और उसका अधिकांश मिट गया है) विरूपय्यके द्वारा भूमिका दान । वासुपूज्य-देवके पाद प्रक्षालन-पूर्वक सोवल-देवीके द्वारा (उक्त) अनेक तरहके धान्यका दान, तथा एक कुमारीकी भेंट । इस पुण्यकी रक्षा नाग-गौड, अपनी आँखकी ज्योतिकी तरह, करेगा । हमेशाका अन्तिम श्लोक ।]

[**EC, VII, Shikarpur tl., No 321** .]

४५६

गोग्ग; कन्नड़—भग्न ।

[शक ११३० = १२०८ ई०]

[गोग्गमें, वीरभद्र मन्दिरके पासके पाषाण पर]

ऊपरका भाग मिट गया है)··· ··· ··· ···अच्छरिये··· ··· ··· ···बुद्धि

··· ··· ··· ···भोच्चण्ड ··· ··· ···**वीर-बळ्ळाल**··· ··· ··· अरसंक-कर ··· ··· ··· ···वोळगागनेक··· ··· ·· चट्टरस··· ··· ···

आ-दम्पतिगळ पुण्यदिन् ।
आदं मगनधिक··· ··· ··· ।
··· ··· ··· ··· ··· ।
··· ··· ···विख्यात-सन्धि-विग्रहि **ईच** ॥
अभ्याहारादि-शास्त्र··· ··· ।
शुभ-चारित्र [ङ्ग] ळिन्दं पर-हित-गुणदिन्दं व्रताचार दिन्दम् ।
शुभ··· ··· ···उर्वी-नुतं कीर्त्ति-कान्त- ।
प्रभु-मन्त्रोत्साह-शक्ति-त्रय-युतनधिकं सेव्य··· ।
पति-हिते सीतेयन्ते जिनपार्च्चकि तेवकियन्ते भर्तृ-सम्-
युते गिरिजातेयन्ते··· ···लक्ष्मियन्ते सु- ।
व्रते नेगळ्द तिम्मवे··· ···न्विते वाणियन्ते तान् ।
अतिशयस् इद्दळ्··· ··· ···अङ्गने **सोवल-देवि** धात्रियोळ् ॥
···सति पद्मसंभवनोळद्रिजे **चन्द्र**··· ···नोळ् ।
परम-सुख-प्रशस्ते सिरि विष्णुविनोळ् नेलसिप्प माल्केयिं ॥
स्थिरतर··· ··· ···**सोवल-देवि** मनोनुरागदिं ।
निरुपम-सन्धि-विग्रहि-सिखामणि**ईच**नोळी-··· ··· ॥

[(लेखका प्रथम अंश नष्ट हो गया है, और उसका अधिकांश मिट गया है)। ईच और उसकी पत्नी सोमल-देवीकी प्रशंसा। उनके गुरु-परम्परा (गुरु-कुल) की तारीफ—लेखमें सिर्फ चन्द्रप्रभाचार्यका नाम रह गया है।

महामण्डलेश्वर मल्लि-देवरस सन्धि-विग्रही मंत्री एचकी पत्नी सोवग-देवीने, अपने छोटे भाई ईचके मर जाने पर, एक बसदिका निर्म्माण किया,—भगवान शान्तिनाथकी अष्टविध पूजनके लिये, और मन्दिरकी मरम्मतके लिये, (उक्त मितिको) चन्द्रग्रहणके समय, (उक्त) भूमिका दान किया।]

[EC, VII, Shikarpur tl., No 320.]

४५७

सोरब;–संस्कृत तथा कन्नड़ ।

—[शक ११३० (?)=१२०८ ई०]—

[सोरबमें, दण्डावती नदीके पूर्वी किनारे पर अवधूत-मण्डपके स्तम्भपर]

श्रीमत्परमगंभीर स्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥
अम्बुधि-कमळाकरदोळ् ।
जम्बु-द्वीपाब्जदोन्दु-कर्णिकेयेनिकुम् ।
पोम्बेट्टदरिं तेङ्कलु ।
चेम्बेट्टेसळेनिपुदल्ल्ते **भारत-क्षेत्रम्** ॥
भरत-श्री-भूषणदन्त्-।
इरे **कुन्तण-देस** मक्षि नायक-मणियन्त् ।
उरुतर-शोभा-विक्रम-।
करमेने **बनवास-देस**मोळुपं पडेगुम् ॥

तद्देशाद्यनेक-जळनिधि-वळय-वळयित-देशाधिपति ।

यी-वसुधाग्रमं **यदु-कुळ**ङ्गे सळंगे कुडल्के कुत्तु प-।
ञावतियं **सुदत्त-मुनिपर्** ब्बरिसल् पुलियागि बप्पुदुम् ।
भाविसे नोडि पोय् शळयेनळ मुनिपर् स्सेळेयिन्दे पोय्दु तद्-
देविगे शौर्य्यमं मेरेदु **पोय्सळ**-नाममनान्तना-नृप ॥

अन्तु सुदत्ताचारियर् **पद्मावती-देवि**यिं पदेदित्त······रदिं तदन्वयदोळनेक मुदितोदितमागे राज्य गैद बळिय ॥

उदयिसिदनमृत-वार्द्धियो ।
ळ् उदयं-गोय्दमर-भूजमेन्बिनेगं चेल्व-।
ओदविरे **बल्लाळ-नृपम्** ।

यदु-कुलदोळु विशद-कीर्त्ति दानाभरणम् ।
धुर-रङ्गं नृत्य-रङ्गं पर-नृपति-कपाळाळि ताळाळि नन्दन्-।
चरियर्कळ् पाडुवर् तद्विजय-रुह-यशं दुन्दुभि-ध्वानमागुन्त् ।
इरे विद्विष्टोवनिपाळक-निकरद रुण्डङ्गळिं ताण्डवाडम्-।
बरमं माळ्पोळ्पिनिं नट्टविगनेनिसिदं **वीर-बल्लाळ-भूपम्** ।।
पगेवर पेण्डिर कण्णिन्द् ।
ओगेदञ्जन-पङ्क्तिताम्बुविन्दं वेळक्रम् ।
मिगुवुदु विचित्रमिन्तिदु ।
जगदोळु **बल्लाळ भूप**-निज-विशद-यशम् ।।

एने नेगळ्द **बल्लाळदेवं दोरसमुद्र**द नेलेवीडिनोळ् सुख-संकथा-विनोददि राज्यं गेय्युत्तमिरे ।।

दोरेयेने **कोङ्कणि बनवा**-।
से-रोहणाचळद पुरुष-कान्ता-विबुधोत्-।
कर-रत्नङ्गळ कणियेने ।
निरन्तरं तोळगि बेळगि राजिसुतिक्कुम् ।।

तद्ग्रामाधिपति ।।

वनवास-देश-भूषण-।
नेनिपं गावुण्ड-मण्डनं-दिक्-कान्ता-।
स्तन-मण्डल-परिशोभित-।
घनतर-तेजः-प्रकाश-घुशृणं **मसण**म् ।।

तदपत्य ।।

घु-नदी-प्रोत्तुङ्ग-रङ्गद्-ग्रहळ-लहरिकान्दोळनोद्भूत-संघा-।
त-नमेरूद्यत्सतान्तावलि-वळयित-डिण्डीर-पिण्ड-प्रभा-मण्-।
डन-पाण्डु-प्रौढ-कीर्त्ति-प्रसर-विसरितोर्व्वी-नभश्चक्र-दिक्-च-।
क्र-निकायं तानेनिप्पोन्देसकदिनेनसुं **कीर्त्ति-गावुण्ड**नादम् ।।

मनमोल्दुब्बरे कीर्त्तिकुं मसण-गावुण्डोत्तम-प्रेम-नन्-।
दननं वन्दि-जनार्थितार्त्थ-फळदं प्रत्यक्ष-कल्प-द्रु-नन्-।
दननं दुर्ज्जन-दर्प्प-खण्डननुर्व्वी-जात-गाउण्ड-मण्-।
डननं कीर्त्तियनिन्दु-कुन्द-हर-हासोद्भासि-सत्-कीर्त्तियम् ॥
आर्त्तीव दानियं घरे ।
कीर्तिकुमभिमान-मूर्त्तियं घन-तेजस्-।
स्फूर्त्तियनी-प्रभु-मण्डन-।
कीर्त्तियनङ्गभव-मूर्त्तियं प्रियदिन्दम् ॥

तदपत्यरु ॥

सोमं जननयनोत्पळ-।
सोमं **मसणं** विरोधि-जन-हृत्-रवषणम् ।
श्री-महित-**महादेव**म् ।
प्रेम-महादेवनल्ते रामं **राम**म् ॥

आ-कीर्त्तिगावुण्डनणुगिनळियम् ॥

विततैश्वर्य्यन माधिनाथ-विभवं-राज-प्रियं बाहिनी-।
पति भोगीश्वर-भूषणं नुत-वृषाङ्कं केशव-प्रेम-वि-।
श्रुतनेम्बोळ्पेनसु विराजिसे **महादेवं** महादेवनेम्-।
ब तदीयाङ्कमनन्वितार्त्थमेनळर्त्थ-व्यक्तियं माडिदम् ॥
सुमनो-भूधर-राजितं विपुळ-शाखं बन्धुर-स्कन्ध-मूर्-।
त्ति महीजात-वरं सु-पत्र-निचय-स्तुत्यं धरा-शेखराङ्-।
घ्रि महोदारि दलेम्ब तन्नेसकदिन्दं भव्य-कल्पावनी-।
जमेनिप्पं विबुध-स्तुतं विभु-**महादेवं** चमूपोत्तमम् ॥
ओदवल् कण्णिडे मब्बुं पोगे रवि लोकक्केय्दे कण्णागि तान् ।
उदयं-गेय्देवोलिन्दु रेचरसनिन्द्रत्वक्के पक्कागे का-।
णदे मुन्दं देसेगेट्ट जैन-जनक्केल्लं लोचनं तानेनल्क् ।

उदयं-गेय्दनिला-तळ-स्तुत-**महादेवं** चमूपोत्तमम् ॥
कवि-रिपु गुरु गुरु-रिपु भृगु-।
ववरेवरेनल् धरित्रि कवि-गुरु-वनतोद्-।
भवमोदवे मन्त्र-गुणमोप्-।
पुवुदु **महादेव-दण्डनाथो**त्तमनोळ् ॥
अन्तु कीर्त्ति- गावुण्डं तन्नळिय **महादेव-दण्डाधिनाथ**नुं तदपत्यरुं बेरसु ॥
सक्कलित-गुण-गुणगणं श्री- ।
वल्लभनभिमान-मूर्त्ति कीर्त्ति-वधू-धम्- ।
मिल्ल-विराजित-मल्ली- ।
फुल्लं श्रेष्ठि-प्रतान-मण्डन मल्लम् ॥
एने नेगळ्द **मल्ले-सेट्टि**ग- ।
मनुपम-चरित्र-सीते **माचाम्बिके**गम् ।
जनियिसिदं सुकृतं सज्- ।
जनियिसे निज-कुलके **नेम**नखिळ-ललामम् ॥ •
नेगळ्दर् गुरुगळ् **गुणचन्**- ।
द्र-गणि-वर**मूलसंघ** (द)-**काणूर्-गण**दोळ् ।
सोगयिसुव **पुन्न-वंश**दो- ।
ळेसेवररागे **ने**मनभिजन-रामन् ॥
पर-हित-मूर्त्ति भव्य-जन-कळ्प-कुजं विभु **नेमि-सेट्टि** चिन्-
तरदोळे कूडे **जिड्डुळिगे-नाड् पडे-नाडे** निसिप्प नाळ्गवोळ् ।
परम-जिनेन्द्र गेहमननेकमनुद्धरिसुत्तमित्तळुद्- ।
धरिसिदनुत्तरोत्तरमेनल् निज-कीर्त्ति-लता-वितानमम् ॥
कोड कणि-पुर-लक्ष्मिय मेय्- ।
दोडवेनिसिरे **नेमि-सेट्टि** विभु माडिसिदम् ।
कडु-गोर्व्वि कीर्त्ति-लते दाङ्- ।
गुडि विडुविने शान्तिनाथ-जिन-मन्दिरमन् ॥

मनमर्हत्-प्रतिकृतिनिम् ।
तनु सु-व्रतदिं घनं जिनेन्द्रालयमम् ।
जनन-क्रियेयिन्दति-पा ।
वनमागिरे **नेमि-सेट्टि** नेगळ्दं जगदोळ् ॥

अन्तु **नेमि-सेट्टि सक-वर्षद [साविरद] नूर मूवतेनेय विभव-संवत्सरद जेष्ठ शु १० शुक्रवारदोळ् शान्तिनाथ-देव**र प्रतिष्ठेयं माळ्प कालदोळ् **कीर्त्ति-गावुण्ड**नुं तत्तनूजरुं तन्नाळ्य **महादेव-दण्डनायक**नुं परिवृत मागिरलु देवरष्ट-विधार्च्चनेगं ऋषियराहारदानकं कोट्ट गद्दे कम्म **५०**

वरद-**श्री कण्ठ-व्रति-** ।
परिक्किदर् शान्ति-[जि] न-गृहाचार्य्दगोंप्- ।
इरे योग-पट्टिगेयना- ।
दरदिन्दं वज्र-पञ्जरमनिक्कुववोलु ॥
यिदु जोग-वट्टिगेयनान्- ।
तुदु मद्-धर्म्मन् दलेन्द-संख्यात-गणा- ।
त्युदित-यशर् प्रतिपालिप- ।
रुदात्तदी- **शान्तिनाथ-जन-मन्दिरमम्** ॥

[जिन शासन की प्रशंसा ।

जम्बूद्वीप, उसमें भरतक्षेत्र, उसमें कुन्तण देश, उसमें बनवास-देश ।

जिस समय उस तथा समुद्र-परिवेष्टित अन्य देशोंका अधिपति यदुकुलके सळको यह मुख्य क्षेत्र देना चाहता था, सुदत्त मुनिपने पद्मावतीको एक चीतेके रूपमें प्रकट करवाया। पद्मावतीको चीतेके रूपमें देखते ही, उन्होंने सलसे कहा—'पोय् सल' (सल, मारो); जिसपर उसने चीतेको सल (डण्डे से) मारा और देवी पद्मावतीको उसके साहसका प्रदर्शन कराया, और इससे राजाका नाम 'पोय्सळ' पड़ गया।

इस तरह सुदत्ताचार्यके पोय्सळ राज्यकी नींव गेरनेके बाद उस वंशमें बहुत-से राजा क्रमशः हुए। जिनके बाद राजा बल्लाळ उत्पन्न हुआ; उसकी कीर्त्तिकी प्रशंसा।

जिस समय बल्लाळ-देव दोरसमुद्रके निवास स्थानमें था और सुखसे राज्य कर रहा था:—

कोडकणि क्षेत्रका वर्णन। उसका अधिपति मसन था। पुत्र, (प्रशंसा सहित), **कीर्त्ति-गावुण्ड** था। उसके पुत्र **सोम, मसन, महादेव** और **राम** थे। उसका दामाद **महादेव-दण्डनाथ** था; (उसकी प्रशंसाएँ)।

मल्ल-सेट्टि और माचाम्बिकेसे नेम उत्पन्न हुआ था, जिसके गुरु मूलसंघ तथा काणर-गण के गुणचन्द्र थे। नुन्न-वंशके नेमि-सेट्टिने जिड्डुळिगे-नाड् तथा एडे-नाड् में कई जिनेन्द्र-भवन बनवाये थे। कोडकणिमें उसने शान्तिनाथ-जिनालय बनवाया था।

इस प्रकार नेमि-सेट्टिने (उक्त मिति को[1]) शान्तिनाथ-देवकी प्रतिष्ठाके समय, कीर्त्ति-गावुण्ड, उसके पुत्र तथा दामाद महादेव-दण्डनायकसे परिवेष्टित होकर ५० दण्ड प्रमाण धान्य-क्षेत्र भगवानकी अष्टविध पूजाके लिए तथा ऋषियोंके आहारके लिये दानमें दिया।

और श्रीकण्ठ-व्रतिपने शान्ति-जिन मन्दिरके पुजारीको एक योग्य स्थान दिया।

[EC, VIII, Sorab, tl., No. 28]

१—'शक-वर्षद्नूर-मूवत्तेनेय,' इसमें हजारकी संख्या लुप्त है।

४५८

अनवेरी;—संस्कृत तथा कन्नड़ भग्न।

वर्ष प्रजापति [१२११ ई० (लू० राइस)।]

[अनवेरी (होळलूरं परगना) में रंगप्पाके खेतमें पड़े हुए पाषाणपर]

स्वस्ति श्रीमतु ··· **यणन्दि-भट्टारक-देवर**···अर्हन्त-बोवि-सेट्टि श्री-मूलसंघ-सूर ··· गण **मार-सेट्टिय** मग **बिट्टि-सेट्टि** धर्म्मवं ··· माडिसिद ··· **प्रजापति-संवत्सरद** चैत्र-शुद्ध १० सोमवार श्रीमतु **होय्सण-वीर-बल्लाळ-देव** पृथ्वी-राज्यं गेय्युत्तिरलु कळु ··· तिप्पयङ्ग ··· ··· २० कम्ब केय्य ······पूर्व्वकं माडि भूमि ······

··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· लाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनम्॥

(अन्तिम श्लोक)

[कुछ सेट्टि लोगोंने (जिनके नाम दिये हैं), (उक्त मितिको),··· यनन्दि-भट्टारक-देवको, जब कि होय्सण वीर-बल्लाल-देव दुनियाँपर शासन कर रहे थे, दान किया। जिन शासनकी प्रशंसा। हमेशाके अन्तिम श्लोक।]

[EC, VII, Shimoga tl., No103.]

४५९

बन्दलिके-संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न।

वर्ष श्रीमुख [१२१३ ई० (लू० राइस)।]

[बन्दलिके में, शान्तीश्वर बस्तिके उत्तरकी ओरके द्वितीय पाषाणपर]

श्री-**मूलसंघ**-जलधौ समुदेत्य नित्यम्
काणूर्गणोज्ज्वल-सुधाम्बसि **तिन्त्रिणीक**-।

गच्छाच्छके **ललितकीर्त्ति-मुने**र्व्विनेयः
आशाम्बर-श्रियमभा**च्छुभचन्द्र-देवः** ॥
वर्ष-श्रीमुख-मास-चैत्र-सित-पक्षाच्चैः-चतुर्थ्यां-दिने
वारे चान्द्र [···] महति नक्षत्रेऽश्विनी-संज्ञिके ।
दैने ज्योतिषि कृत्तिका ··· परि ··· सौभाग्य-योगे वणिग्-
नामाद्योत्करणे स्व ··· य **शुभचन्द्रा**ख्य-व्रती योगतः ॥
सन्यस्य सर्व्व-सङ्गानि पठन् पञ्च-पदानि च ।
समाहितो निर्व्वृते **शुभचन्द्र**-व्रतीश्वरः ॥
भरताधीश्वरर्नन्दमन्द-शुभचन्द्राभिख्यनिन्देन्दु भा- ।
सुर-जैन-व्रतिनाथनप्प विदितानन्दाभिधाचार्य्य ··· ।
··· ··· **शुभचन्द्र-देव**-मुनियिन्द् ··· आदुदत्यूर्जितम् ।
सुर-राज्योर्जितवप्प ··· ··· ··· जगत्पावनम् ॥
बन्दणिके-मठाधिपति-**शान्ति-जिनावसथा**ग्रदोळ् **जगम्** ।
ब ··· ··· मण्टपमनोप्पिरे मासिसि तन्न कीर्त्ति-या- ।
नन्द ··· नाडे भू-भुवन-मण्टपडोळ् ··· ··· ··· ।
सन्द समाधियन्द ··· ··· ना **शुभचन्द्र**-संयुतम् ॥ श्री

[श्री-मूलसंघ, काणूर्-गण तथा तिन्त्रिणीक गच्छके, ललितकीर्त्ति-मुनिके आज्ञाकारी, शुभचन्द्र-देव थे। (उक्त मितिको) वह स्वर्ग गये। 'सन्यसन' (समाधि या सल्लेखना) में सब कुछ त्यागकर, पाँच शब्दों (परमेष्ठियोंके वाचक) को उच्चारण करते हुए, उनका मरण होगया। भरतेश्वरसे लेकर ··· ··· ··· ··· ··· बन्दणिकेके मठाधिपतिके लिये ··· ··· ··· शान्ति बसदिके सामने एक मण्डप खड़ा किया गया था।

[EC, VII, Shikarpur tl., No 226.]

४६८

दानसाले;—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न।

११८० ?

—[... ... =लगभग १२२० ई०]

[दानसालेमें, उत्तरकी ओर, बस्तिके पासके एक समाधि-पाषाणपर]।

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥

नमो अरिहन्ताण॥ स्वस्ति श्रीमतु **शक वर्ष ११४** ... **नेय सार्वधारि-संवत्सरद कार्त्तिक-सुद्ध १० सोमवारदन्दु** श्रीमन्महामण्डलेश्वरं कलिगणं-कुल **मण्डळ-महीपाल**न सर्व्वाधिकारि-**पद्मप्रभ-देवर** गुड्ड **वैजण-सेनबोवन** पुत्र **बय्छ-सेनबोवन** तम्म **चळिग-सेनबोवनु** निजायु... ... सानमनषिदु॥ **पोरेदा** ... ... अगे पर-मण्डळद महीपाळरभिप्राय (२ पंक्तियां नष्ट हो गई हैं) सुखदिं वैजण-सेनबोव॥ तनुजातं ... ... **कादम्बलिग** यिन्ती ... ... सहितं मन्त्रि ... ... दियकोगेद ... ...

[जिन शासनकी प्रशंसा।

स्वस्ति। (उक्त मितिको), चलिग-सेनबोव,—जो वैजण-सेनबोवके पुत्र बय्छ-सेनबोवका छोटा भाई और महामण्डलेश्वर मण्डल-महिपालका सर्व्वाधिकारी पद्मप्रभ-देवका गृहस्थ-शिष्य था,—अपना अन्त समीप जानकर, ...कादम्बलिगमें ... ... स्वर्गको गया।

[EC, VIII, Tithahalli tl., No. 191.]

४६९

पुरले;—कन्नड़।

—वर्ष विजय [१२२० ई० ? (लू. राइस)।]

[पुरलेमें, बस-सेट्टिके खेतके स्तम्भपर]

पूर्व-मुख

व्यय-संवत्सर-पुष्यद । **बहुळद बारसिय कुजन वारदोळ् सद्-** ।
विनय-निधि **बाळचन्द्र** । सु-समाधियं मुडिपि नाकमेय्दिदनीगळ् ॥
अतिथिगम् ... । प्रतिभा-प्रागल्भ्य मनु-मुनिग् ... ।
... ... कृत-वाडिगळ दानम- । वतिशयमी-**बाळचन्द्र**नुळ्ळन्नेवरं ॥
ळले बुध-समिति सिश्टर । बळगं मेल्मक्लने मरुगे दान-विनोदम् ।
प्रळल-प्रक्षोभदवोल् । कळि श्री-**बालचन्द्र**नभिनव-चन्द्रम् ॥

पश्चिम मुख

मनमं निपमिसल्लारियर् । तनुमं ... तोर्प्पं मुनियं मुनिये ।
मनमं तनुव नियमिस- । लनुदिनमी **नेमि-देव**नोर्व्वने वल्लम् ॥

[(उक्त मितिको) विनयनिधि वालचन्द्रने समाधिमरण किया और स्वर्ग प्राप्त किया। (उनकी प्रशंसा)।

मन और काय दोनोंके दैनिक नियमनमें, नेमि-देव ही अकेले योग्य हैं।]

[EC, VII, Shimoga tl., No. 66.]

४७०

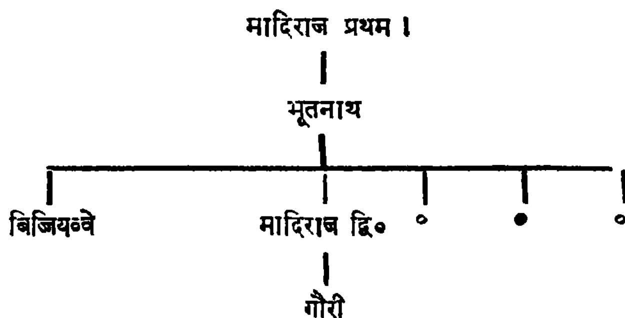
सौंदत्ति;—कन्नड ।

[शक ११५१=१२२९ ई०]

शिलालेखका परिचय

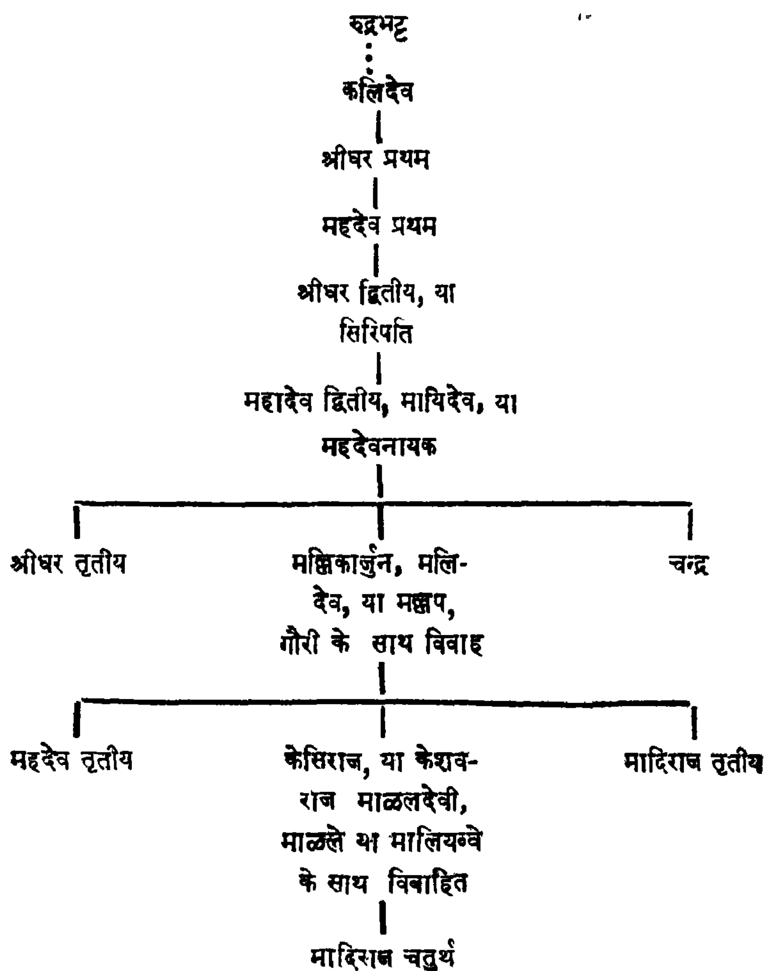
यह शिलालेख कुन्तलदेशके अन्तर्गत कुण्डी जिलेके अधीश्वर राष्ट्रकूटवंशके **लक्ष्मण** या **लक्ष्मीदेव प्रथम** के प्राथमिक वर्णनके बाद लक्ष्मीदेव द्वितीयका वर्णन करता है। ल० द्वि. **कार्त्तवीर्य चतुर्थ** और **मादेवी**का पुत्र था। इस तरह यह लेख और शिला लेखोंकी अपेक्षा रट्टोंकी वंशावलीको एक कदम

और आगे बताता है। यह कार्तवीर्य चतुर्थकी द्वितीय पत्नी होनी चाहिये, क्योंकि शि० ले० नं० ४४६ में उसकी पत्नीका नाम **पद्मलदेवी** दिया है। तत्पश्चात् हम देखते हैं कि **सुगन्धवर्त्ति बारह** का शासन लक्ष्मीदेव चतुर्थकी अधीनता में रट्टोंके राजगुरू मुनिचन्द्रदेवके द्वारा होता था, आर मुनिचन्द्रके सहायको या परामर्शदाताओं में शान्तिनाथ, नाग और **मल्लिकार्जुन** थे। मल्लिकार्जुनकी वंशावलीके देनेमें स्थानीय दो महत्वशाली वंशोंका विशेष वर्णन है—१८ गाँवोंके वृत्त (समूह) के अधिपति (इन गाँवोंमें **बनिहट्टि** मुख्य था जो आजकल जामखण्डीके पासका एक छोटा शहर मालूम पड़ता है), और **कोलार** के अधिपति (आजकलका कोर्त्ति-कोल्हार जो कलाद्गीसे नातिदूर कृष्णाके किनारे है)। कोलारके वंशमें पुरुष-उत्तराधिकारीके न होनेसे वहाँका अधिपतित्व विवाहके द्वारा बनहट्टिके अधिपतियोंके वंशमें चला गया। कोलारके अधिपतियोंका वंश गृहपति **वशिष्ठ**के वंशसे शुरू होता है, और उसमें निम्न नामोंका वर्णन आया है :—



मादिराज द्वि० अपने छोटे भाइयोंके साथ—जिनके नाम नहीं दिये हैं— युद्धमें मारा गया था। उसकी मृत्युके बाद उसकी बहिन बिजियव्वेने शासन-सूत्र अपने हाथमें ले लिया और कुछ समय बाद इसे बनिहट्टिके मल्लिकार्जुनके साथ गौरीके विवाहमें दहेजके रूपमें दे दिया। बनिहट्टिके शासकोंके वंशका नाम 'सामासिग-वंश' था और यह अत्रि ऋषिसे प्रारम्भ होनेवाले इन्दुवंशकी एक

शाखा थी। इस खानदानकी वंशावली, जिसमें ६३वीं केसिराजके पुत्र मादिराज का भी नाम आ जाता है, निम्नभाँति है :—



जैसा कि ऊपर निर्दिष्ट है, यह खान्दान रुद्रभट्टसे शुरू हुआ।

इसके बाद लेखमें बताया है कि किस तरह केसिराज, श्री-शैलके मल्लिकार्जुन देवकी वेदीके 'लिङ्ग' की तीन यात्रा और वहाँ कठिन व्रत धारण करनेके बाद, पवित्र पर्वतकी चट्टानसे बने हुए 'लिङ्ग' को अपने साथ लाया और उसे सुगन्धि-वर्त्ति नगरके बाहर नागरकेरे तालाबके पास अपने पिताके नामपर बनानेवाले मल्लिकार्जुन देव या मल्लिनाथ देवके मन्दिरमें स्थापित किया। बादमें इस मन्दिरके उच्च-पुरोहितका पद उसने लिङ्गय्य, लिंगशिव, या वामशक्तिके पुत्र देवशिव, उसके पुत्र वामशक्तिको दे दिया। इसके बाद लेखमें इस मन्दिरके लिये भूमि और उसके दशवें अंशके कई दानोंका उल्लेख आया है। ये दान सर्वधारी संवत्सर, **शक वर्ष ११५१ में**, राजगुरु मुनिचन्द्रकी आज्ञासे किये गये थे। उस समय शासनकर्त्ता वेणुग्राम राजधानीमें महासामन्त **राजा लक्ष्मीदेव** थे। अन्तमें इस लेखके लेखकका नाम मादिराज दिया है। यह केसीराजका पुत्र था।

समस्तुंग शिरश्चुम्बिचन्द्रचामरचारवे [।] त्रैलोक्य नगरारम्भमूलस्तम्भाय शंभवे ॥ ईगे निरन्तरं सुखमनाश्रितर्गी गिरिजाधिनाथनुर्व्वीगगनेन्दुमानळमरुत्स-लिलात्मवराष्टमूर्तियं रागदे लोक यात्रेमे निभोगिसि तन्न मनोनुरागदिं श्रीगिरियो-ळ् विराजिप सदाशिवनी विभु मल्लिकार्जुन। वर्नाधमृतावनिमध्यद कनकाद्रिय तेंकदेसेय भरतवनियोल् जनपदमेसेपुदु कुन्तळवेनसु सोगयिसुवुदल्लि कूण्डीदेशं [॥] आ देशाधि ईश्वरं **लक्ष्मण**नृपनेसेदं तत्सुतं कार्त्तवीर्य्यंगादळ् महादेवि तां श्रीसतिय-वर्गे जगजात विद्व(ज)नक्काह्लादं (पेळ्के) ळ विद्विद् क्षितिपति निवहक्कुब्बेगं पुट्टे तद्रामादिल्लोणि ईश शौर्य्य सकळगुणयुतं पुट्टेदं **लक्ष्मीदेवं** [॥] सुकुमारा-कारने श्रीसतिगुदयिसिदं धारणोचक्र संरक्षकने श्रीकार्त्तवीर्य्यावनिपतिसुतने रट्टवंशो-द्भवं राजकदाळ्सम्सेव्यने भाविसुवडे निजदिं **लक्ष्मीदेवं** प्रभाधाधि(कने) तिम्मांशुवंश प्रकटित विभवं नोप्पंडो **लक्ष्मीदेवं** ॥ इदमोघं राष्ट्रकूटान्वयनतुळबळं लक्ष्मीदेवं सुरूपन्वदोळुद्य (चेजदोळ् शौर्य्यदो) ळखिलजनानन्ददोळ् भायोळौ-दार्य्यदोळा कन्दर्प्पनं भानुवननिलजनं रोहिणीनाथनं पूर्व्वदिशाकान्तेशनं कर्ण्णन-नतिशयदिं पोल्तु विख्यातिवेत्तं आ रट्टराज्यमं विस्तारिसि नलविन्दे रट्टराज्य स्थिर

निस्तारक नेनिपं लक्ष्मीनारीशं रट्टराजगुरु मुनिचन्द्रं [॥] कुमुदानन्दवेविन्द बोन्दि मुनिचन्द्रं शत्रुभूभृन्मुखाब्जमनिप्पीडिप तेजदिंदे मुनिचन्द्रं रट्टराजाब्धियं क्रमदिं दिक्तटमं पळंचलेविनं पेच्चेप्प तन्नोन्दु विक्रमदिदं मुनिचन्द्रनिन्तु मुनिचन्द्रं चन्द्र-नामान्वितं [॥] गुरुवादं कार्त्तवीर्य्यक्षितिपतिगेनसुं मन्त्रदिं ताने शिक्षागुरुवादं शस्त्रशास्त्रस्थिरपरिणतेयोळ् लक्ष्मीदेवंगे दीक्षागुरुवादं प्राज्यराज्यापहरणदे परक्षोणि-पाळर्गेनल्वेळ्शाब्दं वाय्चवाय्तल्लदे वरमुनिचन्द्रंगिदें देसेगाय्ते [॥] धरणीशाग्रणि कार्त्तवीर्य्यसुतनप्पी लक्ष्मीदेवंगे सुस्थिरवप्पंतिरे धात्रियं नयदिनेकायत्तमं माडिदं वरबाहाग्ळदिं (विरो) धिनृपरं बेंकोण्डनी वाणसा भरणं श्रीमुनिचन्द्रदेवन सुद्दन्मा-तंगकण्ठीरवं [॥] आर्य्यं सचिवरोळतिचातुर्य्यं रट्टोर्व्वीप प्रतिष्ठाचार्यं कार्य्य-धुरन्धरतेयोळौदार्य्यदोळारिंदवधिकनी मुनिचन्द्रं [॥] आ मुनिचन्द्र देवमल माल्यरिळास्तुतरिष्टचिंतामणिकामराजतनयं करणाग्रणि शान्तिनाथनुद्दामपराक्रमं नेगळ्द कूण्डिय नागानुदारचारुलक्ष्मी महिमावळम्बनसुखानुभवं मले मल्लिका-र्ज्जुनं [॥] एने नेगळ्द मल्लिकार्ज्जुननिनुपम दंशावतार मेन्तेने चतुराननन सभे-यल्लि पूज्यं मुनिसप्तकमदरोळत्रिमुनिवरनधिकं ॥ (आ) मुनि मुख्य कान्तेयनसूये पतिव्रते वोल्दु धर्म्ममं काममनर्थमं परमसंपदमं पुरुषंगे माडे तत्का (मि) निगदरा हरिहराब्जभवस्तुतरत्रिनेत्रदिं सोमन जन्मवाय्तुद इन्तकुलक्किदुकुलं धरित्रियोळ् [॥] धरेगिन्तुवंशमेने विस्तरवं तळेदत्रिगोत्रदोळ् वरविद्यापरिणतरिळामरप्पलेवरोगेदरव-रोळतो रुद्रभट्टकवीन्द्रं [॥] तनय वंशजक्कळरुदिंगळोबुद्ध कवीशरप्प वाक्योन्नतियं सरस्वतियिनूर्प्पदिनेंटरोळं प्रभुत्वमं कन्नरनिंदवन्दु पडेदं दोरेमा कवितविळास दोन्दु-न्नतियोळ् प्रभुत्वद नेगर्त्तेयोळा विभु रुद्रभट्टनोळ् [॥] आ सुकवि रुद्रभट्टनिज सोमकुलाख्यनेनिसुव त्रिकुलं सामासिग कुलवेनिसिदुदन्ता सन्कुलदोळगे पुट्टितमळि-चरित्रं ॥ अदरोळ् निज रामात्तरविदे सासिर पोंगे कोट्टदं बिडिय निवुदिनं पडेदं रुद्रटनेम्बी पडेमातं रुद्रभट्टमुर्व्वी (र्व्वी) जनदिं नुतसामासिग दंशदोळतुळबळप्पंलवरा-दरवरोळ् भुवन स्तुतनेनिसि विभुतेवेत्तुंन्नतिवडेदं विमलकीर्तियं कलिदेवं ॥ तदपत्यं वनिहट्टिनामपुरमुख्याष्टादशक्कं प्रभुत्वदिना श्रीधरनोप्पुवं तनुजनातगादनुयन्तु-त्वास्पदनप्पं महदेवनातन सुपुत्रं श्रीधरं विक्रमोन्मदनप्पं महदेवनेम्ब सुतनागल्

लीलेयेत्तिप्पिनं ॥ गगनसरोवर पुरदवरिगमा सिरिपति गवागे वैरं होलवे रेगे सिरिपति तत्पुरवासिगळिं यमपुरमनेमिन्दं रणमुखदोळ् ॥ जनकं शत्रुशराळिगळ्गे गुरियागळ् तानदं केळ्दु भोंकेने देशान्तरमेद्दुं पोगि रविसंख्याब्दं बरं द्वीपदोळ् धनमं सादिसि तन्दु भूपतिगे कोट्टा शत्रुवं कोपदुर्व्विनदिं गन्धगजंगळिं तुळिदु कोन्दं भायिरेवोत्तमं ॥ मुं जमदग्निरामनखिळक्षितिनाथरनिप्पतोन्दुळ्सूम्मांबन गाळियन्ते तबे कोन्दुवोली महादेवनायकं कुंबरदिदे वैरिकुलमं तवे कोन्दु पितंगे माडिदं तां अवदानविक्रियेगळं बनिहट्टि समुद्भवेश्वरं ॥ शरणागतरं रक्षिप विरुदं घरे पोगळे इगवदोळ् सीयल् कळ्करेनिप मातंगरनन्दुरियोळ् तां पोक्कु कायिद ना महादेवं ॥ शरणागतरं रक्षिसि परबळमं गेय्दु मान्यरं मन्निसि दिक्करि वेरवायतियं विस्तरिसिये महादेवनायकं धरेगेसेदं ॥ एनिसिप्पी महदेवनायकन पुत्रर् श्रीधरं मल्लिकार्ज्जुननुं चन्द्रनुमेम्ब मूवरोगेदर्त्तत्पुत्ररोळ् वंशवर्धनमुं पुण्ययशोवर्धनमुमागळ् तन्नोळा मल्लिकार्जुन नात्मीय कुळाब्जषण्डवनमार्त्तण्डं करं रंजिपं ॥ गुणजळदिं तेजद बलुकणि बुध शिष्टेष्टजन मनोरथ चिंतामणि सामासिगवंशाग्रणियेने विभु मल्लि-कार्ज्जुनं रंजिसुवं ॥ एने पंपुक्ते मलिदेवन पुण्यांगने पितृ द्विजामरसंपूजनरते पतिहिते गौरी वनिते तदंगनेय कुलमनभिवर्ण्णिसुवे ॥ मुनिसमकदोळ् पेंपिगे नेलि-यिनिप्पं वशिष्ठमुनिमुख्यं तन्मुनिगोत्रदोळुदयिसि कोलारनगरविभु मादिराज पुण्यचरित्रदोळेने माळलदेवि भुवनवन्दितेयादळ् । पतिहितरूप चारुचरितं पति-भक्तियोळौदिदा मनं पतियने बण्णिसोन्दु वचनं सति लक्षणविन्नु तन्नोळूर्जितवेने केसिराजन मांगने माळलदेवि गोत्रसन्नुते वरपुत्रपौत्रबहुसंततियिं धरेयोळ् विरा-जिकुं ॥ मनेयोळगेनुळ्ळडविल्लनुतं स्वयमर्थभूरियागुत्तिप्पंगनेयम्मळिक्षदेविय विन-याम्भोनिधिय गुणदोळेन्तेणेयप्परू ॥ मनेयोळगुळ्ळुडं मडगे तत्पतिगं मनेभक्तळिंग-वेळ्ळनितुवनिकला इदे केलं कडेयुं सुडेनल्के जीविपगेनेयरने कुलांगने भरन्देन-लक्कुमे केसिराजनंगने पतिभक्ते चारु गुणयुक्ते कुलंगने भूतळाग्रदोळ् ॥ मनेगो बन्दरे बिट्टमरेनलोळथिंगोडि होगियडगुव समुखं तनगादडे नीवारेम्ब नलेयरि मांळियब्बेगेन्तेणेयप्परू ॥ कुटिळे कुमार्गे कुत्सिते कुरूपि कुभाग्ये, कुशीले, जिह्व-लंपटे, शठे धूर्त्ते दुर्गुणि दुरन्विते दुर्ज्जने दुष्टे कष्टेयेम्ब टमटकार्त्तिस्संतियरे

गुणदोळ् सले माळियव्वेयुंगुटकेणेयागरेन्दोडितरांगनेयम्भुवनांतराळदोळ् ॥ पुरुष-रमेळिदवं माळ्वरिदुं हिरिदागे बगेव परर्ं मायाचरणदोळेसगुव सतियर्दोरेये हेळ् माळियव्वेयोळ् कुत्सितेयर असवने गंगलक्के तलेमागिलेगच्चने नोडली इलिंगो-सगेगे नोपिंगंगडिगे वाडिन सन्तेगे बायिनक्के पोपेसकदे पाम्बगोळ् नेरेवर् कुल-नारियरेम्बुदे विचारिसे पतिभक्तिबेत्तेसेव **माळलदेवि**यनल्लदन्यरं । गाळुतनदिदे पुरुषरने बिद्वं माळ्पं दुश्चरित्रेयरं वाचाळेयरं कण्डघतति **माळलदेविय** गुणानु कथनदे केडुगुं ॥ पति बसदक्कुमिन्नुतमगेन्दु दुरौपषमं प्रयोगिप क्रितकेयरन्तयिन्दे परुषर्व्यय कामळे पाण्डु गुल्मदिंद तिक्कषरागे विचळिसुतिप्पवरेन्त् कुलांगनर्न पतिहिते माळियव्वेये कुलांगने वार्विपरीत चात्रियोळ् कृतयुगचरितद सतिगुणवतिशयदिं तन्नोळिक्कुवेने नेगळ्द महासति **माळलदेवि** पतिवृते **मल्लिदेवन** सुजननि रंचि-सुतिप्पळ् ॥ जननुते **माळलदेवि**यननुपमगुणवतियनी महासतियं कण्डनितरोळ-मरकदीसेवनेय फसप्राप्तियेन्दडे वण्णिपुदो । अत्रिमुनीन्द्रपत्नियनसूये पतिवृत-वृत्तियिंदे लोकत्रयवेद्दे वाण्णिसे विरिंचेयनच्युतनं त्रिनेत्रनं पुत्ररेनळ्के पेत्तळेसवीयुगदोळ् पतिभक्ति तन्न चारित्र दिनत्रिगोत्रदोळगुण्डेने **माळलदेवी** रेजिप्पळ् ॥ कुलवधुविन नडवळियोळ् कुळमुं पतिव्रतागुणदिंदं नेलसिक्कुमेम्बु-दिदु **माळलदेविय** चरितदिंदे धरेगतिविदितं । जननि महापतिवृते वशिष्ठकुलो द्भवे गौरि **मल्लिकार्जुन**नभवाम्भ्रीपंकरुहषट्चरणं पितनप्रतानुजर्व्वनधिगभीरनप्प महदेवनुमा विभु **मादिराज**नुं वनिते विनूते माळलेयेनल् विभु **केशवराज**-नोप्पुवं ॥ वचन ॥ आपुण्यांगनेयर शिष्टकाम भोगंगळननुभविसुत्तं मल्लिकार्जुननुं मादिराजनुमेम्बीर्व्वरुपुत्ररं पडेयलवरीर्व्वरुं श्रीरट्ट राज्यप्रतिष्ठाचार्यनुं अरिविरुदमण्ड-लिकजवराजनुमप्प श्रीमद्राजगुरुगळ् **मुनिचन्द्र**देवरनोलगिसि कूण्डि मूरु सुसासिरद बळिय बाडं श्रीमद्राजगुरुगळ् **मुनिचन्द्र**देवराळ्के वाडं **सुगन्धवर्त्ति** इन्नेरडुमं तदाज्ञेयिं प्रतिपालिसुत्तोमिरसा कंपणद मोदसु बारं पट्टणं **सुगन्धवर्त्तिय** विळास-मेन्तेन्दडे ॥ होइवोळलोल् विराजिसुव चूतवनं गिरसंकुळं फलं दुधुगिदनारि केरवन-वोप्पुवशोकवनं शिवालयं मिसुप जिनेन्द्र गेहमेत्रिपिंतिवलन्दव शेषसौख्यदोन्नेसेदु सुगन्धवर्त्ति सले कूण्डि महीतळदोळ् विराजिकुं । पन्नीर्व्वर्माऊण्डुगळुन्नत सत्वप्रता-

पगुणगण निळयस्संनुत चरित कीर्ति महोन्नतरप्रतिमरा स्थळकाधिपतिगळ् आ स्थल दोळ् ॥ आराधिपनभवनन सुरेखखचरामरेन्द्रवन्दितपदपंकेरुहननर्थियिं कोलारद विभु केसिराजनमळचरितं । विदितं श्रीपर्व्वताधीश्वरन चरणमं काणली केसिराजं मुददिं नेसेदं घरेयोळ् ॥ सुतनादं मादिराजं गभळ चरितन्त भूतनाथं यशोरंजित रप्पय्नस्तुतत्तंप्रभु गोगे दरिळास्तुत्यरन्तय्वरोळ् सन्नुतनादं मादिराजं सेणसुववर गंटळ्गे गाळं प्रतापोनंतनेन्दुर्व्वी जनं वर्णणेसि पेसेव्वंडेदं तेजदोंदेळ्गेयिंदं ॥ शर-णागतजनमं नित्तरिपेडेयोळ् वज्रपंजरं तानेने डोंकरमादिराज विभु तोडर्दर् डोंके-निप्प बिरुदनिरदेत्तिसिदं ॥ इरे कोलारदोळा समानविभुपुगव्वेत्तिलोपार्त्तता तुरन्चेतम्मंरेवोक्कडन्तवरनादं कादु तानुग्रसंगरदोळ् सानुजनेयिद् वीरसिरियं पंचत्वमं पोर्द्दि विस्तर देवानकऊण्मे दिव्यगतिवेत्तं धात्रि बाप्पेम्बिनं । आ मादिराजनग्रजे भूमिस्तुते बिजियव्वेयनुजर मद्दिभोद्दामभुमंनन्प्रतेयन्त माळ्केयिनधिकवागे नडे-यिसुतिर्द्दळ् ॥ सले कोलारदोळ् प्रभुत्ववेसे गुं तेनामदोळ् मादिराजळ सत्पुत्रियन्त प्रभुत्वसहितं श्रीगौरियं पोण्मे मंगळतूर्य्यं विभु मल्लिकार्ज्जुन नोव्वेळिप बिजियव्वे प्रभुत्वलताविस्तरयागे तां नेरपि चिन्तोत्साहमं ताळिदद्दळ् ॥ इन्तप्र विभवदिं पेंपं तळेद महाप्रसिद्धवंशजे गौरीकान्ते निज कान्तेयेने चैरन्तनरोळ् मल्लिकार्ज्जुनं समविभवं ॥ आ दंपतिगळ् सुखदिनिरे ॥ पिन्तेपात्तं तदीयप्रभु तेयेनिसुवष्टादश-ग्राममुं दौहित्रं तां मादिराजंगद इनमरे कोळारदोन्दु प्रभुत्वं पुत्रं श्रीगौरिगं मल्लपविभुगोगेदं केसिराजं लसच्चारित्रं श्रीशैलकन्या पति पदनखचन्द्रांशु-चंचच्चकोरं ॥ सात्विकदादिनन्दे परमेश्वरनी गिरिजेशनेम्बुव तत्वविचारादेदे इदु नम्बिद निश्चळभक्तियिन्दे शान्तत्वमे रूपगोण्डु मुदमानविषाददोळेंददिर्प्पं शूरन्व-दोळी धरावळयदोळ् विभुकेशवराजनोप्पुवं ॥ परक्तिकळिपदेयं परवधुविंगेन्नु-वे इकमं माडदेयं हरचरणपरिणतान्तःकरणतेयिं केसिराजनें कृतकृतं ॥ एने नेगळ्द केसिराजन वनिते नुतागस्त्यगोत्रसंभवे पुरुषंगनुवशपोपक्षि तां रञ्जिसुवनिबरोळं पिन्ते रोगादिगळ् तोसिडोदं भक्तिं वारें दिब्बवेनलभवं कूत्तु तत्पुत्र वर्मो पदुळं निश्चित विप्रजिरिसिदनधिकं धात्रिगाश्चर्य्यमागळ् ॥ मत्तमा तीर्थयात्रेयोळ् ॥ तनु गाढं परिचर्य्यमं मुददे माडम्बाय्दव्दोगें तजनेरं बाह्रोड गुडि बप्पवगें काळे-

प्रासिचन्दादो डोय्कमे सावन्तवर्गगळागदेनिपी वीरवृतं **मल्लिकार्ज्जुनदेवं** दयेगेय्यली प्रभुगे सलु **केशवंगुर्व्वीयोळ्** ॥ इन्तिवादियागिरनन्तवीरवृतंगळिं श्री-शैळद मल्लिकार्ज्जुन देवरं मूरुसूळ् दर्शनं माडि तत्प्रीतियिं पर्व्वतलिंगमं तन्दु कूण्डि मूलुसासिरद बलिय कपणं **सुगन्धवर्त्ति** इन्नेरदर मोदळ बाडं श्रीमद्राजगुरुगळ् **मुनिचन्द्र** देवराळ्केवाडं पट्टणं **सुगन्धवर्त्तिय** होळलोळम मागरकेरेयसिं तन्न तन्दे मल्लिकार्ज्जुन पेसरोळ् श्रीमल्लिनाथदेवर प्रतिष्ठेयं माडि ॥ स्वस्ति समधिगत पंचमहाशब्द महामण्डलेश्वरं **लत्तनुरपुर**वराधीश्वरं गोवळीतूर्य्यनिर्घोषणं **रट्टकुळ** भूषणं सिंधूरलाञ्छनं शशिविशदयशोलाञ्छनं सुवर्ण गुरुडध्वजं विदग्धमुग्धांगनाम-करध्वजं वैरिवळवीरवृकोदरं परनारिसहोदरं मण्डलिकगण्डतळप्रहारि उद्दण्डरिपुमद-निवारि साहसोत्तुगं **बोप्पनसिंग** नाभादि समस्तप्रशस्तिसहितं श्रीमन्महामण्डलेश्वरं **लक्ष्मीदेव**रसर् **वेणुग्रामेय** नेले वीडिनळ् सुखसंकथाविनोददिंदनवरतं राज्यं गे-य्युत्तमिरे **शकवर्ष ११५१** नेय **सर्वधारि संवत्सरद** आषाढदमवासे सोम-वारदन्दिन सर्व्वग्रासिसूर्य्य ग्रहण दुत्तमतिथियोळा **मल्लिनाथ देवर** अङ्गभोगरंग-भोगक्कं खण्डस्फटितजीर्णोद्धारक्कं श्रीमद्राजगुरुगळ् **मुनिचन्द्र** देवर कोट्टकेय्यन वर नियामदिंदा **सुगन्धवर्त्तिय** हेनीर्व्वर गाऊण्डगळ् बूपं पडुवणं होळनोळ् मुळुगुन्दवळिळय होळवेरेय हन्निमत्तर मान्यद होलवेरेयिं तेकळ् हमुडिय दारियि बडगळ् कडिमण्ण कोळिनलळेन्दु सर्व्वसमस्यमागि कोट्ट केयि कंबवरुनूरु ६०० सिरिवगिळिं पडुवळ् राजवीदियिं पडुवण केरियोळ् राजहस्तद सेक्कय्यगळ इप्पत्तोन्दु कैनीळद मनेय कोट्टर ॥ मत्तमा हीनीर्व्वर गावुण्डगळ् मुख्य समस्त-प्रजेगळु देवर नित्योपहारक्केन्दु चन्द्रार्क्कस्थायियागि मेटेगोळगव कोट्टर् ॥ मत्तमा-इन्नीर्व्वर गाऊण्डगळ् कौदिय मादिगाऊण्डनुं पंचमठतपोधनरुं एण्डहिट्टु सहित बिट्ट सभेय समक्षदलि कडसेय नागगाऊण्डनु मोदलूर गौडुवान्यदोळगे तन्न गौडु-मान्यं कब्बळेयवळनहरळहसुगेयन्निमा गौडुमान्यद कोलिनलळेदु सर्व्वसमस्यमागि कोट्टकेयि कम्बविन्नूरु २००, [॥] मत्तं ॥ स्वस्ति समस्त भुवनविख्यात पंचशत-वीरशासनलब्धानेकगुणगणालंकृतसत्यशौचाचारचारुचारित्रनयविनयविज्ञानवीरावता-रवीरबणञ्जुसमयधर्म्मप्रतिपाळकरप्प **सुगन्धवर्त्तिय** हन्नीर्व्वर्गाऊण्डुगळ् मुख्य

स्थळसमस्त नरवर मुम्मुरिदंडंगळ् सन्तेय देवस महासभेयागि दुं तम्मोळैक्यमतवागि आ मल्लिनाथदेवरिगे बिट्ट आयवेन्तेन्दडे [।] एळेय हेलिंगेनूरेळेय कोट्टर् होत्त-लिंग पेव्वत्तेलेय कोट्टर् [।] अरोळगेयुं सतेयोळगेयुं माळुव धान्यवर्गंदलुं भत्त-वसरदलुं सट्टुगवत्तवंकोट्टर् [।] पसारकरडडकेय कोट्टर् [।] अल्ल बेल्ल अरिसिन मोदलागि किरिकुळवेल्लवं पसारक्कोन्दोन्दु कोट्टर् [।] हत्तिय पसारक्के हिडिवत्तिय कोट्टर् [।] मत्तमा देवर नन्दादीविगेगेय्वत्तोक्कळ् गाणके सोडिगण्णेय कोट्टर् [।] बेऊरिन्द बन्ध माळुव एण्णेय हाडकेयद्देण्णेय कोट्टर् आस्थळद अय्सावन्तर् ।

देवरग्घणिय बिन्दिगेगे आवलेगळन कोट्टर । मत्तवन्यूर्व्वर बाडुकाय माबुव बल्लगेरडु सूडु हेर्चिगे नालकु काय कोट्टर [।] बोव ककट् तन्दु मारुव बाडुकायिगे तिर्प्पे सुंकव कोट्टर ॥ मत्तमा देवर्गे एळरावेव हंनीर्व्वर गावुण्डगळ् तम्मूर तेंकण होलनोळ् सवघर्वत्तिय तम्म होलन सीमेयोळ् सिरिवारैमे होद हेव्वेट्टेयिं मूडळ कद्दिगुरुहल्लारं बडगळ् नविलगुन्द गोलिनलळेदु सर्व्वं समस्यवागि कोट्ट केयि मत्तनाल्कु ४ अयुग्यगल हंनिकैनीळद मनेय कोट्टर । मत्तं बेट्टसुरद मेनेय सिंदर भैलेय नायकनुं अ स्थलदलुवर्ग्गो ऊण्डु गळुं तम्मूरि तेंकण होळनोळ कद्दिगुरुहळ्ळदिं तेकल् नविलुण्द गोलिनलळेदु सर्व्वमसमस्यमागि कोट्ट केयि मत्तनाल्कु ४ अयिगय्यगळ हंनिकैनीळद मनेय कोट्टर ॥ मत्तमा देवर्गे हूलिय **माणिक्य तीर्थद** बसदियाचार्य **प्रभाचन्द्र सिद्धान्तिदेवर** सहधर्म्मिगळप्प **शुभचन्द्रसिद्धान्तिदेवरुं** या **प्रभाचन्द्र सिद्धान्तिदेवर** शिष्यरप्प इन्द्रकीर्ति-देवर श्रीधरदेवर मुख्यवा संघसमुदायंगळुं आ माणिक्य तीर्थद बसदिय स्थलं हिरिय कुंवियल् आल्लियकव्वर्गावुण्डगळ् सहितविद्दु आ ऊरिं तेकददेसेयल नल्लियचट्ट गौडन बळबोळगे नेमणन केयिं तेकल् उरुगोळनहोल सीमेयं मूडल् नविल्गुन्द गोलिनलळेदु सर्व्वसमस्यमागि कोट्ट केयि मत्तनाल्कु ४ अमिगय्यगळ हन्निकै-नीळद मनेय कोट्टर । मत्तमा देवर्गे श्रीमदनादिय पिरियग्रहारं हसुर्बियंर्न्नूर्म्महाजनं-गळु हर्व्वींर्व्वगावुण्डुगळुं तम्मूर तेंकण घेस्सगेरियिं तेंकल् **समन्धवत्तिय** सवणबेलद होलवेरेयिं पडुवल् तम्म बासिगवाडद पडुवण हेब्बसुगेय स्थळदोळगे सोगळद दिगीश्वरदेवर पोलललेदु सर्व्वसमस्यमागि कोट्ट केयि कंब मून्नूरु ३०० [॥]

मत्तं श्रीमुनीन्द्रदेवर आयद चट्टिभरगर बिलपदिं गाणायदायकारदलि सोमवारं प्रति वोन्दु सोलगे एण्णेयं कोट्टर ।

इन्तिनितुमना कोलारद केसिराजं मुगन्धवर्त्तिय नागरकेरेय श्रीमल्लिनाथदेवरिगे वृत्तियं पडेदु आकेरेय कट्टिसि सुत्तलु मारबेयनिट्टु तन्नाराधिसुव माल्लेय शुद्ध शैवमार्गिळप्प तन्न गुरु भागिगळ शिष्यर् वामशक्तिनामाभिधेयरप्प बल्लिटगेय श्रीमूळस्थानदाचार्य्यलिंगय्यंगळिगी स्थानमं धारापूर्व्वकं कोट्टनवर वंशानुकथनमेन्तेने ।। आ मुनि दूर्व्वासान्वयनेभातनुपहतनेन्दु दिव्यम्बिडिदा वामशक्तिवृतीशं भूमिस्तुतनेनिसि नयसि पेसवंसेदेसेदं तत्तनयर्ईवशिवरुदात्तयशस्संकलशास्त्र संपन्नर्संद्वृत्तर्स्वभुजोपार्जितवृत्ति समाज ब्बीराजिसिदरुर्व्वरेयोळ् तदपत्यलिंग शिवव्विदितशिवा गमररतक्कर्य्य गुणगणनिलयर्स्सदमळ चरित श्रीशैळदभवनं भक्तियुक्तवादाधिसुवर ।। सिंगननाराधिपर्डं श्रीमल्लिनाथपदसरसिजदोळ् भृंगनवोलेसेवनेन्दु मनंगोण्डा केसीराजन वर्ग्गिदनित्तं । ततशासनार्थवप्पी क्षितियं विभवोनंति संततवोदितोदित वक्कुं प्रतिपाळिसलोल्लदळ्दिनसुगतिगिळिगुं ।। गये वारणासि कुरुभूमि येनिप तीर्थंगगळल्लि गोकुलयं तन्नय कुलमं ब्रह्मणरं दयेगिडे कोन्दनितु पापमिदनळियलोडं ॥

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां ।
षीष्ठव्वर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ।।

तंनित्तुद मेणन्यकुलोन्नत रित्तुदु मनवनियं धर्म्मात्मळं मन्निसदळिदा मनुर्ज मुन्नं क्रिमियागि बळिके नरककिळिगुं ।।

मद्वंशजा परमहीपतिवंशजा वा पापादपेतमनसा भुवि भावि भूपाः ।
ये पालयंति मम धर्म्ममिदं समग्रं तेषां मया विरचितांजलिरेष मूर्ध्नि ।।

तानोसगिसिद नृपकुलदा नृपरकम्य भूपरक्की धर्म्मक्केनुमनळिवं तारदडा नृपरिगविन्दे सुगिन्द कर्य्यान्दिर्प्पे इदा केसिराजन वचन ।। एसेवी शासनमं विरचि बरेदं पूर्व्वं जन्मदोल् सुकृतमनर्जिसि केसिराजविभुविन सिसुवेनिसिद मादिराजनाविभुमतदिं ।। ई धर्म्ममं सुगंधवर्त्तिय हेनीर्व्वर्गोऊण्डुगळुं प्रतिपाळिसुवर् ।।]

[JB, X, p. 176-179, a; p. 260-272, t. ; p. 273-286, tr. (Ins. No 7.).]

४७१-४७२

पर्वत आबू—संस्कृत

[सं० १२८७=१२३० ई०]

श्वेताम्बर सम्प्रदायके लेख

[EI, VIII, No 21, No 1. f.-p., t. aud tr.]

४७३-४७४

पर्वत आबू—संस्कृत

[सं० १२८८=१२३१ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[EI, VIII, No 21, No 12, t.
and
[EI, VIII, No 21, No 4o-11 and 13-18, t.]

४७५

श्रवणबेल्गोला;—संस्कृत तथा कन्नड।

[वर्ष खर = शक ११५३ = १२३१ ई० (कीलहौर्न)]

[जैन शिलालेख संग्रह, प्रथम भाग]

४७६

गिरनार;—संस्कृत।

[सं० १२८८ = १२३२ ई०]

श्वेताम्बर सम्प्रदायका लेख।

[Revised Lists ant. rem. Bombay (ASI, XIV), p. 328–331, No. 1, t, and tr.]

४७७

गिरनार;—संस्कृत।

[बिना काल निर्देशका]

श्वेताम्बर सम्प्रदायका लेख।

[Revised Lists., p. 357–358, No. 21 & 22, t. and tr.]

४७८

माण्टनिडुगल्लु;—संस्कृत + कन्नड

[शक ११५५ = १२३२ ई०]

[निडुगल्लु-बेट्ट (निडुगल्लु परगना) में, जैन बस्तिमें एक पाषाण पर]

स्वस्ति श्री जयाभ्युदय······न **शक-वर्ष ११५४ नेय नन्दन-संवत्सरद आषाढ-शुद्धाष्टमी-आदिवारदन्दु** नेमि-पण्डितर मकळीबसदिय वृत्तियं धारा-पूर्व्वकं पडेदरु मङ्गळ महा श्री

(५२)

उसी पाषाण पर

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥

स्वस्ति समस्त-वसुमती-मारधौरेय-दोर्द्दण्डरुमधःकृतोद्दण्डरुं मार्त्तण्ड-कुळ-भूषण-रुमभिसम्पात-भीषणरुमोरेयूर्-प्पुरवराधीशरुमेनिप्प **चोळावनीश**रोळ्॥

मङ्गि-नृप-सुतु बम्मि-नृ-।
पं गोविन्दरनववनिकलोळनना-।
तङ्गुद्रविसिद **भोग नृ-।**
पं गोरव-मेरु **बम्म-नृपनं** पडेदम्॥

कलि-धर्म्म-नृपतिगं बा-।
बल-देविगवुदित-भद्र-लक्षण-वक्षस्-।
-स्थळक**निरुङ्गोळ**-धारा -।
तिळकं नळ-नहुष-भरत-चरितं नेगळ्दम् ॥
हरि गोवर्द्धन-गोत्रमं दशमुखं रुद्राद्रियं राम-किं -।
करुणाचळ-कोटियं रविसुतं तेर्-गालियं पूण्डु दु -।
र्द्धर-संरम्भदिनन्दु मेट्टि किळे नोन्दायासविन्दारितु -।
र्व्वरेगी-दक्षिण-बाहु-सङ्गदिनिरुङ्गोळ-क्षमापाळन ॥
कुळिकन लवलविके लया -।
नळनुरुवणि सिडिल सडगरं मिल्तुविन -।
गाळिके जवनुज्जगं मार्प्प -।
ओळेवुदिरुङ्गोलनाबिगेत्तिद बाळोळ् ॥

अन्तु नेगळ्द निगलंक-मल्लं परनारी-सहोदरनरुवत्तनाल्वर् म्मण्डळिकर तले-गोण्ड मण्ड ळुद्दण्ड-मण्डळिक दानव-मुरान्तकं रोद्दद गोवं बाण्टर बावं खड्ग-सहदेवं देव-देव-सदाशिवपादाब्ज-सेवा-समुन्मिषत्-प्रभाव **निरुङ्गोळ-देवं** राज्यं गेय्यु-त्तमिरे तत्पाद-पद्मोपजीवियप्प **गङ्गेय-नायकङ्गं चामाङ्ग** नेगवुद्भविसि **गङ्गेयन मारेयं** श्री-**मूल-संघद देशिय-गणद कोण्डकुन्दान्वयद पुस्तक-गच्छद** वाणद-वळिय श्री- **वीरनन्दि-सिद्धान्त-चक्रवर्त्ति**गळ शिष्यराद मेदिनीसिद्धर **पद्मप्रभ-मलधारि-देवर** चरण-परिचर्य्येयिं पर्य्याप्त-कामितराद **नेमि-पण्डित-**रिनङ्गीकृत-व्रतनादम् । आगि ॥

काळाञ्जननेम्बुदिरुद् -।
गळन गिरि-दुर्ग्गवन्तदभ्रङ्कषदा -।
भीळतर-चूळवदरुत् -।
ताळतेयने नोडि धात्रि **निडुगल्लेन्**दुम् ॥
आ-कुक्कीळद बदर-त -।

टाकट दक्षिण-शिलाग्रदोळ् **पार्श्व-जिन** -।
ज्याकोसि-वसतियं प्रिय -।
लोकं गङ्गेयन मारनिदनेत्तिसिदम् ॥
इदु **जोगवट्टिगेय वस** -।
दि दला-चन्द्रार्कवि सनातमर्त्रि सल् -।
वुदु पञ्च-महा-शब्दवद् ।
इदर्के पालिसुवरिन्नसङ्ख्यातर्कळ् ॥

स्वस्ति निरस्ततम-कमठानेक-वैकुर्व्वाणनप्प पार्श्व-जिनेश्वरन दैनन्दिन-सपर्य्या-कार्य्यकं महाभिषेककं चातुर्व्वर्ण्ण-दानकं **गङ्गेयन मारेयनुं** नारि **बाचलेयुवा-** चन्द्र-तारमिनित्तने सलुपुदेन्दो **इरुङ्गोळ-देवं** धारा-पूर्व्वकवित्त दत्ति (दानकी विगत तथा वे ही अन्तिम वाक्य और श्लोक)।

(प्रथम लेख)

[स्वस्ति । (उक्त मिति को), नेमि-पण्डितके पुत्रने इस वसदि की भूमि प्राप्त की ।]

(द्वितीय लेख)

जिन शासनकी प्रशंसा ।

स्वस्ति । चोळ राजाओंमें,—मञ्जि-नृपका पुत्र बप्पि-नृप, (और) गोविन्दरका पुत्र इरुङ्गोळ हुआ, जिसके भोग-नृपका जन्म हुआ था, जिसके बम्म-नृप हुआ । जिससे और बाचल-देवीसे **इरुङ्गोळ** (प्रशंसा सहित) उत्पन्न हुआ था ।

जब (अपने पदों सहित), इरुङ्गोळ-देव राज्य कर रहा था:—तत्पादपद्मो-पजीवी **गङ्गेयन-मारेय** गङ्गेय-नायक और चामासे उत्पन्न हुआ था । इसने नेमि-पण्डितसे व्रत लिये थे । ने० प० को पद्मप्रभ-मलधारि-देवसे मनोभिलषित अर्थकी प्राप्ति हुई थी । प० म० देव श्रीमूलसंघ, देशिय-गण, कोण्डकुन्दान्वय, पुस्तक-गच्छ तथा वाणद-बलियके वीरनन्दि-सिद्धान्त-चक्रवर्तीके शिष्य थे ।

काळाञ्जन इरुङ्गोळके पहाड़ी किलेका नाम था। यह देखकर कि इसकी चोटियाँ बहुत ऊँची हैं, लोगोंने इसका नाम निडुगळ् रख दिया। उस पर्वतके बद्र तालाबके दक्षिणकी तरफ एक चट्टानके सिरेपर गङ्गेयन मारने पार्श्व-जिन बसति खड़ी की थी। इसीको 'बोगवट्टिगे बसदि' भी कहते थे।

पार्श्वनाथ-जिनेशकी दैनिक पूजा, महाभिषेक करनेके लिये, तथा चतुवर्णको आहार दान देनेके लिये गङ्गेयन मारेय तथा उसकी स्त्री बाचलेने इरुङ्गुल-देवसे आ-चन्द्र-सूर्य-स्थायी दान करनेके लिये प्रार्थना की और उसने तब यह (उक्त) भूमियोंका दान किया; तथा गङ्गेयनमारेयनहल्लिके कुछ किसानोंने मिलकर बहुतसे (उक्त) अखरोट और पान प्रति बोझपर दिये; पैलिके किसानोंने भी कोल्हुओंसे तेल दिया। वे ही अन्तिम श्लोक।]

[EC, XII, Pavagada tl., No. 51 and 52]

४७६

गिरनार;—संस्कृत।

[सं० १२८८–१२८९ = ११३२ ई०]

श्वेताम्बर सम्प्रदायका लेख।

[Revised List ant. rem. Bombay (ASI, XVI), p. 361, No. 34, t. and tr.]

४८०

पर्वत आबू;—संस्कृत।

[सं० १२९० = १२३३ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[EI, VIII, No. 21, No. 19–23, t.]

४८१

एलूरा;—संस्कृत ।

[शक ११५६ = १२३५ ई०]

[फाल्गुण सुध श्रीतिया[1] बुधे]

[१] स्वस्तिश्री शाके ११५६ जयसवद्वरे (संवत्सरे)
श्रीर्द्धना (श्रीवर्द्धना) पुर े। जभा े— बनि **राणगिः** ।
तत्पुत्रो म्हालुगिः स्वर्ण्णा वल्लभो जगतोप्यभूत् ॥१॥
ताभ्यं (भ्यां) बभूवुश्चत्व (त्वा) रः पुत्राश्चक्रेश्वरादयः ।
मुख्यश्चक्रेश्वरस्तेषु दा[न]धर्मगुणोत्तरः ॥२॥

[२] चैत्यं **श्रीपार्श्वनाथस्य** गिरौ वा (चा) रणसेविते ।
चक्रेश्वरोसृजद्दानादृधृ (ना धृ ?) ताहुतीं च[2] कर्मणां ॥३॥
बहूनि बिंबानि जिनेश्वराणं (णां) महाति (हान्ति) तेनैव विरच्य सर्वतः ।
श्री**चारणाद्रि**र्गमितः सुतीर्थतां **कैलास**भूभृद्भरतेन यद्वत् ॥४॥

[३] धर्म्मैकमूर्तिः स्थिरशुद्धदृष्टि द्वयोसतो (?)[3] वल्लभकल्पवृक्षः ।
उत्पद्यते निर्मलधर्मपालश्च**क्रेश्वरः** पञ्चमचक्रपाणिः ॥५॥
शुभं भवतु ॥
फाल्गुण त्रितीयां बुधे

अनुवादः—स्वस्ति श्री ! शक सं० ११५६, जयसंवत्सरमें । श्री (व) र्द्धना-पुरमें राणुगिने जन्म लिया था, उसका पुत्र म्हा (गा) लुगि था जिसकी पत्नी स्वर्ण्णा थी और जो जगत्को भी प्यारा था।

२. उनके चक्रेश्वरादिक चार पुत्र हुए। इनमें चक्रेश्वर मुख्य था, वह दानधर्म गुणमें सबसे आगे था।

---

१. तृतीया। २. भगवानलाल इसको ० ज्ञात्रीकता हंत्रवि० पढ़ते हैं।
३. भगवानलाल इन्द्रजी इसे 'दोनो सतो' पढ़ते हैं।

३. चारणोंसे सेवित इस पर्वतपर उसने श्री पार्श्वनाथका बिम्ब बनवाया, (प्रतिष्ठित किया) और इस कृत्यसे उसके कर्मोंकी निर्जरा हुई।

४. जिस तरह भरतने कैलास पर्वतको पवित्र तीर्थ बना दिया था, उसी तरह उसने इस पर्वतपर जिनेश्वरोंके विशाल-विशाल बिम्बोंको बनवाकर इसे एक सुतीर्थके रूपमें परिवर्तित कर दिया था।

५. धर्म्मैकमूर्ति, स्थिरशुद्धदृष्टि, दयावान, सतीवल्लभ (अपनी पत्नीके प्रति एकनिष्ठ), दानादि गुणोंसे कल्पवृक्षके समान चक्रेश्वर निर्मलधर्मका रक्षक बन जाता है, पाँचवाँ वासुदेव। शुभ हो। फाल्गुन ३, बुधवार।

[Ins. Cave-tamples of western India, p. 99–100, t. and tr.]

४८२

पर्वत आबू;—संस्कृत।

[सं० १२४३ = ११८६ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[EI, VIII, No. 21, Nos 24–31, t.]

४८३

दिलमाल (Dilmal);—संस्कृत तथा गुजराती।

[सं० १[२]६५ (?) = १२१८ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[EI, II, No. 5, No. 4, (p. 26), t. and tr.]

४८४

हेरेकेरी;—संस्कृत तथा कन्नड ।

[शक ११६१ = १२३९ ई०]

[उसी बस्तिके दक्षिणके समाधि-पाषाणपर]

श्रीमत्-परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ।।

स्वस्ति श्रीमतु **कुमार-पण्डितर** गुड्डि **पेक्कन-सेट्टिय** हेण्डति गुण-गण सम्पन्ने शीलवतियप्प **मल्लव्वे शक-वर्ष** ११६१ **नेय विकारि-संवत्सरद मार्ग्गशिर-मास बहुळ-पक्षद त्रयोदशि बृहस्पतिवारदन्दु** दान-धर्म्म-परोपकार-निरतेयागि समाधि-विधियिं सुर-लोक-प्राप्तेयादळु **केलसे सोवोजन** माडिद ।

[कुमार-पण्डितकी गृहस्थ शिष्या, पेक्कन-सेट्टिकी पत्नी, मल्लव्वेके जैन-विधि-पूर्व्वक किये गये समाधिमरणका स्मारक । केलसे सामोजने इसको बनवाया ।

[EC, VIII, Sagar, tl., No. 161.]

४८५

कीरग्राम;—संस्कृत ।

[सं० १२९६ = १२४० ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

[EI, I, No. XVII (L. 118-119), t. and tr.]

४८६

पर्वत आबू;—संस्कृत ।

[सं० १२९७ = १२४१ ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

[EI, VIII, No. 21, No. 32, t.]

४८७

रोहो;—संस्कृत तथा गुजराती।

[सं० १२९९ = १२४२ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[EI, II, No. v, No. 14 (p. 29), t. and tr.]

४८८

सियालबेट;—संस्कृत।

[सं० १३०० = १२४३ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[ASI, XVI, p. 253-254, t.]

४८९

हेरेकेरी;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक ११६५=१२४३ ई०]

[इसी बस्तिके उत्तरकी ओरके समाधि-पाषाणपर]

श्रीमत्पवित्रमकलङ्कमनन्तकल्पम्
स्वायम्भुवं सकल-मङ्गळ-वस्तु-मुख्यम्।
नित्योत्सवं मणिमयं निलयं जिनानाम्
त्रैलोक्यभूषणमहं शरणं प्रपद्ये ॥

स्वस्ति श्रीमतु शुभकीर्त्ति-पण्डित-देवर गुड्डि पेक्कम-सेट्टिय मगळु कामव्वे सकळ-गुण-गण-सम्पन्ने शीलवति शाक वर्ष ११६५ नेय शुभकृतु संवत्सरद

वैशाख-मास-शुक्ल-पक्ष-बिदिगे-बृहस्पतिवारदन्दु आहाराभय-भैषज्य-शास्त्र-दान-निरतेयागि सन्यसन-समाधि-विधियिं सुरलोक-प्राप्तेयादळु ॥ **सोवोजन** बेस

[शुभकीर्त्ति-पण्डित-देवकी शिष्या, पेक्कम-सेट्टिकी पुत्री, कामव्वेका भी वैसा ही स्मारक। सोवोजका कार्य्य।]

[EC, VIII, Sagar tl., No. 162.]

४९०

कडकोल;—कन्नड़।

[शक ११४८ = १२२६ ई०]

[१] स्वस्ति श्रीमत्-यादव-**रायनारायण** बु (भु)जबल-प्र-
[२] ताप-चक्रवर्त्ति **सिंहणदेव** [र] वर्ष ३७ **परा-**
[३] **भव-संवत्सरद** मार्ग्गशिर सु (शु)ध(द्ध) पंचमी ब्रि(बृ)ह-
[४] स्पति वारदलु **सूरस्थगणद मूलसंघद श्री-नन्दि-**
[५] **भट्टारकदेवर** गुड्ड **कडकुळद सावन्त-बो-**
[६] **प्पगौड** हेग्गडे **सोमय्यनु** समादि (धि) ई (यि) म्
[७] मुडिपि स्वर्ग्ग-प्राप्तनाद [नु] [।]
मंगळ-महा-श्री [॥]

अनुवाद:—स्वस्ति! यादवोंमेंसे श्रीवाले रायनारायण भुजबल-प्रताप-चक्रवर्ती **सिंहणदेव**के ३७वें वर्ष, पराभव-संवत्सरके मार्गशिर (महीने) के शुक्लपक्षकी पंचमी, बृहस्पतिवारको सूरस्थगणके मूलसंघके श्रीनन्दिभट्टारक देवके शिष्य या अनुयायी; तथा कडकुळ[1] के सावन्त-बोप्पगौडके 'हेग्गडे'[2] **सोमय्य**ने पूर्ण इन्द्रिय-विरतिकी हालतमें मरणकर स्वर्ग प्राप्त किया। मंगल-महा-श्री।

[IA, XII, p. 100, No. 1. t. and tr.]

---

१. दूसरे शिलालेखोंमें यही नाम 'कडकोळ' पाया जाता है। २. मैनेजर।

४६१

ऊद्रि;—कन्नड भग्न।

[वर्ष दुन्दुभि (?)

[ऊद्रिमें, बन-शङ्करी-मन्दिरके मार्गके एक पाषाणपर]

(प्रथम अंश मिट गया है)··· गतिनयनेश-संख्येय **शकाब्दद दुन्दुभि-नाम-संवत्सर**···वर-ज्येष्ठमासद सितेतर-पक्षदोळ् द्वितीय-सन्नुतमर्क्कवार मनुव ···तां बसवले लोक-विश्रुते···दळ् समाधि-विधियिन्दमानन्द-निवास-सौख्यमम् ॥ **नन्दि-देव**-पद-युग-सरसिरुहद पद्म-पद-विनुतान्तःकरणे-महादेव-विभु-विधु वर-**सुरस्यगणे** सुगतिय नडे पडेदळु ॥

सुररोद्दु पुष्प-वृष्टिय-।
नेरदागळे सुरिये देव-दुन्दुभि-रवमम्-।
बरदोलेसेयल्के बसवले।
सुर-लोकवेय्दिदळु महोत्सवदिन्दम् ॥

नमो वीतराग ॥

[लेख स्पष्ट है। इसमें भी समाधिमरण धारणकर सुगति-प्राप्तिका उल्लेख है।]

[EC, VIII, Sorab tl., No, 142.]

४९२

श्रवणबेलगोला—कन्नड।

[वर्ष प्लवंग = १२७१ ई० (ल० राइस०)]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

४९३

गिरनार—संस्कृत ।

[सं० १३०२=१२७८ ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

[Revised Lists ant. rem. Bombay (ASI, XVI), p. 358, No. 23, t. and tr.]

४९४

हुम्मच;—कन्नड—भग्न ।

[शक ११७०=१२४८ ई०]

[पद्मावती मन्दिर में, प्राङ्गण में दूसरे पाषाण पर]

भद्रं भूयाजिनेन्द्रस्य शासनायाघ-नाशिने ॥

स्वस्ति श्रीमत् स (श)क- वर्ष ११७० नेय प्लवंग-संवत्सरद पुष्य-शुद्ध-पञ्चमी-बृहस्पतिवारदन्दु श्रीमतु से ··· ··· ··· सोमयन मग ··· डे वेग्गडे-त ··· ··· ··· वसेयन ··· दक्षिय समुदायमं ··· मं करदु समस्त ··· ग-सेवितनुमागि व्रतारोपणमं माडिकोण्डु समाधि-विधिर्यि मुड्डुपि सुर-लोक-प्राप्तनाद मङ्गळ महा श्री श्री

[सोमयके पुत्र ··· ··· डे-वेग्गडेके लिये एक समाधिमरणपूर्वक सुरलोक-प्राप्तिका उल्लेख है ।]

[EC, VIII, Nagar tl., No. 50]

४९५

मलालकेरे;—संस्कृत तथा कन्नड ।

शक ११७०=१२४८ ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

४६६

हीरेहल्लि;—संस्कृत और कन्नड़—भग्न।

[शक ११७० = १२४८ ई०]

[हीरेहल्लिमें, मल्लेश्वर मन्दिर की दक्षिणी दीवालके एक पाषाण पर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

नमोऽस्तु ॥

श्रीमत्-पोय्सळ-वंशदल्लि विनयादित्याख्यनादं यशः- ।
प्रेमं तन्नृप-पुत्रनादनेरेयङ्गोर्व्वीश्वरं तत्सुतम् ।
भूमिपाळक-मौळि-लाळित-पदं श्री-विष्णु-भूपाळनुद्- ।
दाम-स्व-क्रम-विक्रमोर्जित-जय-भ्राजिष्णु जिष्णूपमम् ॥
मलेयेळं वसमास्तदोन्दे तळकाडु कोयटूर् कोङ्गु नं- ।
गलि काञ्ची-पुरी गङ्गवाडि पेसर्वेत्तुच्चङ्गि बळ्ळारे बेळ्- ।
वल-नाडा-राचनूर्म्मुडुगनूर्व्वल्लूरिवं कोण्ड तोळ् ।
वलदिं पोल्ववरारो पेळ् भुज-बळ-भ्राजिष्णुवं विष्णुवम् ॥
आ-विष्णुवर्द्धनङ्गम् ।
भावोद्भव-राज्य-लक्ष्मियेनिसिद लक्ष्मा- ।
देविगमुद्भवसिदिनव- ।
नी-विश्रुत-नारसिंहनाहव-सिंहम् ॥
आ-त्रिभुवन पट्ट-महा- ।
देवि मही-देवि विदित-यादव-लक्ष्मी- ।
देवि जय-देवियेनल- ।
देवि जगत्ख्याते नीतेगेभे गुण-गणदिम् ॥

आ-**नरसिंह-देवंगं** पट्ट-महा-देवियेनिसि**देचल-देवि**गम् ।

सकल-कला-परिपूर्ण्ण ।

सकलोर्व्वी-नयन-सुखदनकलङ्क तान् ।

अकुटिळपूर्व्व-नव-सी- ।

तकरं **बल्लाळ-देव**नुदयङ्गेय्दम् ॥

चोळम्मुत्तिरे पन्नेरळ्-बरिसेकं कोळ्पोय्ते तां पोदनेम्बु ।

आळापं बरे साल्ददोन्दु मोळनं मेल्-डे ··· उच्चंगियुं ।

पेळासाध्यवदादुदेन्दु दिविज ··· घर वि. ये **ब-** ।

ल्लाळाळ्दं गिरिदुर्ग-मल्ल-वेसरं **बल्लाल-भूपालकम्** ॥

सानिवारदन्दे पाण्ड्या- ।

वनिपन सप्ताङ्गमेय्दे सिद्धिसिदुदरिम् ।

सानिवार-सिद्धि-वेसरं ।

जनपति **बल्लाल-देव**नेसेदिरे तळेदम् ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरम् । **द्वारावती-पुर**वराधीश्वरम् । त्रिभुवनमल्ल तळकाडु-कोंगु-नङ्गलिं-गंगवाडि-नोळम्बवाडि-बनवसे-हुलिगेरे-हानुङ्गल्-गोंड भुजबळ वीरगङ्गनसहाय-शूर सनिवार-सिद्धि गिरि-दुर्ग-मल्ल चलदङ्क-राम निश्शङ्क-प्रताप होय्सळ-**वीर-बल्लाल-देवरु दोरसमुद्रद** नेलेवीडिनल्लि सुख-संकथा-विनोददिं पृथ्वीराज्यं गेय्युत्तमिरे ।

वृ ॥ मले-नाडन् तुळु-नाडनगाड बयल्-नाडं लसच्चोड-मण्-

डलमं पेर्द्दोरे मेरेयागे बडगल् श्री-**विष्णु**-भूपङ्गे भू -।

तलनं साधिसि कोट्टु माण्डु रणदोळ् मारन्तरं कोन्द दोर्-

व्वळदिं द्रोह-घरट्टनेन्दु पेसर्व्वेत्तं **बोप्प-दण्डाधिपम्** ॥

श्रीमन्महाप्रधानं **हिरिय-दण्डनायकं** द्रोह-घरट्ट-**बोप्प-देवं** आसन्दि-नाड कोण्डलियं तन्न हेसरिं द्रोहघरट्ट-चतुर्व्वेदिमङ्गलमेन्दु पेसरनिट्टु भुवन-वीरावतार-मेम्ब तनपेसर्गनुरूपमप्पन्तव्यतिर्द्दर भरणवागिं सर्व्व-नमस्यवागि बिट्टना-महाग्र-हारद अशेष-महाजनङ्गळुम् ।

कोण्डलिव मावनं भू -।
मण्डल-विदितं समस्त-शास्त्र-विचारा -।
वणिक-पतिमद्-गाहण -।
मण्डलि-तरलीव-खण्ड-चण्डांशु-निभं ॥
भूतेय-नायकगुर्व्वी -।
ख्यातं कटकेक-रत्न-शक-चक्कारम् ।
भूतल-विदितं तत्तनु -।
जातं बल्लाळ-नृप-कुमारं मारम् ।

व ॥ इन्तिनिबरुविर्दु तम्मूरिन्दं बडगण कक्वेगेरेयं केम्मणनकेरेयली-भी वूरं माडबेळकेन्दु प्रार्त्थिसि काळ-गवुण्डन तम्मनप्प होन्न-गवुण्डन जक्क-गवुण्डिय मगनप्प महा-प्रभु-आदि-गवुण्डङ्गे सन्तेयं कोट्टडायय्यनुं तन्न तम्म माडि-गवुण्डनुं मार-गवुण्डनुं अवर मक्कळु माच-गवुण्डनुं मार-गवुण्डनुं नाक-गवुण्डनुं चिक्क-मारेयनोळगागि काडं कडिदु कन्नेगेरेयं कट्टिसि वूरं माडिदरु ॥

आ- बल्लाळ अन्वयवेन्तेन्दोडे ।

कल्ल-गवुण्डम्मुत्तेय ।
........हिरियय्यम् ।
सक्षित-सद्-गुण-गण-मणि ।
सञ्चय ... ळिद होन्न-गौडण्डं जनकम् ॥
आ-नेगळ्द होन्न-गवुण्डन ।
... ... आदि गवुण्डुन ताय् ताम् ।
भू-नुत-पतिव्रता-गुणे ।
जानकियो जक्क-गवुण्डि गुण-निधिये ... ॥
... ... । ... ... ॥
पसुगुणाळिगे पालम् ।
पासट्टमाबमन-वारियागिरे नचम् ।
इत-गाळदोळ् ... ... अ ।

··· सनदिनारादि-गौण्ड ··· ··· ॥
केरेयं कट्टिसुतिप्पुदु- ।
मरवण्टगेयिडिसुतिप्पुदेसे ··· ··· ।
··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ।
··· ··· ··· ··· ··· उज्जुगवेन्दुम् ॥
··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ॥

इसिदर मोगमं नोडम् ।
इसिवुं नीरळ्के यिल्ल कण्ड ··· ··· ।
··· ··· एनिप ··· ··· ··· ··· ।
वसुधेयोळान्नोळ्पडादि-गौडण्डन दोरेयर् ॥
अन्तेसेडादि-ग [व्] ण्डन ।
कान्ते मनः कान्ते नाग-गावुण्डि जगत्- ।
कान्ते पति-भक्ति-गुणदिन्द् ।
अन्तिल्लद जसदिनेसेदळवनी-तळदोळ् ॥
बन्दर् बिद्दिनरेन्दन्द् ।
ओन्दिद सन्तोषदिन्द सासिरकं कय्- ।
सन्ददुणलु बड्डिप-गुण- ।
दिन्दं पेळ्व नाग-गौण्डि ··· ··· ··· ॥
··· ··· ··· ··· । ··· ··· ··· ··· ।
··· ··· भ् - । मण्डलदोळगिन्नु नोन्त कान्तेयरोळरे ॥
अवरिर्व्वर्म्मा पुट्टिद ।
··· माच-गौडण्डनातन तम्मं ।
भुवनाधारं ··· ··· य- ।
नवननुचर ··· ··· चिक्क-मारेयनेम्बर् ॥
अवरोळगं ··· ··· ।
भुवन-हितं माच-गौण्डनेम्ब महात्मम् ।

बवसेयिनोळ्ळिपन्दार्प्पिंद् ।
इवन-बोलागुणिगळेनिसि नेगळ्दं बगदोळ् ॥
... ... ।
... ... मत्तवधिक-बलदिं किरिदल्तु ... ।
... निपं समस्त-पुरुषा- ।
र्त्थ-निधानं मार-गौण्डनर्त्थि-निधानम् ॥
मार-गौण्ड ... ... ।
... ... निधानम् ॥
वारिनिधि-वेष्टितोर्व्वियो- ।
ळारुं तन्ननरिल्लेनिप्पं गुणदिम् ॥
लोकापकार-कारण- ।
नेक-क्रमव ... ... ।
... ... ।
... ... णनी-लोकदोळगे लोकं बण्णेवं ॥
मातृ-पितृ-भक्तनखिळ- ।
ख्यातं पुण्यैक ... त्रि-मूर्त्ति ... ... ।
... ... ।
... ... क तम्मनम्मङ्गणुगम् ॥

आदि-गौण्डन गुरु-कुळ-क्रमवेन्तप्पुदेन्दडे । श्रीमद्-द्रमिळ ... ...वारिसि ... ... धर्म-तीर्त्थं प्रवर्त्तिसुव ... ... द्रस्वामिगळिन्द ... ... पर-वादीश्वर ... ... वृन्द-वंद्य-श्री-पादरशेष-शास्त्र-वार्द्धिग ... ... रायणर्प्पर-हित-व्यापार ... ... गुण-धनं श्री-वासुपूज्य-मुनि ... ...न्त-देवर-शिष्य पेरुमाळे-देवरिगे ... ... न्तोषेद ... ... बसदि माडिसि श्री-देवर-प्रतिष्ठेयं माडिसि आ-देवरष्ट-विधार्च्चनेगं रिषियराहार-दानक्कं जीर्ण्णो-द्धारक्कं नडवन्तागि बिट्ट तळ-वृत्ति (आगेकी ५ पंक्तियोंमें दानकी चर्चा है) सक-वर्ष ११७० नेनेय प्लवङ्ग-संवत्सरदुत्तरायण-सङ्क्रमण-व्यतीपातदन्दु

कोण्डलियशेष-महाजनङ्गळुं आदि-गौण्डनुं माडि कोट्टरु मङ्गल महा श्री (हमेशा का अन्तिम श्लोक) नमोऽस्तु वीतरागाय ।।

[इस लेखमें आदि-गवुण्डने अपने गुरु पेरुमाळे-देवके लिये एक विशाल बसदि बनवायी और उसके लिये (उक्त) कुछ भूमिका दान दिया, और (उक्त मितिको) आदि-गवुण्ड, और उसके पुत्रों तथा गाँवके ४० कुटुम्बोंके साथ कोण्डलिके सारे ब्राह्मणोंने उस भूमि तथा मन्दिरको पेरुमाले-देवको समर्पण कर दिया ।]

[EC, V, Belur tl., No. 138.]

४६७

हुम्मच,—संस्कृत तथा कन्नड—भग्न ।

[शक ११७२ = १२५० ई०]

[पद्मावती मन्दिर में, एक पाषाण पर]

बरमसेन••• नाय•••स्वस्ति

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

स्वस्ति श्रीमत्-**स (श)क- वर्ष ११७२ नेय कीलक-संवत्सरद शुद्ध-श्रावण-दशमी-शुक्रवारदन्दु** श्रीमन्महामण्डलेश्वर श्री-**ब्रह्म-भूपालक**न सचि••• • ••• ••• ••• ••• •••• ••• ••• ••• **ब्रह्मय-सेनबोव**न प्रिय-पुत्र **पार्श्व-सेनबोव** ••• ••• ••• ••• ••• ••• माडि ••• •• ••• ••• •••
••• ••• सुर-लोक-प्रापितनादम् श्री (बाकीका पढ़ा नहीं जा सकता है) ।

[महा-मण्डलेश्वरब्रह्म-भूपालके मन्त्री ••• ••• •• ब्रह्मय्य-सेनबोवके प्रिय पुत्र पार्श्व-सेनबोवने 'समाधि' की विधिसे स्वर्गलोक प्राप्त किया ।]

[Ec, VIII, Nagar tl, No. 56]

४९८

श्रवणबेल्गोला;—संस्कृत तथा कन्नड़—भग्न।

[बिना काल निर्देशका]

[जै० शि० ६०, प्र० भा०]

४९९

हलेबीड;—संस्कृत और कन्नड़।

[शक ११७७=१२५५ ई०]

[हलेबीड से लगी हुई बस्तिहळ्ळिमें, पार्श्वनाथ बस्तिके बाहरकी दीवालके पाषाणके एक ओर]

श्रीमत्-सम्यक्त्व-चूडामणि सळ-नृपना-वंश-सिंहासनस्थम्।
सोमेशं नित्यनप्पन्तोसेदु विजय-तीर्थाधिनाथङ्गे नाल्कुम्।
सीमा-संस्थानदोळ् मुक्कोडे यसेविनेगं नट्टु धर्म्मके कोट्टम्।
भूमीशत्वके तानेन्दरिपुव तेरदि तत्सुतं नारसिंहम्॥

शकवर्ष ११७७ नेय आनन्द-संवत्सरद मार्ग्गशिर-ब १ बृ-दन्दु श्रीमत् प्रताप-चक्रवर्त्ति-होयसळ-श्री-वीर-नारसिंह-देवरसरु बोप्प-देव-दण्णाय-कर बसदिगे बिजयं गेय्दु श्री-विजय-पार्श्व-देवरिगे काणिकेयनित्तु आ-बसदिय मुण्डण शासनवं कण्डु तम्मन्वयराजावळियनोदिसि-गोड्डुत्तविद्दवसरदोळु आ-शासन-स्थवह देव-दानद क्षेत्रदोळगे मय्दुनं पद्मि-देवरु वट्टारव कट्टि मनेय माडि आ-वठारलु हत्तु वरुषदिन्दलु हालागि यिद्दुदनु केळि तम्म अन्वयद धर्म्मवोप्पु ··· कारणवागियु श्रीमत्तु प्रताप-चक्रवर्त्ति-होयसळ-श्री-वीर-सोमेश्वर-देवरसर राज्या-भ्युदयत्रहन्तागियु पूर्व्व-देसे ··· ··· नट्ट कल्लिन्दोळगणभूमिसहित मयिदुन-पद्मि-देवन वठारवनु मी ··· ··· मनेयमाडि आ-विजय-पार्श्व-देवन श्री-कार्य्यव नडिसुवन्तागि सर्व्व-बाधे-परिहारवागि आ-चन्द्रार्कस्थायियागि सलुवन्तागि अन्दिन

धनुस्-संक्रमणदल्लु आ-देवर सन्निधियल्लु आ-कुमार-**नारसिंह-देवरु** तम्म श्री-हस्तदल्लु पुन-[र्]-धारेयनेरेदु कोट्टरु मङ्गल महा श्री श्री श्री

[१२६]

आनन्द-संवत्सरद फाल्गुन-ब २ बु । वन्दु श्रीमद् प्रताप-चक्रवर्त्ति-कुमार-**नारसिंह-देवरसरु** तवगे उपनयनवादल्लि **बोप्प-देव-दण्णायकर बसदिय श्री-विजय-पार्श्व-देवर** श्री-कार्य्यक्के आ-चन्द्रार्क-स्थायियागि नडवन्तागि हिरिय-केरेय केळगे केम···द साल-माविन गट्टिनोळगे कोळद-होलयन पट्टशालेगे कल्ल नट्टु बिट्ट भूमियिन्द मूडल्लु गद्दे गुम्मेश्वरद कोळगदल्लु गद्दे सलगे नाल्कुवम् धारा-पूर्व्वकं माडि सर्व्व-बाधे परिहारवागि कोट्टरु (परिचित अन्तिम श्लोक) मंगळ महा श्री श्री श्री

[सलके वंशमें **सोमेश** हुआ । उसका पुत्र **नारसिंह** था । सोमेशका विजय-तीर्थाधिनाथ (दण्णायक) **बोप्पदेव** था । (उक्त दिन) प्रताप-चक्रवर्त्ति होय्सळ वीर-नारसिंह देवरसने बोप्पदेव-दण्णायककी बसदिका निरीक्षणकर बसदिका पूर्व 'शासन' देखा और अपनी वंशावली पढ़ी । उसने अपने साले या बीबा पाम्र-देवके द्वारा बनवायी गई चहार-दीवारी और एक मकानको, जो कि ध्वस्त हो गया था, सुधरवाकर धनुस्-संक्रमणके समय में विजय-पार्श्व-देवकी सेवामें अर्पण कर दिया ।

[१२६]-कुमार **नारसिंह देवरसने** (उक्त मितिको) अपने 'उपनयन' संस्कारके समय (उक्त) कुछ दान दिये ।]

[EC, V, Belur tl., No. 125 and 126.]

———

५००

हुम्मच;—कन्नड ।

[वर्ष आनन्द = १२५५ ई० ? (लू. राइस) ।]

[पद्मावती मन्दिरके प्राङ्गणमें, १वें पाषाणपर]

श्री-मूलसंघ-देशी-गणद ··· ··· दु-त्रैविद्य-देवर गुड्ड ··· ··· ··· जननी बाळचन्द्र-देवर गुड्डि व्रत-शील-गुण-सम्पन्ने सोयि-देवि आनन्द-संवत्सरद पुष्य-मास-बहुळ-दशमि-बुधवारदन्दु समाधि विधियिं मुडिपि सुर-लोकव सूरे गोण्डळु

माता कामाम्बिका श्रीमान् ··· माधवाह्वयः ।
पुत्री सोमाम्बिका तस्याः सोयि-देवी ··· ज ··· ॥
कवित्वे गमकित्वे च वादित्वे वाग्मिता-जये ।
त्रैविद्य-बाळचन्द्रस्य सदृशो नास्ति नास्ति हि ॥

मङ्गळ महा श्री

[श्री-मूलसंघ और देशी-गणके ··· दु-त्रैविद्य-देवके गृहस्थ शिष्य ··· की माँ, बाळचन्द्र-देवकी गृहस्थ-शिष्या सोयि-देवि, (उक्त मितिको), समाधिकी विधिसे मर गयी और स्वर्गलोकको प्राप्त हुई । उसकी माँ कामाम्बिका थी, पिता माधव, तथा पुत्री सोमाम्बिका थी ।

कवित्वमें, गमकित्वमें, वादित्वमें, वाग्मिता तथा जयमें त्रैविद्य-बाळचन्द्रके समान दुनियाँमें कोई नहीं है, कोई नहीं है ।]

[EC, VIII, Nagar tl., No. 53.]

५०१

श्रवणवेल्गोला;—कन्नड ।

[वर्ष नळ = १२२६ ई० (लु. राइस.)

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

५०२

चिक्क-मागडि;—कन्नड़-भग्न।

[संभवतः लगभग १२५६ ई०]

[चिक्क-मागडिमें, बस्तिके पासके पाषाणपर]

स्वस्ति श्रीमतु यादव-नारायण भुजबल-प्रताप-चक्रवर्त्ति श्री-कन्दार-देवन ११ नेय नळ-संवत्सरद ······ त्र-बहुळ-अमवासे-बुधवारदन्दु मुडिय सा······वन्त सन्यसन-समाधियं माडि सुगति-प्राप्तनादं मङ्गळ महा श्री श्री गण्ड-सैलेन्दु-शशांक ··· कार्त्तिक-कृष्ण-पञ्चमेने हिमना ··· ··· शनिवार वुत्तरायण ··· स ··· ··· प्रणष्ठ ··· देवर गुड्डनेसेव शान्त ··· नवरनु सामन्त ··· ··· मु ··· मनदोळु ता पञ्च-पदवं चिन्तिसुत्त ··· ··· मरमु ··· स्वर्गा-बनके ··· आप्त-बर्ग परिवारं बन्धु-जनमुमाश्रित-जनमुं निलेदेल्लरुं ··· ··· शरणिल्लदेन्दु··· वुत्तिद्दरु।

पुरुष-निधाननं सकळ-भोगियनाश्रित-कल्प-वृक्षनम्।
नर-सुर-धेनु वन्दि-सुर-भूज नवीन-मनोज-रूपन।
गुरु-पद-भक्ति ··· ळ् प्रभाव-सावन्त मुब्वन ··· वोय्देनि ···।
करुणि विधात्रमूल ··· पद-लोभिगळि ··· ··· ··· ··· ··· ॥

(बाकीका मिट गया है)।

[स्वस्ति। यादव-नारायण भुजबल-प्रताप-चक्रवर्त्ति कन्दार-देवके ११वें वर्षमें,—मुडिके सा ··· वन्तने, 'सन्यसन' महोत्सवकी (विधि) को करते हुए, सुखी हालत प्राप्त की। उसकी और भी प्रशंसा। (शिलालेख बहुत घिसा हुआ है।]

[EC, VII, Shikarpur tl., No. 198.]

———

[यह शिलालेख बहुत-कुछ घिसा हुआ है ।)

जिन-शासनकी प्रशंसा । जम्बूद्वीप, भरतक्षेत्र और कर्णाटक विषयकी प्रशंसा ।

बहुल राष्ट्रों का स्वामी, लक्ष्मेश्वर, यादववंशीय राजा रामचन्द्र थे । उसकी उत्पत्ति । जयसिंह नामके कोई राजा थे । इनके पश्चात् [कन्दर राय] और उसका भाई महदेव था । कन्दर रायका पुत्र रामदेव हुआ ।

तत्पादपद्मोपजीवी कूचि-राज था, और राजगुरु जिन-भट्टारक-देव थे । उनकी उत्पत्ति । वीरसेन और जिनसेनाचार्यकी परम्परामें ! गुण-भद्र-योगी और जिन-सेन-योगी हुए । इसके बाद महसेनके पुत्र मुनि पद्मसेन-यतिपकी प्रशंसा आती है ।

उक्त मुनीश्वरके चरणोंका भक्त कूचि-राज था । उसकी उत्पत्ति । वह सिं [ह] देव और महाम्बिकाका पुत्र था, उसका छोटा भाई चट्ट था, पत्नी लक्ष्मा (या लक्ष्मी) थी । उसकी पत्नी लक्ष्मी-देवीकी प्रशंसा । उसका पुत्र बोणदेव था, जो पद्मसेन मुनिके चरणोंका भक्त था ।

पाण्ड्य-देशके मध्यमें स्थित बेतूर की प्रशंसा । माचिके पुत्र हरिप-गौड, माकके पुत्र योग-गौड, तथा सोमके पुत्र राम-गौडका उल्लेख ।

और जब उस कूचि-राजको बेतूर तथा दूसरे गाँवोंका घेरा मिल गया,—और जब उसकी श्री स्वांस्थ हो गयी,—पद्मसेन-भट्टारककी सम्मतिसे, उसने लक्ष्मी-जिनालय खड़ा किया । और कूचने यह मन्दिर श्री-मूलसंघके सेनगणके पोगले-गच्छको दे दिया ।

कूचि-राजने (उक्त मितिको) वीर-महदेव-रायके शुभ हस्तोंसे अग्रहारके रूपमें, लक्ष्मी-जिनालयके लिये, हुणिसेयहल्लि प्राप्त करके तथा १२ होन्नुपर काम करनेवाला एक श्रोत्रिय सदाके लिये नियत कर, उसे पद्मसेन-भट्टारक-देवके पाद-प्रक्षालनपूर्व्वक, उस जिनालयके पार्श्वनाथ देवके लिये एक शासन (लेख) द्वारा सौंप दिया । तथा, गौड लोगोंके साथ-साथ चलकर, उसने एक दुकान तथा सुपारीका एक बगीचा भी दिया ।

[EC, XI, Davangere tl., No 13]

५१२

श्रवणबेल्गोला–संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक ११११ (ठीक ११२५ ?) = १२०३ ई० (फ्लीट्‌)]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

५१३

चिक्क-मागडि; कन्नड़–भग्न।

[बिना काल-निर्देशका]

[चिक्क-मागडिमें, बस्तिके पासके पाषाण पर]

स्वस्ति श्रीमतु यादव-नारायण प्रताप-चक्रवर्त्ति ··· ··· ···देवर वर्षद २८नेय शार्वरि संवत्सरद कार्त्तिक ··· ··· चिक्कमागडिय अकसाले बम्मोज स ··· ··· वदिर ··· ·· गति ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· नेय्दे पुण्डु सत्-पुरुष-सिंघनुदात्त-निकिसवरित पडेद समाधियम् ॥

पडेदु समाधियनिन्नोर ··· ।
पडलडदमर-पुरकेणगि देव-निकायम् ।
गेडेगोडरे सुर-सुखमं ।
पडेदं बम्मोजं अमळ-जिन-मावनेयिम् ॥

[कुनार बम्मोजके लिये उसकी समाधिमरण प्रदर्शक यह लेख है।]

[Ec, VII, Shikarpur tl, No 199]

५१४

हलेबोड—कन्नड़।

[शक ११९७ = १२७४ ई० (कीलहॉर्न)]

[आदिनाथेश्वर बस्तिके पास-बस्तिहल्लिमें]

श्रीमन्नेमिचन्द्र-पण्डितदेवरु केळिदरु

श्रीमद्बाळचन्द्र-पण्डित-देवरु सारचतुष्टयादि-ग्रन्थगळ व्याख्यानमं माडिदपरु*

(बायीं ओर) स्वस्ति श्री **मूलसंघ-देशिय-गण-पुस्तक-गच्छ-कोण्ड-कुन्दान्वयदिङ्गळेश्वरद बळिय श्री-समुदायद-माघनन्दि-भट्टारक**-देवर प्रिय-शिष्यरुं **श्रीमन्नेमिचन्द्र-भट्टारक**-देवरुं श्रीम**दभयचन्द्र-सिद्धान्त-चक्रवर्त्ति**गळुं दीक्षा-गुरुगळुं श्रुत-गुरुगळुमागे तप [स्]-श्रुतङ्गळिं **जगदोळ्** विख्यातं-बेट्ट श्रीम**द्बाळचन्द्र-पण्डित-देवरु सक-वर्ष ११९७ नेय भाव-संवत्सरद भाद्रपद-शुद्ध १२ बुधवारद** मध्याह्न-कालदोळु यमगे समाधियन्दु चातु-र्व्वर्ण्णिगळुगरिपि नीवेल्लरुं धार्मिकरप्पुदेन्दु नियामिसि क्षमितव्यमेन्दु सन्य-सनपूर्व्वकं सकळ-निवृत्तियं माडि पल्यंकासनदोळिर्द्दु पञ्च-परमेष्ठिगळ स्वरूपमं ध्यानिसुतं स्व-समय-पर-समयंगळु मेच्चे उत्तम-समाधियं पडदरु श्रीमद्राजधानी-**दोरसमुद्रद** समस्त-भ-(दायीं ओर) व्य-जन-गळु तत्कालोचितमप्प धर्म्मं-प्रभावनेयं माडि परोक्ष-विनय-मागि गुरुगळ प्रतिकृति-समन्वितं पञ्च-परमेष्ठिगळ प्रतिमेयं माडिसि यथा-क्रमदिं लोकोत्तरमागे प्रतिष्ठेयं माडि पुण्य-वृद्धि-यशो-वृद्धियिं माडिकोण्डरु। भद्रमस्तु जयतु जिन शासनाय।

श्री-जैनागम-वार्द्धि-वर्द्धन-विधुः कन्दर्प्प-दर्प्पापहो

---

*उपर्युक्त पाषाणके सिरे पर दो मूर्तियोंके ऊपर यह लिखा हुआ है।

भव्याम्भोज-दिवाकरो गुण-निधिः कारुण्य-सौधोदधिः ।
स श्रीमानभयेन्दु-सन्मुनि-पति-प्रख्यात-शिष्योत्तमो
जीयात् कावनिशन्निबात्मर्नि रतौ बालेन्दु-योगीश्वरः ॥
पूर्व्वाचार्य्य-परंपरागत-जिन-स्तोत्रागमाध्यात्म-सच्-
छास्त्राणि प्रथितानि येन सहसाभूवन्निळा-मण्डले ।
श्रीमन्मान्य-भयेन्दुयोगि-विबुध-प्रख्यात-सत्-सूनुना
बाळेन्दु-व्रतिपेन तेन लसति श्री-जैनधर्म्मोऽधुना ॥

श्री-बालचन्द्र-पण्डित-देवाय नमः ॥

दूसरा लेख

(उसी बस्तिमें, समाधि-मण्डपके बायीं ओर)

श्रीमदभयचन्द्र-सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगळु व्याख्यानमं माडिदवरु ॥
श्रीमद्-बालचन्द्र-पण्डित-देवरु केळिदवरु ।
श्रीमज्जिनेन्द्र-मुख-निर्गत-दिव्य-वाणी
यस्याननेन्दुमुपसृत्य विवर्द्धमाना ।
तं बालचन्द्र-मुनि-पण्डित-देवमस्मिन्
लोके स्तुवन्ति कवयः परमादरेण ॥
कस्त्वं कामः क एते हरि-हर-विधि-विध्वंसकाः पञ्च-बाणाः
कोऽयं धर्म्मः क एष भ्रमर-मय-गुणस्तेऽत्र किं, योधुकामः ।
संख्यातीतैर्गुणौघैर्ज्जगति दश-विधैश्चारु-धर्म्मैरनन्तैर्-
र्व्वाणैर्व्वाळेन्दु-योगी लसति कुरु ततस्तत्पदाम्भोज-सेवाम् ॥
येनाधीतमतीत-बाधममितं स [ज्]-ज्ञान-सम्पादकम्
शास्त्रं सर्व्व-जनोपकारि विहिताचारोचितां प्रेमतः ।
तस्मादनन्त-भव्य-कञ्ज-तरणेर्व्वाळेन्दु-योगीश्वराद्
आप्तं मुक्ति-सुखैक-साधनमनु प्रेक्षोपदेशादिकम् ॥

दक्षोऽयमक्षपादादि-पक्षमावीक्ष्य तत्क्षणे।
प्रत्यक्षादि-प्रमाणेन भेत्तुं बालेन्दु-सन्मुनिः ॥

वर्द्धतां जिन-शासनम्। श्री-पञ्च-परमेष्ठिगळे शरणु। श्री-बालचन्द्र-पण्डित-देवाय नमः ॥

ॐ ह्रीं हं

[बालचन्द्र-पण्डित-देव 'सारचतुष्टय' तथा अन्य ग्रन्थोंपर टीका बनाते हैं (या करते हैं)। नेमिचन्द्र-पण्डित-देव सुनते हैं (ऊपर पाषाणके माथे पर लिखा हुआ)।

श्री-मूलसंघ, देशिय-गण, पुस्तक-गच्छ, कौण्डकुन्दान्वय, इङ्गलेश्वर-बलि, श्री-समुदायके माघनन्दि-भट्टारक-देवके प्रिय शिष्य,—नेमिचन्द्र-भट्टारक-देव और अभयचन्द्र-सिद्धान्त-चक्रवर्त्ती उनके क्रमसे 'दीक्षागुरु' और 'श्रुतगुरु' थे,—बालचन्द्र-पंडित-देवने चतुर्वर्णोंके सामने यह घोषणा की कि "(उक्त मितिको) मध्याह्न-कालमें मैं समाधि (सल्लेखना) ले लूँगा।" तदनुसार उनके समाधि-मरण प्राप्त करनेके बाद दोरसमुद्रके भव्य लोगों (जैनों) ने उनके स्मारक के रूपमें उनकी (अपने गुरू की) तथा पञ्च-परमेश्वरकी प्रतिमायें बनवाकर उनकी प्रतिष्ठा की। इससे उनका गुण और कीर्त्ति खूब बढ़े।

१३२ वें लेखमें अभयचन्द्र-सिद्धान्त-चक्रवर्त्ती टीका करते हैं। बालचन्द्र-पण्डित-देव सुनते हैं। इसमें बालचन्द्र-पण्डित-देव की प्रशंसा भरी हुई है। कामको भी उनकी सेवा करनेका आदेश इसमें दिया हुआ है।]

[Ec, V, Belur tl. No 131 and 132]

५१५-५१६

श्रवणबेलगोला;—कन्नड़।

[वर्ष भाव=१२७४ ई० ? (लू. राइस.)

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

५१७

श्रवणबेल्गोला—कन्नड़ ।

[बिना काल निर्देशका]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

५१८

गिरनार;—संस्कृत

[सं० १३३३=१२७६ ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

[Revised Lists ant. rem. Bombay (ASI, XVI), p. 353, No. 10, t. and tr.]

५१९

चित्तौड़ (राजपूताना);—संस्कृत ।

[सं० १३३४=१२७७ ई०]

[शृङ्गार चावडी मन्दिर के पास किले की दीवाल में एक पुराने मन्दिर के उल्टे बनाये गये चौखट के ऊपरी भागपर]

(१) (चिह्न) ● ॥ स्वस्ति श्री-सं०-१३३४ वर्षे वैशाख सुदि ३ गु (बु) ध-दिने श्री चु (बृ) हद्-गच्छे सा० प्रल्हादन-पुत्र-सा०-रत्नसिंह-कारित-श्री-शान्ति-नाथ-चैत्ये सा०-समधा-पुत्र-सा०-महण-भार्या-सोहिणी पुत्री-कुम-
(२) रल-श्राविकया मातामह-सा०-ठाडा-श्रेयसे देव-कुलिका कारिता ॥

[लेखमें शान्तिनाथमन्दिरके प्राङ्गणमें एक छोटे मन्दिर (देव-कुलिका) के निर्माण का स्पष्ट उल्लेख है ।]

[ASWI, progress Report 1903-1904, p. 59, t.]

५२०

श्रवणबेलगोला—कन्नड़ ।

[शक १२००=१२७८ ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

५२१

अमरापुर;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक १२००=१२७८ ई०]

[**अमरापुरमें**, तालाब के नष्ट बाँध में एक पाषाण पर]

श्रीमत्परम-गंभीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-वसुमती-भार-धौरेय-दोर्-दण्डरुं अधः-कृतो-द्दण्डरुं **मार्त्तण्ड-कुल-भूषणरुमभिसम्पात-भीषणरुमोरेयूर-पुर**-वराधीश्वरमेनिप्प **चोळा**वनीशरोळु ॥ स्वस्ति श्रीमन्-महा-मण्डलेश्वरं त्रिभुवनमल्ल भुज-बळ-भीम रोद्द गोव खड्ग-सह-**देव अरुवत्तारु**-मण्डळिकर तले-गोण्ड-गण्ड बण्टर बाव पर-नारी-सहोदर पडे मेच्चे गण्ड निगळङ्क-मल्ल भीतरं कोल्ल मरेवुगे काव शरणागत-वज्र-पञ्जरमसहाय-शूर येकाङ्गवीर निश्शंक-प्रताप-चक्रवर्त्ति वीर-दानव-मुरारि **पिरियोण-देव-चोळ-महाराज**रु श्री **पृथ्वी-तिरुमल्लु**-नेलेवीडिनोळु नेलसि सुख-सङ्कथा-विनोददि राज्यं गेय्युत्तमिरलु **शक-वर्ष ॥ १२०० नेय ईश्वर-संवत्सरद आषाढ़-शुद्ध-पञ्चमी-सोमवारन्दु तैलङ्गेरेय जोग-मट्टिगेय ब्रह्म-जिनालय**के मूल-संघ देशिय-गण कोण्ड-कुन्दान्वय पुस्तक-गच्छ यिङ्गळेश्वरद बळिय **त्रिभुवन कीर्त्ति-राउळ**र प्रधान शिष्यरु **बाळेन्दु-मलधारि**-देवर प्रिय-गुड्डुनुं **सज्जयन बोम्मि-सेट्टि**गं **मेळव्वे**गं पुट्टिद **मल्लि-सेट्टि तम्माडियहळ्ळिय** एरेयगुय्यल तन्न एरडु-मागवू एरडु-सायिर-अडकेय-मरनु **तैळङ्गेरेय** बसदिय

प्रसन्न-पार्श्वदेवर प्रतिहस्तवागि मक्कळु-पर्य्यन्तं वृत्तिवन्तनेन्दुं **दक्षिण-पाण्ड्य-देशद दक्षिण-मधुरेय** उत्तर-भागदल्लि **पोन्नर** ··· न्नति-सीमेय **भुवलोक-नाथ-विषयद भुवलोकनाथन** वूर (पुर) जिन-ब्राह्मणरल्लि यजुर्व्वेदद**मैत्रेय-शाखे** वशिष्ठ-गोत्र कौण्डिन्य-मैत्रा-वरुण-वैशिष्टमेम्ब-प्रवरद **दीप-नायकर्ङ्ग पोन्नब्बे**गं पुट्टिद श्री-**सयनगिरियुं** आ-**बाळेन्दु-मलधारि**-देवर प्रिय-शिष्यनु-मप्प **चेन्नपिल्ले**-हस्तदल्लि आ-चन्द्रार्कं-बरं तन्न मेळि-भागवनु धारा-पूर्व्वकं वृत्ति-यागि कोट्ट ॥ यिन्तप्पुदक्के साक्षि हदिनेण्टु-समयं मल्लि-सेट्टि ओप्प श्री-वीतराग हदिनेण्टु-समयद ओप्प सदाशिव-देवरु (वही अन्तिम श्लोक)

[जिन शासनकी प्रशंसा।

स्वस्ति। मार्त्तण्ड-कुल-भूषण, ओरेयूर्-पुरवराधीश्वर, चोळ राजा थे,—जिनमेंसे,—जिस समय महा-मण्डलेश्वर, यिरुङ्गोळ-देव-चोळ-महाराज अपने पृथ्वी-निडुगलके निवासस्थानमें थे:—

(उक्त मितिको,) तैलङ्गेरेमें जोगमट्टिगेके ब्रह्मजिनालयके लिये, (मूल संघ, देशिय-गण, कोण्डकुन्दान्वय, पुस्तक-गच्छ, और इङ्गळेश्वर-बळिके त्रिभुवन-कीर्त्ति-रावुळके प्रधान शिष्य) बालेन्दु मलधारिके प्रिय गृहस्थ-शिष्य, सङ्गयके (पुत्र) बोम्मि-सेट्टि तथा मेळब्वेसे उत्पन्न,—मल्लिसेट्टिने, तैलङ्गेरे बसदिके प्रसन्न पार्श्व-देवके लिये, तम्मडियहळ्ळिमें सुपारीके २००० पेड़ोंके २ हिस्से वंशानुवंश तक जानेके लिये अलग निकाल दिये तथा दीपनायक और पोन्नब्बे-से उत्पन्न चेन्नपिल्लेको वे अर्पित कर दिये। (यहाँ दीपनायकके शहर, खानदान आदिका परिचय दिया है।) चेन्नपिल्ले सयनगिरि और बालेन्दु-मलधारिका प्रिय शिष्य था। साक्षियों के हस्ताक्षर।]

शाप।

[EC, XII, Sira tl., No. 32.]

५२२

कलस—कन्नड़।

[शक १२०० = १२७७ ई०]

[दूसरे ताम्रपत्रके शासनपर]

स्वस्ति श्रीमत्-पट्टद पिरियरसि कळाळ-महादेवियरु पृथ्वी-राज्यं गेयुत्तिरलु शक-काल १२०० नेय ईश्वर-संवत्सरद वृश्चिक ३ आ १ कळसनाथ-देवरिगे जिनेश्वर-देवरिगे मादेवसवागि कलसेट्टिय मादव दारेयनेरसिकोण्डा अक्कि मान २ नडवन्तागि निमानिय मेगे कोडक्किय नि ··· क सहितो गळु बिट्टि तेरमा सलुव प १ लदे आव त्वरूगडेयू अक्क अन्तप्पुदके साक्षि आ-मरसणिय नाळु कळसद हेब्बरुवकळु (औरों का नाम दिया है) कलसनाथदेवर अमृतर्याडिगे अक्कि कुडुवे १ नील-कण्टकोवळ माकेयन कैयलि कोण्ड अलुगल-मकिय ··· हूलियहाळिय मेळे मुदुकिय तलेय गण्ण १ मेले न अन्तप्पुदक्के साक्षि कळसद ग्राम आ-हेब्बारुवकळु।

[जिस समय अभिषिक्त ज्येष्ठ रानी कलाल-महादेवी पृथ्वीका राज्य कर रहीं थीं :—(उक्त मितिको) जब कि यह कलसनाथ और जिनेश्वर दोनोंका महान् दिन था,—कलसेट्टिके पुत्र मादवने, सर्व करोंसे मुक्त, दो 'मान' धान्य (चावल) देनेके लिये (उक्त) दान दिया। साक्षी। उन्हीं देवताके लिये एक और भी (उक्त) भूमिका दान।]

[EC, VI, Mudgere tl., No. 67 l.]

५२३

गिरनार—संस्कृत।

[सं० १३१५ = १२०८ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[Revised Lists ant. rem. Bombay (ASI, XVI), p. 352-353, No. 9 (II part), t. and tr.]

५२४

हलेबीड—संस्कृत और कन्नड़ ।

[शक १२०१ = १२७९ ई०]

[बस्तिहळ्ळिमें, शान्तिनाथेश्वर बस्तिके पहिले ही प्रतिमा पाषाणपर]

(सामने)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
श्री-संघ-रै-कुभृति देशिय-सद्गणाख्य-
कल्पाङ्घ्रिपो लसति पुस्तक-गच्छ-शाखः ।
श्री-कुण्डकुन्द-मुनिपान्वय-चारु-मूलः
सारेङ्गळेश्वर-बळि-प्रब्ळोपशाखः ॥
इन्तु पोगळ्दे-वेत्त यति-सन्ततियोळ् **कुलभूषणा**ख्य-सै- ।
शान्तिक-शिष्यनूर्जित-जिनालय-कारक-**निम्ब-देव-सा-** ।
मान्तन सुव्रतक्के गुरु वाग्-वनिता-पति **माघनन्दि-सै-** ।
द्धान्तिक-चक्रवर्त्ति येसेदं वसुधा-पति-राजि-पूजितम् ॥
नमो **गन्धविमुक्ताय** तच्छिष्याय विमुक्तये ।
विशुद्ध-जैन-सिद्धान्त-नन्दिने **शुभनन्दिने** ॥

तच्छिष्यरु ।

धवळ-यशो-नीरञ्जित- ।
भुवनं कवि-गमक-वादि-वाग्मि-वितान- ।
प्रवरं सार्त्थक-निज-ना- ।
म-विलासं **चारुकीर्त्ति-पण्डित-देवम्** ॥

तच्छिष्यरु ।

कु-मतौघ-निवारकनम् ।

नमस्करिप्पेम् जिनागमोद्धारकनम् ।
विमल-दयाधारकनम् ।
समुदायद माघनन्दि-भट्टारकनम् ॥
श्री-नेमिचन्द्र-भट्टारक-देवोऽप्यभयचन्द्र-सैद्धान्तोऽपि ।
इति शिष्याभ्यां गुरु-माघनन्द्यभूद्धर्म्म-इव ··· भ्याम् ॥

तदुभयरोळ् अभयचन्द्र-सिद्धान्त-चक्रव (दायीं ओर) त्तिगळ महिमेयेन्तेने ।

वृ ॥ छन्दो-न्याय-निघण्टु-शब्द-समयालङ्कार-षट्-खण्ड-वाग्-
भू-चक्रं विवृतं जिनेन्द्र-हिमवज्जात-प्रमाण-द्वयी- ।
गङ्गा-सिन्धु-युगेन दुर्म्मत-खगोर्व्वीभृद्भिदा यत् स्व-धी-
चक्राक्रान्तमतोऽभयेन्दु-यतिपः सिद्धान्त-चक्राधिपः ॥

तदुभयमुं क्रमदि दीक्षा-गुरुगळुं श्रुत-गुरुगळुमागे पेम्पु-वडेद ।

मालिनी ॥ नुत-गुण-मणि-कोशं कीर्त्ति-वल्लीवृताशं
वितत-सदुपदेशं शास्त्र-बोध-प्रकाशम् ।
कृत-मदन-निवासं नौमि निर्म्मोहपाशम्
हत-कुमत-निवेशं बाळचन्द्र-व्रतीशम् ॥

तन्मुनीन्द्र-शिष्यरु ।

स-विशेषागम-वाक्-सुधौषधमनीण्टल् कोट्ट कार-त्रि-दो- ।
ष-विकारङ्गळनेत्ति किल्तु विळसद्रत्नत्रयं रत्नया- ।
गे विनयाळिगे कट्टि रक्षिसिदनी-सिद्धान्त-चक्रेशनेम् ।
भव-रोगक्के सु-वैद्यनोब्बभयचन्द्रं बाळचन्द्रात्मजम् ॥
सासिरदिन्नूरेरडेने- ।
या-शाक-वर्ष-प्रमादि-समदूर्ज्ज-लसन्मा- ।
सासित-पक्षद नवमी- ।
शशिवार-त्रियामदोळ् तन्मुनिपम् ॥
अरिदात्मीय-समाधियं तोरदु सर्व्वाहारमं देहमं ।
मेरेवक्षोभतेयं बगं पोगळे पर्य्यङ्कासन-प्राप्तियिम् ।

नेरेदात्मोद्ध-कलांशुवं दिवदोळं तोर्प्पेन्दलेम्बन्ददिम् ।
तरिसन्दं सूर-मन्दिरक्कभयचन्द्रं चन्द्र सैद्धान्तिकम् ॥
मुददभयचन्द्र-सिद्धान्- ।
ति-देवरय्यद निशिधियं बोरसमु- ।
द्रद नरवरङ्गळ् निर्म्मिसि ।
विदित-यशः-पुण्य-बुद्धियं कैकोण्डर् ॥

मंगलमहा श्री श्री श्री ॥

(बायीं ओर) श्री-**अभयचन्द्र**-सिद्धान्ति-देवर् तम्म शिष्य-**बालचन्द्र**-देवरिगे व्याख्यानं माडिदपरु ॥ श्री श्री

[इस लेखमें बालचन्द्रके श्रुतगुरु अभयचन्द्र महासैद्धान्तिकके समाधि मरणका उल्लेख है ।

जिन शासनकी प्रशंसाके बाद श्री-संघ (मूलसंघ) को एक पर्वत मानकर उसके ऊपर देशिय-गणको एकवृक्षकी उपमा दी है । इस कल्पवृक्षकी जड़ कुन्द-कुन्दान्वय है, इसकी शाखाएँ पुस्तक-गच्छ हैं, और इसकी उपशाखायें इङ्ग-लेश्वर बलि हैं । इसी प्रसिद्ध परम्परामें कुलभूषण-सैद्धान्तिक, उनके शिष्य एक जिन-मन्दिरके संस्थापक निम्बदेव-सामन्त हुए । उस सामन्तके चारित्र-गुरु माघ-नन्दि-सैद्धान्तिक-चक्रवर्त्ति हुए ।

एक गन्धविमुक्त हुए, उनके शिष्य शुभनन्दि-सैद्धान्त, उनके शिष्य चारु-कीर्त्ति-पण्डित-देव, उनके शिष्य समुदायद-माघनन्दि-भट्टारक थे । माघनन्दिके दो शिष्य हुए,—नेमिचन्द्र-भट्टारक-देव और अभयचन्द्र सैद्धान्ती । तत्पश्चात् अभय-चन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्तीकी महिमाका वर्णन । ऊपरके ये दोनों बालचन्द्र-व्रतीशके क्रमसे दीक्षागुरु और श्रुतगुरु थे । बालचन्द्रके पुत्र **अभयचन्द्र** बालचन्द्रके शिष्य हुए । (उक्त मितिकी) रातको अपने सल्लेखनाके समयको जानकर, उसकी विधिको धारण करके **अभयचन्द्र महासैद्धान्तिक** दिवंगत हुए ।]

[EC, V, Belur tl., No. 133.]

५२५

कडकोल;—कन्नड़ ।

[शक १२०१ = १२७१ ई०]

[कडकोल गाँवके अन्दर हणमन्त या हनुमान मन्दिरके पासके स्मारक पाषाण पर यह अभिलेख है]

[१] स्वस्ति श्री स (श) कवर्ष १२०१ प्रमाथि-संवत्स-
[२] रद भाद्रपद सु (शु) द्ध छ [ट्] टि सोमवारदन्दु श्रीम-
[३] न्-मूलसंघद पडुमसि (? से) न-भट्टारकदेवर गु-
[४] [ड्ड] डि कडकोळद सावन्त सिरियम-गौडन हेण्डति
[५] चण्डिगौडि सर्व्व-निवि (वृ) त्तियं कयि-कोण्डु स-
[६] माधि (धि) यिं मुडिपि स्वर्ग्गप्राप्तेयाद निषिधि (धि)-
[७] य स्तम्भम् [।] मंगळ-महा-श्री-श्री-श्री [॥]
[८] हिर्य्य-बोप्पगौड चिक्क-बोप्पगौड चिक्कगौड
[९] क (?) लिदेव रुधा (?) घ (?) चिरिदेव मुख्य हन्नेरडु-हि-
[१०] टु समस्त-प्रजे बसदिगे कोट्ट येरे मत्तरु १ [।] श्री-
[११]-वान्य मङ्गल-महा-श्री-श्री-श्री [॥]

अनुवाद—स्वस्ति ! पवित्र मूल संघके पडुमसेन-भट्टारकदेवकी गुड्डि (शिष्या या अनुयायिन); (तथा) कडकोळके सावन्त-सिरियमगौडकी पत्नी चण्डिगौडिकी (स्मृतिका) यह 'निषिधि'-स्तंभ है । उसने यह समाधि सर्व इन्द्रियोंके विषयोंसे निवृत्त होकर तथा सर्व सांसारिक कार्योंका त्याग करके प्रमाथि संवत्सर—जो शक वर्ष १२०१ था—के भाद्रपद (महीने) के शुक्ल पक्षकी छठ, सोमवारको ली थी स्वर्ग प्राप्त किया था । मंगल और लक्ष्मी बढ़े ! १२ हिट्टु तथा हिर्य्य-बोप्पगौड, चिक्क-बोप्पगौड चिक्कगौड, (?) (कलिदेव, (तथा) रुवाघविरिदेव प्रमुख सब लोगोंने बसदिके लिये ! 'मत्तर' काली-मिट्टी वाली भूमि दी । मंगल-महा-श्री-श्री-श्री !

[IA, XII, P. 100–101. No 2. T and Tr]

५२६

चिक-मगलूर—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक १२०२=१२८० ई०]

[चिकमगळूरमें, लालबागमें एक पाषाण पर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ।

श्रीमन्-नाळ-प्रभु सु-चरितनेने विनय-निधियु निर्म्मल-चित्तं प्रेमं बुध-जननिकरका-लय वासुनेमं सकळजनकाधारं धार्मिष्टं वीरं धुरन्धरं पुरुषाकारं कामरूपं **मसण-गावुण्ड**नग्र तनूजं **सोम**-नामं धरेयोळ् ।

जिन-समय वर्धि-वर्द्धन [न्] । अनवरतं चातु-वर्णकितुं तणियम् ।
घन-महिम-श्रेयांम-। मुनियगुड्डनु विनय-निधि चलदङ्क-रामनेनिपं सोमम् ॥
आरडि-गौण्डेयव्वे · · । सारदे गुण-रत्न-भूमि-चिन्तामणिय · · · ।
· · · इं नोदंं तावरे । तोरद · · · सोम-गौण्डनेम्त्र निधानम् ।

स्वस्ति परम-जिन-समय-समुद्धरण-करण परिणतनुमेनिसिद **श्री-मूल-संघद देशि-गण-पोस्तुक-गच्छ हनसोगेय बळि कोण्डकुन्दान्वयद श्रेयान्स-भट्टारक गुड्ड चिक्कमुगुळिय** मसण-गौडनग्र-सुत **सक-वरुस१२०२ नेय विक्रम-संवत्सर**द **श्रावण-शुद्ध-तदिगे मंगळवारदन्दु सोम-गौड** समाधि वडदु सुर-लोक-प्राप्तनाद ई-निषिधिय कल्ल आतन मग **हेग्गडे-गौड** प्रतिष्ठे माडिद अष्ट-विधार्च्चने चरुविगे कारुविय गुळिय गद्दे · · · कोम्ब ५ · · · · · ·

[जिन शासनकी प्रशंसा । मसण-गौडके पुत्र सोमकी प्रशंसा ।

चिक-मुगुळिके मसण-गौडके ज्येष्ठ पुत्र सोम-गौड, जो श्री-मूलसंघ, देशि-गण, पोस्तक-गच्छ, हनसोगे-बलि तथा कोण्डकुन्दान्वयके श्रेयान्स-भट्टारकका गृहस्थ-शिष्य था, के समाधिमरण धारणकर स्वर्ग जानेके बाद, उसका यह स्मारक-पाषाण

उसके पुत्र हेग्गडे-गोडने खड़ा किया था। उस समय अष्टविध पूजनके लिये (उक्त) भूमिका दान दिया था।]

[Ec, VI, Chikmagalur tl., No, 2]

५२७

श्रवणबेल्गोला—कन्नड़।

[शक १२०३ (ठीक १२०१ ?)=१२८१ ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

५२८

श्रवणबेल्गोला—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक १२०५ = ११८२ ई०]

[जैन शिलालेख संग्रह, प्रथम भाग]

५२९

गिरनार—संस्कृत।

[सं० १३३९=१२८२ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[Revised Lists ant rem Bambay (ASI, XVI), p. 352–353, No 9 (lst parh), t. and tr.]

५३०

गिरनार—संस्कृत।

[सं० १३३९ = १२८२ ई०]

श्वेताम्बर लेख

[Ant. Kathiawad. and kachh (ASWI, II), p. 169, tr.]

५३१

कण्ठकोट;—संस्कृत ।

[सं० १३४० = १२८३ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[ASWI, Selections, No. CLII, p, 64, a.; p. 86, t. (ins, No. 26).]

५३२

सियाल-बेट;—संस्कृत ।

[सं० १३४३ = १२८६ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[ASI, XVI, p. 254, t.]

५३३

श्रवणबेलगोला;—कन्नड़ ।

[वर्ष सर्वधारी=शक १२१०—१२८८ ई० (कीलहौर्न)]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

५३४

तवनन्दि;—कन्नड़ ।

[वर्ष सर्वधारी = १२८८ ई० ?]

[तवनन्दिमें, किलेकी बस्तिके दक्षिणकी ओरके समाधि-पाषाणपर]

स्वस्ति श्रीमतु सर्व्वधारी-संवत्सरद आषाढ़-सुद्ध-तदिगे-बृहस्पति-वारद
श्रीमतु काणूर-गणद माधवचन्द्र-देवर गुड्डि श्रीमत्-बाळु-प्रभु माळि-गौडन

५४७

हिरे-आवलि;—कन्नड़।

[वर्ष विकारी = १२६१ ई० ? (लू० राइस) ।]

[हिरे-आवलिमें, ध्वस्त जिन बस्तिके सामनेके ११ वें पाषाण पर]

स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वरं तुळुव-राय ······ ··· राय-बेण्टेकार मलेयमण्डलिक-मदेभ-कुम्भ-विदळन-वेदण्डारि-सदृश श्रीमन्महामण्डलिक कोटि-नायकन राज्याभ्युदयदन्दु विकारि-संवत्सरद श्रावण-मास-शुक्लपक्ष-पञ्चमी-शनिवार-वृन्दु श्री-मूल-संघ देशी-गण-कोण्डकुन्दान्वयद समस्त-गुण-शील-सम्पन्नरप्प गुणनन्दि-भट्टारकर गुड्डु खण्ड-स्फुटित-जीर्ण्ण-जिनालयोद्धरण-परिणतान्तःकरणनु आहाराभय-भैषज्य-शास्त्र-दान-विनोदनुं सम्यक्त्व-रत्नाकरनु जिन-गन्धोदक-पवित्री-कृतोत्तमांगनुमप्प श्रीमन्-नाळ्-प्रभु अवलिय शिरियम-गौडन सर्व्वांग-लक्ष्मि शिरियम-गौडि सकल-सन्यसन-पूर्व्वकं समाधियि मुडिपि स्वर्ग्गस्तेयादळु ॥ मङ्गल महा ! श्री

[लेख स्पष्ट है । १२६६ ई०; कोटि-नायकका राज्य था ।]

[Ec, VIII, Sorab tl., No 122.]

५४८

हलेबीड—संस्कृत और कन्नड़।

[शक १२२२ = १३०० ई०]

[बस्तिहळ्ळिमें, दूसरे प्रतिमा-पाषाण पर]

(सामने)

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति श्री मूल-संघ-देशिय गण-पुस्तक-गच्छ-कुण्डकुन्दान्वयद पिङ्गलेश्वरद बळिय श्री-समुदायद **माघनन्दि-भट्टारकदेवर** प्रिय-शिष्यरु **श्री-नेमिचन्द्र-भट्टारक-देवरु** श्रीमद्**भयचन्द्र-सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगळुं** विद्या-गुरुगळुं अत-गुरुगळुमागे तपश्श्रुतंगळिं जगदोळ् विख्यातियं पेट्ट श्रीमद्**बाळचन्द्र-पण्डित-देवर** प्रियाग्र-शिष्यरुमप्प श्रीमद्**रामचंद्र-मलधारि-देवरु सक-वरुष-सासि-रदिन्नूरिप्पत्तेरडनेय साव्वंरि संवत्सरद-चैत्र-बहुल-तदिगे-बृहद्वार-दपराह्नकाल**दोळेमगे समाधियेन्दु चातुर्व्वण्णंगळ्गरिपि (बायीं ओर) नीमेलरुं धार्म्मिकरप्पुदेन्दु नियामिसि ज्ञमितव्यमेन्दु सन्यसनपूर्व्वकं सकळ-निवृत्तियं माडि पर्यङ्कासनदिं पञ्च-गुरु-चरण-स्मरणेयं माडुत्त दिवके सन्दरु। अवर तपो-माहात्म्य-मेन्तेन्दोडे।

नडेवडे बाहु-दूगड युगान्तरमं नेरे नोडदावगम्।
नडेयद कामिनी-कन*मं सले शोकद कर्कसङ्गळम्।
नुडियदहर्न्निशं विकथेयं मारेदाडद मोह-पाशदोळ्।
तोडरट्ट ··· **मलधारिय** ··· ··· ··· विराजिकुम्॥

श्रीमद्रामचन्द्र मलधारि-
देवरु तम्म प्रियाग्र-शिष्यरु-
मप्प **शुभचन्द्र-देव**रिंगे श्रे-
यो-मार्गोपदेशमं माडियरु
अवरु केळिहरु॥

श्रीमद्-बालचन्द्र-पण्डित-देवरु
तम्म प्रियाग्र-शिष्यमरुप्प श्री-
मद्-**रामचन्द्र-मलधारि-देव**रिंगे
सारचतुष्टयं मोदलाद ग्रन्थगळ
व्याख्यानं माडिहरु अवरु केळिहरु॥*

यिन्तु पोगळ्ते-वेत्त श्रीमद्रामचन्द्र-मलधारि-देवर प्रतिकृति-समन्वित-पञ्च-परमेष्ठिगळ प्रथुमेगळं श्रीमद्-राजधानि-**दोरसमुद्रद** भव्यजनंगळु माडिसि पुण्य-वृद्धि-यशोवृद्धिय कैकोण्डरु॥ भद्रमस्तु जिनशासनाय मंगल महा श्री॥

[इस लेखमें रामचन्द्र-मलधारि-देवके सल्लेखना-व्रत लेनेका उल्लेख है। रामचन्द्र-मलधारिदेवके गुरु बालचन्द्र-पण्डित-देव, इनके गुरु माघनन्दि-भट्टारक

* ये दो प्रतिमाओं पर लिखे हुए हैं।

देव, ये मूलसंघ, देशिय-गण, पुस्तक गच्छ, कुण्डकुन्दान्वय, पिङ्गलेश्वर-बलि और श्री-समुदाके थे। बा० प० दे० के विद्यागुरु नेमिचन्द्र-भट्टारक-देव और श्रुत-गुरु अभयदेव-सिद्धान्त-चक्रवर्त्ति थे। रा० म० दे० के शिष्य शुभचन्द्र देव थे। इनकी प्रतिमा दोरसमुद्रके जैनोंने बनायी थी।

[Ec, V, Bel w tl., No I34]

५४९

हलेबीड—कन्नड़।

[बिना काल-निर्देशका पर लगभग १२०० ई० ?]

[हलेबीडसे लगी हुई बस्तिहल्लिमें, पार्श्वनाथ बस्तिके बाहरकी दीवालके स्तम्भ पर]

ईशान्यद-आदि-मोदलागि ईशान्यद हदिनैदु-कैयन्तरदल्लु आरुगय्युच्चेदट्ट शान्तिनाथ-देवरु भूमिस्थवागिद्दहरु आवनानुं पुण्य-पुरुषं तेगदु प्रतिष्ठेय माडि पुण्यमं माडिकोळ्बुदु ॥

[ईशान दिशासे शुरू करके, उससे (ईशान दिशासे) १५ बिलस्तके अन्तरपर शान्तिनाथ देव, जिनकी ऊँचाई ६ बिलस्त है, जमीनके अन्दर गड़े हुए हैं। कोई पुण्य-पुरुष उनको बाहर निकालकर, उनकी प्रतिष्ठाकर पुण्यका लाभ ले।]

[Ec, v, Belur tl. No 127]

५५०

पर्वत आबू—प्राकृत।

[सं० १२६०=१२०३ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[Asiat, Res, XVI, P. 311, No XX, a.]

५५१

होन्नेनहल्लि;—कन्नड ।

[शक १२२५ = १३०३ ई०]

[होन्नेनहल्लि (मिरजाबि प्रदेश) में,बस्तिके प्रवेशके बायीं ओरके पत्थरपर]

स्वस्ति श्री मूलसंघ देशियगण पोस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वय इनसोगेय बळिय श्री **बाहुबलि-मलधारि-देवर** प्रिय-शिष्य-रुमप्प **श्री-पद्मनन्दि-भट्टारक-देवरु शक-वर्ष १२२५ शुभकृतु-संवत्सरदन्दु होन्नेयनहळ्ळिय** बसदिय गन्ध-गुडियनु गद्याणं इदिनय्दनू कोट्टु माडिसिदरु (**बाहुबलि-देवरु पारिश्व-देवरु** बरसिदरु) मङ्गळमहा श्री इवनळिदवरु नरकक्के लोहरु ॥

[पद्मनन्दि-भट्टारक-देवने, जो मूलसंघ देशीगण पुस्तकगच्छ तथा कोण्डकुन्दान्वयके, और इनसोगेके बाहुबलि-मलधारि-देवके प्रिय शिष्य थे, होन्नेयनहल्लि बसदिको १५ 'गद्याण' (गद्याण एक सिक्का (मुद्रा) विशेष है) दिये और उसके लिये 'गन्ध-गुडि' भी बनवायी थी। (इस लेखको बाहुबलि-देव और पारिश्व-देवने लिखा था।)]

[EC, IV, Hunsur tl., No. 14]

५५२

श्रवणबेल्गोला;—कन्नड ।

[शक १२३४=१३१२ ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भाग]

५५३

गिरनार,—संस्कृत

[सं० १२७०=१२१३ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[Revised Lists ant. rem. Bombay (ASI, XVI), p. 362, No. 36, t. and tr.]

५५४

पर्वत आबू—संस्कृत।

[सं० १२७९ = १२२२ ई०।]

श्वेताम्बर लेख।

[Asiat. Res. XVI, p. 312, No XXII, a.]

५५५

कुप्पटूर;—संस्कृत तथा कन्नड़।

वर्ष चित्रभानु [१२४२ ई० (या १३०२) ? (लू. राइस)]

[कुप्पटूरमें, चौथे पाषाणपर]

श्रीमत्परम-गंभीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम्॥
द्वीपे जम्बूमति क्षेत्रे भारते भोचरा न्वते।
चन्द्रगुप्तेन सु-क्षेत्र-धम्मगेहेन धीमता॥
रक्षितो दक्षिणा-पा ··· -जन-सम्पद्-विराजितः।
अ··ण्डैश्वर्य-निलयो नागरखण्डक-नाम-भाक्॥

स्वस्ति-भागस्ति विषयो विषयोऽखिल-सम्पदाम् ।
निलयो लय-राहित्यादासतां धीमतां सताम् ॥
तत्र ॥ नाळिकेराम्र-पूगा [···] द्यारामेण विराजितः ।
विद्यते **कुप्पटूराख्यो** ग्रामो **गोपेश**-रक्षितः ।
तत्रास्ति **हरिहरा**धीश-भू-सती-तिलकोपमः ।
जिन-चैत्यालयो नाम **कदम्बैः** कृत-शासनः ॥
तच्चैत्य-पूजनोद्योग-चातुरी-वार्द्धि-चन्द्रमाः ।
चन्द्रप्रभ इति ख्यातः **पार्श्वनाथ**स्य बान्धवः ॥
पितृ-**दुर्गेश**-निर्दिष्ट-गुरु पण्डित-सेवकः ।
वर्त्तमाने चित्रभानौ वत्सरे कार्त्तिके च सः ॥
मासे स कृष्ण-दशमी-तिथौ सोम-समाह्वये ।
वारे दुर्व्वार-यम-राड्-दूत-ज्वर-गदार्द्दितः ॥
आयुः-परिसमाप्तेश्च कृत-पुण्य-परिग्रहः ।
स-सुतः ··· ··· ··· ··· नित्य-सुखास्पदम् ॥

श्री श्री

[जम्बूद्वीप, भरतक्षेत्रमें श्रीधरपर्वतके पास नागरखण्ड नामका एक प्रदेश था। उसमें अनेक फल सहित वृक्षोंके बगीचों सहित, गोपेश द्वारा रक्षित कुप्पटूर् नामका गाँव था। उसमें राजा हरिहरकी भूमिमें एक जिन-चैत्यालय था, जिसमें कदम्बोंकी तरफसे एक शासन (दान-लेख) मिला था। उस चैत्यमें पार्श्वनाथके बान्धव प्रसिद्ध चन्द्रप्रभ थे जो कि एक पण्डितके गुरु थे। (उक्त मितिको) उसे यमराजके दूतोंकी तरफसे बुखार आ गया और अपनी ज़िन्दगीका अन्त करके नित्य सुखके स्थान (अर्थात् स्वर्गको) चला गया।]

[EC, VIII, Sorab tl., No. 263]

५५६

हिरे-आवलि;—कन्नड ।

[वर्ष विजय = १३४६ ई० ? (लू. राइस) ।]

[हिरे-आवलिमें, ध्वस्त जैन-बस्तिके सामनेके पाषाणपर]

व्यय-संवत्सरद ज्येष्ठ-सु ५ गु रामचन्द्र-मलधारि गुरुगळ गुड्ड अवलिय चन्द्र-गौडन मग राम-गौड जिन-पदवनर्यिदद ।

[लेख स्पष्ट है । १३४६ ई०; राजाका उल्लेख नहीं है ।]

[EC, VIII, Sorab tl., No. 123]

५५७

तिरुमलै,—तामिल ।

[?]

१. स्वस्ति श्री [।।] राजनारायणन् शंबुवराजर्क्कु या-

२. ण्डु १२ वदु पोन्नूर् मण्णैपोन्नाण्डै

३. मगळ् नल्लात्ताळ् वैगैत्तिरुमलैक्कु एरियरुळ-

४. प्पण्णिन श्रीविहारनायनार् पोन्नेयिल्-

५. नाथर् [।] धर्म्मायिडुयतु [।।]

[यह लेख राजनारायण शम्बुवराजके १२वें वर्षका है और वैगै-तिरुमलै, अर्थात् वैगैके पवित्र पर्वतपर जैन प्रतिमाकी प्रतिष्ठापनाका उल्लेख करता है। इस प्रतिष्ठापनाकी करनेवाली पोन्नूरकी निवासी मण्णै-पोन्नाण्डैकी पुत्री नल्लाताल् थी।]

[South Indian ins., I, No. 70 (p. 101–102) t. & tr.]

५५८

हिरे-आवलि;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[वर्ष विजय=१३५३ ई० (लू. राइस) ।]

[हिरे-आवलिमें, ध्वस्त जैन-बस्तिके सामनेके १०वें पाषाणपर]

श्रीमत्परम-गंभीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वरं अरि-राय-विभाडु श्री-वीर **हरियप्प-वोडेयर** राज्योदयदन्दु **विजय संवत्सरद** पुष्य-सुद्ध ३० शु ॥ श्रीमनाळुव-प्रभु **राम-चन्द्र-मलधारि-देवर** गुड्ड सुरगियहळ्ळिय **गोप-गौडनु** मग अवलिय **काम-गौण्डन** मोम्म **काम-गवुडनु** पञ्च-नमस्कारदिं मुडिहिद् मङ्गल महा श्री

[लेख स्पष्ट है । १३५३ ई०; उस समय हरियप्प-वोडेयरका राज्य था ।]

[EC, VIII, Sorab. tl., No. 110]

५५९

हिरे-आवलि;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक १२७६=१३५४ ई०]

[हिरे-आवलिमें, ध्वस्त जैन-बस्तिके चौथे पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वरं अरि-राय-विभाडु **हिन्दुव-राय-सुरताळ** श्री-वीर-हरियप्प-वोडेयर राज्योदयदन्दु **शक-वरुष १२७६ विजय-संवत्सरद** पुष्य-बहुळ-तदिगे आ ॥ श्रीमन्नाळुव-प्रभु-आवलिय काम-गौडन मग 'सिरियम-गौड

सिरियप्प-गौडन सुपुत्र मल-गौडनु सन्यासन-समाधियिं मुडिपि स्वर्गास्तनादनु आतन अर्द्धांङ्गि चेन्नकनु सहगमनदिं स्वर्गस्तेयादळु । मंगळ मा (महा) श्री श्री

[ऊपरके उल्लेखोंके समान ही, महामण्डलेश्वर, शत्रु राजाओंका नाशक, हिन्दुव राजाओंका सुरताल, हरियप्प-वोडेयरके राज्यमें,—स्वर्गगत मालगौड तथा उसकी भार्या चेन्नके, जिसने 'सहगमन' करके स्वर्ग प्राप्त किया, के लिये भी उल्लेख है ।]

[EC, VIII, Sorab tl.. No. 104]

५६०

मलेयूर;—संस्कृत तथा कन्नड ।

[शक सं० १२७७=१३५५ ई०]

[उसी पहाड़ीपर, बड़े गोल पत्थरके पूर्वकी ओर]

स्वस्ति समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्री **मूलसंघ देशिय-गण कोण्ड-कुन्दान्वय पुस्तक-गच्छ हनसोगेय बळिय** श्रीमद्-राय-राजगुरु-मण्डलाचार्य-समयाचरण-रुमप्प **हेमचन्द्र-भट्टारक**र शिष्यरु **तेलुग आदि-देव**रु **ललितकीर्त्ति-भट्टारक**र शिष्यरु **ललितकीर्त्ति-भट्टारकरु शक-वरुष १२७७ मन्मथ-संवत्सरद** चैत्र-बहुळ १४ गुरुवारदल्लु तम्म निषिधि-निमित्वागि कनकगिरि-यल्लु माडिसिद **विजय-देव**र प्रतिमेगे अवर मुख्यवाद आचार्य्य ओलगरु मङ्गलमहा श्री श्री श्री

[श्री-मूलसंघ, देशियगण, कोण्डकुन्दान्वय, पुस्तकगच्छ तथा हनसोगे-बळिके हेमचन्द्र-भट्टारकके शिष्य तेलुग आदि-देव और ललितकीर्त्ति भट्टारकके शिष्य ललितकीर्त्ति भट्टारकने अपनी निषिधिके निमित्तसे कनक-गिरिपर **विजय-देव**की प्रतिमा बनवायी ।]

[EC, IV, Chamarajnagar tl., No. 153]

५६१

कणवे;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक १२८४ = १३६२ ई०]

[कणवेमें, मल्लणादूरेके समीप, करसु-बस्तिमें एक पाषाणपर]

श्री-मूल-संघ-देशी- ।
गण - क-गच्छ कोण्डकुन्दान्वयदोळ् ।
भूमियोळखिळ-कला··· ।
काम-करं चारुकीर्ति-पण्डित यतिपम् ॥
श्रीमत्परमगम्भीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरमरि-राय-विभाड भासेगे तप्पुव रायर गण्ड समुद्र-त्रयाधीश्वर श्री-सङ्गमेश्वर-कुमार श्री-वीर-बुक्क-महारायरु राज्यं गेय्युत्तिरे अवर कुमार विरुपण्ण-वोडेयरु मले-राज्यवनाळुवल्लि हेद्दूर-नाडोळगे तडताळ पार्श्व-देवर देव-स्वद सीमा-सम्बन्धक्के आ-हेद्दूर-नाडवरु आस्थानद आचारियरु सूरिगळ कूडे संवादव माडिदडे श्रीमन्महा-प्रधानं नागण्णगळु प्रधानि-देवरसरू आ ··· ··· दा देवरसरू ··· ··· ··· जैन-मल्लप्पनू आरगद चावडियल्लि मूरु-पट्टणद हलरनू हदिनेण्टु-कम्पणवनू करसि विचारिसि आ-नाड-नोडम्बडिसि पडकोट्टु पूर्व-मरियादेयलि मूडलु बेट्ट तेङ्कलु बेट्ट पडवलु हळ्ळ बडगलु होळे सीमेयागि पार्श्व-देवर देवस्ववेन्दु चतुस्सीमेयनु विवरिसि शक-वर्ष १२८४ शुभकृत्संवत्सरद माघ-शुद्ध-पञ्चमी-गुरुवारदलु आ-अरसु प्रधान-रनू (औरोंके नाम दिये हैं) तडताळनु आ-चन्द्रार्क नडव हागे शासनव नडसि कोट्टरु (ये ही अन्तिम वाक्यावयव) !

अक्षय-सुख-मी-धर्म्ममन् ।
ईक्षिसि रक्षिसुव पुण्य-पुरुषर्म्माङ्कुम् ।

भक्तिसुवातन सन्ता- ।
न-त्रयमायु-त्रयं कुळ-त्रयमक्कुम् ॥

श्री-**मूलसंघ-देशिगण-पुस्तक-गच्छ-कोण्ड-कुन्दान्वय** ··· ··· ··· ···

श्री-मूलसंघ, देशि-गण, पुस्तक-गच्छ, तथा कोण्कुन्दान्वयमें चारुकीर्त्ति-पण्डित-यतिप थे। जिन शासनकी प्रशंसा। जिस समय महामण्डलेश्वर, संगमेश्वरके पुत्र वीर-बुक्क-महाराय राज्यका शासन कर रहे थे,—हेद्दूर-नाड्के तडताळके पार्श्व-देव मन्दिरकी जमीनकी सीमाओंके विषयमें जब हेद्दूर-नाड्के लोगों और मन्दिरके आचार्यों में झगड़ा चल रहा था,—प्रधानमंत्री नागण्ण और अनेक अरसू लोगोंने, इसकी जांच-पड़ताल करके, फैसला कर दिया। और इस बातका शासन (लेख) लिख दिया।]

[EC, VIII, Tirthahalli tl., No. 197]

५६२

हिरे-आवलि;—कन्नड

[शक १२२६ (Sic), वर्ष पार्थिव=१३६१ ई० ? (लू. राइस) ।]

[हिरे-आवलि में, ध्वस्त जिन-बस्तिके सामनेके द्वितीय पाषाण पर]

श्रीमतु। **विजयानगर**-मुख्यवाद-समस्त-पट्टणाधीश्वर श्री-**अभिनव बुक्क-राय** राज्यं गेय्वल्लि। सकल-गुण-सम्पन्न **सिद्धान्त-देवर** गुड्ड। रत्न-त्रयाराधकरुम्। **आवलिय बेच-गौण्डन** सुत **चन्द्र-गौण्डन** तम्म। **सक-वरुष १२२६ नेय पार्त्थिव-संवच्छरं ब ११ सोमवारदलु**। सन्यसन-समाधि-विधिर्दिं मुडिहि स्वर्ग-प्राप्तियादनु। मङ्गळमस्तु।

मान-गर्व्वनु ··· ··· लनु -।
मानदोळं नडिय बल्लमोल्दा-तेरदिम्।
ज्ञानिगळ सलहुतिप्पम्।
दान-रतं रा ··· पुरकभिरामन् ॥

[जिस समय विजयनगर और दूसरे समस्त पट्टण (नगरों) का अधीश्वर, अभिनव-बुक्क-राय राज्य कर रहा था :—

सिद्धान्त-देवका गृहस्थ-शिष्य, आवलि-बेच-गौडके पुत्र चन्द-गौडका छोटा भाई, (उक्त मितिको), सन्यसन और समाधि-विधिसे मरकर, स्वर्ग गया। उसकी प्रशंसामें श्लोक।]

[Ec, VIII Sorab tl, No 102]

५६३

कुप्पटूरु;—संस्कृत तथा कन्नड।

[शक १२८६ = १३६७ ई०]

[कुप्पटूरमें, जैन-बस्तिके पासके वीरकल् पर]

शक-कालं नव-वारण-द्वि-शशि-संख्योक्त-प्लवंगाब्ददुत् -।
त्सुकदाषाढद मासदोळ् विधु-लसद् वारं समन्तोन्दिरल्।
प्रगट-बेत्तातिसय्यवा-श्रुत-मुनि-श्री-पाद-सेवा-रतर्।
सु-कवीन्द्र-स्तुत-**देवचन्द्र-मुनिप**र् स्वर्-लोकमं पोर्द्दिदर्॥
श्रुत-मुनिगळ शिष्यर् भू -। नुत-देशी-गणद **देवचन्द्र-व्रतिप**र्।
यति-कुल-ललामरत्यू र् -। जित-तेजरन्नेगळ्दर**ादिदेवर** गुरुगळ्॥
श्रुत-मुनि-वल्लभेन्द्र-गुरु दीक्षेयनीयलदादियागतूर् -।
जि [त]-गुण-शील-सच्चरि ··· ··· ··· ··· कूडि वेत्त्।
अतिस (श) य-जैन-धर्म्मद निमिर्क्केयोळोन्दि विराजिसिर्द्दी -।
क्षितियोळु **देवचन्द्र-मुनि**-वर्य्यरुमागम-कोविदर्व्विजम्॥
जीर्ण्ण-जिन-भवनमं धरे। वर्णिसलुद्धरिसि कीर्त्तियं तळेदरु सम् -।
पूर्ण्णतर-चरितरेनि [सि] द्। अर्ण्णव-गम्भीर देवचन्द्र-व्रतिपर्॥
नेगळ्दा-मुनिपर् भव-मा-। लेगळिक सन्यसनदिं समाधियनेय्दिद्।

अगणित-महिमेयोलोन्दिद । सु-ग [ति] यनान्तर्व्विनेय-जन-नुत-चरितर् ॥
श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
श्रुत-मुनि-वर्य्याद् भव्यात् पूज्य-श्री-देवचन्द्र-परम-गुरुः ।
तच्छिष्य आदिदेव ••• ••• ··· सत्-तपो-निळयः ॥

शुभमस्तु ॥

[(उक्त मितिको) प्रसिद्ध श्रुतमुनिके चरणोंका उपासक देवचन्द्रमुनिपने स्वर्गलाभ किया। श्रुतमुनिके शिष्य संसार-विख्यात, देशी-गणके देवचन्द्र-व्रतिप यतियोंके कुलमें तिलक-समान थे, वे आदिदेवके गुरू थे। उनकी और भी प्रशंसा, जिसमें कहा गया है कि उन्होंने एक ध्वस्त जिनमन्दिरका पुनरुद्धार करवाया था। श्रुतमुनिसे सन्मानित देवचन्द्र थे जिनके शिष्य आदिदेव थे।]

[Ec, VIII, Sorab tl., No 260]

५६४

हिरे-आवलि;— कन्नड़।

[वर्ष प्लवंग = १२६७ ई० (लू० राइस)।]

[हिरे-आवलिमें, ध्वस्त जैन-बस्तिके सामने १वें पाषाण पर]

स्वस्ति श्रीमतु प्लवंग-संवच्छरद अस्वैज-बहुळ-दशमी-शुक्रवारदन्दु श्री-मूल-संघद वारिसेन-देवर गुड्ड मसण-गौडन मग गोरव-गौड पञ्च-नमस्कार-समाधि-विधियिं स्वर्गस्तनाद ॥

[लेख स्पष्ट है। १२६७ ई०; राजाके नामका उल्लेख नहीं है।]

[Ec, VIII, Sorab tl., No 109]

५६५

श्रवणबेल्गोला;—कन्नड़।

[शक १२९०=१३६८ ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

५६६

कल्य;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक १२९०=१३६८ ई०]

[कल्य (मागडी परगना) में, चिक्कण्णाके खेतमें एक पाषाणपर]

स्वस्ति समस्त-प्रशस्ति-सहितम्

पाषण्ड-सागर-महा-वडवा-मुखाग्नि-
श्रीरङ्ग-राज-चरणाम्बुज-मूल-दासः ।
श्री-विष्णु-लोक-मणि-मण्डप-मार्ग-दायी
रामानुजो विजयते यति-राज-राजः ॥

शक-वर्ष १२९० नेय कीलक संवत्सरद श्रावण-शु २ सो-दलु श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरं अरि-राय-विभाड भाषेगे तप्पुव रायर गण्ड **श्री-वीर-बुक्क-रायनु** पृथु (थु) वी-राज्यवनाळुव कालदलि जैनरिगे भक्तरिगे संवादवादल्लि **आनेयगोन्दि-होसपट्टण-पेनगोण्डे-कल्यद**वोळगाद समस्त-नाड जैनरु बुक्क-रायङ्गे भक्तरु अन्यायदलु कोल्लुवदनु बिन्नहं माडलागि **कोविलु-तिरुमले पेरुमाळ्कोविलु-** । **तिरुनारायणपुर**-मुख्यवाद सकलाचार्य्यरु सकल-समयिगळु सकल-सात्त्विकरु मोष्टिकरु तिरुपिर्माणि-तिरुविडि तन्दवरु नाळ्वत्तेण्टु-तले-**सकळ सामन्त-बोवक्कळु तिरुकुल-जाम्बवकुल**-वोळगाद पदिनेण्टु-नाडा-श्री-वैष्णवर कय्यलु महारायनु ··· निम्म वैष्णव-दरुसनद भषेवोक्केरवेन्दु कोट्ट-सम्बन्ध पञ्च-बस्तिगळलि **कळस जगळे-जगटे**-मोदलाद पञ्च महा-वाद्यऊ सलुऊदु अन्यरि

[गे] बरकूडदु जैन-समयके सलुबुदेन्दु ··· ··· ··· ··· बृद्धिपाद (बायीं ओर) श्री-वैष्णव-समय ··· ··· ··· ··· ··· यी-मर्य्यादे ··· ··· ··· ··· ··· ओळगुळ बस्ति ··· श्री-वैष्णव ··· ··· ··· ··· नेट्टु कोट्टेवु (बाकी का पढ़े जाने लायक नहीं है)

[रामानुज की स्तुति ।

(उक्त मितिको), जिस समय महामण्डलेश्वर वीर-बुक्क-राय पृथ्वीपर राज्य कर रहे थे :—जैनों और भक्तों (वैष्णवों) में कोई विवादका विषय उपस्थित होने पर आनेयगोन्दि, होसपट्टण पेनुगोण्डे और कल्यह,[1] इन नाडोंके जैनोंने बुक्क-रायको इस बातका प्रार्थनापत्र देकर कि १८ नाडोंके श्री-वैष्णवोंके हाथोंसे जैन लोग अन्यायसे मारे जा रहे हैं,—महारायने (यह घोषणा करते हुए कि) "हम तुम्हारे वैष्णव दर्शनमें बाधक नहीं होंगे" निम्न हुक्म दिया :—कलश इत्यादि पाँच बस्तियोंमें पाँच महा वाद्य बज सकते हैं । और में वे नहीं बजाये जा सकते । वे जैन समय (या समऊ) की हैं । श्री-वैष्णव समय, जो बढ़ गया है ··· ··· ··· ··· (बाकीका अधिकांश अपठनीय है)] ।

[Ec, IX, Magadi tl., No 18]

५६७

पञ्चिगनहल्लि—कन्नड़ ।

[शक सं० १२२२ = १३०० ई०]

[[illegible] (नञ्जनगूड प्रदेश) में, नदीके पास, नेमिनाथ-बस्तिके ऊपर एक पाषाण पर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥१॥

१. जहाँ यह शिलालेख है, वहाँ कल्य कहते हैं ।

जिस समय पेरुमाल-देवरस शान्तिसे सुखपूर्वक राज्य कर रहे थे, उस समय उन्होंने 'त्रिजगन्मङ्गलम्' नामके चैत्यालयका निर्माण कराया, और माणिक्य-देवको प्रतिष्ठित किया; साथ ही हुल्लनहल्लिके प्राचीन मन्दिर 'परमेश्वर चैत्यालय' का भी जीर्णोद्धार किया, तथा दोनों चैत्यालयोंमें विधिवत् सतत पूजा चालू रहे, इसके लिये भूमिदान किया।

अन्तमें इन मन्दिरोंकी रक्षा तथा उनसे लगी हुई भूमिका जो गुणवान् आदमी रक्षण करेगा उसके लिए निरन्तर सुखकी मङ्गल-कामना की गई है।]

५७२

श्रवणबेल्गोला—संस्कृत भग्न।

शक १२९४ = १३७२ ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

५७३

श्रवणबेल्गोला—कन्नड़

[बिना कालनिर्देशका]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

५७४

हिरे-आवलि;—कन्नड़।

[शक १२९८ = १३७६ ई०]

[हिरे-आवलिमें, ध्वस्त जिन-बस्तिके सामनेके छठे पाषाण पर]

स्वस्ति श्रीमतु **शक-वरुष** १२९८ नळ-संवत्सरद आश्विज-शु १२ गु श्रीमन्नाळ्व-महा-प्रभु **आवलिय** **चन्द-गौण्डन** मग **बेचि-गौण्डनु रामचन्द्र-**

मलधारि ··· ··· ··· र गुड्डनु **बेचि-गौण्ड** नु **वीर-बुक्क-रायन** राज्याभ्युदयदन्दु पञ्च-नमस्कारदिं मुड्डुपि स्वर्गस्तनादनु आतन किरिय-मदवळिगे आ-मुद्दि-गौण्डि सहगमनदिं यिब्बरु मुक्तिप्राप्तरादरु आवलिय प्रभुगळ सन्तान **मसण-गौडन** मग **गोरव-गौड काळ-गौड गोप-गौड चन्द्-गौड** आ-चन्द्र-गौडन मग **बेचि-गौड** बू ··· गौडन मनेय **गोरवोजन** मग **मादोज नागोज** माडिद निशितिय कल्लु मङ्गळ महा श्री श्री श्री

[(उक्त मितिको), आवलि चन्द-गौडके पुत्र बेचि-गौड, जो रामचन्द्र-मलधारिका गृहस्थ-शिष्य था—वीर-बुक्क-रायके राज्य में,—पञ्चनमस्कार पूर्वक मर गया और स्वर्ग गया। उसकी नवीन स्त्री मुद्दि-गौण्डिने 'सहगमन' किया, और दोनोंने 'मुक्ति' पायी। आवळि प्रभुओंने (जिनमें कईओंके नाम निर्दिष्ट हैं) यह स्मारक बनवाया। बनाने वाला गोरबोजका पुत्र मादोज नागोज था।]

[Ec, VIII, Sorab tl., No 106.]

५७५

श्रवणबेल्गोला;—कन्नड़।

[वर्ष नष्ट—१३७६ ई० (लू. राइस)]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

५७६

गिरनार—संस्कृत-भग्न।

[बिना कालनिर्देशका]

श्वेताम्बर लेख।

[Revised Lists ant rem Bombay (ASI, XVI) p. 347–351, No 7 t. and tr.]

५७७

तवनन्दि;—कन्नड़-भग्न।

[शक १२०१=१२७९ ई०]

[तवनन्दिमें, सातवें समाधि-पाषाणपर]

श्रीमन्महा-मण्डलेश्वर श्री-**वीर-हरिहर-राय** विजय-राज्यं गेय्युत्तमिर्प्पल्लि शक-वरुष १३०१ दनेय कालयुक्ताक्षि संवत्सरद श्रवण-शुद्ध १ शुक्रवारदलु श्रीमत्-**तवनिधिय शान्ति-तीर्थकर**-पाद-पद्माराधकनुं दासि-वेसि-नर-नारी-सहोदर श्रीमदु श्रीम**आळ्व-महा-प्रभु तवनिधिय बोम्मण्णं** मनेय ··· ··· नि श्रोरा ··· ········· **मलधारि-देव**र प्रिय-गुड्ड ··· ··· ··· (४ पंक्तियाँ पढ़ी नहीं जा सकती हैं)।

[जिस समय महामण्डलेश्वर वीर-**हरिहर-राय** विजयी राज्य पर शासन कर रहे थे :—(उक्त मितिको), तवनिधि के शान्ति-तीर्थंकरके चरणोंका पूजक, एक दासीके वेषमें, रा ··· ··· मलधारि देवका गृहस्थ-शिष्य, आळ्व-महा-प्रभु तवनिधि बोम्मणके घरका पवित्र व्यक्ति,···············]

[EC, VIII, Sorab tl., No. 200.]

५७८

तवनन्दि;—कन्नड़-भग्न।

[शक १२०१ = १२७९ ई०]

[तवनन्दिमें ही, तीसरे समाधि-पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

श्रीमन्महामण्डलेश्वरं अरि-राय-विभाड भासेगे तप्पुव-रायर गण्ड हिन्दु-राय-सुरत्राण पूर्व्व-दक्षिण-पश्चिम-समुद्राधीश्वर श्री-**वीर-बुक्क-रायन** कुमार श्री **हरिहर रायनु** राज्यं गेय्युत्तमिर्प्पल्लि ॥ स्वस्ति श्री **जयाभ्युदय शक-वरुष १३०१ नेय काळयु [क्ति]- नाम-संवत्सरद** पुष्य ब ३ सोमवारदलु श्रीम**आळुव-महाप्रभु** प्रजे मेच्चे गण्ड अक्षिय **हदिनेण्टु-कम्पण**क्के शिरोमणि एनिप महा-प्रभुगळादित्य **तवनिधिय बोम्म-गौडनु** सकल-सन्यसन-विधियिं मुडिपि स्वर्ग्गं प्राप्तनादनु ॥ आतन गुणावलि एन्तेन्दडे ॥

पारावार-त्रयाधीश्वरनतुळ-बळं-बुक्क-रायङ्ग लोका- ।
धारङ्गं ··· माडिदवनिय धर्मङ्गळं जैन-ळा-
चारं ··· ळं गड ··· ··· मर ··· ··· माडि पुण्या- ।
कारं ··· कीर्त्ति-वृत्तं **तवनिधि** यधिपं **बोम्मणं** मेरु-धैर्य्यम् ॥
परस ··· यादि-देव परद ··· तान् ··· बगं ··· ··· ।
दरिसिद् जैननोर्व्व कलि ··· पाळकनिन्दु भक्तियिम् ।
परम-जिनेश्वर ··· ··· ··· नेम्ब ··· ।
··· दृढ़-चित्तनी-**तवनिधि**-प्रभु ब्रह्मनि ··· क-लोकदोळ् ॥
जिन-पतियन्तरङ्गदोळिर्प्पं (बाकी का पढ़ा नहीं जा सकता ।)

[जिन शासनकी प्रशंसा । जिस समय, (अपने पदों सहित), वीर-बुक्क-रायके पुत्र हरिहर-राय शासन कर रहे थे :—(उक्त मितिको), आळुव महा-प्रभु, १८ कम्पणोंका शिरोरत्न, महा-प्रभुओंका सूर्य तवनिधि बोम्म-गौड 'सन्यसन' की विधिपूर्वक, मर कर स्वर्गको गया । उसकी प्रशंसा ।]

[EC, VIII, Sorab tl., No. 196]

५७९

ऊद्रि;—संस्कृत तथा कन्नड-भग्न ।

[शक १२०२ = १२८० ई०]

[ऊद्रि गाँवके मध्यमें एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
यैदिदनु स्वामि-कार्य्यव ।
यैदि···रतिरलु कण्डनी-मार्ब्बलमम् ।
यैदे कडि-खण्ड माडिद ।
यैदिद जिन-पाद-पद्ममं **बैचप्पम्** ॥

अदेन्तेने ॥

वारिधि-परिवृत-वर-धर ।
णी-रङ्गद-मध्य**दमरगिरि**गिं तेङ्कलु
राराजिप-**भरत**-धरा- ।
नारी-भूषणमेनिप्प **कुन्तळ-देशम्** ॥
तां नेरे मेरेवुदु **बनवसे** ।
पन्निच्छासिर-समेतमद्रोळ् मं- ।
···निवर्दिं पदिनेण्टेनिप् ।
उन्नत-**कम्पण**के राजधानियेनिक्कुम् ॥
मत्ता-कम्पण-निचयम- ।
नित्तरोळं नेगळ्द हिरिय-बिदरेय-नाड्- ।
उत्तममद्रोल् सुख-सम्- ।
पत्ति-स्थानाभिवृद्धि **कुडुरे** मेरेगुम् ॥

व ॥ अदु नाना-देव-हर्म्य-प्रयुतवतुळ-वापी-तटाकाञ्चितं सम्- ।

पदमं ताळिद्दर्प्प-विद्याधरिवळ-जन-समेतं लसत्पुष्पवाटी-
बिदितोद्यानादि-युक्तं प्रकट-कळम-जाळ-प्रसूता ·····।
तोर्प्पुदु सकळ-मुनि-प्रेम-धर्म्माभिरामम् ॥
······एने मेरे उद्धरे··· ।
······नत-स्थळमागिरल्के तां सौन्दर्यदिम् ।
मनुज-मनोजं **बैचप्पन्** ।
अनुपम-कीर्ति-प्रभावदिन्दोसे[दि]प्पम् ॥
क्षितिनुत-शान्ति-जिन-क्रम- ।
शतपत्र-मधुव्रतं सुरञ्जन-मित्रम् ।
चतुरं बैचय-नायक- ।
न तनूजं राजिसिप्पनी- **बैचप्पम्** ॥
भू-देवाशीर्व्वादा- ।
ह्लादं निज-शिर-करण्ड·········· ।
·· दं वर्त्तिसे मेरेवम् ।
मेदिनि-मीसेयर गण्डनी-**बैचप्पम्** ॥

तदनन्तरम् ॥

विलसित-विजयानगरिय ।
नेलेवीडिनोळे **वीर-बुक्क-राज**-तनूजम् ।
बलि-निभ-**हरिहर रायम्** ।
सले राज्यं गेय्युतिर्द्दनति-मुददिन्दम् ॥

तत्पादपद्मोपजीवि ॥

वृ ॥ **माधव-राय** अप्रतिम-तिय ना···उ[द]ग्र-साहसां- ।
भोधिगळेन्दु···रणद दन्तिगे······मोय्द-कालदोळ् ।
बोधज-रूपिनिं···गोण्ड···रणं···बुद्धि-वि- ।
द्याधरर् आत्तणं तो···तोळेय··· ··· ··· ॥

वर-वस्त्राभरण··· ··· ··· च्छत्रमं··· ···।
··· व्रातम ··· ··· ··· रूग्गेळम् चामरो-।
त्करमं कप्पुर दम्बुल-प्रकरमं कोण्डा··गीत···।
ट्ठुरदी-कोङ्कण-देशजर् रवळर् एनुत्तागेयदं माडदे ।।
जल्लाम्बेयोळुं धात्री-।
वल्लभ माधव निरुत्तरमल्लि तर।
रल्लल्लि निलुतं बरल्।
एल्लर परेयल्के कण्डु कलि-वैचप्पम् ।।
वृ ।। इयमं देरेगेइं नेलक्किळिवुतं पाय्देरि नोड्डुत्ते भल्-।
लेयनुक्केंद्दि ··· ··· ··· तारं तट्टुगुत्तुत्ते बल्-।
मेयोळड्डं बरुत्तिप्पं कोङ्कणिगरं कीनाश-लोकक्के निश्-।
चयदिन्देय्दिसुतं पराक्रमयुतं वैचप्पनिन्तिर्प्पिनम् ।।
केलवर् कोङ्कणिगर् म्मार्-।
म्मलेवदटिं बण्डु-गट्टि नेट्टने परितन्द्।
अलगड्डुणमं चाळिसि।
नेलनदिरलु ··· ··· ··· मेय्द् ।।
तलेयिन्दं ··· सिडि ··· तूळ्दाडि खड्गांशु कल्लोळ्।
किडि सूसित्तेम्बिनं ··· रदटिनिं पाय्दु ··· ··· बन्-।
दडे कट्टी-वैचपं माधव-नरपति नोडल्के सङ्ग्रमदिम्।
किडि-खण्डं माडिदं माव्र्बलमनदटिनिं भीमसेनोपमानम् ।।
आ-रण-रंगदोळ् बिडदे कूगि नेगळ्द-वीर ··· ···।
··· ··· बिट्टु नेट्टने समाधि-विधानमोन···चित्तदोळ्।
मार-विरोधि ··· ·· नूर्जित-नाक-लोकमम्।
सारिदनुत्तम-प्रभु-कुलाम्बर-चन्द्र-मरीचि वैचपम् ।।
निरुतं श्री-शक-सङ्क सासिरद मूनूरोन्द···रौद्रि-व-।
त्सर-वैशाख-सित-त्रयोदशि-लसद्-भौमाह्वयं वार···।

बरे बैचप्पनुदार-चारु-जिन-पदाम्भोज-सक्तं मनो- ।
हर रूपं वर-धात्रियोळ् मडिदु नाक-क्षेत्रमं पोर्द्दिदम् ॥

[बैचप्पने किस तरह जिन चरणों का आश्रय लिया,इसका इस लेखमें वर्णनहै । भरत क्षेत्र-कुन्तलदेश-अनवसे १२०००-१८ कम्पण-उद्धरे-और उसमें बैचप्पका वर्णन । बुक्करायके पुत्र हरिहर-राय विजयनगरीमें राज्य कर रहे थे । कोंकण-देशसे लड़ाई का वर्णन । उसमें बैचप्प की जीत हुई ।]

[EC, VIII, Sorab tl.,:No. 152]

५८०

मलेयूर—कन्नड ।

[बिना काल निर्देशका, पर लगभग १३८० ई०]

[उसी पर्वतपर, पार्श्वनाथ बस्तिके प्राङ्गणमें दक्षिणकी ओरके पाषाणपर]

बाहुबलि-पण्डित-देवरु ।

नयकीर्त्ति-व्रति-नन्दनं सकळविद्याचक्रवर्त्याह्वयं
द्वय-भाषा-कविता-त्रिणेत्रनुरु-होरा-शास्त्र-सर्व्वतकम् ।
नययुक्तमवर-मूल-सङ्घदोडेयं देशी-गणाग्रेसरं
प्रियदं पोस्तुक (पुस्तक)-गच्छ-पूर्ण-तिलकं श्रीकोण्डकुन्दान्वयं ॥

[बाहुबलि-पण्डित देव—नयकीर्त्ति-व्रतीके पुत्र, सकलविद्याचक्रवर्ती, द्वयभाषा कवितात्रिनेत्र, होराशास्त्रसर्वज्ञ, नययुक्त मूलसंघाधिपति, देशीगणाग्रेसर, पोस्तुक-गच्छके पूर्ण तिलक और कोण्डकुन्दान्वयी थे ।

[EC, IV, Chamarajnagar tl., No. 157]

५८१

तिरुप्परुत्तिक्कुण्रू (काञ्जीवरम्के निकट)—**तामिल।**

(**दुन्दुभि वर्ष = १३८२ ई० (लगभग)**)

१—स्वस्ति श्रीः [॥] **दुन्दुभि**वर्षं कात्तिगै-मादत्ति । पूर्व्व-पक्षत्तु तिङ्गळ्-किळ-मैयुं पौर्णैयुं पेर् ताकात्ति-

२—गै-नाळ् महामण्डलेश्वरन् **अरिहरराज**-कुमारन् श्रीमद्- **बुक्कराजन्** धर्म्म आग **वैचय**-दण्डनाथ-पुत्रन्

३—जैनोत्तमन् **इरुगप्** [**प**]-महाप्रधानि **ति** [**रुप्**] **परुत्तिक्कु**ण्रू-नाय-नार् त्रैलोक्यवल्लभर्क्कु पूजैक्कु

४—शालैक्कुं तिरुप्पणिक् [कु] म् **मावण्डूर्**-प्पर्रिल् **महेन्द्रमङ्गलं** नार्पा-कैल्लैयुं इटै-इलि पल्लिच्छन्दभाग चन्द्रादित्यवरैयुं नडक्कत्तरुवित्तार धर्म्मोयं जयतु

[काञ्जीवरम्के निकट **तिरुप्परुत्तिक्कुण्रुमें** वर्धमान जिनमन्दिरके भण्डारकी उत्तर तरफकी दीवालपर नीचेकी ओर यह तामिल तथा ग्रन्थ लेख उत्कीर्ण है। इसमें बताया गया है कि वैचय दण्डनाथ (सेनापति) का पुत्र **इरुगप्प** महामन्त्रीने मावण्डूर् तालुकेका महेन्द्रमङ्गलं गाँव जैनमन्दिरको दानमें दे दिया था। उसने यह दान **हरिहर द्वितीय** के पुत्र **अरिहरराज,** अर्थात् **बुक्क द्वितीय,** के पुत्र **बुक्कराज**के गुणके कारण किया था। अतः दुन्दुभिवर्ष, जिसमें दान किया गया था, १३८२ ई० से मिलना चाहिये।]

[**EI, VII, No. 15 A.**]

५८२

बस्तीपुर—कन्नड़ ।

[शक १२०५=१२८३ ई०]

[बस्तीपुर (बळगुळ तालुका) में, सोमा-पाषाण पर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

श्री-**मूलसङ्घ कानूर**-**गण तिन्तिणि** गच्छ **कोण्डकुन्दान्वयद** श्री-**वासुपूज्य-देवर** शिष्यरु श्री-**सकलचन्द्र-देवर** तपद प्रभावमेन्तेन्दोडे ॥

स्थिरवाक्यं सु-व्रताम्भोनिधि सकळ-जगत्-पावनं राजपूज्यं
परम-श्री-जैनधर्म्माम्बर-दिनकरनुद्यत्तपोमूर्त्ति ··· णा ।
भरणं त्रैविद्य-चक्रेश्वर-विमल-पदाम्भोज-बिङ्गं बिनश्री-
चरणालंकार-शीरुष (ज) म् सुकविजन-यतप्-सन्मुनिं राजहंसं ॥

सोस्ति **श्रीशकवर्ष १२१५** नेय **सुभकृतु-संवत्सरद** श्रावण-मास-सुद्ध-पाड्य-आदित्यवार-सिंह-लग्नदल्लि **कूरिंगिहळ्ळिय** प्रभु-गळु गौड-कुल-तिलकरु मरें-होकर-कावरु शिथिल-बेङ्कोम्बरु सत्यदल्लि कर्णरुमप्प **केत-गौड राम-गौड सम्बुव-गौड मादि-गौड** मोदलाद समस्त-गौडगळु बस्तिय प्रतिष्ठेयं माडिसि बस्तिय बडगण बिट्ट बेद्दलु को १० **पारुष-देवर** अमृतपडि ··· ··· ··· सद । **देवोजन** बद्दर मंगल महा श्री श्री श्री

[मूलसङ्घ, कानूरगण, तिन्तिणि गच्छ और कोण्डकुन्दान्वयके वासुपूज्यदेवके शिष्य सकलचन्द्रदेवके तपकी स्तुति या प्रशंसा है । कूरिंग (गि) हल्लिके गौड़ोंने एक पारुष-देवकी वस्ति (मन्दिर) बनवाई और उसे दान दिया ।]

[EC, III, Seringapatam tl. No. 144]

———

५८३

हिरे-आवलि;—कन्नड ।

[वर्ष उद्गारि = १३८३ ई० ? (लू. राइस) ।]

[हिरे-आवलिमें, १२ वें पाषाणपर]

स्वस्ति श्रीमतु रुधिरोद्गारि-संवत्सरद ज्येष्ठ शुध-पुण्णमि-सोमवार-दन्दु श्री-मूल-संघद वीरसेन-देवर गुड मुद्-गौड मगळु एकमतियबे पञ्च-नमस्कार-समाधि-विधियिं स्वर्गस्थेयादळु अचेयबे गौडि माडिसिद कलु ।। बोपोझोज गेयिद कलु ।।

[लेख पहिलेके ही लेखों के समान है, अतएव स्पष्ट हैं । सन् १३८३ ई० का है । किसी राजाका उल्लेख नहीं है ।]

[EC, VIII, Sorab tl.. No. 112]

५८४

रावन्दूर—संस्कृत और कन्नड ।

[शक १३०६=१३८४ ई०]

[रावन्दूर (रावन्दूर प्रदेश) में, बस्तिके एक पाषाणपर]

श्रीमत्-परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ।।

स्वस्ति श्रीमद्-राय-राज-गुरु-मण्डलाचार्यरेनिसि श्री-मूलसंघदेशीय-गण पुस्तक-गच्छ कोण्डकुन्दान्वय यिङ्गळेश्वरद बळि श्री मदभयचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्त्ति-गळु तत्-शिष्यरु श्री-श्रुतमुनिगळु तत्-शिष्यरु प्रभेन्दुगळु अवर प्रियाग्रशिष्यरु श्री-श्रुतकीर्त्ति-देवरु शक-वर्ष १३०६ नेय रुधिरोद्गारि-संवत्सरद द्वितीय-भाद्रपद-ब ८ आदित्यवारदलु मुक्तिवधू-वल्लभरादरु तत्प्रतिनिधियनु सुमति-

तीर्थंकरनू ई-चैत्याल[य]द जीर्णोद्धारवनु अवर शिष्यरु **आदिदेव-मुनि**गळु श्रुत-गण-मुख्यवाद समस्तभव्यजनङ्गळु माडिसिद शासन वर्द्धतां जिन-शासनम् ।

[मूलसङ्घ, देशियगण, पुस्तकगच्छ, कोण्डकुन्दान्वय, और इंगुलेश्वर-बलिके **अभयचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती**के शिष्य श्रुतमुनि उनके शिष्य, प्रभेन्दुके प्रियाग्र शिष्य—**श्रुतकीर्त्ति-देव**के मुक्तिवधूके वल्लभ होनेके बाद (अर्थात् स्वर्गस्थ हो जानेपर), उनके शिष्य **आदिदेव मुनि** तथा श्रुत-गणके जैनोंने उनकी तथा सुमति तीर्थङ्करकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा कर इस **चैत्यालय**को सुधरवाया ।]

[**Ec, IV, Hunsur tl., No. 123.**]

५८५

विजयनगर—संस्कृत ।

[शक १२०७ = १२८६ ई०]

(जैन मन्दिरके सामने दीपस्तम्भ पर)

यत्पादपंकजरजो रजो हरति मानसं ।
स जिनः श्रेयसे भूयाद्भूयसे करुणालयः ॥ [१]
श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥ [२]
श्रीमूलसंघेजनि नंदिसंघ [स्त] स्मिन् बलत्कारगणोतिरम्यः ।
तत्रापि सारस्वतनाम्नि गच्छे स्वच्छाशयोऽभूदिह **पद्मनंदी** ॥ [३]
आचार्य्यं **कुंड [कुंदा]** ख्यो **वक्रग्रीवो** महामतिः ।
एलाचार्यो गृध्रपिच्छ इति नत्राम पंचधा ॥ [४]
केचित्तदन्वये चारुमुनयः खनयो गिरां [।]
जलधाविव रत्नानि बभूवुर्दिव्यतेजसः ॥ [५]
तत्रासीच्चारुचारित्ररत्नरत्नाकरो **गुरुः** ।
धर्म्मभूषणयोगीन्द्रो भट्टारकपदांचितः ॥ [६]

भाति भट्टारको **धर्मभूषणो** गुणभूषणः ।
यद्यशःकुसुमामोदे गगनं भ्रमरायते ॥ [७]
शिष्यस्तस्य **मुनेरा**सीदनर्गलतपोनिधिः ।
श्रीमा**नमरकीर्त्या**र्य्यो **देशिका**ग्रेसरः शमी ॥ [८]
निजपद्मपुटकवाट घटयित्वानिलनिरोध [तो] हृदये ।
अविचलितबोधदीपं तममरकीर्त्तिं भजे तमोहरणम् ॥ [९]
केपि स्वोदरपूरणे परिणता विद्याविहीनांतरा
योगीशा भुवि संभवंतु बहवः किं तैरनंतैरिह ।
धीरः स्फूर्ज्जति दुर्ज्जयातनुमदध्वंसी गुणैरूर्ज्जितै-
राचार्य्योमरकीर्त्तिशिष्यगणभृच्छ्री **सिंहनन्दी** व्रती ॥ [१०]
श्री**धर्मभूषो**जनि तस्य पट्टे श्रीसिंहनंद्यार्य्यगुरास्सधर्म्मा ।
भट्टारकः श्रीजिनधर्म्महर्म्म्यस्तंभायमानः कुमुदेन्दुकीर्त्तिः ॥ [११]
पट्टे तस्य मुनेरासी**द्वर्द्धमान**मुनीश्वरः ।
श्रीसिंहनंदियोगींद्रचरणांभोजषट्पदः ॥ [१२]
शिष्यस्तस्य गुरोरासीद्ध**र्मभूषण**देशिकः ।
भट्टारकमुनिः श्रीमान् शल्यत्रयविवर्ज्जितः ॥ [१३]
भट्टारकमुनेः पादावपूर्व्वकमले स्तुमः ।
यदग्रे मुकुलीभावं यांति राजकराः परं ॥ [१४]
एवं गुरुपरंपरायामविच्छेदेन वर्त्तमानायां—
आसीदसीममहिमा वंशे यादवभूभृतां [।]
अलंघितगुणोदारः श्रीमान् **बुक्क**महीपतिः [१५
उदयन्भूभृतस्तस्माद्राजा **हरिहरे**श्वरः ।
कलाकलापनिलयो विधुः क्षीरोदधेरिव ॥ [१६]
यस्मिन् भर्त्तरि भूपाले विक्रमाक्रांतविष्टपे ।
चिराद्राजन्वती हंत भव [त्येषा] वसुंधरा ॥ [१७]

तस्मिन् शासति राजेन्द्रे चतुरम्बुधिमेखलां ।
धरामधरिताशेषपुरातनमहीपतौ ॥ [१८]
आसीत्तस्य महीजानेः शक्तित्रयसमन्वितः ।
कुलक्रमागतो मंत्री **चैच**दंडाधिनायकः ॥ [१९]
द्वितीयमंतःकरणं रहस्ये बाहुस्तृतीस्समरांगणेषु ।
श्रीमान्महा **चैच [प]** दंडनाथो जागर्त्ति कार्ये हरिभूमिभर्त्तुः ॥ [२०]
तस्य श्री**चैच**दंडाधिनायकस्यो [र्जि] तश्रियः ।
आसी **दिरुग**दंडेशो नंदनो लोकनन्दनः ॥ [२१]
न मूर्त्ता नामूर्त्ता निखिलभुवनाभोगिकतया
शरद्राजद्राकाविटनिटिलनेत्रद्युतितया ।
प्रभूता कीर्त्तिस्सा चिर**मिरुग**दण्डेश कथय-
त्यनेकांतात्कांतात्परमिह न किञ्चिन्मतमिति ॥ [२२]
सद्वंशजोपि गुणवानपि मार्गणाना-
माधारतामुपगतोपि च यस्य चापः ।
नम्रः परान्विनमय**न्निरुग**क्षितीश-
स्योच्चैर्ज्जनाय खलु शिक्षयतीव नीतिम् ॥ [२३]
हरिहरधरणीशप्राज्यसाम्राज्यलक्ष्मी-
कुवलयहिमधामा शौर्य्यगाम्भीर्य्यसीमा ।
इरुगपधरणीशा**स्सहनन्दा**र्य्यवर्य-
प्रपदन [ल] नभृंगस्स प्रतापैकभूमिः ॥ [२४]
स्वस्ति **शकवर्षे १३०७** प्रवर्तमाने **क्रोधनवत्सरे** फाल्गुनमासे कृष्णपक्षे द्वितीयायां तिथौ शुक्रवारे ॥
अस्ति विस्तीर्ण्ण**कर्णाट**धरामण्डलमध्यगः ।
विषयः **कुन्तलो** नाम्ना भूकांताकुंतलोपमः ॥ [२५]
विचित्ररत्नरुचिरं तत्रास्ति **विजया**भिधं ।
नगरं सौधसन्दोह दर्शिताकाण्डचन्द्रिकं ॥ [२६]

मणिकुट्टिमवीथीषु मुक्तासैकतसेतुभिः ।
दा[न]म्बूनि निरुंधाना यत्र क्रीडंति बालिकाः [॥ २७]
तस्मिन्निरुगदंडेशः पुरे चारुशिलामयं ।
श्रीकुन्थुजिननाथस्य चैत्यालयमचीकरत् ॥ [२८]
भद्रमस्तु जिनशासनाय ॥

सारांश

इस लेखमें २८ संस्कृत-श्लोक हैं और यह प्राचीन जैन मन्दिरके सामने दीपस्तम्भ पर खुदवाया है। इस मन्दिरको आजकल 'गाणिगिट्टी' मन्दिर, यानी, "तेलिनका मन्दिर" कहते हैं। पहले श्लोकमें जिन, दूसरेमें जिनशासनकी मंगलकामना है। तत्पश्चात् एक जैन संघके प्रधान **सिंहनन्दि**के आध्यात्मिक पूर्वजों तथा शिष्योंके वंशका वर्णन है। वह इस तरह है :—

मूलसंघ
|
नन्दिसंघ
|
बलात्कार-गण
|
सारस्वतगच्छ
|
पद्मनन्दी
⋮
धर्म्मभूषण प्रथम, 'भट्टारक'
|
अमरकीर्ति
|

सिंहनन्दि, 'गणभृत्'

|

धर्म्मभूष, 'भट्टारक'

|

वर्द्धमान

|

धर्मभूषण द्वितीय, उर्फ भट्टारकमुनि

लेखमें इन गुरुओंकी पदवियाँ ये लिखी हैं :—आचार्य, आर्य, गुरु, देशिक मुनि और योगीन्द्र। गुरुवंशावलीके बाद ही प्रथम **विजयनगर** वंशके दो राजाओं, **बुक्क** और उसके पुत्र **हरिहरका** संक्षिप्त वर्णन है। बुक्क यादववंशके राजाओंमें उत्पन्न हुआ था। हरिहरका कुलक्रमागत मंत्री दण्डाधिनायक **चैच** या **चैचप** था, जो जिन भक्त था। चैचका पुत्र दण्डेश या क्षितीश (युवराज) **इरुग** या **इरुगप** था, जो उपर्युल्लेखित सिंहनन्दि गुरुके सिद्धान्तोंका उपासक था (श्लोक २४)। १३०७ [अतीत] शकमें, क्रोधन संवत्सरमें इरुगने विजयनगरमें एक मन्दिर बनवाया और उसमें श्री कुन्थु-जिननाथकी स्थापना की। यह नगर कर्णाट प्रान्तके कुंतल जिलेमें था (श्लोक २५)।]

नोट :—इस मंत्री इरुग या इरुगपने 'नानार्थनाममाला' नामक ग्रन्थ बनाया था, ऐसा ई० हुल्श, पी० एच० डी० महाशयके लेखसे मालूम पड़ता है।

[South Indian ins, Vol. I, No. 152.
(p. 155–160)]

———

५८६

मसार;—संस्कृत ।

[सं० १४४३ = १३८६ ई०]

नं० १

[वृषभ चिह्नवाली आदिनाथकी प्रतिमाके चरण-पाषाणपरका लेख]

१—सं० १४४३ ज्येष्ठ सुदि ५, गुरो **महासारस्य** रा

२—**राजनाथ देव** राज्ये काष्ठसंघे आचा-

३—र्य्यं **कमलकीर्त्ति** जयसरङ्गाचार्ज

४—* * वपुत्रल * * *

यह लेख सं० १४४३में, सारंग (या उसके पुत्र) द्वारा एक प्रतिमाके समर्पणका उल्लेख करता है। समर्पण महासारके राजनाथ देवके राज्यमें हुआ। गुरु काष्ठासंघके कमलकीर्ति आचार्य थे।

नं० २

[एक प्रतिमाके, जिसका चिह्न मिट गया है, चरण-पाषाणपरका लेख]

१—सं० १४४३ समये ज्येष्ठ सुदि ५, गुरो

२—**राजनाथ देव** प्रवर्द्धमाने[1] महासारस्य काष्ठसंघे मथुरान्वये

३—पुष्करगणे प्रतिथ वज **कमलकीर्त्ति देव**

४—जैसवल वेसल रगचर्न * * *

५—पुत्र लवम देव सम * * *

६—यन प्रतिष्ट * *

इस लेख में पहलेके लेखके दिन ही एक प्रतिमाके समर्पणकी बात है। राजनाथ देव और उसके गुरु कमलकीर्त्ति का नाम स्पष्ट है।

---

१. मूलमें 'राज्ये' छूट गया है।

नं० ३

[शंख चिह्नवाली नेमिनाथकी प्रतिमाके पीठ-स्थलपरका लेख]

१—सं० १४४३, ज्येष्ठ सुदि ५, गुरो महासारस्य न (?)
२—काष्ठसंघे अचार्य-कमलकीर्त्ति देव
३—जै महन्साचार्य उदे सिदि

उसी राजा और उसी गुरूके तत्त्वावधानमें उसी दिन नेमिनाथकी प्रतिमाका दान।

[A. Cunningham, Reports, III, p. 68–69
No. 1–3.] t. & a.

५८७

तिरुप्परुत्तिक्कुण्रु;—संस्कृत।

प्राभव (प्रभव) वर्ष = शक १३०१ = १३८७ ई० (हुल्श और चीकर्होर्न)]

श्रीमद्वैचयदण्डनाथतनयस्संवत्सरे **प्राभवे**
संख्यावा**निरुगप्प**-दण्डनृपतेश्श्री**पुष्पसेना**ज्ञया ॥
श्री **काञ्ची**जिनवर्द्धमाननिलयस्याग्रे महामण्डपं
सङ्गीतार्थमचीकरच्च शिलया बद्धं समन्तात् स्थलम् ॥१॥

[पूर्व शिलालेखवाले मन्दिरकी वेदीके सामनेके मण्डपकी छतमें यह ग्रन्थ-लेख उत्कीर्ण है। इसमें शार्दूलविक्रीडित छन्दका एक ही श्लोक है। इसमें उल्लेख है कि **प्राभव** (प्रभव) वर्षमें गुरु **पुष्पसेन**की आज्ञासे सेनापति **वैचप**के पुत्र उसी (पूर्व वर्णित) सेनापति **इरुगप्प**ने उस मण्डपको बनवाया है जिसमें यह लेख उत्कीर्ण है।]

[E C, VII, No. 15, B.]

५८८

ऊद्रि;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[वर्ष विभव = १२८८ ई० (लू० राइस) ।]

[उसी तालाबकी मोरीके पासके पाषाणपर]

श्री-शान्तिनाथाय नमः ।

श्रीमत्परम-गंभीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥
वर-वृषभ-तीर्थंकर गण- ।
धररेनिसिद **वृषभसेन-मुनि**-पुङ्गवरद्- ।
धुर-वंश-सम्भवाचा- ।
र्य्यर पेम्पं पोगळ्ग़रिदपने फणिरमणम् ॥
आ-नियमाग्रणिगळु **जिन**- ।
सेन-श्री-वीरसेनरनिपाचार्य्यर् ।
भू-नुत-चरित्ररवरम् ।
बानिसुव विनेय-जनद पेम्र्मेयदाम्र्मेम् ॥
अमर्द तदन्वयदिं बन्- ।
द मुनीशरु **लक्ष्मिसेन-भट्टारक**रुत्- ।
तम-चरित्ररवर शिष्यरु ।
विमळ-गुणरु **चन्द्रसेन-सूरि**गळनघर् ॥
आ-मुनि-राजर शिष्यो- ।
द्दामरु **मुनिभद्र-देव**रवर चरित्रम् ।
भू-महितमेन्दोडदनिन्न् ।
ए-मतो बण्णिसल्के बल्लवनावम् ॥
व ॥ चेममर्म्मन्विनं विमल-कीर्त्ति दिगन्तमनेय्द्दर्ल्विनम् ।

कामन चाप चापळते सार्व्वीनमोप्पिदरं पोगळ्द्पेम् ।
श्री-मुनिभद्र-देवरनिळा-विनुतोरु-शुभ-स्वभावरम् ।
प्रेमदोळर्त्थिगर्त्थमुमनीवरमुग्र-तपः-प्रभावरम् ॥
मुनिसं मन्मथ-युद्धदोळ् निरुतमं तत्त्वार्थदोळ् भक्तियम् ।
जिन-पादाम्बुजदोळ् द्रवाधिकतेयं सच्चित्तदोळ् देसेयम् ।
विनुताचार-चयङ्गळोळ् वचनमं वक्तृत्वदोळ् रुक्म रञ् ।
जनेयं देहद कान्तियोळ् निरिसिदर्वाक्यादि-वर्णाह्वयर् ॥

कं ॥ **हिसुगल्ल वसदियं** मा- ।
डिजि **मुळुगुण्डद जिनेन्द्र-मन्दिर**के सुधा- ।
प्रसरमनेसगिसि जसमम् ।
पसरिसि **मुनिभद्र-देव**रोळ्पं तळेदर् ॥
न्यायोपायद **हरिहर**- ।
रायं वर-**विजयनगरि**योळु नेलसिर्प्पन्द् ।
आयतिकेय **सेन-गण**- ।
ज्यायरु **मुनिभद्र-देव**ररनेरकद्वर् ॥
इन्तेसेव तपश्चरणा- ।
नन्तरमाप्तागम-प्रभावमनेसगुत्- ।
तं तूळ्दि दुरितमं निश्- ।
चिन्तरु **मुनिभद्र-देवा**रिर्प्पन्नेवरम् ॥
कालावसान-संस्थितिग् ।
आलम्बमेनिप्प निर्णयं दोरकलोडम् ।
शीलाचार-समाज वि- ।
शाल**मुनिभद्र-देव**ररितं जनिसल् ॥
नीरोळगण-तावरेयेले ।
नीरं पोरदन्ते बाह्य-वस्तुवनेल्लम् ।

दूरं माडि बळिक्कम् ।
धीररु **मुनिभद्र-देव**रगणित-महिमर् ॥

वृ ॥ क्षमे निश्शल्यमेनुत्ते सन्यसनदिन्दात्म-प्रबोधादयम् ।
समसन्दोन्दिरे दिव्य-पञ्च-पद-चिन्ता-पंक्ति मुन्नेय्दुवुत्- ।
तम-ताणक्कदु सञ्चितार्थमेने धर्म-ध्यान-मौनोद्यम- ।
क्रमदिन्दं **मुनिभद्र-देव**रोडलिं बेर्म्माडिदर्जीवमम् ॥
लसित-शकाङ्कमुद्ध-नभ-चन्द्र-पुगेन्दुविनिन्दे सोभिसल् ।
पेसर्वडेदोप्पि तोर्प्प विलसद्-**विभवाब्दद चैत्र सुद्ध-ते-** ।
रसे-शनिवारदोळ् सकळ-सन्यसन-व्यसनं समाधि सन्- ।
दिसे **मुनिभद्र-देव**रुरे सद्-गति सौख्यमनेय्दिदर् निजम् ॥

क ॥ लसित-**मुनिभद्र-देव**र ।
निसिधियुमनवर शिष्यरेने सोगयिप **पारि-** ।
ससेन-देवरुरे मा- ।
डिसि कीर्त्तियनान्तरिन्तु कन्तु-विदूरर् ॥

भद्रमस्तु जिनशासनम् श्री

[वृषभ-तीर्थंकरके गणधर वृषभसेन-मुनिप और उद्धुर-वंशके आचार्योंकी कीर्त्तिका वर्णन कौन कर सकता है ? इस वंशके आचार्योंके अग्रणी जिनसेन और वीरसेन थे । उस परम्परामें लक्ष्मीसेन-भट्टारक अवतीर्ण हुए थे, जिनके शिष्य चन्द्रसेन-सूरि थे । उनके शिष्य मुनिभद्र-देव थे; उनकी प्रशंसाएँ । उन्होंने हिसुगल बसदिको बनवाया था, और मुळुगुण्ड जिनेन्द्र मन्दिरका विस्तार किया था । जिस समय हरिहर-राय विजयनगरीमें विराजमान थे, सेन-गणके वृद्धजनोंने उस यतिके गुणोंको नमस्कार किया था । तपश्चरणके बाद उन्होंने बहुत समयतक निश्चिन्त जीवन बिताया । अन्तमें, उन्होंने अपना अन्त नजदीक जानकर, विहित विधिका अनुष्ठान करके उच्चावस्थाके लिये अपनेको तैय्यार किया, तथा

(उक्त मितिको), 'सन्यसन' की विधिपूर्वक, प्राणोत्सर्ग करके शाश्वत सुखका आनन्द लिया। उनका स्मारक उनके शिष्य वा (पा) रिससेन-देवके द्वारा खड़ा किया गया था। जिनशासनका कल्याण हो।]

[EC, VIII, Sorab tl., No. 146]

५८१

हिरे-आवलि;—कन्नड़।

[शक १३११=१३८१ ई०]

[हिरे-आवलिमें, १६वें पाषाण पर]

श्रीमद्-राय-राजधानि-हस्तिनापुर-**विजयानगरि**-मुखवाद। समस्त-पट्टणाधीश्वर। अश्वपति-गजपति-नरपति-अरि-राय-तुरुस्क (क)-विभाड। हिन्दूराय-सुरत्राण। भाषेगे-तप्पुव-रायर गण्ड। समस्त-भुवनाश्रय पृथ्वी-वल्लभ। महाराजाधिराजम्। श्री-वीर-**बुक्क-राय**न कुमार **हरिहर-राय** राज्यं गेय्युत्तमिर्प्प कालदल्लि महा-प्रधानि मन्त्रि-शिरोमणि **मादरस वोडेयर** काल। स्वस्ति यम-नियम-स्वाध्याय-ध्यान-मौनानुष्ठान-जप-तप-समाधि-शील-गुण-सम्पन्नरप्प श्री-**मुनिभद्र-स्वामि**गळ गुड्ड। आहाराभय-शास्त्र-दान-विनोदनुं। रत्नत्रयाराधकनुं। जिन-मार्ग-प्रभाव-कनुमप्प जिड्डुलिगेय-नाडिङ्गे मुख्यवाद **हिरियावलि**य पुराधीश्वरनप्प आमल्लाळु-महा-प्रभु **काम-गौण्ड**न सुपुत्र कुल-दीपकनप्प। हिरियचन्दप्पन **शक-वर्ष १३११ शुक्र-संवत्सरद कार्त्तिक-बहुळ-रजनी-कुज-वार-चतुर्द्दशि**- शुभ-दिनदलु सन्यसन-समाधि-विधियिं मुडिहि स्वर्ग-प्राप्तनाद॥

क॥ कार्त्तिक-बहुळ-चतुर्द्दशि।

कीर्त्तिय मुनिभद्र-यतिय प्रियद गुड्डम्।

मूर्त्तिय देहव तोरदन-।

मूर्त्तद देवरने नेनेदु कीर्त्तिय पडेदम्॥

वोडने हुट्टिदरनेल्लर

कडु-मोहद मात-पितर-बन्धु-वनङ्गळ ।
यडवरियद महदियरम् ।
कडु-गलितनदल्लि तोरेदु सन्यसनिन्दम् ॥
रवनि-कुजवार-शुभ-दिन ।
भनियियिसिदं दैव-गुरुव व्रतगळनेल्लम् ।
सुजनत्वद चन्द्रमनुम् ।
गजभजिसदे मडिहि स्वर्ग्गमं नेरे पडेदम् ॥
अण्ण चन्द्रमगे गोपय ।
पुष्यद सम्बळ वनिते **राम-गौण्ड**-गौण्डिय पुत्रम् ।
बण्णिसुव हरिहरायन ।
पुण्णिदन कालदल्लि शुक्लोत्सरदोळ् ॥
मंगळ महा । श्री श्री

[लेख स्पष्ट है । हरिहर-रायके समयका है ।]

[Ec, VIII, Sorab tl., No 116]

५६०

मुल्लूर;—संस्कृत तथा कन्नड ।

[शक १३१३ = १३११ ई०]

[मुल्लूरमें, बस्ति-मन्दिरमें चन्द्रनाथ बस्तिके पास]

स्वस्ति श्री **शक-वर्ष १३१३ नेय प्रमोदूत-संवत्सरद वैशाख-शुद्ध ५**··· **रदल्लु** श्री-मूल-संघ देसी-गण पुस्तक-गच्छद ··· कोण्डकुन्दान्वय**राय-शुभेन्दु**-कन्द- **विजयकीर्त्ति-देवर** प्र ··· ··· ··· ··· **ल्लि देवर** ई-स्थानमं पडेदुद्धरिसिदरु श्री-**राजा** ··· ··· ··· ··· **कोङ्गाळ्व सुगुणि-देविय** देहारद **विजय-देवर** द्वारा ··· ··· स्व-जननि ··· ··· आ-**पोचब्बरसिगे** पुण्यार्त्थ-वागि प्रतिष्ठेय माड्सि ··· ··· बिट्ट ऊरु अणिजवाडिय नेलबिहळ्ळियम् (यहाँ

दान और सीमाओंकी विस्तृत चर्चा आती है; और वे ही अन्तिम वाक्यावयव) ।

[स्वस्ति । (उक्त मितिको), श्री-मूल-संघ देशीगण पुस्तक-गच्छ और कोण्डकुन्दान्वयके, आर्य शुभेन्दुकी सन्तान विजयकीर्त्ति देवके प्रिय·····ल्लि-देवको यह मन्दिर मिलनेके बाद इसकी पुनः स्थापना की। और राजा······ कोङ्गाळ्व सुगुणि-देवीने, अपने शरीररक्षक विजयदेवके द्वारा,—इसलिये कि अपनी माँ पोचब्बरसिके लिये पुण्योपार्जन हो सके, —(प्रतिमाकी स्थापना की और इसके लिये जैसे कि लेखमें कहे गये हैं, सीमाओं सहित) दान दिये। शाप।]

[EC, IX, Coorg tl., No. 39]

५९१

श्रवणबेल्गोला;—कन्नड़।

[**बिना कालनिर्देशका**]

[**जै० शि० सं०, प्र० भाग**]

५९२

हिरे-आवलि;—कन्नड़।

[**वर्ष आङ्गिरस=१२५२ ई० (लू. राइस)।**]

[**हिरे-आवलिमें, ११वें पाषाणपर**]

स्वस्ति श्रीमद्‌ **आङ्गिर-सं [व] त्स (त्सर) रद आश्व (षा) ढ-सुध त्रयोदशे-गुरुवार दन्दु** । मूल-संघद **शुभचन्द्र-देवर** गुड अर्वलिय **मसण गोडन** मग **गौरव-गोडन** तम्म **काळ-गोड** समाधियिं मुडिपि स्वर्ग-प्राप्तनाद ॥

[लेख स्पष्ट है। राजाका उल्लेख नहीं है।]

[Ec, VIII Sorab tl, No 111]

५९३

हले-सोरब—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक सं० १२१७=१२९५ ई०]

[हळे-सोरबमें, उसके दक्षिण-पूर्वमें, तालाबके उत्तरीय नष्ट बन्धके पासके समाधि-पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

शक-वरुष १२१७ नेय भाव संवत्सरद भाद्रपद-ब ७ बु सोरबद मोलेय-तम्म गाउडन मग **तम्म-गऊड** तनगे क्षय-व्याधियाद-निमित्त घट्टद **केळगण नगिलेयकोप्पक्के** होगि औषधिय माडिसिकोळुतिरलागि रोग बिडदे **सिद्धान्ति-देवर** पञ्च-नमस्कारद ध्यानदिं जिन-चरण-सेवेगैदिदनु ॥

[जिनशासनकी प्रशंसा। (उक्त मितिको), सोरबके तम्म-गौडको क्षय-रोग हो जानेसे घाटोंके नीचे नगिलेयकोप्पमें दवाई लेनेके लिये गया। लेकिन चूँकि बीमारी (रोग) उसे छोड़नेवाला नहीं था,—सिद्धान्ति-देवकी आज्ञाके अनुसार, पञ्च-नमस्कारके उच्चारणपूर्वक, वह जिनके पाद-मूलमें गया।]

[Ec, VIII, Sorab tl., No 52]

५९४

हिरे-आवली;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[वर्ष भाव=१२९५ ई० (लू, राइस)]

[हिरे-आवलिमें, तीसरे पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

श्रीमद्-राय-राजधानि-**हस्तिनापुर-विजयानगर**-मुख्यवाद-समस्त-पट्टणाधीश्वर अश्वपति-राजपति-नरपति-अरिराय-विभाड समस्त-भुवनाश्रय पृथ्वी-वल्लभ महा-राजाधिराजं श्री-**हरिहर-राय** राज्यं गेय्युत्तमिर्प्पल्लि तत्प्रधानि **हरिय-रायन**·· कालदल्लि **भाव संवत्सर-फाल्गुण मास-बहुळ-एकादशी-बुधवारद**······ **कान रामणन** सति **कामीगोण्डि** सन्यसनि-विधियिं मुडिहि स्वर्गास्थेयादळु ॥

वृ ॥ सुरपात वन्य-पार्श्व-जिन-पाद-सरोजद युक्त-कान्तियुम् ।

धरे-नुत-राय-राज-गुरु **सिद्धान्ति-यतीश**ने तन्न राध्यनुम् ।

भर ··· न- **नाड जिडडुळिगे** आवलि-पुराधिप **बेच-गौण्ड**नुम् ।

उरुतर-माम **बोम्म**रनुमत्तेयु शोभिप कामि-गौण्डियुम् ॥

कान-रामण [न] सतियेने ।

दानदोळं धर्म्मदल्लि सन्यसनियम् ।

येनु तडावल्ल मुडिहिदम् ।

मान पतिव्रते नाकमं नेरे पडेदळु ॥ मङ्गळ महा श्री श्री श्री ॥

[जिन शासनकी प्रशंसा । जिस समय राजधानी हस्तिनापुर-विजयनगर और समस्त शहरों पट्टण) का अधीश्वर, महाराजाधिराज हरिहर-राय राज्य कर रहे थे :—उसके मंत्री हरिहर-रायके समयमें, (उक्त मितिको), कान-रामणकी स्त्री काम-गौण्डिने, 'सन्यसन' लेकर, मृत्युको प्राप्त होकर स्वर्ग गयी । आगेके श्लोको में बतलाया गया है कि राजगुरु सिद्धान्ति-यतीश उसका पुरोहित था, जिडुलिगे-नाड्के आवलि-पुरका अधिप बेच-गौण्ड चाचा था; बोम्मर उसकी सास थी ।]

[Ec, VIII, Sorab tl., No. 103.]

५९५

हिरेआवलि;—संस्कृत तथा कन्नड।

[—शक १३१९ = १३९७ ई०]

[हिरेआवलिमें, २१वें पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम्॥

स्वस्ति श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरम्। अरि-राय-विभाड। श्री-वीर-**हरियप्प-वोडेयर** राज्योदयदन्दु **शक-वरुष १३१९ धातु-सं-आषाढ़**-शु० ११ म हिरिय-जिड्डुलि-गेय-नाडोळ-गण हिर्यावलिय राम-गौडन सति माघवचन्द्र-मलधारि-गळ गुड्डि रामि-गौडि श्री-जिन-पदवनेय्दिदळु

षड्:दरुशन-सम-शीलम्।
दृढ-व्रत-दृढ ध्यान-मौन-दृढ-गुण-चरितव।
बिडदे श्री-जिन-पदाब्जव।
नेनऊत्तं **रामि-गौडि** स्वर्गस्तेयादळ्॥

[लेख स्पष्ट है। हरियप्प-वोडेयर्के समयका है।]

[EC, VIII, Sorab tl., No. 121]

५९६

श्रवणबेल्गोला;—संस्कृत।

[शक १३२० = १३९८ ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

५९७

हुम्मच;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[काल=शक १३२१=१३९९ ई०]

[पार्श्वनाथ बस्तिके मुखमण्डपके तीसरे पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥

स्वस्ति श्रीमतु शक वरुष (वर्ष) सा १३२१ नेय बहुधान्यसंवत्सरद मार्गसिर-सुद्ध ४ ··· ··· श्रावण-नक्षत्रद ··· ··· मल्लप्पगळ मग होम्बुच्चद यिं ··· पायण्ण सकल-सन्यसन-सल्लेखन ··· दणियं सरीर-भारमं बिट्टु स्वर्गस्तरादरु मङ्गळ श्री श्री

[होम्बुच्चके पायण्णने सन्न्यसन और सल्लेखनाके द्वारा अपनेको अपने शरीर-भारसे मुक्त किया और स्वर्ग प्राप्त किया। यह उसीका स्मृति-लेख है।]

[EC, VIII, Nagar tl., No. 51, t. & tr.]

५९८

हिरे-आवलि;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक १३२१=१३९९ ई०]

[हिरे-आवळिमें, पाँच वें पाषाण पर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्।

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराजं अश्वपति गजपति नरपति पूर्व्व-दक्षिण-पश्चिम-समुद्राधीश्वर श्रीमद्-राय-राजधानि-हस्तिनापुर-विजयानगर--मुख्यवाद समस्त-पट्टणाधीश्वर श्री-हरिहर-राय राज्यं गेय्युत्तमिप्प कालदल्लि।

शक-वर्ष १३२१ नेय बहुधान्य-संवत्सरद आषाढ़ शुद्ध १२ बुधवारदुदय-काल-दोळु श्रीमन्नाळुव-महाप्रभु बिड्डुलिगेय-नाड्ङ्गे मुख्यवाद आवलिय **चन्द-गौण्डन** सति **चन्द-गौण्डि** सन्यसन-समाधि-विधियि मुडिहि स्वर्ग्ग-प्राप्तेयादळु ॥

क ॥ वर-पार्श्व-जिनर चरणम् ।

उरुतर-श्री-**विजयकीर्त्ति**-चरणाम्बुजमम् ।
शरणेन्दु मनदि नेनेवुत ।
वर-वडदळ् यिन्द्र-स्वर्ग्गमं सुखदिन्दम् ॥
नडव महा-लदिम-चौण्डक ।
यडवरिय ··· ··· ··· आवलियोळम् ।
कडयिल्लद कीर्त्तिय ··· ··· ।
पडेद सति सतियरोळगे ··· ··· गाद सतियळु ॥

भद्रमस्तु ॥ मङ्गळ महा श्री श्री श्री

[यह लेख ऊपर के लेख नं० ५६४ से मिलता है, लेकिन चन्द-गौण्ड की पत्नी चन्द-गौण्डि, जिनके पुरोहित विजयकीर्त्ति थे, का उल्लेख है ।

[EC, VIII, Sorab tl., No. 105]

५६६

उद्रि;—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न

[बिना काल निर्देशका, पर लगभग ११८० ई०]

[उद्रिमें ही, एक दूसरे पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भू-वळय-मध्यदोळ् इप्पुंदु **मेरु-पर्व्वतम्** ।
प्रस्यदि दक्षिणाश्रयदोळिप्पुंदु **कुन्तळ-देश** देशदोळ् ।

स्व-स्थिरवाद **बनवसेगवा**भयमुं पदिनेण्टु-**कम्पणम्** ।
विस्तरदिन्व **जिडुळिगे**गोप्पुव दर्प्पण**बुद्धरा-पुरम्** ।
उद्धरेयोळ् बनिसिद्दम् ।
··· द्दार्त्तं **बयिचपा**ल्मजं **सिरियण्णम्** ।
सद्धर्म्मिगळ सुर-द्रुम ।
··· ··· ··· सिष्टरं पालिसुतं ॥
आतन सति **चोडाम्बिके** ।
भूतळदोळ् पुरुष-भक्ति बन्धुगळित्ता- ।
मात्रदि पुर-जनवहुदेने ।
गोत्रं पेन्चुत्ते नडदळत्याश्चर्य्यम् ॥

व ॥ अन्ता-सिरियण्णं ··· ··· स्व-पत्नी-सहित-बन्धु-बान्धव ··· परिजन-पुर-जनमं पालिसुत्त सुख-संकथा-विनोददिन्दमिरुत यिरलु ॥ वोन्दानोन्दु-दिनं अरुहत्-परमेश्वरं **मुनिभद्र** ··· **सिरियण्ण** ··· चिन्तानेयं माळ्प ···

मुनिभद्र-देवराग्नेयोळ् ।
अनुवर्त्तिसिह गुड्डनातनेम् ···.।
··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· तङ्ग् ।
अनुमत-पदवीवेनेन्दु नेनेववसरदोळ् ॥
अनु ··· त्तर्दि कुसुम-वृष्टिगळं सुरियल्के बेगदिम् ।
घन-रव-भेरि-दुन्दुभि महा-मुरजं बहु-वाद्य-घोषदिम् ।
तन तनगाडि पाडुतिरे ··· ··· ··· ··· ··· ।
जिन-पद-पद्ममं बिडद ··· **सिरियण्णनेम्** कृतात्थनो ॥

(बाकीका पढ़ा जाने योग्य नहीं है) ।

[इस लेखमें बयिचप्पके पुत्र सिरियण्णने किस तरह जिन-चरणोंका आश्रय लिया, इसका वर्णन है । नं० ५७६ लेखकी ही तरह यहाँ भी उद्धरेका वर्णन है । इसमें बयिचपके पुत्र जिन-भक्त सिरियण्णने जन्म लिया था । उसकी स्त्रीका

नाम वरदाम्बिके (?) था। एक दिन अर्हत् परमेश्वरने (?) मुनिभद्रको यह बतलाया कि वे पूर्ण गृहस्थ-शिष्य सिरियण्णको एक सुखी अवस्थामें पहुँचायेंगे। उस अनुकूल समयमें, जब कि पुष्प-वृष्टि हो रही थी और भेरी, दुन्दुभि तथा महा-मृदङ्गके बाजे बज रहे थे, साधु सिरियण्ण हमेशाके लिये जिन-चरणोंमें लिपट गया। कितना भाग्यशाली वह था ?]

[EC, VIII, Sorab tl., No. 153]

५८०

मलेयूर—संस्कृत तथा कन्नड़।

[प्रमाथि वर्ष = १४०० ई० ? (लू. राइस)।]

[उसी पहाड़ीपर, बड़े गोल पाषाणके पश्चिमकी ओर]

प्रमाथि-वत्सरे ज्येष्ठ-मासस्य श्वेत-पक्षके।
पञ्चम्यां च तिथौ शुक्रवारे चन्द्रप्रभस्य तु ॥
प्रतिष्ठां कुरुते चन्द्रकीर्त्ति-योगी स्वयं मुदा।
स्व-निषिध्यर्थं उद्दाम-जिन-धर्म्म-प्रकाशकः ॥

श्री-मूलसंघ देशीगण पुस्तकगच्छ इङ्गलेश्वरद बळि कोण्डकुन्दान्वयद सम्बन्धिगळु श्रुत-मुनिगळ पद-पद्म-भृङ्गरुं शुभचन्द्र-देवर प्रियाग्र-शिष्यरुं श्रीमतु सकल-कला-प्रवीणरुमप्प श्री-कोयणद चन्द्रकीर्त्ति-देवरु माडिसिदरु श्री-चन्द्रप्रभ-स्वामि-गळन्नु।

[सकलकलाप्रवीण, शुभचन्द्रदेवके प्रियाग्रशिष्य, मूलसंघ, देशीगण, पुस्तक-गच्छ, इङ्गुलेश्वर-बलि तथा कोण्डकुन्दान्वयके श्रुतमुनिके पद-पद्म-भृङ्ग, कोयणके चन्द्रकीर्त्ति-देवने चन्द्रप्रभकी एक प्रतिमा बनवायी और उसकी, अपनी निषिधिके लिये, प्रतिष्ठा करायी।]

[EC, IV, Chamrajnagar tl., No. 151]

६०१

हिरे-आवलि;—संस्कृत तथा कन्नड ।

[शक १३२५ = १४०३ ई०]

[हिरे-आवलिमें, १७ वें पाषाण पर]

श्रीमत्परमगंभारस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति श्रीमतु **हरिहर-राय** राज्यं गेय्युत्तविप्प कालदलु ॥ श्रीमन्नाळ्व-महा-प्रभु अवलिय **बेचि-गौण्डन** महा-सति **सक-वर्ष १३२५ दनेय स्वभानु-संवत्सर-भाद्रपद-बहुळ-सप्तमो-शुक्रवार-रोहिणी-नक्षत्र**-बेळप्प - जावदलु **बोम्मि-गोण्डि** सन्यसन-सभाधि-वि धर्ध शरीर-भारमं बिट्टु स्वर्ग-प्राप्तियादळु ॥

क ॥ तन्नय दय्वं जिन-पति ।
तन्न गुरुं **मारचन्द्र-मलधारि-देवर्** ।
तन्न पति **बेचि-गौण्डनु** ।
तन्न सुतं **चन्द्-गौण्ड** अवलिपुरेशन् ॥
यी-तेरद बन्धु-बळगद ।
ख्यातिय प्रभु-मनेगळेल्ल तन्नवरेल्लम् ।
••• ताय गुणक्के पासटि ।
भू-तळदोळु बाम्मकक्के सरि दोरे उण्टे ॥
जिनर नेनेवुत्त वचनदोळ् ।
मनसिनोळं पुत्र-पौत्ररं तोरेवुत्तम् ।
येनगीग पञ्च-पदगळे ।
घनवेनुतले मुडिहि स्वर्गमं नेरे पडेदळ् ॥

मङ्गल महा श्री श्री ॥

[लेख स्पष्ट है । हरिहर-रायका राज्य था ।]

[EC, VIII, Sorab tl., No. 117.]

६०२

श्रवणबेल्गोला;—कन्नड़ ।

[वर्ष तारण = शक १३२६ = १४०४ ई० (कीलहौर्न)]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

६०३

हले-सोरब;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक १३२७=१४०५ ई०]

[हले-सोरबमें, बसके पूर्वमें आञ्जनेय मन्दिरके पासके समाधि-पाषाणपर]

श्रीमत्-परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ।।

स्वस्ति श्री शक-वरुष १३२७ नेय पार्थिव-संवत्सरद प्रथम-आषाढ-। ३० सु सोरबद महा-प्रभु देव-राजन अर्द्धाङ्गि मेचकं जिन-पदवनेय्दिदळ वेन्तेने ॥

कन् ॥ पोडविपर नेलेवीडिदु
भु (ट्ट) उत्तर-पुर चन्द्रगुप्ति अदकाश्रयवी -।
एड-नाडु मोदल-कम्पण ।
कडेगं पदिनेण्टु-नाडनार् बण्णिपरो ॥
घनतर-तेजदेळेगेगेसदिप्पववेम् पदिनेण्टु-कम्पणक् ।
अनितरोळोप्पु वडुरेय श्री-वनिता-सति बयिच-राजनोळ् ।
जनिसिदळिन्तिं बाळद ळेड-नाड महा-प्रभु देव-राजनङ् -।
गने एने मेचकं जिन-पादाब्जमनेय्दिदवेम् कृतार्त्थेयो ॥

कन् ॥ अरुहत्-परमेश्वरनम् ।
स्मरिसि महा-दुरित-दुर्घटङ्गळ काळिदळ् ।
गुरुगळ सम्बोधने उच्चरणेयलेयिदिदळु सु-समदि जिन-पदमं ॥

[जिन शासनकी प्रशंसा । (उक्त मितिको), सोरब महाप्रभुकी अर्द्धाङ्गिनी मेचक जिन पदोंके पास गयी । उसकी प्रशंसामें श्लोक, जिनमें कहा गया है कि कि **अठारह-कम्पणमें उद्धरेके** बयिचि-राजकी पुत्री थी । १८-कम्पणमें पहिला कम्पण एडेनाड् था, जो कि बलवान् नगर चन्द्रगुत्ति पर आश्रित था ।]

[Ec, VIII, Sorab tl., No 51.]

६०४

हिरे-आवलि;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक १३२६=१४०७ ई०]

[हिरे-आवलिमें, सात वें पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रयं श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज भुजबल-प्रताप चक्रेश्वर श्री-**वीर-हरिहर-राय**न कुमार **देव-राय**रु पृथ्वी-राज्यं गेय्वुत्तमिर्प्प-कालदल्लि **शक-वर्ष १३२६ सर्व्वधारि-संवत्सरदलु जिड्डुळिगेय नाडिङ्ग** मुख्यवाद **हिरि-आवलि**य ग्रामदल्लि श्रीमन्नाळ्व-महाप्रभु **राम-गौण्ड**न सुपुत्र **हारुव-गौण्ड** स्वर्गा-प्राप्ति आद ॥

वृ ॥ परम-**श्री**-जिन-राज देय्व मुनिपं वैराग्य-सम्पत्तिन्द ।

··· द **श्री-मुनिभद्र-देव** मुनियोळ् कैकोण्डुमिर्प्पसियुम् ।

बरेयुं बल्लमेयेन्दु वीरतनदिन्दाशिवल-भानुदिनम् ।

वर-मु ··· तस्याङ्गनेगक्कु हारुव-गौण्ड-प्रभु धर्मस्थ-कीर्त्ति ··· ॥

अण्ण **गोपण्ण**न तम्मनु ।

पुण्यद कणि धर्म-चित्त सच्चारित्रम् ।

पुष्पदनपवर्माकम् ।
बणिसली-हारुव-गौण्डगेयार् घरेयोळ् ।।
नोडिदडे मदन-सन्निभ ।
रूढियोळतिकीर्त्ति वेत्त सज्जन-पुरुषम् ।
पाडरिदं हारुव-गौण्डम् ।
बेडिदवरिगल-होन्नु-वस्त्रवनीवम् ।।
जिनर नुडि जिनर भावने ।
जिन-बिम्बकल्ददन्य-देय्वक्केरगम् ।
जिन-पद-नळिन-भ्रमरम् ।
जिन-धर्म्मोद्धार हुरुव-गौण्डनुदारम् ॥
मंगल महा श्री श्री श्री ।।

[जिन शासनकी प्रशंसा । स्वस्ति । जिस समय, (अपने पदों सहित), वीर-हरिहर-रायके पुत्र देव-राय पृथ्वीका राज्य कर रहे थे :—(उक्त मितिको) हिरि-आवलिमें, जो कि जिड्डुलिगे-नाड्का मुख्य ग्राम है, शासक महाप्रभु राम-गौण्डका पुत्र स्वर्गको गया ।

आगेके श्लोक बताते हैं कि उसके पुरोहित मुनिभद्र-देव थे, और उसके ज्येष्ठ भाई गोप्पण, तथा उसकी उदारता और जिनभक्तिकी भी प्रशंसा की गयी है ।]

[EC, VIII, Sorab tl., No. 107]

६०५

कुप्पटूरु—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक १३३० = १४०८ ई०]

[कुप्पटूरु में, जिन-बस्ति के उत्तर-पश्चिमकी ओर के पाषाण पर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ।।

स्थानमें थे:—जब वह देव-राय राज्य की रक्षा करनेमें प्रसन्न था—प्रधान मन्त्री के पदको सुशोभित करते हुए, जिन-समय रूपी समुद्र के बढ़ाने के लिये पूर्ण चन्द्र ऐसा गोप-चमूप महान् निडुगळ् किले पर शासन कर रहा था ।]

[EC, XI, Hiriyur tl., No 28]

६१०

भारङ्गी;—संस्कृत तथा कन्नड ।

[शक १३३७ = १४१५ ई०]

[भारङ्गीमें, कल्लेश्वर-बस्तिके पाषाणपर]

... ... खण्डितानङ्ग-राजस्

स्तुत-हित-**जिन-राजः** प्रास-सत्-पाद-पूजः ।
धृत-सगुण-समाजो वादिनं **वादि** ... ...
... ... राजोऽभून्नताशेष-राजः ॥

सरसि च सित-सरसिजमिव
गगने विधुरिव हरिरिव हर-हसनम् ।
इव हलधर-रुचिरिव विलस ...
... ... मुनि-पति-वर-विशद-यशः ॥

तच्छिष्यो **जयकीर्ति**-नाम-**मुनिप**स्तत्पाद-सेवा-रतः ।
सिद्धान्त-व्रतीपो नताखिल-नृपस्सिद्धान्त-पारङ्गतः ।
तच्छिष्योत्तम-**बुळ्ळ-गौड**-तनुजः श्री-**गोपिनाथो**ऽभवत्
तच्छिष्यः स्वयमप्यभूत् स्व-जननी श्री-**माळि-गावुण्ड्य**पी ॥

क्रमदिन्दी येल्लर गुणस्तुति येन्तेन्दोडे ॥

शेषोऽप्यस्तु सहस्र-रम्य-रसनस्स्तोत्रे समर्थो हि यो
भूयो या धिषणा [... ...] श्री-शारदाप्यस्तु सा ।
सोऽप्यस्त्वत्र गुरुर्गुरुस्सुर-ततेर्यश्शुद्ध-बुध्या गुरुर्

स्वक्तुं श्री-जयकीर्त्ति-वृत्तमशकन् नान्यः कथं मादृशः ॥
यम-नियम-समेतो ध्यान-दग्धाघ-जातो
जप-शत-विधि-तुष्टोऽभूदनुष्ठाननिष्टः
अनुगत-गुण-जालो वर्द्धितात्मीय-शीलो
भुवि किल जयकीर्त्तिश्चारु-मूर्त्तिस्सु-कीर्त्तिः ॥
दीक्षा-स्वीकारकालागत-जन-निवहे जात-तोषात् प्रभूतात्
कीर्त्तिं कुर्वत्यनूनं जय-जय-वचसा यस्य नुन्नाखिलार्त्तिम् ।
स नाम्नास्यैव नामाभवदिति भुवने ख्यातिरासीदितीदम्
जाने वक्तुं तदीयानपगत-गणनान्नैव जाने गुणौघान् ।
तच्छिष्यः श्रुत-वार्द्धि-वर्द्धन-विधुस्सिद्धान्त-पारङ्गतः
सिद्धान्ताभिध-शुद्ध-नाम-सहितोऽभूच्छुद्ध-विद्योद्यमः ।
बौद्धाद्युद्धत-वादि-बद्ध-नमनः सिद्धस्तुतौ तत्परस्
सिद्धेशश्च विशुद्ध-बुद्धि-सहितो हृद्योऽनवद्यो भुवि ॥
यद्-वाणीमय-दर्प्पणे शुचि-गुणे धी-भस्म-सन्दीपन-
प्रक्षीणावरणादि-कल्मष-गणे सत्यं जगद्दर्प्पणे ।
भव्या-वीक्ष्य निज-स्वरूपममलं रत्नत्रयाकल्पकम्
स्वीकृत्यामृतकामिनीं निज-वशे कुर्व्वन्ति शीघ्रं किल ॥
सिद्धान्तदेव-कर-पिञ्छमितीव भाति ॥
किं कर्णाभरणैस्सुवर्ण्ण-रचितैः किं मौक्तिकैर्न्निर्म्मितैः
किं नानामणि-निर्म्मितैरपि वरैर्म्मत्वेति मुक्त्वा पुनः ।
सिद्धान्त-व्रतिपस्य मानसहितं वाणीं सुवर्णोज्ज्वलाम्
कर्ण्णाकल्प इतीव शाश्वतिमां कुर्व्वन्ति सर्वे जनाः ॥
सांख्याः किंकरतामिताः किल पुनर्**य्यौगा** नियोगं किल
चार्वाकाश्च वराकतां किल गता **बौद्धाश्च** दुर्बुद्धिताम् ।
भाट्टो भ्रष्ट-मतिः किलाभवदिमं **प्राभाकरं** वेत्ति कः
तस्मात् को मदमातनोति पुरतस्सिद्धान्त-वादीशिनः ॥

स्याद्वाद-वाराकर-शीतभानोः
सिद्धान्त-देवस्य मनोज्ञ-शिष्यः ।
अभूदसौ **बुळ्ळप-गौड**-नामा
चारित्र-वाराकर-शीतरोचिः ॥
जिनेन्द्र-गन्धोदक-पूत-गात्रो
जिनार्च्चना-पुष्प-निवास-मूर्द्धा ।
जिनार्च्चना-चन्दन-कान्त-भालो
जिनेन्द्र-मन्त्रालय-मानसाब्जः ॥
नित्यं विशुध्द्या कृत-धर्म-चक्रो
नित्यं ललाटे कृत-धर्म-चक्रः ।
नित्यं मुदा पालित-देहि-चक्रो
नित्यं यशः-पूरित-भूमि-चक्रः ॥
दिनेदिने सम्भृत-धम-बुद्धिर्
दिनेदिने वर्द्धित-दान-वृद्धिः ।
दिनेदिने वृत्त दयाभिवृद्धिर्
दिनेदिनेवृत्त-हिरण्य-वृद्धिः ॥
अमी गुणास्सन्त्यखिळे जनेऽपि
सम्यक्त्व-रत्नकरता तु नैव ।
सा **बुळ्ळ-गौडे** खलु सत्यमस्ति
को वा ततो वर्णयति प्रभुं तम् ॥
तत्पुत्रस्तत-सद्गुण-स्तुत-जिनस्सिद्धान्त-नाम्नो मुनेस्
सिद्धान्तोद्भट-वार्द्धि-वर्द्धन-विधोश्शिष्यःसुपुष्यद्दयः ।
सत्याब्जाकर-भास्करः प्रियकरश्चारित्र-वाराकरः ।
श्री-पूर्णो भुवि गोपण-प्रभुरभूत् सम्यक्त्व-रत्नाकरः ॥
सिद्धान्तदेव-गुरु-पाद-पयोज-भक्तः ।
श्री-बुळ्ळ-गौड़-हृदयाम्बुज-भानु-बिम्बः ।

सन्मल्लि-गौडि-कर-पङ्कज-बाल-भृङ्गः ।
श्री-**गोपणो** निखिळ-बन्धु-मणीष्ट-सिन्धुः ॥
कीर्त्तिर्दिक्कामिनीनां शिरसि वितनुते मल्लिका-पुष्प-शोभाम्
तेजस्सीमन्तिनीनां विलसति विमले कान्त-सीमन्त-भूमौ ।
सिन्दूर-श्रीरिवाशा-परवश-विदुषां प्रीति-कृद् दान-सम्पद्
वाणी पीयूष-साम्या समल-गुण-निधेर्गोपिनाथ-प्रभोःस्यात् ॥

श्रीमद्-राय-राज-गुरु-मण्डलाचार्य्य महा-वाद-वादीश्वर-राय वादि-पितामह सकल-विद्वज्जन चक्रवर्त्तिगळप्प श्रीम**दभयचन्द्र-सिद्धान्त-देव**र प्रियाग्र-शिष्यनह **बुळ्ळ गौड**न मग **गोप-गौड**नाव-पोरकधिपतियेन्दोदे ॥

द्विपङ्गळोळगे **जम्बू** -।
द्वीपं देशाङ्गवोळगे **कन्नड-देशम्** ।
रूप-विभवदलि सत्या -।
लापदि सोगयिसुतमिर्प्पवतिमुददिन्दम् ॥

अन्ता-जम्बू-द्विपदोळगण कर्ण्णाट-विषयदोळगे ॥

फल-भरवाद शालि तळ्देरिद् चूत-कुजालि तेङ्गु कण् -।
गोळिसुव कौङ्गु पूत लते पू-गिडु पू-मरदोळि पल्लवङ् -।
गळ पोळगोन्दि तां निमिर्व शाक-कुजं तिळि-नीर्गोळङ्गळिम् ॥
सुललितवागि रञ्जिपुदु **नागरखण्ड**मदेत्त नोळ्पडम् ।
आ-नाडिङ्गे शिरो-विभूषणवेनल् **भारङ्गि**चेल्वागि सु -।
ज्ञान-व्यापकरप्प भव्य-जनदिं विद्वज्जनानीकदिम् ।
नाना-नीति-विदग्धरिं घनिकरि तीविर्द्दु लक्ष्मी-महा -।
स्थानं तन्नोळगिर्प्पुदेम्ब बगे-दोरुत्तिर्प्पुदेल्लागळुम् ॥

आ-पुरद मध्य-प्रदेशदोळ् ॥

ओळकोण्डभ्रमनेय्दे चुम्बिपुदय-श्री-शलवा-भानु-मण् -।

दलवो येम्बवोलुन्नतोन्नतदोळा-चैत्यालयं चेन्न पोण् -।
गळशं रञ्जिसे भित्तिगळ् पोळपु-दोरल्गा-महा-सद्मदोळ्।
विलसत्पार्श्व-जिनेशनिर्प्पनदरोळ् देवाधिदेवेश्वरम् ॥
अन्ता पुरदधिपति म् -।
चिन्तामणि **गोप-गौड**-सुत **बुळ्ळप्पङ्**।
इन्तुदयिसि **गोपण्णम्**।
कन्तु-समाकृतियोळोप्पुवं वसुमतियोळ् ॥
जिन-सद्-धर्म्ममनेल्लमं तिळिपि मत्ता-मूल-सन्मन्त्रमम् ।
नेनेवुत्तिर्प्पुदेनुत्तल् च्चपिसिदं सिद्धान्त-योगीन्द्रना -।
तन कारुण्यमनप्पुकेय्दु मुदर्दि सर्व्वज्ञ-पादाब्ज-वन् -।
दनेयं माडुत धर्म्मदिन्द नडेवं **गोपण्ण**-भव्योत्तमम् ॥
गोपति-वाहन-प्रभेयनेळिसि गोपति-वाहनांशुमम् ।
रूप-गिडल्के जवेडु गोपति-वाहन-कान्तियं महा -।
टोपदे ताने निन्दिसि मनोहरदेळ्गेयोळोप्पुत्तं बहु -।
द्वीपमनेय्दे पर्व्विदुदु **गोपण**नग्गद-कीर्त्ति पाण्डुरम् ॥*

पुनः ॥

अखण्डतर-पाण्डित्य-मण्डितानन-मण्डलः ।
पण्डिताचार्य्य-वर्य्योऽस्याखण्ड-श्री-कारण किल ॥
यत्-कारुण्य-कटाक्ष-वीक्षित-पुमान् लक्ष्मी-पतिस्स्यात् किल
यत्-पादानति-मानितामल-मनास्स्वयं महेशः किल ।
तच्छ्री-पण्डित-देव संयत-कृपावामः किलासौ प्रभुम्
तस्मादस्य सु-गोपणस्य सुकृतं तत् केन वा कथ्यते ॥
एको निवर्त्तयति दुर्गति-मार्गतो यम्
अन्यो हि दर्शयति निर्वृति-वर्त्म यस्य ।
यौ पण्डित **श्रुत मुनि** मुनिपौ तयोस्तत्
तद्-गोपणस्य मुनि पुण्यं अगण्यमत्र ॥

मत्ते ॥ जिन-पद-सरोज-भृङ्गम् ।

जिन-वाणी-वारि-धौत-कलिल-मलौघम् ।
जिन-मुनि-जन-पद-भक्तम् ।
विनयाढ्यं गोप-गौडनखिळ-गुणाढ्यम् ॥

इन्तु कीर्त्तिगावासवागिद्र्दु ॥ पुनः ॥

अन्यदा गुण-माणिक्य भूषणो गोपण-प्रभुः ।
मर्त्य-लोकोद्भवं सौख्यं साधितं भुक्तमुत्तमम् ॥
तस्मादनेन भुक्तेन सुखेनालमतः परम् ।
स्वर्ग-लोकोद्भवं सौख्यं भोक्तव्यमधिकं मया ॥
इत्थं स्वान्ते विचिन्त्येव **गोपणो** वासरे शुभे ।
पुरन्दर-पुरं शीघ्रं हन्त गन्तु-मना अभूत् ॥
शुभ-वासरवदावुदेन्दोडे ॥

सप्त त्रिंशत्-समेत-त्रि-शत-दश-शतेऽब्दे शके मन्मथाब्दे
मासे चाषाढ-संज्ञे वर-गुरु-दिवसे सत्-त्रयोदश्युपेते ।
कृष्णे पक्षे मनोज्ञे निखिल-गुण-गणो **गोपणो** भूषणात्तो
भोक्तुं वा स्वर्ग-सौख्यं सुर-पुरमगमद् दिव्यमव्याहत-श्रीः ॥

आतन समाधि-विधानमेन्तेन्दोडे ॥

परम-जिनेन्द्र-मूर्त्तियने बानिसुतं हृदयाम्बुजातदोळ् ।
परम-जिनेन्द्र-मन्त्रमने जिह्वेयोळुच्चरिसुत्त निष्ठेयिम् ।
बेरळगळोलोय्यनोय्यनेणिसुत्त जपावधियागे देहमम् ।
त्वरितदि बिट्टु मुक्ति-वडेदं कलि-गोपणनेम् कृतार्त्थनो ॥

भद्रमस्तु ॥

पूर्व्वस्मिन् शक-वत्सरे शुभतरे पक्षे च कृष्णेऽधिके
मासे भाद्रपदेऽष्टमी-तिथि-युते श्री-भौमवारे वरे ।

आ-तारापति-भानु-भूधर-धरा ताराम्बरं तिष्ट (ष्ठ) तु
श्री-**गोपीश**-परोक्त-शासनमिदं सत्कर्म्मणा स्थापितम् ॥

[वादिराज मुनिकी प्रशंसा। उनके शिष्य जयकीर्त्ति-मुनिप थे; उनके शिष्य सिद्धान्ति-व्रतिप थे। उनके शिष्य बुल्ल-गौड, उनके पुत्र गोपीनाथ, और उसकी माँ मल्लि-गाबुण्डि। इन सबकी क्रमसे प्रशंसा। उनके शिष्य (प्रशंसा सहित) **सिद्धान्त-देव-मुनिप** थे, जिनका मस्तक बौद्धोंको चुप करनेके लिये हमेशा सन्नद्ध रहता था। सांख्य, योग, चार्व्वाक, बौद्ध, भाट्ट तथा प्राभाकर सभीको उन्होंने शास्त्रार्थमें जीता था। बुल्लप-गौड, तथा उनके पुत्र गोपण-प्रभु जो अपनी माँ मल्लि-गौडिके हाथमें मक्खीकी तरह था, की प्रशंसा।

राय-राजगुरु-मण्डलाचार्य्य, महा-वाद-वादीश्वर, रायवादि-पितामह अभय-चन्द्र-सिद्धान्त-देवका पुराना (ज्येष्ठ) शिष्य बुल्ल-गौड था, जिसका पुत्र गोप-गौड नागरखण्डका शासक था। नागरखण्ड कर्णाटक देशमें था। नागरखण्डका खास भूषण भारङ्गि था, जिसमे जैन लोग, विद्वान्, न्यायी एवं श्रीमन्त लोग भरे हुए थे। इसमें एक उत्तम चैत्यालय था, जिसमें पार्श्व जिनेश विराजमान थे, उस नगर (भारङ्गि) का शासक गोप-गौडके पुत्र बुल्लप्पका पुत्र गोपण था, जिसके दो गुरु थे, पण्डिताचार्य्य और श्रुत-मुनिप; इनमेसे एक उनको अनीतिके मार्गसे हटाता था तो दूसरा अच्छे मार्गपर लगाता था। इस संसारकी अच्छी-अच्छी वस्तुओंका उपभोग कर, परलोकके फलोंकी इच्छासे, (उक्त मितिको), गोपणने समाधिकी रस्मसे शरीर-त्याग किया, और 'मुक्ति' प्राप्त की। भद्रमस्तु। यह समय उसी शक कालका था, जिसमें यह पाषाण लगाया गया था।

[EC, VII, Sorab tl., No. 329.]

६११

हिरे-आवलि,—संस्कृत तथा कन्नड ।

[शक १३३९ = १४१७ ई०]

[हिरे-आवलिमें, ११ वें पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

व ॥ श्रीमद्-राय-राजधानि-विजयानगर-मुख्यवाद-समस्त-पट्टणाधीश्वर श्री-वीर-हरिहर-रायन कुमार प्रताप देव-रायनु राज्यं गेय्युत्तमिर्प्प कालदल्लि **शक-वर्ष १३३९ नेय विलम्बि-संवत्सरद चैत्र-बहुळ १० गुरुवारदलु** श्रीमत्-सेन गणाग्रगण्यरु **मुनि-भद्र**-स्वामिगळ् प्रिय-गुड्डु हिरि-अवलिय राम-गौण्डन सत्-पुत्र गोप-गौण्डनु समाधि-विधियिं मुडिपि स्वर्ग-प्राप्ति आद ॥

वृ ॥ वीर-जिनेन्द्र-पाद-पङ्कज-भृङ्गनुदार-चित्तनुद्- ।
धारकनन्त-जीर्ण्ण-जिन-वासव निर्म्मित-दान-पारगम् ।
गोरद-दासि-वेसि पर-नारि-सहोदर मार- सन्निभम् ।
अपारद-गोप-गौण्ड-प्रभुवं पुर बण्णिसुतिक्कुमागळुम् ॥

क ॥ बसदि-कलु-वेसननेसगिये ।
वसुधेयोळु पुण्य-कीर्त्तियं अवलियोळम् ।
दस-दिक्किनलि गोपण्णम् ।
पसरिसिदं राम-गौण्डनदेम् पवित्रनु ॥

वृ ॥ परमाराध्यं जिनेन्द्रं गुरु ऋषि-निनहं राम-गौण्डात्मजातम् ।
निरुतं रामाम्बिका जननि अनुजनुं हा राम-गवुण्डं गुणज्ञम् ।
धिरि-अण्णं चन्द्रमाङ्कं सरसिज-मुखि गोवकं पत्नियेम्बळ् ।
पिरिदुं स्वर्गापवर्ग्ग-प्रकरदोळेसेवं **गोप-गौण्डं** कृतार्त्थम् ॥

क ॥ पोडवि-पति देव-रायनु ।
तडेयदे राज्यवनु आळव-कालदोळन्दुम् ।
बिडदे बिन-चरण-सेवेय ।
कडु-गुणि **गोपण्ण** पडेदनुत्तम-गतियम् ॥
गुत्तिय-राज्यद बोळगम् ।
उत्तमवेनिसिहुदु हिरिय-बिड्डुळिगेयोळम् ।
अत्युत्तम-हिरि-अवलिय ।
पेत्तनु प्रभु-राम-गौण्ड-सुत गोपण्णम् ॥
गुरुगळु श्री-मुनिभद्ररु ।
धरिसिदमवरिन्द गोपणाङ्कनु व्रतमम् ।
नररोळगे पुण्यवन्तनु ।
पिरिदुं स्वर्गापवर्गमं नेरे पडदम् ॥
अळवह-चैत्र-बहुळदि ।
बेळगप्पा-जावदलि गुरुवारदोळम् ।
विलसित-विलम्बि-वत्सरद- ।
ओळगादुदु दुहूरण-योग **गोपि-देव**र्गम् ॥
दासी-वेसिय-रूपम् ।
व···घोरं पिरिदेन्दु तो··· अनि व्रतदिम् ।
मासिद-कीर्त्तिर्गळन्दम् ।
लेसेनिसिये **गोप-गौण्ड** स्वर्गव पोकम् ॥

मंगल महा श्री

[इस लेखमें वंशावलि वर्णित है । देव-रायका राज्य-काल था ।

[EC, VIII, Sorab tl., No. 119]

६१२

हादिकल्लु;—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न ।

[वर्ष हेमलम्बी = १४१७ ई० (लू. राइस) ।]

[हादिकल्लुमें, रते हकलूके पासके समाधि-पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

... ... श्रीमतु **हेव(म)ळम्बि-संवत्सरद आषाढ़-सु १ बृहस्पतिवारदन्दु श्री-गुणसेन-सैद्धान्ति-देवर** गुड्ड ... ... हादिगलगुडियय्यप्प-**गौडन** हेडति **काळि-गावुण्डि** समाधि-विधियिं मुडिपि सुर-लोक-प्राप्तेयादळु मङ्गल महा

[जिन-शासनकी प्रशंसा । (उक्त वर्षमें), गुणसेन-सिद्धान्ति-देवके गृहस्थ शिष्य ... अय्यप्प-गौडकी पत्नी काळि-गौण्डि समाधि-विधिके द्वारा मृत्युको प्राप्त हुई और स्वर्गको गयी ।]

[EC, VIII, Tirthahalli tl., No. 121.]

६१३

हिरे-आवलि;— कन्नड़-भग्न ।

[शक १३४३ = १४२१ ई०]

[हिरेआवलिमें, २०वें पाषाणपर]

स्वस्ति श्रीमद्-राजधानि-विजयानगर-मुख्यवाद समस्त ... ... श्री-वीर-प्रताप-देव-राय-वोडेयरु राज्यं गेयुत्तमिर्प्प कालदल्लि **शक-वरुष १३४३ प्लव**-समाश्विज ब-६ सु हिरियावलिय **गोप-गौडन** मगनु **भैरव-गौडनु** पञ्च-नमस्कारदिं स्वर्गास्तनादम् ॥

परम-जिन-पार्श्वनाथन
चरण ··· ··· ··· ··· ··· ।
··· ··· चरण-कमल-षट्पम् ।
··· ··· भयि(भै)रव ··· ··· भव्य ॥
जिन-रत्न ··· ··· ··· ··· ।
··· ··· जिनदासन उदित-वीर-व्रतदिम् ।
··· ··· ष्टनेन्दा- ।
विनयाम्बुधि भयि(भै)रवं ··· ··· पोकम् ॥
पित गोपीनाथनेनिपनु ।
मल ··· ··· मातेयु **कञ्चि-गौडि**-मातेयु तनगम् ।
··· ··· माते सुत ··· ··· ··· ।
··· ··· भैरप्प ··· ··· मुडिपि स्वर्गव पोकम् ॥
गुरु-पद्म-पदव नेनेऊत ।
सु-रुचिर-सच्चित्तदिन्टनात्मन ··· ··· ।
पिरिदप्प गतिय पडदम् ।
··· ··· ··· सणि भैरप्प ··· ··· ··· ॥

[इस लेखमें भी समाधिके स्मारकका उल्लेख है। देव-रायके राज्यका काल है।]

[EC, VIII Sorab tl, No 120]

६१४

हिरे आवलि;—कन्नड-भग्न ।

[शक १३४३ = १४२१ ई०]

[हिरे-आवलिमें, १८ वें पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

श्रीमतु राजधानी-**विजयनगर**-मुख्यवाद-समस्त-राट्टगाधीश्वर श्री-वीर-प्रताप-**देव-राय** राज्यं गेयिऊत्तमिर्प्प कालदलि **सकवरुष** १३४३ नेय सार्व्वरि-सं [व] त्सर-फाल्गुण-सु. ४ सो श्रीमत्-सेन-गणाग्रगण्यरु **मुनिभद्र-स्वामि**गळ्गे प्रिय-गुड्ड **हिरिय-आवलिय बोच-गोडन** सुपुत्र **मधुक गोडनु** समाधि-विधियिं मुडिपि स्वर्गासियादम् मङ्गळ महाश्री श्री यी-[क] ल्ल माडिदातमी-ऊर पूर्व्विक **मङ्गोजन** मग **बनदोजनु** ॥

[लेखमें स्मारकका उल्लेख है । देव-रायका राज्यकाल है ।]

[Ec, VIII, Sorab tl., No 118]

६१५

पहला लेख

मलेयूर (रु);—संस्कृत तथा कन्नड ।

[**शक १३४४=१४२२ ई०**]

[**मलेयूरु (उय्यमवल्लि प्रदेश) में ग्राम-प्रवेशके एक पाषाणपर**]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति श्री **शक-वरुष** १३४४ नेय शुभकृत्-संवत्सरद श्रावण-शुद्ध १५ ल्लु श्रीमद्राजाधिराज-राज-परमेश्वर श्री-वीरदेव-राय-महारायर कुमार श्री-वीर-हरिहर-रायरु सोम-ग्रहणदल्लु **कनकगिरिय** श्री-**विजय-देव**र श्री-कार्यक्के सल्लुव अङ्ग-रङ्ग-भोग मोदलाद देवता-विनियोगक्के **मलेयूर** चतुस्सीमेयोलगाद तोट तुडिके गद्दे बेद्दलु सुवर्ण्णादाय होन्नु होर्म्बार सुङ्क तळवडिके ग्राम्मद मणय वोसगे मदुवे चौर डलपे सरदि निधि निक्षेप जल पाषाण अक्षीणि आगामि मुन्तागि ऐनु-ळ्ळन्था स्वाम्य सर्व्वादाय-सहित आ-**मालेयूरु**-ग्रामवन्नु धारा पूर्व्वकवाद शासन-दत्तवागि वासुदेवर-केरे-गद्दे स्थान-मान्यगळु होरतागि बिट्ट दत्ति (हमेशाकी तरह अन्तिम श्लोक)

[राजाधिराज राजपरमेश्वर वीर-**देवराय**-महारायके पुत्र वीर **हरिहरराय** ने कनकगिरिके देव विजयकी उपासनाके लिये मलेयूर ग्रामकी सारी भूमिका दान किया ।]

दूसरा लेख

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य **वर्द्धतां** जैन-शासनम् ॥

स्वस्ति श्री **जयाभ्युदय-शालिवाहन-शक-वर्ष १३४४** सन्द वर्तमान-शुभकृतु-संवत्सरद श्रावण-शु १५ आ लु कनकगिरिय श्री-विजय-देवरिगे श्रीमन्महाराजाधिराज राजपरमेश्वर श्री वीरप्रताप **देवराय**-महारायर कुमार **हरिहररायर्** **ओडेयरु** आ-कनकगिरिय श्री-विजयनाथ-देवर अमृत-पडि अङ्ग-रङ्ग-भोग-वैभवक्के कोट्ट धर्म-शासन तमगे कोट्टिह **तेरकणाम्बेय राज्यक्के** सलुव **कोलगणद** भागेय **मलेयूर** ग्राम १ र चतुस्सीमेयोळगुल्ल गद्दे बेद्दलु तोट तुडिके आरु-वन्नु मेलु-ओन्नु अड-देरे कुम्बार-देरे कल्ल-मने कोडेगे देव-दान बिनुगु बेस-वक्कलु होन्नु होम्बळि होङ्गे दारा सुङ्क दण्णायकर स्वाम्य मुन्तागि प्राकु-मर्य्यादे ऐनुळ्ळ सर्व्व-स्वाम्यवनु अनुभविसिकोम्ब **मलेयूर** ग्राम १ र कालुवळ्ळि **हुणुसूरपुरद** ग्राम १ उभयं ग्राम २ क्कं हिरिय मनेय पट्टे प्रमाण ग २३० (आगेकी १३ पंक्तियोंमें दानका विस्तृत विवरण है) अक्षरदलु नृपित्त-ऐळु होन्निन मलेयूर ग्राम १ न् सोम-ग्रहण-पुण्य-काल शुभकृतु-संवत्सरद कार्त्तिक-शु १ आरम्भवागि **त्रियम्बक देवर** सन्निधियल्लि स-हिरण्योदक-दान-(दान)-धारा-पूर्व्वकवागि धारेयनेरेदु आ ग्रामद चतुस्सीमेयल्लि मुक्कोडेय कल्लनु नेट्टिसि कोट्ट (IIb) वागि आ-ग्रामद चतुस्सीमेयोळगुल्ल अक्षिणी-आगामिनिधि-निक्षेप-जल-पाषाण-सिद्ध-साध्य अष्टभोग-तेजस्-स्वाम्य सर्व्व-पृथ्वी समस्तबलिसहित देवर अमृत-पडिगाङ्ग-रङ्ग-भोग-वैभवक्के धारयन्नु एरदु कोट्टवागि आ-चन्द्रार्क्क-स्थायियागि चित्तायसुवुदेन्दु कोट्ट धर्म्मशासन-बिट्ट दत्ति (पूर्वकी तरह अन्तिम श्लोक) **कोलगणद वासुदेवरिगे** मले (IIIa) यूरलि कोट्टिह वूरु-मुण्डाग केरेय केळगे

चतुर्स्सीमेयल्लि प्राकु-मर्य्यादि नीरु वरिदु बेळव इप्टु गद्दे होरंते स्थान-मान्य पूर्व्व मर्य्यादि बर् ··· ओप्प श्री विरूपाक्ष (कन्नड़ अक्षरोंमें)

[इस लेखका विषय शिलालेख नं० १४४ (ए० क०, जिल्द ४ थी, चामराजनगर तालुका) से भिन्न नहीं है। अतः १४४ और १५६ नं० के लेखोंका विषय एक ही है। इस लेखमें भी हरिराय ओडेयरने कनकगिरिके विजयनाथ-देवकी पूजा, सजावट और रथयात्राके लिये हुणुसूरपुर ग्राम सहित मलेयूर ग्रामका दान किया। यह दान त्रियम्बक-देवके समक्ष किया गया था। मालेयूर गाँव तेरकणाम्बे राज्यके कोलगणका था।]

[EC, IV, Chamarajnagar tl., No., 144 & 159.]

६१६

श्रवणबेलगोला—संस्कृत।

[वर्ष शुभकृत्=शक १३४४ (कोलहौर्न)=१४२२ ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

६१७

देवगढ़;—संस्कृत।

[सं० १४८१ तथा शक १३४६=१४२४ई०]

[ललितपुर से लाये गये एक शिलालेख की नकल]

१—**वृषभ** जयत संश्रीभद्रर्द्धमानमहोदये विपुलं विलसत्कान्तौ कान्तारन्येऽमृत-सागरे। सुगत सुमतिमन्नैणाङ्काकलङ्क सकौमुद वितनुते सतां शान्त्यै शान्तिश्रियं सुमतिं वयं ॥१॥+ + + + भुवः श्रोते नश्वरानुदयाय ते। तच्चिद्दुद्यज्ज्वलज्ज्योतिरार्हतं श्रेयसे श्रये ॥२॥ पायादपायात् सदयः सदा नः सदा शिवो यद्विशदो हितासौ चक्षच्चिदा—१

२—नन्दविशुद्धचन्द्रद्युतौ चकोरं त्यपि (?) शुद्धहंसाः ॥३॥ **श्रीशंकरं** श्रीरमणाभिरामं + + +लक्ष्मणमर्हणार्हं । जिनेन्द्रनन्दं घनटं सुमित्रमजातशत्रुं विभजे चकोरं ॥४॥ स्ववाममायामममप्यमायं वामं लसल्लक्ष्मणमर्हणार्हं । सीतेशसुग्रीवमहार्हणार्हं वन्दे–२

३— सहर्षं सहसैकशीर्षं ॥५॥ सशल्यदुःशासननाशहेतुमजातशत्रुं सहदेववर्य्यं । वन्दे विशालार्जुन सद्य + + नन्दत्सतां कर्णकुलं मृगाङ्कं ॥६॥ वामयेघाष्टकं (?) स्वेन कर्म्माधाक्षीद् यरक्षरं (?) । साघोद्धर्द्धि दुरेखं तम्हंलीये विलयश्रिये ॥७॥ विगर्ज्जन्नागरजाङ्क–३

४—मजितं **तक्षकं** नमः । दुर्घटं सुघटद्वर्द्धमानजैनमहोत्सवं ॥८॥ वदनपरगिरीशो ···वित्रिदशन······ वेत्रवत्याकलेयंत् । प्रभवतु स मृगाङ्कोप्यस्तदोषोऽकलङ्कः । कुवलयसुखहेतुर्नः श्रिये **शान्तिसोमः** ॥९॥ योदीदहच्च तिलकेक्षण वह्निनेह कामं–४

५—अमीमरदरं जनकं तदीयं । शत्तयान्वितस्त्रिनयनोप्यपवामवामः शान्तीश्वरत्रिजगतां स शिवाय······पदपद्मयुग्म ··· छद्म उपास्महे तदहं मुदा यदमर्त्यमर्त्यभुजङ्गमनम्रमौलिकुलास्मचित् । विदलत्तमालसमुल्लसत्सुनखेन्दुमण्डलमण्डलीविगलांशुभिर्भवश्री–५

६—मुषः **शशि**नोऽर्हतो भवसंभवे ॥११ क्षीरकर्पूरनीहार-हारहीरहरावरां कुन्देन्दुकुमु···क्षीरसमुद्रसान्द्र विलसत्कल्लोलमालोज्ज्वलां श्री**सर्वज्ञ** सुधांशुमण्डलमिलत्स्वर्लोककल्लोलिनीं । विद्रावन् निजभक्तचेतसि समुन्मीलत्तमोपद्रवां वन्दे–

७—जाड्यभिदे मुदे च भगवद्वाणीञ्च सत्सम्पदे ॥१ श्रीमूल-लक्ष्म्या नृपनन्दिसंघे गच्छेपतुच्छे **मबुसारदाख्ये** । तुणे बलात्कारगणे गरिष्ठे **श्रीकुं**······ जिनेन्द्रचन्द्रागमदुर्गमार्गो यस्योडुपं त्यत्र सतां हि वाचः । अद्याप्युदञ्चद्यशसामजस्रनघाश्च स **धर्मचन्द्रः** ॥२ यस्याशागजकर्णकैरववना–७

८—नन्दैकसत्कौमुदीकीर्तिर्नागनरामरेन्द्रभुवने जेगीयतेऽहर्निशं । **धर्म्मेन्दुः**

सकलः कलङ्कविकलः स स्याच्छुधांशुश्रिये श्रीमूल ··· ···विलसन्न··· ···
दये ॥३ **धर्म्मचन्द्र**मुनीन्द्रस्य पट्टोत्कृष्टोदयाचले। यस्योदयोऽभवत्तस्य
तमस्तोमापनोदिनः ॥४ **रत्नकीर्त्ति**सन्मूर्त्तेस्तिग्मांशोः क-८

९—मलोदये। सतामप्यपपङ्कानां तपसां स्युर्यशोऽशवः ॥५ अद्याप्युच्चैर्जजृम्भे
चरणचयचितसम्भदम्भाद् यदीया ज्योत्स्नेवानुष्णरश्मेः चरदमृतमयी··· ···।
सस्या ··· ··· ··· ··· समिनां पुण्यपुण्योपदेष्टा सृष्टा सतप्रतिष्ठासु च
जिनशशिनो रत्नकीर्त्तिः प्रशस्त्यै ॥२ रत्नकीर्त्तिपदाम्भोजकमलालङ्कृतासने।
ये नोद्यद्वाग्वि-९

१०—लासेन भारती भूषणायितं ॥१ गर्ज्जद्दुर्वादिवृन्दाम्बुददलनविधौ योऽभवत्तो-
व्रवातस्त्वेकान्तध्वान्तभानुः कुवलयसुखकृद् यस्त्वनैकान्त ··· ··· द्रान्ताङ्को-
कलङ्कः ··· ··· सकलकलः शङ्करो + + वृत्तः स्याद्दृद्धयै मूलसङ्घामल-
कमलानिधौ श्री**प्रभाचन्द्रदेवः** ॥२ पदे ततो नमदशेषमहीशभाललग्ना-
नि यत्क्रमरजस्तिलकान्यभूवन् -१०

११—कल्याणकारिकमलाकुचकेलिदानि पापापहानि समभूदिह **पद्मनन्दी** ॥१
कः सरीसर्त्ति साम्यत्वं सन्निधावब्जनन्दिनः। न ··· ··· न सम्ममे यस्य स
··· ॥ २ के के पुराणसारौघं शिष्यानाकर्ण्य कर्णयोः। श्रीपद्मनन्दिनः
प्रापुः सस्मितां धर्म्मदेशनां ॥ ३ प्रेम्ना कज्जलितं विशच्छलमितं चेतोभुवा
वर्त्ति—११

१२—तं रागाद्यैः स्मयदूषितैः परमतैर्भ्रस्यत्तमस्तोमितं। भावैः प्रस्फुटितं नयैर्वि-
रचितं धर्म्मैः समुद्योतितं सत्पात्राम्बुजनन्दिदीपतपसि प्रागजैनधर्म्मालये ॥४
सै ··· ··· क+चलति सद्वंसत्यनुष्णा द्युतिः स्त्रीगाम्भोध्यतिचन्द्रमत्यहरहः
स्पर्द्धन्ति हन्तो अति। श्रीमानम्बुजनन्दिनस्त्रिभुवने जेगीयमाना न यै-१२

१३—वीद्यत्सद्यशसा न केन सुनटी कीर्त्तिर्नरीनर्त्यहो ॥५ ज्ञानार्णवः समयसार-
गभीरशब्दसल्लक्षणः प्रणवलीनलयः प्रमाणः। सि ··· ··· भुवनोपकृत्यै ··

···॥ ६ इन्द्रोपेन्द्रफणीन्द्रगीष्पतिमतिं यः कोऽपि धत्ते पुमान् मन्ये पङ्कज-नन्दिनो गणगुणान् वक्तुं न सोपीशते । संसारार्णवतीर्ण–१३

१४—यामलधिया सन्नौकया सन्मुनेर्निष्कल्लोलचिदम्बुधावचलया पद्मायितं लीलया ॥३ श्रीपद्मनन्दिसुगुरोःपदपद्मप ··· ··· ··· धर्मोपलक्षितदिशा ··· ··· मारमनोभिरम्यः प्रोद्भेद्य कौमुदमरं **शुभचन्द्रदेवः** ॥ १ अथ संवत्सरेस्मिन् नृपविक्रमादित्यगताब्द **१४८१** शा–१४

१५—के श्रीशालिवाहानाम् **१३४६** वैशाखमासशुक्लपक्षीय पूर्णमास्यां गुरु-वासरे । स्वातिनः(न)क्षत्रे । सिंहलग्नोदये ॥ अतिविक्र+ +र्येब्दे चन्द्रा-द्रयब्धीन्दु ··· ··· वैशाखे पूर्णराकायां ··· ··· मृगयोदये ॥···साकृष्ट-कृपाणपाणिविलसत्तीव्रप्रतापानलज्वालाजालसमाकुलीकृतगजाधीशा–१५

१६—धरीशैणपे । श्रीमान् मालवपालकेशकनृपे **गोरीकुलो**द्योतके निःक्रान्ते विजयाय **मण्डपपुराच्छ्रीसाहि आलम्भके** ॥१··· ··· सुमण्डलमण्ड-मानाखण्डलबालकुलमण्डमपी+ +न्ये । संनिर्म्ममे शिवशिरोमणिजन्मनोज्ञं सद्बोधिनः सुविधिना सुविधिः सुबोधः ॥ १ सोऽभूत्तस्मिन् त्रिभुवनपालो भुवने १६

१७—लसद्यशः कलशः । योऽलं त्रिभुवनलक्ष्म्या लेभे गणगुणं गणा + रणं ॥२ निर्दम्भः स्तम्भगर्जद् गजसकलकला + + लाङ्काकलङ्कः ··· ··· ··· विपुलयशसो यस्य चित्रं पवित्रं । तस्य श्रीपुण्यलक्ष्याखिलगुणनिलयो धीरधीरो गभीरः पुत्रो गोत्राभप + पममहिमनिधिर्धोरधीः साधुसाधुः ॥ ३ + + लबालकीर्त्तिलताबि- १७

१८—तानधारावरः सुसमयोप्यतमस्ककल्यः । सन्तापहारि ··· ··· कापसार्यभव ··· ··· ··· वनिवि + देवः ॥ विद्युल्लतेव विमला ··· ··· ··· पति-व्रताङ्का सौभाग्यभूधरसुता नररत्नगर्भा तस्याम्बिका च वनिता वनिताम्बि-केव ॥ ५ अभूदसमसौम्योपि तयोपि तयोर्वागर्थयोरिव **होली**सुनन्दनः श्रीमान् १८

१९—रसोत्साहाभिनन्दनः ।। ६ वर्द्धमानार्थिनामर्थै वर्द्धमानान् मनोरथान् सार्थ-यन्नर्थतः श्रीमान् होली कल्पाङ्घ्रिपायते ।।७ सन्मूलः सदलोल्लसत् ······ प्रशाखोच्छ्रिखः श्लाघ्य स्वच्छ कुलैः फलैरविकलः सुच्छायकायश्रियः । सन्तापेऽपि त्वपाकरः कुवलये श्रीहोलिकल्पाङ्घ्रिपो जीयात्तर्जितदुर्ज्जनोऽर्जुनय- १९

२०—शोबासोऽर्कचन्द्रार्थिभिः (?) । ८ अविकलशलल्पलतया सुकान्तया कान्तया कान्तः । असकृत् सुकृतसमुन्नतधाराधरनिर्भरासारैः ।। ९ यः कान्ता + + त्नत ··· ··· ··· कमलाख्ययाधनाख्यं धनदं सुधनञ्जयं साधुः ।।१० वधूधनश्रीफलमालयालं गल्हेशवंशानुजनन्दनैश्च सुवर्णरुक्माहिरमा- २०

२१—वरैभिः सरत्नभूगजरठकुराग्यैः ।।११ गाम्भीर्य्यजलदासये विभ्रलतां देवाचलो मार्द्दवं नृत्यत्कार्त्तिककेकिकाय विगलत्प + + तं + दयः ··· ··· ··· सदाश्रिततया सर्व्वं सहत्वं धरा यस्मादेव मिता ददुः स जयतात् श्रीहोलि-सङ्घाधिपः ।।१२ विस्मयन्ते धरित्राणि··· ··· ···होलिसाधुना । य- २१

२२—यशोऽकृतदुग्धाब्धौ वृषः कौमुदमेधते ।।१३ यद्यशो विष्णुनाप्युच्चैः कलावप्यकलङ्किना । + +स मेशशेषत्वं विश्वविश्वमुपाददे ।।१४ + दैव + ति सुजनवाञ्छ ··· ··· णां । अनुभवति वचांसि गुरुर्विश्वं विस्मयति होलिकृती ।।१५ गुणवानपि धर्म्मात्मा वक्रः सद्धर्म्मजोपि यः । यद + सोमदो हो- २२

२३—ली ऋजुरन्थाप्यलोभभाक् ।।१६ रोदसांवरसच्छुक्तासंपुराद् यद्यशो-लसत् मुक्ता मुक्त्यङ्गना मुक्ताहारं होल्या रसोर्हतात् ।।१७ सत्केतकीकु ··· ··· कारसंकास ··· ··· यशसात्ममयीकृताशः । सोल्लासससारसनि-वासिमया महान्तो होलीश्वरोऽस्तु सधनञ्जयसार्थवाहः ।।१८ नाको- २३

२४—सि त्वमहं वृषस्तनुतनुः किं पुत्रपित्रोः शुचा सानन्दं वद सम्र किं मृगयसे भूयोवतारस्तयोः । त + +कत्र कलौ वदाशु नृकवे किं वर्द्धमानेऽन्वये··· ··· मद्रूपो··· ··· ·· होलि सं + +रे ।।१९

श्रीहोलीकमलाकरे कुवलयं सत्कीर्त्तिकञ्जायते शेषेनालसि सद्दलीयति गजैर्दिनु प्रकाशीयति । मेरौ चित्रम- २४

२५—नात्र चित्रमपि तन्मित्रास्तचिन्तापभृद् यन्नालीयति सन्मरालति कलङ्की यत्र दोषाकरः ॥२० चन्द्रो निर्हसिता + तिप्रविकशद्र··· ··· ···जम्बालति । सिद्दीपत्यखिलाचलाचलविभुर्भ + + नन्तमितत्युग्रद्धोलियशोम्बुधौ सम ··· ···धम्मकनौकेत्यहो ॥

२६—२१ तत्रप्यत्रैको हेतुस्तद् यथा तथा हि ॥ विविक्तः शक्तिमान् होली विविद्यश्रोक्तिमानहं । इत्यावयोर्महान् स्नेहः सततं ववृधे बुधाः ॥२२ येनाकारि मनोहारि···पुरन्दर ··· ··· श्रोलजिनालयं ॥ २३ सतां सन्तोषपोषाय श्रेयसे चात्मनः श्रिये । सुखाय विमुखात्ताणां चेह स्नेहाय पश्यतां ॥२४ खण्डे भू + त + शो···२६

२७—तंसोभूत् **साधुदेहा**ख्यः । वेदश्रिया स लेभे सुसुतं श्री**वल्लदेवा**ख्यं ॥ स वल्लणश्रीरमणोपि सूनुं विचक्षणं लक्षणलक्षिताङ्गं । लेभे नृपं **लक्षणपालदेवं** देवा··· ··· ···श्रिया श्रीमत्**क्षेमराजा**भिधाङ्गजं । धर्म्मार्थकामसंसिद्धिसाधकं भाग्यतोऽलभत् ॥३ द्वितीयमद्वितीयोद्यत्प्रतापातापि—२७

२८—तद्विषं । + + भाग्धुराधूर्य्यवर्यं माधुर्य्यसागरं ॥४ नाम्ना देवगति सटःटयमतं सन्मर्त्यलक्ष्मीपतिं धर्म्मध्यानगतिं निरस्तकुमति यो नित्यमेवाददे । यश्चक्रे जिन + र्च्चनेऽचलरतिं स ··· ··· साधुजनेवि···॥५ श्रेष्ठः **पद्मश्रिया** श्रेष्ठं स्ववंशाम्भोजभास्करं सूनुं नयनसिंघाख्य लेभे रत्यामरावरं ? ॥६ नृरत्नं **रत्न**नामानम- २८

२९—यत्नाभ्यस्तपादवं ? सुतमाप्य समस्तास्तकुमति स दिवं ययौ ॥७ अलभन्मल्हणदेगनया**रम्भाभया**ङ्गजं चाथ । बालकलेशमिवालं कलया कलया··· ···पतिसङ्गनाथो··· दिल्हणदेव्याभिनन्दितनन्दनः । अथ **पद्मसिंह**नन्दनमुख्यैरपि नन्दतादनिशं ॥८॥ प्रतिष्ठयाति गारिष्ठयं यन्नामादेव देहिनां । तस्याब्जनन्दि- २९

३०—नो मूर्त्तेः कः प्रतिष्ठाघटामटेत् ॥१ शुभसोमाज्ञया सोसौ तथापि **गुण-कीर्त्तिना। वर्द्धमाना**भिधैः श्री**मद्दरपत्या**दिभिर्बुधैः ॥२ श्रीपद्मनन्दि··· दमवसन्तमहात्मने मूर्त्योविधाय विधिनाभिमतां प्रतिष्ठामेतां हि **नन्दन-सुनन्दन** नन्दनाद्यैः ॥३ सङ्घेश्वरः कुवलयेऽमल**होलि**चन्द्रः सङ्घेश ३०

३१—देवपतिवाबर्षतिनेन्द्रमुद्रः। सन्मङ्गलैः सकलबन्धुजनो + वृन्दैर्वर्षत् सहर्षमुप-कारसुधाश्रुधारां ॥४ परोपकर्त्ता यो यद् यशा ··· ··· ··· श्रीमान् सतत-धर्म्मात्मवृष्टिं यो दानवारिणा। धत्ते स सत्यधर्म्मेशो जीयाद्धोलो नरो-त्तमः ॥२ मोदत् कुवलयं यस्य यशस्तिलकमुत्तमं। दि- ३१

३२—दीपे उपमं सोमः स जीयाद्धोलिशङ्करः ॥३ प्रातः कालीयरागदलदखिलत-मोरेर्गुरेपादपद्मद्धत्पद्मोल्लासिलद्म्यास्तरुण ··· ··· ··· चञ्चचान्द्रीयश्रा-कलङ्क सकलकुवलये साधुतां होलिसाधोः ॥४ **अग्रोतकान्वये गर्गगोत्रे हाटबुधा**ङ्गजाः बभू- ३२

३३—वुः साधवः **सीमाहरुगङ्गामरा**भिधाः ॥१ तेषामाद्यात्मजस्तत्र **वील्हो-**भू**पल्हिकाङ्गज हरुरत्नश्रियोः** सूनुस्ततो भूत्**तल्हण**ः सुहृक् ॥२ ··· ··· ··· गनया ततः ॥३ समजनि वसन्तकीर्त्यार्य्यो **वोल्हणवर्द्धमान**जन्मा मृगयन् मातावयितश्रीसाल्हीचार्य्याकरो हिमासवुवः ॥३३

३४—प्रशस्तिमुद्यद्वृषभार्हचन्द्रसान्द्रार्थतीर्थो + + धा चकोरः। सतां मुदे सत्कवि-**वर्द्धमनो** जिनं समाराध्य विवर्द्धमानं ॥५ श्रीवर्द्धमानविबुधाननपद्मचञ्चत् पीयू ··· ··· धारां पीत्वा द्रुतां श्रुतियुगाञ्जलिभिस्त्वमीमां नन्दस्तु संसुमनसः शुचिचञ्चरीकाः ॥६॥ शुभमस्तु सतां सदा ॥ ··· सुतश्चिरं जीयात्। रिपुनृप-सिन्धुसवा ··· ··· विभू ··· ··· यस्माहि आलम्मः ॥१ श्रीसाह्यालम्माधि-पतनुजे रिभूपमौलिमाणिके। गर्जति गर्जनस्थाने ग + + गोरीकुलं कुवलयेस्मिन् ··· ··· ···

सार

इस शिलालेखको मिस्टर एफ़० सी० ब्लैक (Mr. F. C. Black)

ने ललितपुर जिलेमें पाया था। यह देवगढ़के पुराने किलेके भग्नावशेषोंके ऊपर उगे हुए जङ्गलमें मिला था। मि० ब्लैकका अनुमान है कि यह शिलालेख किसी ध्वस्त जैन मन्दिरका है।

इस शिलाखण्डका माप ६ फीट २ इञ्च × २ फीट ८ इञ्च है तथा मोटाई ३ इञ्च है।

लेख की भाषा अत्यन्त शब्दाडम्बर सहित है।

लेखके करीबन मध्यमें (पंक्ति १५) में दिया हुआ काल अक्षरों और अङ्कों दोनोंमें खूब संभालके साथ दिया हुआ है। वह यह है ··· "गुरुवार, विक्रम सं० १४८१ के वैशाख मासकी पूर्णमासी तथा शालिवाहन (शक) सं० १३४६ के स्वाति नक्षत्र और सिंह लग्नके उदयमें।" राजाका नाम घोरी (गोरी) वंशका **शाह आलम्भक** दिया हुआ है, यह मालव या मालवाका राजा (शासक) था। श्री राजेन्द्रलाल मित्र, एल एल० डी, सी० आई० ई (Rajendralala Mitra, LL. D., C. I. E.) अपने नोट (पृ० ६७) मे कहते हैं कि उन्हें इस नामके किसी राजाका पता नहीं है; लेकिन सुल्तान दिलावर गोरी (Ghori) के द्वारा संस्थापित मालवाके गोरी वंशमें द्वितीय सरदार **सुल्तान हुशंग गोरी** उर्फ़ **अलप् खाँ** था, जिसने माण्डुका शहर बसाया, राज्यकी राजधानी धारसे वहाँ हटायी, और १४०५ ई० से १४३२ ई० तक राज्य किया, और इसमें कोई संशयकी बात नहीं है कि इसी सरदारको संस्कृतमें **'आलम्भक'** लिखा है। उसकी नयी राजधानीका नाम शिलालेखमें **मण्डपपुर** दिया हुआ है।

लेखका विषय **होली** नामके जैन पुरोहित द्वारा **पद्मनन्दि** और **दम-वसन्त**की दो मूर्त्तियोंका समर्पण है। यह समर्पण **शुभचन्द्र**की आज्ञासे किया गया था। उनके नाममें कोई शाही विशेषण नहीं लगा हुआ है।

लेखका प्रारम्भ वर्द्धमान नगरमें कान्तमें स्थापित होनेवाले वृषभ (वृषभदेव, प्रथम तीर्थंकर) की स्तुतिसे होता है। और इसका अन्तमें लेखकके अपने विषय

के संक्षिप्त वर्णनसे होता है। बीचमें कुछ नामोंकी वंशावली आती है; वह इस तरह है :—१. सार्यदेह, २. उसका पुत्र वल्लदेव, ३. उसका पुत्र लक्ष्मीपालदेव, ४. उसका पुत्र क्षेमराज, ५ ?, ६. पद्मश्री, ७. रत्न, ८. रम्भामय, १०. पद्मसिंह।

[JASB, LII, p. 67-80] t. & tr.

६१८

सरगूरु;—संस्कृत और कन्नड़-भग्न।

[शक १३४६ = १४२४ ई०]

[सरगूरु (सरगूरु प्रदेश) में, गाँवके दक्षिणकी ओर पद्म-बस्तिमें एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम्॥

स्वस्ति **शक-वरुष १३४६** नेय शोभकृतु-संवत्सरद वैशाख शु १३ गु। प्रचण्ड-दोर्-दण्ड-मण्डली-मण्डन-मण्डलाग्र-खण्डितारातिं-प्रकाण्ड महा-मण्डलेश्वर समुद्र-त्रयाधीश्वर श्री-मतु विजय-**बुक्क-राय**-राज्याभ्युदये श्रीमद्भगवदर्हत्परमेश्वर श्रीपाद-पद्माराधकरप्प श्रीमन्महाप्रधान **बयिचय-दण्डनाथ**र पादपद्मोपजीवी होय्सल-राज्याधिपति **नागण्ण-वोडेयर** ··· इम्मितूर् ······ ताप-हार हण्डले-गणाग्रगण्यर् अप्प श्रीमत्**पण्डितदेव** इवर शिष्यरु **बयि-नाड** महाप्रभु **मसणेयहळ्ळिय कम्बण-गवुडरु** तमगे स्वर्गापवर्ग-निमित्तागि बेळगुळद श्री-गुम्मटनाथ-स्वामिगळ अङ्ग-रङ्ग-भोग-संरक्षणार्थवागि तम्म बय-नाडोळगण **तोट-हल्लि**य ग्राम १ आ चतुस्सीमेयोळगण केरे-गद्दे-बेद्दलु-तोट-तुडिके-कुळ-होम्बाळि आय-होन्नु ··· ··· होन्नु हन्दलु-मिश्र-होति मादार-तेटे-शुङ्क-निधि-निक्षेप-जल पाषाण-मुन्ताद सकल स्वाम्यद कुळवनु रायरु दण्णायकर ··· ··· यलि नागण-

ओडेयर कयिन्दवु बिडिसि **श्री-गुम्मटनाथ-स्वामि**गळिगे आ-चन्द्रार्क सलु-वन्तागि **गुम्मटपुर**वेन्दु कोट्ट दान-शासन ॥

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां ।
षष्टि-वर्ष-सहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः ॥

अक्षयसुखमी-धर्म्ममनीक्षिसि रक्षिसुव पुण्य-पुरुषर्गक्कुम् ।
भक्षियिपातन सन्तानक्षयमायुःक्षयं कुलक्षयमक्कुम् ॥

(हमेशाकी तरह अन्तिम श्लोक)

[जिन शासनकी प्रशंसा ।

इस लेखमें विजयी बुक्करायने, स्वर्गप्राप्तिके लिये, बेळगुळ (श्रवण-बेलगोल) के गुम्मटनाथ-स्वामीकी पूजा एवं सजावट के लिये **तोटहल्लि** गाँव भेंटमें दिया है । बुक्कराय भगवदर्हत्परमेश्वर का आराधक था । बयिनाड्, मसन-हल्लि कम्पनगवुडका अधिपति था । तोटहल्लि गाँवके साथ-साथ उसकी चारों तरफ-की सीमाओंके अन्दरके तालाब, धान्य (चावल)-भूमि, सूखे खेत, बगीचा, भण्डार, आसामी, 'हाम्बलि', आयका रुपया, ··· , छप्परखाने, ··· ·· निम्न श्रेणीकी चीजोंपर कर, चुङ्गी, भूमि-भण्डार, निधि, रहन (निक्षेप), जल, पाषाण तथा पूरे स्वामित्व (मालिक) के जितने अधिकार हैं, वे सब दिये । इन चीजों को नागण्ण-ओडेयरके हाथ से दिलवाया तथा इन सबमें राजा तथा दण्णायककी भी आज्ञा ले ली, जिससे कि यह सब दान तबतक जारी रहे जबतक चन्द्र और सूर्य गुम्मट स्वामीकी रक्षा करते हैं । और गाँवका नाम **गुम्मटपुर** रख दिया । इस सबका उसने दान-पत्र (शासन) लिख दिया ।]

[**EC, IV, Heggadadevankote tl., No. 1**]

६११

वराङ्गना—संस्कृत तथा कन्नड़

काल-शक सं० १३४६ (A. D.1424)

(साउथ कैनरा के Sub-Court में)

कन्नड़ लिपिमें संस्कृत और कन्नड़ भाषामें तीन ताम्र-पत्रोंपर जो एक अंगूठीके द्वारा जुड़े हुए हैं। इस अंगूठीपर एक मुहर लगी है जिसपर एक जैनमूर्ति है। दानदाता विजयनगरके राजा **देवराय हैं**। दान का काल शक सं० **१३४६** (१४२४ ई०), **क्रोधी** संवत्सर है। इस दानपत्रके द्वारा **वराङ्गना**का गाँव **वराङ्गनेमिनाथ**के मन्दिरको दान किया गया था। राजा की वंशावली इस प्रकार दी हुई है :—

बुक्क महीपति
|
हरिहर
|
देवराय
|
विजय भूपति,
नारायणीदेवीसे विवाह किया
|
देवराय

शासनकाल उस राजाके राज्यकालसे मिलता है जिसे बर्नैल **Burnell** ने (**South Ind. Paleography, p. 55**) देवराज, वीरदेव या वीरभूपति बताया है। लेकिन उसके वंशजका नाम उक्त लेखक के द्वारा दिये गये नामसे

भिन्न पड़ता है। (८२, ८७ अङ्कोंसे तुलना करो, जिनमें दी गई वंशावली इस दानपत्रगत वंशावलीसे मिलती-जुलती है।) लेखकी भूमिकामें कुन्तल देशकी राजधानी **विजयनगर** बतलाया गया है।

[R. Sewell, Archaeslojical Survey of Southern India (ASSI, II), p. 14. No 89, a.]

६२०

विजयनगर—संस्कृत।

[शक १३४८ = १४२६ ई०]

A. मन्दिर के महाद्वारके समीप बायीं ओर।

शुभमस्तु ॥ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥१॥

श्रीमद्यादवान्वयार्णवपूर्णचन्द्रस्य श्री**बुक्क**पृथ्वीभुज [:] पुण्य [परिग]-कपरिणतमूर्त्ते**र्हरिहर**महाराजस्य पर्य्यायावतारा**द्देवराज**नरेश्वराद्देवराजादिव **विजय**श्री**वीरविजय**नृपतिस्संजातस्तस्माद्रोहणाद्रेरिव महामाणिक्यकांडो नीतिप्रतापस्थिरीकृतसाम्राज्यसिंहासनः। राजाधिराजराजपरमेश्वरादिबिरुदविख्यातो गुणनिधि**र्ब्भिनवदेवराज**महाराजो निजाज्ञापरिपालित**कर्णाट**देशमध्यवर्त्तिनः स्वावासभूत**विजयनगर**स्य क्रमुकपर्णापणवीथ्यामाचंद्रतारमात्मकीर्त्तिधर्म्मप्रवृत्तये। सकलज्ञानसाम्राज्यविराजमानस्य स्याद्वादविद्याप्रकटनपटीसः **पार्श्वनाथस्यार्हतः** शिलामयं चैत्यालयमचीकरत् [॥]

देशः **कर्णाट**नामाभूदावासः सर्व्वसंपदां।
विडंबयति यः स्वर्ग्गं पुरोडाशाशनाश्रयं ॥ [२]

विजयनगरीति तस्मिन्न [ग] री नगरीति रम्यहर्म्यास्ते।
नगरि (री) षु नगरी यस्या न गरीयस्येव गुरुभिरैश्वर्य्यैः ॥ [३]

कनकोज्वलसालरश्मिजालैः परिखांबुप्रतिबिंबितैरलं या
वसुधेव विभाति बाडवाग्निर्वृतरत्नाकरमेखला परीता ॥
श्रीमानुद्दामधामा यदुकुलतिलकस्मारसौंदर्य्यसीमा-
धीमान् रामाभिरामाकृतिरवनितले भाति भाग्यात्तभूमा [।]
विक्रांत्याक्रांतदिक्को विमतधरणिभृत्कंकजश्रेणिचिक्कः (।)
क्षोण्यां जागर्त्ति बुक्कक्षितिपतिररिभूभृच्छिरश्छिन्नरत्नः ॥ [४]

तत्प्राप्तात्मावतारः स्फुरति हरिहरक्ष्मापतिर्ज्ञानसारो
दारिद्र्यस्फारवाराकरतरणवि [धौ] विस्फुरत्कर्णधारः ।
भूदानस्वर्णदानानुकृतपरशुधृ (या 'भृ') त्पद्मिनीबंधुसूनुः
स्फारार्कूपारतीरावलिनिहितजयस्तंभविन्यस्तकीर्त्तिः ॥ [५]

तेनाजन्यरिराजतल्लजशिरस्तोमस्फुर -
च्छेखरप्रत्युप्तोपलदीपिकापरिणमत्पादाब्जनीराजनः ।
विद्वत्कैरवमंडलीहिमकरो [वि] ख्यात वीर्य्याकर [:]
श्रेयान्वीरनमास्वयंवृतवरः श्रीदेवराजेश्वरः ॥ [६]
तज्जन्मा हिमवदान्यो ज [ग] ति विजयते पुण्यचारित्रमान्यो
दानध्वस्तार्थिदैन्यो विजयनरपतिः खंडितारा [ति] सैन्यः ।
प्रत्युद्यज्जैत्रयात्रासमसमयसमुद्भूतकेतुप्रसून -
[स्फा] य [द्रा] त्योपहृत्या प्रतिहतविमतौघप्रतापप्रदीपः ॥ [७]

B. महाद्वारके दक्षिण (दायीं) ओर ।

तस्मादस्मिञ्जितात्माजनि जगति यथा जंभजेतुर्जयंतो
राजा श्रीदेवराजो विजयनृपतिवाराशिराकाशशांकः ।
कोपाटोपप्रवृत्तप्रबलरणमिलद्विप्रतीपक्ष्मापा -
प्राणश्रेणीनभस्विन्निवहकबलनव्यग्रखड्गोरगेन्द्रः ॥ [८]
वीरश्री देवराजो विजयनृपतपस्सारसंजातमूर्त्ति -
र्भर्त्ता भूमेर्विभाति प्रणतरिपुततेरार्त्तिजातस्य हर्त्ता ।

क्रूरक्रोधेद्धयुद्धोद्धुरकरटिघटाकर्णशूर्पप्रसर्पद् -
वातव्रातोपघातप्रतिहतविमतादभ्रभृत्यभ्रसंघः ॥ [९ [

यद्धाटीघोरघोटीखुरदलितधरारेणुभिर्व्वीर्यवह्ने -
र्द्धूम [स्तो] मायमानैः प्रतिनृपतिगणस्त्रीदृशः साश्रुधाराः ।
प्रोद्यद्दर्प्पप्रभूतप्रतिभटसुभटास्फोटनाटोपजाग्रद् -
रोषोत्कर्षांधकारद्युमणिरुदयते देवराजेश्वरोऽयं ॥ [१०]

विश्वस्मिन्विजयक्षितीशतनुपः श्रीदेवराजेशितु-
र्लक्ष्मीं कीर्त्तिमितांबुजं कलयते शौर्य्याख्यसूर्य्योदयात् ।
आशा यत्र पलाशतामुपगताः स्वर्ण्णाचलः कर्णिका
भृंगा दिक्षु मतंगजा जलधयो मारंदबिंदूत्कराः ॥ [११]

विख्याते विजयात्मजे वितरति श्रीदेवराजेश्वरे
कर्ण्णस्यापि न वर्ण्णना विगलिता वाच्या दधीच्यादयः ।
मेघानामपि मोघता परिणता चिंता न चिंताम [णे] :
स्वल्पाः कल्पमहीरुहाः प्रथयते स्वर्ण्णचिकीनीचतां ॥ [१२]

सोयं कीर्त्तिसरस्वतीवसुमतीवाणीवधूभिस्समं
भव्यो दीव्यति देवराजनृपतिर्भूदेवदिव्यद्रुमः ।
यश्शौरिर्ब्बलियाचनाविरहितश्चंद्रः कळंकोज्झितः
शक्रस्सत्यमगोत्रभिद्दिनकरश्चाप्यतथोल्लंघनः ॥ [१३]

मदनमनोहरमूर्त्तिः महिळाजनमानमारसंहरणः ।
राजाधिराजराजादिमपदपरमेश्वरादिनिजबिरुदः ॥ [१४]

शक्तौ बुक्कमहीपालो दाने हरिहरेश्वरः ।
शौर्य्ये श्रीदेवराजेशो ज्ञाने विजयभूपतिः ॥ [१५]

सोयं श्रीदेवराजेशो विद्याविनयविश्रुतः ।
प्रागुक्तपुरवीथ्यंतः पर्ण्णपूगीफलापणे ॥ [१६]

शाकेऽब्दे प्रमिते याते वसुसिंधुगुणेंदुभिः ।
पराभवाब्दे कार्त्तिक्यां धर्म्मकीर्त्तिप्रवृत्तये ॥ [१७]

स्याद्वादमतसमर्थं [न] खर्वितदुर्वादिगर्वर्वाग्वितते: ।
अष्टादशदोषमहामदगजनिकुरुंबमहितमृगराजः ॥ [१८]

भव्यांभोरुहभानोरिंद्रादिसुरेंद्रवृंदवंद्यस्य ।
मुक्तिवधूप्रियभर्त्तुः श्रीपार्श्वजि[ने]श्वरस्य करुणाब्धेः ॥ [१९]

भव्यपरितोषहेतुं शिलामयं सेतुमखिलधर्म्मस्य ।
चैत्यागारमचीकरदावरणिद्युमणिहिमकरस्थैर्य्यम् ॥ [२०]

सारांश

विजयनगर प्राचीन समयमें जैनियोंकी राजधानी थी। शक १२७६ (सं० ११४२) से यादववंशी दि० जैन राजाओंका राज्य था। इस वंशकी वंशावली निम्न भाँति है :—

१. यदुकुलके बुक्क।
२. उसके पुत्र, **हरिहर** (द्वितीय), 'महाराज'
३. उसके पुत्र, **देवराज (प्रथम)**
४. उसके पुत्र, **विजय** या **वीर-विजय** (पं० २)।
५. उसके पुत्र **देवराज (द्वितीय), अभिनव-देवराज**।

अन्तिम महाराजा देवराजने अपने पराक्रमके कृत्य और अपना नाम अजरा-मर करनेके लिये अपने राजमहलके पास 'पान-सुपारी-बाजार' (पर्ण-पूगीफलापण, श्लो० १६) नामक बगीचेमें एक चैत्यालय (चैत्यागार) बनवाया और मन्दिरमें श्रीपार्श्वनाथस्वामीकी प्रतिमा विराजमान की।

नोट :—इस वर्णित विजयनगरके प्रथम या यादव वंशावलिके क्रममें बुक्कके पिता और बड़े भाईके नाम तथा वे शक मितियाँ, जिनका लेखमें कोई संकेत

नहीं है और न यहां ही नीचे टिप्पणीमें दी गयी है," मि० फ्लीटके उसी वंशके कालक्रम-चक्रसे[1] उद्धृत की जाती हैं। वे इस प्रकार हैं :—

संगम

हरिहर प्रथम (शक १२६१)

बुक्क (शक १२७६ [चालू], १२७७, १२७८, १२९०)

हरिहर द्वितीय (शक १३०१, १३०७[2], १३२१.)

देवराज प्रथम (शक १३३२, १३३४.)

विजय[3]

देवराज द्वितीय (शक १३४६, १३४७, १३४८, १३५३ [चालू], १३७१

[South-Indian ins., Vol I, No I53 (p 160-167).]

---

1 Jour. Bo. Br. R. A. S. Vol XII. q. 339.

२ यह मिति शि० ले० नं० ५८९ की है।

३ मि० सोवैल (Sewell), Lists, Vol. I, p. 207, इस राजा के एक शिलालेख का उल्लेख करते हैं, जिसका मिती शक १३४० (व्यतीत) कही जाती है।

६२१

बेगूर;—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न ।

[शक १३४६ = १४२७ ई०]

[बेगूरमें (बेगूर परगना), ध्वस्त जिन-बस्ति

श्रवणाप्पनदिन्नेमें पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति शक-वरुष १३४६ नेय पराभव-संवत्सरदल्लु श्री-मूल-संघद देशीय-गणद कोण्डकुन्दान्वयद पुस्तक गच्छद ··· ··· ··· श्रीमतु **प्र** ··· ··· ···**सिद्धान्ति-देव**र शिष्यरप्प श्रीम **च्छुभचन्द्रसिद्धान्तिदेव**र गुड्ड **चक्किमय्यन नागिय करियप्प -दण्डनायक,** रप्प दण्ड ··· ··· ··· ··· **मोरसु-नाडा**ळ्वन्दे कादि ··· ··· **कलियूरग्रहार** कोट्ट सर्व.बाध-परिहारवागि **चोक्किमय्य जिनालयं** चन्द्रादित्यरुळ्ळन्नक सल्वन्तागि ··· ··· धर्मम नडसुवन्तागि ··· ··· ··· ··· (वे ही शापात्मक वाक्य) श्रीम ··· ··· ··· ··· ··· ण्डनायक चोक्कि-मय्य ··· ··· ··· ··· ··· ड्डु निलिसिदनु कल्लु ··· ··· मडिसिकोट्ट ··· ···

[जिनशासनकी प्रशंसा ।

(उक्त मितिको), श्री-मूलसंघ, देशिय-गण, कोण्डकुन्दान्वय तथा पुस्तक-गच्छके प्र ··· ··· सिद्धान्ति-देवके शिष्य शुभचन्द्र-सिद्धान्ति-देवके गृहस्थ-शिष्य चाक्किमय्यके (पुत्र) नागिय करियप्प-दण्डनायकने ··· ··· ··· ··· जब वे मोरसु-नाड् पर शासन कर रहे थे, कलियूर् अग्रहारके लिये दान (जो कि मिट गया है) किया, ताकि चोक्किमय्य जिनालय तबतक जारी रहे जबतक सूर्य और चन्द्रमा हैं । शाप]

[EC, IX, Bangalore tl., No. 82]

६२२

गिरनार—संस्कृत ।

[सं० १४८५ = १४२८ ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

[Revised Lists ant. Bombay (ASI, XVI), p. 354-355, No 12, t. & tr.]

६२३

आनेवाळु—संस्कृत और कन्नड ।

[साधारण वर्ष[1] १४३० ई० (लू० राइस)]

[आनेवाळु (बेट्टदपुर प्रदेश) में, बस्तिके रङ्ग-मण्डपमें भीतरके दाहिनी ओरकी दीवाल पर]

श्रीमतु साधारण-संवत्सरद् माग-सुध १० यलु आनेवाळ-चिक्कण्ण-गौडर मक्कळु होन्नण-गौडरु तम्म मग हुट्टिद बोम्मण्ण-गौडरिगे पुण्यवाग-बेकेन्दु कट्टिसिद ब्रह्म-देवरु पद्मावतिय बस्तिय धर्म्म-शासन श्री श्री ।

[आनेवाळके चिक्कण्ण-गौडके पुत्र होन्नण-गौडने अपनी चिरञ्जीव बोम्मण्ण-गौडकी पुण्यकी प्राप्तिके लिये ब्रह्मदेव और पद्मावतीकी बस्तिको बनवाया ।]

[EC, IV, Hunsur tl., No. 62]

---

1. इसके अङ्क नागरी अक्षरोंमें हैं ।

६२४

कारकल;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक सं० ११४३ = १४३२ ई०]

[गोम्मटेश्वर-मूर्तिस्तम्भके ठीक बाँयीं तरफ]

१. सूरितनु भैरवें-
२. द्रकुमार श्री **पाण्ड्य**
३. **राय**निंदतिमु-
४. दर्दि । कारित **गुंमट-**
५. जिनपति चारु श्री मू-
६. र्त्ति कुडुगे निमगभिम-
७. तमं ॥ श्री **पाण्ड्यराय** जय [॥]

[EI, VII, No. 14, D.]

[गोम्मटेश्वर-मूर्ति-स्तम्भके ठीक दाहिनी तरफ]

पंक्ति १. श्रीमद्देशीगणे
२. ते **पनसोगे** वलीश्वरः । ख्या -
३. यो ऽ**भूल्ललितकी-**
४. **र्त्या**ख्यस्तन्मुनीन्द्रोपदे-
५. शतः ॥ स्वस्ति श्रीशकभूपते-
६. स्त्रिशरवह्नी (न्) दो विरोध्या-
७. दिकृद्वर्षे फाल्गुनसौ-
८. म्यवारधवलश्रीद्वा-
९. दशीसत् तिथौ । श्री सोमा-
१०. न्वय **भैरवेन्द्र**तनु-

११. जश्री वीरपाण्ड्येशिना नि—
१२. र्मापि प्रतिमाऽत्र बा-
१३. हुबलिनो जीयात् प्र-
१४. तिष्ठापिता ॥ शकवर्ष
१५. १३५३ श्री पाण्ड्यराय ॥

[शक राजाके विरोध्यादिकृत् वर्ष, अर्थात् १३५३वें वर्षके फाल्गुन शुक्ला १२, बुधवारके दिन सोम वंशके भैरवेन्द्रके पुत्र श्री वीर पाण्ड्येशी या श्री पाण्ड्यरायने यहाँ (कारकलमें) बाहुबलकी प्रतिमा बनाकर प्रतिष्ठित कराई। वह प्रतिमा जयवन्त रहे। यह कार्य उन्होंने देशीगणके पनसोगे शाखाकी परम्परामें होनेवाले ललित कीर्त्ति मुनीन्द्रके उपदेश से किया।]

[EI, VII, No. 14, C. IA, II, q. 353-354]

६२५

श्रवणबेल्गोला;—संस्कृत।

[शक १३५५=१४३२ ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

६२६

आनेवाळु;—कन्नड़।

[काल—वर्ष प्रमादीच = १४३३ A. D.]

[आनेवाळुमें ध्वस्त बस्तिकी छोटी सी जैन-प्रतिमाके पृष्ठपर]

प्रमादीच—संवत्सरद फाल्गुन-सु १०मी भानुवार **अनन्तन** प्रतिमे

[अनन्तकी प्रतिमा]

[EC, IV, Hunsur tl., No. 60, t & tr.]

६२७

कार्कल—कन्नड़ ।

[शक सं० १३५८=१४३६ ई०]

[गोम्मटेश्वर मूर्ति स्तम्भके सामनेके ब्रह्मदेव स्तम्भ पर]

१. **श्री शकनृपन १३५८** राक्षससंवत्सर[द फ]ाल्गुन शु
२. १२ शु ॥ **जिनदत्तान्वय भैरव**तनय **श्री [वी]रपां-**
३. ड्यनृपतिगे वरमं । मनमोलदीय [शु] नेल [सि] द
४. जिनभक्त ब्रह्मनीगे निमगभि [मत] मं ॥

अनुवाद—शक नृपके राक्षस नामके १३५८ वें वर्षमें फाल्गुन शुक्ला १२ के दिन, जिनदत्तके वंशमें होनेवाले भैरवके पुत्र **श्री वीरपाण्ड्य** नृपतिकी प्रत्येक इच्छाको पूर्ण करने के लिये यहाँपर प्रतिष्ठापित, जिनभक्त ब्रह्म [की प्रतिमा] तुम्हारी [प्रत्येक] मनोकामनाको पूरा करे ।

[EI, VII, No., 14 E.]

६२८

देवगढ़;—संस्कृत ।

[सं० १४९३ तथा शक १३५८=१४३६ ई०]

(पंक्ति ५)—संवतु १४९३ शाके १३५८ वर्षे वैशाष (ख) –वि (व) दि ५ गुरै (रौ) दिने मूल-नक्षत्रे ॥

बृहस्पतिवार, ५ अप्रैल १४३६ ई०

शक १३५८—देवगढ़ जैन शिलालेख ।

[INI, Nos. 287 & 375.]

६२९

पर्वत आबू—संस्कृत ।

[सं० १४६४ = १४१० ई०]

श्वेताम्बर सम्प्रदाय का लेख ।

[Asiat. Res., XVI, p. 313, No. XXV, a.]

६३०

नागदा—संस्कृत ।

[सं० १४९४=१४३८ ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

[Bhavnagar inscriptions, p. 112-113, t. & tr.]

६३१

गिरनार—संस्कृत ।

[सं० १४९६ = १४३९ ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

[Revised Lists ant. rem. Bombay (ASI, XVI), p. 355, No. 13, a, t. & tr.]

६३२

राणपुर (जोधपुर जिला) संस्कृत ।

[सं० १४९६ = १४४० ई०]

[Bhavnagar inscriptions, p· 113-117, t. & tr.]

६२२

ग्वालियर;—प्राकृत ।

[सं० १४९७ = १४४० ई०]

श्री आदिनाथाय नमः ॥ **संवत् १४९७ वर्षे** वैशाख ... ७ शुक्रे पुन-र्वसु नक्षत्र श्रीगोपालचलदुर्गे महाराजाधिराजराजा श्रीडुंग ... [र सिंहराज्य] संवर्त्तमानो श्रीकाष्ठासंघे **मायू[थु]रान्वयो पुष्करगण**भट्टारक **श्रीग (गु)णकोर्ति-देव** तत्पदे यत्यः (शः) **कोर्त्तिदेवा** प्रतिष्ठाचार्य श्री**पंडितरघू (इधू)** तेपं'। आ**भाये** (म्नाये) अग्रोतवंशे मोद्गलगोत्रा सा ॥ धुरात्मा तस्य पुत्र साधु**भोपा** तस्य भार्या **नान्ही** । पुत्र प्रथम साधु **खेमसी** द्वितीय साधु**महाराजा** तृतीय **असराज** चतुर्थ **धनपाल** पञ्चम साधु **पालका** । साधुखेमसी भार्या **नोरादेवी** पुत्र—ज्येष्ठपुत्र **भधायि** पति-**कौल** ॥ **भ**—भार्या च ज्येष्ठस्त्री **सरसुती** पुत्र **मल्लिदास** द्वितीय भार्या **साध्वीसरा** पुत्र **चन्द्रपाल**। खेमसीपुत्र द्वितीय साधु **श्रीभोजराजा** भार्यो देवस्य पुत्र **पूर्णपाल** ॥ एतेषां मध्ये श्री ॥ त्यादिजिन-संघाधिपति **काला** सदा प्रणमति ॥

अनुवाद्—आदिनाथको नमस्कार । सं० १४९७ के वैशाख सुदी ७, जब पुनर्वसु नक्षत्र उदित हो रहा था, और जिस समय महाराजाधिराज डूंगरेन्द्रदेव गोपाचल (आधुनिक ग्वालियर) के किलेमें राज्य कर रहे थे । तब काष्ठासंघके मयूर अन्वयके, पुष्कर गणके भट्टारक **गुणकीर्त्तिदेव** के बाद उनके पट्टाधीश **कीर्त्तिदेव** हुए । इसके बाद लेखमें पट्टाधीशके पदपर आसीन होनेवालोंमें प्रतिष्ठाचार्य पण्डित (पुरोहित) श्री**रघू**, तत्पश्चात् पण्डित श्री**भायाके** नाम आये हैं । श्री भायाके पुत्र 'साधु' भोपा, उसकी पत्नी नन्ही थी । इसके बाद उनके पुत्र और पुत्रों की पत्नियों तथा उनके पुत्रोंके नाम आये हैं । अन्तमें

भायदेवके पुत्रका नाम पूर्णपाल बतलाया है। इनमेंसे आदिजिनसंघाधिपति कालाको[1] सदा प्रणाम करते हैं।

[JASB, XXXI, p. 404, a. ; p. 422-423, t. & tr.]

६३४

पर्वत आबू;—संस्कृत।

[सं० १४९७=१४४० ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[Asiat. Res. XVI, p. 313, No XXVII, a.]

६३५

श्रवणबेल्गोला;—संस्कृत।

[वर्ष क्षय=शक १३६८=१४४६ ई० (कीलहौर्न)]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

६३६

म्यूनिच;—संस्कृत।

[सं० १५०३=१४४६ ई०]

[J. Klatt, IA, XXIII, p. 183, t. & tr.]

१—उपर्युक्त अनुवादकी शुद्धता बाबू राजेन्द्रलाल मित्रकी दृष्टिमें सन्देहास्पद है। 'काला' नाम उन्हें अशुद्ध मालूम पड़ता है। यह अनुवाद खाली काम चलाऊ है।

६३७

माण्ट निडुगल्लु;—कन्नड़ ।

[बिना काल-निर्देशका, पर लगभग १४५० ई० ? (लू. राइस) ।]

[निडुगल्लु-बेट्टपर मळे-मल्लिकार्जुन मन्दिरके पासके पाषाणपर]

श्री-मूल-संघद **वृषभसेन-भट्टारक**-देवर गुड्ड वैश्यर
रामि-सेट्टियर मग **बिमो-सेट्टि**य हेण्डति **चन्द्रवे**य निषिधि ॥

[मूलसंघके वृषभसेन-भट्टारकके गृहस्थ-शिष्य, वैश्य रामि-सेट्टिके पुत्र **बिमो-सेट्टि**की पत्नी **चन्द्रवे**का स्मारक यह है ।]

[E C, XII, Pavugada tl., No 56]

६३८

पर्वत आबू;—संस्कृत ।

[सं० १५०१=१४४२ ई०] श्वेताम्बर लेख ।

[Asiat. Res., XVI, p. 311, No XXI, a.]

६३९

टोंक;—संस्कृत (देवनागरी लिपि)

[काल—सं० १५१०=१४५३ ई०]

टोंक (राजपूताना) के नवाबके महलके पास जनवरी सन् १६०३ ई० में खुदाई होनेसे अचानक ११ जैन प्रतिमाएँ निकलीं । ये प्रतिमाएँ भिन्न-भिन्न ११ तीर्थङ्करों की हैं, जो पद्मासन-स्थित हैं, गोदके ऊपर जिनके बाएँ हाथके ऊपर दाहिना हाथ है और दाहिने हाथकी हथेलीका मुख ऊपरकी तरफ है । ये सब प्रतिमाएँ समानाकृति हैं, सिर्फ पार्श्वनाथ और सुपार्श्वनाथकी प्रतिमाके ऊपर सर्पका फण है तथा और प्रतिमाओंपर उनके भिन्न-भिन्न लाञ्छन (चिह्न)

हैं। वे सफेद संगमरमरके पत्थर की बनी हुई हैं और अच्छी तरह सुरक्षित दशामें हैं। उनकी बनावट कुछ भद्दी है। तीर्थङ्करोंके नाम तो नहीं प्रकट किये गये हैं, पर चिह्नोंसे उन्हें मालूम किया जा सकता है। वे निम्नलिखित भाँति हैं :—

१. **पार्श्वनाथ** (२८ इञ्च × २३ इञ्च) सप्तफणी सर्प सिर के ऊपर है, और सर्प चिह्न के तौरपर है।

२. **सुपार्श्वनाथ** (करीब २२ × १८ इञ्च). पञ्च-फणी सर्प सिर के ऊपर। स्वस्तिक चिह्न।

३. **महावीरनाथ** (करीब २२ × १८ इञ्च), सिंह का चिह्न है।
४. **नेमिनाथ** (करीब १६ × १५ इञ्च) शंख का चिह्न है।
५. **अजितनाथ** (करीब २१ × १७ इञ्च), हाथी का चिह्न है।
६. **मल्लिनाथ** (करीब २१ × १७ इञ्च) कलश का चिह्न।
७. **श्रेयान्सप्रभु** (करीब २१ × १७ इञ्च) गेंडे का चिह्न है।
८. **सुविधिनाथ** (करीब २१ × १७ इञ्च), मछली का चिह्न।
९. **सुमतिनाथ** (करीब १८ × १७ इञ्च) चकवे का चिह्न।
१०. पद्मप्रभ (करीब १६ × १३ इञ्च), कमल का चिह्न।
११. शान्तिनाथ (करीब १६ × १३ इञ्च), कच्छप (कछुआ) का चिह्न।

इन प्रतिमाओं के नीचे के पाषाणपर लेख है जो कि प्रायः मिलते-जुलते हैं और देवनागरी लिपि में भद्दे रूप से अशुद्ध **संस्कृतमें** लिखे हुए हैं। सबका काल **संवत् १५१०, माघ शुक्ल दशमी**, तदनुसार **रविवार १६ फरवरी,१४५३ ई०** है।

ये सब प्रतिमाएँ जैनोंके दिगम्बर सम्प्रदाय की हैं। यह इस बात से प्रमाणित होता है कि सब के ऊपर 'मूलसंघ' लिखा हुआ है और सब नग्न हैं। लेखों के अनुसार, इन सबकी प्रतिष्ठा **बापू** नाम के एक धनिक, तथा उसके पुत्र **बालहा** और **पाल्हा** और उनकी क्रमशः **रुक्मिणी, सुहागिनी (सुगनश्री** भी कहते

थे) और गौरी नामक स्त्रियों के द्वारा हुई थी। ये लोग अपने को जिनचन्द्र का भक्त कहते थे और दिगम्बराम्नायी खण्डेलवाल जाति तथा पाकलीवाल गोत्र के थे।

पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख बताता है कि ये पाषाण-लेख लुङ्गरदेव के राज्यकाल में उत्कीर्ण किए गए थे। ये लुङ्गरदेव उस समय के स्थानीय शासक रहे होंगे लेकिन इतिहास में उनका कोई पता नहीं चलता। उन प्रतिमाओं को संभवतः किसी मूर्तिभञ्जक द्वारा आपत्काल प्राप्त होनेपर किसीने छिपाया होगा।

श्रीमान् नवाब महोदय ने इन ११ प्रतिमाओं को, अजमेर के गवर्नमेंट म्यूजियम के बन जाने पर उसे उन्हें टोंक स्टेट के उपहार के रूपमें भेंट देने का संकल्प प्रकट किया था।

[Hiranand Shastri, A S P & U P annual Report 1903–1904 p. 61–62, a.]

६४०

ग्वालियर;—प्राकृत।

[सं० १५१०=१४५४ ई०]

(१) सिद्धि संवत् १५१० वर्षे माघसुदि ८ (अ)ष्टमै (म्यां) श्री गोपगिरौ महाराजाधिराजरा-

(२) जा श्री डं(डुं)गरेन्द्रदेवराज्यप्र [वर्त्तमाने] श्रीकाष्ठासंघे माथु (थु)-रान्वये भट्टारक श्री

(३) क्षेमकीर्तिदेवास्तत्पदे श्री हेमकीर्तिदेवास्तत्पदे श्री विमलकीर्ति-देवाः ··· ··· ···

(४) डिता ··· ··· सदाम्नाये अग्रोतवंशे गर्गगोत्रे सा··· ···त

(५) योः पुत्रा ये दशाय श्रीचंद भार्या मालाही तस्य प्रबलाषेषार रा··· जीसा··· ···दु

(६) तीयसा० हरिचंदभार्या जसोधर हितये ··· ··· ··· ··· णसीसा० सघासा० तृती

(७) यहेमा चतुर्थसा० रतीपुत्रसा० सह सार्पं ··· मु सा० धंसा० सल्हापुत्र अेसेवं ए

(८) तेषां मध्ये साधु श्रीचंद्रपुत्र शेषा तथा हरिचंद्रदेवकी भार्या ··· ···

(९) दीप्रमुखा नित्यं श्रीमहावीरप्रतिमा प्रतिष्ठाप्य भूरिभक्त्या प्रणमंति ॥

(१०) अङ्गुष्ठमात्रां प्रतिमां जिनस्य भक्त्या प्रतिष्ठापयतो महत्या। फलं बलं राज्य

(११) मनन्तसौख्यं भवस्य विच्छित्तिरथो विमुक्तिः ॥ शुभं भवतु सर्वेषां ॥

अनुवाद—संवत् १५१०की माघ सुदि ८मी को महाराजाधिराज राजा श्री **डूंगरेन्द्रदेव**के शासनकालमें काष्ठासंघके मायूर अन्वयके भट्टारक श्री **क्षेम-कीर्त्तिदेव** हुए। उनके बाद **हेमकीर्त्तिदेव** तत्पश्चात् अ (वि)**मलकीर्त्तिदेव** हुए। (शेष अपठनीय है।)

[JASB, XXXI, p. 404, a.; p. 423-424, t. & tr.

६४१

मारङ्गी;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[वर्ष धातु = १४५६ ई० (लू० राइस)]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्।
निरुपम-धातु-वत्सरद माधव-मासद शुद्ध-सप्तमी -।
रवरकरवारदोळ् दिनकरोदयवागद मन्ने सन्द सच् -।
चरिते जिनेन्द्र-वृन्द्र-पद-पद्मननोप्पिरे चित्त-वृत्तियोळ्।
··· रुयिसि नाडे भागिरथि ताळ्दिदळायत-स्वर्ग-सौख्यमं ॥

अभवं श्री-वीतरागं तनगे निबदोळं दैवमा-योगि ···।
विभु सिद्धान्ताख्यराराध्यरु जिन-मत-वाराशि-संपूर्ण-चन्द्रं।
प्रभु **बुळ्ळप्पं** पितं भासुर-गुणवति **मल्लव्वे** तायेन्दोडी-सद्-
विभ ' नोन्तर् ··· अरियिरे धरणी-चक्रदो ··· ··· ॥
सुखमय ··· ··· ··· **भागीर् [अ] थि** निरुपम-सौख्य यिप्प ··· प्रीतियं
··· ··· ··· ··· ··· भद्रमस्तु ··· ···

[भागीरथीका, जैन विधि-पूर्वक, मृत्युका स्मारक यह है। उसके पिताका नाम प्रभु **बुल्लप्प,** और मांका मल्लव्वे था]

[EC, VIII, Sorab tl., No. 331]

६४२

चित्तौड़;—संस्कृत।

[सं० १५१४ = १४५७ ई०]

[एक चिकनी चट्टानपर जिसके बीचमें चरण-चिह्न हैं और जिसके अन्तमें गणेश और भैरवकी मूर्त्तियाँ हैं।]

(१) ॥ संवत् ५१४ (१५१४) वर्षे माघ्रं (र्ग)-शुदि २ श्री-**भर्तृपुरीय**-गच्छे श्री-चूड़ामणि-**भर्तृपुर**-महा-दुर्गे श्री-**गुहिलपुत्रवि**-

(२) हार-श्री-बडादेव-**आदिजिन**-वामाङ्गे दक्षिणाभिमुखद्वारगुफा (म्फा) यामेकविंशति-देवीनाम् चतुर्णाम् ··· पा-

(३) लानाम् चतुर्णाम् विनायकानां च पादुका-घटित-सहकार-सहिता च श्री-देवी-**चित्तोडरि**-मूर्ति (र्तिः) स्था ··· (पिता ?)

(४) श्री-भर्तृगच्छीय-महा-प्रभावक-श्री-**आम्रदेव**-सूरिभिः ॥ अस्यां मूर्त्तौ सा० सोमा-सु०-सा०-**हरपालेन** मातृ-लोक-

(५) श्रेयसे = पुण्योपार्जना व्यधीयत ॥

[लेख स्पष्ट है। इसके अन्दर आये हुए 'भर्तृपुर' से भरतपुरका संकेत होता है, क्योंकि यह भी एक 'महादुर्ग' कहा जाता है। चट्टानके मध्यमें चरणचिह्नोंके नीचे "श्री-आशि (खि) णि" अक्षर खुदे हुए हैं।]

[ASWI, Progress Report 1903-1904, p. 59, t.]

६४३

बघागड (मालवा);—संस्कृत।

[सं० १५१६=१४५६ ई०]

मन्दिरके दरवाजे पर।

स्वस्ति **श्रीसंवत् १५१६ वर्षे** मार्गशीर्षे वदि ६ रवौ सूरसेन-**मेहमुन्द**-राज्यश्रीकाष्ठासङ्घे **माथुरगच्छे (च्छे) पुष्करगणे** भट्टारकः श्रीश्री**क्षेमकीर्त्ति-देवः** व्रतनियमस्वाध्यायानुष्ठान-तपोपशमैकनियमभट्टारक **श्रीहेमकीर्त्तिदेव**तच्छिष्य महावादवादीश्वर **रायवादी**पितामहसकलविद्वज्जनचक्रवर्त्तिनलः **श्रीकमल-कीर्तिदेवा** तच्छिष्यजिनसिद्धान्तपाठपयोधिनायकान्तरोपासीन मण्डलाचार्य **श्री-रत्नकीर्त्तिना** जीर्णोद्धारः कृतः बृहच्चैत्यालयपार्श्वे दशजिनवशतिकाद्दा कारोपीता भट्टेश्वर द्वितीयसं डालुभार्य्याखेतु द्वि (०) ना (०) पद्मिनी खेतुपुत्रसं० वाढासं० पारस एतैः इन्द्रजितः प्रतिमां प्रतिष्ठाप्य नित्यमर्चयन्तो पूजयन्तों वा शुभं तावच्छ्रीसङ्घस्य।

मन्दिरके उत्तरकी ओर।

संवत् १५१६ वर्षे शिल्पनागसुतरसालाशिलप्डाला सूत्रशाला जीर्णो यतः।

मन्दिरके पश्चिमकी ओर।

आचार्यश्री**रत्नकीर्त्ति**पंडितपाहु।

मन्दिरके दरवाजेके स्तम्भ पर।

बोगीबंगमयाउसजोतराउल ।

प्रतिमाके चरणपरसे ।

कण्ठरनाथसाधु

चतुर विहतिहिलि

साकसाला हइ प्रणति

लेख स्पष्ट है ।

[JASB XVIII, p. 951-953, No 3, t. & tr.]

६४४

पर्वत आबू—संस्कृत ।

[सं० १२१८ = १२६१ ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

[Asiat. Res., XVI, p. 298-299, Nos XIII & XIV, a.]

६४५

गिरनार—संस्कृत ।

[सं० १५२२=१४६५ ई०]

[नेमिनाथ मन्दिरके दक्षिणको तरफके प्रवेशद्वारके प्राङ्गणमें टूटे हुए खम्भेकी पश्चिमी दीवालपर]

संवत् १५२२ श्री मूलसंघे श्री हर्षकीर्त्ति श्री पद्मकीर्ति भुवनकीर्त्ति ... ...

अनुवाद:—सं० १५२२, श्री मूलसंघके श्री हर्षकीर्ति, पद्मकीर्ति, भुवनकीर्ति, ...

[ASI, XVI P. 355, No 13, b.]

६४६

भारङ्गी;—संस्कृत तथा कन्नड ।

[वर्ष पार्थिव = १४६६ ई० (लू. राइस)]

[भारङ्गीमें, कल्लेश्वर-बस्तिके दूसरे पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
स्वस्ति श्रीमति **मूल-संघ**-तिलके श्री-**नन्दि-संघो**द्भवे
स्वच्चे (च्छे) **पुस्तक-गच्छ**-शालिनि शुभे **देशी-गणे** यस्सुखी ।
स्याद्वादारि-नगाशनिर्गुण-मणि-श्रेणी-महीयः-खनिः
श्रीमानेष जयत्यलं श्रुति-मुनिः कैवल्य-जन्मावनिः ॥
शिष्यस्तस्य मुनेस्तिरस्कृत-तमस्स्तोमः समुद्यंश्चिरात्
स्याद्वादचलतश्चिदम्बरतले देदीप्यमानस्सदा ।
दीनं विश्वमिदं कृपामृतभरैरुज्जीवयन् पावनः
चिह्नातीत-कलानिधिर्व्विजयते श्री-**देवचन्द्रोमुनिः** ॥
तच्छिष्योऽ**भयचन्द्र**-चन्द्र-करुणा-सौधोल्लसन्निर्भरी-
सम्पूर्णामल-मानसः कलि-युगे श्रेयांश्च **गोपीपतेः** ।
सूनुस्सूनृत-धर्म्म-कर्म्मणि रतः श्री-जैन-चूड़ामणिर्
दूरं **बुल्लप** इत्ययं प्रभुरय ख्यात्यात्मना शोभते ।

यिन्तु नेगळ्तेवेत्ता-विभुविप्पं ग्रामवावुदेन्दडे ॥

सारं **गुत्तिगे** सन्दु बप्पं **पन्नेरडुं-कम्पणं** भूमियोळ् ।
सारं **नागरखण्ड**मन्तदोरोळिप्पी-ग्राम-सन्दोहदोळ् ।
भारङ्गी-पुरमब्ज-षण्ड-लसितं चैत्यालयानीक-वि- ।
स्तारोद्यत्-कलशांशु-शोभित······सारं जयत्-संस्तुतम् ॥

आ-पुरमं भू-कान्ता- ।
नूपुरमं नूत्न-रत्नमय-गोपुरमम् ।
भूपति-सभाभिरामम् ।
गोप-प्रभु-सूनु-बुळ्ळपार्यं पोरेवम् ॥
कलियं माङ्करिसित्त तन्न चरितं कल्यावनीबातदोळ् ।
चलमं माडिदुदत्युदारते महा-धैर्य्यं सुरोर्व्वीध्रदोळ् ।
मलेतत्तेन्दोडे बुळ्ळप-प्रभुगे भव्याचारदिं चागदिम् ।
विलसद्-धैर्य्यदिनी-धरातळदोळन्यर् प्पोललेनाप्परे ॥

कं ॥ चागदे घन-रासियनुरु- ।
भोगदे तन्नायुरासियं समेयिसिदम् ।
त्यागं श्रेयांसनोळुरु- ।
भोगं सुकुमारनल्लि समनेम्बिनेगम् ॥

वृ ॥ यिनितुं चोद्यमे राय-राज-गुरु-लोकाचार्य्यरास्थान-रञ्- ।
जन-विद्विज्जन-चक्रिवर्तिगळनिं दुर्व्वादि-मातङ्ग-मे- ।
दन-पञ्चाननरोल्दु बोधिसिदवर् स्सिद्धान्त-योगीन्द्ररेन्द् ।
एने बुळ्ळप्पनोळुद्ध-कीर्त्तियुमनूनाचारमुं धर्म्ममुम् ॥
चिरमल्लितनुवाप्त-पूजेयोदवं सत्-सेवेयं भक्तियिम् ।
गुरुगळ्गिम्मगे माळ्परप्परो पेरर् मेणागरो माळ्पेनाम् ।
चिरमं धर्म्ममतेन्दु कोट्टदके भू-दानङ्गळं दीर्ग्घको- ।
त्करमं कट्टिसि बुळ्ळप-प्रभुवदेम् धर्म्मकडप्पादनो ॥

कं ॥ जिन-पद-युगदोळ् जिन-मुनि- ।
जन-सेवेयोळुचित-दानदोळ् सलियिसिदम् ।
मनमं तनुवं धनमम् ।
विनय-परं बुळ्ळपार्य्यनचलित-धैर्य्यम् ॥

इन्तु सुखदिनिर्प्पन्नेगं समाधि-कालमत्यासन्नमागे ।।

वृ ।। जिन-पतियं जिनेश्वरन नाममना-जिन-नाम-सङ्ख्येयम् ।
मनदोळमास्य-पङ्कजदोळं कर-शाखेयोळं समाधि सञ्- ।
ञनिधिप कालदोळ् निलिसि सर्व्व-निवृत्तिगे सन्दु मुक्ति-सा-
धन-मननैदिदं त्रिदश-धाममनी-क्रमदिन्दे बुळ्ळपम् ।।

व ।। अन्तु पञ्च-परमेष्ठिगळ ध्यानदिं तां पडेद समाधि-कालद जय-क्रम मेन्तेन्दोडे ।।

अदु मूवत्तैदरिन्दं क्रमदोळे पदिनाराागि मत्तारोळ् सन्- ।
दुदु बन्दत्तैदरोळ् नाल्करोळेराडरोळिद्दोन्दरोळ् विन्दु नाका-
स्पदमं सैतित्तुदात्त-सत्त्व-जय-विलसद्-वर्ण्ण-सन्दोहमीयन्- ।
ददिना-जिह्वाग्रदोळ् सन्मतियिनेनलदेम् धन्यनो बुळ्ळपार्य्यम् ।।
सरिगाणेम् धरेयल्लि चागिगलोळेन्नोळ् पोल्के-वप्पन्नरम् ।
सुर-भूजं समनप्पोडप्पुददनां नोळ्पेम् समन्तेम्बवोल् ।
धरेयोळ् पोम्-मले सोर्द्द पाङ्गिनोळे चागं गेय्दु सोपानमाग् ।
इरे धर्म्मं त्रिदिवक्के बुळ्ळपनमर्त्यावासमं पोद्दिदम् ।।
मान्यो राज-सभासु बुळ्ळप-विभुर्य्यः पार्त्थिवे वत्सरे
मासे भाद्रपदे त्रयोदशि-तिथौ पक्षेऽर्क्कवारे सिते ।
श्रीमत्पञ्च-नमस्क्रियामय-सुधां स्वैरं पिबन् श्री-गुरून्
ध्यांस् ··· ··· समाधि-विधिना स प्राप दिव्यं श्रियम् ।।
आ-कल्पं भुवि बुळ्ळ [प]-प्रभु-यशस् स्थाय्यस्तु सं ··· ···
··· ··· ··· इत्यचीकरदिमामस्मै निषद्यां कलाम् ।।
तत्प्रेमात्म ··· ··· नाथ-परमाराध्य ··· ··· ··· ।
··· ··· ··· चन्द्र-सूरिरनिशं जीयादिदं शासनम् ।।
वर्ष-सहस्रदोळ् ··· दश-स ··· ··· ··· ··· ··· ।
वर्षमे पार्त्थिवं पुदिये भाद्रपदं वर-मासदोन्दु ·· ··· ।

··· ··· ··· सित-प ··· ··· ··· प्रभा- ।
कर-वर-वारमागे विभु-बुळ्ळपनैदिद ··· ··· ··· ॥

[जिन शासनकी प्रशंसा । मूल-संघ, नन्दि-संघ, पुस्तक-गच्छ, और देशि-गणके श्रुत-मुनिकी प्रशंसा । उनके शिष्य देवचन्द्र मुनि थे । उनके शिष्य गोपिपतिके पुत्र बुळ्ळप थे, जिन्हें अभयचन्द्रकी कृपासे यह अवसर प्राप्त हुआ था । जिस गाँवका वह अधीश था, वह नागरखण्ड था, जो १८ कम्पण देशके गुत्तिका गाँव था । इस नागरखण्डके गाँवोंमें एक गाँव भारङ्गि था, जिसमें उत्तमोत्तम चैत्यालय थे । बुळ्ळप की प्रशंसा, जिसने भूमिदान किया था और ताळाब (दीर्घिका) बनवाये थे । अपना अन्त नजदीक जानकर, उसने सभी नियत विधियोंको किया, और समाधि-की विधिसे (उक्त मितिको), स्वर्गको गया ।]

[EC, VIII Sorab tl, No 330]

६४७

पर्वत आबू;—संस्कृत ।

[सं० १५२५ = १४६८ ई०] श्वेताम्बर लेख ।

[Asiat. Res. XVI, p. 301, No. XVII, a.]

६४८

पर्वत आबू;—संस्कृत ।

[सं० १५२६ = १४७२ ई०] श्वेताम्बर लेख ।

[Asiat. Res. XVI, p. 299, No. XV, a.]

६४९

यिडुवणि;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक १३१५ = १३७३ ई०]

[यिडुवणिमें, पार्श्वनाथ बस्तिके पाषाणपर]

श्री-**पार्श्व-तीर्थेश्व**राय नमः निर्विघ्नमस्तु ॥

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

श्री-पञ्च-परमेष्ठिभ्यो नमः ।

नमस्तुङ्ग-इत्यादि ॥

स्वस्ति समधिगत-भु[व]नाश्रय श्री-पृथ्वी-मनो-वल्लभ महा-राजाधिराज राज-परमेश्वरनीश्वर-कुल-तिलक श्रीमन्महा-**विरूपाक्ष-महारायरु** राज्यवनु सुख-संकथा-विनोददिं प्रतिपालिसुत्तमिद्दल्लि श्रीमन्महा-प्रभु **मलेय-ब्बुलि**-मार्त्तण्ड **निडिग**येण्टु-दण्डिगेय मनेयर गण्ड श्रीमन्महा-प्रभु **अयिसूर मुन्दुब्बण्ण-नायक**र वर-कुमार **भैरण्ण-नायकरु होरुगुप्पे-हेब्बयल-नाड**नु प्रतिपालिसुत्तमिद्दलि **इडुवणिय बलिय-गौडर** मग **नगिर-ठाविण आनेवाळिगे** अग्रगण्यरप्प कोडे-हडप दीप-मालेय कम्भ अङ्क-टेङ्के-मुन्ताद-तेज-मान्य-वनुळ्ळ **हैवण्ण-नायकरु बुक्कण्ण-नायकर** अळिय **माळक-नायकित्ति**यर मग आहाराभय-भैषज्य-शास्त्र-दत्तावधा[त]रुमप्प **पारिस-गौडरु** तम्म बोडय भयिरण्ण-नायकरिगू तमगू पुण्य-वृद्धि-यशो-वृद्धयर्थ-निमित्तवागि तम्म दानमूलद-सीमेय यिडुवणेयोळगे श्री-पारिश्व-तीर्थङ्कर-चैत्यालयवनु माडिसिदनु तन्मुहूर्त्तके शुभमस्तु ॥ स्वस्ति श्री **जयाभ्युदय शालि-वाहन-शक-वर्ष १३१५ नेय नन्दन-संवत्सरद वैशाख-शुद्ध १३ यन्दु** सूर्य्य-प्रतिष्ठेयाद घ २ ळिगेयल्लि चतुस्संघ-समन्वितदिं पञ्च-कल्याण-महोत्साहदिं सु-मुहूर्त्तदिं श्री-पार्श्व-तीर्त्थेश्वर प्रतिष्ठेयं भैरण्ण-नायकर कारुण्य-वर-प्रसाददिं पारिज-गौ[ड]रु तम्मोडेरु भैरण्ण-वोडेयरिगू तनगू अभ्युदय-निश्रेयस-सुख-प्राप्ति-निमित्त-वागि माडिसिदुदक्के भद्रं शुभं मङ्गलम् ॥

स्वस्त्यनवरत-विनमदमरेन्द्र-मौळि-माणिक्य-मयूख-बालातप-विलसित-पादारविन्द श्री-मदनादि-ससिद्ध-प्रसिद्धरुमप्प यिडुर्वाणय श्री-पार्श्व-तीर्त्थेश्वररिगे मलेय-हुलिय मार्त्तण्डनिडिग येण्टु-दण्डिगेय मन्नेयर गण्ड उभय-नाना-देशिगळगे तवर्म्मनेयाद ऐश्वर्य्यपुर-वराधीश्वर श्रीमन्महाप्रभु **भैरण-नायकरु** तम्म अम्म सिरु-मादेविय-वरिगू तमगू तम्म कारुण्य-वर-प्रसाददिं सेवेयं माडुत्तं यिद्द पारिस-गौडरिगू पुण्य-वृद्धि-यशो-वृद्ध्यर्थ-निमित्तवागि कोट्ट धर्म्म-शासनद भाषा-क्रमवेन्तेन्दरे। नाऊ आळुत्तं यिद होर-गुप्पे हेब्बयल-नाडोळगण अप्पु-गौडन जक्कणन पाल कुळ ग २ न २ अक्षरदलू यिप्पत्तु-यरडु-हणविन कुळवनु श्री पार्श्व-तीर्त्थेश्वर नित्य-पूजा-महोत्साहक्के अमृतपडि यरडु-होत्तिन हिरिय-देवर हाल-धारे मृत्युञ्जय-चक्र-पूजे पञ्चामृतद अभिषेक सिद्ध-चक्र-पूजे सिद्धर हाल-धारे अडके यले गन्ध धूप एण्णे वाद्य-मुन्ताद समस्त-पूजा-वेच्चके नावु सोम-सूर्य-ग्रहणदल्लि धारा-पूर्व्वकदिं बिट्टु कोट्ट यीग २ न २ हणविन कुळ-स्थळद वृत्ति-भूमिगळ विवर (यहाँ दानकी विस्तृत चर्चा है) यिन्तीं-वृत्ति भूमिगळ चतुस्सीमेगळिन्दोळगाद मोदल सिद्धायि ई-मोदल सिद्धाय अदक्के बन्द अडके-यले-मुन्ताद होरगुप्पे हेब्बयल-नाडोपादियल्लि बन्द नाना-उपोत्र मुन्दे येनु बन्द हदिके-होदके-मुन्तागि एल्लववनू नाऊ नम्म स्त्री-पुत्र-ज्ञाति-सामन्त-दायादानुमतदिं नम्म स्व-रुचियिं चन्द्र-सूर्य-अग्नि-वायु-साक्षि-यागि······ ण्ण-नायकर वर-कुमार भैरण्ण-नायकरु बरसिकोट्ट शाला-शासनक्के मङ्गळ महा श्री श्री (यहाँ हमेशाका अन्तिम श्लोक तथा दानका विस्तृत चर्चा आती है)।

स्वस्ति श्री **विजयाभ्युदय-शालिवाहन-शक-वर्ष १३९६ नेय विजय-संवत्सरद कार्त्तिक शुद्ध ५ बुद (ध) वारदलु** स्वस्ति श्रीमद्-वादीन्द्र-**विशालकीर्त्ति-भट्टारक-स्वामिगळ** उपदेशदिन्द स्वस्ति श्रीमन्महा-प्रभु-मुड्डु-वण्ण-नायकर कुमार भैरण्ण-नायकरु तमगे अभ्युदय-निश्रेयस-सुख-प्राप्ति-निमित्त-वागि **मळेयखेडद नेमिनाथ-स्वामि**गळ नित्य-पूजा-महोत्सवक्के बिट्ट धर्म्म-शासनद क्रमवेन्तेन्दरे (यहाँ दानकी विस्तृत चर्चा आती है) नम्म स्त्री-पुत्र-ज्ञाति-सामन्त-दायादानुमतदिन्दलू नाऊ नम्म स्व-रुचियिन्द चन्द्र-सूर्य्य-वायु-अग्नि-

साक्षियागि भैरण्ण-नायकर कुमार थिम्मडि-भैरवेन्द्रनू बरद शिला-शास[न]के मङ्गल महा श्री ॥ (हमेशाके अन्तिम श्लोक)।

इन्द्रः पृच्छति चाण्डालीं किमिदं पच्यते त्वया ।
श्वान-मांसं सुरा-सिक्त कपालेन चिताग्निना ॥
देव-ब्राह्मण-वित्तानां बलादपहरन्ति ये ।
तेषां पाद-रजो-भीत्या चर्मणा पिहितं मया ॥

(हमेशाका अन्तिम श्लोक)।

[पार्श्व-तीर्थेश्वरको नमस्कार । यह निर्विघ्न होवे। जिन-शासनकी प्रशंसा। पञ्च-परमेष्ठियोंको नमस्कार । शम्भुको नमस्कार इत्यादि ।

जिस समय महाराजाधिराज, राज-परमेश्वर, ईश्वर-कुल-तिलक, महाविरूपाक्ष महाराय शान्ति एवं बुद्धिमत्तासे राज्य कर रहे थे:—और महाप्रभु, अयिसूर मुन्दुवण्ण-नायकका पुत्र भैरण्ण-नायक होरुगुप्पे हेब्बयल्नाड्की रक्षा कर रहे थे;—इदुवणि बलिय-गौडका पुत्र, जो नगिर-ठावुमें आनेवाळिगेमें अग्रणी था, हैवण्ण-नायक, तथा बुकण्ण-नायकका दामाद, मालक-नायिकितिके पुत्र पारिस-गौडने ताकि पुण्य और ख्याति स्वयं अपनी तथा अपने शासक भयिरण्ण-नायककी बढ़ सके,—अपने दानमूल सीमेमें इदुवणेमें पार्श्वनाथ-तीर्थङ्करका चैत्यालय बनवाया था। और (उक्त मितिको) (पूर्व विगतोंको दुहराते हुए) भगवान्की स्थापना की गयी थी।

(नाना उपाधियोंवाले) इदुगणिके पार्श्व तीर्थेश्वरके लिये, ऐश्वर्यपुर-वराधीश्वर, महाप्रभु भैरण्ण-नायकने, जिससे कि पुण्य और ख्याति अपनी माता सिक-मादेवी तथा अपनेतक, और उसकी सम्पत्तिके दास पार्श्व-गौडतक बढ़ सके,—निम्नलिखित शासन (लेख) प्रदान किया;—यहाँपर दैनिक पूजा, महोत्सव, भेंटें, तथा अभिषेक आदिके लिये तथा और भी खर्चोंके लिये,—हमने

सूर्यग्रहणके समय (उक्त) भूमियाँ, सूर्य और चन्द्रको साक्षी बनाकर दी हैं। हमेशाका अन्तिम श्लोक।

पांरिस (पार्श्व)-गौड तथा दूसरे गौडोंने (जिनके नाम दिये हैं) (उक्त) भूमियाँ प्रदान कीं।]

[EC, VIII, Sagar tl., No. 60]

६५०

गेड्डि;—संस्कृत-ध्वस्त।

[सं० १५३६ = १४७६ ई०] श्वेताम्बर लेख।

[D. P. Khakhar, Report on remains in Kachh (ASWI, Selections, No. CLII), p. 88, No. 40, t.]

६५१

भिलरी;—संस्कृत और गुजराती।

[सं० १५३८ = १४८१ ई०] (श्वेताम्बर)

[J. Kirste, EI, II, No. V, No. 1, (p. 25), t. & tr.]

६५२

हरवे;—संस्कृत तथा कन्नड।

[शक सं० १४०४ = १४८२ ई०]

[हरवे (उम्यम्बळ्ळि परगना) में, शिवलिंगय्याके खेतके दक्षिणकी तरफ एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥

स्वस्ति श्री शक-वर्ष १४०४ सन्द वर्त्तमान-शुभकृत्-संवत्सरद चैत्र -शु ५ लु हरवेय देवप्पगळ मग चन्द्रप्पनु तम्म कुल-स्वामी हरवेय बस्तिय आदि-परमेश्वरन

अमृत-पडि चातुर्व्वर्ण्णद दान तदर्त्थवागि **तगडूर** प्रभुगळु एनेगे दानार्त्थवागि कोट्ट क्षेत्रद स्थान-निर्द्देशद विवर । अरिन्द नैॠत्य-दिक्किनल्लि विभूतिय लिङ्गप्पयगळ गद्दे होल ग ३० तेङ्कलु विभूति-नञ्जप्पन होल तोटदिं पडुवलु येरे-होलक्के होह वोणियिं बडगलु शिवनैय्यन अडुविं मूडण चतुस्सीमेयोळगाद स्थळ होल गद्दे अडके-तेङ्गु-एलेय-तोट ओळगाद क्षेत्रद सर्व्व मान्यवनू स्त्री-पुत्र-ज्ञाति-सापत्न-दायादाद्यनुमति पुरस्सरवागि आदीश्वरगे एनेगे धर्म्मार्त्थवागि त्रिवाचा कोट्टेनु । (हमेशाकी तरह अन्तिम श्लोक)

[हरवे के देवप्पके पुत्र चन्दप्पने, हरवे बस्तिके अपने कुल-देवता आदि-परमेश्वरकी पूजा का प्रबन्ध करने, तथा चतुर्व्वर्णको दान देनेके लिये, तगडूरके सरदारोंके द्वारा दी गयी भूमिका, सूखे खेतों, धान्यके खेतों, सुपारी, नारियल और पानके उद्यानों सहित—जो कि इस भूमिमें लगे हुए थे, दान किया । यह दान उसने अपनी स्त्री-पुत्र-ज्ञाति-सौतेली स्त्रियोंके पुत्रों और दायादों (उत्तराधिकारियों) की अनुमतिसे किया था ।

[EC, IV, Chamarajnagar tl., No., 189]

६५३

चित्तौड़—संस्कृत ।

[सं० १५४३ तथा शक १४०८ = १४८६ ई०]

[गोमुखके पासके जैन-मन्दिरका लेख जो कि एक चट्टानपर है, जिसमें ३ प्रतिमायें उत्कीर्ण हैं ।]

(१) ॥ (चिह्न) ॥ संवत् १५४३ वर्षे शाके १४०८ प्र० मार्य(र्ग) शीर्ष वदि १३ तिथौ गुरु-दिने । श्री-**चित्रकूट**-महा-दुर्गे । श्री-**रायमल्ल**-राजेन्द्र-विजे (ज) य-राज्ये । सकल-श्री-सङ्घेन । स-तीर्थं । श्री-**स (सु)कोशलेश**-प्रतिमा कारिता । प्रतिष्टि-

(२) ता । श्री-**खरतरगच्छे** । श्री **जिनसमुद्र-सूरिभि** (र्भः) ॥

['रायमल्ल' स्पष्टतः वही राजमल्ल है जो कुम्भकर्णका पुत्र है, और उसके लिये विक्रम सं० १५४३, इस लेख द्वारा निर्दिष्ट, सबसे पूर्ववर्ती मिति है। लेखमें खरतरगच्छके जिनसमुद्र-सूरि द्वारा सुकोशलेश या ऋषभदेव तथा अन्य तीर्थों (जो कि दो से अधिक नहीं हो सकते हैं, क्योंकि पाषाणपर उत्कीर्ण केवल ३ मूर्त्तियोंका ही उल्लेख है।) की प्रतिमाओंकी स्थापनाका वर्णन है।]

नोट :—जिनसमुद्रसूरिके विषयमें जाननेके लिये **Ind. Ant. Vol XI. p. 249, No.** 58 देखना चाहिये।

[ASWI, Progress Report 1903-1904, p. 59. t.]

६५४

होगेकेरी;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक १४०६=१४८७ ई०]

[होगेकेरीमें, पार्श्वनाथ बस्तिके एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
श्रीमद्भू-भुवन-प्रसिद्धतर-जम्बूद्वीप-मध्यस्थ-तुङ्-।
गामर्त्याचल-दक्षिणान्त्य-भरतार्य्या-खण्ड-नैऋत्य-दिक्-।
सीमोपाब्धि-तटोपकण्ठ-विलसद्-वर्णाश्रमाकीर्ण-भू-।
धामं **तोळव देश**मिप्पुदिळेयोळ् ससाङ्ग-सम्पत्तियिम् ॥
अदरोळ् माङ्गल्यगेहं बहु-विध-विभव-प्रोल्लसच्चैत्यगेहम्।
सुदती-सन्तान-जन्मालयमखिल-सुखि-त्यागि-भोगि-प्रवाहम्।
मदवद्-हस्त्यश्व-यूथ-प्रबळ-पटु-भटाकीर्ण्णमुत्तुङ्ग-सौधो-
दय-राजद्-राज-**संगीतपुर**मदेशेयल् प्रौढ़-सङ्गीयमानम् ॥
कवि-गमकि-वादि-वाग्मि-।
प्रवेक-सङ्गीत-विषय-साहित्य-रसो-।

न्द्रव-चतुर-संस्तुत- ।
विविध-कला-भङ्गि-संगि सङ्गीतपुरम् ॥
अद्रनाळ्वं साळुवेन्द्र-क्षितिपति रिपु-मत्तेभ-कण्ठीरवं शा- ।
रद-चञ्चच्चन्द्रिका-निर्म्मळ-ललित-यशः-पूरिताशान्तराळम् ।
मदन-प्रध्वंसि-चन्द्रप्रभ-जिन-चरण-द्वन्द्व-संसक्त-चित्तम् ।
सुदती-नेत्रान्तरङ्गोत्सव-कर-निज-सौभाग्य-कन्दर्प्प-देवम् ॥

अन्तातनखण्डित-प्रचण्ड-प्रताप-खर्व्व-गर्व्व-निर्ज्जित-भीष्म-ग्रीष्म-मार्त्तण्ड-मण्डलनुम-प्रतिहत-देदीप्यमान-निज-तेजः-पुञ्जनुं दन्दह्यमान-रिपु-वधू-हृदयनुं विशाल-भाल-तल चोचुम्ब्यमान-जिन-चरण-नख-मयूखनुं दुष्ट-निग्रह-शिष्ट-प्रतिपाळन-क्रिया परिष्ठनुं चतुर-चतुष्षष्ठि-कला-कलापनुं रत्न-त्रय-मणि-करण्डायमानान्तःकरणनुं श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरं श्री- साळुवेन्द्र-महाराजं निःकण्टकनागि सुखदिं राज्यं गेय्युत्तम् ॥

विनुत-प्रासाद-चैत्यालय-तल-विलसन्-मण्डपौघङ्गळिं कञ्-
च्चिन-मान-स्तम्भदिन्दा-पुरद वनद विन्यासदिं लोह-पाषा-
ण-निबद्धानेक-बिम्बङ्गळिनुपकरण-व्रातदिं नित्य-दाना-
र्च्चनेयिन्दम् शास्त्र-दानं नेगळ्दे नडसिदं धर्म्ममं शाळुवेन्द्रम् ॥

अनितु राज-धर्म्ममं धर्म्ममुमं पालिसुत्तम् ।
बरे साळवेन्द्रन चित्तम् ।
परितोषमनेयिदुवन्ते सेवा-तत्- ।
परनागि भक्ति-भरदिन्द् ।
इरे विगत-च्छद्म सुगुण-सद्मं पद्मम् ॥
हितनीतं प्रिय-सत्य-वाद-निपुणं धर्म्मार्त्थ-सम्पादकम् ।
चतुरं सच्चरित्रं दयार्द्र-हृदयं शास्त्रतानेम्मन्वया- ।
गतनी-पद्मण-मन्त्रियेन्दडे कुळिर्-क्कोडल्के साल्वेन्द्र-भू-
पतिया-चन्द्र-तराक्कमित्तनुरे मान्य-ग्राम-सम्पत्तियम् ॥
श्रीमद्-विश्रित-शालिवाहन-शकाब्दं नन्द-खाब्धीन्दु-सं-
ख्या-मानं नडेव प्लवंग-गत-पुष्य-स्याम-सत्-पञ्चमी- ।

स्तोमं गीष्पतिवारमोन्दिरे मनो-वाक्-काय-शुद्धं चतुस्-
सीमान्तोर्व्वियनष्ट-भोग-सहितं हेमाम्बु-धारा-युतम् ॥
प्रभुगळ् पुर-जन-परिजन- ।
सभासदर्म्मेच्चे साळुवेन्द्र-नृपाळम् ।
विभवदि पद्मण-मन्त्रिगे ।
शुभमस्त्वेन्द्होगेयकेरेयनवनोल्दित्तम् ॥

अन्तु स-हिरण्योदक-दान-धारा-पूर्व्वकमागि कोट्ट ओगेयकेरेय-ग्राम-वोन्दर चतुस्सी-मेयोळगण गद्दे-बेद्दलु-तोट-तुडिके-कळ-मने-कोठार-होन्नु-होम्बळि-वरि-वङ्कु-काणिके-कड्डाय-बेडिगे बिनगु-बेसवोक्कलु-अङ्क-सुङ्क-टङ्कसाळे-तळवारिके निधि-निक्षेप-जल-पाषाण-अक्षिणि-आगामि-सिद्ध-साध्यमेम्बष्ट-भोग-सर्व्व-स्वाम्य-सर्व्वादाय-प्राप्ति-सहित-मागिया-चन्द्रार्क्क-स्थायियागि पद्मणामात्यननुभविसुवुदेन्दु कोट्ट सर्व्वमान्य-ग्राम-दान-शासन-वचनम् ॥

[जम्बूद्वीप, भरतक्षेत्र, उसमें तौलव-देशका वर्णन । उसमें संगीतपुर नगर तथा उसके राजा शाळुवेन्द्रका वर्णन ।

जिस समय महा-मण्डलेश्वर शाळुवेन्द्र-महाराज सुखसे राज्य कर रहे थे :— सुन्दर, ऊँचे-ऊँचे चैत्यालयों, मण्डपसमूहों, घण्टी सहित मानस्तम्भों और उद्यानोंसे सालुवेन्द्र धर्म्मको बढ़ा रहे थे । उनकी सेवामें तत्पर पद्म नामका व्यक्ति था । यह पद्मण (पद्म) हमारे खानदानमें से हुआ है अतः राजाने मन्त्री-पद्मणको ओगेयकेरे नामका गाँव दिया । उस गाँवमें बहुतसे शस्य (चावल) के खेत थे । ये सब उसने उसको दिये तथा इन सबका शासन (लेख) भी लिख-कर दिया ।]

[EC, VIII, Sagar tl., No 163, Ist part]

६५५

होंगेकेरी;—संस्कृत तथा कन्नड ।

[शक १४१२ = १४९० ई०]

[होंगेकेरीमें, पार्श्वनाथ बस्तिके एक पाषाणपर]

नमस्तुङ्ग-इत्यादि ॥

स्वस्ति श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरं **सङ्गि-राय-वोडेयर**वर कुमार **यिन्दगरस-वोडेयरु संगीतपुर**-वर-राजधानियलु यिद्दु **हाडवल्लि**य राज्य-मुन्ताद समस्त-राज्यङ्गळनु सद्धर्म्म-कथाप्रसङ्गदिं प्रतिपालिसुत्तं यिद्दन्दिन **शालिवाहन-शक-वरुष १४१२ नेय सौम्य-संवत्सरद कार्त्तिक-ब ७ शुक्र**वारदलु श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरं **यिन्दगरस-वोडेयर** निरूपदिन्द **बोम्मण-सेट्टि**यर मग **पदुमण-सेट्टि**यरु बरसिद धर्म्मशासनद भाषा क्रमवेन्तेन्दरे यिन्दगरस-वोडेयर कैयलु **पदुमण-सेट्टि** मूलवनु कोण्डु आळुत्तं यिद्द **बोगेयकेरे**य-बोळगे चयि (चै) त्यालयवनु कट्टिसि पारिश्वतीर्त्थेश्वर प्रतिष्ठेयनु माडि आ-पारिश्व-तीर्त्थेश्वररिङ्गे प्रतिदिन त्रि-काल-अभिषेक-पूजे मूरु कार्त्तिक-पूजे मूरु नन्दीश्वरद अष्टाह्निक शिवरात्रे अक्षय-तदिगे श्रुत-पञ्चमी कैयक्रिय होयिर्वाळ्ळि जीवदयाष्टमी कैयक्रिय सूसवळ्ळि गर्भावतरण जल्मा (जन्मा) भिषेक दीक्षा-कल्याण केवल-ज्ञान-कल्याण निर्व्वाण-कल्याणङ्गळेम्ब पारिश्व-तीर्त्थेश्वर पञ्च-कल्याण-मुन्ताद नैमित्तिकङ्गळल्लि माडुव अभिषेक-पूजे-धर्म्मङ्गळिङ्गे अङ्गरङ्ग-नैवेद्यंगळिङ्गे बोन्दु-तण्डु-तपस्विगळ आहार-दानके पूजक-भान्दारिगळु मालेयवरु मुन्तादवरिगे विङ्गडिसि माडिद धर्म्म-स्थळङ्गळ विवर (शेषमें दानकी विस्तृत चर्चा आदि है) ।

[शम्भुको नमस्कार इत्यादि ।

जिस समय महा-मण्डलेश्वर सङ्गी-राय-वोडेयर् का पुत्र इन्दगरस- वोडेयर् राजधानी सङ्गीतपुरमें था :—(उक्त मितिको) महा-मण्डलेश्वर इन्दगरस-

वोडेयरके हुक्मसे,-बोम्मण-सेट्टिके पुत्र पदुमण-सेट्टिने एक धर्म्म-शासन-पत्र लिखवाया, जिसकी भाषा इस प्रकार थी :—इन्दगरस-वोडेयरके हाथोंसे, पदुमण सेट्टिने अपने द्वारा शासित वोगेयकेरेके मौलिक अधिकारको प्राप्त करके उसने वहाँ एक चैत्यालय बनवाकर पार्श्वतीर्थेश्वरको विराजमान किया। तथा पूजा और अभिषेक का प्रबन्ध करनेके लिये (जिसकी कि विस्तृत सूची दी हुई है) उसने (उक्त) भूमियोंका दान दिया। और इन सब लिखे हुए धर्म्मोंको चैत्यालयके उत्तरमें बनवाये गये मकानमें सुरक्षित रक्खा। मेरे एक हजार वर्ष बाद मेरे पुत्र, मेरी पीछेकी पीढ़ी और सन्तान मकानपर अधिकार कर सकते हैं, लगानकी देखभाल करते हुए (उक्त) धर्मोंको सञ्चालित कर सकते हैं। प्रत्येक चीजका खर्च नियमित रूपसे व्यवस्थित कर दिया गया है। (अन्तका लेख पढ़ा नहीं जा सकता।)]

[EC, VIII, Sagar tl., No. 163, III part.]

६५६

बिद्रूरु;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक १४१२ = १४११ ई०]

[बिद्रूरुमें, जनार्दन मन्दिरके ताम्बेके पत्रपर]

श्रीमत्परम-गंभीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम्॥
श्रीमत्-**तौळव-देश**-मिश्रित-महा **सङ्गीत**-सत्-**पत्तने**
बाभातीन्द्र-महीन्द्र-चन्द्र-तनयः श्री-**सङ्गि-राजा**त्मजः।
भास्वत्-**काश्यप-गोत्र-सोम-कुल**जः श्री-**सङ्कराम्बो**दर
क्षीराम्भोधि-सुधाकरो नुत-जिनः श्री-**साळुवेन्द्रा**धिपः॥
साक्षीकृत्य निज-प्रताप-दहनं गन्धर्व्व-पादाहति-
प्रोद्भूतोद्भट-धूलि-**काण्ड-वसनं** संयोज्य नीराजनम्।

खड्गाखड्गि-ख-विस्फुलिंग-निवहैर् द्विट्-कण्ठ-भेदारवैः
वाधानोम्मडि-साळुवेन्द्र-नृपति र्व्वीर-श्रियं लब्धवान् ॥
असूत सूर्य्यो यमुनां पुरेति
कथा पृथिव्यां प्रथिता तथापि ।
श्री-साळुवेन्द्रासि-दिनेश-पुत्री
प्रताप-सूर्य्यं सुषुवे विचित्रम् ॥
प्रताप-तपनोत्फुळ्ळ-कीर्ति-कञ्जेष्ट-दिग्-दळे ।
तारोद-विन्दुके यस्य लेभे हंस-श्रियं शशी ॥
विख्यातेम्मडि-साळुवेन्द्र-नृपतेः श्यामासि-सोमोद्भवा
मध्योन्मग्न-विराजमान-कमला प्रासूत * पत्यामहो ।
एकां शत्रु-करीन्द्र-मस्तक-गलद्-रक्तौघ-शोभा-नदीम्
अन्यां श्री-विबुधेश-सेवित-तटीं सत् कीर्त्ति-भागीरथीम् ॥
पातालोत्पललोचना-कटि-तटे चञ्चद्दुकूल-द्युतिम्
दिक्-कान्ताकुच-कुम्भयोः कलयते मुक्ता-कलाप-श्रियम् ।
देव-स्त्री-कुटिलालकेषु नितरां मन्दार-माला-छविम्
कीर्त्तिः कार्त्तिक-कौमुदी-प्रविमला श्री-साळुवेन्द्राधिप (:) ॥
व्यानम्रामर-पद्मराग-मकुट-ज्योतिश्छटा-रञ्जितौ
पादौ यस्य सरोजयोः कलयतो बालातप-श्री-युजोः ।
शोभां वेणुपुराधिपः स भगवान् श्री-वर्द्धमानो जिनः
पायादिम्मडि-साळुवेन्द्र-नृपतिं भूपाळ-चूडामणिम् ॥

इत्याद्यनेक-बिरुदावळी-विराजमानसङ्गि-राय-वोडेयरवर कुमार शुद्ध-सम्यक्त्व-रत्नाकरनेनिसिद श्रीमन्महा-मण्डलेश्वर यिन्दगरस-वोडेयरु संगीतपुरद राज-धानियल्लिद्दु विदिरुनाडु-मुन्ताद समस्त-राज्यवनु प्रतिपालिसुत्त यिद्दन्दिन जयाभ्युदय-शालिवाहन-शक-वरुष १४१८ नेय वर्त्तमानके सलुव विरोधि-

* ऐसा ही मूल में है : शायद 'पुण्यामहो' की जगह ऐसा हो गया है ।

क्रतु-संवत्सरद वैशाख-सुद्ध ५ आदिवार वुलु श्रीमन्-महा-मण्डलेश्वर इन्दगरस-वोडेयरु तमगे पुण्यार्त्थवागि बरसिद धर्म्म-शासनद क्रमवेन्तेन्दरे **बिदि-रूर** बस्तिय वर्द्धमान-स्वामिगळ अङ्ग-रङ्ग-नैवेद्य-नित्य-नैमित्तिक-जिन-पूजाङ्ग-विनियोग-मुन्ताद-श्री-कार्य्यक्के पूर्व्वदलि बिडु-देवसवागि हिरण्योदक-धारा-पूर्व्वक-वागि-आ-चन्द्रार्क्क-स्थायियागि सर्व्वमान्यवागि बिट्ट भूमिगळ विवर (यहाँ दानकी विगत आती है) ई-बिट्ट-कुळ-स्थलङ्गळ नीरञ्चु नेलनरकलु नट्ट-कल्लु तेगदगळु गडियिन्दोळगाद चतुस्सीमेगे बन्द मक्कि हक्कलु कानु काडारम्भ नीरु दारि निधि-निक्षेप-अक्षीणि-आगामि-सिद्ध-साध्य-मुन्ताद तेज-मान्यगळनुळ ई-कुळ-स्थळंगळ मेले काणिके कड्डाय बीडुगळु विराड-मुन्तागि आवौपुत्र-इल्लदे सर्व्वमान्यवागि आ-वर्द्धमान-तीर्त्थ-करिगे हिरण्योदक-धारा-पूर्व्वकवागि आ-चन्द्रार्क्क स्थायियागि बिडु-देवस्व वागि शासनाङ्कितवागि नावु बिट्टु-कोट्ट धर्म्म-शासनद पट्टे यिन्तप्पुदक्के साक्षिगळु ।

आदित्य-चन्द्रावनिलो-इत्यादि ॥

ई-धर्म्मक्के आ रोब्बरु तप्पिदवरू ऊर्ज्जन्त-गिरियल्लि सहस्रगो-ब्राह्मणर हतिय माडिद पापक्के होहरु यरडूवरे-द्वीपदोळगुळ चैत्य चैत्यालयदोळगुळ जिन-मुनिगळ वधसिद पापक्के होहरु (हमेशाके शापात्मक वाक्यावयव और श्लोक) यिन्द-गरस बरह ।

[जिनशासनकी प्रशंसा ।

तौलव देशमें, प्रसिद्ध सङ्गीतपट्टनमें काश्यपगोत्र और सोम कुलके महाराज इन्द्रके पुत्र सङ्गि-राजके पुत्र राजा साळुवेन्द्र शोभायमान था । वह जिनभक्त था ओर उसकी माता सङ्कराम्बा थी । इम्मडि-साळुवेन्द्रके पराक्रमको प्रशंसा । उसके यशकी प्रसिद्धिका कीर्तन ।

जिस समय इन और अन्य उपाधियों सहित, सङ्गी-राय-वोडेयरका पुत्र, महामण्डलेश्वर इन्दगरस-वोडेयर शाही नगर सङ्गीतपुरमें थे :—(उक्त मितिको),

पुण्यकी प्राप्तिके लिये, उसने निम्नलिखित दान दिया;—जो दान बिदिरूर बस्तिके वर्धमान-स्वामीकी (उक्त) उपासना और पूजाके लिये पहले दिया गया था और फिर छोड़ दिया गया था निम्नलिखित थे;—(यहाँ पूरी-पूरी विगत दी हुई है)। ये भूमियाँ, (उक्त) सर्व अधिकारों सहित, वर्धमान-तीर्थंकरके लिये दे दी गयीं थीं।]

[EC, VIII, Sagar tl. No 164]

६५७

मलेयूर;—कन्नड-भग्न।

[शक १४१४ = १४९२ ई०]

[उसी पहाड़ीपर, सण्णिगे-बागलुके पश्चिमकी ओर]

शुभमस्तु शक-वरिष १४१४ नेय वर्त्तमान-परिधावि-संवत्सरद चैत्र-शु १ लु कनक-गिरिस्थ श्री-विजयनाथ ··· ··· ··· यके मलेयू ··· ··· दिमण्ण-सेट्टिय ··· ··· ··· ट्टियरु कनकगिरिय ··· ··· समस्त ··· ··· १ के हत्तु होन्निगे यरडु हण बड्डियलु कोट्टद् अन्तरदलु इप्पत्तु होन्निगे वोप्पत्त ··· ··· ··· ··· १ के लत्त ··· ··· ··· खं ½ कोळगद ··· ··· ··· दीप आरति-सेवे ··· ···

[मलेयूरके दिमण्ण-सेट्टिके [पुत्र] ··· ··· सेट्टिने कनक-गिरिपर स्थित विजयनाथदेवकी दीप-आरतिकी सेवाके लिये, प्रत्येक १० होन्नुपर २ हणके ब्याजके हिसाबसे, २० होन्नुका दान किया था।]

[EC, IV, Chamarajnagar tl., No. 160]

६५८

होगेकेरी;—संस्कृत तथा कन्नड ।

[शक १४२० = १४९८ ई०]

[होगेकेरीमें, पार्श्वनाथ बस्तिके पाषाणपर]

श्रीमत्पार्श्वं जिनेन्द्र-भक्तनमल-श्री-पण्डिताचार्य्य-सत्- ।
प्रेमोद्यत्-प्रिय-शिष्यनप्रतिम-नागाम्बात्मजं सद्-गुण- ।
स्तोम-ब्रह्म-तनूजनुत्तम-सु-पद्मा-वल्लभं मल्लिका- ।
कामं पद्मण-मन्त्रि-मुख्यनेसेदं साल्वेन्द्र-चित्तोत्सवम् ॥
जिन-पादानति मस्तकक्के जिन-बिम्बाळोकनं दृष्टिगा- ।
जिन-शास्त्र-श्रवणं स्व-कर्ण-विवरक्के श्री जिन-स्तोत्रमा- ।
नन पद्मक्के चिदात्म-भावने मनक्कं पात्र-दानं-कर- ।
क्के निजालङ्कृतियागे पद्मण-महा-मन्त्रीशनेम् धन्यनो ॥
येनेगी-भूप-कृपावलोकनदिनेन्नी-पोष्य-वर्गक्के तक्क् ।
अनितुण्टी-धन-धान्य-सम्पदमदी साल्वेन्द्रनोल्देन्तु को- ।
ट्टनितुं ग्राममनेन्तु धर्म्ममेनगा-चन्द्रार्क्कमप्पन्तु माळ्प् ।
इनिदोन्दे-कडे गण्ड-कजमेनितुं निश्चयिसिदं चित्तदोळ् ॥
जिन-चैत्यावासमं माडिसि समुचित-सालादियिं कूडे पार्श्वे-
सन बिम्ब-स्थापनं गेय्दनुदिनमेसेयल् नित्य-पूजाभिधानम् ।
मुनि-दानं तप्पदोळियन्दोगेयकेरेयोळप्पन्ते तां कोट्ट शा- ।
सनमं तच्छासन-प्रान्तदोळे बरेसिदं पद्मणांक-प्रधानम् ॥
शकाब्दे कालयुक्ते नरभट-गणिते १४२० चैत्र-शुक्लाष्टमी-सत्-
पुष्यर्क्षे जीववारे गजरिपु-करणे शूल-योगे मनोज्ञे ।
निर्द्दोषे मीन-लग्ने सु-रुचिरमकरोत् पार्श्वनाथ-प्रतिष्ठाम् ।
श्री-पद्मोद्भासि-पद्माकर-पुर-वसतौ पद्मनाभ-प्रधानः ॥

पल-कालं नित्य-पूजा-विधिगे मेषव तोण्टङ्गळं ग्राणमं तान् ।
ओलविं नन्दादि-दीप्ति-प्रमुख-सकल-दीपक्के नैमित्तिकक्कम् ।
स्थलमीयाष्टाह्निकादि-प्रमुख-तिथिगमीयापणं पात्र-दानम् ।
नेलेयप्पन्तावगं बेप्पडिसि बरसिदं वृत्ति यं **पद्मनाभम्** ॥
कं ॥ अपरिमितमुचितमेग्गीय्- ।
उपकरणङ्गळने कोट्टु वैदिक-लौकिक- ।
निपुणनं ई अद्मण-सचिवं ।
सुपरीक्षितमागि बरसिदं शासनमम् ॥
पद्मं विनमित-जिन-पद- ।
पद्मं सज्जनरोळेसेव विगत-च्छद्मम् ।
पद्मा-प्रिय-कर-गुण-गण- ।
सद्मं नित्य-प्रसन्न-निज-मुख-पद्मम् ॥

[पार्श्व जिनेन्द्रका पूजक, पण्डिताचार्य्यका शिष्य, नागाम्ब और ब्रह्मका पुत्र, पद्माका पति तथा मल्लिकाका प्रिय,—साल्वेन्द्रका कृपापात्र, मुख्य मन्त्री पद्म था। उसकी जैन भक्तिका वर्णन। उसने एक जिन चैत्यालय बनवाया था, उसमें पार्श्वनाथ भगवान्की स्थापना कर दैनिक पूजा और मुनियोंके आहार दानके लिये प्रबन्ध किया था। (उक्त मितिको), मंत्री पद्मनाभने पद्माकरपुरमें पार्श्व-नाथकी स्थापना की, और इसमेंसे (उक्त) विभिन्न कार्योंके लिये अलग-अलग हिस्से निकाल दिये, और एक शासन लिख दिया। पद्मकी प्रशंसा।]

[EC, VIII, Sagar tl., No. 163. part II.]

६५६

शत्रुञ्जय;—प्राकृत।

सं० १५···(······ई०)

यह लेख श्वेताम्बर सम्प्रदाय का है।

[G. Buhler, EI, II, No. VI, No. 117 (p. 86), a.]

६६०

पर्वत आबू;—संस्कृत ।

[सं० १५६१ = १५०१ ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

[Asiat. Res., XVI, p. 298, No. XII, a.]

६६१

श्रवणबेल्गोला;—कन्नड़ ।

[शक १४३२ = १५१० ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

६६२

बहादुरपुर (जिला अलवर);—संस्कृत

[सं० १५७३ = १५१६ ई०]

(श्वेताम्बर लेख ।)

[A. Cunningham, Reports, XX, p. 119-120]

६६३

मलेयूर;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक सं० १४४० = १५१८ ई०]

पहला लेख

[उसी पहाड़ीपर, दोणेके उत्तर और बलि-कल्लुके दक्षिण एक चट्टानपर]

श्री ॥ **शाके**ऽत्रे **व्योम-पाथोनिधि-गति-शशि-संख्येश्वरे श्रावणे सत्-कृष्णे पक्षे**ऽत्र **तद्द्वादश-तिथि-युत-सत्-काव्य-वारे गुरोर्मे । आद्यक्षौ कन्यकायां यतिपति-मुनिचन्द्रार्य्य-वर्य्याग्रशिष्यो** लेभे चेतः-कृतार्हत्पदयुग-**मुनिचन्द्रार्य्य**-वर्यस्समाधिम् ॥

तच्छिष्य-**वृषभदास-वर्ण्णिना** लिखितं पद्यमिदं **विद्यानन्दोपाध्यायेन** कृतम् । श्री ।

[यतिपति-मुनिचन्द्रार्य्यके मुख्य शिष्यने मुनिचन्द्रार्यके लिये समाधि बनाई।[1] यह श्लोक उनके शिष्य वृषभदासने लिखा और इसको बनानेवाले थे विद्यानन्दोपाध्याय ।]

दूसरा लेख

[उसी पहाड़ीपर, सेनगण निषधिकी उत्तर-पूर्वकी चट्टानपर]

कालोग्र-गणद **मुनिचन्द्र-देवर** पाद अवर शिष्य **आदिदास** बरसिद

[कोल्लारगणके मुनिचन्द्र-देवके चरणचिह्न उनके शिष्य आदिदासके द्वारा स्थापित किये गये थे ।]

तीसरा लेख

[उसी पहाड़ीपर, मुनिचन्द्र-निषधिके एक पाषाणपर]

ईश्वर-संवत्सरद श्रावण-बहुल श्री-मूलसंघ-कोलाग्र-गणद **मुनिचन्द्र-देव**रिगे निषिधि ··· ··· अवर पादवन्नु अवर शिष्य **आदिदास** ··· **आवियण्ण**गळु माडिसिदरु श्री श्री श्री

श्रीमूलसंघ और कोलाग्र-गणके **मुनिचन्द्र देव**का स्मारक । उनके चरण-चिह्नोंकी स्थापना उनके शिष्य आदिदासने की थी । (यह कार्य) आवियण्णके द्वारा संपन्न किया गया था ।]

[EC,IV, Chamrajnagar tl., no 147, 148 and 161]

---

१ इस श्लोक का उपर्युक्त अर्थ गलत मालूम होता है । श्लोकार्थ से तो समाधि लेनेवाले स्वयं मुनि चन्द्रार्यके प्रधान शिष्य थे, न कि प्रधान शिष्य ने मुनि चन्द्रार्य के लिये समाधि बनायी । 'समाधि लेने'का अर्थ होता है 'समाधिको प्राप्त हुआ' न कि 'समाधि बनाई' । इसका कर्त्ता भी 'अग्रशिष्यो है।

६६७

कल्लबस्ति;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक १४५२=१५३० ई०]

[कल्लुबस्ति (बगुञ्जी परगना) में, कल्लु-बस्तिके सामनेके एक पाषाणपर]

श्री गणाधिपतये नमः ।

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
श्रीमानादि-वराहोऽयं श्रियं दिशतु भूयसीम् ।
गाढ़मालिङ्गिता येन मेदिनी मोदते सदा ॥
नमस्तुङ्ग इत्यादि ॥

स्वस्ति श्री **जयाभ्युदय-शालिवाहन-शक-वरुष १४५२ सन्द वर्त्तमान । विकृतु-संवत्सरद** । **चैत्र-शुद्ध १० बुधवारद**लु श्रीमतु अरि-राय-गण्डर दावणि **बोम्मल-देवि**यर कुमार श्री-**वीर भैररस वोडेयरु** । **कारकळ**द सिंहासनदल्लि सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं प्रतिपालिसुत्तिह कालदलि । अवर तङ्गि **काळल-देवियरु** । **बगुञ्जिय सीमे**यनु स्व-धर्मदलु प्रतिपालिसुत्तिह कालदलु तम्म कुल-स्वामि **कल्ल-बस्ति**य पार्श्व-तीर्त्थंकररिगे नित्य-धर्म्मक्के बिट्ट भूमिय क्रमवेन्तेन्दरे । तावु तम्म कुमारति **रामा-देवि**-यरु । कालव माडिदलि । अवर हेसरलि । माडिद धर्म्म (यहाँ दानकी विस्तृत चर्चा आती है) मंगल महा श्री-**बोम्मरस** बिट्ट हळि ··· यी-भूमियनु नावु नम्म बगुञ्जिय सीमेय पूर्व्व-प्रधानिगळु महाजनङ्गळु हलरु नाड़ु कोलबिळियरु मुन्तादवर् समस्तरु साक्षियल्लि स-हिरण्योदक-दान-धारा-पूर्व्वकवागि धारेय-नेरदु कोट्टेवु आ-चन्द्रार्क-स्तिरवागि कोट्टेवु । **इदगोल बोणिय** गदेय कल्ल-बस्तिय देवर अमृतपडिगे पूर्वदल्लि बिट्ट दा नम्म क ··· कालव दल्लि बिट्ट भूमि रव ६ उभय बीजवरि रव ११ ··· ··· भूमियनु देवरिगे बिट्टेवु इदके राजिक ··· ··· बरसिद कल्ल-शासन (हमेशाके अन्तिम श्लोक)

अनुगच्छन्ति ये ··· ··· तुकं कौतुकान्वितम् ।
पदे पदे क्रतु-फलं लभते नात्र संशयः ॥

[जिस समय बोम्मल-देवीके पुत्र वीर-भैररस-वोडेयर कारकलकी गद्दीपर थे : और उनकी छोटी बहिन काळल-देवी बगुञ्जि-ओबेकी रक्षा कर रही थी;— उसने अपने कुल-देवता कल्ल-बस्तिके पारिश्व (पार्श्व)-तीर्थङ्करको दैनिक पूजाके लिये दान दिया । और जब उसकी पुत्री रामा देवी मर गई तब उसने अग्र-लिखित पुण्य-दान किया :—प्रतिदिन चावलकी २ अञ्जलि देना, पहिले मिले हुए ४० खमें भट्टके १५ ख और मिलाकर कुल ५५ ख; २ हमेशा जलनेके लिये दिये, और वार्षिक २४ ग धातुमें;—साथियोंके सामने (उक्त) भूमिका दान दिया । पाषाणका शासन उसीने उत्कीर्ण करवाया ।]

[Ec, VII, Koppa tl. No .47.]

६६५-६६६

शत्रुंजय—प्राकृत ।

[संवत् १५८७ और शक सं० १४५३ = १५३० ई०]

ये दोनों लेख श्वेताम्बर सम्प्रदायके हैं ।

[G. Buhler, EI. II, No. VI, No. I (P. 42–47), t.]

६६७

हुम्मच—कन्नड ।

[बिना काल-निर्देशका, पर लगभग १५३० ई० का (लू० राइस) ।]

[पद्मावती मन्दिरके प्राङ्गणमें एक पाषाण पर]

विद्यानन्द-स्वामिय ।
द्वीपन्यास-त्राणि घरेयोळ्गेन्दुम

मायद्वादि-गजेन्द्रर ।
भेद्योद्धुर-सिंह-कीर्त्तियन्तेवोलेसेगुम् ॥
स्थितियोळ् **विद्यानन्द-** ।
व्रतिपति-मुख्य-बात-वाणि विबुधर मनदोळ् ।
सततं रञ्जिसुतिर्क्कुम् ।
व्रति-विरहित-कान्त-रचित-माष्यद तेरदिम् ॥
विद्यानन्द-स्वाम्यन- ।
वद्योपन्यास-मुद्रे कविगळ मनदोळ् ।
सद्यं सुखकर **वाणन** ।
गद्यात्मक-काव्यदन्ते रञ्जिसि तोर्क्कुम् ॥
श्री-**नञ्जरायपट्टण**द् ।
आ-नरपति-**नञ्ज-देव**-भूपन सभेयोळ् ।
आ-**नन्दन-मल्लि-भट्टो**- ।
दानमनुषे किडिसि मेषद **विद्यानन्द** ॥
श्रीरङ्ग-नगरकार्य्यन ।
पेरङ्गिय मतमनळिदु विद्वत्-सभेयोळ् ।
शारदेयं वस-माडिये ।
धारिणिगभिवन्द्यनादे **विद्यानन्दा** ॥
श्री-**सान्तवेन्द्र**-राजन ।
केसरि-विक्रमन वङ्गुरस्थानदोळिन्त् ।
ई-साहित्यमनुर्व्वरे ।
गोसिसुवन्तुसुर्दे वादि-**विद्यानन्दा** ॥
श्री-**साल्व-मल्लि रायन** ।
पूसरगेणेयेनिसि तोर्प्प **वाणन** सभेयोळ् ।
सासनदोळधिकरादर ।

बासेयनु मनिसिदे वादि-**विद्यानन्दा** ॥
अर्ण्णव-वेष्टित-वसुधा- ।
कर्ण्णोपम-गुरु-नृपालनास्थानदोळेम् ।
कर्ण्णाट-दत्त-कृतियम् ।
वर्ण्णिसि बस बददे वादि-**विद्यानन्दा** ॥
वासव-समान-भाग्य- ।
श्री-**साळुव-देव-राय**नास्थानिकेयोळ् ।
पुसियेन्दाखिळ-वायुरु- ।
शासनमं गेल्दु मेच्चिदे **विद्यानन्दा** ॥
नागरी-राज्यद राजर ।
••• लेनिसुव सभेगळल्लि विबुध-व्रातक् ।
अगणित-वाक्यामृतमं ।
सोगसिन्दीण्टिसिदे वादि-**विद्यानन्दा** ॥
कळशोद्भव-सम-शौर्य्यन ।
बिळिगेय नरसिंह-भूपनास्थानिकेयोळ् ।
बेळगिदे जिन-दर्शनमम् ।
नाळिनाम्बक-सूनु-वैरि **विद्यानन्दा** ॥
कारकळ-नगरदाण्मन ।
भैरव-भूपाल-मोळियास्थानदोळेम् ।
सारतर-जैन धर्म्मन् ।
ओरन्तिरे बेळगि मेषदे **विद्यानन्दा** ॥
बिदिरेय भव्य-जनङ्गळ ।
विदमल-चारित्र-भूष्य-हृदयर सभेयोळ् ।
पडे सिद्धान्तित-मतमम् ।
मुडदिं प्रकटिसिदे वादि-**विद्यानन्दा** ॥
नरपति-मणि-मुक्ताञ्चित- ।

नरसिंह-कुमार-**कृष्ण-रायन** समेयोळ् ।
पर-मत-वादि-वृन्दमन् ।
ओरसिदे वाग्बलदे वादि-**विद्यानन्दा** ॥
कोपण-मोदलाद-तीर्त्थदोळ् ।
अपरिमित-द्रव्यदिं देहाशा-विधियिम् ।
स्वपवर्गद फलकागिये ।
विपुलोदय माडि मेषदे **विद्यानन्दा** ॥
बेळगुळद गुम्मटेशन ।
चळन-द्वयदल्लि जैन-संघक्के महा- ।
कळ मुददे वसन-भूषण- ।
कळधौतद मळेय कर्षदे **विद्यानन्दा** ॥
श्री-**गेरसोप्पे**योळगण ।
योगागम-वाद-सक्त-मुनिगळ गणमम् ।
रागदे पालिप कज्जकि- ।
दी-गुरु-कणियन्ते मेषदे **विद्यानन्दा** ॥

वृ ॥ वीर-श्री-वर-**देव-राज**-कृत-सत्-कल्याण-पूजोत्सवो

विद्यानन्द-महोदयैक-निलयः श्री-**सालि-राजा**र्चितः ।
पद्मा-नन्दन-**कृष्ण-देव**-विनुतः श्री-वर्द्धमानो जिनः
पायात् **साळुव-कृष्ण-देव**-नृपतिं श्रीशोऽर्द्धनारीश्वरः ॥
श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥
वर्द्धमानो जिनो जीयात् गौतमादि-मुनि-स्तुतः ।
सुत्रामार्च्चित-पादाब्जः परमार्हन्त्य-वैभवः ॥
स चतुर्दश-पूर्व्वेशो **भद्रबाहु**र्ज्जयत्यरम् ।
दश-पूर्व्व-धराधीश-विशाख-प्रमुखार्च्चितः ॥

तत्त्वार्थसूत्र-कर्त्तारमुमास्वाति-मुनीश्वरम् ।
श्रुतकेवलि-देशीयं वन्देऽहं गुण-मन्दिरम् ॥
श्री-कुन्दकुन्दान्वय-नन्दि-संघे
योगीश-राज्येन मतां ··· ··· ।
जाता महान्तो जित-वादि-पक्षाः
चारित्र-वेषा गुण-रत्न-भूषाः ॥
सिद्धान्तकीर्त्तिर्जिनदत्तराय-
प्रणूत-पादो जयतीद्ध-योगः ।
सिद्धान्त-वादी जिन-वादि-वन्द्यः
पद्मावती-मन्त्र ··· ती-कृतेज्यः ॥
जीयात् **समन्तभद्र**स्य देवागमन-संज्ञिनः
स्तोत्रस्य भाष्यं कृतवा**नकलङ्को** महर्द्धिकः ॥
अलञ्चकार यस्सर्वमाप्तमीमांसितं मतम् ।
स्वामि-विद्यादिनन्दाय नमस्तस्मै महात्मने ॥
यः प्रमाता पवित्राणां ··· ··· ··· ··· ।
विद्यानन्द-स्वामिनश्च **विद्यानन्द**-महोदयम् ॥
विद्यानन्द-स्वामी
विरचितवान् श्लोकवार्त्तिकालङ्कारम् ।
जयति कवि-विबुध-तार्किक-
चूडामणिरमल-गुण-निलयः ॥
माणिक्यनन्दी जिनराज-वाणी-
प्राणाधिनाथः पर-वादि-मर्द्दी ।
चित्रं **प्रभाचन्द्र** इह क्षमायम्
मार्त्तण्ड-वृद्धौ नितरां व्यदीपित् ॥
सुखी ··· **न्यायकुमुद चन्द्रो**दय-कृते नमः ।
शाकटायन-कृत्सूत्र-न्यास-कर्त्रे व्रतीन्दवे ॥

न्यासं जिनेन्द्र-संज्ञं सकल-बुध-नुतं पाणिनीयस्य भूयो-
न्यासं शब्दावतारं मनुज-तति-हितं वैद्य-शास्त्रं च कृत्वा ।
यस्तत्त्वार्थस्य टीकां व्यरचयदिह तां भात्यसौ **पूज्यपाद-**
स्वामी भूपाल-वन्द्यः स्वपर-हित-वचः पूर्ण-दृग्-बोध-वृत्तः ॥
वर्द्धमान-मुनीन्द्रस्य विद्या-मन्त्र-प्रभावतः ।
शार्दूलं स्व-वशीकृत्य **होय्सळो**ऽपालयद्धराम् ॥
होय्सळान्वय-भूपानां वृत्त-विद्या-प्रदायिनः ।
श्री-वर्द्धमान-योगीन्द्र-मुखास्ते गुरवोऽभवन् ॥
वासुपूज्य-व्रती भाति भव्य-सेव्यो गुणान्वितः ।
सिद्धान्त-वार्द्धि-शीतांशुः ··· रित्राधार-विग्रहः ॥
रिपु-वर्द्धन-**बल्लाळ-राय**-वन्द्य-क्रमाम्बुजः ।
अनेकान्त-नयोद्भासी **श्रीपालो** राजते सुखी ॥
भूभृत्पादानुवर्त्ती सन् राज-सेवा-पराङ्मुखः ।
संयतोऽपि च मोक्षार्थी ··· ··· **पात्रकेसरी** ॥
त्रिलोकसार-प्रमुख ··· ···
··· ··· ··· भुवि **नेमिचन्द्रः** ।
विभाति सैद्धान्तिक-सार्व्वभौमः
चामुण्ड-रायार्च्चित-पाद पद्मः ॥
रेजे **माघवचन्द्रो**ऽसौ निराकृत-मधूत्सवः ।
चैत्याश्रयी शुचि-रतिस्सदा श्रावण-तत्परः ॥
जीया**दभयचन्द्रो**ऽसौ मुनिस्सिद्धान्त-वेदिनाम् ।
चरमः **केशवार्य्येण** ··· ··· सत्य-पाणाश्रयः ॥
··· ··· ··· स-राज-सूर्यो
दया-परः श्री- **जयकीर्त्ति-देवः** ।
विराजते शास्त्र-विदां वरेण्यः
सः···रमालिङ्गित-रम्य-गात्रः ॥

... ... शासन-श्रीमन् ... ... सेन इवानघो ।
राजते **जिनचन्द्रार्य्य** ... ... यः ॥
आचार्य्य-वर्य्य ... ... विभाति विजिते ... .. ।
इन्द्रनन्दी जिनेन्द्रोक्तसंहिता-शास्त्र विद्-वरः ॥
वसन्तकीर्त्तिर्वन-देश-वासी
विशालकीर्त्तिश्शुभकीर्त्ति-देवः ।
श्री-**पद्मनन्दी मुनि-माघनन्दी** ॥
जटा-प्रसिद्धामल-**सिंहनन्दी** ॥
व्यतिभाते गुणाधीशो धीमान् **चन्द्रप्रभो मुनिः** ।
वसुनन्दी माघचन्द्रो वीरनन्दी धनञ्जयः ।
वादिराजो धराधीश-वन्दितांघ्रि-सरोरुहः ॥
षट्-तर्क-वादि-जनताभय-दान-दक्षः
साहित्य-नन्दन-वनालि-विकासि-चैत्रः ।
श्री-**धर्म्मभूषण**-गुरुर्म्मुनिराज-सेव्यो
भट्टारको जयति सत्कविता-कलेन्दुः ॥
राजाधिराज-परमेश्वर-**देव-राय**-
भूपाल-मौळि-लसदङ्घ्रि-सरोज-युग्मः ।
श्री-वर्द्धमान-मुनि-वल्लभ-मौरव-मुख्यः
श्री**धर्म्मभूषण**-सुखी जयति क्षमाढ्यः ॥
विद्यानन्द-स्वामिनस्सूनु-वर्य्यस्
सञ्जातस्ते **सिंहकीर्त्ति-यतीन्द्रः** ।
ख्यातश्श्रीमान् पूर्ण्ण-चारित्र-गात्रो
दान-स्वर्भू-धेनु-मन्दार-देश्यः ॥
श्वेत-वर्ण्णाकुलो भूमौ सर्व्वदा मरुदावृतः ।
सुदर्शनो **मेरुनन्दी** राजहंस-परिष्कृतः ॥
वर्द्धमानः प्रभाचन्द्रोऽमरकीर्त्तिर्गुणाकरः ।

विशालकीर्त्तिश्री-**नेमिचन्द्र**स्सिद्ध-गुणा इव ।
बाभात्य**स्वपते**र्द्दिने तत-नयो **बङ्गाळ्य**-देशावृत-
श्रीमद्-**दिल्लि**-पुरेड्-**महम्मुद**-**सुरित्राण**स्य माराकृतेः ।
निर्जित्याशु सभावनौ जिन-गुरुर्बौद्धादि-वादि-व्रजम्
श्री-**भट्टारक**-**सिंहकीर्त्ति**-**मुनि**-**रा** ··· द्यैक-विद्या-गुरुः ॥
विशालकीर्त्तिर्व्वादीन्द्रः परमागम-कोविदः ।
भट्टारको **बलात्कार-गणा**धीशो महा-तपः ॥
सिकन्दर-**सुरित्राण**-प्राप्त-सत्कारवैभवः ।
महा-वाद-जयोद्भूत-यशो-भूषित-विष्टपः ॥
श्री-**विरूपाक्ष**-**राय**स्य श्री-**विद्यानगरे**शिनः ।
सभायां वादि-सन्दोहं निर्ज्जित्य जय-पत्रकम् ॥
स्वीकृत्य च महा-प्रज्ञा-बलेन बुध-भू भुजैः ।
मतं सरस्वती-मूल-शासनं वा सदोज्वळम् ॥
देवप्प दण्डनाथस्य नगरे श्रीमदारगे ।
प्रकाशित-महा-जैन-धर्म्मोऽभूद् भूसुरार्च्चितः ॥
विशालकीर्त्तिश्री-**विद्यानन्द**-**स्वामी**ति शब्दितः ।
अभवत् तनयस् **साळ्व**-**मल्लिराय**-नृपार्च्चितः ॥
आगम-त्रय-सर्व्वज्ञः कवित्व-गुण-भूषितः ।
नानोपन्यास-कुशलो वादि-मेघ-महा-मरुत् ॥
स्वामि-विद्यादिनन्दस्य भारती भाललोचनः ।
सूनु**र्देवेन्द्रकीर्त्या**ख्यो जातो भट्टारकाग्रणीः ॥
श्रीमद्देवेन्द्रकीर्ति-व्रति-पद-नख-रुग्-मञ्जरी मंगलं मे
भूयात् तत्पादपार्श्वे मम नुति-विनमन्मस्तके मल्लिकाभा ।
नेत्रे कर्प्पूर-पा ··· वदन-सरसिजे स्फार-पीयूष-धारा
कण्ठे मुक्ता-कलापस्त्ववयव-निकरे चन्द्र-युक्-चन्दन-श्रीः ॥
आनन्दबाष्प-सलिलैरपि भावयित्वा

भाल-स्थली-विरचिताञ्जलि कुट्मलेन ।
देवेन्द्रकीर्त्ति-चरणे मुखमर्प्पयामि
कामातुरः कुच-भरे स यथा तरुण्याः ॥
यत्पादाब्ज-नखेन्दु-कान्ति-लहरी-स्थानं जगत्पावनम्
यत्पादाब्जरजो-विलेपनमहो संसार-सन्ताप-हृत् ।
यत् कारुण्य-कटाक्ष-वीक्षणमपि क्षीरोद-पट्टाम्बरम्
यत् प्रेम् ··· सुधाशनं भव-भवे सोऽस्तु प्रियो मे गुरुः ॥
श्रीमान् देवेन्द्रकीर्त्तिर्य्यति-पति-मुकुरो मन्त्र-वादीभ-सिंहः
साहित्याम्भोधि-सूर्य्यो विमलतरतपः-श्री-समालिङ्गिताङ्गः ।
विद्यानन्दार्य्य-सूनुः कवि-विबुध-महा-पारिजातो विभाति
प्रायो भूताचलेन्द्रः पर-हित-चरितः शारदा-कर्णपूरः ॥
श्री-कृष्ण-राय-सहजाच्युत-राय-मौलि-
विन्यस्त-पाद-कमलः कमनीय-मूर्त्तिः ।
देवेन्द्रकीर्त्ति-मुनिराड् जयति प्रसिद्धः
स्याद्वाद-शास्त्र-मकराकर-शीतरोचिः ॥
श्रीमद्देवेन्द्रकीर्त्ति-व्रतिप जिन-मताम्भोजिनी-भासि-भानो
सद्विद्या-नाथ-पाथोनिधि-विशद-शरत् ··· र-पीयूषभानो ।
एनो-बन्धासिधेनो मयि कुरु करुणां वाक्-सुधा-कामधेनो
विद्यानन्दार्य्य-सूनो गुण-मणि-विलसद्-रोहणाद्रीन्द्र-सानो ॥
वादावसान-विनमद्-वर-वादि-वक्त्र-
कञ्जात-जात-मुदिताश्रुज-बिन्दु-वृन्दैः ।
मुक्ताफलैरिव मुहुः परिपूज्यमानम्
देवेन्द्रकीर्त्ति-चरणं शरणं प्रजामि ॥
सन्मार्गासक्त-चित्तं कुवलय-वनितामोद-सद्-वृद्धि-हेतुम्
सद्-वृत्तं चारु-श्रीयोज्वल-विबुध-नुतं सत्-कलानामधीशम् ।
क्षोणीभृत्-तुङ्ग-मौलि-प्रणिहित-विलसत्-पादमुच्चैरजस्रम्

विद्यानन्द-यतीन्द्रामृतकरमवतु श्री-पतिर्व्वर्द्धमानः ॥
वादि-प्रोद्दाम-वाचा-तिमिर-समुदय-प्रोच्चलद्-बाल-भानुस्
त्रैलोक्याखर्व्व-गर्व्व-स्मर-विपिन-महा-दीप्र-तेजः-कृशानुः ।
शास्त्राम्भोराशि-तारारमण-सदृश-देवेन्द्रकीर्त्यार्य्य-भानुर्
व्विद्यानन्दार्य्य-वर्य्यो जगति विजयते धर्म्म-भूमीध्र-सानुः ॥
साकारो वा भाति सौजन्य-राशिस्-
सन्देशो वा मर्त्य-वेषस्समिन्धे ।
सञ्चारी वा सर्व्व-शास्त्र-प्रपञ्चः
विद्यानन्द-स्वामि-वर्य्यो विभाति ॥
का सर्व्वं विशदीकरोति विनतापत्यं भवेत् किं हरेः
भुंक्ते पूत-हविश्च कः खग-मृगादीनां च को वाश्रयः ।
क्वास्ते देव-ततिः प्रथा क्व नु कुतस्सन्तो भजन्ते मुदम्
विद्यानन्द-मुनावनङ्ग-विजयिन्युद्दीव्यमाणे सति ॥
वित्यानं दमुनाः वनं गवि जयिनि ॥
देवेन्द्रकीर्त्तिर्जिन-पूजनेषु
विशालकीर्त्तिर्व्विबुधाधिपेषु ।
विश्वावनी-वल्लभ-पूज्य-पादो
विद्यादिनन्दो जयताद् धरित्र्याम् ॥
विद्यानन्द-स्वामि-शास्त्रोपमार्थै
शेषश्शम्भुं सेवते हार-भावात् ।
प्रायो लक्ष्म्यालिङ्गितांसं पुमान्सम्
पर्य्यङ्कत्वं प्राप्य साक्षादुपास्ते ॥
व्याचिख्यासति वैदुषी-भर-लसद्-व्याख्यान-कोलाहले
विद्यानन्द-मुनौ सभासु विदुषां कान्यस्य सूरेः कथा ।
खद्योति किमुदेति कान्तिरुदिते राका-सुधाधामनि
प्रौढे भास्वति भासि भाति ... दैवी कथं दीधितिः ॥

वीर-श्री-वर-**देव-राय**-नृपतेस्सद्-भागिनेयेन वै
पद्माम्बा ··· गर्ब्भ-वार्द्धि-विधुना राजेन्द्र-वन्द्याङ्घ्रिणा ।
श्रीमत्-**साळुव-कृष्ण-देव**-धरणीकान्तेन भक्त्यार्च्चितो
विद्यानन्द-मुनीश्वरो विजयते स्याद्वाद-विद्या-फलः ॥
श्रीम**द्विद्यानन्द-स्वामिन**ममराचलं मन्ये ।
द्विज-विबुध-कवि-गुरूणां सन्दोहस्सेवतेऽन्यथा कथं भुवने ॥
किं वाणी चतुराननः किमथवा वाचस्पतिः किन्वसौ
विद्यानां विभवस् सहस्रवदनः साक्षादनन्तः किमु ।
इत्थं संसदि साधवस्समुदितास्संशेरते सादरम्
विद्यानन्द-मुनौ बुधेशभवन-व्याख्यानमातन्वति ॥
यो विद्यानगरी-धुरीण-विजय-श्री-**कृष्ण राय**-प्रभार्
आस्थाने विदुषां गणं समजयत् पञ्चाननो वा गजम् ।
सद्-वाग्भिर्नखरैरुदात्त-विमल-ज्ञानाय तस्मै नमो
विद्यानन्द-मुनीश्वराय जगति प्रख्यात-सत्-कीर्त्तये ॥
विद्यानन्द-स्वामिनोऽभूत् सधर्म्मा
विख्यातोऽयं **नेमिचन्द्रो मुनीन्द्रः** ।
भूत-व्राताम्भोज-वैकासकारो
[···] शास्त्राम्भोराशि-संवृद्धिकारी ॥
पोम्बुर्च्च-पार्श्वनाथस्य वसतिं श्री-त्रि-भूमिकाम् ।
कृत्वा प्रतिष्ठां महतीं सन्तनोति स्म भक्तितः ॥
विद्यानन्द-स्वामिनः पुण्य-मूर्त्तेः
जीयात् सूनुश्श्री-**विशालादिकीर्त्तिः** ।
विद्वद्वन्द्यः सर्व्व-शास्त्रावतारो
माद्यद्-वादीभेन्द्र-संघात-सिंहः ॥
वादि-**विशालकीर्त्ति**-मुनि-राड् विबुध-स्तुत-सद्-गुणोदयः
क्ष्माधिप-संसदप्रतिम-वाक्य-निराकृत-सूरि-सन्ततिः ।

स्यात्पद्-लाञ्छनान्वित-जिनागम-भावन-पूत-मानसो
भाति नृपाल-पूजित-पदः स-दयो जित-पुष्पसायकः ॥
जीयाद्**अमरकीर्त्या**ख्य-भट्टारक-शिरोमणिः ।
विशालकीर्त्ति योगीन्द्र-सधर्म्मा शास्त्र-कोविदः ॥
विशालकीर्त्तियोगीन्द्र-भट्टोदय-महीभृतः ।
देवेन्द्रकीर्त्ति-मुनि-राड् बालार्क्क इव भासते ॥
श्री-भैरवेन्द्र-वंशाब्धि-राज-**पाण्ड्य**-नृपार्च्चितः ।
जीयाद् देवेन्द्रकीर्त्यर्य्यो **विद्यानन्द**-महोदयः ॥
देवेन्द्रकीर्त्तिस्सिद्धान्तार्थस् तद्वाणी प्रियकारिणी ।
धीमांस्तदुदितो वर्ण्णी वर्द्धमानो न किं भवेत् ॥
निर्भ्भेग्नात्म-निबन्धनस्स-करुणो निर्व्वाण-वाञ्छान्वितो
बाह्यात्थार्गमाभिलाष-रहितो दूरीकृतोत्कल्पनः ।
स्व-च्छन्द-स्व ··· ··· ना भद्राङ्ग-लक्ष्म्या परम्
क्षित्यां मत्त-महा-करीव जयति श्री-**वर्द्धमानो मुनिः** ॥
ख्यात-श्री-वर्द्धमानोऽभूद् वीत-संसार-विभ्रमः ।
ज्ञातानुयोग-शास्त्रार्थो जातरूपा··· ··· स्वरः ॥
यति ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· दन ।
नूत-सद्-गुण-सन्तान-पूत-चिद्-भावना-मतिः ॥
जयति भुजबल-श्रीरार्य्य ··· सञ्चयस्य
जिन-पति-मत-बुद्धिः स्वर्ग्ग-मोक्षैक-सिद्धिः ।
जन-हित-मित-वाणी-लुप्त-कन्दर्प-बाणी
नव-तपन ··· ··· ··· ··· ··· ··· ॥
··· **[दे]वेन्द्रकीर्त्ति**-योगीन्द्र **विद्यानन्द**-महोदय ।
वर्द्धमान-बुधाराध्य भूयो भूयो नमोऽस्तु ते ॥
सत्पुत्रो-जननीं निदाघ-तृषितः शैत्यं जलं कामिनी
कान्तं वारवधूः धनं यतिपतिः ··· ···यितं चातकः ।

मेघं भूरमणो जयं युधि यथा ध्यायत्यघस्तं तथा
विद्यानन्द-मुनीश्वरस्य चरणाम्भोजं मदीयं मनः ॥
वन्दे पद्मावतीं देवीं धारिणीन्द्र-मनः-प्रियाम् ।
श्री-सिन्धु ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ॥
देवेन्द्रकीर्त्ति-मुनिराज-तनूभवेन
श्री-**वर्द्धमान-मुनिना** गदितानि भान्ति ।
पद्यानि सद्-गुण-युतानि महोज्वलानि
विद्वत्-कवीन्द्र-गल-कर्ण्ण-विभूषणानि ॥
··· ··· दया धर्म्मस्तावत् सद्-धर्म-शासन ।
श्रीरस्तु जगतां राजा धरां न्यायेन रक्षतु ॥
भान्तु षड्-दर्शनान्यु ··· ··· ··· ··· ॥
(वही अन्तिम श्लोक) ।
वर्द्धमान-मुनीन्द्रेण विद्य ··· ··· बन्धुना ।
देवेन्द्रकीर्त्ति-महिता लिखिता ··· ··· ··· ॥

[विद्यानन्द-स्वामीकी वाणीके तर्कसे वादि-राजेन्द्र भयभीत रहते हैं । विद्यानन्दि-व्रतिपतिके मुखसे निकली हुई वाणीको विद्वान् लोग भाष्य समझते हैं । उनके तर्ककी प्रशंसा । नञ्जराय पट्टणके राजा नञ्ज-देवकी सभामें उन्होंने नन्दन-मल्लि-भट्टका मुँह बन्द करके अपनेको 'विद्यानन्द' प्रसिद्ध किया । श्रीरङ्गनगरके कार्य्य (प्रवर्द्धक) यूरोपियनके मतको ध्वस्त करके एक विद्वत्परिषद्में उनने शारदा (सरस्वती) को बुलाया था । उन्होंने सातवेन्द्र (या सान्तवेन्द्र) राजके अनुपद्रव दरबारमें दुनियाँ में प्रसार पा जानेवाली एक कविता पढ़ी थी । साल्व-मल्लि-रायकी एक विद्वत्परिषद्में अच्छे वादियोंको परास्त किया । गुरु-नृपालके दरबारमें एक कर्ण्णाटक ग्रन्थका निर्म्माण करके उन्होंने प्रसिद्धि प्राप्त की । साळुव-देव-राय के दरबारमें सब वादियोंके सिद्धान्तोंको मिथ्या सिद्ध करनेमें उन्होंने महती सफलता प्राप्त की थी । नगरी राज्यके राजाओंकी सभाओंमें उन्होंने विद्वानोंको

वृ ॥ समराम्भोराशियोळ् सुत्तुव सुळिगळिवेम्बन्ते नीनेरिदश्वो- ।
त्तमदिन्दं वेडेयङ्गळ् पसरिसे रिपु-राजेन्द्ररेरिर्द्द मत्ते- ।
भ-मद्दा-बाजि-व्रजङ्गळ् पडगुगळवोलद्दल्के नुङ्गुत्तमिक्कुं ।
क्रमदिं त्वत्पादयुग्मं मकर-युगदवोल् **साल्व-मल्ल**-क्षितीश ॥
श्रीमद्-**भैरव**-भूप-मेरुमनिशं ··· सर्व्व-देवालयम्
सद्-गो-मण्डलमाभ्रमत्यपि यं अस्पृष्ट्वा द्विजेशं करैः ।
तन्मन्ये तवक-प्रताप-सवितुः साम्यश्च साद्राम्बरो
नाहं नाथमिति प्रकम्पित-तनुः सत्यापयत्यंशुमान् ॥

अन्ततिप्रसिद्धराद युवराजरेनिसिद इर्व्वरळियन्दिरिं भक्ति-युक्तराद उळिद राज-कुमाररिं दण्डोपनतराद अन्य-मण्डलिकरिन्दोलगिसिकोळ्पट्ट देव-रायं **तुळु-कोङ्कण-हैवे**-मुन्ताद भूमण्डलमं भूमण्डलाखण्डल-नेनिसि आळुत्तमिरेम् ।

आ-पोळलोळ् श्री **देव**-म- ।
हीपाल-सुपालितोरु-तेजोमान्य- ।
व्यापित-राज-श्रेष्ठि र- ।
मा-परिवृढनिर्प्प**लक्कण-श्रेष्ठि**-वरम् ॥
आतन कान्ते शील-गुणवन्ते कला-गुणवन्ते जैन-मार्ग्ग-
आतत चित्ते धर्म्म-पर-वित्ते जन-स्तुत-वृत्ते सत्कुल-
ख्यात सुरूपे सन्मति-कलापे विनिर्गत-कोपे एन्दुधा-
त्री-तळमोप्पे **देवरसिय्यं** पोगुल्गुं गुण-रत्न राशियम् ॥

अवरिर्व्वरन्वयमन्तेन्दोडे ॥ श्रीमद्-राजाधिराजं **बनवसि-पुर**-वराधीश्वरं **कोङ्कुण-हैव** राज्याधीशनप्प चन्द्राऊरद **कदम्ब-कुल**-तिलक **कामि-देव-महाराज**न दण्डाधिनाथ कामेय-दणायकन सु-पुत्र **रामण-हेग्गडे**गं रामकर्गं पुट्टिद अष्ट-पुत्ररोळगे अतिप्रसिद्धनाद **योजन-श्रेष्ठिगे लक्कणनुं रामक्क**नुमेम्ब इर्वरु कुल-वधुगळादरवरोळु लक्कणक्के **रामण-श्रेष्ठियुं** रामकक्के **कल्प-सेट्टि**युमेम्ब तनुजरादर-वरोळ् कूडि ॥

कं ॥ प्रियतमेय दय्वदिन्दं । नयन-द्वयदिन्दे वक्त्रमोप्पुव-तेरदिम् ।
जयदङ्कदाने दन्त- । द्वयदिन्देसेवन्तेयोप्पिदं योजणम् ॥

व ॥ अन्तेनिसिद **योजण-श्रेष्ठी** श्रीम**दनन्तनाथ**न चैत्यालयमं **तेमपुर**दोळ् कट्टिसि अन्तामिक्षदिद्दं कीर्त्ति-पुण्यक्के नेलेयागिद्दुं अन्त्य-कालदोळ् तन्न **राज-श्रेष्ठि** पदवियं तन्न पुत्ररिगोप्पिसि सुर-लोक-प्राप्तनादनित्तलु ॥

कं ॥ **रामण-सेट्टि**य तनुजम् ।
कामनिभं तम्मण.ङ्कनातन तनयम् ।
श्री-महित-नागपङ्कम् ।
भूमीश्वर-मान्यनादनैदे वदान्यम् ॥

व ॥ आ-**नाग-सेट्टि**य कुल-स्त्रियरारेन्दोडे सातमनुं नागमनुमेन्दु यिर्व्वरादरु नगरी-राज्यदोळ् प्रसिद्धमाद कुदुर-पुरदोळ् पुट्टिद सर्व्व-तेजो मान्यदिन्देसेव तोळहळ-बळिय आ-सातम्मगं हट्टिगन-बळिय आ-**नागप्प-श्रेष्टि**गं तोटियण्ण-सेट्टियेम्ब सुपुत्रनादम् ॥ मत्तं नागमनन्वयमेन्तेन्दोडे ॥

कं ॥ यिदु सिरिगे तवर्मनेयेनि- ।
सिद नगरी-सीमेयाद मागोडोळ् पु- ।
ट्टिद दण्डुर्वळिय सोबगिन ।
मोदलेनिसिदनल्ते नरस-नायकनेम्बम् ॥

अन्तेनिसिद नरसण-नायकर्कं तन्न जन्म-स्थानमाद मागोडोळु चैत्यालयमं कट्टिसि श्री-**पार्श्व** तीर्थेश्वररनल्लि प्रतिष्ठेयम् माडिसि चतुर्व्विध-दानक्के यथायोग्यमागि क्षेत्रादिकमम् कोट्टु पुण्यके भाजननादम् ॥ मत्तमातन मोम्मगळु मारक्कनं **हैवे**-राज्यक्के मुख्यवाद **हरियट्टे**य-सीमेगे बन्द अन्तरवळियल्लि हुट्टिद हट्टिगन-बळिय **नेमण-सेट्टि**गे कोडे अवर्गे वुट्टिद नागमनमा-**नेमण-सेट्टि** तन्न सोदरळिय **नागप्प-सेट्टि**गे धारापूर्व्वकं कोडे ॥

वृ ॥ पति-चितानुगुण-प्रवर्त्तनदिनत्याश्चर्य-सौकर्य-सं- ।
युत-शीलोन्नतियि जिनेन्द्र-पद-पूजासक्त-सद्-भक्तियिम् ।

सततोत्साह-सुदानदिं पर-हित-व्यापार-चातुर्य्यदिम् ।
क्षितियोळ् नागमनान्तळुत्तम-यशः-सौभाग्यमं भाग्यमम् ॥

कं ॥ आ-**नागप्प-श्रेष्ठि**गम् ।
आ-नागम्मङ्गे पुट्टिदर् स्सुतरिर्व्वर् ।
भू-नुतम्बणेरम्बी- ।
दानोन्नत-**मल्लि-सेट्टि**येम्बी-पेसरिम् ॥

व ॥अन्ता-**नागप्प-श्रेष्ठि** पुत्र-कळत्र-मित्ररोळ् कूडि सुखदिनिर्द्दम् ॥ (पश्चिम मुख) मत्तमम्बण-श्रेष्ठिय कुल-स्त्रीयरारेन्दोडे मल्ल मनुं देवरसियुमेम्बिर्व्वरोळ् देवरसिय अन्वयमेन्तेन्दोडे ॥ धरेयोल् नेगळ्ते-बडेद पिरि-**योजण-श्रेष्ठीय** पुत्र **रामण-सेट्टि**य सापत्नं **रामकाम्बा**-गर्भाब्धि-चन्द्रनेनिसिद **कल्लप्प-श्रेष्ठि** दानवादि-सत्-कृत्यदि धरणियोळ् प्रसिद्धनादम् ॥

कं ॥ **कल्लप-सेट्टि**य तनुजम् ।
पुल्लशराकार-**योजण-श्रेष्ठि**-वरम् ।
सल्ललित-यशं जिन-पद- ।
पल्लव-कमनीय-भक्ति-लतिकाब्बोगम् ॥

अन्ततिप्रसिद्धिनाद राज-श्रेष्ठियाद योजण-श्रेष्ठिगे तोगरसियोळ् पुट्टिद होलेयबळिगे श्रेष्टनाद देवी-सावन्तन बडहुट्टिद बङ्कन बळिलोळु चैत्यालयमं कट्टिसि धर्म्मं माडि प्रसिद्धनाद बिदरु-नाडिगे मुख्यनाद माबु-गौडन तङ्गि वीरकनेम्ब कन्निके वधुवागे आ-योजन-श्रेष्टि सुखदिनिरुत्तं तन्न पितृ **कल्लप्प-श्रेष्ठि**य नियोगदिं **होम-पुर**-दोळु चैत्यालयमं द्वि-तलमागि कट्टिसि केळगण नेलेयोळु श्री-नेमीश्वरन प्रतिमेयं मेगण नेलेयोळु श्री-**गुम्मटनाथन** प्रतिकृतियं प्रतिष्ठेयं माडिसिद आ- **योजन-श्रेष्ठि**य कीर्त्तिय मूर्त्तियन्ते पुण्यद पुञ्जदन्तिर्द्दी-चैत्यालयमेन्तेन्दोडे ।

वृ ॥ हरि-वंशारिष्टनेमि-स्थिर-निवसनदिन्दूर्ज्जयन्ताद्रियिं भा- ।
स्कर-रत्न-स्पर्श-कूपोन्नतियिननुदिनं रोहणाद्रीन्द्रमं भा- ।

सुर-सौधर्म्मागमर्षि-स्थितियिनमर-शैलेन्द्रमं सत्पताको -।
त्करदिं नाट्याङ्गमं पोल्तेसवुदु भुवन-स्वामि-नेमीश-वासम् ॥
अन्तेसेव चैत्यालयमं कट्टिसि सुखदिनिरुत्तमा-योजण-श्रेष्टि तनगं वीरकंगं पुट्टिद सुतरोळु ।

कं ॥ संगरवनिन्दे किरियळु ।
मंगल-गुणि कल्लपाङ्गनिन्दं पिरियळ- ।
नङ्गन वय-सिरियन्ते म- ।
नङ्गोळिप नतक्कनेम्ब कन्या-रत्नम् ॥

व ॥ आ-कन्निकेयं बट्टकळद सेट्टिकाररोलु मुख्यनेनिसिद संघकोच्चं ··· होळे-योळु चैत्यालयमं कट्टिसि दान-पूजादिगळिन्दति-प्रसिद्धेयाद कञ्चधिकारिय पेण्डाति माळधिकारितिगे पुट्टिद पारिसणधिकारिय तङ्गे गुम्मट-देविगं पुट्टिद **कञ्चण-सेट्टि**गे विवाह-पूर्व्वकं कोडे ।

कं ॥ आ यिर्व्वरिगं पुट्टिद- ।
ळायत-जलजाक्षि देवरसियेम्बळ् ताम् ।
कायज-रायन मोह-स- ।
हायद शक्तियवोलेशेव रूपोन्नतियिम् ॥
आकेयनुजाते मदन-प- ।
ताकेयवोल् जनद मनद कोनेयोल् निमिर्दी- ।
लोके सुते पुट्टिदळ् सी- ।
लोन्नते **मल्लि-देवि**येम्बी-पेसरिम् ॥

आ-(अ) नतक्कमिन्तोप्पुव पेण्-मक्कळिर्व्वरं पडदु अवरिर्व्वरोळ् पिरिय-मगळु देवरसियम् । तनगण्णनागल् वेडिदं **नागप्प-श्रेष्ठिय** मग अम्बुवण-श्रेष्टिगे विवाह-पूर्व्वकं कुडे ।

कं ॥ रतियुं रतिपतियुं श्री-
सतियुं श्रीपतियुमिर्प्प-तेरदिं भोग- ।

स्तितियननुभविसुत्तं बिन- ।
मतदोळति-प्रियरागि सुखदिन्दिर्द्दर् ॥

व ॥ अन्ता-दम्पतिगळिर्व्वरुं सुखदिनिरुतमोन्दानोन्दु-दिवसं वन्दना-भक्तियिं **नेमि-जिन**-चैत्यालयक्के बन्दु ।

वृ ॥ बन-नेत्र-भ्रमरावली-कुसुमितोद्यानं मुनीन्द्रौघ-चि- ।
त्त-नवीनाम्बुरुह-प्रभात-समयं विद्वज्जनस्तोत्र-दि- ।
व्य-नदी-पूर-हिमाचलं निज-महा-सौन्दर्य्यमेन्देम्ब सज्- ।
बनता-संस्तुति निन्नोळेनमर्दुदे श्री-**नेमि**-तीर्त्थेश्वर ॥

एम्बिवु मोदलाद स्तुतियिं **नेमि**-स्वामियं स्तुतियिसि मुनि-वृन्दारकरं बन्दिसि बळियं अभिनव-**समन्तभद्र**-मुनियिं धर्म्ममं केळ्दु मनदे गोण्डु आ-दम्पतिगळिर्व्वरुं तमगे पुण्यार्थवागि तमगे अजनाद **योजण-श्रेष्ठि** कट्टिसिद **नेमीश्वर**न चैत्यालयद मुन्दे मानस्तम्भमं माडिदयेवेन्दु गुरुगळिगे बिन्नविसि तम्म गृहक्के पोगि तम्म बडवुट्टिदराद **कोटण-सेट्टि-मल्लि-सेट्टि**-मुन्ताद बान्धवानुमतदि तम्म वोडेयने-निसिद देव-भूपालङ्गे ई-धम्मगार्य्यवनेचरिसि आ-महाराजननुमतदिं चतुस्संघदनुमतदिम् (उत्तर मुख) शुभ-दिन-दोळ् कांस्यमय-मानस्तम्भमं माडिसि दयेवेन्दु निश्चयिसिप्पंन्नेगम् ।

कं ॥ कमलिनियुं कुमुदिनीयुम् ।
क्रमदिं कासार-लक्ष्मिगुदयिपवोल् श्री- ।
सम-देवरसिगे पुट्टिद- ।
रममेने पद्मरसि देवरसियेन्दिर्व्वर् ॥

अन्तिर्व्वरु-सुतेयरं पडेदु अदे-शुभ-सकुनमादन्ते कांस्यमय-मानस्तम्भमं माडिसि आ-चैत्यालयद मुन्दे प्रतिष्ठेयं माडिसिदरु । आ-(मा) मानस्तम्भक्के

कं ॥ पोन्न-कळसमने माडिसि ।
सन्नुत-पद्मरसि-देवरसि इर्व्वर् तम् ।

उन्नत-मानस्तम्भकेय् ।
उन्नतियागिप्प-तेरदे पदविन्दित्तर् ।।
आ-मानस्तम्भमेन्तेन्दोडे ।।

वृ ।। भरदि जन्माब्धियं दाण्टिसुव वर-महा-धर्म्ममेन्देम्ब पोतक्
उरुकूप-स्तम्भमम्बाङ्कन विशद-यशः-पट्टिका-स्तम्भमेम्बन्त्- ।
इरे मानस्तम्भमा-कूटदोळेसेव चतुर्ज्जैन-बिम्बाङ्घ्रि-पूजा- ।
परिकीर्ण्णास्फार-पुष्पाञ्जलियोलेशेवुदी-व्योम-तारा-कदम्बम् ।।
श्रीमन्**नेमीश्वरो**यज्-जिन-गृह-पुरतः प्रस्फुरत्-कांस्य-मान-
स्तम्भं सद्धेमकुम्भं शुभ**मभिनव-सामन्तभद्रो**पदेशात् ।
नागप्प-श्रेष्ठि-पुत्रः स्फुरदुरु-विभवा**दम्बवण-श्रेष्ठि-वर्य्यः**
सद्-धर्म्म-च्छत्र-दण्डं प्रमुदित-मनसाकारयद् भूरि-शोभम् ।।
अन्तु मान-स्तम्भमं माडिसिदरु ।।

[जिन-शासनकी प्रशंसाके बाद, नेमिनाथ भगवान्को नमस्कार और उनकी प्रशंसा । गुम्मटाधीश्वरसे रक्षा की कामना । अम्बवण-श्रेष्ठीको नेमिचन्द्र जिनेन्द्र की ओरसे मङ्गल-कामना ।

जम्बू-द्वीपमें भारत देश, उसमें तौलव देश; उसमें अम्बुनदीके दक्षिण किनारे पर क्षेमपुर है । उसमें गेरसोप्पे नगरकी शोभाका वर्णन ।

क्षेमपुर का अधीश देव-महीपति था । इस महाराज के वंशावतार का वर्णनः—क्षेमपुर में पूर्व में कई राजा हुए । उनमें एक भैरव-भूपति था । यह जिन धर्म रूपी समुद्रके लिये चन्द्रमा था । उसके छोटे भाई भैरव, अम्ब-क्षितीश तथा साल्व-मल्ल थे । इनमेंसे साल्वमल्ल यद्यपि सबसे छोटा था, तथापि सबसे महान् था । उसको सोम-वंश तथा काश्यप-गोत्र का बताते हुए उसकी प्रशंसा की गयी है । उसके बाद, उसकी बहिनका पुत्र देवराय नगर और राज्य का वैसा ही बराबरीका रक्षक रहा । उसकी बहिनका पुत्र साल्व-मल्ल रहा, जिसका छोटा

भाई भैरवेन्द्र था। राजा साल्व-मल्लकी प्रशंसा। राजा भैरवकी मेरु-पर्वतसे उपमा देते हुए उसकी प्रशंसा।

जिस समय देवराय, इस तरह अनेकोंकी भक्तिके साथ तुळु, कोंकण, हैवे तथा दूसरे देशोंपर राज्य कर रहा था: --

उस नगरमें, राजा देवसे रक्षित, महाप्रसिद्ध, राजश्रेष्ठी अम्ब्वण-श्रेष्ठी रहता था। उसकी पत्नी (प्रशंसा सहित) देवरसि थी। उनकी वंश-परम्पराका वर्णन:— राजाधिराज, बनवसि-पुरका मुख्य अधीश, कोंकण और हैव राज्यका मुख्य अधीश, चन्दाउर कदम्ब-कुल-तिलक कामिदेव-महाराज थे। उसके दण्डाधिनाथ कामेय-दण्णायकका पुत्र रामण-हेग्गडे और रामकके ८ पुत्र उत्पन्न हुए थे, जिनमें सबसे प्रसिद्ध **योजण-श्रेष्ठी** था, जिसकी दो स्त्रियें तङ्गण और रामक थीं। पहिलीके रामण-श्रेष्ठी तथा दूसरीके कल्प-सेट्टि हुआ। इन अपनी प्रिय दो भार्याओं सहित योजण समृद्ध हुआ। इस योजण-श्रेष्ठी क्षेमपुरमें अनन्तनाथ चैत्यालय बनवाकर तथा इसके अतिरिक्त और भी अगणित पुण्य प्राप्त करके अपना राज-श्रेष्ठिका पद अपने पुत्रोंको सौंपकर स्वर्गलोकको चला गया। दूसरी तरफ, रामण-सेट्टिका पुत्र तम्मन था, जिसका पुत्र नागप हुआ। उसके दो पत्नियाँ थीं, सातम और नागम। सातमसे हट्टिगमें तोटियण्ण-सेट्टि नामका पुत्र उत्पन्न हुआ। इसके बाद नागमका अवतार (उत्पत्ति) कैसे हुआ, यह बताया है। नागम और नागप्प-सेट्टिसे दो लड़के उत्पन्न हुए थे, अम्ब्वण-श्रेष्ठिके मल्लम और देवरसि नामकी दो पत्नियाँ थी। इसके बाद देवरसिकी उत्पत्तिका वर्णन है।

जब ये दोनों अम्ब्वण-श्रेष्ठी और देवरसि पूर्ण शान्ति और सुखसे रह रहे थे, एक दिन वे नेमि-जिन चैत्यालयमें आये, और नेमि-तीर्थेश्वरकी (उद्धृत) स्तुतिको दुहराते हुए मुनिगणका सम्मान किया। इसके बाद, अभिनव-समन्तभद्र-मुनिसे धर्म सुनकर और इसे हृदयमें धारण कर गुरुको सूचित किया कि वे अपने पितामह योजन-श्रेष्ठिके द्वारा बनवाये गये नेमीश्वर-चैत्यालयके सामने मानस्तम्भ बनवायेंगे। इसके बाद घर जाकर, अपने भाई कोरण-सेट्टि और मल्लि-सेट्टि और

अन्य रिश्तेदारोंसे सम्मति लेकर इन्होंने इस पुण्य-कार्यको करनेका इरादा देव-भूपालसे प्रकट किया। और महाराजकी सम्मति, चतुर्विध संघकी सम्मतिपूर्वक, एक शुभ दिन उन्होंने अपना इरादा पूरा किया तथा घण्टेकी धातु (**Bell-metal**) का स्तम्भ बनवा दिया। इसी अन्तरालमें, देवरसिके पद्मरसि और देवरसि नामकी युगल पुत्री उत्पन्न हुईं। उनकी ही ऊँचाई जितनी ऊँचाईका सुवर्ण-कलश चैत्यालयके सामने उस स्तम्भपर चढ़वाया।

इसके बाद मानस्तम्भका वर्णन है।]

[EC, VIII, Sagar tl., No. 55]

६७५

शत्रुञ्जय—प्राकृत।

[सं० १६२० = १५६३ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

६७६

सिरोही—संस्कृत।

[सं० १६३४ = १५७७ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[H. H. Wilson, Asiat. Res., XVI, P. 316, No XLIII, a]

६७७

हेग्गेरे;—कन्नड।

[शक १५०० = १५७८ ई०]

[हेग्गेरेमें, बस्ति के एक पाषाणपर]

श्री शुभमस्तु स्वस्ति श्री **जयाभ्युदय-शालिवाहन-शक-वरुषङ्गळु १५०० मेले प्रमाथि-संवत्सरद माघ-सुद १ लू** श्रीमन्महामण्डलेश्वर **श्रीपति-**

राजगळ मग **राजय्य-देव-महा-अरसु**गळ कुमाररु **वल्लभराज-देव-महा-अरसु**गळु तावु आळुतिद्द **मगरनाड** होयिसळ-राज्यक्के सलुव **बूडिहाळ-सीमे** योळगण बस्तिय जिन-देवरिगे कोट्ट भू-दानद **हेग्गेरे**य बस्तिय मान्यद जीर्णोद्धारद क्रमवेन्तेन्दरे **गुत्तिय हरदर सूरय्यन** मग **चिन्नवरद गोयिन्द-सेट्टियु हेग्गेरे**य बस्तिय देवर-मान्यव पालिसबेकेन्दु बिन्नह माडिकोळलागि आतन बिन्नहव पालिसलू तमगू अनेक-धर्माभिवृद्धियागबेकेन्दु **हेग्गेरे**य गौडनकेरेय केळगण (दानकी विगत) अच्चरदल्लू हदिनैदु-कोळग देवदायमान्यद गद्देयनू यी-आरम्भवागि प्रतिवर्ष प्रति-फलदल्लू नीर-सरदियलि कोट्टु बेहेऊ एन्दु **श्रीपति-राज**गळ वल्लभराज-देव-महा-अरसुगळू पालिस्त बस्तिय देवदाय भू-दान जीर्णोद्धारवह ... शासन (वे ही अन्तिम वाक्य) श्री **हेग्गेरे**य स्थळदलु काडारम्भद होल ख...४

[शुभमस्तु । स्वस्ति । (उक्तमितिको), महामण्डलेश्वर श्रीपति राजके पुत्र राजय्य-देव-महा-अरसुके पुत्र वल्लभराज-देव-यह अरसुने अपने द्वारा शासित मगर-नाड्में होय्सल राज्यके बूदिहाळ-सीमेमें बस्तिके जिन देवके लिये निम्न शासन, हेग्गेरे बस्तिके 'मान्य' की पुनः स्थापनाके लिये प्रदान किया; गुत्ति हरदरे-सूर्यके पुत्र चिन्नवर-गोविन्द-सेट्टिने इस बातका प्रार्थनापत्र देकर कि हेग्गेरे बस्तिके देवकी 'मान्य' चालू होनी चाहिये,—इस प्रार्थनापत्रको मान्य करनेके लिये, तथा अपनी समृद्धिके लिये, हम (उक्त) भूमियाँ जो कि कुल मिलाकर धान्यक्षेत्रके १५ कोळग (एक नाप-विशेष) होते हैं, फसलके समय जलका वार्षिक क्रम भी आजसे ही चालू करते हैं। वल्लभराज-देव-महा-अरसूके द्वारा प्रदत्त, बस्तिके देवदायका प्रस्थापक भूमिके दानका शासन ऐसा है। हेग्गेरे-स्थलमें (उक्त) शुष्क भूमिका दान भी हुआ।]

[EC, XII, Chik-Nayakan halli tl., No 22.]

६७८

शत्रुञ्जय—प्राकृत ।

[सं० १६४० = १५८३ ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

६७९

तारंगा—संस्कृत और गुजराती ।

[सं० १६४२ = १५८५ ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

[J. Kriste, EI, II, no v, No 29 (P. 33-34),t. et. a.]

६८०

कारकल;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक सं० १५०८ = १५८६ ई०]

श्री वीतरागाय नमः ॥

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥१॥

आचन्द्रार्क्कं स्थिरं भूयादायुःश्रीजयसम्पदा ।

भैरवेन्द्रमहीकान्तः श्रीजिनेन्द्रप्रसादतः ॥२॥

अविघ्नमस्तु ॥ भद्रमस्तु ॥

तीर्थौघः सुखमत्रयं च कुरुताच्छ्री**पार्श्वनाथो** बलं;

कीर्त्तिं **नेमि**-जिनः सुवीर-जिनपश्चायुःश्रियं दोर्ब्बलिः ।

कल्याणान्**यर-मल्लि-सुव्रत** जिना [:] **पोम्बुच्च पद्मावती;**

चाचन्द्रार्क्कमभीष्टदास्तु सुचिरं श्री-भैरव-क्ष्मापतेः ॥३॥

श्रीम**द्देशीगणे** ख्याते **पनसोगावलीश्**वरः ।

योऽभू**ल्ललितकीर्त्या**ख्यस्तन्मुनीन्द्रोपदेशतः ॥४॥

३५

श्रीमत्**सोम**कुलामृताम्बुधिविधुः श्रीजैनदत्तान्वयः
श्रीमद्**भैरवराज** तुङ्गभगिनि श्री**गुम्मटाम्बा**सुतः ।
श्रीमद्भोगिसुरेन्द्रचक्रिमहिम **श्रीभैरवेन्द्र**प्रभुः
श्रीरत्नत्रयभद्रधामजिनपानिर्माप्य संसिद्धिभाक् ॥५॥
श्रीमच्छालिशकाब्दके च गलिते **नागाभ्रबाणेन्दुभि-**
श्चाब्दे सद् **व्यय** नाम्नि **चैत्र-सित-षष्ठ्यां सौम्यवारे वृषे** ।
लग्ने सन्मृगशीर्ष-भे चिरतरां श्रीभैरवेन्द्रेण ते
श्रीरत्नत्रयभद्रधामजिनपा भान्तु प्रतिष्ठापिताः ॥६॥

जिनाय नमः ॥ स्वस्ति श्री [॥] शालिवाहन **शक वर्ष** १५०८ नेय **व्यय** संवत्सरद **चैत्र शुद्ध षष्ठि**यु बुधवार **मृगशीर्ष**-नक्षत्रवु **वृषभ**लग्नदल्लु कलियुगाभिनव-भरतेश्वरचक्रवर्त्ती **गुत्ति**-हम्मिब्बरगण्ड [**प**] **त्ति-पोम्बुर्च्च-पुर-**वराधीश्वर मरे-होक्करकाव मारान्तवैरि मम्नेय-राय-मस्तकशूल षड्दर्शन स्थापनाचार्य्य सोमवंशशिखामणि **काश्यप**गोत्रपवित्रीकरणदत्त **पोम्बुर्च्च-पद्मावती-**लब्धवरप्रसाद सम्यक्त्वाद्यनेकगुणगणालंकृत **जिन**-गन्धोदक-पवित्रीकृतोत्तमाङ्ग अरु-वत्तारु-मण्डलीकर-गण्ड **होम्नमाम्बिका**-प्रियकुमार-**भैररस-वोडेयर**-अळियरेनिप श्रीम**जिनदत्तराय**-वंश-सुधाम्बुधिपूर्णचन्द्र श्रीम**द्वीर-नरसिंह-वङ्गनरेन्द्र** श्री**गुम्मटाम्बा**-कुलदीपक-प्रियसूनु अरिराय-गण्डरडावणि श्रीम**द्मिम्मडि-भैररस-वोडेयरु** तमगे अभ्युदय-निःश्रेयस-लक्ष्मी-सुख-सम्प्राप्ति-निमित्तवागि **कारकळद पाण्ड्यनगरियल्लि** श्री-**गुम्मटेश्वरन** संनिधानदल्लि कैलासगिरि-सन्निभ-**चिक्कबेट्टदल्लु** ॥

श्रीकान्ताकुलवेश्म किं वरयशः-कान्ताप्रमोदागारं
भूकान्तारतिसद्म सज्जयवधू-क्रीडास्पदं किं पुनः ।
स्यात्कारोज्ज्वल-सन्नयद्वयमयी श्रीभारतीरङ्गभूः
स्वः श्री-मुक्ति-रमा-स्वयम्वरगृहं श्रीजैनगेहं वृषे ॥७॥

न्तप्प सकलजनानन्दमन्दिरवाद सर्व्वतोभद्र-चतुर्म्मुख-रत्नत्रयरूप-**त्रिभुवन-**
... **क-जिनचैत्यालयवनु** रोद्द-गोव निकलङ्क-मल्ल बन्टरभाव परनारिसहोदर नुडिदु-माशेगे-तप्पुव-रायर-गण्ड सुवर्ण्णकलशस्थापनाचार्य्यरादकारण धर्म्म-साम्राज्य नायकरागि निजपुण्यानुबन्धि-पुण्यद प्रेरणेयिन्द तमगु तज्जिनभवन प्रेक्षकराद सकल-शीलगुणसम्पन्नराद चतुस्संघक्कू साक्षात्स्वर्म्मोक्षलक्ष्मीस्वयम्वरशालोपमन् आगि निर्म्मापिसि अनन्तसुखद सम्प्राप्तिनिमित्वागि। आ नाल्कु-दिक्किनल्लू **अर-मल्लि-मुनिसुव्रत-तीर्त्थंकर**-प्रतिमेगळनू स्थापिसि। आ पश्चिम-दिग्भागदल्लि **चतु-र्विंशति-तीर्त्थंकर**-प्रतिमेगळनू हदिनाल्कु बोकलु स्थानीकरु नडसुव अभिषेक-पूजे मुंतादवक्कु (।) मीले नडव अङ्गरङ्गवैभवादिर्कगळिगू आ **भैररस-वोडेयरु** निज-सन्तोषदि [द] राज्यवनाळुवाग आ **त्रिभुवन-तिलक-जिनचैत्यालय-दल्लि** आ प्रतिष्ठा-समयद पुण्यकालदल्लि तमगे पुण्यार्थवागि मूड **मुकडपिन-होळे**। तेङ्क **येम्णेय-होळे**। पडुव **पोळ्ळकळियद-होळे**। बडग **बलिमेय-होळे**। ई नाल्कु-होळेगळनु मीरेयागुळ्ळ। निदि (धि) निक्षेप। अक्षिणि आगा-

२५. म्य। जल पाषाण। सिद्ध साध्यंगळेम्ब (।) अष्ट-भोगंगळिगोळगाद **तेळार**-ग्रामवनू। अदरोळगे अक्कि मूडे ७०० नू। **रंजाळ-नल्लूर** सिद्धायदल्लु ग २३८-

२६. नू धारापूर्व्वकवागि आचन्द्राकस्थायियप्पन्ते देवर्गे मा [डि] दि-कोट्ट धर्म्मक्षेत्रध (द) विवर। आ क्षेत्रद चतुःसीमेयोळगल्ल हरवरि (री)-मुम्तादवर-

२७. ल्लि सल्लुव गेणि-सिद्धाय बड्डिय-भट्ट हुर्ळिय-अक्कि जोळक्के-कत्तिद-अक्कि होम्न-बड्डियक्कि सह सल्लुव अक्कि हाने ५० र लेक्कद मूडे ७०० क्कं **नल्लु-**

२८. **रु-रञाळदल्लि** वोक्कलु-तार्क्क-णेयागि बिट्ट सिद्धाय ग २३८ वरहक्कू सहवागि नडव धर्म्म। पडुवण-बागिलल्लि वोक्कलु २ क्के मूरु-होत्ति-

२६. न देवपूजगे चरु हाने ६ मीलु-चरु हाने ३ अन्नते-अक्कि हाने १ तोये पायस तुप्प कलसुमीलोगर ताळिल मुंताद पंच-भक्ष्यक्के अक्कि हाने २

३०. कुडुते २ अन्तु अक्कि हाने १५ कुडुते २ र लोकदल्लि वर्षं । इक्के अक्कि मूडे ११० [।] उदयद पञ्चामृतदाभिषेकक्के ग ७ म २ पञ्चखजायक्के ग ७½ सिद्ध-

३१. चक्रद आराधनगे ग १२ प (फ) ल-वस्तुविगे ग १ म २ बैगिन हाल-धारेगे ग ½ म ४ गन्ध-धूपक्के ग ½ म ३ येम्ने हाड १२ क्के ग ८ म ४ अष्टाह्निक ३ क्के ग ३

३२. वर्षाभिषेक इक्के ग ६ अन्तु ग ४७ ॥ @ ॥ बडगण-बागिल वोक्कलु २ क्के मूरु होत्तिन देवपूजगे दिन इक्के चारुविगे अक्कि हाने (।) ६ मीलु [च] रुविगे

३३. अक्कि हाने ३ अन्नतगे अक्कि हाने १ तोये पायस तुप्प कलसुमी लोगर ताळिल मुन्ताद पञ्चभक्ष्यक्के अक्कि हाने २ कुडुते २ अन्तु अक्कि

३४. दिन इक्के हाने १५ कुडुते २ र लेक्कदल्लि वर्ष (।) इक्के मूडे ११० [।] उदयद बैगिन हालधारेगे ग १½ म ३ पञ्चखजायक्के ग ७½ प (फ) ल-वस्तु-

३५. विगे ग १ म २ गन्धधूपक्के म ८ येम्ने हाद १२ क्के ग ८ म ४ अष्टा-ह्निक ३ क्के ग ३ वर्षाभिषेकक्के ग ६ अन्तु ग २८ म ७ ॥ ई लेक्कदल्लि मूड-बागिल वोक्क-

३६. लु २ क्के अक्कि मूडे ११० ग २८ म ७ ॥ आ-तेङ्क-बागिल वोक्कलु २ क्के अक्की (क्कि) मूडे ११० ग [२] ८ म ७ ॥ अन्तु बागिलु ४ क्के वोक्कलु ८ क्के वर्ष (।) इक्के अक्कि मूडे ४४० ग १३३

३७. म १ ॥ @ ॥ पडुव-बागिल येड-बलद गुण्ड २ क्के वोक्कलु इक्के चरु-विगे अक्कि हाने ५ र लेक्कदल्लि मूडे ३६ अन्नतगे अक्कि मूडे ४ उभयं मूडे ४० हाल-

३८. धारे ४ क्के ग ३½ म १ फलवस्तुविगे ग १ म २ गन्ध-धूपक्के म ३ येन्ने हाड ५ क्के ग ३½ अष्टाह्निक ३ क्के म ५½ वर्षाभिषेकक्के ग १ अन्तु ग १० म १½ [।] ई लेक्कदल्लि

३९. वडग (।) मूड तेङ्कण गंदङ्गळिगू । आ पडुवण तीर्थंकर ब्रह्म पद्मावति गळिगू सह वोक्कलु ५ क्के अक्कि मूडे २०० ग ५० म ७½ =[1] उभयं वोक्कलु

४०. ६ क्के अक्कि मूडे २४० ग ६० म ६ [।] **ब्रह्म-पद्मावतीय** ऐवरुविगे अक्कि मूडे ४ = अन्त वोक्कलु १४ क्के अक्कि मूडे ६८४ ग १६४ ॥ @ ॥ दोळु-नागसर-कोम्बिनवर जन

४१. ६ क्के ग ३६ अडिपिन मूलितियर जन २ क्के अक्कि मूडे १६ बस्तिय-ल्लिह तपस्विगळ् तण्ड ४ क्के शीतनिवारणेय-हच्छुड ८ क्कं कैय्यक्किय तुम्बुग सूसुव इ-

४२. च्छुड इक्कं सह हच्छुड ६ क्के ग ५ म २ मण्डेय तोळ्ररे येम्णेय हाड २ क्के ग २ अडुगब्बु सीगेगे सह म ८ अन्तु ग ८ = अन्तु अक्कि मूडे ७०० ग २३८ [॥]

४३. हिरिय-अरमनेय नाल्कु-चउ (वु) कद वोळगण बस्तिय **चन्द्रनाथ स्वामिय** अमृतपडिगे **आरूरल्ल**ण-बलक्कळदल्लि बिळियर-

४४. सर गुत्त बिम्नप्पनिन्द अक्कि मूडे २० बागिलरसर गुत्त माण्डप्पी [डि] यिन्द अक्कि मूडे १० उभयं मूडे ३० **नल्लूर**

४५. त्रिविक्रुरुपाण्डिय-बाळिनल्लि ग ७½ बत्तिकोटिय-बाळिनल्लि ग ३ **पं(आ)-ळदल्लि** कम्बुवबाळिनल्लि ग ७½ अन्तु ग १८ । **गोवर्धनगिरिय-**बस्तिय

---

१. यह यहाँ और आगे भी जहाँ कहीं आये, विराम का चिह्न समझना चाहिये ।

४६. **पार्श्वनाथ(थ)स्वामिय** अमृतपडिगे **मल्लिसद्**-कम्बुळदल्लि अक्किय मूडे ३० आ मीलण दड्डि-मरुगळल्लि मूडे ४ **[नल्लू] र** नं० [बि] **बेट्टि**-नारणनल्लि

४७. अ [क्कि] मूडे ६ अं [तु] मू [डे] ४० **[के] लवसेय** सेटि-बेट्टिन हित्तिल [फ] लदल्लि [ग] ८ म २½ [॥] [इ] दु पञ्च-संसार-कालोरग-दष्ट-गाढ़-मूर्च्छित-नाना-संसारि-जीव-प्रबोधनक-

४८. र-पञ्च-महा-कल्याण-[बी] जोपम [वाद] जिनमन्त्र-पूतात्मन। श्री वीतराग। येम्ब पञ्चाक्षरियनु पञ्चविंशति-मल-विदूर-परम-सम्यग्दृष्टिगळाद-कारण आ **भैरर**-

४९. **स-वोडेयरे** स्व-हस्तदिंद वो [प्प कोट्टु] दक्के इन्द्रवज्रा-[वृत्त] दिन्द [चतुर्विंशत्य] - क्षर-लिखित-पञ्चाक्षररूप-सर्वतोभद्र-चित्र-प्रबन्धदिं [द] रचिसिद चि [त्] र-

५०. श्लोक ॥ श्री-वीत-वीरागत-वीग-वीतं
श्री-राग-वीतं गतराग रागम्।
श्रीगं ततं रागतरांगरा [ङ्गं]
श्री वीतरागं तत-वी [र]-गं तम् ॥ @ ॥ ८ ॥

[मंगलाचरणके बाद इस लेखमें (श्लो० २ और ३) तीर्थंकरों, दोर्बलि (बाहुबलि) और पोम्बुच्चकी पद्मावती देवीके आशीर्वादका दाता **भैरव** या **भैरवेन्द्र,** जिनको **भैररस-वोडेय** तथा **इम्मडि भैररस-वोडेय** कर्णाटक गद्यमें कहा गया है, के लिये आह्वान किया गया है। इस सरदारको हम एकदम **भैरव-द्वितीय** कह सकते हैं। इन्हींके मामाको इसी लेखमें (श्लो० ५) भैरव प्रथम कह सकते हैं, जिनका नाम **भैरवराज** दिया है। आगे लेखसे पता चलता है कि **ललितकीर्ति मुनीन्द्र**, जो पनसोगे शाखा (गच्छ) **देशीगणके थे**, उनके उपदेशसे भैरव द्वि० ने 'रत्नत्रय' (श्लो० ५ तथा ७ वें श्लोक के बादके कन्नड़गद्यमें) मन्दिर, जिससे स्पष्टतः **चतुर्मुख बस्ती** का मतलब है, बनवाया था। श्लोक ६ तथा इसके बादके कन्नड़ गद्यमें

मन्दिरकी नींव रखने और प्रतिष्ठाका दिन दिया है। वह दिन शालि-(या शालिवाहन-) शक वर्ष १५०८, व्यय-संवत्सर, चैत्र शुक्ला षष्ठी, बुधवार था, उस समय **नक्षत्र** मृगशीर्ष या मृगशिरा तथा लग्न वृष या वृषभ था। श्लोक ६ के बाद के तथा ७ के बादके कन्नड़ गद्यमें भैरव द्वि० की बिरुदावलि दी हुई है तथा मन्दिरका नाम **त्रिभुवनतिलक-जिन-चैत्यालय** (७ वें श्लोक के बादके गद्यमें) दिया है, जिसको 'सर्व्वतोभद्र' और 'चतुर्मुख' कहा गया है। यह **कारकलमें पाण्ड्यनगरी**में श्रीगुम्मटेश्वरके सन्निधानवर्ती **चिक्कबेट्ट** टीले-पर बनाया गया था। पाण्ड्यनगरी, वर्तमान हिरियङ्गडिकी तरह, एक दूसरी कारकलकी पार्श्ववर्ती उपनगरी थी जिसमें स्वयं चिक्कबेट्ट टीला, जिसपर चतुर्मुख बस्ती बनी हुई है, स्तम्भीय गोम्मटेश्वरकी मूर्ति और इन दोनोंके बीचमें से जाने वाली वह सकड़ी गली है जिसमें कुछ जैन गृहस्थोंके गृह तथा मठ अवस्थित हैं। ख्यातनामा गुम्मटेश्वरकी मूर्तिकी प्रतिष्ठा करानेवाले पाण्ड्यराय या वीरपाण्ड्यके नामसे यह नगरी प्रसिद्ध थी। आगे बताया गया है कि भैरव द्वि० ने मन्दिरके चारों ओर मुख्य दरवाजोंकी तरफ **अरः, मल्लि** और **मुनि-सुव्रत** इन तीन तीर्थङ्करोंकी मूर्तियोंको विराजमान करवाया, तथा इन्हींके साथ बीचमें २४ चौबीसों तीर्थङ्करों की मूर्त्तियोंकी यक्ष-यक्षिणीके साथ स्थापना की।

आगे पंक्ति २२ से **४२** में **तेळार** ग्रामके दानका उल्लेख है, जिससे लगानके रूपमें ७०० 'मूडे' धान्य (चावल) की प्राप्ति थी। इसके अतिरिक्त-**रंजाळ** और **तल्लूर** ग्रामोंके 'सिद्धाय' (अर्थात् चालू लगान) में से २३८ 'गद्याण' (या 'वटह', पं० २८) भी मिलते थे। इस आमदनीसे मन्दिरकी पूजाका प्रबन्ध होता। नित्य पूजन करनेवाले १४ स्थानिकों (पुजारियों) के कुटुम्ब इसी कामके लिये नियत थे। प्रत्येक दरवाजेकी वेदी पर कितना खर्च होता था, यह सिलसिलेवार इस शिलालेखमें दिया हुआ है। उससे पता चलता है कि सबसे अधिक खर्च पश्चिम दरवाजेकी वेदी पर होता था, क्योंकि वही मुख्य गिनी जाती थी। दूसरा इस दरवाजेकी प्रधानताका प्रमाण यह है कि उसी दरवाजेकी वेदी पर २४ तीर्थङ्कर विराजमान हैं। इस प्रधानताकी वजह ही

से उस पर ज्यादा खर्च होना भी स्वाभाविक था। माली और गायकोंके (गन्धर्वोंके) लिये भी खर्च इसी आमदनीसे बँधा हुआ था। मन्दिरमें बसनेवाले ब्रह्मचारी इत्यादिको वर्ष भरमें ८ कम्बल शीतनिवारणके लिये मिलते थे और एक कम्बल दैनिक भात-भिक्षाके संग्रहके लिये। उन्हें आवश्यक चीजें, जैसे, तेल, साबुन- ईन्धन भी मन्दिरसे ही मिलता था। पंक्ति ४३–४७में दो और दानोंका उल्लेख है जो कि उसी भैरव द्वि० के ही किये गये मालूम देते हैं। (१) पहला दान 'हिरियअरमने' (अर्थात् बड़ा महल) के प्रांगणमें स्थित 'बस्ति' के **चन्द्रनाथ** के नित्य पूजनके लिये और (२) **गोवर्धनगिरि**के टीले पर स्थित ' 'बस्ति' के **पार्श्वनाथ** के पूजनके लिये। अन्तिम ८ वें श्लोकमें पञ्चाक्षरी 'श्रीवीतराग' पर चित्रबन्ध शब्दालंकार है। इस लेखके परिचयमें श्री एच. कृष्णशास्त्री, बी. ए. ने अन्तिम चार पंक्तियाँ (८ वें श्लोकके बाद) मिटी हुई बताई हैं।

दाता और भैरव द्वितीय सोमकुल, काश्यपगोत्र तथा **जिनदत्त** या **जिनदत्तराय**के वंशका था। वह **गुम्मटाम्बा** और वीरनरसिंह-वंगनरेन्द्रका पुत्र था। गुम्मटाम्बा **भैरव प्रथम**की बहिन थी। भैरव प्र० **होन्नमाम्बिका** का पुत्र था। भैरव द्वितीयके बिरुद इसी लेखसे जानने चाहिये।]

[EI, VII, No. 10]

६८१

मद्रास;—कनड़।

काल-[शक सं० १५१३ (१५९१ ई०]

[साउथ कैनराके Sub-Court में]

खर संवत्सरमें, शक सम्वत् १५१३ (१५९१ ई०) में एक जैन-मन्दिरकी पूजाके प्रबन्धके लिए **किंजिग भूपाल** नामके युवराजके द्वारा कन्नड़ प्रान्तमें भूमिदान।

[ASSI,II, p. 14, No. 91, a.]

६८२-६८३

शत्रुञ्जय;—प्राकृत।

[स० १६५० = १५९३ ई०]

(श्वेताम्बर लेख।)

६८४

अनहिलवाड-पाटन;—प्राकृत।

[सं० १६५१-१६५२ = १५९४-१५९५ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[G. Buhler, EI, I, No. XXXVII, (p. 319-324), t. et. a.]

६८५

शत्रुञ्जय;—प्राकृत।

[सं० १६५२ = १५९५ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

६८६

अनहिलवाड-पाटन;—संस्कृत

[सं० १६५२ = १५९५ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[J. Burgess and H. Consens, Art. of Northern Gujarat (ASI. XXXII) p. 44-45, tr.]

६८७

सिरोही;—संस्कृत ।

[सं० १६५३ = १५६६ ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

[H. H. Wilson, Asiat. Res., XVI, p. 316, No. XLIII, a.]

६८८

कोप्प;— संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक १५२१=१५९९ ई०]

[कोप्प (कोप्प परगनामें) पश्चिमकी तरफ खाली पड़ी हुई जमीनमें एक पाषाणपर]

श्री-वीतरागाय नमः ।
श्रीमत्परम-गंभीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ।।
नमस्तुङ्ग इत्यादि ।।

स्वस्ति श्री **जयाभ्युदय-शालिवाहन-शक-वरुष १५२१ सन्द वर्तमान-विळम्बि-संवत्सरद चैत्र ब ७ चन्द्रवारदलु** श्रीमतु **करिदल**-वळिय **मयिल-नायकर** मदर्वाळगे **तळार**-वळिय **दुग्गमन** मग **पांड्य-नायक** अवर तम्म **देरेनायकरु कोप्प**दल्लि पलित-**साधन चैत्यालय**वनु कट्टिसि प्रतिष्ठेय माडिसि अमृतपडिगे बिट्ट स्वास्ति-विवर (यहाँ दानकी विस्तृत चर्चा है) **भयिर-रस-वोडेयरु** पारिश्वनाथ-देवरिगे आ-**कोप्प**-आयदलि धारेनेरद क्षेत्रभूमिय विवर (यहाँ विशेष चर्चा आती है) **लिंगवन्त**नादव अळुदिदरे श्रीपर्वतदलि लिङ्ग जङ्ग ··· ··· ··· ··· पापके होह विभूति-रुद्राक्षिगे होरगु **नामधारि**

आगि आदव ई-धर्मके अळुपिदरे तिरुपति-श्रीरङ्ग-विष्णु-कञ्चिलि स्वामि-सेवे अळिद पापके होहरु इष्टर बळिक अळुपिदरे एळनेनरककके इळिवरु इदु तप्पदु (शेषमें साक्षियोंके नाम हैं) **पाण्ड्यप्प-वोडेरु कोप्पद**-बस्तिगे धारेनेरडु **मुदुकदानीळु** गद्दे भूमि २ क्के गडि ख १० उलिगददेन्दु **नरसीपुरद** महाजनङ्गळ क्रय्य क्रयक्के कोण्ड कागलु-गोडलु कले ख १८ कारु १२ उभ ख ३० ··· ४० भट्ट पारिश्वनाथ-देवर वोळ-भागस्तरादवरिगे ··· ··· (हमेशाके अन्तिम श्लोक)

[(उक्त मितिको) करिदलके मयिल-नायककी पत्नी तळार-दुग्गम्मके पुत्र पाण्ड्य-नायक और उसके छोटे भाई देरे-नायकने कोप्पमें साधन-चैत्यालय बनवाकर और उसमें प्रतिमा विराजमान करके, पूजनके लिये निम्नलिखित सम्पत्ति दानमें दी। (जो जमीन दी उसकी यहाँ विस्तृत चर्चा है)।

और भयिररस-वोडेयरने पारिश्वनाथ-देवके लिए कोप्पकी लगानमेंसे निम्नलिखित जमीन दानमें दी। (जहाँ जमीनकी कीमत दी हुई है)।

लिंगवन्त और नामधारियोंके विरुद्ध भिन्न शाप। साक्षी।

पाण्ड्यप्प-वोडेरने मुदकदानिमें कोप्पकी बस्तिके लिये (उक्त) और भी दान दिया तथा नरसीपुरके ब्राह्मणोंसे खरीदकर कुछ और जमीन भी दानमें दी।]

[EC, VII, koppa tl. No 50]

६८६

वेणूर,—संस्कृत तथा कन्नड।

[शक सं० १५२५ = १६०४ ई०]

[गोमटेश-मूर्तिस्तम्भके ठीक दाहिनी तरफ]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शास [नं] जिनशासनम्॥ [१]

शकवर्षेष्वतीते[षु **वि]षयाब्धिशरेंदुषु** ।
व [र्तमा] ने शोभकृति वत्सरे फाल्गुना [ख्यके ॥] [२॥]
मासेऽथ शुक्लपक्षेद्वदशम्यां गु [रुपु] ष्यके ।
सुलग्ने मिथुने देशी [गणांत्र] र दिनेशितुः [॥] [३॥]
बेळगुळाख्यपुरीपट्टची [र] ांबुधिनिशापतेः ।
चारुकीर्ति] मु [ने] र्दिव्यवाक्या**देनूरपत्तने** ॥ [४॥]
श्री **रायकुवर**स्याथ जामाता त [त्सहो] दरी- ।
पाण्ड्यकाख्यमहादेव्याः [सु] पुत्रः **पांड्य**भूपतेः ॥ [५॥]
अ [नु] ज [**स्ति**] **मरा [जा]**ख्य**श्चामुंडा**न्वय[भूष]कः ।
अस्था [प] यत्प्रति [ष्टाप्य] **भुजबल्या**ख्यकं जिनं ॥ ६ ॥
शुभमस्तु ॥

[इस लेखमें बताया गया है कि **चामुण्ड** (प्रसिद्ध चामुण्डराज जिन्होंने श्रवण-बेल्गोळामें गोम्मटेशकी मूर्त्ति स्थापित की है) के वंशमें होनेवाले **तिम्म-राजने पनूर** (वर्त्तमान वेणूर) में भुजबली (बाहुबली) जिनकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा करके स्थापना की। यह तिम्मराज **पाण्ड्य** नरेशका छोटा भाई, **पाण्ड्यक** रानीका पुत्र, तथा रायकुवरका जामाता था। उसने इस मूर्त्तिकी स्थापना बेल्गुळ (वर्त्तमान श्रवण-बेल्गोला) के भट्टारक, जो देशीगणके थे, की आज्ञासे की थी। मूर्त्तिको स्थापना दिवस शक वर्ष **शोभकृत्** १५२५ के व्यतीत हो जानेपर फाल्गुन शुक्ला १०, पुष्यनक्षत्र, मिथुन लग्न था।]

[EC, VII, No 14, F.]

६९०

वेणूर;— कन्नड़ ।

[शक सं० १५२६ = १६०४ ई०]

[गोम्मटेश-मूर्तिस्तम्भके ठीक बायीं तरफ]

१. श्री शकव [र्ष] मं गणि [से स]ासिरदिं मिं-
२. गुवरदु लेक्कमु [ल्ल] शतदिप्पता [र] नेय
३. शोभकृदब्ददं फाल्गुनाख्यमासाश्रि-
४. [त] शुक्लपक्ष दशमी गुरुपुष्यद यु-
५. [ग्म] ल [ग्न] दोळ् देशिगणा [ग्र] गण्यगुरु-
६. पंडितदे [व] न दिव्यवाक्य [दिं] ॥ [१] **राय**-
७. **कुमार** [नो] प्पुवळियं मयि **पांड्य**-
८. **क**देवि [य पुत्रनत्र] सोमायतवं-
९. श [धु] र्यनुरुसाहसि **पांड्य**नृ-
१०. पानुजनुद्धदानराधेयनुदा-
११. र [**पुंजळि**] **के** पट्टवनाळ्व नृपाग्रणि
१२. **तिम**भूभुजं श्रीयुतनं प्रति [ष्ठ]-
१३. [सि] द [न]ादिजिना [रम] ज [नं जि] न **गुं** [**म**] **टेशनं** ॥ [२॥]

[पहले शिलालेखकी तरह, इस लेखमें भी बताया गया है कि मूर्तिकी स्थापना **तिम्म**ने की थी। इस लेखमें पूर्व सम्बन्धोंके साथ-साथ तिम्मको सोम-वंशका धुरीण तथा पुंजळिकेका शासक बताया गया है। समय इस लेखमें **१५२६** (शब्दोंमें) शक वर्ष है, जबकि पूर्व लेख १५२५ अतीत वर्षका है। **'गुम्मटेश'** **बाहुबली**का ही नामान्तर है।]

[EI, VII. No 14. F.]

६९१

मेलिगे;—संस्कृत तथा कन्नड ।

[शक १५३० = १६०८ ई०]

[मेलिगेमें, रङ्ग-मण्डपके दक्षिण-पश्चिमकी ओर आदिनाथ बस्तिमें एक पाषाणपर]

श्रीमदनन्तनाथाय नमः

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

श्रीमद्-गीर्व्वाण-चक्रेट्-फणिपति-मकुटोद्भासि-माणिक्यमाला- ।
रोचिः-प्रक्षाळित-श्री-चरण-सरसिज-द्वन्द्व-बाभास्यमानः ।
मानस्तम्भाम्बुजाताकर-कलित-लसत्-खातिकाद्युद्ध-शोभोऽ
सौ स्वान्त् सन्तोषयन् श्री-समवसृति-पतिर्भ्भा त्यनन्तो जिनेशः ॥

स्वस्ति श्री जयाभ्युदय-शालिवाहन-शक-वरुष १५३० नेय सौम्य-संवत्सरद माघ-शुद्ध १० आदिवारदलु ॥

वृ ॥ निद्राभूत-महीश-वारिज-ततेः कुर्व्वन् विकास-श्रियम्
सन्मार्गाम्बर-भासमान-विसरत्-तेजो-निधिस्सर्वदा ।
वैरि-क्ष्मापति-भूरि-कैरव-कुलं सङ्कोचयन् सन्ततम्
श्रीमद्-वेङ्कट-देव-राय-तरणिस्तीव्र समुज्जृम्भते ॥

इत्याद्यनेक-बिरुदावळि-विराजमानराद श्रीमद्-राजाधिराज राज-परमेश्वर श्री-वीर-प्रताप श्रीमद्-वेङ्कटपति-देव-महारायरु पेनगोण्डे सिंहासनारूढरागि प्रति-पालिसुत्तिर्द्द समस्त-राज्यङ्गळोळत्यतिशयमनुळ्ळवन्य-देशदोळु ॥

अन्तेसेववन्य-देशदोळ् ।
अन्तातीत-प्रकार-शोभा-रुचियम् ।

तां तळेदारगमेम्ब पु- ।
रं तोप्पुंदु **भुवनगिरिय** मूडण-देसेयोळ् ॥

आवोळलमाळ्वननेक-चातुरी-धुरन्धरनाद **वेङ्कटाद्रि-महीपाल** नातन गुण-कथनमेन्तेने ॥

श्री-रामा-रमणं विवेक-शरणं साहित्य-रत्नाकरम् ।
नारी-चित्त-मनोभवं बुध-नुतं सङ्गीत-गङ्गाधरम् ।
वैरि-व्रात-मदेभ-पञ्च-वदनं ··· ··· ··· ··· ।
··· श्री-पति-**वेङ्कटाद्रि-महिपं** तानोप्पिदं धात्रियोळ् ॥

मत्तमातन कीर्त्ति-प्रतापमेन्तेने ॥

उरगाधीश-महा-मणि-प्रमेयनिन्द्रोत्कुम्भि-कुम्भस्थळो- ।
त्कर-सिन्दूरमनीश-माळ-नयनाग्नि-ज्वाळेयं तार-भू- ।
धर-गौरेयक-शृङ्गमं सुरनदी-रक्ताम्बुमं गेल्दुदु -।
र्व्वरेयोळ् सन्नुत-वेङ्कटेन्द्रन यशस्तेजः-प्रभा-मण्डलम् ॥

इन्तनेक-गुण-सम्पत्-समृद्धराद **वेङ्कटाद्रि-नायकय्यन**वरु कुळकाळाञ्छियागि नडसि कोण्डु बह **बोम्मण्ण-हेग्गडे**यातनेन्तप्पनेने

कलित-गुण-निधि ··· ··· ।
··· शूरनुदधि-सम-गम्भीरम् ।
विळसद्-**बोम्मण-हेग्गडे** ।
पिळेयोळ् **मुत्तूर**नाळ्दनुत्तमनेसेदम् ॥

आतनाळ्व सीमेयोळगण **निडुवल-नाडिगे** सलुव **कोदूरपालोळगे मेळिगे**-येम्ब ··· ··· त्तिर ··· ··· राज-श्रेष्ठियातन गुण-कथनमेन्तेने ॥

शच्या सह सुराधीशो यथा भाति तथानिशम् ।
वर्द्धमान-वणिग्-मुख्यो **नेमाम्बा**-प्राण-कान्तया ॥
तत्सुतो **बोम्मण-श्रेष्ठी** निर्माप्य जिन-मन्दिरम् ।
त**दानन्त**-जिनाधीशं संस्थाप्य ख्यातिमाप्तवान् ॥

मत्तमा-भव्योत्तमन परम-गुरुविन प्रभावमेन्तेने ॥

श्रीमज्जैन-मताब्धिवर्द्धन-सुधासूतिर्म्महीपालक- ।
व्रात-स्तुत्य-पदाम्बुजात-युगलो भव्याब्ज-भानूपमः ।
दुर्व्वार-स्मर-गर्व्व-पर्व्वत-पविर्न्नाना-का(क)ला-कोविदो ।
विद्यानन्द-मुनीश्वरो विजयते वादीभ-पञ्चाननः ॥

तच्छिष्य-परम्परायात-बलात्कार-गणाग्रगण्य श्रीमद्-राय-राजगुरु वसुन्धराचार्य्यवर्य्य महा-वाद-वादीश्वर राय-वादि-पितामह सकल-विद्या ········· माद्यनेकान्वर्त्थ-विरुदावळि-विराजमान श्रीमद्-**देवेन्द्रकीर्त्ति-भट्टारक**-पदाम्भोज-दिवाकरायमान श्रीम**द्भिनव-विशालकीर्त्ति भट्टारक**-देव-पद-पयोज-मत्त-मधुकरायमान प्रवीण-**बोम्मण-श्रेष्ठि**य तनूजातनेन्तिर्द्दपनेने ॥

तस्यात्मजातो विख्यातस्सुकृती धार्म्मिकाग्रणीः ।
बोम्मणाख्यो वणिग्-मुख्योऽपालयत् तज्जिनालयम् ॥
नेमाम्बा नाम तत्पत्नी व्रत-शील-विभूषिता ।
तयोः पञ्च सुता जातास्स्मराकारा गुणोज्वळाः ॥

आ-कुमारकरय्वरेन्तिदरेने ।

श्रीमज्जिन-पादाम्भोज-युगल-भ्रमरोपमः ।
भाति श्री **बोम्मण**-श्रेष्ठी सत्य-शौच-गुणान्वितः ॥
यस्यानन्त-जिनेश्वरो निज-कुल-स्वामी त्रिलोकी-पतिर्
विद्यानन्द-मुनीश्वरो निज-गुरुर्व्वादीभ-कण्ठीरवः ।
···त्तं परमं जिनेन्द्र-गदितं येनोरु तत्त्वं महान्
सोऽयं भाति मही-तले **पदुमण-श्रेष्ठी** गुणानां निधिः ॥
श्रीमान् कुवलयाह्लादी कलानामाश्रयो महान् ।
सद्भिः परिवृतो भाति **चन्दन-श्रेष्ठि**-चन्द्रमाः ॥
सर्व्व-श्रेष्ठिषु रत्नत्वाद् दान-पूजादि-सद्-विधौ ।
राजते **माणिक-श्रेष्ठी** नाम्नान्वर्त्थेन पुण्य-भाक् ॥

श्री जिनोदित सद्धर्म्म-कार्य्याणामादिमस्त्वतः ।
आदण्णाह्वयो वणिग् भाति नामान्वर्थं दधत् सुधीः ॥

इन्तेसेव सकल-गुण-समन्वितराद मेळिगेय **बोम्मण-सेट्टियर** मक्कळु **बोम्मण-सेट्टियरु** (औरोंके नाम दिये हैं) नाऊ तम्मोळेकस्तरागि नम्म अज बोम्मि-सेट्टियरु कट्टिसिद बस्तियनु सिलामयवागि कट्टिसि ॥

श्री-विश्वावसु-वत्सरे शुभतरे ज्येष्ठे च मासे सिते
पक्षे सद्-दशमी-तिथौ सु-रुचिरे शुक्रे च वारे बरे ।
ऋक्षे चोत्तर-नाम्नि केसरि-महा-लग्ने प्रतिष्ठापितः
पद्म-श्रेष्ठि-वरेण शास्त्र-विधिनानन्ताख्य-तीर्थेश्वरः ॥

आ-श्रीमदनन्तनाथ स्वामिय नित्य-नैमित्तिक-पूजेगे । अमृतपडि । नन्दादीपि । अङ्ग-रङ्ग-वैभव-मुन्ताद समस्त-विनियोग-धर्म्म नडवदक्के बिट्ट भू-दान शासनद क्रम वेन्तेन्दरे (यहाँ दानकी विस्तृत चर्चा तथा वे ही अन्तिम श्लोक आते हैं)।

मेलिगे बोम्मण-सेट्टर मक्कळु बोम्मण-सेट्टरु पदुमण-सेट्टरु सि (शि) लामय-वागि कट्टिसिद श्रीमदनन्तनाथ-स्वामि-चैत्यालयदल्लि नडव धर्म्मद विनियोगक्के कोट्ट सर्व्वमान्यद स्वास्तेगे बरद शिला-शासन मुत्तूर हेगडेर बोप्पित बोम्मण्ण-मल्लण्ण बोप्य ।

[अनन्तनाथके लिये नमस्कार । जिन शासनकी प्रशंसा ।

अनन्त जिनेशकी स्तुति ।

(उक्त मितिको), बेङ्कट-देव रायको सूर्यकी उपमा । जिस समय बेङ्कटपति-देव-महाराय पेनुगोण्डेकी राजगद्दीपर बैठे थे, उनके सारे राज्यमें अवन्य-देश प्रसिद्ध था । उस देशमें, भुवनगिरिके पूर्वमें, आरग शहर था । उस नगरका शासक बेङ्कटाद्रि-महीपाल था । उसके गुणोंका वर्णन ।

वेङ्कटाद्रि-नायकय्यका आश्रित बोम्मण-हेग्गडे था । उसकी प्रशंसा । वह मुत्तूरका शासक था । इसके एक स्थान मेळिगेमें, जो निडुवळ-नाडुके कोडूर-पाळूमें था, राज-श्रेष्ठी वर्द्धमान था । उसकी प्रशंसा । उसकी पत्नी नेमाम्बा थी । उसके पुत्र बोम्मण-श्रेष्ठीने एक जिनमन्दिर बनवाकर उसमें अनन्त जिनकी प्रतिष्ठा

की। उसके गुरू विशालकीर्त्ति भट्टारक थे। ये विद्यानन्द-मुनीश्वरके शिष्य, बलात्कारगणके प्रधान, राय-राजगुरु देवेन्द्रकीर्त्ति-भट्टारकके शिष्य थे। बोम्मण-श्रेष्ठीके पुत्र बोम्मणने मन्दिरकी रक्षा की थी। उसके पाँच पुत्र थे।]

[EC, VIII, Tirthahalli tl., No. 166]

६९२-६९९

शत्रुंजय—प्राकृत।

[सं० १६७५ से सं० १६८३ = १६१९ ई० से १६२६ ई० तकके]

श्वेताम्बर लेख।

७००

गिरनार—संस्कृत।

[सं० १६८३=१६२६ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[ASI, XVI, p. 360, No. 31, t. & tr.]

७०१

शत्रुंजय;—प्राकृत।

[सं० १[६]८४=१६२७ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

७०२

शत्रुंजय;—संस्कृत।

[संवत् १६८६ तथा शक सं० १५५१]

(बड़े आदीश्वर मन्दिरके उत्तर-पूर्वके छोटे आँगनमें, दिगम्बर जैन मन्दिरका यह शिलालेख है।)

पं० १. **संवत् १६८६ वर्षे** वैशाख सुदि ५ बुधे **शाके १५५१** प्रवर्त्तमाने श्री **मूलसङ्घे सरस्वतीगच्छे**

२. **बला [त्का] रगणे** श्री **कुंदकुंदाचार्य्यान्वये** भट्टारक श्री **सकलकीर्त्ति-देवा**स्तत्पट्टे भ० श्री **भुवनकीर्त्तिदेवा**स्तत्पट्टे भ० श्री **ज्ञानभूषणदेवा-**

३. स्तत्पट्टे भ० श्री **विजयकीर्त्तिदेवा**स्तत्पट्टे भ० श्री **शुभचन्द्रदेवा**स्तत्पट्टे भ० श्री **सुमतिकीर्त्तिदेवा**स्तत्पट्टे भ० श्री **गुणकीर्त्तिदेवा**स्तत्पट्टे भ० श्री **वादिभूषणदेवा**स्तत्पट्टे भ० श्री **रामकीर्त्तिदेवा**स्तत्पट्टे भ० श्री **पद्मनन्दि**गुरूपदेशात् पातसाहाश्री**शाहा-**

४. **ज्याहां** विजयराज्ये श्री गुर्जरदेशे श्री **अहमदावाद**वास्तव्य**हुंबड़**-शातीयवृहछा-खीयवाग्वरदेशस्थांतरीयनगरनौतनभद्रप्रासादोद्धरणधार बाडा सं० भोजा भा० सं० लकु सु० संवस्ता भा० सं० लटकण भा० सं० ललतादे तयोः

५. सुत निजकुलकमलविकाशनैकसूर्यावतारः दानगुणेन नृपतिश्रेयांससमः श्री-जिनबिंबप्रति-

६. ष्ठातीर्त्थयात्रादिधर्म्मकर्म्मकरणोत्सुकचित्तसंघपति श्रीरत्नसी भा० सं० रूपादे द्वितीय भा० सं० मोहणदे तृतीय भा० सं० नं [थ] रंगदे द्वितीयसुत **संघवी श्रीरामजी** भा० सं० केशरदे तयोः सुत **संघवी**

७. **डुंगरसी** भार्या सं० डाडमदे द्वितीयसुत **संघवी [रायव] जी** भा० सं० गमतादे [एते सर्वे] महासिद्धक्षेत्र श्री **श [त्रुंजयनाम्नि] गिरौ** श्री जिनप्रासादे श्री शान्तिनाथबिंबं कारयित्वा नित्यं प्रणमंति । शुभं भवतु [॥]

[भावार्थ—यह अभिलेख अहमदाबाद निवासी हुँबड (हूमड़) जातिके किन्हीं सद्गृहस्थोंने, जिनके नाम इस अभिलेखमें दिये हुए हैं, खुदवाया है। इसमें उनके द्वारा इस शत्रुञ्जय पर्वतपर श्री शान्तिनाथकी प्रतिमाके स्थापनकी खास बात है। यह बिंब प्रतिष्ठा संवत् १६८६, वैशाख सुदि ५, बुधवार, तथा शक सं० १५५१ के समय हुई थी। आम्नाय तथा भट्टारकोंकी परम्परा इस तरह चालू थी :—

मूलसंघ सरस्वतीगच्छ, बलात्कारगण, कुन्दकुन्द अन्वय, इसके बाद भट्टारकों की परम्पराका क्रम सकलकीर्त्ति, भुवनकीर्त्ति, ज्ञानभूषण, विजयकीर्त्ति, शुभचन्द्र, सुमतिकीर्त्ति, गुणकीर्त्ति, वादिभूषण, रामकीर्त्ति, और पद्मनन्दि। इस समय बादशाह श्री शाहाज्याहां (**शाहजहाँ**) का राज्य प्रवर्तमान था।]

[EI, II, p. 72.]

७०३

शत्रुञ्जय;—प्राकृत-ध्वस्त।

[सं० १६८६ = १६२९ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

७०४

नखौर (Bihar Miridional);—**संस्कृत।**

[सं० १६८६ = १६२९ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[H. T. Colebrook, Miscell, Essays, Vol. II (1837), p. 318–319, t et, tr; pl. VII, f.-s.]

७०५

मलेयूर;—कन्नड-भग्न।

[बिना काल-निर्देशका; लगभग १६३० ई० (लू० राइस).]

[उसी पर्वतपर, पार्श्वनाथ-बस्तिके प्राङ्गणमें पूर्वकी ओर एक पाषाणपर]

... ... जीर्णोद्धारवनु माडि ... जिन-मुनिगर प्रतिष्ठि ... अप्प तोरण-स्तम्भदलि राय-**करणिक देवरसरु** तम्म पितृगळु **चन्दप्पगू** मायि...निलसि दीप-स्तम्भ ... तोरण ... यनु माडिसिद

[तोरणके स्तम्भोंको सुधरवाकर और उनपर जिन-मुनियोंके प्रतिबिम्बोंकी स्थापनाकर राय-करणिक देवरसने, अपने पिता चण्डप्प तथा ... ... के नामपर, एक दीप-स्तम्भ बनवाया ।]

[EC, IV, Chamrajnagar tl., No. 156]

७०६–७०८

सरोत्रा;—संस्कृत और गुजराती ।

[सं० १६८१ = १६३२ ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

[J. Kriste, EI, II, No. V, Nos. 20–26 (p. 31–33), t. et. a.]

७०९

श्रवणबेलगोला;—कन्नड ।

[शक १५५६ = १६३४ ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

७१०

हलेबीड;—संस्कृत और कन्नड ।

[शक १५६० = १६३८ ई०]

[पार्श्वनाथ बस्तिके आँगनमें पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

नमस्तुङ्ग इत्यादि ॥

पायादाया[स] खेद-क्षुभित-फणि-फणा-रत्न-निर्य्यत्न-निर्य्यच्-।
छाया-माया-पतङ्ग-द्युति-मुदित-वियद्-वाहिनी-चक्रवाकम् ।
अभ्रान्त-भ्रान्त-चूडा-तुहिनकर-करानीक-नाळीक-नाळ- ।
च्छेदामोदानुधाव ··· रथ-खगं धूर्जटेस्ताण्डवं वः ॥

स्वस्ति श्री **जयाभ्युदय-शालिवाहन-शक वर्ष १५६० नेगे सलुव ईश्वर-संवत्सरद फाल्गुन शुद्ध ५ गु गुरुवारदल्लु** श्रीम**द्वेलापुरी चेन्न वेङ्क-टेश्वर**-क्रम-कमल-युगळ ··· स्थिर-राज-हंसराद वैष्णव-मतामृत-वार्धि-प्रवर्द्धमान-पूर्ण्ण सुधासूति-बिम्बायमानराद प्रजा-पालन-मन्त्र-पालन-आत्म-पालन-कुल-पालन समञ्जसत्व-सप्तांग-राज्य-सम्पन्नराद कोट्टभाषेगे तप्पुव घोरेगळ गण्ड दुष्ट-निग्रह-शिष्ट-प्रतिपालकराद सामादि-चतुरुपाय-संयुतराद । पञ्चाङ्ग-सन्मन्त्र-गुण-समेतराद । रिपु-राय-शरभ-गण्ड-भेरुण्डराद वीर-क्षत्र-चूडामणि । शरणागत-वज्र-पञ्जरराद । सिन्धु-गोविन्द धवळांक-भीम मणिनागपुर-वराधीश्वर । बलिदु सप्तांग-हरण । **तुरक-दळ-विभाड** इत्याद्यनेक-बिरुदावळी-विराजमानराद **कृष्णप्प-नायक-अय्य-**नवर कलि-कालाष्टम-चक्रवर्ति वेङ्कटाद्रिनायक-अय्यनवरु **बेळूर**-राज्यवन्नु धर्म्मदिं प्रतिपालिसुत्तं यिरलु **हळेयबीड विजय-पार्श्वनाथ-स्वामिय** बसदिय कम्भगळिगे **हुच्चप्प-देवरु** लिंग-मुद्रेय हाकलागि आ-लिङ्ग-मुद्रेयनु **विजयप्पनु** तोडेयलागि । सज्जन-शुद्ध-शिवाचार-सम्पन्नराद । **देव-पृथ्वी-महामहत्ति**नोळगाद अतिथिगळु । सूर्य्यन तेज चन्द्रन शान्त समुद्रद गम्भीर । नन्दिकेश्वरन प्रतिज्ञे कल्पवृक्षद फल बलिय वीरते रामन सयिरणे लक्ष्मणन हित-कार हरिश्चन्द्रन सत्य कोट्ट-भाषेगे तप्पुवर मीसेय कोयिववरुं । नरनन्ते तीर्त्थ-सिंह ··· मठ-मने-देवालय-जीर्णोद्धारकरुं क्षमे-दयेवन्तरुं विष्णुविनुपाय, ब्रह्मन चातुर्य्य हनुमन्तन शक्ति जाम्बवन युक्ति प्रह्लादन भक्ति नित्य-जप-शिव-पूजा-पञ्चाक्षरी-मन्त्रालंकृतराद देव-पृथ्वी-महा-महत्तु यी-स्थळद **हलेवीड बसवप्प-देवरु पुष्पु-गिरिय** पट्टद-देवर-मुन्ताद देशा-भावद महा-महत्तुगळिगे **बेळूर-राज्यद जैन-सेट्टि**-गळु भगवदर्हत्परमेश्वर पाद-पद्माराधकराद स्याद्वाद-मत-गगन-सूर्य्यराद आहा-

राभय-भैषज्य-शास्त्र-दान-विनोदरुं । खण्ड-स्फुटित-जीर्ण-जिन-चैत्यालयोद्धारकरुं जिन-गन्धोदक-पवित्रीकृतोत्तमाङ्गराद सम्यक्त्वाद्यनेक-गुण-गणालंकृतराद हासनद देवप्प-सेट्टिय सु-कुमार-पद्मण्ण-सेट्टि-मुन्ताद-समस्तरु बिन्नहं माडिकोळलागि आ-महा-महत्तु एकस्थरागि वा सिकोण्डु कट्टुमाडिसिद विवर। विभूति-वीळ्य-वन्नु माडिसिकोण्डु यी-विजय-**पार्श्वनाथ**-स्वामिगे पूजे-पुनस्कार-अङ्ग-रङ्ग-वैभव-दीपाराधने-अग्रयोदक-प्रभावना-मुख्यवाद जैनागमक्के सलुव धर्म्मव पूर्व-मर्य्यादे-यल्लि आ-चन्द्रार्क्क-स्थायियागि माडिकोळ्ळि येन्दु बेळूर वेङ्कटाद्रि-नायक-अय्यन-वरिगे सकल-साम्राज्याभ्युदयार्त्थ-निमित्ताग्नि आ-दोरेय दक्षिण-दोर्-दण्डराद प्रधान-वंशोद्धारकराद पद-वाक्य-प्रमाण-पारावार-पारङ्गतराद पर-पुरुषार्थ-परम-पण्डितराद। काळप्पय्य-मंत्रि-प्रियाग्र-कुमार मंत्रि-कुलाग्र-गण्यराद कृष्णप्पय्यनवरु यी-धर्म्म-कार्य्य-वनु कयि-विडिदु पुरो-वृद्धिगे सलिसलागि आ-महा-महत्तु बरसि कोट्ट शील-शासन यी-जैन-धर्म्मक्के आवनानोर्व्वनु विघ्नव माडिदरे आतनु तम्म महा-महत्त पडव कूडिदबनल्ल शिवद्रोहि जङ्गम-द्रोहि विभूति-रुद्राक्षिगे तप्पिदवनु काशि-रामेश्वरादि तीर्त्थङ्गल लिङ्गक्के तप्पिदवरु यी-महा-महत्तिन वप्पित ।। वर्द्धताम् जिनशासनम् ।

[यह लेख शक सं० १५६० के समयमें जैन और शैवोंके ऐक्यका तथा परधर्मसहिष्णुताका एक खासा नमूना है। इसमें मंगलाचरणमें पहले जैनदर्शन की प्रशंसा है, फिर शम्भु (महादेव) को नमस्कार किया है। इसमें बताया गया है कि (उक्त मितिको) जब कृष्णप्प-नामक-अय्यका पुत्र, कलिकालका अष्टम-चक्रवर्त्ती, वेङ्कटाद्रि-नामक-अय्य बेलूर-राज्यकी न्यायसे रक्षा कर रहा था, तब हुच्चप्प-देवने हलेयबीडुके विजय-पार्श्वनाथ-बसदिके खम्भोंपर लिङ्ग-मुद्रा लगायी और विजयप्पने उसको तोड़ दिया,—तब हलेबीडुके देवपृथ्वी-महामहत्तु, पुष्प-गिरिके पट्टदेव, तथा देशभागके अन्य महा-महत्तुओंने मिलकर यह आज्ञा निकाली कि जैन लोग चन्द्र, सूर्यके स्थायी होनेतक अपनी सब धार्मिक विधि कर सकते हैं।]

[EC, V, Belur tl., No. 128.]

७११

शत्रुंजय;—प्राकृत ।

[सं० १६९६=१६३९ ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

७१२

श्रवणबेल्गोला;—संस्कृत ।

[शक १५६५=१६४३ ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

७१३

श्रवणबेल्गोला;—मराठी ।

[शक १५७०=१६४८ ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

७१४–७१५

शत्रुंजय;—प्राकृत ।

[सं० १७१० = १६५३ ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

७१६

सिरोही;—संस्कृत ।

[सं० १७१८=१६६१ ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

[H. H. Wilson, Asiat. Res., XVI, p. 316, No. XLIII, a.]

७१७

सिरोही,—संस्कृत।

[सं० १७२१ = १६६४ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[H. H. Wilson, Asiat. Res., XVI, p. 316, No. XLIII, a.]

७१८

श्रवणबेलगोला;—कन्नड।

[वर्ष सौम्य = १६६६ ? (लू. राइस)]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

७१९

मदने;—कन्नड।

[शक १५९६ = १६७४ ई०]

[मदने ग्राममें, ग्राम-प्रवेशके पासके एक पाषाणपर]

श्री **शक-वर्ष १५९५** नेय **परिधावि-संवत्सरद** पुष्य शुद्ध १० यल्लि श्रीमतु-मैसूर **देव-राज-ओडेयरु बेळुगोळद चारुकीर्त्ति-पण्डिताचार्य्यर** दान-शालेय जैन-संन्यासिगळिगे नित्य-अन्न-दानक्के सर्व्वमान्य-वागि धारादत्त-वागि कोट्ट **मदणि**-ग्रामवु मंगल महा श्री श्री श्री ॥

[(उक्त मितिको) मैसूरके देवराज-वोडेयरने बेळुगोळके चारुकीर्त्ति-पण्डिताचार्यकी दानशालाके जैन-संन्यासियोंको आहार-दान देनेके लिये मदणि गाँव दानमें दिया। महान् सौभाग्य।]

[EC, V, Channarayapatna tl., No. 273.]

७२०

मलेयूर;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक सं० १५९६ = १६७४ ई०]

[इसी पहाड़ीपर, बलि-कल्लुके उत्तर-पूर्वकी चट्टानपर]

शाके द्रव्य-पदार्थ-भूत-धरणी-संख्या-मिते वत्सरे
चानन्दे वर- **पुष्य-मास-सित-पक्षे-पञ्चमी सत्तिथौ ॥**
लक्ष्मीसेन-मुनीश्वरेण पर-दुर्व्वादीभ-सिंहेन वै
हेमाद्रौ वर-पार्श्वनाथ-जिनपे दीक्षा श्रिता सत्फला ॥

विजयप्पैय्य पाद बरसिदनु ।

[लक्ष्मीसेन-मुनीश्वरने हेमाद्रिमें पार्श्वनाथ जिनालयके अन्दर दीक्षा ली। चरणचिह्न विजयप्पैय्यने स्थापित किये थे।]

[EC, IV, Chamrajnagar tl., No. 149.]

७२१

सिरोही;—संस्कृत।

[सं० १७२६ = १६७२ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[H. H. Wilson, Asiat. Res., XVI, p. 316, No. XLIII, a.]

७२२

श्रवणबेल्गोला;—कन्नड़।

[शक १६०२ = १६८० ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

७२३

बेळ्ळूरु—संस्कृत और कन्नड़।

[बिना कालनिर्देशका, पर सम्भवतः लगभग १६८० ई० का]

[बेळ्ळूरु (नेह्लीकेरी परगना) में विमल-तीर्थंकरकी बस्तिमें वरण्डाकी दीवालपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

श्री**समन्तभद्र**मुनये नमः ॥ श्रीमतु-**डिल्ली-कोल्लापुर-जिनकञ्चि-पेनुगुण्डे**-सिंहासनाधीशराद **लक्ष्मीसेन-भट्टारक** प्रतिबोधदिन्द श्री-मैसूर **देवराज-वोडेयरु** धारा-दत्तवागि कोट्ट क्षेत्रदल्लि स्वशिष्यरह हुलिकल्ल पदुमण-सेट्टर सुतराद दोड्डादण्ण-सेट्टर पुत्रराद **सक्करे-सेट्टरु** अभ्युदय-निश्श्रेयस-निमित्वागि आ-चन्द्रार्क-वागि निर्म्मापिसिद **विमल-नाथन** चैत्यालयवु श्री

[जिनशासनकी प्रशंसा। समन्तभद्र-मुनिको नमस्कार। डि (दि) ल्ली, कोल्लापुर, जिनकञ्चि, और पेनुगोण्डेके सिंहासनाधीश लक्ष्मीसेन-भट्टारकके प्रतिबोधन (सम्मति) से मैसूरके **देवराज-वोडेयर**की दी हुई जमीनपर हुलिकल पदुमण-सेट्टिके पुत्र दोड्डादण्ण-सेट्टिके पुत्र सक्करे सेट्टि—जो कि लक्ष्मीसेन भट्टारकके शिष्य थे—ने अपने अभ्युदयकी वृद्धिके निमित्त विमलनाथ चैत्यालय बनवाया था और यह कामना की थी कि यह चैत्यालय जबतक सूर्य-चन्द्र हैं तबतक इस पृथ्वीपर रहेगा।]

[EC, IV, Nagamangala, tl. No. 43]

३. भट्टारक श्री **जगत्कीर्त्ति**स्तत्पट्टे भट्टारक श्री **ललितकी-**
४. **र्त्तिजी** तदाम्नाये अग्रोतकान्वये गोयलगोत्रे प्रयागन-
५. गरवास्तव्यसाधु श्री**रायजीमल्ल**स्तदनुज**फेरुम-**
६. **ल्ल**स्तत्पुत्रसाधु श्री **मेहरचन्द**स्तद्भ्राता **सुमेरचन्द-**
७. स्तदनुजसाधु श्री**माणिक्यचन्द** स्तत्पुत्रसाधु श्री **ही-**
८. **रालालेन कौशांबी**नगरबाह्य **प्रभास**पर्वतोपरि श्री-
९. **पद्मप्रभ**जिनदीक्षाकल्याणकक्षेत्रे श्री जिन-
१०. बिंबप्रतिष्ठा कारिता अंग्रेजबहादुरराज्ये सु [शु] भं [॥]

अनुवाद—शुक्रवार, मार्गशीर्ष शुक्ला षष्ठी, सं० १८८१ के दिन, काष्ठासंघ, माथुरगच्छ, पुष्करगण, लोहाचार्यके अन्वय (परम्परा) में भट्टारक श्री जगत्कीर्त्ति उनके पट्टपर भट्टारक श्री ललितकीर्तिजी इनकी आम्नायमें अग्रोतक अन्वय (जाति) तथा गोयल गोत्रके प्रयाग नगरके रहनेवाले साधु (साहु = सेठ) श्री रायजीमल्ल, उनके अनुज फेरुमल्ल, उनके पुत्र साधु श्री मेहरचंद, उनके भ्राता सुमेरचंद, उनके अनुज साधु श्री माणिकचंद, उनके पुत्र साधु श्री हीरालालने कौशाम्बी नगरके बाहर प्रभास पर्वतके ऊपर श्री पद्मप्रभ (तीर्थङ्कर) के दीक्षा कल्याणक क्षेत्रमें श्री जिन (पार्श्वनाथ) बिंब प्रतिष्ठा कराई। यह काल अंग्रेज लोगोंके शासन का था [१८२४ ई०]।

[EI, II, NoXIX, No3 (P. 244)]

७५७

श्रवणबेलगोला—कन्नड़।

[शक १०४८ = १८२७ ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

७५८

केलसूरु—संस्कृत ।

[काल लुप्त, (१८२८ ई० ! लू० राइस)]

[केलसूरु (केलसूरु परगना) में, बस्तिके अन्दरकी दीवालपर]

श्री **चन्द्रप्रभ**जिनेन्द्राय नमः ।

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति श्री-शकवत्सरे **त्रि......षष्टि-त्रय-संख्ये** स्थिते
वर्षे **सम्प्रति सर्वधारिणि** सिते मासे तपस्ये तिथौ ।
सप्तम्यां गुरुवासरे मृगशिरो-भे योग आयु ··· ···
··· ··· **कर्णाटक**नामदेशविलसन्मध्यस्थिते ··· शुभे ॥
श्रीमान् यो **महिसूरु**नामनगरे सद्रत्नसिंहासना—
सीनः पार्थिव-**चामराज**-तनुभूरात्रेय-गोत्रोदितः ।
कुर्व्वन् सन्निह दुष्ट-निग्रहमतश्शिष्टानुरक्षां च सु-
प्रेक्षावान् पृथुपुण्यराशिरपि सत्पुण्योद्यमादि-क्षमः ॥
नानादेशनृपालमौलिविलसद्रत्नप्रभार्च्यक्रमां-
भोजो राज्यविचारणैकचतुरो भास्वान् वदान्याग्रणीः ।
तेजस्वी विबुधौघरक्षणचणस्सुज्ञानलीलानिधि-
र्नानाशास्त्रविचारणो विजयते श्री **कृष्णराजो** नृपः ॥
तत्पादाश्रित-**शान्त-पण्डित**-सुतश्**श्रीवत्सगोत्रो**द्भवो
राजद्राजयस ··· नः प्रविलसद्विज्ञापनाकर्णनात् ।
दिव्ये हृद्यवधार्य पुण्यपुरुषस्सद्धर्मकृत्यं महान्
सोऽसौ ··· **केलसूरु**-नामनि पुरे चैत्यालयादि-स्थिताम् ॥

श्री-**चन्द्रप्रभ**-तीत्थकृद्विजयदेवज्वालनीदेविका-
बिम्बानां ··· ··· पुनर्नवलसच्चित्रान्वितां शोभनाम् ।
प्राप्ताश्चर्यरसामकारयदपि श्रेष्ठां प्रतिष्ठां पुनः
··· ··· ··· शुभ ··· ··· नाट-गुरुणा वक्तुं यथैवन्मनः ॥
श्री मङ्गलं भवतु । वर्द्धतां जिन-शासनम् ।

[चन्द्रप्रभ-जिनेन्द्रको नमस्कार । जिन-शासनकी प्रशंसा ।

कर्नाटक देशके **महिसूर** नामक नगरमें राजा चामराजका पुत्र **राजा कृष्णराज** रत्नजटित सिंहासनपर बैठा । वह दुष्टोंका निग्रह और शिष्टोंका पालन करता था । (उसकी प्रशंसा) उसने शान्त-पण्डितके पुत्र श्रीवत्स-गोत्रीय······जके प्रार्थना-पत्रसे **केलसूर**के चैत्यालयमें फिरसे तीर्थंकर चन्द्रप्रभ, विजय-देव तथा ज्वालिनी-देविकाके बिम्बों (प्रतिमाओं) को स्थापित करवाया । चैत्यालयको भी सुधरवाकर उसको फिरसे चित्रित किया था ।]

[EC, IV, Gundlupet tl., No. 18]

७५९–७६३

शत्रुञ्जय—प्राकृत ।

[सं० १८८५ से १८८६ तक= १८२८ से १८२९ तक]

श्वेताम्बर लेख ।

७६४

नरसीपुर;—संस्कृत तथा कन्नड ।

[शक १७५१=१८२९ ई०]

[नरसीपुर (नेम्मनहल्लि परगना) में, शान्तय्यके खेतमें एक पाषाणपर]

श्री दे

शुभमस्तु ।

श्रीमत्परम-गंभीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

स्वस्ति श्री विजयाभ्युदय-**शालिवाहन-शक-वरुष १७५१ विरोधि सं०** कार्तिक-शु ५ भानु ॥ श्रीमद्राजाधिराज महाराज **श्री-कृष्ण-राज-वाडेयरय्य**-नवरु **मैसूर**-नगरदल्लि रत्न-सिंहासनारूढ़रागि पृथ्वी-साम्राज्यं गेय्वन्दु । **दळ-वायिकेरे**गे बन्दु इद्दु तपिशिकोण्डु अडविगे होद आनेयन्नु अप्पणे-मीरेगे गुण्डिनिन्द होडिशि हजूरिगे वपिस्त बगे **हेग्गडदेवन कोटे** अमलुदार **शान्तय्य**न मग **देवचन्द्रैय**गे गिनामागि अप्पणे कोडिसिद्दु ताळोकु-पैकि **सागर**द होबळि वळित **नरसिंहपुर**द ग्रामदल्लि बेदलु कं गु १२—० वरहद भूमिगे चतु-र्दिक्किगू शीला-प्रतिष्ठे माडिसि कोट्टद्दु यी-शिलेगे पश्चिम होल-गारिगे तुण्डु सहा १ यिदके शेरिद अड्डु सह कुळ मोगचु कं० गु० १०—६ यी शिलेगे पूर्व हत्ति-होल १ कके कुळ मोगचु कं गु १—४ उभयं हन्नेरडु-वरहाद बेदलु-भूमिगे यी-कार्त्तिक-ब १३ सोमवारदल्लु शिला-प्रतिष्ठे माडि यीत यीतन पुत्र-पौत्र-पारम्पर्यवागि निरुपाधिक-सर्वमान्यवागि अप्पणे कोडिसिद शासना ।

[जिन शासन की प्रशंसा ।

जिस समय मैसूरकी रत्नजटित गद्दीपर बैठकर राजाधिराज महाराज कृष्णराज वोडेयरय्य इस पृथ्वीपर राज्य कर रहे थे:—एक हाथी दळवायिकेरीमें आया और जङ्गलमें भाग गया। हाथीको मारकर राजाके पास लानेका हुक्म हुआ। हेग्गडदेवन्कोटेके अमलदार शान्तय्यके पुत्र **देवचन्द्** ने यह काम सम्पन्न किया, तो उसे इनाम मिलनेका हुक्म हुआ; और इनाम में उसे उपर्युक्त तालुकेके **सागर** होबलि (प्रदेश) के **नरसिंहपुर** गाँवमें १२ वराह-जितने मूल्यकी सूखी जमीन दी गयी। इस भूमिको चारों ओर पत्थरोंकी निशानीसे अङ्कित कर दिया गया था। यह भूमि उसके पुत्रों, पौत्रों और सन्तान-दरसन्तानके उपभोगके लिये बिना किसी बाधाके, सब करोंसे मुक्त रूपमें दी गयी थी।]

[**EC, IV, Heggadadevan-Kote tl., No. 51**]

७६५

शत्रुञ्जय—प्राकृत ।

[सं० १८८७ = १८३० ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

७६६

श्रवणबेल्गोला;—संस्कृत ।

[सं० १८८८ और शक १७१२ = १८३० ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

७६७–७७७

शत्रुञ्जय—प्राकृत ।

[सं० १८८८ से सं० १८९३ तक = ई० १८३१ से १८३६]

श्वेताम्बर लेख ।

७७८

मलेयूर;—संस्कृत तथा कन्नड ।

[शक सं० १७६० = १८३८ ई०]

[उसी पहाड़ीपर, चन्द्रप्रभ प्रतिमाके पश्चिमकी ओरकी चट्टानपर]

श्री श १७६० । स्वस्ति श्री वर्द्धमानाब्दः २५०१ विळम्बि-सं० वैशाख-शु ३ गु । सा । देवचन्द्रनु पितृ-सन्तानमं बरचिदं मङ्गलमहा श्री श्री श्री

[वर्द्धमान सं २५०१, शक १७६०, विळम्बि वर्षमें देवचन्द्रने अपने पूर्व-पुरुषोंकी परम्परा लिखवायी ।

[EC, IV, Chamarajnagar tl., No. 154.]

७७१-७९२

शत्रुञ्जय—प्राकृत।

[सं० १८९७, शक १७६२ से सं० १९१९, शक १७८१ तक = ई० १८४० से ई० १८५१ तक] श्वेताम्बर लेख।

७९३

कोथरा—संस्कृत।

[सं० १९१८, शक १७८३ = १८६१ ई०] श्वेताम्बर लेख।

[D. P. Khakhar, Report on remains in Kachh (ASWI, selectoins, No. CLII), p. 75-76, t.; p. 91 a (ins. No. 1).]

७९४-७९८

शत्रुञ्जय;—प्राकृत।

[सं० १९२१ से १९३० तक=ई० १८६४ से १८७३ तक] श्वेताम्बर लेख।

७९९

शालिग्राम;—संस्कृत और कन्नड।

[शक १८००=१८७८ ई०]

[शालिग्राममें, अनन्तनाथ-बस्तिके सामनेके स्तम्भपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥

स्वस्ति श्री विजयाभ्युदय-शालिवाहन-शकाब्दः १८०० नेय **ईश्वर-संवत्सरद** माघ-शु ५ लु स्वस्ति श्री **पेनगोण्डे**-शेनगण-संस्थानद श्री**लक्ष्मी-सेन भट्टारक**-स्वामियवर शिष्यनाद **चिदगूरु** पट्टण-**शेट्टि वीरप्पन**वर कुमार **अण्णैय**नवर कुमार हजूरु-मोतीखाने-वीरप्प तम्म **तिम्मप्प** सह **शालिग्राम-**

दल्लि यी-नूतनवाद चैत्यालय कट्टिसि श्री अनन्त-स्वामियन्नु स्वास्त्यक्षेत्र-सहित प्रतिष्ठे माडि यिरुवदक्के भद्रं शुभं मङ्गलं श्री ॥

[जिन शासन की प्रशंसा । सेनगणकी संस्थान पेनगोण्डेके लक्ष्मीसेन भट्टारक-स्वामी के शिष्य यिदगूरके पट्टण-शेट्टिके पुत्र अण्णैय्यके पुत्र **वीरप्प** और **तिम्मप्प** थे । तिम्मप्प छोटा भाई था । वीरप्प मोतीखानेके महलमें काम करता था । वीरप्पने शालिग्राममें इस नवीन चैत्यालय का निर्माण कराकर इसे **अनन्तस्वामी**को सौंप दिया ।]

[EC, IV, Yedatore tl., No. 36]

८००-८०३

शत्रुञ्जय—प्राकृत ।

[सं० ११३१ से ११४३ तक = ई० १८८२ से १८८६ तक]

श्वेताम्बर लेख ।

८०४-८३०

श्रवणबेलगोला;—कन्नड़ ।

[अनिश्चित कालके]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

८३१

तिरुमलै;—तामिल ।

[काल अनिश्चित]

१ स्वस्ति श्री [॥] **कडैकोट्**-

२ **टूर् त्तिरुमलैप्परवादिम**-

३ **ल्लर्** माणाकर **अरिष्टने**-

४ **मि आचार्य्यर्** शेय्-

५ वित यक्षित्तिरु-

६ मेनि ॥

अनुवाद—स्वस्ति ! श्री ! कडैक्कोट्टूरके अरिष्टनेमि-आचार्यने, जो तिरुमलैके परवादिमल्लके शिष्य थे, एक यक्षी की प्रतिमा बनवाई ।

[South Indian ins., I, No. 73 (p. 104–105) t. & tr.]

८३२

कलुगुमलै;—तामिल ।

[अनिश्चित काल]

१ श्री [॥] [आ] णनूर् सिंगणं-
२ दिक्कुरवडिगळ् मा-
३ णाक्कर् नागणन्दि-क्कुरव-
४ [डि] गळ् शे [य्] वित्त ति [रु] मेणि [॥]

अनुवाद—(यह) प्रतिमा आणनूर्के पूज्य गुरु **सिंहनन्दि**के शिष्य पूज्य गुरु **नागनन्दि**ने बनवायी थी ।

[EI, IV, p. 136, No. 6.]

८३३

बस्तीपुर;—कन्नड़-भग्न ।

[काल निश्चित नहीं]

[बस्तीपुरके उत्तरमें एक पाषाणपर]

क ॥ **अकलङ्क** ... ... ।
वाक्-चन्द्रकीर्त्तियं धवळिसे दिगम्बर ।
... ... भव्य-प्रकार-चकोरं नलेय ।
... ... य कुटिल-वाइकन्य पदाम्भोजम् ॥
[अकलङ्ककी प्रशंसामें]

[EC, III, Seringapatam tl,. No. 145.]

८३४

चिद्रवल्लि;—कन्नड़।

[बिना काल-उल्लेखका]

[चिद्रवल्लि (सोसले परगना) में, गाँवके पश्चिम बलगै रावळके खेतकी एक चट्टानपर]

अय-महित-कोण्डकुन्दा- । न्वय-सम्भव-देशिकाख्य-गणदोळ् गुणिगळ् ।
प्रिय-धर्म्मर् न्नेगळ्दरुपा- । त्त-यशर् ··· नन्दि-देवरी-वसुमतियोळ् ॥
आ-गुणिगळ शिष्यन्तियर् । आगमदिष्टदोळे नेगळ्दु तपदोळ् सलेका-
लागमनरिदात्तति सन्द्- । ओगडिसदे नागि यब्बे-कान्तियरागळ् ॥

तोरि ··· तप परि-ग्रहमं नेरे नोन्ताराधनातीत ··· मनदोळ् पडङ्गल-नरिदोप्पु-तमय्दमसमान ग ··· ··· भक्तियिन्दमपत्य-श्रीकारियमनात्माम्बिकगे प्रत्यक्ष-परोक्ष-विनयमं मान्य-चरित··· ··· ···

[देशिक-गण और कोण्डकुन्दान्वयके ··· नन्दि-देवकी शिष्या नागियब्बे-कन्ति अपनी श्रद्धा और पवित्रताके लिये विख्यात थी। गृहीत व्रतोंकी परिपूर्णता-पूर्वक स्वर्गवास हो जानेसे, मातृक प्रेमके कारण, ··· माँकी स्मृतिमें···]

[EC, III, Tirum Kudlunarasipur, tl., No. 133]

८३५

बेरम्बाडि;—संस्कृत-भग्न।

[बिना काल निर्देशका]

[बेरम्बाडिमें (कुवनूरु परगना) मारी मन्दिरके पास एक पाषाणपर]

ओं नमोऽर्हते भगवते चण्डोग्र-पारिश्वं (पार्श्व) नाथाय धरणेन्द्र-पद्मावती-सहिताय सर्व्वव्याधिहरं अळुमोगे ··· ··· ··· नाना ··· श्री-पञ्च-परमेष्ठी ··· ··· ···

[ॐ। भगवान् अर्हत् चण्डोग्र-पार्श्वनाथको नमस्कार हो। वे धरणेन्द्र-पद्मावती सहित हैं। वे सब व्याधियोंको दूर करनेवाले हैं ··· ··· ··· ··· पाँच परमेष्ठी ··· ··· ··· ···]

[EC, IV, Gundlupet tl., No. 96]

८२६

जवगल्लु;—कन्नड-भग्न।

[अनिश्चित कालका]

[जगवल्लु (जगवल्लु परगने) में, जैन-बस्तिके पासके पाषाणपर]

स्वस्ति श्री कोण्डकुन्दान्वय देशी गण**द अमरचर-भटार**र शिष्यन्तिय अष्टो-पवासदर किया**गुणचन्द्र-भटार**र सधर्म्मगळु तोम्भत्तेळ वरिसा त ··· वय्दुन बि ··· ··· निसिधिय कल्लनिरिसिद

[कोण्डकुन्दान्वय तथा देसी-गणके अमरचर-भट्टारकी शिष्या, जो (महीनेमें) आठ दिनका उपवास करती थी और गुणचन्द्र-भट्टारकी साथिन थी, ९७ वर्षतक जीयी। उसके बहनोई या सालेने यह स्मारक खड़ा किया।]

[EC, V, Arsikere tl., No. 3.]

८२७

कोलूरु;—संस्कृत तथा कन्नड।

[वर्ष विरोधिकृत्]

[कोलूरुमें, कुमरि-हक्कलुमें पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥

स्वस्ति श्रीमतु आदिनाथ-देव-पादाराधक सम्यक्त्व-रत्नाकर जिन-गन्धोदक-पवित्रीकृतोत्तमाङ्गे**यप्प राजियब्बे-हेग्गडिति ४५ नेय विरोधिकृतु-**

संवत्सरद माघ-सुध(द्ध)-पञ्चमी-बृहवारदन्दु कोळूरोळ् सुर-लोक प्राप्ते-यादळ् ॥ सरस्वतिगण-पुत्र-सुमति-पण्डित-शिष्य रूवारि सोमोजन पुत्र दुम्मायन **बेस**

[इस लेखमें किसी भी सुरलोक प्राप्तिका दिन दिया है और कोई विशेषता नहीं है।]

[EC, VIII, Sagar tl., No. 106]

८३८

हले-सोरब;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[काल निश्चित नहीं]

[हले-सोरबमें, उसी स्थानपर एक दूसरे समाधि-पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥ [१]

श्री **हेमचन्द्र-देव**र गुड्डनु **दम गोड**न निषिधि श्री-वीतरागाय श्रीमतु यी-कल माडिदनु **सोरबद बयिरोजनु** ॥

लेख स्पष्ट है।

[EC, VIII, Sorab tl., No. 53.]

८३९

गिरनार;—संस्कृत-भग्न ।

श्वेताम्बर लेख ।

[ASI, XVI, P. 356, No. 15, t. & tr.]

८४०

गिरनार;—संस्कृत-भग्न ।

श्वेताम्बर लेख ।

[ASI, XVI, p. 356, No. 17, t. & tr.]

८४१

गिरनार;—संस्कृत।

[दक्षिणी प्रवेश-द्वारके पासके गिरिनारी मन्दिरके मण्डपमें भूमि-मञ्जिलके एक पाषाण-तलपर]

श्री सुभकीर्तिदेव साहुजाजासुत साहु तेजकीर्ति देव।

अनुवादः—श्री सुभकीर्तिदेव और साहु जाजाके पुत्र साहु तेजकीर्तिदेव।

[ASI, XVI, p. 356-357, No. 18.]

८४२

भोलरी;—संस्कृत और गुजराती।

[काल अनिश्चित] श्वेताम्बर लेख।

[J. Kirste, EI, II, No. V, No. 3 (p. 25-26) t. & tr.]

८४३

रामनगर (अहिच्छत्र);—संस्कृत।

[काल अनिश्चित]

रामनगरके पुराने किलेसे उत्तरकी ओर कुछ १०० गज दूरीपर और नसरतगञ्जके पूर्वमें 'कतारि खेरा' नामकी एक बहुत छोटी पहाड़ी है। यह 'कतारि-खेरा' 'कोत्तरि खेरा'का अपभ्रंश (बिगड़ा हुआ रूप) मालूम पड़ता है। 'कोत्तरि खेरा'का अर्थ होता है 'मन्दिरका ढेर'। यहाँ जनरल कनिंघमने खम्भेका कङ्कडका चोखूँटा पाया और एक छोटे मन्दिरकी करीब-करीब लुप्तप्राय दीवालें खोज निकाली थीं। उसने पहिले इसे कोई बौद्ध-मन्दिर समझा, परन्तु पीछेसे वहाँ सिवा एक बुद्ध-मूर्तिके और कुछ न होनेसे, यह खयाल छोड़ दिया। लेकिन वहाँपर कुछ नग्न मूर्तियाँ निकलीं जोकि दिगम्बर जैन सम्प्रदायकी थीं। इससे उसने जैन मन्दिर समझा। पत्थरके एक परिवेषक (**Railing**) स्तम्भपर, जिसमें ऐसी मूर्तियोंकी ६ कतारें थीं, निम्नलिखित समर्थक लेख मिला:—

महाचार्य इन्द्रनन्दि शिष्य महादरि पार्श्वपतिस्य कोत्तरि ।

"इन्द्रनन्दिके शिष्य महादरि, पार्श्वपतिके मन्दिरको ॥"

यहाँ 'पार्श्वपति'से मतलब २३वें तीर्थंकर पार्श्वनाथसे ही है। एक दूसरी नग्न प्रतिमाके पाषाणपर 'नवग्रह' ये शब्द खुदे हुए थे, एक विशाल स्तम्भके खण्डपर उसके चारों ओर शेरके आकार बने हुए थे, जो कि महावीर स्वामीका चिह्न है। जैनोंमें 'अहिच्छत्र' अब भी एक पवित्र स्थान माना जाता है। इन लेखोंके अक्षरोंसे जनरल कनिंघम अनुमान करते हैं कि यह मन्दिर गुप्तकालकी अवनतिसे पहले बना था।

[Art, Ins. N-W-P-O (ASI, II), p. 28, t. & tr.]

८४४

खजुराहो;—संस्कृत ।

[काल अनिश्चित]

[२१ नं०के जिन-मन्दिरके द्वारके स्तम्भपर]

आचार्य स्री (श्री)-**देवचन्द्र:** (न्द्र) सिस्य (शिष्य) **कुमुदचन्द्र (न्द्रः)** ॥

[देवचन्द्रके शिष्य कुमुदचन्द्रका उल्लेख ।]

[**ASWI, Progress Reports 1908-1904, 48, t.**]

८४५-८४६

जैसलमेर;—संस्कृत ।

[सं० १४७३=१४१६ ई०] श्वेताम्बर लेख ।

शि० ले० ८४७—संवत् १४९३ = १४३६ ई०

" " ८४८— " १४९७ = १४४० ई०

" " ८४९— " १५०५ = १४४८ ई०

" " ८५०— " १५३६ = १४७९ ई०

समाप्त

अनुक्रमणिका (१)

जैन-शिला लेख संग्रह भाग १-२ में संग्रहीत शिला लेखों के स्थानों की अकारादि क्रम से नाम सूची। नाम के पश्चात् लेख नम्बर समझना चाहिये।

अनुक्रमणिका २

[विशेष नाम सूची]

इस अनुक्रमणिका में जैन मुनि, आर्यिका, कवि, संघ, गण, गच्छ, ग्रन्थ तथा राजा, रानी, गृहस्थों और सब प्रकार के नाम समाविष्ट किये गये हैं। नाम के पश्चात् अंक, लेख नम्बर समझने चाहिये।